

श्री
धवला-दीका-समन्वितः

षट्खंडागमः

जीवस्थान - द्रव्यप्रमाणानुगम

खंड १

भाग २

पुस्तक ३



सम्पादक
हीरालाल जैन

श्री भगवत्-पुष्पदन्त-भूतबलि-प्रणीतः

षट्खंडागमः

श्रीवीरसेनाचार्य-विरचित-धवला-टीका-समन्वितः ।

तस्य

प्रथम-खंडे जीवस्थाने

हिन्दीभाषानुवाद-तुलनात्मकटिप्पण-गणितोदाहरण-प्रस्तावनानेकपरिशिष्टैः सम्पादितः

द्रव्यप्रमाणानुगमः ३ केशरविजयजी लायब्रेरी
प० कल्याण विजय शा-नगरग्रह
जालार (राज०)



सम्पादकः

अमरावतीस्थ-किंग-एडवर्ड-कालेज-संस्कृताध्यापकः, एम्. ए., एल्. एल्. बी., इत्युपाधिविहारी

हीरालालो जैनः

सहसम्पादकौ

पं. फूलचन्द्रः सिद्धान्तशास्त्री * पं. हीरालालः सिद्धान्तशास्त्री, न्यायतीर्थः

संशोधने सहायकौ

व्या. वा., सा. सू., पं. देवकीनन्दनः *

सिद्धान्तशास्त्री

डा. नेमिनाथ-तनय-आदिनाथः

उपाध्यायः, एम्. ए., डी. लिट्.

प्रकाशकः

श्रीमन्त सेठ शितावराय लक्ष्मीचन्द्र

जैन-साहित्योद्धारक-फंड-कार्यालयः

अमरावती (बरार)

वि. सं. १९९८]

वीर-निर्वाण-संवत् २४६७

[ई. सं. १९४१

मूल्यं रूप्यक-दशकम्

प्रकाशकः

श्रीमन्त सेठ शिताबराय लक्ष्मीचन्द्र,
जैन-साहित्योद्धारक-फंड-कार्यालय,
अमरावती [वरार]



मुद्रक-

टी. एम्. पाटील,
मॅनेजर

सरस्वती प्रिंटिंग प्रेस, अमरावती [वरार]

THE
ṢAṬKHAṆḌĀGAMA

OF

PUṢPADANTA AND BHŪTABALI

WITH

THE COMMENTARY DHAVALĀ OF VĪRASENA

VOL. III

DRAVYA-PRAMĀṆĀNUGAMA

Edited

with introduction, translation, notes and indexes

BY

HIRALAL JAIN, M.A., LL. B.,

C. P. Educational Service, King Edward College, Amraoti.

ASSISTED BY

Pandit Phoolchandra
Siddhānta Shāstri

*

Pandit Hiralal Siddhānta Shastri,
Nyāyatīrtha.

Pandit Devakinandana,
Siddhānta Shāstri

With the co-operation of

*

Dr. A. N. Upadhye,
M. A., D. Litt.

Published by

Shrimanta Seth Shitabrai Laxmichandra,

Jaina Sāhitya Uddhāraka Fund Karyālaya,

AMRAOTI (Berar).

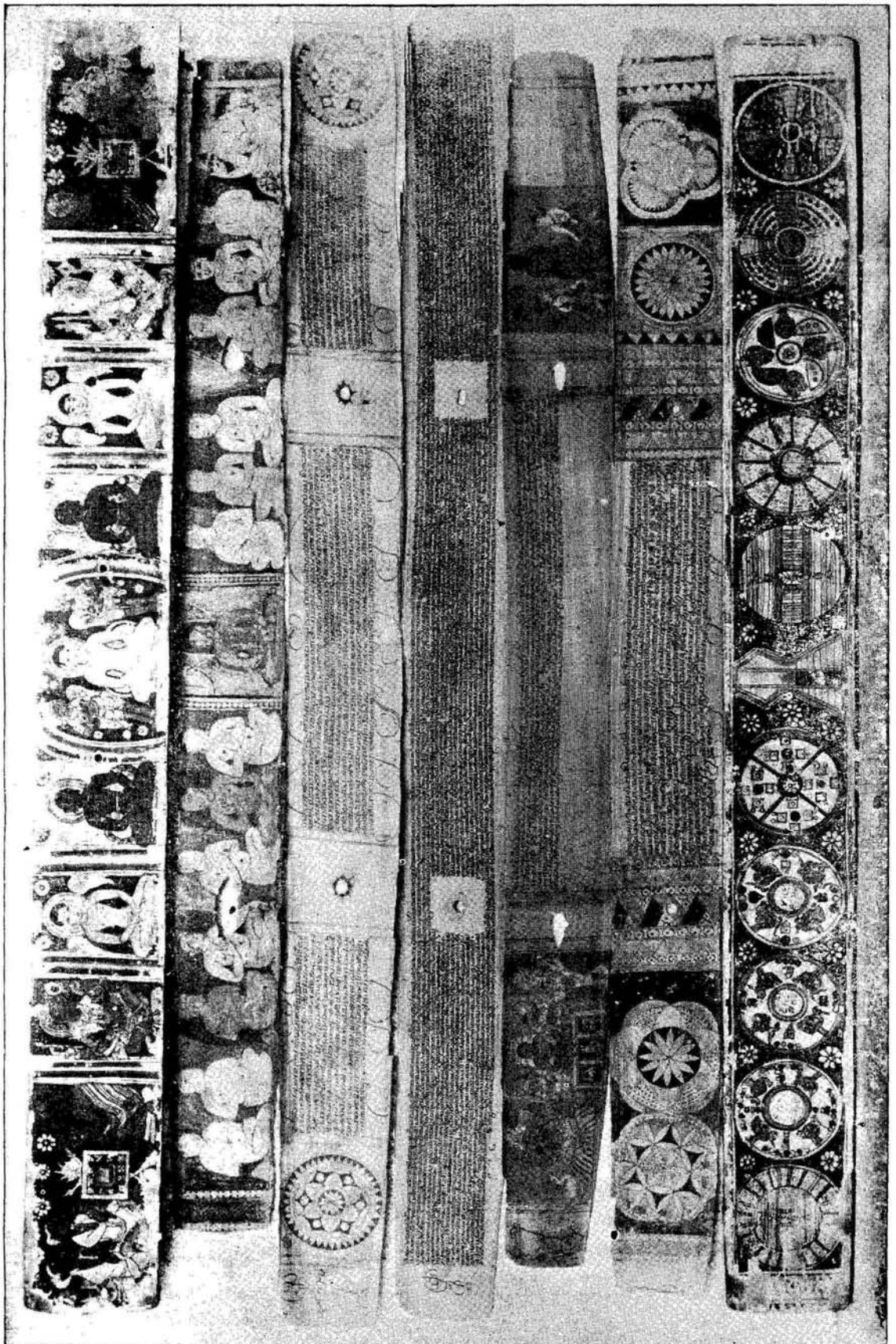
1941

Price rupees ten only.

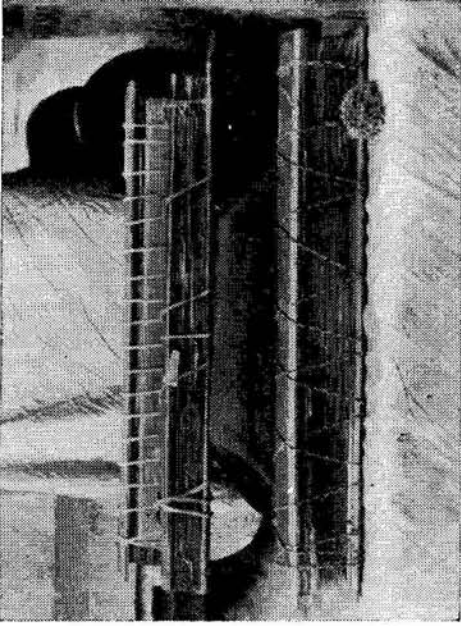
Published by—
Shrimant Seth Shitabrai Laxmichandra,
Jaina Sāhitya Uddhāraka Fund Karyālaya,
AMRAOTI (Berar).



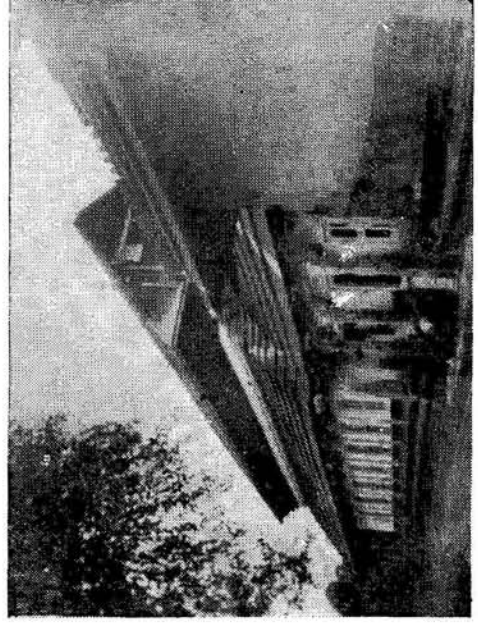
Printed by—
T. M. Patil, Manager,
Saraswati Printing Press,
AMRAOTI (Berar).



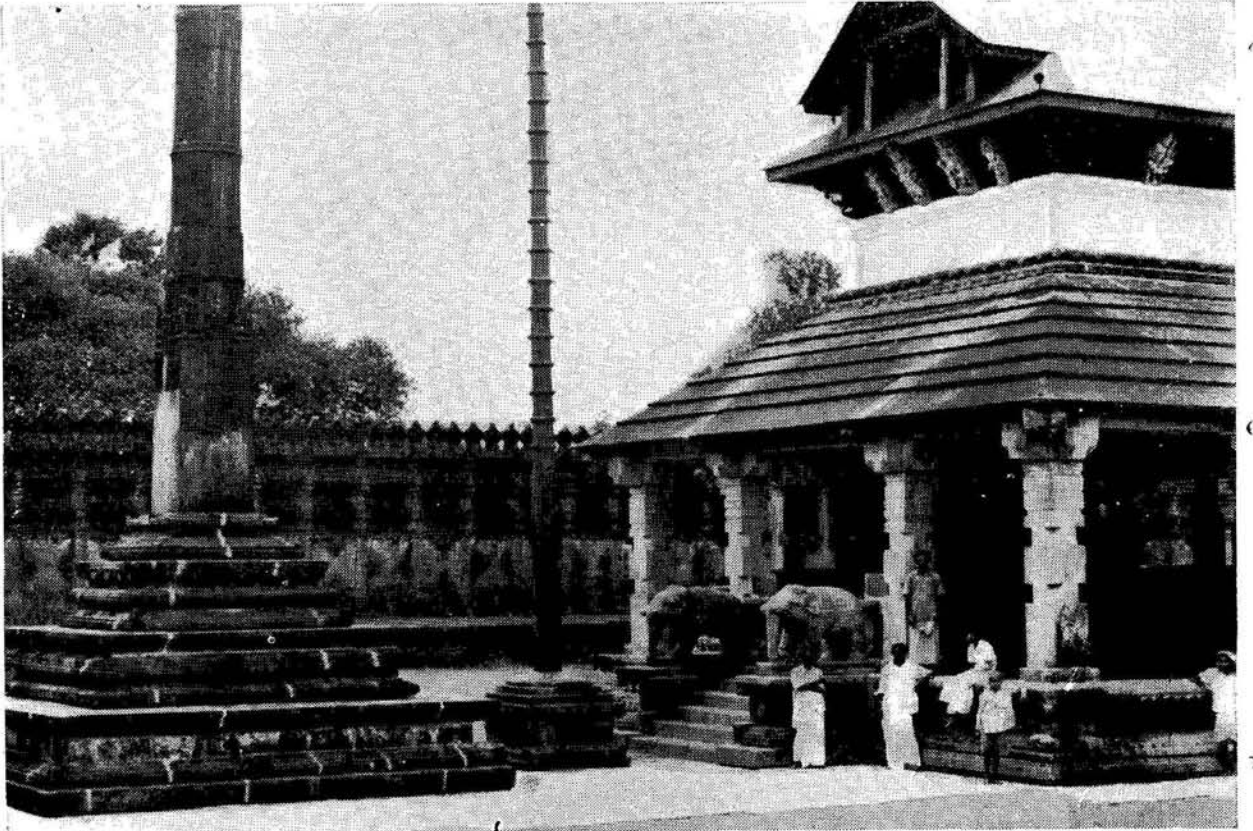
१. मूडविद्रोमिं सिद्धान्त ग्रंथोंके कुछ खुले हुए सचित्र व लिखित ताड़पत्र.



२. मूडविट्ठीमें सिद्धान्त ग्रंथोंकी प्रतियां बंधी हुई



३. मूडविट्ठीका सिद्धान्त मंदिर (गुरुबसदि)



४. मूडविट्ठीका सहस्रस्तंभ मंदिर (बड़ा मंदिर)

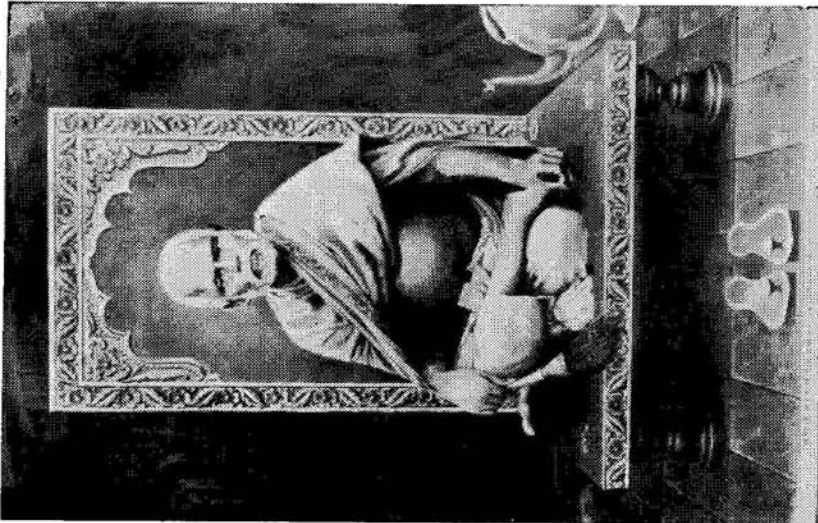
श्री

अतिशय क्षेत्र मूडविद्रीकी जिस सम्मान्य
भङ्गारक-परम्पराने इन अनुपम सिद्धान्त ग्रंथोंकी
चिरकालसे बड़ी सावधानी और सतर्कतापूर्वक
रक्षा की, तथा अब सुअवसर प्राप्त होने पर
विद्वत्संसारको उनका लाभ दिया, उसीके भूतपूर्व
और वर्तमान गुरुओंके सत्प्रयत्नोंकी स्मृतिमें यह
ग्रंथ विशेष रूपसे समर्पित है ।

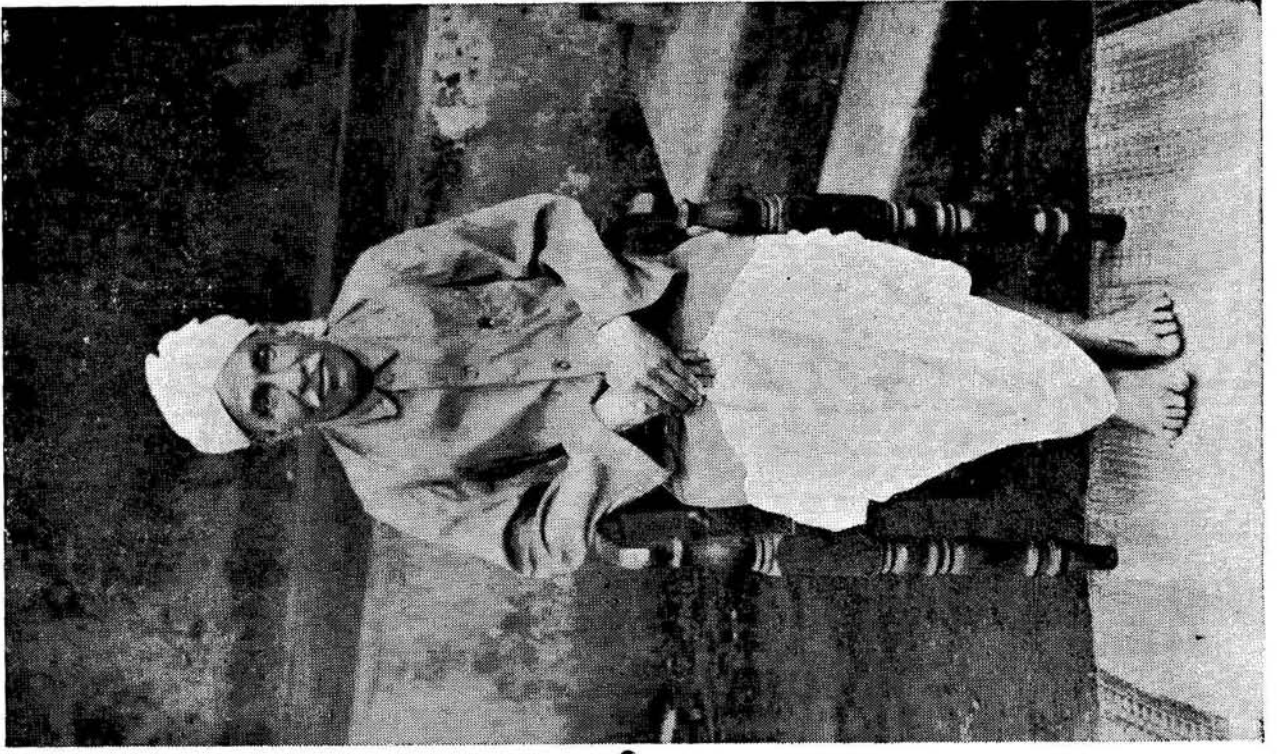
त्वदीयं वस्तु, भो स्वामिन्,
तुभ्यमेव समर्प्यते ।



६. मूडविद्रिके वर्तमान भट्टारक
चारकीर्ति स्वामी



५. मूडविद्रिके स्वर्गीय भट्टारक
चारकीर्ति स्वामी



७. मूडबिद्रीय सिद्धान्त बसदिके ट्रस्टी नगरसेठ श्री. देवराजजी



८. मूडबिद्रीय सिद्धान्त बसदिके ट्रस्टी
श्रीयुक्त धर्मपालजी

सिद्धान्त ग्रंथोंकी प्रतिलिपि व मिलान करनेवाले
सरस्वती-भूषण पं. लोकनाथजी शास्त्री

विषय सूची

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
प्राक् कथन	१-३	५ मतान्तर और उनका खंडन	४४
१		६ गणितकी विशेषता	४७
प्रस्तावना	१-६७	८ मूडबिंद्रीकी ताड़पत्रीय प्रतियोंके मिलानका निष्कर्ष	४९
ग्रंथकी प्रस्तावना (अंग्रेजीमें)	i-iv	९ द्रव्यप्रमाणानुगम-विषयसूची	५२
१ चित्र और चित्र-परिचय	१	१० अर्थसंबंधी विशेष-सूचना	६६
२ मूडबिंद्रीका इतिहास	४	११ पाठसंबंधी विशेष-सूचना	६७
३ महाबंधकी खोज	६-१४	शुद्धि पत्र	६८
१ खोजका इतिहास	६	मंगलाचरण	७२
२ सत्कर्मपंचिका परिचय	७	२	
३ महाबंध परिचय	१२	द्रव्यप्रमाणानुगम	१-४८७
४ उत्तरप्रतिपत्ति और दक्षिणप्रति-पत्तिपर कुछ और प्रकाश	१५	(मूल, अनुवाद और टिप्पण)	
५ णमोकार मंत्रके सादित्व अनादित्व-का निर्णय	१६	३	
६ शंका-समाधान	१८	परिशिष्ट	१-४२
७ द्रव्यप्रमाणानुगम	३१-५१	१ द्रव्यपरखवणासुत्ताणि	१
१ उत्पत्ति	३१	२ अवतरणगाथासूची	१०
२ प्रमाणका स्वरूप	३२	३ न्यायोक्तियां	११
३ जीवराशिका गुणस्थानोंकी अपेक्षा प्रमाण-प्ररूपण	३७	४ ग्रंथोल्लेख	१२
४ जीवराशिका मार्गणास्थानोंकी अपेक्षा प्रमाण-प्ररूपण	३८	५ पारिभाषिक शब्दसूची	१६
		६ मूडबिंद्रीकी ताड़पत्रीय प्रतियोंके मिलान	२०

प्राक् कथन

हमें यह प्रकट करते हुए अत्यन्त हर्ष होता है कि गत द्वितीय भागके प्राक् कथनमें हमने मूडविद्री सिद्धान्तभवनके अधिकारियोंके सहयोगसंबंधी जो सूचना प्रकट की थी, वह क्रियात्मक रूपमें परिणत हुई। इसके प्रमाण पाठक इसी भागके साथ प्रकाशित साहित्यसामग्रीमें देखेंगे। हमने महाधवलके अन्तर्गत ग्रंथ-रचनाके संबंधमें एक स्वतंत्र लेखकेद्वारा जो चिन्ता और जिज्ञासा प्रकट की थी, उसने उक्त सिद्धान्त भवनकी क्रियात्मक शक्तको जागृत कर दिया। शीघ्र ही हमें स्वयं भट्टारक स्वामी चारुकीर्तिजी द्वारा महाधवलके संबंधमें अनेक सूचनाएं और उसका परिचय भी प्राप्त हुआ और उसी सिलसिलेमें सिद्धान्तग्रंथोंके ताड़पत्रों, मंदिरों व अधिकारियों व कार्यकर्ताओंके चित्र भी उन्होंने भिजवानेकी कृपा की, व ताड़पत्रीय प्रतियोंसे पाठ-मिलानकी सुविधा भी कर दी। इस पुण्य कार्यमें हमारे सदा सहायक पं. लोकनाथजी शास्त्री ने उक्त महाधवल-परिचय और मूडविद्रीका कुछ इतिहास भी लिख भेजनेकी कृपा की, तथा वे अपने दो सहयोगी पं. नागराजजी शास्त्री और पं. देवकुमारजी शास्त्री के साथ मिलान कार्यमें दत्तचित्त भी हो गये। इस समस्त सहयोगके फलस्वरूप इस भागके साथ हम मूडविद्री, वहांकी सिद्धान्तप्रतियों, मंदिरों और अधिकारियोंके चित्र व परिचय और इतिहास पाठकोंके सम्मुख प्रस्तुत कर रहे हैं। यही नहीं, अब तक प्रकाशित तीनों भागोंके पाठका ताड़पत्रीय प्रतियोंसे मिलान व तत्संबंधी निष्कर्ष अत्यन्त परिश्रमपूर्वक सुव्यवस्थित करके पाठकोंके विचारार्थ प्रस्तुत कर रहे हैं। एक ध्यान देने योग्य हर्षकी बात यह है कि मूडविद्रीमें धवलसिद्धान्तकी एक संपूर्ण ताड़पत्रीय प्रतिके अतिरिक्त दो और ताड़पत्रीय प्रतियां हैं। यद्यपि ये बहुत अधिक त्रुटित हैं— इनके बीचके खंडों पत्र अप्राप्य हो गये हैं— तथापि जितने हैं उतने पाठसंशोधनकी दृष्टिसे महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि, इनमें परस्पर पाठभेद भी पाये जाते हैं जहांसे हमारे मिलानमें दिये हुए 'ब' खंडके पाठभेदोंकी उत्पत्ति संभव है। विशेषतः मिलानके 'ब' खंडमें दिये हुए भाग एकके पृष्ठ २२८ से अन्ततकके पाठभेद तो यहीं से उत्पन्न हुए विदित होते हैं। यथाशक्ति इन त्रुटित प्रतियोंके मिलान लेनेका भी हमने प्रयत्न किया है, किन्तु वर्तमान परिस्थितिमें इनका उतना और उसप्रकार उपयोग नहीं हो पाया जितना सूक्ष्मताकी दृष्टिसे अभीष्ट है। यथावसर इन प्रतियोंका विशेष परिचय देने और उपयोग लेनेका भी प्रयत्न किया जायगा। इस महान् साहित्यिक निधिको सर्वोपादेय बनानेमें सहायताके लिये मूडविद्रीके उक्त महानुभावोंका हम जितना उपकार माने, थोड़ा है।

१ यह लेख जैन गजट, जैन मित्र, जैन संदेश, जैन बोधक आदि पत्रोंमें नवम्बर १९४० में प्रकट हुआ था। उसका पूर्णरूप अन्तिम सूचनाओं तकके समाचार लेकर दिसम्बर १९४० के जैन सिद्धान्त मास्करमें प्रकाशित हो चुका है।

प्रस्तुत भागके पाठ-संशोधन व अनुवादमें सम्पादकोंको विशेष कठिनाईका साम्हना करना पड़ा है। एक तो यहाँका विषय ही बड़ा सूक्ष्म है, और दूसरे उसपर धक्काकारने अपने समयके गणित शास्त्रकी गहरी पुट जमाई है। इसने हमें बड़ा हैरान किया, तथापि किसी अज्ञात शक्तिकी प्रेरणा, जनताकी सद्भावना और विद्वानोंके सहयोगसे वह कठिनाई भी अन्ततः हल हो ही गई, और अब हम यह भाग भी पूर्व भागोंके समान कुछ आत्मविश्वासके साथ पाठकोंके हाथमें सौंपते हैं। मूल भागमें सामान्य विषय-प्ररूपणके अतिरिक्त कोई २८० शंकाएं उठाकर उनका समाधान किया गया है। इसके गहन, अपरिचित और दुरूह भागको अनुवादमें बीजगणित और अंकगणितके कोई २८० उदाहरणों तथा ५० विशेषार्थों व ३३३ पादटिप्पणियोंद्वारा सुगम और सुबोध बनानेका प्रयत्न किया गया है। इसका गणित ब्रैठानेमें हमें हमारे कालेजके सहयोगी, गणितके अध्यापक **प्रोफेसर काशीदत्तजी पांडे**, एम. ए., से विशेष सहायता मिली है। उन्होंने कई दिनोंतक लगातार घंटों हमारे साथ बैठ बैठकर करण-गाथाओंको समझाने समझाने व अन्य गणित व्यवस्थित करनेमें बड़ी रुचि और लगनसे खूब परिश्रम किया है। गाथा नं. २८ (पृ. ४७) का गणित नागपुरके वयो-वृद्ध गणिताचार्य, हिस्लूप कालेजके भूतपूर्व गणिताध्यापक **प्रोफेसर जी. के. गर्दे** ने बैठा देने की कृपा की है, तथा उसीका दूसरा प्रकार, एवं पृ. ५०-५१ पर दिये हुए पश्चिम-विकल्पका जो गणित संबंधी सामंजस्य प्रस्तावनाके पृ. ६६ पर 'अर्थसंबंधी विशेष सूचना' शीर्षकसे दिया गया है वह लखनऊ विश्वविद्यालयके गणिताचार्य व 'हिन्दू गणितशास्त्रका इतिहास' के लेखक **डाक्टर अवधेश नारायणसिंहजी** ने लगाकर भेजनेकी कृपा की है। इस अत्यन्त परिश्रम पूर्वक दिये हुए सहयोगके लिये उपर्युक्त सभी सज्जनोंके हम बहुत ही कृतज्ञ हैं। इस भागमें यदि कुछ सुन्दर और महत्त्वपूर्ण सम्पादन कार्य हुआ है तो वह इसी सहयोगका परिणाम है। हां, जो कुछ त्रुटियां और खलन रहे हों उनका उत्तरदायित्व हमारे ही ऊपर है, क्योंकि, अन्ततः समस्त सामग्रीको वर्तमान रूप देनेकी जिम्मेदारी हमारी ही रही है।

इन सिद्धान्त ग्रंथोंकी ओर विद्वान् पाठक कितने आकर्षित हुए हैं, यह उन अभिप्रायोंसे स्पष्ट है जो या तो समालोचनादिके रूपमें विविध पत्रोंमें प्रकाशित हो चुके हैं, या जो विशेष पत्रों द्वारा हमें प्राप्त हुए हैं। उन सभी सदभिप्रायोंके लिये हम लेखकोंके विशेष आभारी हैं। इन अभि-प्रायोंमें ऐसी अनेक सैद्धान्तिक व अन्य शंकाएं भी उठाई गई हैं जो ग्रंथके सूक्ष्म अध्ययनसे पाठकोंके हृदयमें उत्पन्न हुईं। कितने ही अंशमें उन शंकाओंके उत्तर भी हम यथाशक्ति उन उन पाठकोंको व्यक्तिगत रूपसे भेजते गये हैं। अब हम उनमेंसे कुछ महत्त्वपूर्ण शंकाएं और उनके समाधान, इस भागकी भूमिकामें पृष्ठक्रमसे व्यवस्थित करके प्रकाशित कर रहे हैं, जिससे ग्रंथराजके सभी पाठ-कोंको लाभ हो और इस सिद्धान्तके समझने समझाने में सहायता पहुंचे। गहन सिद्धान्तोंके अर्थपर प्रकाश डालनेवाले अभिमतों का हम सदैव आदर करेंगे।

सम्पादन-संबंधी हमारी शेष साधन-सामग्री और सहयोगप्रणाली पूर्ववत् ही इस भागके लिए भी उपलब्ध रही। हमें अमरावती जैन मन्दिरकी हस्तलिखित प्रतिके अतिरिक्त आराके सिद्धान्तभवन और कारंजाके महावीर ब्रह्मचर्याश्रमकी प्रतियोंका मिलानके लिये लाभ मिलता रहा, तथा सहारनपुरकी प्रतिके नोट किये हुए पाठभेद भी समुपलब्ध रहे। अतएव हम उनके अधिकारियोंके बहुत आभारी हैं। मूडबिद्रीय प्रतियोंके मिलान प्राप्त हो जानेसे हमने इन प्रतियोंके परस्पर पाठ-भेद व छूटे हुए पाठ आदि देना आवश्यक नहीं समझा।

हमारे सम्पादनकार्यमें विशेषरूपसे सहायक पं. देवकीनन्दनजी सिद्धान्तशास्त्री गत तीन चार मास बहुत हां व्याधिग्रसित रहे, जिसकी हमें अत्यन्त चिन्ता और आकुलता रही। यद्यपि अभी भी वे बहुतही दुर्बल हैं, तथापि व्याधि दूर हो गई है और वे उत्तरोत्तर स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं जिसका हमें परम हर्ष है। हमें आशा और विश्वास है कि वे शीघ्र ही पूर्ण स्वास्थ्य लाभ करके अपनी विद्वत्ताका लाभ हमें देते रहनेमें समर्थ होंगे।

हमारे सहयोगी पं. फूलचन्द्रजी सिद्धान्तशास्त्रीका नवजात पुत्र गत फरवरी मासमें अत्यन्त रुग्ण हो गया, जिससे फरवरीके अन्तमें पंडितजीको अकस्मात् देश जाना पड़ा। यथाशक्ति खूब उपचार करने पर भी दुर्दैवसे पंडितजीको पुत्र-वियोगका अपार दुख सहन करना पड़ा, जिसका हमें भी अत्यन्त शोक है, और शेष कुटुम्बकी सहानुभूतिसे हृदय द्रवित होता है। तबसे फिर पंडितजी वापिस नहीं आ सके। चूंकि इस समय पंडित फूलचन्द्रजी हमारे सन्मुख नहीं हैं, इससे हमें यह निस्संकोच प्रकट करते हुए हर्ष होता है कि प्रस्तुत कठिन ग्रन्थको वर्तमान स्वरूप देनेमें पंडितजीका भारी प्रयास रहा है, जिसके लिये शेष सम्पादकवर्ग उनका बहुत आभारी है।

प्रथम भागके प्रकाशित होनेसे ठीक आठ माह पश्चात् ही दूसरा भाग जुलाई १९४० में प्रकाशित हुआ था। मार्च १९४१ में आठ माहके पश्चात् ही यह तीसरा भाग प्रकाशमें आ रहा है। जो कुछ सहयोग और सहानुभूति इस महत्त्वपूर्ण साहित्यके प्रकाशनमें मिल रही है उससे आशा और विश्वास होता है कि यह पुण्य कार्य सुचारु रूपसे प्रगतिशील होता जायगा।

किंग एडवर्ड कॉलेज,
अमरावती
१-४-४१

हीरालाल जैन

प्रस्तावना

INTRODUCTION.

1. Cooperation of the Moodbidri Authorities and Collation of the Palmleaf Manuscripts.

It will be noticed with the greatest pleasure by every one interested in the publication of this series that the present Volume is appearing with the full cooperation of the authorities at the pontifical seat at Moodbidri where the old palmleaf Mss. of this unique work are deposited and worshipped. The publication of the first two volumes and our ceaseless efforts, as well as of those who realised the value and importance of this venture, brought about this miraculous and most welcome change in the outlook of those who had so far stood apart and looked upon the undertaking with doubts and misgivings. The immediate occasion for the change was provided by the publication of my article in which anxiety was expressed concerning the real contents of the palmleaf Ms. which goes by the name of Mahādhavala. It aroused a sensation amongst those who had any idea of the possible contents of those Mss. and stirred the hearts of all concerned. An examination of the palmleaf Mss. was, therefore, immediately arranged and I was soon informed by telegrams and letters about the results of that examination. The contact thus established proved lasting and the collation of the Dhavala Mss. with the published part of the work was carried out. The collation of the rest of the work is also proceeding, thanks to the sympathetic attitude of the authorities and the cooperation of a band of learned people there.

As a result of the search, two more old but incomplete palmleaf Mss. of Dhavala have been discovered. These would prove of immense value in settling the text more accurately. At present, the collation of all these palmleaf Mss. in a thorough and accurate manner was not possible, but it might be hoped that this will also be accomplished in the near future. The result of the Moodbidri collations, so far, has been that of the 483 variants noticed in the text of the three volumes yet published, including the present volume, 149 contribute towards the improvement of the text in the matter of sense or expression or both, 62 appear to be optionally acceptable, 157 are phonetic options of the Prakrit language, while 120 are unacceptable, being scribal or other errors. These have been properly classified by us in an appendix and the general results are embodied in the Hindi Introduction (page 49). It was necessary to emend the translation very slightly only at 78 places in all. Our principles of text constitution and translation, as laid down by us in the Introduction to Volume I, are thus mostly borne out by this collation. The position of the euphonic *ya* may have to be reconsidered, but we must wait for more material. Of the 19 expressions which were not found in the available Mss. but were thought to be necessary by us and were, therefore, added and placed within brackets in the

present Volume, 13 have been found almost verbatim in the palmleaf Ms. We re-examined the remaining 6 additions and found that even if we omit them from their allotted positions we have to infer the sense from the context.

2. Contents of the Mahadhavala manuscript.

The examination of the Mahadhavala palmleaves corroborated our doubts as well as fulfilled our hopes. The Ms. has been found to contain, on the first twenty-seven leaves, a work which has been called **Sattakamma-Panchika**. A careful examination of the extracts received by us from that work reveals the fact that it is a gloss on the first four out of the eighteen Adhikaras or chapters contained in the supplementary part of Dhavalā which is entirely the composition of Virasena without any strata of old Sutras. The author and the date of this gloss remain yet obscure.

The rest of the Mahadhavala Ms. contains the **Mahabandha**, presumably the composition of Āchārya Bhūtabali himself. This is indicated by the nature of the contents examined in the light of what has been said about the Mahābandha of Bhutabali in the Dhavala and Jayadhavala.

3. Subject matter of this volume.

The subject matter of this volume is the enumeration of souls in each of the fourteen stages of spiritual advancement (Gūṇasthānas), and in the different varieties of life and existence called the soul-quests (Mārgaṇāsthānas). These have been calculated in terms of infinite (Ananta), innumerable (Asamkhyāta) and numberable (Samkhyāta), and the standards have been first explained and defined. Living beings are infinite in number. Of these, the major bulk, which also is infinite in number, consists of beings that are on the lowest rung of the spiritual ladder, the first stage of mental evolution (Mithyātvin). Of the rest, again, the major part are the absolved beings (Mukta or Siddha) who are also infinite. The beings in the stages from the 2nd to the 5th are innumerable, while those in the last nine stages (6th to 14th) are in all just three less than nine crores. The author of Dhavala has illustrated these quantities arithmetically by taking the entire living creation to be 16, out of which 13 would fall under the first category, while the remaining 3 would include the Siddhas and all the souls of the other thirteen stages. We have tried to carry this illustration further by splitting up the 3 as well so as to allot 2 to the Siddhas and distribute the remaining 1 among the thirteen stages according to their quantitative order. (See Intro. page 37).

The soul quantities, according to the subdivisions falling under the Mārgaṇāsthānas, have been defined and illustrated in his own way by the author. But we have tried to work the same out in figures that are consistent with the Gūṇasthāna distribution, keeping the entire Jivarāshī as 16, the Mithyādrishti as 13, the Siddhas 2, and the rest comprised within 1. The categories falling under the fourteen Mārgaṇāsthānas are 63, of which 23 are infinite, 32 innumerable, and 8 numberable. It would be interesting to note that the entire human race is said to be innumerable, but those that are found in the stages from the 2nd to the 14th are just three less than eight hundred and seventy-eight crores. These are spread over all

the two and half Dvīpas or mainlands over which the human population is spread.
(Page 38-43)

4. Scientific Importance of the Work.

The distribution of souls in the various stages of spiritual advancement and the varieties of life and existence is based upon certain Jain dogmas which are in their nature inscrutable. An attempt has been made by the authors of the Sutras and the Commentary to put the distribution in a precise mathematical form. The authors have made full use of the mathematical knowledge of their times, which reveals a considerably high state of development during the earliest centuries of the Christian era when the Sutras were composed, as well as during the latter part of the 8th and the earlier part of the 9th century when the commentary was written. The author of the Sutras shows a clear conception of infinity and orders of infinity within infinity in their application to matter, time and space. Within the sphere of finite numbers he mentions figures from one to hundred, thousand, tens and hundreds of thousands, and crores, also their multiples, squares and square roots, as well as the fundamental operations of arithmetic, namely, addition, subtraction, multiplication and division. The commentator has amplified this knowledge considerably in the light of what was known at his time. Several practical methods of division have been explained. There is a free use of the place value notation. The use of fraction has been frequently made in order to arrive at quotients with particular divisors, or to determine divisors when a particular quotient is given. This indicates the knowledge of fractions at that stage. The processes of evolution and involution are identical with those current in modern mathematics. Thus, we notice the use of powers (Vargita-samvargita) and roots (Varga-mula). This indicates that the author of Dhavala had a clear knowledge of the law of indices and possibly of the theory of logarithms, as may be inferred from the relations shown between the Varga-shalākas and Ardhacchedas † The rule of three was an operation well known to the author for the purposes of showing variations. We also find the use of the summation of an arithmetic series. The author is also found to have employed the mensuration formula for a circle. The ratio of the circumference to the diameter is taken as a little less than $\sqrt{10}$, and it is just possible that approximations to this value in a fractional form to a fair degree of accuracy were known to the author.

It may be hoped that the work will considerably widen our knowledge about the state of mathematics and its application to the problems of life in ancient India. As I have already acknowledged in my foreword, my colleague Professor K. D. Panday, M. A., has interpreted for me many of the author's formulas and has also assisted in framing the illustrations, while Dr. Avadhesh Narain Singh, D. Sc., Professor

.....
† The number of times that a particular figure is multiplied by itself is its Varga-shalākas, while the number of times that a particular figure is successively halved is its ardhacchedas.

of Mathematics in the Lucknow University and the author of the History of Hindu Mathematics has contributed the interpretations of formulas which are set forth by us on page 66 of the Hindi Introduction. Both these scholars are at present studying the work from the point of view of its mathematical importance, and some of my remarks above are based upon information already supplied by them. The emendation of the text of the verse 28 as well as its explanation and illustration as given in our translation are the contributions of Professor G. R. Garde, M. A., the well known Sanskritist and Mathematician of Nagpur.

5. Other Topics.

Other topics discussed in the Hindi Introduction are as follows:—

1 An account of the palmleaf manuscripts as well as of the institutions and personalities of Moodbidri, together with a short history of the place, has been given with illustrations. It appears that the Jaina institutions of Moodbidri date from about the 11th century, with a back ground that may be about four centuries older. The foundation of the pontifical seat was laid during the 12th century and the zenith of prosperity was reached during the following two or three centuries. (Page 1-6)

2. A little more light is shed on what have been called by the author of Dhavalā the Northern and Southern Schools of thought (Uttara Pratipatti and Dakshina pratipatti), to which we had drawn attention in the Introduction to Vol. I, page iii & 57, and which are cited more than once in the text now presented. (Page 92, 94, 98 of the text.) One mention of these Schools noticed by us in the Jayadhavalā associates one school with Arya Mankhu and the other with Nagahasti. An attempt is being made by us to get more light on this important subject (page 15).

3. Our conclusions about the authorship of Namokara Mantra expressed in the Introduction to Vol. II, created a considerable stir amongst people who have come to regard the sacred formula as eternal. A reconsideration of the pertinent text in the light of the readings obtained from the palmleaf Mss. of Moodbidri, corroborates our previous conclusions so far as the linguistic expression of the sacred formula in its present form is concerned. But there is no contradiction in regarding the sense of the formula as even older than Pushpadanta. (Page 16)

4. After the publication of the first Vol., a great interest in the subject matter of the work was aroused and a number of questions were received by us from time to time for more light about the text and its interpretation. We tried to satisfy the curiosity of our inquirers then and there, and now we reproduce here in a properly arranged form a set of twenty-- four questions with answers, because we considered them important from one point of view or another. It will be seen from these that our principles of text constitution and interpretation are fully justified. (Page 18-31)

१ चित्र परिचय.

१

ऊपरसे नीचेकी ओर प्रथम सचित्र ताड़पत्र श्रीधवल ग्रंथका है। इसके मध्यमें एक तीर्थंकरका चित्र है, जिसके दोनों ओर अनुमानतः यक्ष-यक्षिणी खड़े किये गये हैं। इसके दोनों ओर दो दो तीर्थंकरोंके और चित्र हैं, तथा उनके एक ओर यक्ष और दूसरी ओर यक्षिणी चित्रित हैं। फिर दोनों छोरोंपर प्रवचन करते हुए आचार्य व श्रोता श्रावकोंके चित्र हैं।

दूसरा सचित्र ताड़पत्र भी श्रीधवल ग्रंथराजका है। बीचमें तीर्थंकर विराजमान हैं, और आजू बाजू सात सात भक्त वन्दना करते हुए दिखाये गये हैं।

तीसरा ताड़पत्र श्रीधवलका कनाड़ी लिपिमें हस्त-लिखित है।

चौथा ताड़पत्र कनाड़ी लिपिमें हस्त-लिखित श्रीमहाधवल ग्रंथका है।

पांचवां ताड़पत्र श्रीजयधवल ग्रंथका है। बीचमें कनाड़ीका हस्तलेख तथा आजू बाजू चित्र हैं।

छठवां ताड़पत्र श्रीमहाधवलका २७ वां पत्र है, जहां 'सप्तकम्मपंचिका' पूरी हुई कही जाती है। इसके भी बीचमें हस्तलेख और आजू बाजू चक्राकार चित्र हैं।

सातवां ताड़पत्र त्रिलोकसार ग्रंथके भीतरका है।

२

नीचेसे ऊपरकी ओर प्रथम ग्रंथ श्रीधवल सिद्धान्त (षट्खंडागम) है। इसके ताड़पत्रोंकी लम्बाई २ फुट, चौड़ाई २॥ इंच, तथा पत्र संख्या ५९२ है। प्रत्येक पृष्ठ पर प्रायः १४ पंक्तिय हैं, और प्रत्येक पंक्तिमें लगभग १३८ अक्षर हैं। इसप्रकार प्रत्येक ताड़पत्रपर श्लोक-संख्या लगभग १२०॥ आती है, जिससे कुल ग्रंथका प्रमाण ७१४८४ श्लोकोंके लगभग आता है।

अभीतक यही समझा जाता था कि धवलाकी प्राचीन ताड़पत्रीय प्रति एकमात्र यही है। किन्तु अब खोजसे ज्ञात हुआ है कि वहां धवलाकी दो और भी ताड़पत्रीय प्राचीन प्रतियां हैं, जिनकी ताड़पत्रोंकी संख्या क्रमशः ८०० और ६०५ है। इनमें पाठभेदभी कहीं कहीं बहुत कुछ पाया जाता है। किन्तु इन दोनों प्रतियोंके बीचबीच के अनेक ताड़पत्र अप्राप्य हैं, और इस प्रकार ये दोनोही प्रतियां बहुत कुछ त्रुटित हैं। इनका प्रशस्तियों आदि सहित विशेष परिचय आगेके भागमें देनेका प्रयत्न किया जायगा।

दूसरा ग्रंथ श्रीमहाधवल कहलाता है। इसके ताड़पत्रोंकी लम्बाई २ फुट ४ इंच, चौड़ाई २॥ इंच तथा पत्रसंख्या २०० है। प्रत्येक पृष्ठपर प्रायः १३ पंक्तियां, और प्रत्येक पंक्तिमें

लगभग १७० अक्षर हैं। इस प्रकार प्रत्येक ताडपत्रपर श्लोक-संख्या १३८ आती है, जिससे कुलग्रंथका प्रमाण २७६०० श्लोकोंके लगभग आता है। किन्तु बड़े बड़े पारिभाषिक शब्दोंके सूक्ष्म-रूप बनाकर लिखे गये हैं, इससे श्लोक प्रमाण अधिक भी हो सकता है।

तीसरा ग्रंथ श्रीजयधवल सिद्धान्त है। इसके ताडपत्रोंकी लम्बाई २। फुट, चौड़ाई २॥ इंच, तथा पत्रसंख्या ५१८ है। प्रत्येक पृष्ठपर प्रायः १३ पंक्तियाँ, और प्रत्येक पंक्तिमें लगभग १३८ अक्षर हैं। इस प्रकार प्रत्येक ताडपत्रपर श्लोक-संख्या लगभग १२० आती है, जिससे कुल ग्रंथका प्रमाण ६११२४ श्लोकोंके लगभग आता है।

३

यह मूडबिद्रीका वही सुप्रसिद्ध मंदिर है, जहाँ सिद्धान्त ग्रंथोंकी ताडपत्रीय प्रतियाँ शताब्दियोंसे विराजमान हैं। इन्हींके कारण यह मन्दिर 'सिद्धान्त मन्दिर' या 'सिद्धान्त बसदि' कहलाता है। अनेक रत्नमयी प्रतिमायें भी यहाँ विराजमान हैं, जिनके दर्शनके लिये प्रतिवर्ष दूर दूरसे यात्री आते हैं। यहाँके मूलनायक श्रीपार्श्वनाथ तीर्थंकर हैं। यहीं महारक गद्दी है, जिससे इसे 'गुरु बसदि' भी कहते हैं। इसका सब कार्यभार एक पंचायतके आधीन है, जिससे यह 'पंचायती मन्दिर' भी कहलाता है।

४

यह मूडबिद्रीका 'बड़ा मन्दिर' है। यहाँ के मूलनायक श्री चन्द्रप्रभ तीर्थंकर हैं, जिनकी मूर्ति सुवर्ण आदि पंच धातुओंकी बनी मानी जाती है। इसकी इमारत तीन मंजिलकी है। दूसरे मंजिलपर 'सहस्रकूट चैत्यालय' बहुत ही मनोह्र है। तीसरे मंजिलमें छोटी बड़ी ४० प्रतिमाएं विराजमान हैं जो स्फटिकमयी हैं। इसीलिये इस मंजिलको 'सिद्धकूट' भी कहते हैं। मन्दिरके सन्मुख एक 'मानस्तंभ' और एक 'ध्वजस्तंभ' खड़ा है। तीनों मंजिलोंमें स्तंभोंकी संख्या कोई एक हजार है, जिससे इस मन्दिरका नाम 'सहस्रस्तंभ' या हजार स्तंभवाला मन्दिर प्रसिद्ध हुआ है। अपनी अनुपम सुन्दरताके कारण यह मन्दिर 'त्रिभुवन-तिलक-चूडामणि' भी कहलाता है।

५

ये मूडबिद्रीके स्वर्गीय महारक श्रीचारुकीर्ति स्वामी हैं। आप संस्कृतके अच्छे विद्वान् थे, तथा अन्य अनेक भाषाओंके भी जानकार थे। आपके समयमें मूडबिद्री में अच्छी धर्मप्रभावना हुई। आपने कई जगह कितने ही जैनमंदिरोंका जीर्णोद्धार कराया व पंचकल्याणादि कराये। आपकेही सुसमय में श्रीधवल और श्रीजयधवल, इन दोनों सिद्धान्त ग्रंथोंकी प्रतिलिपियाँ हुई थीं, और तीसरे सिद्धान्त ग्रंथ महाधवलकी प्रतिलिपिका कार्य भी प्रारम्भ हो गया था। अजैन जनतामें भी आपका अच्छा गौरव और सन्मान रहा।

६

ये मूडबिंद्रीके वर्तमान भट्टारक श्रीचारुकीर्ति स्वामी हैं, जो सिद्धान्त बसदिके मुख्य अधिकारी हैं। आप अपनी मातृभाषा कनाड़ी के अतिरिक्त संस्कृत, अंग्रेजी, हिन्दी आदि अनेक भाषाओंके ज्ञाता हैं। उत्तर भारतमें भी आप दीर्घकाल तक रह चुके हैं। आपके ही समयमें श्रीमहाधवलकी प्रतिलिपि पूर्ण हुई। आपके ही सरल स्वभाव और उदार विचारोंका यह सुफल है कि वहांकी पंचायतद्वारा श्रीमहाधवलकी प्रतिलिपि जिज्ञासु समाज को प्राप्य बनानेका प्रस्ताव स्वीकृत हो गया है। आप जीर्णोद्धारादि धार्मिक कार्योंमें खूब दत्तचित्त रहते हैं। ग्रंथोंका जीर्णोद्धार कार्य भी आपकी दृष्टिके ओझल नहीं रह सका। हमारे सिद्धान्त-ग्रंथके संशोधन व प्रकाशन कार्यमें अब हमें आपकी पूर्ण सहानुभूति और सहायता मिल रही है, जिसके सुफल पाठक इस ग्रंथभागमें तथा आगे भी देखेंगे।

७

आप मूडबिंद्रीके नगरसेठ श्रीदेवराजजी सेठी हैं। सिद्धान्तमन्दिरके आप पंच हैं, और भट्टारकजीके सत्कार्योंमें आपकी सम्मति और सहयोग रहता है। आप भी सिद्धान्तग्रंथोंके सुप्रचार के पक्षपाती हैं।

८

आप मूडबिंद्री सिद्धान्तमन्दिरके पंच श्रीयुक्त धर्मपालजी हैं। आप एक बड़े उत्साही युवक हैं, और सिद्धान्तग्रंथोंके सुप्रचार करानेमें आपकी विशेष रुचि है।

९

सरस्वती भूषण पं. लोकनाथजी शास्त्रीका पैतृक निवासस्थान मूडबिंद्री ही है। आपका विद्याभ्यास स्वनामधन्य स्वर्गीय पं. गोपालदासजी बैर्याकी अध्यक्षतामें मोरेना विद्यालयमें हुआ था। तत्पश्चात् आपने मूडबिंद्रीकी जैन संस्कृत पाठशालामें बीस वर्ष तक अध्यापन कार्य किया, और अनेक ऐसे योग्य विद्वान् उत्पन्न किये जो अब उस प्रान्तमें धर्म और समाजकी भारी सेवा कर रहे हैं। आपने अपने निरंतर कठिन परिश्रमसे वीरवाणीविलास सिद्धान्तभवनकी स्थापना की है जिसमें मुद्रित व हस्तलिखित ताडपत्रादि चार हजार ग्रंथोंसे ऊपरका संग्रह है। यहांसे आप एक वीरवाणी ग्रंथमालाका भी संपादन करते हैं, जिसमें सोलह ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं। आप मूडबिंद्रीके भंडारसे अलभ्य ग्रंथोंकी प्रतिलिपि कराकर मुंबई, आरा, इंदौर, सहारनपुर, कलकत्ता आदि शास्त्रभंडारोंको भेज चुके हैं, जिसकी श्लोक सं. ८५००० से भी ऊपर हो गई है। आपका सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य सिद्धान्तग्रंथोंकी प्रतिलिपियोंसे संबंध रखता है। जैसा हम प्रथम भागकी भूमिकामें कह आये हैं, महाधवलकी नागरी प्रतिलिपि पहले पहल आपके द्वारा ही सन् १९१८ से १९२२ तक की गई थी। सन् १९२४ में आपने सहारनपुर पहुंचकर वहांकी धवला और जयधवलाकी कनाड़ी और नागरी प्रतियोंका मिलान करवाया था। वर्तमानमें हमारी

महाधवलकी प्रतिसंबंधी शंकाओंपर आपने ही अपने दो तीन सहयोगी विद्वानोंसहित उक्त प्रतिकी जांच पड़ताल की, और बहुमूल्य परिचय भेजनेकी कृपा की। हमारे प्रकाशित व प्रकाशनीय ग्रंथोंकी ताड़पत्नीय प्रतियोंसे मिलान भी आपके ही द्वारा किया जा रहा है। आपकी आयु इस समय पचास वर्षकी है। लगभग दस वर्षसे आसकी व्याधिसे पीड़ित होते हुए भी आप साहित्यसेवाके कार्यसे विश्रान्ति नहीं लेते, और प्रस्तुत सिद्धान्तप्रकाशन कार्यमें तो आप अत्यन्त तन्मयताके साथ जी तोड़कर सहयोग दे रहे हैं, जिसके सुफल पाठक इस भागमें तथा आगे प्रकाशनीय भागोंमें देखेंगे।

२ मूडविद्रीका इतिहास

(दक्षिण भारतका कर्नाटक देश जैन धर्मके इतिहासमें अपना एक विशेष स्थान रखता है। दिग्म्बर जैन सम्प्रदायके अधिकांश सुविख्यात और प्राचीनतम ज्ञात आचार्य और ग्रंथकार इसी प्रान्तमें हुए हैं। आचार्य पुष्पदन्त, समन्तभद्र, पूज्यपाद, वीरसेन, जिनसेन, गुणभद्र, नेमिचन्द्र, चामुण्डराय आदि महान् ग्रंथकारोंने इसी भूभागको अलंकृत किया था।)

इसी दक्षिण कर्नाटक प्रान्तमें ही मूडविद्री नामका एक छोटासा नगर है जो शताब्दियोंसे जैनियोंका तीर्थक्षेत्र बना हुआ है। कहा जाता है कि यहां जैनधर्मका विशेष प्रभाव सन् ११०० ईस्वीके लगभग होयसल-नरेश बल्लालदेव प्रथमके समयसे बढ़ा। तेरहवीं शताब्दिमें यहांकी पार्श्वनाथ बसदिकी तुल्यके आलूप नरेशोंसे राज्यसन्मान मिला। पन्द्रहवीं शताब्दिमें विजय-नगरके हिन्दू नरेशोंके समय इस स्थानकी कीर्ति विशेष बढ़ी। शक १३५१ (सन् १५२९) के देवराय द्वितीयके एक शिलालेखमें उल्लेख है कि वेणुपुर (मूडविद्री) उसके भव्यजनोंके लिये सुप्रसिद्ध है। वे शुद्ध चारित्र पालते हैं, शुभ कार्य करते हैं, और जैनधर्मकी कथाओंका श्रवण करते हैं। यहांके स्थानीय राजा भैररसने अपने गुरु वीरसेन मुनिकी प्रेरणासे यहांके चन्द्रनाथ मन्दिर को दान दिया था। सन् १४५१-५२ में यहांकी होस बसदि (त्रिभुवन-तिलक-चूडामणि व बड़ा मन्दिर) का ' भैरादेवी मण्डप ' नामसे प्रसिद्ध मुखमण्डप विजयनगर नरेश मल्लिकार्जुन इम्मडिदेवरायके राज्यमें बनाया गया था। विरूपाक्ष नरेश के राज्यमें उनके सामन्त विहरस ओडेयरने सन् १४७२-७३ में इसी बसदिकी भूमिदान दिया था। यहां सब मिलाकर अठारह बसदि (जिनमन्दिर) हैं, जिनमें सबसे प्रसिद्ध ' गुरु बसदि ' है जहां सिद्धान्त ग्रंथोंकी प्रतियां सुगन्धित हैं और जिनके कारण वह ' सिद्धान्त बसदि ' भी कहलाती है। यह नगर ' जैन काशी ' नामसे भी प्रसिद्ध है। यहां अब जैनियोंकी जनसंख्या बहुत कम रह गई है, किन्तु जैन संसारमें इसका पाबित्र्य कम नहीं हुआ। यहांकी गुरुपरंपरा और सिद्धान्त-रक्षाके लिये यह स्थान जैन धार्मिक इतिहासमें सदैव अमर रहेगा।

१ देखो Salatore's Mediaeval Jainism, P. 351 ff., and, Ancient Karnataka P. 410-11.

मूडबिद्रीके पंडित लोकनाथजी शास्त्रीने मूडबिद्रीका निम्न इतिहास लिखकर भेजनेकी कृपा की है। कनाडी भाषामें बांसको 'बिदिर' कहते हैं। बांसोंके समूह को छेदकर यहांके सिद्धान्त मंदिरका पता लगाया गया था, जिससे इस ग्रामका 'बिदुरे' नाम प्रसिद्ध हुआ। कनाडीमें 'मूड' का अर्थ पूर्व दिशा होता है, और पश्चिम दिशाका वाचक शब्द 'पडु' है। यहां मूल्की नामक प्राचीन ग्राम पडुबिदुरे कहलाता है, और उससे पूर्वमें होनेके कारण यह ग्राम मूडबिदुरे या मूडबिदुरे कहलाया। वंश और वेणु शब्द बांस के पर्यायवाची होनेसे इसका वेणुपुर अथवा वंशपुर नामसे भी उल्लेख किया गया है। अनेक व्रती साधुओंका निवासस्थान होनेसे इसका नाम व्रतिपुर या व्रतपुर भी पाया जाता है।

यहां की गुरुबसदि अपरनाम सिद्धान्त बसदिके सम्बन्धमें यह दंतकथा प्रचलित है कि लगभग एक हजार वर्ष पूर्व यहांपर बांसोंका सघन वन था। उस समय श्रवणबेलगुल (जैनबिद्री) से एक निर्ग्रन्थ मुनि यहां आकर पडुबस्ती नामक मंदिरमें ठहरे। पडुबस्ती नामक प्राचीन जिनमंदिर अब भी वहां विद्यमान है, और उस मंदिरसे सैकड़ों प्राचीन ग्रंथ स्वर्गीय भट्टारकजीने मठमें विराजमान किये हैं। एक दिन उक्त निर्ग्रन्थ मुनि जब बाहर शौचको गये थे तब उन्होंने एक स्थानपर एक गाय और व्याघ्रको परस्पर क्रीडा करते देखा, जिससे वे अत्यन्त विस्मित होकर उस स्थानकी विशेष जांच पड़ताल करने लगे। उसी खोजबीनके फलस्वरूप उन्हें एक बांसके भिरेमें छुपी हुई व पत्थरों आदिसे घिरी हुई पार्श्वनाथ स्वामीकी काले पाषाणकी नौ हाथ प्रमाण खड्गासन मूर्तिके दर्शन हुए। तत्पश्चात् जैनियों-केद्वारा उसका जीर्णोद्धार कराया गया, और उसी स्थानपर 'गुरुबसदि का निर्माण हुआ। उक्त मूर्तिके पादपीठपर उसके शक ६३६ (सन् ७१४) में प्रतिष्ठित किये जानेका उल्लेख पाया जाता है। उसके आगेका गद्दीमंडप (लक्ष्मी मंडप) सन् १५३५ में चोलसेठीद्वारा निर्मापित किया गया था। इस बसदिके निर्माण का व्यय छह करोड रुपया कहा जाता है जिसमें संभवतः वहां की रत्नमयी प्रतिमाओंका मूल्य भी सम्मिलित होगा। इस मन्दिरके गुप्तगृहमें सुवर्णकलशोंमें 'सिद्ध रस' स्थापित है, ऐसा भी कहते हैं।

एक किंवदन्ती है कि होशल-नरेश विष्णुवर्धनने सन् १११७ में वैष्णव धर्म स्वीकार करके हलेबीडु अर्थात् दोरसमुद्रमें अनेक जिन मन्दिरोंका ध्वंस कर डाला, व जैनधर्मपर अनेक अभ्य अत्याचार किये। उसी समय एक भयंकर भूकंप हुआ और भूमि फटकर एक विशाल गर्त वहां उत्पन्न होगया, जिसका संबंध नरेशके उक्त अत्याचारोंसे बतलाया जाता है। उनके उत्तराधिकारी नारासिंह और उनके पश्चात् वीर बल्लालदेवने जैनियोंके क्षोभको शान्त करनेके लिये नये मन्दिरोंका निर्माण, जीर्णोद्धार, भूमिदान आदि अनेक उपाय किये। वीर बल्लालदेवने तो अपने राज्यमें शान्ति-स्थापनाके लिये श्रवणबेलगुलसे भट्टारक चारुकीर्तिजी पंडिताचार्यको आमंत्रित किया। वे दोरसमुद्र

पहुँचे और उन्होंने अपनी विद्या व बुद्धिके प्रभावसे वहाँका सब उपद्रव शान्त किया, जिससे जैन-धर्मकी अच्छी प्रभावना हुई। इसका कुछ उल्लेख विळगीके शासन लेखमें भी पाया जाता है, जो इस प्रकार है—

“कर्नाटक-सिद्धलिहासनाधीश्वर-बल्लालरायं प्रार्थिते श्री चारुकीर्तिपंडिताचार्यर् इंतु कीर्तियं पडेदर”

तिबे रायननेदु ने—

लंबाचिबडे तन्न मंत्रजपविधियिनवं ॥

कुंबलकायिं सूळदु य—

शं बडेदेसककके पंडितार्यने नोंतं ॥

दोरसमुद्रसे चारुकीर्तिजी महाराज अपने शिष्योंसहित मूडविद्री आये और उन्होंने वहाँ गुरुपीठ (भट्टारक गद्दी) स्थापित की, यहाँ आते समय उन्होंने पासही नल्लूर ग्राममें भी भट्टारक गद्दी स्थापित की थी, किन्तु वर्तमानमें वहाँ कोई अष्टग भट्टारक नहीं हैं, वहाँके मठका सब प्रबन्ध मूडविद्री मठसे ही होता है। यह मूडविद्रीमें भट्टारक गद्दी स्थापित होनेका इतिहास है, जिसका समय सन् ११७२ ईस्वी बतलाया जाता है। तबसे भट्टारकोंका नाम चारुकीर्ति ही रखा जाता है, यद्यपि उसके साथ साथ कुछ स्वतंत्र नामों, जैसे वर्धमानसागर, अनन्तसागर, नेमि-सागर आदिका भी उल्लेख पाया जाता है। धवलदि सिद्धान्त ग्रंथोंकी प्रतियाँ यहाँ धारवाड जिलेके बंकापुरसे लाई गईं, ऐसी भी एक जनश्रुति है। इस मठसे दक्षिण कर्नाटकमें जैनधर्मका खूब प्रचार व उन्नति हुई। वर्तमानमें मठकी संपत्तिसे वार्षिक आय लगभग दस हजारकी है।

३ महाबंधकी खोज

१ खोजका इतिहास

षट्खंडागमका सामान्य परिचय उसके प्रथम दो भागोंमें प्रकाशित भूमिकाओंमें दिया जा चुका है^१। वहाँ हम बतला आये हैं कि धरसेनाचार्यसे आगमका उपदेश पाकर पुष्पदन्त और भूतबलि आचार्योंने उसकी छह खंडोंमें ग्रन्थरचना की, जिनमेंसे प्रथम पांच खंड उपलब्ध श्रीधवलकी प्रतियोंके अन्तर्गत पाये जाते हैं और छठे खंड महाबंधके सम्बन्धमें धवल तथा जय-धवलमें यह सूचना पाई जाती है कि महाबंध स्वयं भूतबलि आचार्यका रचा हुआ ग्रन्थ है, उसमें बंधविधानके चार प्रकारों प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेश का खूब विस्तारसे वर्णन किया गया है, तथा यह वर्णन इतना विशद और सर्वमान्य हुआ कि यतिवृषभ और वीरसेन जैसे आचार्योंने अपनी अपनी ग्रन्थरचनामें उसकी सूचनामात्र दे देना पर्याप्त समझा; उस विषयपर और कुछ विशेष कहनेकी उन्हें गुंजायश नहीं दिखी।

१ देखो लोकनाथशास्त्रीकृत मूडविद्रीय चरित (कनाडी)।

२ देखो प्रथम भाग, भूमिका पृ. ६३ आदि, व द्वि. भाग भूमिका पृ. १५ आदि.

इस महाबंधकी अभीतक कोई प्रति प्रकाशमें नहीं आई । किन्तु हम सब यह आशा करते रहे हैं कि मूडबिंदीके सिद्धान्तभवनमें जो महाधवल नामकी कनाडी प्रति ताडपत्रोंपर तृतीय सिद्धान्तग्रन्थ रूपमें सुरक्षित है, वही भूतबलिकृत महाबंध ग्रन्थ है । इस आशाका आधार अभीतक केवल हमारा अनुमान ही था, क्योंकि न तो कोई परीक्षक विद्वान् उस प्रतिका अच्छीतरह अवलोकन कर पाया था और न किसीने उसके कोई विस्तृत अवतरण आदि देकर उसका सुपरिचय ही कराया था । उस प्रतिका जो कुछ थोड़ासा परिचय उपलब्ध हुआ था, वह मूडबिंदीके पं. लोकनाथजी शास्त्रीकी कृपासे उनके वीरवाणीविलास जैन सिद्धान्त भवनकी प्रथम वार्षिक रिपोर्ट (१९३५) के भीतर पाया जाता था । उस परिचयमें दिये गये महाधवल प्रतिके प्रारंभिक भागके सूक्ष्म अवलोकनसे मुझे ज्ञात हुआ कि वह ग्रन्थरचना महाबंध खंडकी नहीं है, किन्तु संतकर्मके अन्तर्गत शेष अठारह अनुयोगद्वारोंकी एक ' पंचिका ' है, जिसे उसके कर्ताने ' पंचियरूपेण विवरणं सुमहत्त्वं ' कहा है । उन अवतरणोंसे महाबंधका कहीं कोई पता नहीं चला । मैंने अपनी इस आशंकाको एक लेखके द्वारा प्रकट किया और इस बातकी प्रेरणा की कि महाधवलकी प्रतिका शीघ्रही पर्यालोचन किया जाना चाहिए और महाबंधका पता लगानेका प्रयत्न करना चाहिये । इस लेखके फलस्वरूप मूडबिंदीमठके भट्टारकस्वामी व पंचोंने उस प्रतिकी जांचकी व्यवस्था की, और शीघ्र ही मुझे तारद्वारा सूचित किया कि महाधवल प्रतिके भीतर सत्कर्मपंचिका भी है, और महाबंध भी है । तत्पश्चात् वहांसे पं. लोकनाथजी शास्त्रीद्वारा संग्रह किये हुए उक्त प्रतिमेंके अनेक अवतरण भी मुझे प्राप्त हुए, जिनपरसे महाधवल प्रतिके अन्तर्गत ग्रन्थरचनाका यहां कुछ परिचय कराया जाता है ।

२ सत्कर्मपंचिका परिचय

महाधवल प्रतिके अन्तर्गत ग्रन्थरचनाके आदिमें ' संतकर्मपंचिका ' है, जिसकी उत्थानिका का अवतरण अनेक दृष्टियोंसे महत्वपूर्ण है । यद्यपि यह अवतरण पूर्व प्रकाशित धवलाके दोनों भागोंकी भूमिकाओंमें यथास्थान उद्धृत किया जा चुका है, तथापि यह उक्त रिपोर्टपरसे लिया गया था, और कुछ त्रुटित था । अब यह अवतरण हमें इस प्रकार प्राप्त हुआ है ।

वोच्छामि सत्कर्म पंचियरूपेण विवरणं सुमहत्त्वं ।

“ महाकर्मपयडिपाहुडस्स कदिवेदणाओ (दि-) चउब्बीसमणियोगहारेसु तत्थ कदिवेदणा त्ति जाणि अणियोगहारेणि वेदणाखंडमिह, पुणो पास.कम्म-पयडि-बंधण चत्तारि अणियोगहारेसु तत्थ बंध-बंध-णिउज्जणामणियोगेहि सह वरगणाखंडमिह, पुणो बंधविधाणणामणियोगो महाबंधस्मि, पुणो बंधगणियोगो खुदा-बंधमिह सप्पवंचेण परुविदाणि । पुणो तेहिंतो सेसट्टारसाणियोगहारेणि सत्तकर्मसे सव्वाणि परुविदाणि । त्तो वि तस्साइगंभीरत्तादो अत्थविससपदाणमत्थे थोरुद्धयेण पंचियसरूपेण भणिससामो । ”

इस उत्थानिकासे सिद्धान्तग्रन्थोंके सम्बन्धमें हमें निम्न लिखित अत्यन्त उपयोगी और महत्वपूर्ण सूचनाएं बहुत स्पष्टतासे मिल जाती हैं—

१ महाकर्मप्रकृतिपाहुडके चौबीस अनुयोगद्वारोंमेंसे प्रथम दो अर्थात् कृति और वेदना, वेदनाखंडके अन्तर्गत रचे गये हैं। फिर अगले स्पर्श, कर्म, प्रकृति और बंधनके चार भेदोंमेंसे बंध और बंधनीय वर्गणाखंडके अन्तर्गत हैं। बंधविधान महाबंधका विषय है, तथा बंधक खुदाबंध खंडमें सन्निहित है। इस स्पष्ट उल्लेखसे हमारी पूर्व बतलाई हुई खंड-व्यवस्थाकी पूर्णतः पुष्टि हो जाती है, और वेदनाखंडके भीतर चौबीसों अनुयोगद्वारोंको मानने तथा वर्गणाखंडको उपलब्ध धवलाकी प्रतियोंके भीतर नहीं माननेवाले मतका अच्छी तरह निरसन हो जाता है।

२ उक्त छह अनुयोगद्वारोंसे शेष अठारह अनुयोगद्वारोंकी ग्रन्थरचनाका नाम सत्कर्म (सत्कर्म) है, और इसी सत्कर्मके गंभीर विषयको स्पष्ट करनेके लिए उसके थोड़े थोड़े अवतरण लेकर उनके विषयपदोंका अर्थ प्रस्तुत ग्रंथमें पंचिकारूपसे समझाया गया है।

अब प्रश्न यह उपस्थित होता है कि शेष अठारह अनुयोगद्वारोंसे वर्णन करनेवाला यह सत्कर्म ग्रन्थ कौनसा है? इसके लिए सत्कर्मपंचिकाका आगेका अवतरण देखिए, जो इस प्रकार है-

तं जहा । तत्र ताव जीवद्वस्स पोगगलद्वस्समवलंबिय पज्जायेसु परिणमणाविहाणं उच्चदे-जीवद्वस्स दुविहं, संसारिजीवो मुक्कजीवो चेदि । तत्थ मिच्छतासंजमकसायजोगेहि परिणदसंसारिजीवो जीव-भव-खेत्त-पोगगल-विवाइसरूवकम्मपोगगले बंधियूण पच्छा तेहिंतो पुव्वुत्त-उच्चिवहफलसरूवपज्जायमणेयभेयभिण्णं संसरदो जीवो परिणमदि त्ति । एदेसिं पज्जायाणं परिणमणं पोगगलणिबंधणं होदि । पुणो मुक्कजीवस्स एवं-विध-णिबंधणं णत्थि, किंतु सत्थाणेण पज्जायंतरं गच्छदि । पुणो-

जस्स वा दव्वस्स सहावो दव्वंतरपडिबद्धो इदि ।

एदस्सत्थो-एत्थ जीवद्वस्स सहावो णाणदंसणाणि । पुणो दुविहजीवाणं णाणसहावविवक्खिद-जीवेहिंतो वदिरित्त-जीवपोगगलादि-सच्चदव्वानं परिच्छेदणसहावेण पज्जायंतरगमणनिबंधणं होदि । एवं दंसणं पि वत्तव्वं ।

यहां पंचिकाकार कहते हैं कि वहांपर अर्थात् उनके आधारभूत ग्रन्थके अठारह अधिकारोंमेंसे प्रथमानुयोगद्वार निबंधनकी प्ररूपणा सुगम है। विशेष केवल इतना है कि उस निबंधनका निक्षेप छह प्रकारसे बतलाया गया है। उनमें तृतीय अर्थात् द्रव्यनिक्षेपके स्वरूपकी प्ररूपणामें आचार्य इस प्रकार कहते हैं। जिसका खुलासा यह है कि यहां पर पुद्गलद्रव्यके अवलंबनसे जीवद्रव्यके पर्यायोंमें-परिणमन विधानका कथन किया जाता है। जीवद्रव्य दो प्रकारका है, संसारी व मुक्त। इनमें मिथ्यात्व, असंयम, कषाय और योगसे परिणत जीव संसारी है। वह जीवविपाकी, भवविपाकी, क्षेत्रविपाकी और पुद्गलविपाकी कर्मपुद्गलोंको बांधकर अनन्तर उनके निमित्तसे पूर्वोक्त छह प्रकारके फलरूप अनेक प्रकारकी पर्यायोंमें संसरण करता है, अर्थात् फिरता है। इन पर्यायोंका परिणमन पुद्गलके निमित्तसे होता है। पुनः मुक्तजीवके इस प्रकारका परिणमन नहीं पाया जाता है। किन्तु वह अपने स्वभावसे ही पर्यायान्तरको प्राप्त होता है। ऐसी स्थितिमें 'जस्स वा दव्वस्स सहावो दव्वंतरपडिबद्धो इदि' अर्थात् 'जिस द्रव्यका स्वभाव द्रव्यान्तरसे प्रतिबद्ध है' इति।

इस प्रकरणके मिलानके लिए हमने वीरसेन स्वामीके धवलान्तर्गत निबन्धन अधिकारको निकाला। वहां आदिमें ही निबन्धनके छह निक्षेपोंका कथन विद्यमान है और उनमें तृतीय द्रव्य-निक्षेपका कथन शब्दशः ठीक वही है जो पंजिकाकारने अपने अर्थ देनेसे ऊपरकी पंक्तिमें उद्धृत किया है और उसीका उन्होंने अर्थ कहा है। यथा—

निबन्धणेति अणियोगद्वारे निबन्धणं ताव अपयदुनिबन्धणगिराकरणद्वं गिक्खिवियस्व्वं । तं जहा-
णामनिबन्धणं, ठवणनिबन्धणं, दव्वणनिबन्धणं, खेत्तनिबन्धणं, कालुणनिबन्धणं, भावणनिबन्धणं चेदि छव्विद्वं निबन्धणं
होदि ।

इसके पश्चात् नाम और स्थापना निबन्धनका स्वरूप बतलाया गया है और उसके पश्चात् द्रव्यनिबन्धनका वर्णन इस प्रकार है—

जं दव्वं जाणि दव्वाणि अस्सिदूण परिणमदि, जस्स वा सदस्स (दव्वस्स) सहावो
दव्वंतरपडिबद्धो तं दव्वणनिबन्धणं । (धवला क. प्रति, पत्र १२६०)

प्रतिमें 'सदस्स' पद अशुद्ध है, वहां 'दव्वस्स' पाठ ही होना चाहिए। यहाँ वाक्यके ये शब्द 'जस्स वा दव्वस्स सहावो दव्वंतरपडिबद्धो' ठीक वे ही हैं, जो पंजिकामें भी पाये जाते हैं, और इन्हीं शब्दोंका पंजिकाकारने 'एत्थ जीवदव्वस्स सहावो णाणदंसणाणि' आदि वाक्योंमें अर्थ किया है। यथार्थतः जितना वाक्यांश पंजिकामें उद्धृत है, उतने परसे उसका अर्थ व्यवस्थित करना कठिन है। किन्तु धवलाके उक्त पूरे वाक्यको देखनेमात्रसे उसका रहस्य एकदम खुल जाता है। इसपरसे पंजिकाकारकी शैली यह जान पड़ती है कि आधारग्रन्थके सुगम प्रकरणको तो उसके अस्तित्वकी सूचनामात्र देकर छोड़ देना, और केवल कठिन स्थलोंका अभिप्राय अपने शब्दोंमें समझाकर और उसी सिलसिलेमें मूलके विवक्षितपदोंको लेकर उनका अर्थ कर देना। इस परसे पंजिकाकारकी उस प्रतिज्ञाका भी स्पष्टीकरण हो जाता है, जहां उन्होंने कहा है कि 'तस्साहगंभीरत्तादो अस्थविसमपदानमथे थोहद्धयेण पंचियसरूवेण भणित्तामो' अर्थात् उन अठारह अनुयोगद्वारोंका विषय बहुत गहन होनेसे हम उनके अर्थकी दृष्टिसे विषमपदोंका व्याख्यान करते हैं, और ऐसा करनेमें मूलके केवल थोड़ेसे उद्धरण लेंगे। यही पंचिकाका स्वरूप है। मूलग्रन्थके वाक्योंको अपनी वाक्यरचनामें लेकर अर्थ करते जाना अन्य टीकाग्रन्थोंमें भी पाया जाता है। उदाहरणार्थ, विधानन्दिकृत अष्टसहस्रीमें अकलंकदेवकृत अष्टशती इसीप्रकार गुंथी हुई है। पंजिकाकी यह विशेषता है कि उसमें पूरे ग्रन्थका समावेश नहीं किया जाता, केवल विषमपदोंको ग्रहण कर समझाया जाता है।

सत्कर्मपंचिकाके उक्त अवतरणके पश्चात् शास्त्रीजीने लिखा है—

“इस प्रकार छह द्रव्योंके पर्यायान्तरका परिणमन विधान-विवरण होनेके बाद निम्न प्रकार प्रतिज्ञा वाक्य है—

संपहि पक्कमाहियारस्स उक्कस्सपक्कमदव्वस्स उत्तप्पाबहुगविचरणं कस्सामो । तं जहा—अप्पक्खण-
माणस्स उक्कस्सपक्कमदव्वं थोवं । कुदो ?” इत्यादि ।

आगे चलकर कहा गया है—

चत्वारि आडगाणं णीनुष्णागोदाणं पुणो एक्कारस-पयडीणं सगसेसल्लपणबन्धपयडिसूचयणमिदि ।
चउसट्टिपयडीणमप्पाबहुगं गंधयारेहि परूविदं । अम्हेहि पुणो सूचिदपयडीणमप्पाबहुगं गंधउत्तप्पाबहुगबलेण
परूविदं । एवं पक्कमाणिओगो गदो ।

आगे चलकर पुनः आया है—

एत्थ पयडीसु जहणणपक्कमदब्बाणं अप्पाबहुगं उब्बदे । तं जहा—सव्वत्थोवमपच्चक्खाणमाणे पक्कम-
दब्बं । कुदो ? इत्यादि ।

यहां उपर्युक्त निबंधन अधिकारके पश्चात् प्रक्रम अधिकारका प्रारम्भ बतलाया है और क्रमशः उसके उत्कृष्ट और जघन्य प्रक्रम द्रव्यके अल्पबहुत्वका कथन किया है, तथा इस बातकी सूचना की है कि चौंसठ प्रकृतियोंका अल्पबहुत्व ग्रन्थकारने स्वयं कर दिया है, अतः हम यहां केवल उनके द्वारा सूचित प्रकृतियोंका अल्पबहुत्व उक्त ग्रंथोक्त अल्पबहुत्वके बलसे करते हैं । ध्वलामें भी निबंधन अनुयोगद्वारके पश्चात् आठवें अनुयोग प्रक्रमका वर्णन है, और वहां उत्तरप्रकृति-प्रक्रमके उत्कृष्टउत्तरप्रकृतिप्रक्रम और जघन्यउत्तरप्रकृतिप्रक्रम ऐसे दो भेद करके वर्णन प्रारम्भ किया गया है । तथा वहां वह सब अल्पबहुत्व पाया जाता है जो पंचिकाकारने स्वीकार किया है और जिसके सम्बन्धमें शंकादि उठाकर उचित समाधान किया है ।

उत्तरपयडिपक्कमो दुविहो, उक्कस्सउत्तरपयडिपक्कमो जहणणउत्तरपयडिपक्कमो चेदि । तत्थ
उक्कस्सए पयदं । सव्वत्थोवं अपच्चक्खाणकसायमाणपदेसगं । अपच्चक्खाणकोथे त्रिसेसाहिया ।.....
जहणणए पयदं । सव्वत्थोवमपच्चक्खाणमाणे पक्कमदब्बं । कोथे त्रिसेसाहिया ।..... एवं पक्कमे त्ति
समत्तमणिओगहारं । (ध्वला क. प्रति, पत्र १२६६-६७)

प्रक्रम अधिकारके पश्चात् पंचिकामें उपक्रमका वर्णन इस प्रकार प्रारंभ होता है—

उवक्कमो चउत्विहो—बंधणोवक्कमो उदीरणोवक्कमो उवसामणोवक्कमो विपरिणामोवक्कमो चेदि । तत्थ
बंधणोवक्कमो चउत्विहो पयडि-ट्टिदि-अणुभाग-पदेसबंधणोवक्कमणभेदेण । पुणो एदेसिं चउण्णं पि बंधणो-
वक्कमाणं अत्थो जहा सत्तकम्मपाहुडम्मि उत्तो तद्वा वत्तब्धो । सत्तकम्मपाहुडम्मि णाम कदमं !
महाकम्मपयडिपाहुडस्स चउत्तवीसमणियोगहारेसु विदियाहियारो वेदणा णाम । तस्स सोल्लसाणियोगहारेसु
चउत्थ-छट्टम-सत्तमणियोगहाराणि दब्ब-काल-भावविहाणणामधेयाणि । पुणो तद्वा महाकम्मपयडिपाहुडस्स
पंचमो पयडिणामाहियारो । तत्थ चत्वारि अणियोगहाराणि अट्टकम्मार्णं पयडि-ट्टिदि-अणुभाग-पदेससत्ताणि
परूविय सूचिदुत्तरपयडि-ट्टिदि-अणुभाग-पदेससत्तादो । एदाणि सत्तकम्मपाहुडं णाम । मोहणीयं पडुच्च
कसायपाहुडं पि होदि । (सत्कर्मपंचिका)

यहां उपक्रमके चार भेदोंका उल्लेख करके प्रथम बंधन उपक्रमके, पुनः प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशरूप चार प्रभेदोंके विषयमें यह बतलाया गया है कि इनका अर्थ जिसप्रकार संतकम्मपाहुडमें किया गया है उसप्रकार करना चाहिए । उस संतकम्मपाहुडसे भी प्रकृतमें वेदना-नुयोगद्वारके तीन और प्रकृति अनुयोगद्वारके चार अधिकारोंसे अभिप्राय है । यहां भी पंचिकाकार स्पष्टतः ध्वलाके निम्न उल्लिखित प्रकरणका विवरण कर रहे हैं—

जो सो कम्मोवक्कमो सो चउव्विहो, बंधणउवक्कमो उदीरणउवक्कमो उवसामणउवक्कमो विपरिणामउवक्कमो चेदि । जो सो बंधणउवक्कमो सो चउव्विहो, पयडिबंधणउवक्कमो ठिदिबंधणउवक्कमो अणुभागबंधणउवक्कमो पदेसबंधणउवक्कमो चेदि ।..... एत्थ एदेसिं चउण्हपुवक्कमाणं जहा संतकम्मपयडिपाहुड्ढे परूविदं तहा परूवेयव्वं । जहा महाबंधे परूविदं, तहा परूवणा एत्थ किण्ण कीरदे ? ण, तस्स पदमसमयबंधमिं चैव वावारादो । ण च तमेत्थ वोतुं जुत्तं, पुणरुत्तदोसप्पसंगादो । (धवला क. पत्र १२६७)

यहां जो बंधनके चारों उपक्रमोंका प्ररूपण महाबंधके अनुसार न करके संतकम्मपाहुड्ढके अनुसार करनेका निर्देश किया गया है, उसीका पंचिकाकारने स्पष्टीकरण किया है कि महाकम्मपयडिपाहुड्ढके किन किन विशेष अधिकारोंसे यहां संतकम्मपाहुड्ढ पदद्वारा अभिप्राय है ।

पंचिकामें उपक्रम अधिकारके पश्चात् उदयअनुयोगद्वारका कथन है जैसा उसके अन्तिम भागके अवतरणसे सूचित होता है । यथा--

उदयाणियोगद्वारं गदं ।

यहांके कोई विशेष अवतरण हमें उपलब्ध नहीं हुए । अतः धवलासे मिलान नहीं किया जा सका । तथापि उपक्रमके पश्चात् उदय अनुयोगद्वारका प्ररूपण तो है ही । उक्त पंचिका यहीं समाप्त हो जाती है । इससे जान पड़ता है कि इस पंचिकामें केवल निबंधन, प्रक्रम, उपक्रम और उदय, इन्हीं चार अधिकारोंका विवरण है । शेष मोक्ष आदि चौदह अनुयोगोंका उसमें कोई विवरण यहां नहीं है । इससे जान पड़ता है कि यह पंचिका भी अधूरी ही है, क्योंकि पंचिकाकी उत्थानिकामें दी गई सूचनासे ज्ञात होता है कि पंचिकाकार शेष अठारहों अधिकारोंकी पंचिका करनेवाले थे । शेष ग्रन्थभाग उक्त प्रतिमें छूटा हुआ है, या पंचिकाकारद्वारा ही किसी कारणसे रचा नहीं गया, इसका निर्णय वर्तमानमें उपलब्ध सामग्री परसे नहीं हो सकता ।

यह पंचिका किसकी रची हुई है, कब रची गई, इत्यादि खोजकी सामग्रीका भी अभी अभाव है । पंचिका प्रतिकी अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है--

श्री जिनपदकमलमधुव्रत-

ननुपम सत्पात्रदाननिरतं सम्य-

क्खनिधानं किंसे वधू-

मनसिजनेने शान्तिनाथ नेसेदं धरेयोल् ॥

धरेयोल्.....पुरजिदनुपमं चारुचारित्रनाहुव्रतधैर्यं सादिपर्यत रदिय नेत्तिसि पंपिगुणानीकदिं
.....सज्जकियादेशदिं सत्कर्मवा पंचियं विस्तरदिं श्रीमावणंदिन्नतिगे बरेसिदं रागदिं शान्तिनाथं ॥

उद्विदमुद्विं सत्क-

मंदि पंचियननुपमाननिर्वाणसुख-

प्रदमं बरेयिसि शान्तं

मदरहितं माघर्णदियतिपतिगिसं ॥

श्री माघर्णदिसिद्धान्तदेवर्षे सत्कर्मपंचियं श्रीमद्दुदयादित्यं प्रतिस्मानं बरेदं ॥ मंगलं महा ॥

पं. लोकनाथजी शास्त्रीकी सूचनानुसार इस " अन्तिम प्रशस्तिमें दो तीन कानडोंमें

कंदवृत्त पद्य हैं जो कि शान्तिनाथ राजाके प्रशंसात्मक पद्य हैं । उक्त राजाने ' सत्कर्मपंचिका ' को विस्तारसे लिखवाकर भक्तिके साथ श्री माधनंदाचार्यजीको दे दिया । प्रति लिखनेवाला श्री उदयादित्य है । ”

इसके ताड़पत्रोंकी संख्या २७ और ग्रन्थ-प्रमाण लगभग ३७२६ श्लोकके है ।

३ महाबंध-परिचय

मूढ़बिंद्रीकी महाधवल नामसे प्रसिद्ध ताड़पत्रीय प्रतिके पत्र २७ पर पूर्वोक्त सत्कर्मपंचिका समाप्त हुई है । २८ वां ताड़पत्र प्राप्त नहीं है । आगे जो अधिकार-समाप्तिकी व नवीन अधिकार-प्रारंभकी प्रथम सूचना पाई जाती है वह इसप्रकार है—

एवं पगदिसमुक्त्तिका समत्तं (ता) । जो सो सबबंधो णो सबबंधो...इत्यादि ।

तया ' एवं कालं समत्तं ' ' एवं अंतरं समत्तं ' इत्यादि ।

पं. लोकनाथजी शास्त्रीके शब्दोंमें 'इस रीतिसे भंगविचय, भागाभाग, परिमाण, क्षेत्र, स्पर्शन, काल, अंतर, भाव और अल्पबहुत्वका वर्णन है' । अल्पबहुत्वकी समाप्ति-पुष्पिका इसप्रकार है—

एवं परत्थाणअद्वाअप्पाबहुगं समत्तं । एवं पगदिवंधो समत्तो ।

इस थोड़ेसे विवरणसे ही अनुमान हो जाता है कि प्रस्तुत ग्रंथरचना महाबंधके विषयसे संबन्ध रखती है । हम प्रथम भागकी भूमिकाके पृष्ठ ६७ पर धवला और जयधवलाके दो उद्धरण दे चुके हैं, जिनमें कहा गया है कि महाबंधका विषय बंधविधानके प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेश, इन चारों प्रकारोंका विस्तारसे वर्णन करना है । इन प्रकारोंका कुल और विषय-विभाग धवला प्रथम भागके पृष्ठ १२७ आदि पर पाया जाता है जहां जीवहाणकी प्ररूपणाओंका उद्गम-स्थान बतलाते हुए कहा गया है—

बंधाविहाणं चउत्तिवहं । तं जहा-पयडिवंधो द्विविंधो अणुभागबंधो पदेसबंधो चेदि । तथ जो सो पयडिवंधो सो दुविहो, मूलपयडिवंधो उत्तरपयडिवंधो चेदि । तथ जो सो मूलपयडिवंधो सो थपो । जो सो उत्तरपयडिवंधो सो दुविहो, एगेगुत्तरपयडिवंधो अब्बोगाठउत्तरपयडिवंधो चेदि । तथ जो सो एगेगुत्तर-पयडिवंधो तस्स चउवीस अणियोगहाराणि णादस्वाणि भवंति । तं जहा-समुक्त्तिका सबबंधो णोसबबंधो उक्कस्सबंधो अणुक्कस्सबंधो जहण्णबंधो अजहण्णबंधो सादियबंधो अणादियबंधो धुवबंधो अद्धवबंधो बंध-साभिचविचयो बंधकालो बंधंतरं बंधसाणियासो णाणाजीवेहि भंगविचयो भागाभागाणुगमो परिमाणणुगमो वेत्ताणुगमो पोसणाणुगमो कालाणुगमो अंतराणुगमो भावाणुगमो अप्पाबहुगाणुगमो चेदि ।

यहां प्रकृतिबंध विधानके एकैकोत्तरप्रकृतिबंधके अन्तर्गत जो अनुयोगद्वार गिनाये गये हैं, उनमेंसे आदिके समुत्कीर्तना सर्वबंध और नोसर्वबंध, इन तीन, तथा अन्तके भंगविचयादि नौ अनुयोग-द्वारोंका उल्लेख महाधवलाकी उक्त ग्रंथरचनाके परिचयमें भी पाया जाता है । अतः यह भाग महाबंधके प्रकृतिबंधविधान अधिकारकी रचनाका अनुमान किया जा सकता है । यह प्रकृतिबंध ताड़पत्र ५० पर अर्थात् २३ पत्रोंमें समाप्त हुआ है ।

प्रकृतिबंध अधिकारकी समाप्तिके पश्चात् महाधवलमें ग्रंथरचना इसप्रकार है—

‘ णमो अरहंताणं ’ इत्यादि

एत्थो ठिदिबंधो दुविधो, मूलपगदिठिदिबंधो चेव उत्तरपगदिठिदिबंधो चेव । एत्थो मूलपगदिठिदिबंधो पुव्वगमणिज्जो । तत्थ इमाणि चत्तरि अणियोगद्वाराणि णाद्ववाणि भवन्ति । तं जहा—ठिदिबंधटाणपरूवणा, गिसेयपरूवणा अझाकंडयपरूवणा अप्पाबहुगेत्ति ।..... एवं भूयो ठिदिअप्पाबहुगं समत्तं । एवं मूलपगदिठिदिबंधो (धे) चउव्वीसमणियोगद्वारं समत्तं ।

भुजगारबंधेत्ति ।.....

‘ इसप्रकार भुजगारबंध प्रारंभ होकर काल, अन्तर इत्यादि अल्पबहुत्व तक चला गया है ।’

एवं जीवसमुदाहरेत्ति समत्तमणियोगद्वाराणि । एवं ठिदिबंधं समत्तं ।

बंधविधानके इस स्थितिवंधनामक द्वितीय प्रकारका भी कुछ परिचय धवला प्रथम भागसे मिलता है । पृ. १३० पर कहा गया है—

ठिदिबंधो दुविधो, मूलपयडिठिदिबंधो उत्तरपयडिठिदिबंधो चेदि । तत्थ जो सो मूलपयडिठिदिबंधो सो थप्पो । जो सो उत्तरपयडिठिदिबंधो तस्स चउव्वीस अणियोगद्वाराणि । तंजहा—अद्धाछेदो, सव्वबंधो..... इत्यादि ।

यहां स्थितिवंधके मूलप्रकृति और उत्तरप्रकृति, इसप्रकार दो भेद करके उनमेंसे प्रथमको अप्रकृत होनेके कारण छोड़कर प्रस्तुतोपयोगी द्वितीय भेदके चौबीस अनुयोगद्वार बतलाये गये हैं । इनसे पूर्वोक्त महाधवलकी रचनाके महाबंधसे संबंधकी सूचना मिलती है ।

यह स्थितिवंध ताड़पत्र ५१ से ११३ अर्थात् ६३ पत्रोंमें समाप्त हुआ है ।

इनसे आगे महाधवलमें क्रमशः अनुभागबंध और फिर प्रदेशबंधका विवरण पाया जाता है । यथा—

एवं जीवसमुदाहरेत्ति समत्तमणियोगद्वाराणि । एवं उत्तरपगदिअणुभागबंधो समत्तो । एवं अणुभागबंधो समत्तो । × × × ×

जो सो पदेसबंधो सो दुविधो, मूलपगदिपदेसबंधो चेव उत्तरपगदिपदेसबंधो चेव । एत्तो मूलपगदिपदेसबंधो पुव्वं गमणीयो भागाभागसमुदाहारो अट्टविधबंधगस्स आउगभावो × × × × एवं अप्पाबहुगं समत्तं । एवं जीवसमुदाहरेत्ति समत्तमणियोगद्वारं । एवं पदेसबंधं समत्तं ।

एवं बंधविधानेत्ति समत्तमणियोगद्वारं । एवं चट्टुबंधो समत्तो भवदि ।

अनुभागबंध ताड़पत्र ११४ से १६९ अर्थात् ५६ पत्रोंमें, व प्रदेशबंध १७० से २१९ अर्थात् ५० पत्रोंमें समाप्त हुआ है ।

यहीं महाधवल प्रतिकी ग्रंथरचना समाप्त होती है । इस संक्षिप्त परिचयसे स्पष्ट है कि महाधवल प्रतिके उत्तर भागमें बंधविधानके चारों प्रकारों—प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशका विस्तारसे वर्णन है, तथा उनके भेद-प्रभेदों व अनुयोगद्वारोंका विवरण धवलादि ग्रंथोंमें संकेतित विषय-विभागके अनुसार ही पाया जाता है । अतएव यहीं भूतबलि आचार्यकृत महाबंध हो सकता है । दुर्भाग्यतः इसके प्रारंभका ताड़पत्र अप्राप्य होनेसे तथा यथेष्ट अवतरण न मिलनेसे जितनी जैसी चाहिये उतनी छानबीन ग्रंथकी फिर भी नहीं हो सकी । तथापि अनुभागबंध-विधानकी समाप्तिके

पश्चात् प्रतिमें जो पांच छह कनाड़ीके कंद-वृत्त पद्य पाये जाते हैं, उनमेंसे एक शास्त्रीजीने पूरा उद्धृत करके भेजनेकी कृपा की है, जो इस प्रकार है—

सकलधरित्रीविनुत—
प्रकटितयधीने मल्लिकम्बे बरेसि सत्पु-
ण्याकर-महाबंधद पु—
स्तकं श्रीमाघनंदिमुनिगलि गितळ

इस पद्यमें कहा गया है कि श्रीमती मल्लिकाम्बा देवीने इस सत्पुण्याकर महाबंधकी पुस्तकको लिखाकर श्रीमाघनन्दि मुनिको दान की। यहां हमें इस ग्रन्थके महाबंध होनेका एक महत्त्वपूर्ण प्राचीन उल्लेख मिल गया। शास्त्रीजीकी सूचनानुसार शेष कनाड़ी पद्योंमेंसे दो तीनोंमें माघनन्दाचार्यके गुणोंकी प्रशंसा की गई है, तथा दो पद्योंमें शान्तिसेन राजा व उनकी पत्नी मल्लिकाम्बा देवीका गुणगान है, जिससे महाबंध प्रतिका दान करनेवाली मल्लिकाम्बा देवी किसी शान्तिसेन नामक राजाकी रानी सिद्ध होती हैं। ये शान्तिसेन व माघनन्दि निःसंदेह वे ही हैं जिनका सत्कर्मपंजिकाकी प्रशस्तिमें भी उल्लेख आया है। प्रतिके अन्तमें पुनः ५ कनाड़ीके पद्य हैं जिनमेंसे प्रथम चारमें माघनन्दि मुनीन्द्रकी प्रशंसा की गई है व उन्हें 'यतिपति' 'व्रतनाथ' व 'व्रतिपति' तथा 'सैद्धान्तिकाप्रेसर' जैसे विशेषण लगाये गये हैं। पांचवें पद्यमें कहा गया है कि रूपवती सेनवधूने श्रीपंचमीव्रतके उद्यापनके समय (यह शास्त्र) श्रीमाघनन्दि व्रतिपतिको प्रदान किया। यथा—

श्रीपंचमियं नोतुध्यापनेयं माडि बरेसि राध्यांतमना।
रूपवती सेनवधू जितकोप श्रीमाघनन्दि व्रतिपति गितळ ॥

यहां सेनवधूसे शान्तिसेन राजाकी पत्नीका ही अभिप्राय है। नामके एक भागसे पूर्णनामको सूचित करना सुप्रचलित है।

यह अन्तकी प्रशस्ति वीरवाणीविलास जैनसिद्धान्त भवनकी प्रथम वार्षिक रिपोर्ट (१९३५) में पूर्ण प्रकाशित है।

उक्त परिचयमें प्रतिके लिखाने व दान किये जानेका कोई समय नहीं पाया जाता। शान्तिसेन राजाका भी इतिहासमें जरूरी पता नहीं लगता। माघनन्दि नामके मुनि अनेक हुए हैं जिनका उल्लेख श्रवणबेरगोला आदिके शिलालेखोंमें पाया जाता है। जब शान्तिसेन राजाके उल्लेखादि संबन्धी पूर्ण पद्य प्राप्त होंगे, तब धीरे धीरे उनके समयादिके निर्णयका प्रयत्न किया जा सकेगा।

हम ऊपर कह आये हैं कि इस प्रतिमें महाबंध रचनाके प्रारंभका पत्र २८ वां नहीं है। शास्त्रीजीकी सूचनानुसार प्रतिमें पत्र नं. १०९, ११४, १७३, १७४, १७६, १७७, १८३, १८४, १८५, १८६, १८८, १९७, २०८, २०९ और २१२ भी नहीं हैं। इसप्रकार कुल १६ पत्र नहीं मिल रहे हैं। किन्तु शास्त्रीजीकी सूचना है कि कुछ लिखित ताड़पत्र बिना पत्रसंख्याके भी प्राप्त हैं। संभव है यदि प्रयत्न किया जाय तो इनमेंसे उक्त त्रुटिकी कुछ पूर्ति हो सके।

४ उत्तरप्रतिपत्ति और दक्षिणप्रतिपत्ति पर कुछ और प्रकाश

प्रथम भागकी प्रस्तावनामें^१ हम वर्तमान ग्रंथभाग अर्थात् द्रव्यप्रमाणप्ररूपणामें कै तथऱ अन्यत्रसे तीन चार ऐसे अवतरणोंका परिचय करा चुके हैं जिनमें ' उत्तरप्रतिपत्ति ' और ' दक्षिण-प्रतिपत्ति ' इसप्रकारकी दो भिन्न भिन्न मान्यताओंका उल्लेख पाया जाता है । वहाँ हम कह आये हैं कि ' हमने इन उल्लेखोंका दूसरे उल्लेखोंकी अपेक्षा कुछ विस्तारसे परिचय इस कारणसे दिया है क्योंकि यह उत्तर और दक्षिण प्रतिपत्तिका मतभेद अत्यन्त महत्वपूर्ण और विचारणीय है । संभव है इनसे धवलाकारका तात्पर्य जैनसमाजके भीतरकी किन्हीं विशेष सांप्रदायिक मान्यताओंसे ही हो ' यहाँ हमारा संकेत यह था कि संभवतः यह श्वेताम्बर और दिगम्बर मान्यता भेद हो और यह बात उक्त प्रस्तावनाके अन्तर्गत अंग्रेजी वक्तव्यमें मैंने व्यक्त भी कर दी थी कि—

“ At present I am examining these views a bit more closely. They may ultimately turn out to be the Svetambara and Digambara Schools ”.

उक्त अवतरणोंमें दक्षिणप्रतिपत्तिको ' पवाइज्जमाण ' और ' आयरियपरंपरागय ' भी कहा है । अब श्रीजयधवलमें एक उल्लेख हमें ऐसा भी दृष्टिगोचर हुआ है जहाँ ' पवाइज्जंत ' तथा ' आइरियपरंपरागय ' का स्पष्टार्थ खोलकर समझाया गया है और अज्जमंसुके उपदेशको वहाँ ' अपवाइज्जमाण ' तथा नागहस्ति क्षमाश्रमणके उपदेशको ' पवाइज्जंत ' बतलाया है । यथा—

को पुण पवाइज्जंतोवएसो णाम वुत्तमेदं ? सव्वाइरियसम्मदो चिरकालमन्वोच्छिण्णसंपदायकमेणा-
गच्छमाणो जो सिस्सपरंपराए पवाइज्जदे पणविज्जदे सो पवाइज्जंतोवएसो ति भण्णदे । अथवा अज्जमंसु-
भयवंतानमुवएसो एत्थापवाइज्जमाणो णाम । नागहस्तिखवणाणमुवएसो पवाइज्जंतो ति घेत्तवो ।

(जयधवला अ. पत्र ९०८)

अर्थात् यहाँ जो ' पवाइज्जंत ' उपदेश कहा गया है उसका अर्थ क्या है ? जो सर्व आचार्योंको सम्मत हो, चिरकालसे अव्युच्छिन्नसंप्रदाय-क्रमसे आ रहा हो और शिष्यपरंपरासे प्रचलित और प्रज्ञापित किया जा रहा हो वह ' पवाइज्जंत ' उपदेश कहा जाता है । अथवा, भगवान् अज्जमंसुका उपदेश यहाँ (प्रकृत विषयपर) ' अपवाइज्जमाण ' है, तथा नागहस्ति-क्षपणका उपदेश ' पवाइज्जंत ' है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये ।

अज्जमंसु और नागहस्तिके भिन्न मतोपदेशोंके अनेक उल्लेख इन सिद्धान्त ग्रन्थोंमें पाये जाते हैं, जिनकी कुछ सूचना हम उक्त प्रस्तावनामें दे चुके हैं । जान पड़ता है कि इन दोनों आचार्योंका जैनसिद्धान्तकी अनेक सूक्ष्म बातोंपर मतभेद था । जहाँ वीरसेनस्वामीके संमुख ऐसे मतभेद उपस्थित हुए, वहाँ जो मत उन्हें प्राचीन परंपरागत ज्ञात हुआ, उसे ' पवाइज्जमाण ' कहा ।

१ षट्खंडागम भाग, १ भूमिका पृष्ठ ५७.

२ देखो पृ. ९१, ९४, ९८ आदि, मूल व अनुवाद.

तथा जिस मतकी उन्हें प्रामाणिक प्राचीन परंपरा नहीं मिली, उसे 'अपवाइज्जमाण' कहा है। प्रस्तुत उल्लेखसे अनुमान होता है कि उक्त प्रतिपत्तियोंसे उनका अभिप्राय किन्हीं विशेष गद्दी हुई मत-धाराओंसे नहीं था। अर्थात् ऐसा नहीं था कि किसी एक आचार्यका मत सर्वथा 'अपवाइज्जमाण' और दूसरेका सर्वथा 'पवाइज्जमाण' हो। किंतु इन्हें दक्षिणप्रतिपत्ति और उत्तरप्रतिपत्ति क्यों कहा है यह फिर भी विचारणीय रह जाता है।

५ णमोकारमंत्रके सादित्व-अनादित्वका निर्णय।

द्वितीय भागकी प्रस्तावना (पृ. ३३ आदि) में हम प्रगट कर चुके हैं कि धवलाकारने जीवट्टाणखंड व वेदनाखंडके आदिमें जो शास्त्रके निबद्धमंगल व अनिबद्धमंगल होनेका विचार किया है उसका यह निष्कर्ष निकलता है कि जीवट्टाणके आदिमें णमोकारमंत्ररूप मंगल भगवान् पुष्पदंतकृत होनेसे यह शास्त्र निबद्धमंगल है, किन्तु वेदनाखंडके आदिमें 'णमो जिणाणं' आदि नमस्कारात्मक मंगलवाक्य होनेपर भी वह शास्त्र अनिबद्धमंगल है, क्योंकि वे मंगलसूत्र स्वयं भूतबलिकी रचना न होकर गौतमगणधरकृत हैं। वेदनाखंडमें भी निबद्धमंगलत्व तभी माना जा सकता है, जब वेदनाखंडको महाकर्मप्रकृतिपाण्डु मान लिया जाय और भूतबलि आचार्यको गौतम गणधर, अन्य किसी प्रकारसे निबद्धमंगलत्व सिद्ध नहीं हो सकता। इस विवेचनसे धवलाकारका यह मत स्पष्ट समझमें आता है कि उपलब्ध णमोकारमंत्रके आदि रचयिता आचार्य पुष्पदंत ही हैं।

प्रथम भागमें उक्त विवेचनसंबन्धी मूलपाठका संपादन व अनुवाद करते समय हस्तलिखित प्रतियोंका जो पाठ हमारे सन्मुख उपस्थित था उसका सामञ्जस्य बैठाना हमारे लिये कुछ कठिन प्रतीत हुआ, और इसीसे हमें वह पाठ कुछ परिवर्तित करके मूलमें रखना पड़ा। तथापि प्रतियोंका उपलब्ध पाठ यथावत् रूपसे वहीं पादटिप्पणमें दे दिया था। (देखो प्रथम भाग पृ. ४१)। किंतु अब मूडबिंदीकी ताड़पत्रीय प्रतिसे जो पाठ प्राप्त हुआ है वह भी हमारे पादटिप्पणमें दिये हुए प्रतियोंके पाठके समान ही है। अर्थात्—

“ जो सुत्तस्सादीए सुसकत्तारेण कयदेवताणमोक्कारो तं णिबद्धमंगलं । जो सुत्तस्सादीए सुसकत्तारेण णिबद्धदेवताणमोक्कारो तमणिबद्धमंगलं ”

अब वेदनाखंडके आदिमें दिये हुए धवलाकारके इसी विषयसंबन्धी विवेचनके प्रकाशमें यह पाठ समुचित जान पड़ता है। इसका अर्थ इसप्रकार होगा—

“ जो सूत्रग्रंथके आदिमें सूत्रकारद्वारा देवतानमस्कार किया जाता है, अर्थात् नमस्कार-वाक्य स्वयं रचकर निबद्ध किया जाता है उसे निबद्धमंगल कहते हैं। और जो सूत्रग्रंथके आदिमें सूत्रकारद्वारा देवतानमस्कार निबद्ध कर दिया जाता है, अर्थात् नमस्कारवाक्य स्वयं न रचकर किसी अन्य आचार्यद्वारा पूर्वरचित नमस्कारवाक्य निबद्ध कर दिया जाता है, उसे अनिबद्धमंगल कहते हैं। ”

इसप्रकार मूडबिद्रीकी प्रति व प्रचलित प्रतियोंके पाठकी पूर्णतया रक्षा हो जाती है, उसका वेदनाखंडके आदिमें किये गये विवेचनसे ठीक सामंजस्य बैठ जाता है, तथा उससे धवलाकारके णमोकारमंत्रके कर्तृत्वसंबन्धी उस मतकी पूर्णतया पुष्टि हो जाती है जिसका परिचय हम विस्तारसे गत द्वितीय भागका प्रस्तावनामें करा आये हैं। णमोकारमंत्रके कर्तृत्वसंबन्धी इस निष्कर्ष-द्वारा कुछ लोगोंके मतसे प्रचलित एक मान्यताको बड़ी भारी ठेस लगती है। वह मान्यता यह है कि णमोकारमंत्र अनादिनिधन है, अतएव यह नहीं माना जा सकता कि उस मंत्रके आदिकर्ता पुष्पदन्ताचार्य हैं। तथापि धवलाकारके पूर्वोक्त मतके परिहार करनेका कोई साधन व प्रमाण भी अबतक प्रस्तुत नहीं किया जा सका। गंभीर विचार करनेसे ज्ञात होता है कि णमोकारमंत्रसंबन्धी उक्त अनादिनिधनत्वकी मान्यता व उसके पुष्पदन्ताचार्यद्वारा कर्तृत्वकी मान्यतामें कोई विरोध नहीं है। भावकी (अर्थकी) दृष्टिसे जबसे अरिहंतादि पंच परमेश्वरीकी मान्यता है तभीसे उनको नमस्कार करनेकी भावना भी मानी जा सकती है। किंतु 'णमो अरिहंताणं' आदि शब्द-रचनाके कर्ता पुष्पदन्ताचार्य माने जा सकते हैं। इस बातकी पुष्टिके लिये मैं पाठकोंका ध्यान श्रुतावतारसंबन्धी कथानककी ओर आकर्षित करता हूँ। धवला, प्रथम भाग, पृ. ५५ पर कहा गया है कि—

‘सुत्तमोहणं अत्थदो तिस्थयरादो, गंथदो गणधरदेवादो ति’

अर्थात् सूत्र अर्थप्ररूपणाकी अपेक्षा तीर्थकरसे, और ग्रंथरचनाकी अपेक्षा गणधरदेवसे अवतीर्ण हुआ है।

यहां फिर प्रश्न उत्पन्न होता है—

द्रव्यभावाभ्यामकृत्रिमस्वतः सदा स्थितस्य श्रुतस्य कथमवतार इति ?

अर्थात् द्रव्य-भावसे अकृत्रिम होनेके कारण सर्वदा अवस्थित श्रुतका अवतार कैसे हो सकता है ?

इसका समाधान किया जाता है—

एतस्सर्वमभविष्यद्यदि द्रव्यार्थिकनयो ऽ विवक्षिष्यत् । पर्यायार्थिकनयापेक्षायामवतारस्तु पुनर्घटत एव ।

अर्थात् यह शंका तो तब बनती जब यहाँ द्रव्यार्थिक नयकी विवक्षा होती। परंतु यहाँ-पर पर्यायार्थिक नयकी अपेक्षा होनेसे श्रुतका अवतार तो बन ही जाता है।

आगे चढ़कर पृष्ठ ६० पर कर्ता दो प्रकारका बतलाया गया है, एक अर्थकर्ता व दूसरा ग्रंथकर्ता। और फिर विस्तारके साथ तीर्थकर भगवान् महावीरको श्रुतका अर्थकर्ता, गौतम गणधरको द्रव्यश्रुतका ग्रंथकर्ता तथा भूतबलि-पुष्पदन्तको भी खंडसिद्धान्तकी अपेक्षा कर्ता या उपतंतकर्ता कहा है। यथा—

‘तत्थ कत्ता दुविहो, अत्थकत्ता गंथकत्ता चेदि । महावीरोऽर्थकर्ता ।... एवंविधो महावीरोऽर्थकर्ता ।

... तदो भावसुदस्स अत्थपदाणं च तिस्थयरो कत्ता । तिस्थयरादो सुदपज्जाएण गोदमो परिणदो चि दुब्ब-

सुदस्स गोदमो कत्ता । तसो गंधरयणा जादेत्ति ।... तदो एयं खंडसिद्धंतं पडुष्ण भूदबलि-पुष्फयंताहरिया वि कत्तारो उच्चंति । तदो मूलतंतकत्ता वडुमाणभडारओ, अणुतंतकत्ता गोदमसासी, उवतंतकत्तारा भूदबलि-पुष्फ-यंतादयो वीयरायदोस्समोहा मुणिवरा । किमर्थं कर्ता प्ररूप्यते ? शास्त्रस्य प्रामाण्यप्रदर्शनार्थम्, ' वषट्-प्रामाण्याद् वचनप्रामाण्यम् ' इति न्याप्यात् । (षट्खंडागम भाग १, पृष्ठ १०-७२)

उसी प्रकार, स्वयं धवल ग्रंथ आगम है, तथापि अर्थकी दृष्टिसे अत्यन्त प्राचीन होनेपर भी उपलभ्य शब्दरचनाकी दृष्टिसे उसके कर्ता वीरसेनाचार्य ही माने जाते हैं । इससे स्पष्ट है कि गमोकारमंत्रको द्रव्यार्थिक नयसे पुष्पदन्ताचार्यसे भी प्राचीन मानने व पर्यायार्थिक नयसे उपलब्ध भाषा व शब्दरचनाके रूपमें पुष्पदन्ताचार्यकृत माननेमें कोई विरोध उत्पन्न नहीं होता । वर्तमान प्राकृत भाषात्मक रूपमें तो उसे सादि ही मानना पड़ेगा । आज हम हिन्दी भाषामें उसी मंत्रको ' अरिहंतोंको नमस्कार ' या अंग्रेजीमें 'Bow to the Worshipful' आदि रूपमें भी उच्चारण करते हैं, किंतु मंत्रका यह रूप अनादि क्या, बहुत पुराना भी नहीं कहा जा सकता है, क्योंकि, हम जानते हैं कि स्वयं प्रचलित हिन्दी या अंग्रेजी भाषा ही कोई हजार आठसौ वर्षसे पुरानी नहीं है । हाँ, इस बातकी खोज अवश्य करना चाहिये कि क्या यह मंत्र उक्त रूपमें ही पुष्पदन्ताचार्यके समयसे पूर्वकी किसी रचनामें पाया जाता है ? यदि हाँ, तो फिर विचारणीय यह होगा कि धवलाकारके तत्संबंधी कथनोंका क्या अभिप्राय है । किन्तु जबतक ऐसे कोई प्रमाण उपलब्ध न हों तबतक अब हमें इस परम पावन मंत्रके रचयिता पुष्पदन्ता-चार्यको ही मानना चाहिये ।

६. शंका—समाधान

षट्खंडागम प्रथम भागके प्रकाशित होनेपर अनेक विद्वानोंने अपने विशेष पत्रद्वारा अथवा पत्रोंमें प्रकाशित समालोचनाओंद्वारा कुछ पाठसम्बंधी व सैद्धान्तिक शंकाएं उपस्थित की हैं । यहाँ उन्हीं शंकाओंका संक्षेपमें समाधान करनेका प्रयत्न किया जाता है । ये शंका—समाधान यहाँ प्रथम भागके पृष्ठक्रम से व्यवस्थित किये जाते हैं ।

पृष्ठ ६

१ शंका—' वियलियमलमूढदंसणुत्तिलया ' में ' मलमूढ ' की जगह ' मलमूल ' पाठ अधिक ठीक प्रतीत होता है, क्योंकि सम्यग्दर्शनके पचीस मल दोषोंमें तीन मूढता दोष भी सम्मिलित हैं ।
(विवेकाम्युदय, ता० २०-१०-४०)

समाधान—' मलमूढ ' पाठ सहारनपुरकी प्रतिके अनुसार रखा गया है और मूढबिद्रीसे जो प्रतिमिलान होकर संशोधन-पाठ आया है, उसमें भी ' मलमूढ ' के स्थानपर कोई पाठ—परिवर्तन नहीं प्राप्त हुआ । तथा उसका अर्थ सर्व प्रकारके मल और तीन मूढताएं करना असंगत भी नहीं है ।

२ शंका—गाथा ४ में 'महु' पाठ है, जिसका अनुवाद 'मुझपर' किया गया है। समझमें नहीं आता कि यह अनुवाद कैसे ठीक हो सकता है, जब कि 'महु' का संस्कृत रूपान्तर 'मधु' होता है ?
(विवेकाम्युदय, ता० २०-१०-४०)

समाधान—प्रकृतमें 'महु' का संस्कृत रूपान्तर 'मह्यम्' करना चाहिए। देखो हैम व्याकरण 'महु मज्जु ङसि ङस्म्याम्' ८, ४, ३७९. इसीके अनुसार 'मुझपर' ऐसा अर्थ किया गया है।

३ शंका—गाथा ४ में 'दाणवरसीहो' पाठ है। पर उसमें नाश करनेका सूचक 'हर' शब्द नहीं है। 'वर' की जगह 'हर' रखना चाहिए था। (विवेकाम्युदय, ता० २०-१०-४०)

समाधान—हमारे सन्मुख उपस्थित समस्त प्रतियोंमें 'दाणवरसीहो' ही पाठ था और मूडबिंदीसे उसमें कोई पाठ-परिवर्तन नहीं मिला। तब उसमें 'वर' के स्थानपर जबरदस्ती 'हर' क्यों कर दिया जाय, जब कि उसका अर्थ 'हर' के बिना भी सुगम है? 'वादीभीसिंह' आदि नामोंमें विनाशबोधक कोई शब्द न होते हुए भी अर्थमें कोई कठिनाई नहीं आती।

पृष्ठ ७

४ शंका—गाथा ५ में 'दुक्क्यंत' पाठ है जिसका अर्थ किया गया है 'दुष्कृत अर्थात् पापोंका अन्त करनेवाले' यह अर्थ किसप्रकार निकाला गया, उक्त शब्दका संस्कृत रूपान्तर क्या है, यह स्पष्ट करना चाहिए।
(विवेकाम्युदय, २०-१०-४०)

समाधान—'दुक्क्यंत' का संस्कृत रूपान्तर है 'दुष्कृतान्त' जिसका अर्थ दुष्कृत अर्थात् पापोंका अन्त करनेवाले सुस्पष्ट है।

५ शंका—गाथा ५ में '-वइं सया दंतं' पाठ है, जिसका रूपान्तर होगा '-पतिं सदा दन्तं'। इसमें हमें समझ नहीं पड़ता कि 'दन्त' शब्दसे इंद्रियदमनका अर्थ किसप्रकार लाया जा सकता है ?
(विवेकाम्युदय, २०-१०-४०)

समाधान—प्राकृतमें 'दंतं' शब्द 'दान्त' के लिये भी आता है। यथा, 'दंतेण चित्तेण चरंति धीरा' (प्राकृतसूक्तारत्नमाला) पाइअसदमहण्णओ कोषमें 'दंतं' का अर्थ 'जितेन्द्रिय' दिया गया है। इसीके अनुसार 'निरन्तर पंचेन्द्रियोंका दमन करनेवाले' ऐसा अनुवाद किया गया है।

६ शंका—गाथा ६ में 'त्रिणिहयवम्महपसरं' का अर्थ होना चाहिये 'जिन्होंने ब्रह्माद्वैतकी व्यापकताको नष्ट कर दिया है और निर्मलज्ञानके रूपमें ब्रह्मकी व्यापकताको बढ़ाया है'।
(विवेकाम्युदय, २०-१०-४०)

समाधान—जब काव्यमें एकही शब्द दो बार प्रयुक्त किया जाता है तब प्रायः दोनों जगह उसका अर्थ भिन्न भिन्न होता है। किन्तु उक्त अर्थमें 'वम्मह' का अर्थ दोनों जगह 'ब्रह्म' ले लिया गया है, और उनमें भेद करनेके लिए एकमें 'अद्वैत' शब्द अपनी ओरसे डाला गया

है, जिसके लिए मूलमें सर्वथा कोई आधार नहीं है। प्राकृतमें 'वम्मह' शब्द 'मन्मथ' के लिए आता है। हैम प्राकृतव्याकरणमें इसके लिए एक स्वतंत्र सूत्र भी है— 'मन्मथे वः' ८, १, २४२। इसकी वृत्ति है 'मन्मथे मस्य वो भवति, वम्महो'। इसीके अनुसार हमने अनुवाद किया है, जिसमें कोई दोष नहीं।

पृष्ठ १५

७ शंका—आगमे मूले 'सम्मइसुत्ते' इति लिखितमस्य भवद्विरर्थः कृतः 'सम्मत्तितर्के'। सम्मतितर्काल्थं श्वेताम्बरीयग्रन्थमस्ति, तस्य निर्देश आचार्यैः कृतः वा सम्मइसुत्तं नाम किमपि दिगम्बरीयं ग्रन्थं वर्तते ? (पं. सम्मनलालजी तर्कतीर्थ, पत्र ता. ४-१-४१)

अर्थात् मूलके 'सम्मइसुत्ते' से सम्मतितर्कका अर्थ लिया है जो श्वेताम्बरीय ग्रंथ है। आचार्यने उसीका उल्लेख किया है या इस नामका कोई दिगम्बरीय ग्रंथ भी है ?

समाधान—'णामं ठवणा दविचं' इत्यादि गाथा उद्धृत करके जो सन्मतिसूत्रका उल्लेख किया है वह सन्मतितर्क नामका प्राप्त ग्रन्थ ही प्रतीत होता है, क्योंकि यह गाथा तथा उससे पूर्व उद्धृत चार गाथाएं वहां पाई जाती हैं। सन्मतितर्कके कर्ता सिद्धसेनका स्मरण महापुराण आदि अनेक 'दिगम्बर ग्रन्थोंमें भी पाया जाता है, जिससे अनुमान होता है कि ये आचार्यदोनों सम्प्रदायोंमें मान्य रहे हैं। इससे अन्य कोई ग्रन्थ इस नामका जैन साहित्यमें उपलब्ध भी नहीं है।

पृष्ठ १९

८ शंका—'वञ्चथणिरवेक्खो मंगलसहो णाममंगलं' इत्यत्र तस्य मंगलस्याधारविषयेष्वष्ट-विधेष्वजीवाधारकथने भाषायां जिनप्रतिमाया उदाहरणं प्रवृत्तं, तत्कथं संगच्छते ? ...अजीवोदाहरणे जिनभवनमुदाहियतामिति। (पं. सम्मनलाल जी तर्कतीर्थ, पत्र ता. ४-१-४१)

अर्थात् नाममंगलके आठ प्रकारके आधार—कथनमें भाषानुवादमें अजीव आधारका उदाहरण जिनप्रतिमाका दिया गया है, सो कैसे संगत है? जिनभवनका उदाहरण अधिक ठीक था ?

समाधान—धवलाकारने नाममंगलका जो लक्षण दिया है और उसके जो आधार बतलाये हैं, उनसे तो यही ज्ञात होता है कि एक या अनेक चेतन या अचेतन मंगल द्रव्य नाममंगलके आधार होते हैं। उदाहरणार्थ, यदि हम पार्श्वनाथ तीर्थंकरका नामोच्चारण करें तो यह एक जीवाश्रित नाममंगल होगा। यदि हम चौबीस तीर्थंकरोंका नामोच्चारण करें तो यह अनेक जीवाश्रित नाममंगल होगा। यदि हम अन्तरीक्ष पार्श्वनाथ, या केशरियानाथ आदि प्रतिमाओंका नामोच्चारण करें तो यह अजीवाश्रित नाममंगल होगा, इत्यादि। इस प्रकार जिनप्रतिमा नाममंगलका आधार बन जाती है, जिसका कि उसी पृष्ठपर दी हुई टिप्पणियोंसे यथोचित समर्थन हो जाता है। इसी प्रकार पंडितजी द्वारा सुझाया गया जिनमन्दिर भी अजीव नाममंगलका आधार माना जा सकता है।

पृष्ठ २९

९ शंका—पृ० २९ पर क्षेत्रमंगलके कथनमें लिखा है 'अर्धाष्टारन्यादि पंचविंशत्युत्तर-पंचधनुःशतप्रमाणशरीर' जिसका अर्थ आपने 'साढ़े तीन हाथसे लेकर ५२५ धनुष तकके शरीर' किया है, और नीचे फुटनोटमें 'अर्धाष्ट इत्यत्र अर्धचतुर्थ इति पाठेन मान्यम्' ऐसा लिखा है। सो आपने यह कहाँसे लिखा है और क्यों लिखा है ? (नानकचंदजी, पत्र १-४-४०)

समाधान—केवलज्ञानको उत्पन्न करनेवाले जीवोंकी सबसे जघन्य अवगाहना साढ़े तीन हाथ (अरलि) और उत्कृष्ट अवगाहना पांचसौ पचीस धनुष प्रमाण होती है। सिद्धजीवोंकी जघन्य और उत्कृष्ट अवगाहना इसीलिए पूर्वोक्त बतलाई है। इसके लिए त्रिलोकसारकी गाथा १४१-१४२ देखिये। संस्कृतमें साढ़े तीनको 'अर्धचतुर्थ' कहते हैं। इसी बातको ध्यानमें रखकर 'अर्धाष्ट' के स्थानमें 'अर्धचतुर्थ' का संशोधन सुझाया गया है, वह आगमानुकूल भी है। 'अर्धाष्ट' का अर्थ 'साढ़े सात' होता है जो प्रचलित मान्यताके अनुकूल नहीं है। इसी भागके पृष्ठ २८ की टिप्पणीकी दूसरी पांक्तिमें त्रिलोकप्रज्ञप्तिका जो उद्धरण (आहुडहल्यपहुदी) दिया है उससे भी सुझाए गये पाठकी पुष्टि होती है।

पृष्ठ ३९

१० शंका—धवलराजमें क्षयोपशमसम्यक्त्वकी स्थिति ६६ सागरसे न्यून बतलाई है, जब कि सर्वार्थसिद्धिमें पूरे ६६ सागर और राजवार्तिकमें ६६ सागरसे अधिक बतलाई है ? इसका क्या कारण है ! (नानकचंदजी, पत्र १-४-४१)

समाधान—सर्वार्थसिद्धिमें क्षायोपशमिकसम्यक्त्वकी उत्कृष्ट स्थिति पूरे ६६ सागर वा राजवार्तिकमें सम्यग्दर्शनसामान्यकी उत्कृष्ट स्थिति साधिक ६६ सागर और धवला टीका पृ. ३९ पर सम्यग्दर्शनकी अपेक्षा मंगलकी उत्कृष्ट स्थिति देशोन छयासठ सागर कही है। इस मतभेदका कारण जाननेके पूर्व ६६ सागर किस प्रकार पूरे होते हैं, यह जान लेना आवश्यक है।

धवलाकारने जीवद्वारा खंडकी अन्तरप्ररूपणामें ६६ सागरकी स्थितिके पूरा करने का क्रम इसप्रकार दिया है:—

एको तिरिक्खो मणुसो वा लंतव-काविट्टवासियदेवेषु चौदससागरोवमाउट्टिदिएसु उप्पण्णो । एक्कं सागरोवमं गमिय विदियसागरोवमाविसमए सम्मत्तं पडिवण्णो । तेरस सागरोवमाणि तथ अच्चिय सम्मत्तेण सह चुदो मणुसो जादो । तथ संजमं संजमासंजमं वा अणुसालिय मणुसाउएण्ण-त्रावीससागरोवममाउट्टिदि-एसु आरणच्चुददेवेषु उववण्णो । ततो चुदो मणुसो जादो । तथ संजममणुसारिय उवरिमगेवजे देवेषु मणुसा-उगेण्णएक्कतीससागरोवमाउट्टिदीएसु उववण्णो । अंतोमुहुत्तूणञ्जाविट्टिसागरोवमचरिमसमए परिणामपच्चएण सम्मामिच्चत्तं गदो । x x x एसो उप्पत्तिकमो अउप्पण्णउप्पायणद्धं उत्तो । परमथदो पुण जेण केण वि पयारेण छावट्टी पूरेदंवा ।

अर्थात्—कोई एक तिर्थच अथवा मनुष्य चौदह सागरोपमकी आयुस्थितिवाले लान्तव

कापिष्ठ कल्पवासी देवोंमें उत्पन्न हुआ। वहाँपर एक सागरोपम काल बिताकर दूसरे सागरोपमके आदि समयमें सम्यक्त्वको प्राप्त हुआ और तेरह सागरोपम तक वहाँ रहकर सम्यक्त्वके साथ ही च्युत होकर मनुष्य हो गया। उस मनुष्यभवमें संयमको अथवा संयमासंयमको परिपालनकर इस मनुष्यभवसम्बन्धी आयुसे कम बाईस सागरोपम आयुकी स्थितिवाले आरण-अच्युत कल्पके देवोंमें उत्पन्न हुआ। वहाँसे च्युत होकर पुनः मनुष्य हुआ। इस मनुष्यभवमें संयमको धारणकर उपरिम प्रैवेयकमें मनुष्य आयुसे कम इकतीस सागरोपम आयुकी स्थितिवाले अहमिन्द्र देवोंमें उत्पन्न हुआ। वहाँ पर अन्तर्मुहूर्त कम छयासठ सागरोपमके अन्तिम समयमें परिणामोंके निमित्तसे सम्यग्मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ। × × × यह उत्पात्तिक्रम अन्युत्पन्नजनोंके व्युत्पादनार्थ कहा है। पर-मार्थसे तो जिस किसी भी प्रकारसे छयासठ सागरोपमकालको पूरा करना चाहिए।

सर्वार्थसिद्धिकार जो क्षायोपशमिकसम्यक्त्वकी स्थिति पूरे ६६ सागर बता रहे हैं, वह षट्खंडागम के दूसरे खंड खुदाबंधके आगे बताये जानेवाले सूत्रोंके अनुसार ही है, उसमें धवला से कोई मतभेद नहीं है। भेद केवल धवलाके प्रथम भाग पृ. ३९ पर बताई गई देशोन ६६ सागरकी स्थितिसे है। सो यहाँपर ध्यान देनेकी बात यह है कि धवलाकार वेदकसम्यक्त्व या सम्यक्त्वसामान्यकी स्थिति नहीं बता रहे हैं, किन्तु मंगलकी उत्कृष्ट स्थिति बता रहे हैं, और वह भी सम्यग्दर्शनकी अपेक्षासे, जिसका अभिप्राय यह समझमें आता है कि सम्यक्त्व होने पर जो असंख्यातगुणश्रेणी कर्म—निर्जरा सम्यक्त्वी जीवके हुआ करती है, उसीकी अपेक्षा मंगल अर्थात् पापको गलानेवाला होनेसे वह सम्यक्त्व मंगलरूप है, ऐसा कहा गया है। किन्तु जो जीव ६६ सागर पूर्ण होनेके अन्तिम मुहूर्तमें सम्यक्त्वको छोड़कर नीचेके गुणस्थानोंमें जा रहा है, उसके सम्यक्त्वकालमें होनेवाली निर्जरा बंद हो जाती है, क्योंकि परिणामोंमें संकेशकी वृद्धि होनेसे वह सम्यक्त्वसे पतनोन्मुख हो रहा है। अतएव इस अन्तिम अन्तर्मुहूर्तसे कम ६६ सागर मंगलकी उत्कृष्ट स्थिति बताई गई प्रतीत होती है।

अब रही राजवार्तिकमें बताये गये साधिक ६६ सागरोपमकालकी बात सो उस विषयमें एक बात खास ध्यान देनेकी है कि राजवार्तिककार जो साधिक छयासठ सागरकी स्थिति बता रहे हैं वह क्षायोपशमिकसम्यक्त्वकी नहीं बता रहे हैं किन्तु सम्यग्दर्शनसामान्यकी ही बता रहे हैं, और सम्यग्दर्शनसामान्यकी अपेक्षा वह अधिकता बन भी जाती है। उसका कारण यह है कि एकबार अनुत्तरादिकमें जाकर आये हुए जीवके मनुष्यभवमें क्षायिकसम्यक्त्वकी उत्पत्तिकी भी संभावना है। पुनः क्षायिकसम्यक्त्वको प्राप्तकर संयमी हो अनुत्तरादिकमें उत्कृष्ट स्थितिको प्राप्त हुआ। ऐसे जीवके साधिक छयासठ सागर काल बन जाता है, और क्षायोपशमिकसे क्षायिक सम्यक्त्वको उत्पन्न कर लेनेपर भी सम्यग्दर्शनसामान्य बराबर बना ही रहता है। इसकी पुष्टि जीव-स्थान खंडकी अन्तर प्ररूपणाके निम्न अवतरणसे भी होती है:—

‘ उक्त्स्तेण छावट्टि सागरोवमाणि सादिरेयाणि ॥ तं जहा—एकौ अट्टावीससंतकम्मिओ पुब्बकोडाउअमणुसेसु उववण्णो अट्टवस्सिओ वेदगसम्मत्तमप्पमत्तगुणं च जुगवं पडिवण्णो १ तदो पमत्तापमत्तपरावत्तसहरसं कादूण २ उवसमसेदीपाओग्गविसोहीए विसुद्धो ३ अपुब्बो ४ अणियट्ठी ५ सुहुमो ६ उवसंतो ७ पुणो वि सुहुमो ८ अणियट्ठी ९ अपुब्बो १० होदूण हेट्ठा पडिय अंतरिदो देसूणपुब्बकोडिं संजममणुपालेदूण मदो तेत्तीससागरोवमाउट्टिदीएसु देवेषु उववण्णो । ततो चुदो पुब्बकोडाउएसु मणुसेसु उववण्णो । खइयं पि ट्ठविय संजमं कादूण कालं गदो । तेत्तीससागरोवमाउट्टिदीएसु देवसु उववण्णो । ततो चुदो पुब्बकोडाउएसु मणुसेसु उववण्णो × संजमं पडिवण्णो । अंतोमुहुत्तावसेसे संसारे अपुब्बो जादो लद्धमंतरं ११ अणियट्ठी १२ सुहुमो १३ उवसंतो १४ भूओ सुहुमो १५ अणियट्ठी १६ अपुब्बो १७ अप्पमत्तो १८ पमत्तो जादो १९ अप्पमत्तो २० उवरि छ अंतोमुहुत्ता अट्टहि वस्सेहि छव्वीसंतोमुहुत्तेहि य ऊणा पुब्बकोडीहि सादिरेयाणि छावट्टिसागरोवमाणि उक्त्स्संतरं होदि ।’

यह विवरण उपशामक जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तरकाल बताते हुए अन्तरप्ररूपणोंमें आया है । अर्थात् कोई एक जीव उपशमश्रेणीसे उतरकर साधिक छयासठ सागरके बाद भी पुनः उपशमश्रेणीपर चढ़ सकता है । उक्त गद्यका भाव यह है:—

‘ मोहकर्मकी अट्टाईस प्रकृतियोंकी सत्ता रखनेवाला कोई एक जीव पूर्वकोटिकी आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ और आठ वर्षका होकर वेदकसम्यक्त्व और अप्रमत्त गुणस्थानको युगपत् प्राप्त हुआ । पश्चात् प्रमत्त अप्रमत्त गुणस्थानोंमें कईवार आ जा कर उपशमश्रेणीपर चढ़ा और उतरकर आठ वर्ष और दश अन्तर्मुहूर्त कम पूर्वकोटी वर्षतक संयमको पालके मरणकर तेत्तीस सागरकी आयुवाला देव हुआ । वहांसे च्युत होकर पूर्वकोटीकी आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ । यहांपर क्षायिकसम्यक्त्वको भी धारण कर तथा संयमी होकर मरा और पुनः तेत्तीस सागरोपम की स्थिति वाले देवोंमें उत्पन्न हुआ । वहांसे च्युत हो पुनः पूर्वकोटीकी आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ और यथासमय संयमको धारण किया । जब उसके संसारमें रहनेका काल अन्तर्मुहूर्त प्रमाण रह गया, तब पहले उपशमश्रेणीपर चढ़ा, पीछे क्षपकश्रेणीपर चढ़कर निर्वाणको प्राप्त हुआ । इसप्रकारसे उपशमश्रेणीवाले जीवका उत्कृष्ट अन्तर आठ वर्ष और छव्वीस अन्तर्मुहूर्तोंसे कम तीन पूर्वकोटियोंसे अधिक छयासठ सागरोपमकाल प्रमाण होता है ।

इस अन्तरकाल में रहते हुए भी वह बराबर सम्यग्दर्शनसे युक्त बना हुआ है, भले ही प्रारंभमें ३३ सागर तक क्षायोपशमिकसम्यक्त्वी और बाद में क्षायिकसम्यक्त्वी रहा हो । इस प्रकार सम्यग्दर्शनसामान्यकी दृष्टिसे साधिक छयासठ सागरकी स्थितिका कथन युक्तिसंगत ही है और उसमें उक्त दोनों मतोंसे कोई विरोध भी नहीं आता है ।

सुखाबंधके कालानुयोगद्वारमें भी सम्यक्त्वमार्गणाके अन्तर्गत सम्यक्त्वसामान्यकी उत्कृष्ट स्थिति ६६ सागरसे कुछ अधिक दी है । यथा—

सम्मत्ताणुवादेण सम्मादिट्ठी केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण अंतोमुहुत्तं । उक्त्स्तेण छावट्टिसागरोवमाणि सादिरेयाणि ।
(धवला. अ. प, ५०७)

इस सूत्रकी व्याख्यामें कहा गया है कि कोई मिथ्यादृष्टि जीव तीनों करणोंको करके प्रथमोपशमसम्यक्त्वको ग्रहण कर अन्तर्मुहूर्तकालके बाद वेदकसम्यक्त्वको प्राप्त होकर उसमें तीन पूर्वकोटियोंसे अधिक व्याख्यास सागरोपम बिताकर बादमें क्षायिकसम्यक्त्वको धारणकर और चौबीस सागरोपमवाले देवोंमें उत्पन्न होकर पुनः पूर्वकोटीकी आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न होनेवाले जीवके साधिक ६६ सागरकाल सिद्ध हो जाता है ।

किंतु वेदकसम्यक्त्वकी उत्कृष्ट स्थिति बतलाते हुए पूरे ६६ सागर ही दिये हैं, यथा—

वेदगसम्माद्द्वी केवचिरं कालादो ह्यंति ? जहण्णेण अंतोपुद्गुत्तं । उक्कस्सेण छावट्टिसागरोवमाणि ।

(धवला. अ. प, ५०७)

इस सूत्रकी व्याख्या करते हुए कहा गया है कि मनुष्यभवकी आयुसे कम देवायुवाले जीवोंमें उत्पन्न कराना चाहिए और इसी प्रकारसे पूरे ६६ सागर काल वेदकसम्यक्त्वकी स्थिति पूरी करना चाहिए ।

उक्त सारे कथनका भाव यह हुआ कि सम्यग्दर्शनसामान्यकी अपेक्षा साधिक ६६ सागर, वेदकसम्यक्त्वकी अपेक्षा पूरे ६६ सागर, और मंगलपर्यायकी अपेक्षा देशोन ६६ सागरकी स्थिति कही है, इसलिए उनमें परस्पर कोई मत-भेद नहीं है ।

पृष्ठ ४२

११. शंका—णमो अरिहंताणमित्यत्र अरिमोहस्तस्य हननात् अरिहंता शेषघातिनामविनाभावित्वात् अरिहंता इति प्रतिपादितम् । तदभीष्टमाचार्यैः । पुनः अस्वरसात् उच्यते वा ' रजो ज्ञानदगावरणादयः मोहोऽपि रजः, तेषां हननात् अरिहंता, इति लिखितम् तदत्र अरहंता इति पदं प्रतीयते । भवद्भिरपि श्रीमूलाचारादिग्रंथानां गाथाटिप्पण्यौ निम्ने लिखितं तत्र गाथायामपि अरहंता लिखितम् । आचार्याणामुभयमभीष्टं प्रतीयते ' णमो अरिहंताणं, णमो अरहंताणं ' परन्तु उभयत्र कथने ' णमो अरिहंताणं ' लिखितम् । इत्यत्र लेखकविस्मृतिस्तु नास्ति बान्यत् प्रयोजनम् ? (पं० क्षम्मनलालजी, पत्र ४-१-४१)

अर्थात् धवलाकारने णमोकारमंत्रके प्रथम चरणके जो विविध अर्थ किये हैं उनसे अनुमान होता है कि आचार्यको अरिहंत और अरहंत दोनो पाठ अभीष्ट हैं । किन्तु आपने केवल ' अरिहंता ' पाठ ही क्यों लिखा ?

समाधान—णमोकारमंत्रके पाठमें तो एकही प्रकारका पाठ रखा जा सकता है । तो भी ' णमो अरिहंताणं पाठ रखनेमें यह विशेषता है कि उससे अरि+हंता और अर्हत् दोनो प्रकारके अर्थ लिये जा सकते हैं । प्राकृत व्याकरणानुसार अर्हत् शब्दके अरहंत, अरुहंत व अरिहंत तीनों प्रकारके पाठ हो सकते हैं । अतएव अरिहंत पाठ रखनेसे उक्त दोनों प्रकारके अर्थों की गुंजाइश रहती है । यह बात अरहंत पाठ रखनेसे नहीं रहती (देखो परिशिष्ट पृ. १८)

१२ शंका—' अपरिवाडीए पुण सयलसुदपारगा संखेज्जसहस्सा ' । और यदि परिपाटी क्रमकी अपेक्षा न की जाय तो उस समय संख्यात हजार सकल श्रुतके धारी हुए । भगवान् महावीरके

समयमें तो गिने चुने ही श्रुतकेवली हुए हैं। संख्यात हजार सकल श्रुतके धारियोंका पता तो शास्त्रोंसे नहीं लगता। अतः यह अंश विचारणीय प्रतीत होता है। (पृष्ठ ६५)

(जैनसंदेश, १५ फरवरी १९४०)

समाधान— त्रिलोकप्रज्ञप्ति, हरिवंशपुराण आदिमें भगवान् महावीरके तीर्थकालमें पूर्वधारी ३००, केवलज्ञानी ७००, विपुलमती मनःपर्ययज्ञानी ५००, शिक्षक ९९००, अवधिज्ञानी १३००, वैक्रियिकऋद्धिधारी ९०० और वादी ४०० बतलाये हैं। इनमें यद्यपि पूर्वधारी केवल तीनसौ ही बतलाये हैं, पर केवलज्ञानी केवलज्ञानोत्पत्तिके पूर्व श्रेणी-आरोहणकालमें पूर्वविद् हो चुके हैं और विपुलमती मनःपर्ययज्ञानी जीव तद्भव-मोक्षगामी होनेके कारण पूर्वविद् होंगे। अवधिज्ञानी आदि साधुओंमें भी कुछ पूर्वविद् हों तो आश्चर्य नहीं। पर अवधिज्ञान आदिकी विशेषताके कारण उनकी गणना पूर्वविदोंमें न करके अवधिज्ञानी आदिमें की गई हो। इस प्रकार परिपाटी क्रमके बिना भगवान् महावीरके तीर्थकालमें हजारों द्वादशांगधारी माननेमें कोई आपत्ति नहीं दिखाई देती है।

पृष्ठ ६८

१३ शंका— ' धदगारवपडिबद्धो ' का अर्थ ' रसगारवके आधीन होकर ' उचित नहीं जंचता। गारव (गारव ?) दोषका अर्थ मैंने किसी स्थानपर देखा है, किन्तु स्मरण नहीं आता। ' धद ' का अर्थ रस भी समझमें नहीं आता। स्पष्ट करनेकी आवश्यकता है।

(जैनसंदेश, १५ फरवरी १९४०)

समाधान— ' गारव ' पदका अर्थ गौरव या अभिमान होता है, जो तीन प्रकारका है—
ऋद्धिगारव, रसगारव और सातगारव। यथा—

तत्रो गारवा पन्नत्ता। तं जहा—इद्धिगारवे रसगारवे सातगारवे। स्था. ३, ४.

ऋद्धियोंके अभिमानको ऋद्धिगारव, दधि दुग्ध आदि रसोंकी प्राप्तिसे जो अभिमान हो उसे रसगारव, तथा शिष्यों व भक्तों आदि द्वारा प्राप्त परिचर्याके सुखको सातगारव या सुखगारव कहते हैं।

उक्त वाक्यसे हमारा अभिप्राय ' रसादि गारवके आधीन होकर ' से है। मूलपाठका संस्कृत रूपान्तर हमारी दृष्टिमें ' धृतगारवप्रतिबद्धः ' रहा है। प्रतियोंमें ' धद ' के स्थानपर ' दध ' पाठ भी पढ़ा जाता है जिससे यदि दधिका अभिप्राय लिया जाय तो उपलक्षणासे रसगारवका अर्थ आजाता है।

पृष्ठ १४८

शंका १४.—प्रतिभासः प्रमाणञ्चाप्रमाणञ्च ' इत्यादि वाक्यमें प्रतिभासका अनध्यवसायरूप अर्थ ठीक प्रतीत नहीं होता। मेरी समझमें उसका अर्थ वहां ज्ञान-सामान्य ही होना चाहिए, क्योंकि ज्ञानका प्रामाण्य और अप्रामाण्य बाह्यार्थ पर अबलम्बित है, अतः वह विसंवादी भी हो

सकता है और अविसंवादी भी । अनध्यवसाय विसंवादी ज्ञानका भेद है । उसमें जिस तरहसे विसंवादित्व और अविसंवादित्वकी चर्चा दी गई है वह स्याद्वादकी दृष्टिके अनुकूल होते हुए भी चित्तको नहीं लगती ।
(जैनसंदेश, १५ फरवरी १९४०)

समाधान— यद्यपि प्रतिभासका जो अर्थ किया गया है, वह स्वयं शंकाकारके मतसे भी सदोष नहीं है, तथापि यदि प्रतिभासका अर्थ ज्ञानसामान्य भी ले लिया जाय, तो भी कोई आपत्ति नहीं आती है । ऐसी अवस्थामें अनुवाद पंक्ति १२ में ' और अनध्यवसायरूप जो प्रतिभास है ' के स्थानमें ' और जो ज्ञान-सामान्य है ' अर्थ करना चाहिए ।

पृष्ठ १९६

१५ शंका— ' असर्वज्ञानां व्याख्यातृत्वाभावे आर्षसन्ततेर्विच्छेदस्यार्थशून्याया वचनपद्धतेरार्ष-त्वाभावात् ' । यहाँ ' विच्छेदस्य ' के स्थानमें ' विच्छेदः ' पाठ अच्छा जंचता है । उससे वाक्यरचना भी ठीक हो जाती है ।
(जैनसंदेश, १५ फरवरी १९४०)

समाधान— प्रातृ प्रतिघोसे जो पाठ समुपलब्ध हुआ उसकी यथाशक्ति संगति अनुवादमें बैठा ली गई है । मूडविद्रीसे भी उस पाठके स्थानपर हमें कोई पाठान्तर प्राप्त नहीं हुआ । तथापि ' विच्छेदस्य ' के स्थानपर ' विच्छेदः स्यात् ' पाठ स्वीकार कर लेनेसे अर्थ और अधिक सीधा और सुगम हो जाता है । तदनुसार उक्त शंकाका अनुवाद इस प्रकार होगा—

शंका— असर्वज्ञको व्याख्याता नहीं मानने पर आर्ष-परम्पराका विच्छेद हो जायगा, क्योंकि, अर्थशून्य वचन-रचनाको आर्षपना प्राप्त नहीं हो सकता है ।

पृष्ठ २१३

१६ शंका— संस्कृत (मूल) में जो ' नवक ' शब्द आया है उसका अर्थ आपने कुछ न करके ' नवक ' ही लिखा है । सो इसका क्या अर्थ है ?
(नानकचंदजी, पत्र १-४-४०)

समाधान— ' नवक ' का अर्थ नवीन है, इसलिए सर्वत्र नवीन बंधनेवाले समयप्रबद्ध को नवक समयप्रबद्ध कह सकते हैं । पर प्रकृतमें विवक्षित प्रकृतिके उपशमन और क्षपणके द्विचरमावली और चरमावली अर्थात् अन्तकी दो आवलियोंके कालमें बंधनेवाले समयप्रबद्धको ही नवकसमयप्रबद्ध कहा है । इस नवकसमयप्रबद्धका उस विवक्षित प्रकृतिके उपशमन या क्षपण-कालके भीतर उपशम या क्षय न होकर उपशमन या क्षपणकालके अनन्तर एक समय कम दो आवलीकालमें उपशम या क्षय होता है । एक समय कम दो आवलीकालमें उपशम या क्षय कैसे होता है, इसके लिए प्रथमभाग पृष्ठ २१४ का विशेषार्थ देखिये । विशेषके लिए देखिये लब्धिसार, क्षपणासार ।

पृष्ठ २५०

१७ शंका— शंकाका प्रारंभ प्रथम पंक्तिमें आये हुए ' तथापि ' शब्दसे जान पड़ता है, न

कि उससे पूर्वके 'शरीरस्य स्थौल्यनिर्वर्तकं' इत्यादिसे, क्योंकि उसी शास्त्रीय परिभाषाके करनेपर, जो उससे पहले नहीं की गई है, शंकाकारने 'तथापि' से शंकाका उत्थान किया है।

(जैनसंदेश, १५ फरवरी १९४०)

समाधान—यहाँपर 'तथापि' से शंका मान लेनेपर 'शरीरस्य स्थौल्यनिर्वर्तकं कर्म बादर-मुच्यते' इसे आगमिक परिभाषा मानना पड़ेगी। परन्तु यह आगमिक परिभाषा नहीं है। धवलाकारने स्वयं इसके पहले 'न बादरशब्दोऽयं स्थूलपर्यायः' इत्यादि रूपसे इसका निषेध कर दिया है। अतः शंकाकारके मुखसे ही स्थूल और सूक्ष्मकी परिभाषाओंका कहलाना ठीक है, ऐसा समझकर ही उन्हें शंकाके साथ जोड़ा गया है।

पृष्ठ २९७

१८ शंका—'ऋद्धेरपर्यभावात्' पाठ अशुद्ध प्रतीत होता है, उसके स्थानमें 'ऋद्धेरूपर्यभावात्' पाठ ठीक प्रतीत होता है।

(जैनसंदेश, १५ फरवरी १९४०)

समाधान—उक्त पाठके ग्रहण करनेपर भी 'ऋद्धेरपरि' इतने पदका अर्थ ऊपरसे ही जोड़ना पड़ता है, और उस पाठके लिए प्रतियोंका आधार भी नहीं है। इसलिए हमने उपलब्ध पाठको ज्योंका ज्यों रख दिया था। हालहीमें धवला अ. पत्र २८५ पर एक अन्य प्रकरण सम्बंधी एक वाक्य मिला है, जो उक्त पाठके संशोधनमें अधिक सहायक है। वह इस प्रकार है—'पमत्तेतेजाहारं णत्थि, लद्धीए उवरि लद्धीणमभावा।' इसके अनुसार उक्त पाठको इस प्रकार सुधारना चाहिए 'ऋद्धेरपरि ऋद्धेरभावात्' अथवा 'ऋद्धेः ऋद्धेरपर्यभावात्' तदनुसार अर्थ भी इस प्रकार होगा—'क्योंकि, एक ऋद्धिके ऊपर दूसरी ऋद्धिका अभाव है'।

पृष्ठ ३००

१९ शंका—६० वीं गाथा (सूत्र) का अर्थ करते हुए लिखा है कि 'तत्र कर्मणकाय-योगः स्यादिति'। जिसका अर्थ आपने 'इषुगतिको छोड़कर शेष तीनों विप्रहगतियोंमें कर्मणकाय-योग होता है, ऐसा किया है। सो यहां प्रश्न होता है कि इषुगतिमें कौनसा काययोग होता है ?

(नानकचंदजी, पत्र १-४-४०)

समाधान—इषुगतिमें औदारिकमिश्रकाय और वैक्रियिकमिश्रकाय, ये दो योग होते हैं, क्योंकि उपपातक्षेत्रके प्रति होनेवाली ऋजुगतिमें जीव आहारक ही होता है। अनाहारक केवल विप्रहवाला गतियोंमें ही रहता है। इससे यह भी स्पष्ट हो जाता है कि पाणिमुक्ता, लांगलिका और गोमूत्रिका, इन तीन गतियोंके अन्तिम समयमें भी जीव आहारक हो जाता है, क्योंकि, अन्तिम समयमें उपपातक्षेत्रके प्रति होनेवाली गति ऋजु ही रहती है। इस व्यवस्थाको ध्यानमें रखकर ही सर्वार्थसिद्धिमें 'एकं द्वौ त्रीन्वानाहारकः' इस सूत्रकी व्याख्या करते हुए यह कहा है कि 'उपपादक्षेत्रं प्रति ऋज्व्यां गतौ आहारकः। इतरेषु त्रिषु समयेषु अनाहारकः।'

पृष्ठ ३३२

२० शंका—सूत्र नं. ९३ में 'सम्मामिच्छादृष्टि-असंजदसम्मामिच्छादृष्टि-संजदासंजदद्राणे णियमा पज्जत्तियाओ' पर आपने फुटनोट लगाकर "अत्र 'संजद' इति पाठशेषः प्रतिभाति" ऐसा लिखा है। सो लिखना कि यह आपने कहाँसे लिखा है, और क्या मनुष्यनीके छठा गुणस्थान होता है? आगे पृ० ३३३ पर शंका-समाधानमें लिखा है कि स्त्रियोंके संयतासंयत गुणस्थान होता है, सो पहलेसे विरोध आता है ?

(नानकचंदजी, पत्र १-४-४०)

"अत्र 'संजद' इति पाठ शेषः प्रतिभाति" यह सम्पादक महोदयोंका संशोधन है। ऐसे संशोधनको मूलसूत्रका अर्थ करते समय नहीं जोड़ना उचित प्रतीत होता है।

(जेनगजट, ३ जुलाई १९४०)

समाधान—उक्त पाद-टिप्पण देनेके निम्न कारण हैं:—

(१) आलापाधिकारमें मनुष्यस्त्रियोंके आलाप बतलाते समय सभी (चौदह) गुणस्थानोंमें उनके आलाप बतलाये हैं।

(२) द्रव्यप्रमाणानुगममें मनुष्यस्त्रियोंका प्रमाण कहते समय चौदहों गुणस्थानोंकी अपेक्षा उनका प्रमाण कहा है। यथा—

मणुसिणीसु मिच्छादृष्टी दन्वपमाणेण केवडिया, कोडाकोडाकोडीए उवरि कोडाकोडाकोडाकोडीए हेद्वदो, ङ्गं वग्गाणमुवरि सत्तण्हं वग्गाणं हेद्वदो ॥ ४८ ॥ पृ. २६०. मणुसिणीसु सासणसम्मामिच्छादृष्टिपुड्डि जाव अजोगिकेवलि ति दन्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ॥ ४९ ॥ पृ. २६१.

(३) आगममें मनुष्यके सामान्य, पर्याप्त, योनिमती और अपर्याप्त, ये चार भेद किये हैं। वहाँ योनिमती मनुष्यसे भावसे स्त्रीवेदा मनुष्योंका ही ग्रहण किया है। षट्खंडागममें उसी भेदके लिये मणुसिणी शब्द आया है, और उन्हीं भेदोंके क्रमसे वर्णन भी है।

(४) इससे ऊपरके सूत्रमें मनुष्यनियोंको मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें जो पर्याप्त और अपर्याप्त बतलाकर इसी सूत्रमें जो शेष गुणस्थानोंमें केवल पर्याप्त ही बतलाया है, इससे भी भाववेदकी ही मुख्यता प्रतीत होती है, क्योंकि गुणस्थानोंमें पर्याप्तत्व और अपर्याप्तत्वकी व्यवस्था भाववेदकी अपेक्षासे ही की गई है।

(५) यदि यहाँ उक्त पादटिप्पणको ग्रहण न किया जाये तो धवलाकारने इसी सूत्रकी व्याख्यामें जो यह शंका उठाई है कि 'अस्मादेवार्षाद् द्रव्यस्त्रीणां निर्वृत्तिः सिद्धवेत्' अर्थात्, तो इसी आगमसे द्रव्यस्त्रियोंका मुक्ति जाना भी सिद्ध हो जायगा, ऐसी शंकाके उत्पन्न होनेका कोई कारण नहीं रह जाता है।

इन उपर्युक्त हेतुओंसे यही प्रतीत होता है कि यहाँ मनुष्यनियोंका भाववेदकी अपेक्षाही प्रतिपादन किया गया है, द्रव्यवेदकी अपेक्षासे नहीं। और इसीलिये उक्त ९३ सूत्रपर 'अत्र 'संजद' इति पाठशेषः प्रतिभाति' यह पादटिप्पण जोड़ा गया है।

२१ शंका—९३ सूत्रके नीचे जो शंका दी है कि हुण्डावसर्पिणी कालसम्बन्धी

स्त्रियोंमें सम्यग्दृष्टि जीव क्यों नहीं उत्पन्न होते हैं ? उसका समाधान करते हुए लिखा है कि 'नहीं; क्योंकि, उनमें सम्यग्दृष्टि जीव उत्पन्न होते हैं' । सो इसका खुलासा क्या है ? क्या सम्यग्दृष्टि जीव स्त्रियोंमें उत्पन्न हो सकता है ?
(मानकचंद्रजी, १-४-४०)

स्त्रियोंको अपर्याप्तदशामें सम्यक्त्व नहीं होता है, ऐसा गोम्मटसार आदि ग्रंथोंका कथन है । तदनुसार धवलाके द्वितीय खंडमें पृ. ४३० पर भी लिखा है ' इत्थिवेदेण विणा ' अपर्याप्त-दशामें स्त्रीवेदीको सम्यक्त्व नहीं । किन्तु धवलाके प्रथम खंडमें पृ. ३३२ पर इसके विरुद्ध लिखा है—
हुण्डावसर्पिण्यां स्त्रीषु सम्यग्दृष्टयः किञ्चोत्पद्यन्ते इति चेन्न, उत्पद्यन्ते । तत्कृतोऽवसीयते ? अस्मा देवार्थात् ।
ऐसा विरोधी कथन क्यों है ?
(पं० अजितकुमारजी शास्त्री, पृ. २२-१०-४०)

समाधान—अन्य गतिसे आकर सम्यग्दृष्टि जीव स्त्रियोंमें उत्पन्न नहीं होता है, यह तो सुनिश्चित है । इसलिए उक्त शंका-समाधानका अर्थ इस प्रकार लेना चाहिए—

शंका—हुंडावसर्पिणीकालमें स्त्रियोंमें सम्यग्दृष्टि क्यों नहीं होते हैं ?

समाधान—नहीं; क्योंकि, उनमें सम्यग्दृष्टि जीव होते हैं ।

यहां ' उत्पद्यन्ते ' क्रियाका अर्थ ' होना ' लेना चाहिए । इससे स्पष्ट हो जाता है कि हुंडावसर्पिणीकालके दोषसे स्त्रियां सम्यग्दृष्टि न हों, ऐसा शंकाकारके पूछनेका अभिप्राय है ।

अथवा, इस शंका-समाधानका निम्न प्रकारसे दूसरा भी अभिप्राय कदाचित् संभव हो सकता है—

शंका—हुंडावसर्पिणीकालमें जैसे अन्य अनेकों असंभव बातें संभव हो जाती हैं, उसी प्रकारसे अन्य गतिसे आकर सम्यग्दृष्टि जीव स्त्रियोंमें क्यों नहीं उत्पन्न होते हैं ?

समाधान—सूत्र नं. ९३ में कहा है कि ' असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें स्त्रियां नियमसे पर्याप्त होती हैं ' इससे जाना जाता है कि किसी भी कालमें सम्यग्दृष्टि जीव स्त्रियोंमें उत्पन्न नहीं होते हैं ।

इस अभिप्रायके लिये मूलपाठमें ' चेन्न ' के पश्चात्का विराम हटा लेना चाहिये । तथापि आगेके संदर्भसे इस अभिप्रायका सामंजस्य यथोचित नहीं बैठता ।

पृष्ठ ३४२

२२ शंका—धवलसिद्धान्तानुसार जो द्रव्यसे पुरुष होने और भावोंमें स्त्रीरूप हो उसे योनिमती कहते हैं । किन्तु गोम्मटसार जीवकांड गाथा १५०, १५६, ३८० से ज्ञात होता है कि द्रव्यमें स्त्री हो, और परिणतिमें स्त्रीभाव हो उसको योनिमती कहते हैं । इस प्रकारकी योनिमतीके १४ गुणस्थान माने हैं । इसका समाधान कीजिए ।
(ब्र० लक्ष्मीचंद्रजी)

समाधान—योनिमती तिर्यंच स्त्रियोंके उदय प्रकृतियां बतलाते हुए कर्मकांड गाथा नं.

२९६ में कहा है—‘सुसंज्ञास्थिजुदा जोणिणीये’ अर्थात् योनिमतीके पूर्वोक्त ९७ प्रकृतियोंमेंसे पुरुषवेद और नपुंसक वेदको घटाकर स्त्री वेदके मिला देनेपर ९६ प्रकृतियोंका उदय होता है। मनुष्यनियोंके विषयमें कहा है—‘मणुसिणिण् स्त्रीसहिदा’ ॥३०१॥ अर्थात् पूर्वोक्त १०० प्रकृतियोंमें स्त्रीवेदके मिला देनेपर और तीर्थंकर आदि ५ प्रकृतियां निकाल देनेपर मनुष्यनियोंके ९६ प्रकृतियोंका उदय होता है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि यहां योनिमती उसे कहा है जिसके स्त्रीवेदका उदय हो। ऐसे जीवके द्रव्य वेद कोई भी रहेगा तो भी वह योनिमती कहा जायगा। अब रही योनिमतीके १४ गुणस्थान की बात, सो कर्मभूमिज स्त्रियोंके अन्तके तीन संहननोंका ही उदय होता है, ऐसा गो० कर्मकांड की गाथा ३२ से प्रगट है। परन्तु शुक्लध्यान, क्षपकश्रेण्यारोहणादि कार्य प्रथम संहननवालेके ही होते हैं। इससे यह तो स्पष्ट है कि द्रव्यस्त्रियोंके १४ गुणस्थान नहीं होते हैं। पर गोम्मटसारमें स्त्रीवेदीके १४ गुणस्थान बतलाये अत्रश्य हैं, इसलिए वहां द्रव्यसे पुरुष और भावसे स्त्रीवेदीका ही योनिमती पदसे ग्रहण करना चाहिए। इस विषयमें गोम्मटसार और धवलसिद्धान्तमें कोई मतभेद नहीं है। द्रव्यस्त्रीके आदिके पांच गुणस्थान ही होते हैं। गोम्मटसारकी गाथा नं. १५० में भाव-वेदकी मुख्यतासे ही योनिमतीका ग्रहण है। गाथा नं. १५६ और १५९ में टीकाकारने योनि-मतीसे द्रव्यस्त्रीका ग्रहण किया है, किन्तु वहां भी परिणतिमें स्त्रीभाव हो, ऐसा नहीं कहा गया है।

टिप्पणियोंके विषयमें

२३ शंका—धवलके फुटनोटोंमें दिये गये भगवती आराधनाकी गाथाओंको मूलाराधनाके नामसे उल्लेखित किया गया है, यह ठीक नहीं। जबकि ग्रन्थकार शिवार्य स्वयं उसे भगवती आराधना लिखते हैं, तब मूलाराधना नाम उचित प्रतीत नहीं होता। मूलाराधनादर्पण तो पं. आशाधरजीकी टीका का नाम है, जिसे उन्होंने अन्य टीकाओंसे व्यावृत्ति करनेके लिए दिया था। यदि आपने किसी प्राचीन प्रतिमें ग्रन्थका नाम मूलाराधना देखा हो तो कृपया लिखनेका अनुग्रह कीजिए।

(पं० परमानन्दजी शास्त्री, पत्र २९-१०-३९)

समाधान—टिप्पणियोंके साथ जो ग्रंथ-नाम दिये गये हैं वे उन टिप्पणियोंके आधारभूत प्रकाशित ग्रंथोंके नाम हैं। शोलापुरसे जो ग्रन्थ छपा है, उसपर ग्रन्थका नाम ‘मूलाराधना’ दिया गया है। वही प्रति हमारी टिप्पणियोंका आधार रही है। अतएव उसीका नामोल्लेख कर दिया गया है। ग्रन्थके नामादि सम्बन्धी इतिहासमें जानेके लिए वह उपयुक्त स्थल नहीं था।

२४ शंका—टिप्पणियोंमें अधिकांश तुलना श्वेताम्बर ग्रन्थोंपरसे की गई है। अच्छा होता यदि इस कार्यमें दिगम्बर ग्रन्थोंका और भी अधिकता के साथ उपयोग किया जाता। इससे तुलना-कार्य और भी अधिक प्रशस्तरूपसे सम्पन्न होता।

(अमेकान्त, १, २ पृ. २०१)

(जैनसदेश, १५ फरवरी १९४०)

(जैनगजट, ३ जुलाई १९४०)

समाधान—प्रथम भागमें कुल टिप्पणियोंकी संख्या ८५५ है। उनमेंसे दिगम्बर ग्रन्थोंसे ६२२ और श्वेताम्बर ग्रन्थोंसे २२८ तथा अन्य ग्रन्थोंसे ५ टिप्पणियां ली गई हैं। यदि ग्रन्थ-संख्याकी दृष्टिसे भी देखा जाय तो टिप्पणीमें उपयोग किये गये ग्रन्थोंकी संख्या ७७ है, जिनमें दिगम्बर ग्रन्थ ४०, श्वेताम्बर ग्रन्थ ३०, अजैन ग्रन्थ १, व कोष, व्याकरण, अलंकारादि विषयक ग्रन्थोंकी संख्या ६ है। इससे स्पष्ट है कि अधिकांश तुलना किन ग्रन्थोंपरसे की गई है। जहां जिस ग्रन्थकी जो टिप्पणी उपयुक्त प्रतीत हुई वह ली गई है। इसमें ध्येय यही रखा गया है कि इस सिद्धान्त विषयसे सम्बन्ध रखनेवाले सभी साहित्यकी ओर पाठकोंकी दृष्टि जा सके।

७ द्रव्यप्रमाणानुगम

१ द्रव्यप्रमाणानुगमकी उत्पत्ति

षट्खंडागमके प्रस्तुत भागमें जीवद्रव्यके प्रमाणका ज्ञान कराया गया है, अर्थात् यहां यह बतलाया गया है कि समस्त जीवराशि कितनी है, तथा उसमें भिन्न भिन्न गुणस्थानों व मार्गस्थानोंमें जीवोंका प्रमाण क्या है। स्वभावतः प्रश्न उत्पन्न होता है कि इस अत्यन्त अगाध विषयका वर्णन आचार्योंने किस आधारपर किया है? यह तो पूर्वभागोंमें बता ही आये हैं कि षट्खंडागमका बहुभाग विषय-ज्ञान महावीर भगवान्की द्वादशांगवाणीके अंगभूत चौदह पूर्वोंमेंसे द्वितीय आप्रायणीय पूर्वके कर्मप्रकृति नामक एक अधिकार-विशेषमेंसे लिया गया है। उसमेंसे भी द्रव्यप्रमाणानुगमकी उत्पत्ति इस प्रकार बतलाई गई है—

कर्मप्रकृतिपाहुड, अपरनाम वेदनाकृत्तपाहुड (बेयणकसिणपाहुड) के कृति, वेदना आदि चौबीस अधिकारोंमें छठवां अधिकार 'बंधन' है, जिसमें बंधका वर्णन किया गया है। इस बंधन के चार अर्थाधिकार हैं, बंध, बंधक, बंधनीय और बंधविधान। इनमेंसे बंधक नामक द्वितीय अधिकारके एकजीवकी अपेक्षा स्वामित्व, एकजीवकी अपेक्षा काल, आदि ग्यारह अनुयोगद्वार हैं। इन ग्यारह अनुयोगद्वारोंमें से पांचवां अनुयोगद्वार द्रव्यप्रमाण नामका है और वहींसे प्रकृत द्रव्यप्रमाणानुगम लिया गया है। (देखा षट्खंडागम, प्रथम भाग, पृ. १२५-१२६)

यहां प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि जब जीवद्वाराकी सत्, क्षेत्र, स्पर्शन, काल, अन्तर और अत्यबहुत्व, ये छह प्ररूपणार्थे बंधविधानके प्रकृतिस्थानबंध नामक अवान्तर अधिकारके आठ अनुयोगद्वारोंमेंसे ली गई हैं, तब यह द्रव्यप्रमाणानुगम भी वहींसे क्यों नहीं लिया, क्योंकि, वहां भी तो यह अनुयोगद्वार यथास्थान पाया जाता था? इसका उत्तर यह दिया गया है कि प्रकृतिस्थानबंधके द्रव्यानुयोगद्वारमें 'इस बंधस्थानके बंधक जीव इतने हैं' ऐसा केवल सामान्य रूपसे कथन किया गया है; किन्तु मिध्यादृष्टि आदि गुणस्थानोंकी अपेक्षा कथन नहीं किया गया। बंधक अधिकारमें

गुणस्थानोंकी अपेक्षा कथन किया गया है, वहाँ बतलाया गया है कि मिथ्यादृष्टि जीव इतने होते हैं, सासादनसम्यग्दृष्टि जीव इतने हैं; इत्यादि। अतएव जीवद्वयानुगमके लिये बंधक अधिकारका यही द्रव्यप्रमाणानुगम उपयुगी सिद्ध हुआ। (देखो षट्. प्रथम भाग, पृ. १२९)

२ प्रमाणका स्वरूप

द्रव्यप्रमाणानुगमकी उत्पत्ति बतलानेमें जो कुछ कहा गया है उसीसे स्पष्ट है कि यह भिन्न भिन्न गुणस्थानों और मार्गणास्थानोंमें जीवोंका प्रमाण बतलाया गया है। यह प्रमाण चार अपेक्षाओंसे बतलाया गया है, द्रव्य, काल, क्षेत्र और भाव।

१. द्रव्यप्रमाण—द्रव्यप्रमाणके तीन भेद हैं, संख्यात, असंख्यात और अनन्त। जो संख्यात पंचेन्द्रियोंका विषय है वह संख्यात है। उससे ऊपर जो अवधिज्ञानका विषय है वह असंख्यात है और उससे ऊपर जो केवलज्ञानका विषय है वह अनन्त है।

संख्यातके तीन भेद हैं, जघन्य, मध्यम और उत्कृष्ट। गणनाका आदि एकसे माना जाता है। किन्तु एक केवल वस्तुकी सत्ताको स्थापित करता है, भेदको सूचित नहीं करता। भेदकी सूचना दोसे प्रारंभ होती है, और इसीलिये दोको संख्यातका आदि माना है। इसप्रकार जघन्य संख्यात दो है। उत्कृष्ट संख्यात आगे बतलाये जानेवाले जघन्य परीतासंख्यातसे एक कम होता है। तथा इन दोनों छोरोंके बीच जितनी भी संख्यायें पाई जाती हैं वे सब मध्यम संख्यातके भेद हैं।

असंख्यातके तीन भेद हैं, परीत, युक्त और असंख्यात, और इन तीनोंमेंसे प्रत्येक पुनः जघन्य, मध्यम और उत्कृष्टके भेदसे तीन प्रकारका होता है। जघन्य परीतासंख्यातका प्रमाण अनवस्था, शलाका, प्रतिशलाका और महाशलाका, ऐसे चार कुंडोंको द्वीपसमुद्रोंकी गणना-नुसार सरसोंसे भर भरकर निकालनेका प्रकार बतलाया गया है, जिसके लिये त्रिलोकसार गाथा १८-३५ देखिये। आगे बतलाये जानेवाले जघन्य युक्तासंख्यातसे एक कम करने पर उत्कृष्ट परीतासंख्यातका प्रमाण मिलता है, तथा जघन्य और उत्कृष्ट परीतके बीचकी सब गणना मध्यम परीतासंख्यातके भेद रूप है।

जघन्य परीतासंख्यातके वर्गित-संवर्गित करनेसे अर्थात् उस राशिको उतने ही वार गुणित प्रगुणित करनेसे जघन्य युक्तासंख्यातका प्रमाण प्राप्त होता है। आगे बतलाये जानेवाले जघन्य असंख्यातासंख्यातसे एक कम उत्कृष्ट युक्तासंख्यातका प्रमाण है और इन दोनोंके बीचकी सब गणना मध्यम युक्तासंख्यातके भेद हैं।

१ जं संखारणं पंचिन्द्रियविसओ तं संखेज्जं गाम । तदो उवरि जं ओहिणणविसओ तमसंखेज्जं गाम । तदो उवरि जं केवलणणस्सेव विसओ तमणंतं गाम । (पृ. २६७-२६८)

२ ' एयादीया गणणा, बीयादीया हवेज्ज संखेज्जा ' । (त्रि. सा, १६) जघन्यसंख्यातं द्विसंख्यं तस्य भेदप्राक्कत्वेन एकस्य तदभावात् । (गो. जी. जी. प्र. टीका ११८ गा.)

जघन्य युक्तासंख्यातका वर्ग (य × य) **जघन्य असंख्यातासंख्यात** कहलाता है, तथा आगे बतलाये जानेवाले जघन्य परीतानन्तसे एक कम **उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यात** होता है, और इन दोनोंके बीचकी सब गणना **मध्यम असंख्यातासंख्यात**के भेदरूप है ।

जघन्य असंख्यातासंख्यातको तीन बार वर्गित संवर्गित करनेसे जो राशि उत्पन्न होती है उसमें धर्मद्रव्य, अधर्मद्रव्य, एक जीव और लोकाकाश, इनके प्रदेश तथा अप्रतिष्ठित और प्रतिष्ठित वनस्पतिके प्रमाणको मिला कर उत्पन्न हुई राशिको पुनः तीन बार वर्गित संवर्गित करना चाहिये । इसप्रकार प्राप्त हुई राशिमें कल्पकालके समय, स्थिति और अनुभागबंधाध्यवसायस्थानोंका प्रमाण तथा योगके उत्कृष्ट अविभागप्रतिच्छेद मिलाकर उसे पुनः तीन बार वर्गित संवर्गित करनेसे जो राशि उत्पन्न होगी वह **जघन्य परीतानन्त** कही जाती है । आगे बतलाये जानेवाले जघन्ययुक्तानन्तसे एक कम **उत्कृष्ट परीतानन्त** का प्रमाण है, तथा बीचके सब भेद **मध्यम परीतानन्त** हैं ।

जघन्य परीतानन्तको वर्गित संवर्गित करनेसे **जघन्य युक्तानन्त** होता है । आगे बताये जानेवाले जघन्य अनन्तानन्तसे एक कम **उत्कृष्ट युक्तानन्त**का प्रमाण है, तथा बीचके सब भेद **मध्यम युक्तानन्त** होते हैं ।

जघन्य युक्तानन्तका वर्ग **जघन्य अनन्तानन्त** होता है । इस जघन्य अनन्तानन्तको तीन बार वर्गित संवर्गित करके उसमें सिद्ध जीव, निगोदराशि, प्रत्येकवनस्पति, पुद्गलराशि, कालके समय और अलोकाकाश, ये छह राशियां मिलाकर उत्पन्न हुई राशिको पुनः तीन बार वर्गित संवर्गित करके उसमें धर्मद्रव्य और अधर्मद्रव्य संबंधी अगुरुलघुगुणके अविभागप्रतिच्छेद मिला देना चाहिये । इस प्रकार उत्पन्न हुई राशिको पुनः तीन बार वर्गित संवर्गित करके उसे केवलज्ञानमेंसे घटावे और फिर शेष केवलज्ञानमें उसे मिला देवे । इस प्रकार प्राप्त हुई राशि अर्थात् केवलज्ञानप्रमाण **उत्कृष्ट अनन्तानन्त** होता है । जघन्य और उत्कृष्ट अनन्तानन्तकी मध्यवर्ती सब गणना **मध्यम अनन्तानन्त** कहलाती है ।

(देखो पृ. १९-२६ तथा त्रिलोकसार गाथा १८-५१)

२. कालप्रमाण—जीवोंका परिमाण जाननेके लिये दूसरा माप कालका लगाया गया है, जिसके भेद प्रभेद इसप्रकार हैं— एक परमाणुको मंदगतिसे एक आकाशप्रदेशसे दूसरे आकाशप्रदेशमें जानेके लिये जो काल लगता है वह **समय** कहलाता है । यह कालका सबसे छोटा, अविभागी परिमाण है । असंख्यात (अर्थात् जघन्य युक्तासंख्यात प्रमाण) समयोंकी एक **आवलि** होती है । संख्यात आवलिओंका एक **उच्छ्वास** या **प्राण** होता है । सात उच्छ्वासोंका एक **स्तोक**, सात स्तोकोंका एक **लव**, और साढ़े अड़तीस लवोंकी एक **नाली** होती है । दो नालीका **मुहूर्त** और तीस मुहूर्तका एक **अहोरात्र** या **दिवस** होता है । वर्तमान कालगणनामें अहोरात्र चौबीस घंटोंका माना जाता है । इसके अनुसार एक मुहूर्त अड़तालीस मिनिटका, एक नाली चौबीस मिनिटकी, एक लव ३७ $\frac{३}{४}$ सेकेंडका, एक स्तोक ५३ $\frac{३}{४}$ सेकेंडका तथा एक उच्छ्वास ३७६ $\frac{३}{४}$ सेकेंडका पड़ता है । आवलि और समय एक सेकेंडसे बहुत सूक्ष्म काल प्रमाण होता है ।

(देखो पृ. ६५, तथा ति. प. ४, २८४-२८८)

यह कालप्रमाण तालिकारूपमें इस प्रकार रखा जा सकता है—

अहोरात्र या दिवस	= ३० मुहूर्त	= २४ घंटे
मुहूर्त	= २ नाली	= ४८ मिनट
नाली	= ३८॥ लव	= २४ मिनट
लव	= ७ स्तोक	= ३७ ^३ / _४ सेकेंड
स्तोक	= ७ उच्छ्वास	= ५६ ^३ / _४ सेकेंड
उच्छ्वास या प्राण	= संख्यात आवलि	= ३७ ^३ / _४ सेकेंड
आवलि	= असंख्यात (ज. यु. असं.) समय	
समय	= एक परमाणुके एक आकाशप्रदेशसे दूसरे आकाशप्रदेशमें मन्दगतिसे जानेका काल	

एक सामान्य स्वस्थ प्राणीके (मनुष्यके) एक वार श्वास लेने और निकालनेमें जितना समय लगता है उसे उच्छ्वास कहते हैं। एक मुहूर्तमें इन उच्छ्वासोंकी संख्या ३७७३ कही गई है, जो उपर्युक्त प्रमाणानुसार इस प्रकार आती है— $2 \times 38 \frac{3}{4} \times 7 \times 7 = 3773$ । एक अहोरात्र (२४ घंटे) में $3773 \times 30 = 1,13,190$ उच्छ्वास होते हैं। इसका प्रमाण एक मिनटमें $\frac{3773}{60} = 62.8$ आता है, जो आधुनिक मान्यताके अनुसार ही है।

एक मुहूर्तमेंसे एक समय कम करने पर **भिन्नमुहूर्त** होता है, तथा भिन्नमुहूर्तसे एक समय कम कालसे लगाकर एक आवलि व आवलिसे कम कालको भी **अन्तर्मुहूर्त** कहा है। (पृ. ६७) इस प्रकार एक अन्तर्मुहूर्त सामान्यतः संख्यात आवलि प्रमाण ही होता है, किन्तु कहीं कहीं अन्तर् शब्दको सामीप्यार्थक मानकर असंख्यात आवलि प्रमाण भी मान लिया गया है। (पृ. ६९)

पंद्रह दिनका एक पक्ष, दो पक्षका मास, दो मासकी ऋतु, तीन ऋतुओंका अयन, दो अयनका वर्ष, पांच वर्षका युग, चौरासी लाख वर्षका पूर्वांग, चौरासी लाख पूर्वांग का पूर्व, चौरासी पूर्वका नयुतांग, चौरासी लाख नयुतांग का नयुत, तथा इसीप्रकार चौरासी और चौरासी लाख गुणित क्रमसे कुमुदांग और कुमुद, पद्मांग और पद्म, नलिनांग और नलिन, कमलांग और कमल, त्रुटितांग और त्रुटित, अट्टांग और अट्ट, अममांग और अमम, हाहांग और हाहा, हूहांग और हूहू, लतांग और लता, तथा महालतांग और महालता क्रमशः होते हैं। फिर चौरासी लाख गुणित क्रमसे श्रीकल्प (या शिरःकंप), हस्तप्रहेलित (हस्तप्रहेलिका) और अचलप्र (चर्चिका) होते हैं। चौरासीको इकतीस वार परस्पर गुणा करनेसे अचलप्रकी वर्षोंका प्रमाण आता है, जो नव्वे शून्यांकोंका होता है। यद्यपि इन नयुतांगादि काल-गणनाओंका उल्लेख प्रस्तुत ग्रंथभागमें नहीं आया, तथापि संख्यात गणनाकी मान्यताका कुछ बोध करानेके लिये यह

१ हाहांग और हाहा नामक संख्याओंके नाम राजवार्तिक व हरिवंशपुराणके कालविवरणमें नहीं पाये जाते।

२ यह तिलोयपणक्तिके अनुसार है। किन्तु चौरासीको इकतीस वार परस्पर गुणित करनेसे (८४)^{३१}

Logarithm के अनुसार केवल साठ (६०) अंकप्रमाण ही संख्या आती है।

सब यहाँ दी गई है। यह सब संख्यात (मध्यम) का ही प्रमाण है। इससे कई गुणे ऊपर जाकर उत्कृष्ट संख्यातका प्रमाण होता है जो ऊपर गणना-मापमें बता ही आये हैं।

आगे क्षेत्रप्रमाणमें बतलाये जानेवाले एक प्रमाण योजन (अर्थात् दो हजार कोश) लम्बा चौड़ा और गहरा कुड बनाकर उसे उत्तम भोगभूमिके सात दिनके भीतर उत्पन्न हुए मेढके रोमाग्रों (जिनके और खंड कैचीसे न हो सकें) से भर दे, और उनमेंसे एक एक रोमखंडको सौ सौ वर्षमें निकाले। इसप्रकार उन समस्त रोमोंको निकालनेमें जितना काल व्यतीत होगा, उसे व्यवहारपल्य कहते हैं। उक्त रोमोंकी कुल संख्या गणितसे ४५ अंक प्रमाण आती है, और तदनुसार व्यवहारपल्यका प्रमाण ४५ अंक प्रमाण शताब्दियां अथवा ४७ अंक प्रमाण वर्ष हुआ।

इस व्यवहारपल्यको असंख्यात कोटि वर्षोंके समयोंसे गुणित करनेपर उद्धारपल्यका प्रमाण आता है, जिससे द्वीप-समुद्रोंकी गणना की जाती है। इस उद्धारपल्यको असंख्यात कोटि वर्षोंके समयोंसे गुणित करनेपर अद्वापल्यका प्रमाण आता है। कर्म, भव, आयु और काय, इनकी स्थितिके प्रमाणमें इसी अद्वापल्यका उपयोग होता है। जीवद्रव्यकी प्रमाण-प्ररूपणामें भी यथावश्यक इसी पल्योपमका उपयोग किया गया है। एक करोड़को एक करोड़से गुणा करने पर जो लब्ध आता है उसे कोड़ाकोड़ी कहते हैं। दस कोड़ाकोड़ी अद्वापल्योपमोंका एक अद्वासागरोपम और दस कोड़ाकोड़ी अद्वासागरोपमोंकी एक उत्सर्पिणी और इतने ही कालकी एक अवसर्पिणी होती है। इन दोनोंको मिलाकर एक कल्पकाल होता है।

३. क्षेत्रप्रमाण—गुद्गल द्रव्यके उस सूक्ष्मातिसूक्ष्म भागको परमाणु कहते हैं जिसका पुनः विभाग न हो सके, जो इन्द्रियों द्वारा प्राह्य नहीं और जो अप्रदेशी तथा अंत, आदि व मध्य रहित है। एक अविभागी परमाणु जितने आकाशको रोकता है उतने आकाशको एक क्षेत्रप्रदेश कहते हैं। अनन्तानन्त परमाणुओंका एक अवसन्नासन्न स्कंध, आठ अवसन्नासन्न स्कंधोंका एक सन्नासन्न स्कंध, आठ सन्नासन्न स्कंधोंका एक त्रुटरेणु (त्रुटिरेणु, तृटरेणु), आठ त्रुटरेणुओंका एक त्रसरेणु, आठ त्रसरेणुओंका एक रथरेणु, आठ रथरेणुओंका उत्तम भोगभूमिसंबंधी बालाग्र, आठ उत्तम भोगभूमिसंबंधी बालाग्रोंका एक मध्यम भोगभूमिसंबंधी बालाग्र, आठ मध्यम भोगभूमिसंबंधी बालाग्रोंका एक जघन्य भोगभूमिसंबंधी बालाग्र, आठ जघन्य भोगभूमिसंबंधी बालाग्रोंका एक कर्मभूमिसंबंधी बालाग्र, आठ कर्मभूमिसंबंधी बालाग्रोंका एक लिक्षा (लीख), आठ लिक्षाओंका एक जूं, आठ जूँकोंका एक यव (यव-मध्य), और आठ यवोंका एक अंगुल होता है। अंगुल तीन प्रकारका है, उत्सेधांगुल, प्रमाणांगुल और आत्मांगुल। ऊपर जिस अंगुलका प्रमाण बतलाया है वह उत्सेधांगुल (सूचि) है। पांचसौ उत्सेधांगुलोंका एक प्रमाणांगुल होता है, जो अपसर्पिणीकालके प्रथम चक्रवर्तिके पाया जाता है। भरत और ऐरावत क्षेत्रमें जिस कालमें सामान्य मनुष्यका जो अंगुल प्रमाण होता है वह उस उस कालमें उस उस क्षेत्रका आत्मांगुल कहलाता है। मनुष्य, तिर्यंच, देव और नारकियोंके शरीरकी अवगाहना तथा चतुर्निकाय देवोंके निवास और नगरके प्रमाणके लिये उत्सेधांगुल ही ग्रहण किया जाता है। द्वीप, समुद्र,

पर्वत, वेदी, नदी, कुंड, जगती (कोट), वर्ष (क्षेत्र) का प्रमाण प्रमाणांगुलसे किया जाता है, तथा भृंगार, कलश, दर्पण, वेणु, पटह, युग, शयन, शकट, हल, मूसल, शक्ति, तोमर, सिंहासन, बाण, नाली, अक्ष, चामर, दुंदुभि, पीठ, छत्र तथा मनुष्योंके निवास व नगर, उद्यानादिका प्रमाण आत्मांगुलसे किया जाता है। छह अंगुलोंका पाद, दो पादोंकी विहस्ति (बलिस्त), दो विहस्तियोंका हाथ, दो हाथोंका किष्कु, दो किष्कुओंका दंड, युग, धनु, मुसल व नाली, दो हजार दंडोंका एक कोश तथा चार कोशोंका एक योजन होता है। (ति. प. १, ९८-११६)

द्रव्यका अविभागी अंश = परमाणु	८ जू	= यव
अनन्तानन्त परमाणु = अवसन्नासन्न स्कंध	८ यव	= उत्सेधांगुल
८ अवसन्नासन्नस्कंध = सन्नासन्नस्कंध	(५०० उत्सेधांगुल = प्रमाणांगुल)	
८ सन्नासन्नस्कंध = त्रुटरेणु	६ अंगुल	= पाद
८ त्रुटरेणु = त्रसरेणु	२ पाद	= विहस्ति
८ त्रसरेणु = रथरेणु	२ विहस्ति	= हाथ
८ रथरेणु = उत्तम भो. भू. बालाम	२ हाथ	= किष्कु
८ उ. भो. भू. बा. = मध्यम " " "	२ किष्कु	= दंड, युग, धनु, मुसल या नाली
८ म. भो. भू. बा. = जघन्य " " "	२००० दंड	= कोस
८ ज. भो. भू. बा. = कर्मभूमि बालाम	४ कोश	= योजन
८ क. भू. बालाम = लिक्षा		
८ लिक्षा = जू		

अंगुलसे आगेके प्रमाण भी आत्म, उत्सेध व प्रमाण अंगुलके अनुसार तीन तीन प्रकारके होते हैं। एक प्रमाण योजन अर्थात् दो हजार कोश लम्बे, चौड़े और गहरे कुंडके आश्रयसे अद्वापल्य नामक प्रमाण निकालनेका प्रकार ऊपर कालप्रमाणमें बताया आये हैं। उसी अद्वापल्यके अर्धच्छेद प्रमाण अद्वापल्योंका परस्पर गुणा करनेपर सूच्यंगुलका प्रमाण आता है। सूच्यंगुलके वर्ग को प्रतरांगुल और घनको घनांगुल कहते हैं। अद्वापल्यके असंख्यातवै भागप्रमाण, अथवा मतान्तरसे अद्वापल्यके जितने अर्धच्छेद हों उसके असंख्यातवै भागप्रमाण, घनांगुलोंके परस्पर गुणा करनेपर जगश्रेणीका प्रमाण आता है। जगश्रेणीके सातमें भाग प्रमाण रज्जु होता है, जो तिर्यक् लोकके मध्य विस्तार प्रमाण है। जगश्रेणीके वर्गको जगप्रतर तथा जगश्रेणीके घनको लोक कहते हैं।

ये सब अर्थात् पल्य, सागर, सूच्यंगुल प्रतरांगुल, घनांगुल, जगश्रेणी, जगप्रतर और लोक उपमा मान हैं, जिनका उपयोग यथावसर द्रव्य, क्षेत्र और काल, इन तीनों अपेक्षाओंसे बतलाये गये प्रमाणोंमें किया गया है। उनका तात्पर्य द्रव्यप्रमाणमें उतनी संख्यासे, कालप्रमाणमें उतने समयोंसे तथा क्षेत्रप्रमाणमें उतने ही आकाशप्रदेशोंसे समझना चाहिये।

१ एक राशि जितनी बार उचरोत्तर आधी आधी की जा सके, उतने उस राशिके अर्धच्छेद कहे जाते हैं।

४. भावप्रमाण—पूर्वोक्त तीना प्रकारके प्रमाणोंके ज्ञानको ही भावप्रमाण कहा है। (देखो सूत्र ५)। इसका अभिप्राय यह है कि जहां जिस गुणस्थान व मार्गणास्थानका द्रव्य, काल व क्षेत्रकी अपेक्षासे प्रमाण बतलाया गया है वहां उस प्रमाणके ज्ञानको ही भावप्रमाण समझ लेना चाहिये।

३ जीवराशिका गुणस्थानोंकी अपेक्षा प्रमाण-प्ररूपण

सर्व जीवराशि अनन्तानन्त है। उसका बहुभाग मिथ्यादृष्टिगुणस्थानवर्ती है, तथा शेष एक भाग अन्य तरह गुणस्थानों और सिद्धोंमें विभाजित है। इनमें भी मिथ्यादृष्टि और सिद्ध क्रम-हानिरूपसे अनन्तानन्त हैं। सासादनादि चार गुणस्थानोंके जीव प्रत्येक राशिमें असंख्यात हैं,^१ तथा शेष प्रमत्तादि नौ गुणस्थानोंके जीव संख्यात हैं जिनकी कुल संख्या तीन कम नौ करोड़ निश्चित है। यद्यपि अनन्तको संख्यामें उतारना आमक हो सकता है, तथापि धवलाकारने उक्त राशियोंके क्रमिक प्रमाणका बोध करानेके लिये सर्व जीवराशिको १६ और इनमेंसे मिथ्यादृष्टिराशिको १३, तथा सासादनादि तरह गुणस्थानोंके जीवों और सिद्धोंका संयुक्त प्रमाण ३ अंकोंके द्वारा सूचित किया है। अब हम यदि इसी अकसंदृष्टिके आधारसे सभी गुणस्थानों व सिद्धोंका अलग अलग प्रमाण कल्पित करना चाहे, तो स्थूलतः इसप्रकार किया जा सकता है—

चौदह गुणस्थानोंमें जीवराशियोंके प्रमाणकी संदृष्टि

गुणस्थान	प्रमाण	अंकसंदृष्टि	
१. मिथ्यादृष्टि	अनन्त	१३	
*२. सासादन	असंख्य	६७	
३. मिश्र	"	३६	
४. अत्रितसंग्यदृष्टि	"	३२	
५. संयतासंयत	"	६५	
६. प्रमत्तत्रित	५९३९८२०६	} १५	
७. अप्रमत्तत्रित	२९६९९१०३		
८. अपूर्वकरण	८९७		
९. अनिवृत्तिकरण	८९७		
१०. सूक्ष्मसाम्पराय	८९७		
११. उपशान्तमोह	२९९		
१२. क्षीणमोह	५९८		
१३. सयोगिकेवली	८९८५०२		
१४. अयोगिकेवली	५९८		
सिद्ध	अनन्त		२
सर्वजीवराशि	अनन्त		१६

१ सासादनसे संयतासंयत तक चारों गुणस्थानोंके जीव समुच्चय व पृथक् पृथक् रूपसे भी पत्योपमके

चौदहों गुणस्थानोंकी जीवराशियोंके प्रमाण-प्ररूपणके पश्चात् उनका भागाभाग और फिर उनका अल्पबहुत्व बतलाया गया है। भागाभागमें सामान्य राशिको लेकर विभाग करते हुए सबसे अल्प राशि तक आये हैं। अल्पबहुत्वमें सबसे छोटी राशिसे प्रारंभ करके गुणा और योग (सातिरेक) करते हुए सबसे बड़ी राशि तक पहुंचे हैं। इस अल्पबहुत्वका तीन प्रकारसे प्ररूपण किया गया है, स्वस्थान, परस्थान और सर्वपरस्थान। स्वस्थानमें केवल अवहारकाल और विवक्षित राशिका अल्पबहुत्व बतलाया गया है। परस्थानमें अवहारकाल, भाज्य तथा अन्य जो राशियां उनके प्रमाणके बीचमें आ पड़ती हैं उनका और विवक्षित राशिका अल्पबहुत्व दिखाया गया है। तथा सर्वपरस्थानमें उक्त राशियोंके अतिरिक्त अन्य राशियोंसे भी अल्पबहुत्व दिखाया गया है। (पृ. १०१-१२१)

४ जीवराशिका मार्गणास्थानोंकी अपेक्षा प्रमाण-प्ररूपण

गुणस्थानोंमें जीवप्रमाण-प्ररूपणके पश्चात् गति आदि चौदह मार्गणाओं व उनके भेद-प्रभेदोंमें जीवराशिका प्रमाण दिखलाया गया है और यहां प्रत्येक राशिका प्रमाण, भागाभाग और अल्पबहुत्व यथाक्रमसे समझाया गया है। जिसप्रकार गुणस्थानोंमें प्रथम मिथ्यादृष्टिके प्रमाण समझानेमें आचार्यने गणितकी अनेक प्रक्रियाओंका उपयोग करके दिखाया है, उसी प्रकार मार्गणास्थानोंमें प्रथम नरकगतिके प्रमाणप्ररूपणमें भी गणितविस्तार पाया जाता है। (देखो पृ. १२१-२०५)

उक्त प्रमाण-विवेचन बड़ी सूक्ष्मता और गहराईके साथ किया गया है, किन्तु आचार्यने अंकसंदृष्टि कायम नहीं रखी, जिससे सामान्य पाठकोंको विषयका बोध होना सुगम नहीं है। अतएव हम यहांपर उन सब मार्गणाओंकी पृथक् पृथक् प्रमाण-प्ररूपक अंकसंदृष्टियां आचार्यद्वारा कल्पित अंकोंके आधारसे बनानेका प्रयत्न करते हैं, जिसका मुख्य उद्देश्य अनन्त, असंख्यात व संख्यातेके भीतर राशियोंके अल्पबहुत्वका कुछ स्थूल बोध कराना मात्र है। प्रत्येक मार्गणाके भीतर संपूर्ण जीवराशिका समुच्चय प्रमाण १६ ही रखा गया है। किन्तु सूक्ष्म दृष्टिसे परीक्षण करनेपर एक दूसरी मार्गणाओंकी अंकसंदृष्टियोंमें परस्पर वैषम्य दृष्टिगोचर हो सकता है। यह सर्वजीवराशिके लिये केवल १६ जैसी अल्प संख्या लेकर समस्त मार्गणाओंके प्रभेदोंको उदाहृत करनेमें प्रायः अनिवार्य ही है। एक राशि दूसरी राशिसे जितनी विशेष व जितनी गुणित अधिक है उसका अनुमान इन अंकोंसे कदापि नहीं करना चाहिये। यहां तो सिर्फ एक मार्गणाके भीतर राशियोंकी परस्पर अधिकता या अल्पताका ही क्रम जाना जा सकता है। यद्यपि गणितके सूक्ष्म विचारसे यह वैषम्य भी संभवतः दूर किया जा सकता था, किन्तु उससे फिर संदृष्टियां सुगम होने की अपेक्षा दुर्गम सी हो जाती, जिससे हमारा अभिप्राय पूर्ण नहीं होता। चूंकि यहां प्रत्येक मार्गणाके भीतर जीवराशियोंका प्रमाणक्रम निर्दिष्ट करना अभीष्ट है, अतएव राशियां बहुत्वसे अल्पत्वकी ओर क्रमसे रखी गई हैं, उनके रूढक्रमसे नहीं। हां, सिद्ध सर्वत्र अन्त-

असंख्यातवें माग है। इनमें भी असंयतसम्यग्दृष्टि सबसे अधिक, इनके असंख्यातवें माग मिश्रगुणस्थानीय, इनके संख्यातवें माग सासादनगुणस्थानीय तथा इनके असंख्यातवें माग संयतासंयत जीव है।

की ओर ही रखे हैं। कहीं कहीं राशिके जो अंक दिये गये हैं उनसे कुछ अधिक प्रमाण विवक्षित है, क्योंकि, उसमें कोई अन्य अल्प राशि भी प्रविष्ट होती है। ऐसे स्थानोंपर अंकके आगे धनका चिन्ह + बना दिया गया है, और अंक देकर टिप्पणीमें उस विवक्षित राशिका उल्लेख कर दिया गया है। इस दिशामें यह प्रयत्न, जहां तक हमें ज्ञात है, प्रथम ही है, अतः सावधानी रखने पर भी कुछ त्रुटियां हो सकती हैं। यदि पाठकोंके ध्यानमें आवें, तो हमें अवश्य सूचित करें।

चौदह मार्गणास्थानोंमें जीवराशियोंके प्रमाणकी संदृष्टियां

(मार्गणा शीर्षकके आगे दी गई पृष्ठसंख्या उस मार्गणाके भागाभागकी सूचक है।)

१ गति मार्गणा (पृ. २०७)

तिर्यंच	देव	नारक	मनुष्य	सिद्ध	सर्व जीव
अनन्त	असंख्य	असंख्य	असंख्य	अनन्त	अनन्त
२००	१२	८	४	३२	१६
१६	१६	१६	१६	१६	

२ इन्द्रिय मार्गणा (पृ. ३१९)

१ इन्द्रिय	२ इन्द्रिय	३ इन्द्रिय	४ इन्द्रिय	५ इन्द्रिय	अर्तीन्द्रिय	सर्व जीव
अनन्त	असंख्य	असंख्य	असंख्य	असंख्य	अनन्त	अनन्त
१८२	१४	१२	१०	६	३२	१६
१६	१६	१६	१६	१६	१६	

३ काय मार्गणा (पृ. ३४१)

वनस्पति	वायु	जल	पृथिवी	तेज	अस	अकाय	सर्व जीव
अनन्त	असंख्य	असंख्य	असंख्य	असंख्य	असंख्य	अनन्त	अनन्त
१७६	१६	१२	१०	६	४	३२	१६
१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	

४ योग मार्गणा (पृ. ४१२)

काय.	वचन.	मन.	अयोगी	सर्व जीव
अनन्त	असंख्य	असंख्य	अनन्त	अनन्त
१८४	२४	१६	३२	१६
१६	१६	१६	१६ +	

१ यहाँ यह सिद्धोंका प्रमाण अयोगिकेवलियोंसे सातिरेक समझना चाहिये।

५ वेद मार्गणा (पृ. ४२१)

नपुंसक	स्त्री	पुरुष	अवेद	सर्व जीव
अनन्त	असंख्य	असंख्य	अनन्त	अनन्त
$\frac{२००}{१६}$	$\frac{२०}{१६}$	$\frac{४}{१६}$	$\frac{३२}{१६} + २$	१६

६ कषाय मार्गणा (पृ. ४३१)

लोभ.	माया.	क्रोध.	मान.	अकषायी.	सर्व जीव
अनन्त	अनन्त	अनन्त	अनन्त	अनन्त	अनन्त
$\frac{८२}{१६}$	$\frac{५०}{१६}$	$\frac{४८}{१६}$	$\frac{४४}{१६}$	$\frac{३२}{१६} + ३$	१६

७ ज्ञान मार्गणा (पृ. ४४२)

कुमति.	विभंग.	मति.	अवधि.	मनःपर्यय.	केवल.	सर्व जीव
कुश्रुत.		श्रुत.				
अनन्त	असंख्य	असंख्य	असंख्य	संख्यात	अनन्त	अनन्त
$\frac{८३२}{६४}$	$\frac{३९}{६४}$	$\frac{२०}{६४}$	$\frac{४}{६४}$	$\frac{१}{६४}$	$\frac{१०८}{६४} + ४$	१६

८ संयम मार्गणा (पृ. ४५१)

असंयमी	देशसं.	सामा.	यथाख्या.	परि. वि.	सू. सां.	सिद्ध	सर्व जीव
		छेदी.					
अनन्त	असंख्य	संख्यात	संख्यात	संख्यात	संख्यात	अनन्त	अनन्त
$\frac{८३२}{६४} + ५$	$\frac{३०}{६४}$	$\frac{२०}{६४}$	$\frac{१०}{६४}$	$\frac{३}{६४}$	$\frac{१}{६४}$	$\frac{१२८}{६४}$	१६

९ दर्शन मार्गणा (पृ. ४५७)

अचक्षु.	चक्षु.	अवधि.	केवल.	सर्व जीव
अनन्त	असंख्य	असंख्य	अनन्त	अनन्त
$\frac{८३२}{६४}$	$\frac{६०}{६४}$	$\frac{४}{६४}$	$\frac{१२८}{६४} + ६$	१६

२ यहाँ सिद्धोंका प्रमाण ९ वें गुणस्थानके अवेद भागसे ऊपरके समस्त गुणस्थानोंकी राशियोंसे सातिरेक है।

३ यहाँ सिद्धोंका प्रमाण ११ वें और ऊपरके समस्त गुणस्थानोंकी राशियोंसे सातिरेक है।

४ यहाँ सिद्धोंका प्रमाण १३ वें और १४ वें गुणस्थानोंकी राशियोंसे सातिरेक है।

५ यहाँ मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण २ सरे, ३ सरे और ४ थे गुणस्थानोंकी राशियोंसे साधिक है।

६ यहाँ सिद्धोंका प्रमाण १३ वें और १४ वें गुणस्थानोंकी राशियोंसे सातिरेक है।

१० लेश्या मार्गणा (पृ. ४६६)

कृष्ण. अनन्त ७६ १६	नील. अनन्त ६७ १६	कापोत. अनन्त ६५ १६	पति. असंख्य ८ १६	पद्म. असंख्य ६ १६	शुक्ल. असंख्य २ १६	अलेश्य अनन्त ३२ ^७ १६ +	सर्व जीव अनन्त १६
-----------------------------	---------------------------	-----------------------------	---------------------------	----------------------------	-----------------------------	--	-------------------------

११ भव्य मार्गणा (पृ. ४७३)

भव्य अनन्त १९६ १६	अभव्य अनन्त २८ १६	सिद्ध अनन्त ३२ १६	सर्व जीव अनन्त १६
----------------------------	----------------------------	----------------------------	-------------------------

१२ सम्यक्त्व मार्गणा (पृ. ४७८)

मिथ्याह. अनन्त २०८ १६	क्षायोप. असंख्य ६ १६	क्षायिक. असंख्य ४ १६	औपश. असंख्य ३ १६	मिश्र. असंख्य २ १६	सासा. असंख्य १ १६	सिद्ध अनन्त ३२ १६	सर्व जीव अनन्त १६
--------------------------------	-------------------------------	-------------------------------	---------------------------	-----------------------------	----------------------------	----------------------------	-------------------------

१३ संज्ञा मार्गणा (पृ. ४८३)

असंज्ञी अनन्त १९९ १६	संज्ञी असंख्य २५ १६	अनुभव्य अनन्त ३२ ^८ १६ +	सर्व जीव अनन्त १६
-------------------------------	------------------------------	---	-------------------------

१४ आहार मार्गणा (पृ. ४८५)

आहारक अनन्त १२	अनाहारक बंधक अनन्त ३	अबंधक अनन्त २	सर्व जीव अनन्त १६
----------------------	-------------------------------	---------------------	-------------------------

७ यहाँ सिद्धोंका प्रमाण १४ वें गुणस्थान राशिसे सातिरेक है ।

८ यहाँ सिद्धोंका प्रमाण १३ वें और १४ वें गुणस्थानोंकी राशियोंसे सातिरेक समझना चाहिये ।

मार्गणास्थानोंके भीतर बतलाई गई राशियोंका बहुत्वसे अल्पत्वकी ओर क्रम जहांतक हमारे विचारमें आया है, निम्न प्रकार है—

अनन्त	असंख्यात	संख्यात
१ असंयमी	२४ वायुकायिक	५६ सामायिकसंयत }
२ अवक्षुदर्शनी	२५ जल ,,	५७ छेदोपस्थापना ,, }
३ कुमति }	२६ पृथिवी ,,	५८ यथाख्यात ,,
४ कुश्रुत }	२७ तेज ,,	५९ केवलज्ञानी }
५ मिथ्यादृष्टि	२८ तप्त ,,	६० केवलदर्शनी }
६ नपुंसकवेदी	२९ वचनयोगी	६१ परिहारसंयत
७ तिर्यंच	३० द्वीन्द्रिय	६२ मनःपर्ययज्ञानी
८ असंज्ञी	३१ त्रीन्द्रिय	६३ सूक्ष्मसांपरायसंयत
९ काययोगी	३२ चतुरिन्द्रिय	
१० एकेन्द्रिय	३३ चक्षुदर्शनी	
११ वनस्पतिकायिक	३४ पंचेन्द्रिय	
१२ भव्य	३५ संज्ञी	
१३ आहारक	३६ मनोयोगी	
१४ अनाहारक	३७ विभंगज्ञानी	
१५ कृष्ण लेश्या	३८ देवगति	
१६ नील ,,	३९ स्त्रीवेदी	
१७ कापोत ,,	४० नारक	
१८ लोभ कषायी	४१ पुरुषवेदी	
१९ माया ,,	४२ मनुष्य	
२० क्रोध ,,	४३ पीतलेश्या	
२१ मान ,,	४४ पद्म ,,	
२२ सिद्ध	४५ मतिज्ञानी }	
२३ अभव्य	४६ श्रुत ,, }	
	४७ अवधि ,, }	
	४८ अवधिदर्शनी }	
	४९ शुक्लेश्या	
	५० क्षायोपशमिकसम्यक्त्वी.	
	५१ क्षायिक ,,	
	५२ औपशमिक ,,	
	५३ मिश्र	
	५४ सासादन	
	५५ देशसंयत	

अनन्त राशियां २३, असंख्यात राशियां २४-५५=३२, संख्यात ५६-६३=८; कुल ६३.

इस प्रमाण-प्ररूपणमें स्वभावतः पाठकोंको मनुष्योंके प्रमाणके सम्बन्धमें विशेष कौतुक हो सकता है। इस आगमानुसार सर्व मनुष्योंकी संख्या असंख्यात है। उनमें गुणस्थानोंकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि द्रव्यप्रमाणसे असंख्यात, कालप्रमाणसे असंख्यातासंख्यात कल्पकाल (अवसर्पिणियों-उत्सर्पिणियों) के समय प्रमाण, तथा क्षेत्रप्रमाणसे जगश्रेणीके असंख्यातवें भाग अर्थात् असंख्यात करोड़ योजन क्षेत्रप्रदेश प्रमाण हैं। द्वितीयादि गुणस्थानवर्ती जीव संख्यात हैं, जो इस प्रकार हैं—

२ सासादन गुणस्थानवर्ती मनुष्य	५२ करोड़ (व मतान्तरसे ५० करोड़)
३ मिश्र	१०४ करोड़ (पूर्वोक्तसे दुगुने)
४ असंयतसम्यग्दृष्टि	७०० करोड़
५ संयतासंयत	१३ करोड़

छठवेंसे चौदहवें गुणस्थानतकके मनुष्योंकी संख्या वही है जो ऊपर गुणस्थान प्रमाण-प्ररूपणमें दिखा आये हैं, क्योंकि, ये गुणस्थान केवल मनुष्योंके ही होते हैं, देवादिकोंके नहीं। अतः जिनका प्रमाण संख्यात है, ऐसे द्वितीय गुणस्थानसे चौदहवें गुणस्थान तकके कुल मनुष्योंका प्रमाण ५२+१०४+७००+१३=तीन कम ९ करोड़, अर्थात् कुल तीन कम आठसौ अठहत्तर करोड़ होता है। आजकी संसारभरकी मनुष्यगणनासे यही प्रमाण चौगुनेसे भी अधिक हो जाता है। मिथ्यादृष्टियोंको मिलाकर तो उसकी अधिकता बहुत ही बढ़ जाती है। जैन सिद्धान्तानुसार यह गणना ढाई द्वीपवर्ती विदेह आदि समस्त क्षेत्रोंकी है जिसमें पर्याप्तकोंके अतिरिक्त निवृत्त्यपर्याप्तक और लब्ध्यपर्याप्तक मनुष्य भी सम्मिलित हैं।

नाना क्षेत्रोंमें मनुष्य गणनाका अल्पबहुत्व इस प्रकार बतलाया गया है—अन्तर्द्वीपोंके मनुष्य सबसे थोड़े हैं। उनसे संख्यातगुणे उत्तरकुरु और देवकुरुके मनुष्य हैं। इसीप्रकार हरि और रम्यक, हैमवत और हैरणवत, भरत और णरावत, तथा विदेह इन क्षेत्रोंका मनुष्यप्रमाण पूर्व पूर्वसे क्रमशः संख्यातगुणा है। (देखो पृ. ९९)

एक बात और उल्लेखनीय है कि वर्तमान हुंडावसर्पिणियोंमें पद्मप्रभ तीर्थंकरका ही शिष्य-परिवार सबसे अधिक हुआ है, जिसकी संख्या तीन लाख तीस हजार ३,३०,००० थी।

उपर्युक्त चौदह गुणस्थानों और मार्गणा-स्थानोंमें जीवद्रव्यके प्रमाणका ज्ञान भगवान् भूतबालि आचार्यने १९२ सूत्रोंमें कराया है, जिनका विषयक्रम इस प्रकार है—

प्रथम सूत्रमें द्रव्यप्रमाणानुगमके ओष और आदेश द्वारा निर्देश करनेकी सूचना देकर दूसरे, तीसरे, चौथे और पांचवें सूत्रोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानके जीवोंका प्रमाण क्रमशः द्रव्य, काल, क्षेत्र और भावकी अपेक्षा बतलाया है। छठवें सूत्रमें द्वितीयसे पांचवें गुणस्थान तकके जीवोंका तथा आगेके सातवें और आठवें सूत्रमें क्रमशः छठे और सातवें गुणस्थानोंका द्रव्य-प्रमाण बतलाया है। उसी प्रकार ९ वें और १० वें सूत्रमें उपशामक तथा ११ वें व १२ वें में क्षपकों और अयोग-केवली जीवोंका तथा १३ वें व १४ वें सूत्रोंमें सयोगिकेवलियोंका प्रवेश और संचय-कालकी

अपेक्षासे प्रमाण कहा गया है। सूत्र नं. १५ से मार्गणास्थानोंमें प्रमाणका निर्देश प्रारंभ होता है, जिसके प्ररूपणकी सूत्र-संख्या निम्न प्रकार है—

सूत्रसे	सूत्रतक	कुल सूत्र	सूत्रसे	सूत्रतक	कुल सूत्र
नरकगति	१५	— २३ = ९	ज्ञान मार्गणा	१४१	— १४७ = ७
तिर्यंचगति	२४	— ३९ = १६	संयम	१४८	— १५४ = ७
मनुष्यगति	४०	— ५२ = १३	दर्शन	१५५	— १६१ = ७
देवगति	५३	— ७३ = २१	लेख्या	१६२	— १७१ = १०
इंद्रिय मार्गणा	७४	— ८६ = १३	भव्य	१७२	— १७३ = २
काय	८७	— १०२ = १६	सम्यक्त्व	१७४	— १८४ = ११
योग	१०३	— १२३ = २१	संज्ञी	१८५	— १८९ = ५
वेद	१२४	— १३४ = ११	आहार	१९०	— १९२ = ३
कषाय	१३५	— १४० = ६			

५ मतान्तर और उनका खंडन

धवलाकारने अपने समयकी उपलब्ध सैद्धान्तिक सम्पत्तिका जितना भरपूर उपयोग किया है वह ग्रंथके अवलोकनसे ही पूर्णतः ज्ञात हो सकता है। सूत्रों, व्याख्यानो और उपदेशोंका जो साहित्य उनके सन्मुख उपस्थित था, उसका सिंहावलोकन प्रथम भागकी भूमिकामें कराया जा चुका है। प्रस्तुत ग्रंथभागमें भी जहां प्रकृत विषयके विशेष प्रतिपादनके लिये धवलाकारको सूत्र, सूत्रयुक्ति व व्याख्यानका आधार नहीं मिला, वहां उन्होंने 'आचार्य परंपरागत जिनोपदेश', 'परम गुरुपदेश', 'गुरुपदेश', व 'आचार्य-वचन' के आश्रयसे प्रमाणप्ररूपण किया है। किन्तु विशेष ध्यान देने योग्य कुछ ऐसे स्थल हैं, जहां आचार्यने भिन्न भिन्न मतोंका स्पष्ट उल्लेख करके एकका खंडन और दूसरेका मंडन किया है। यहां हम इसीप्रकारके मत-मतान्तरोंका कुछ परिचय कराते हैं—

(१) सूत्रकारने प्रमाणप्ररूपणामें प्रथम द्रव्यप्रमाण, फिर कालप्रमाण, और तत्पश्चात् क्षेत्र-प्रमाणका निर्देश किया है। सामान्य क्रमानुसार क्षेत्र पहले और काल पश्चात् उल्लिखित किया जाता है, फिर यहां कालका क्षेत्रसे पूर्व निर्देश क्यों किया गया ? इसका समाधान धवलाकार करते हैं कि कालकी अपेक्षा क्षेत्रप्रमाण सूक्ष्म होता है, अतएव 'जो स्थूल और अल्प वर्णनीय हो, उसका पहले व्याख्यान करना चाहिये।' इस नियमके अनुसार कालप्रमाण पूर्व और क्षेत्रप्रमाण उसके अनन्तर कहा गया है। इस स्थलपर उन्होंने सूक्ष्मत्वके संबंधमें कुछ आचार्योंकी एक भिन्न मान्यताका उल्लेख किया

१ परमगुरुवदेसादो जाणिउज्जदे।...इदमेतियं हीदि ति कर्धं णअदे? आहरियपरंपरागदजिणोवदेसादो।...
अप्पमत्तसंजदाणं पमाणं गुरुवदेसादो बुच्चदे। (पृ. ८९) और भी देखिये पृ. १११, ३५१, ४०६, ४७१.

है कि जो बहुप्रदेशोंसे उपचित हो वही सूक्ष्म होता है, और इस मतकी पुष्टिमें एक गाथा भी उद्धृत की है जिसका अर्थ है कि काल सूक्ष्म है, किन्तु क्षेत्र उससे भी सूक्ष्मतर है, क्योंकि, अगुलके असंख्यातवै भागमें असंख्यात कल्प हंतै हैं। धवलाकारने इस मतका निरसन इसप्रकार किया है कि यदि सूक्ष्मत्वकी यही परिमाण मान ली जाय तब तो द्रव्यप्रमाणका भी क्षेत्रप्रमाणके पश्चात् प्ररूपण करना चाहिये, क्योंकि, एक गाथानुसार, एक द्रव्यांगुलमें अनन्त क्षेत्रांगुल होनेसे क्षेत्र सूक्ष्म और द्रव्य उनसे सूक्ष्मतर हाता है। (पृष्ठ २०-२८)

(२) तिर्यक् लोकेके विस्तार और उसी संबधसे रज्जूके प्रमाणके संबधमें भी दो मतोंका उल्लेख और विवेचन किया गया है। ये दो भिन्न भिन्न मत त्रिलोकप्रज्ञप्ति और परिकर्मके भिन्न भिन्न सूत्रोंके आधारसे उत्पन्न हुए ज्ञात होते हैं। रज्जूका प्रमाण लानेकी प्रक्रियामें जम्बूद्वीपके अर्धच्छेदोंको रूपाधिक करनेका विधान पारिकर्मसूत्रमें किया गया है जिसका 'एक रूप' अर्थ करनेसे कुछ व्याख्यानकारोंने यह अर्थ निकाला है कि तिर्यक्लोकका विस्तार स्वयंभूरमण समुद्र की बाहिरी वेदिकापर समाप्त हो जाता है। किन्तु त्रिलोकप्रज्ञप्तिके आधारसे धवलाकारका यह मत है कि स्वयंभूरमण समुद्रसे बाहर असंख्यात द्वीपसागरीके विस्तार परिमाण योजन जाकर तिर्यक्लोक समाप्त होता है, अतः जम्बूद्वीपके अर्धच्छेदोंमें एक नहीं, किन्तु संख्यातरूप अधिक बढ़ाना चाहिये। इस मतका परिकर्मसूत्रसे विरोध भी उन्होंने इसप्रकार दूर कर दिया है कि उस सूत्रमें 'रूपाधिक' का अर्थ 'एकरूप अधिक' नहीं, किन्तु 'अनेक रूप अधिक' करना चाहिये। एक रूपवाले व्याख्यानको उन्होंने सच्चा व्याख्यान नहीं, किन्तु व्याख्यानाभास कहा है। अपने मतकी पुष्टिमें धवलाकारने यहां जो अनेक युक्तियां और सूत्रप्रमाण दिये हैं उनसे उनकी संग्राहक और समालोचनात्मक योग्यताका अच्छा परिचय मिलता है। इस विवेचनके अन्तमें उन्होंने कहा है—

‘ एसो अथो जह्वि पुत्राहरियसंपदायविरुद्धो, तो वि तंतजुत्तिलेण अग्नेहि परुविदो। तदो हृदमित्थं वेत्ति णेहासग्गहो कायग्गो, अहंदिअत्थविसण् ङुवेत्थवियप्पिदजुत्तीणं णिण्णयहेउत्ताणुवचचीदो। तम्हा उवएसं लद्धूग विसेसणिण्णयो एत्थ कायग्गो ’।

अर्थात् हमारा किया हुआ अर्थ यद्यपि पूर्वाचार्य-संप्रदायके विरुद्ध पड़ता है, तो भी तंत्र-युक्तिके बलसे हमने उसका प्ररूपण किया। अतः 'यह इसीप्रकार है' ऐसा दुराग्रह नहीं करना चाहिये, क्योंकि, अतीन्द्रिय पदार्थोंके विषयमें अल्पज्ञों द्वारा विकल्पित युक्तियोंके एक निश्चयरूप निर्णयके लिये हेतु नहीं पाया जाता। अतः उपदेशको प्राप्त कर विशेष निर्णय करनेका प्रयत्न करना चाहिये। यहां ग्रंथकारकी कैसी निष्पक्ष, निर्मल, शोधक बुद्धि और जिज्ञासा प्रकट हुई है?

(पृ. ३४ से ३८)

(३) एक मुहूर्तमें कितने उच्छ्वास होते हैं, यह भी एक मतभेदका विषय हुआ है। एक मत है कि एक मुहूर्तमें केवल ७२० प्राण अर्थात् आसोच्छ्वास होते हैं। किन्तु धवलाकार कहते हैं कि यह मत न तो एक स्वस्थ पुरुषके आसोच्छ्वासोंकी गणना करनेसे सिद्ध होता है,

और न केवली द्वारा भाषित प्रमाणभूत अन्य सूत्रसे इसका सामञ्जस्य बैठता है। उन्होंने एक प्राचीन गाथा उद्धृत करके बतलाया है कि एक मुहूर्तके उच्छ्वासोंका ठीक प्रमाण ३७७३ है, और इसी प्रमाण द्वारा सूत्रोक्त एक दिवसमें १,१३,१९० प्राणोंका प्रमाण सिद्ध होता है। पूर्वोक्त मतसे तो एक दिनमें केवल २१,६०० प्राण होंगे, जो किसी प्रकार भी सिद्ध नहीं। (पृ. ६६-६७)

(४) उपशामक जीवोंकी संख्याके विषयमें उत्तरप्रतिपत्ति और दक्षिणप्रतिपत्ति, ऐसी दो भिन्न मान्यताएं दी हैं। प्रथम मतानुसार उक्त जीवोंकी संख्या ३०४, तथा द्वितीय मतानुसार उनसे ५ कम अर्थात् २९९ है। इस मतभेदकी प्ररूपक दो गाथाएं भी उद्धृत की गई हैं। उनमेंसे एकमें एक तीसरा मत और स्फुटित होता है, जिसके अनुसार उपशामकोंकी संख्या पूरे ३०० है। इन मतभेदोंपर ध्वलाकारने कोई उद्घापोह नहीं किया, उन्होंने केवलमात्र उनका उल्लेख ही किया है।

(५) इन्हीं उत्तर और दक्षिण प्रतिपत्तियोंका मतभेद प्रमत्तसंयत राशिके प्रमाण-प्ररूपणमें भी पाया जाता है। उत्तरप्रतिपत्तिके अनुसार प्रमत्तोंका प्रमाण ४,६६,६६,६६४ है, किन्तु दक्षिणप्रतिपत्त्यनुसार यह प्रमाण ५,९३,९८,२०६ आता है। इन मतभेदोंके बीच निर्णय करनेका भी ध्वलाकारने यहां कोई प्रयत्न नहीं किया। किन्तु दक्षिणप्रतिपत्तिके प्रमाणमें जो कुछ आचार्योंने यह शंका उठाई है कि सब तीर्थक्षेत्रोंमें सबसे बड़ा शिष्यपरिवार पद्मप्रभस्वामीका ही था, किन्तु वह परिवार भी मात्र ३,३०,००० ही था। तब फिर जो सर्व संयतोंकी पूरी संख्या ८९९९९९९७ एक प्राचीन गाथामें बतलाई है, वह कैसे सिद्ध हो सकती है? इसका परिहार ध्वलाकारने यह किया है कि इस हुंडावसर्पिणी कालवर्ती तीर्थक्षेत्रोंके साथ भले ही संयतोंका उक्त प्रमाण पूर्ण न होता हो, किन्तु अन्य उत्सर्पिणी-अवसर्पिणियोंमें तो तीर्थक्षेत्रोंका शिष्य-परिवार बड़ा पाया जाता है। दूसरे, भरत और ऐरावत क्षेत्रोंकी अपेक्षा मनुष्योंका प्रमाण विदेह क्षेत्रमें संख्यातगुणा पाया जाता है, अतः वहां उक्त प्रमाण पूरा हो सकता है। इसलिये उक्त प्रमाणमें कोई दूषण नहीं है। (पृ. ९८-९९)

(६) पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल देवोंके अवहारकालके आश्रयसे बतलाया गया है। किन्तु ध्वलाकारका मत है कि कितने ही आचार्योंका उक्त व्याख्यान घटित नहीं होता है, क्योंकि, वानव्यन्तर देवोंका अवहारकाल तीनसौ योजनोंके अंगुलोंका वर्गमात्र बतलाया गया है। यहां कोई यह शंका कर सकता है कि पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टि संबंधी अवहारकाल ही गलत है और वानव्यन्तर देवोंका अवहारकाल ठीक है, यह कैसे जाना जाता है? यहां ध्वलाकार कहते हैं कि हमारा कोई एकान्त आग्रह नहीं है, किन्तु जब दो बातोंमें विरोध है तो उनमेंसे कोई एक तो असत्य होना ही चाहिये। किन्तु इतना समाधानपूर्वक कह चुकने पर ध्वलाकारको अपनी निर्णायक बुद्धिकी प्रेरणा हुई और वे कह उठे—‘अहवा दोषिण वि वक्खाणाणि असत्ताणि, एसा अग्हाणं पद्दजा।’ अर्थात् उक्त दोनों ही व्याख्यान असत्य हैं, यह हम प्रतिज्ञापूर्वक कह सकते हैं। इसके आगे ध्वलाकारने खुदाबंध सूत्रके आधारसे उक्त दोनों अवहारकालोंको असिद्ध करके उनमें यथोचित प्रमाण-प्रवेश करनेका उपदेश दिया है। (पृ. २३१-२३२)

(७) सासादनसम्यग्दृष्टियोंका प्रमाण एक प्राचीन गायामें ५२ करोड़ और दूसरी गायामें ५० करोड़ पाया जाता है। धवलाकारने प्रथम मत ही ग्रहण करनेका आदेश किया है, क्योंकि, वह प्रमाण आचार्य-परंपरागत है। (पृ. २५२)

(८) सूत्र ४५ में मनुष्य पर्याप्त मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण बतलाया है 'कोड़ाकोड़ाकोड़ीसे ऊपर और कोड़ाकोड़ाकोड़ाकोड़ीसे नीचे' अर्थात् छठवें वर्गके ऊपर और सातवें वर्गके नीचे। किन्तु एक दूसरा मत है कि मनुष्य-पर्याप्तराशि वादाल वर्गके (४२९४९६७२९६) अर्थात् द्विरूप वर्गधाराके पांचवें वर्गस्थानके घनप्रमाण है। धवलाकारने इस दूसरे मतका परिहार किया है और उसके दो कारण दिये हैं। एक तो वादालका घन २९ अंक प्रमाण होकर भी कोड़ाकोड़ा-कोड़ाकोड़ीके ऊपर निकल जाता है, जिससे सूत्रोक्त अंक-सीमाओंका सर्वथा उल्लंघन हो जाता है। दूसरे यदि ढाई द्वीपके उस भागका क्षेत्रफल निकाला जाय जहां मनुष्य विशेषतासे पाये जाते हैं, तो उसका क्षेत्रफल केवल २५ अंक प्रमाण प्रतरांगुलोंमें आता है, जिससे उस २९ अंक प्रमाण मनुष्यराशिका वहां निवास असंभव सिद्ध होता है। यही नहीं, सर्वार्थसिद्धिके देवोंका प्रमाण मनुष्य पर्याप्तराशिसे संख्यातगुणा कहा गया है जबकि सर्वार्थसिद्धि विमानका प्रमाण केवल जम्बूद्वीपके बराबर है। अतएव उक्त प्रमाणसे इन देवोंकी अवगाहना भी उनकी निश्चित निवास-भूमिमें असंभव हो जायगी। अतः उक्त राशिका प्रमाण सूत्रोक्त अर्थात् कोड़ाकोड़ाकोड़ा-कोड़ीसे नीचे ही मानना उचित है। (पृ. २५३-२५८)

(९) आहारमिश्रकाययोगियोंका प्रमाण आचार्य-परंपरागत उपदेशसे २७ माना गया है, किन्तु सूत्र नं. १२० में उनका प्रमाण 'संख्यात' शब्दके द्वारा सूचित किया गया है। इसपरसे धवलाकारका मत है कि उक्त राशिका प्रमाण निश्चित २७ नहीं मानना चाहिये, किन्तु मध्यम संख्यातकी अन्य कोई संख्या होना चाहिये, जिसे जिनेन्द्र भगवान् ही जानते हैं। यद्यपि २७ भी मध्यम संख्यातका ही एक भेद है और इसलिये उसके भी उक्त प्रमाणप्ररूपणमें ग्रहण करनेकी संभावना हो सकती है, किन्तु इसके विरुद्ध धवलाकारने दो हेतु दिये हैं। एक तो सूत्र में केवल 'संख्यात' शब्द द्वारा ही वह प्रमाण प्रकट किया गया है, किसी निश्चित संख्या द्वारा नहीं। दूसरे मिश्रकाययोगियोंसे आहारकाययोगी संख्यातगुणे कहे गये हैं। दोनों विकल्पोंमें यहां सामंजस्य बन नहीं सकता, क्योंकि, सर्व अपर्याप्तकालसे जधन्य पर्याप्तकाल भी संख्यात-गुणा माना गया है। (पृ ४०२)

६ गणितकी विशेषता

धवलाकारने अपने इस ग्रंथभागके आदिमें ही मंगलाचरण गायामें कहा है कि—'गमिऊण जिणं भणिमो दव्वणिओगं गणियसारं' अर्थात् जिनेन्द्रदेवको नमस्कार करके हम द्रव्यप्रमाणानुयोगका कथन करते हैं, जिसका सार भाग गणितशास्त्रसं सम्बंध रखता है, या जो गणित-शास्त्र-प्रधान है। यह प्रतिज्ञा इस ग्रंथमें पूर्णरूपसे निवाही गई है। धवलाकारने इस ग्रंथभागमें गणितज्ञानका खूब उप-

योग किया है, जिससे तत्कालीन गणितशास्त्रकी अवस्थाका हमें बहुत अच्छा परिचय मिल जाता है। धवलाकारसे शताब्दियों पूर्व रचे गये भूतबलि आचार्यके सूत्रोंमें जो गणितशास्त्रसंबंधी उल्लेख हैं, वे भी बहुत महत्वपूर्ण हैं। उनमें एकसे लगाकर शत, सहस्र, शतसहस्र (लक्ष), कोटि, कोटाकोटाकोटी व कोटाकोटाकोटाकोटी तक की गणना, व उससे भी ऊपर संख्यात, असंख्यात, अनन्त और अनन्तानन्तका कथन, गणितकी मूल प्रक्रियाओं जैसे सातिरेके, हीन, गुण और अवहार या प्रतिभाग अर्थात् जोड़ बाकी, गुणा, भाग, वर्ग और वर्गमूल, तथा प्रथम, द्वितीय आदि सातवें तक वर्ग व वर्गमूल, घन, अन्योन्याभ्यास आदिका खूब उपयोग किया गया है। क्षेत्र और कालसंबंधी विशेष गणना—मानों जैसे अंगुल, योजन, श्रेणी, जगप्रतर व लोक तथा आवली, अन्तर्मुहूर्त, अवसर्पिणी—उत्सर्पिणी, पल्योपम, तथा विष्कंभ विष्कंभसूची (पंक्तिरूप क्षेत्रआयाम), इन सबका भी सूत्रोंमें खूब उपयोग पाया जाता है, जिनके स्वरूपपर ध्यान देनेसे आजसे लगभग दो हजार वर्षपूर्वके एतद्देशीय गणितज्ञानका अच्छा दिग्दर्शन मिल जाता है।

धवलाकारकी रचनामें असंख्यात, असंख्यातासंख्यात तथा अनन्त और अनन्तानन्तके आन्तरिक प्रभेदों और तारतम्योंका और भी सूक्ष्म निदर्शन किया गया है, जिसका स्वरूप हम ऊपर दिखा आये हैं। इस विषयमें धवलाकारद्वारा अर्धच्छेद और वर्गशलाकाओंके परस्पर संबंधका तथा वर्गित—संवर्गित राशिका जो परिचय दिया गया है वह गणितकी विशेष उपयोगी वस्तु है। (देखो पृ. १८—२६)। सर्व जीवराशिका उसके अन्तर्गत राशियोंमें भाग—प्रविभाग दिखानेके लिये धवलाकार ने ध्रुवराशि (भागहार विशेष) स्थापित करनेकी क्रिया और उससे भाग देनेकी प्रक्रियाएं जैसे खंडित, भाजित, विरलित और अपहृत विस्तारसे दी हैं, जो गणितज्ञोंको रुचिकर सिद्ध होंगी। (देखो पृ. ४१)। ध्रुवराशिसे भाग देनेपर विवक्षित मिथ्यादृष्टिराशि क्यों आती है, इसका कारण समझानेमें भाज्य और भाजकके हानि-वृद्धिक्रमका जो तारतम्य और संबंध बतलाया गया है और क्षेत्र-गणितसे समझाया गया है, वह गणितशास्त्रका एक बहुमूल्य भाग है। (देखो पृ. ४२ आदि)। अवतरण गाथा २४ से ३२ तककी नौ गाथाओंमें इसी संबंधके बड़े सुंदर नियम गुरुरूपमें उद्धृत किये गये हैं और उनका उपयोग विवक्षित राशियां लानेके लिये यथासंभव और यथास्थान भागके अनेक विकल्पोंमें करके बतलाया गया है। अवस्तन विकल्पमें निश्चित भाज्य और भाजकसे नीचेकी संख्या लेकर वही भजनफल उत्पन्न करके बतलाया गया है, और वह भी द्विरूप अर्थात् वर्गधारामें, अष्टरूप अर्थात् घनधारामें और घनाघनधारामें। अर्थात् निश्चित संख्याका प्रथम, द्वितीय व तृतीय वर्गमूल लेकर भाजकको कम कर वही भजनफल उत्पन्न कर दिखाया है। उपरिम विकल्पमें निश्चित भाज्य व भाजकसे ऊपरकी अर्थात् वर्ग, घन व घनाघनरूप राशियां ग्रहण करके वही भजनफल उत्पन्न किया गया है। इस प्रक्रियामें धवलाकारने तीन और विकल्प कर दिवाये हैं, गृहीत, गृहीतगृहीत, और गृहीतगुणकार। गृहीत तो सीधा है, अर्थात् उसमें ऊपरके भाज्य और भाजकके द्वारा निश्चित भजनफल उत्पन्न किया गया है। किन्तु गृहीतगृहीत में निश्चित भजनफल भी एक बड़ी राशिका भाजक बन जाता है और उसके

लब्धका उसी भाजकमें भाग देनेसे निश्चित भजनफल प्राप्त होता है। गृहीतगुणकारमें निश्चित भजनफलका विवक्षित राशिमें भाग देनेसे जो लब्ध आया उसका उसी भाजक राशिसे गुणा करके उत्पन्न हुए भजनफलका विवक्षित राशिके वर्गमें भाग देकर निश्चित भजनफल प्राप्त किया गया है। ये सब विकल्प वर्गात्मक राशियोंमें ही घटित होते हैं। इनका पूर्ण स्वरूप पृष्ठ ५२ से ८७ तक देखिये। प्रमाणराशि, फलराशि और इच्छाराशि, इनकी त्रैराशिक क्रियाका उपयोग जगह जगह दृष्टिगोचर होता है। (पृ. ९५, १००)

मनुष्यगति-प्रमाणके प्ररूपणमें राशि दो प्रकारकी बतलाई है ओज और युग्म। इनमेंसे प्रत्येकके पुनः दो विभाग किये गये हैं। किसी राशिमें चारका भाग देनेसे यदि तीन शेष रहें तो वह तेजोज राशि, यदि एक शेष रहे तो कलिओज राशि, यदि चार शेष रहें (अर्थात् कुछ शेष न रहे) तो कृतयुग्म राशि तथा यदि दो शेष रहें तो बादरयुग्म राशि कहलाती है। इनमेंसे मनुष्यराशि तेजोज कही गई है। (पृ. २४९)

८ मूडबिंद्रीकी ताड़पत्रीय प्रतियोंके मिलानका निष्कर्ष

यह तो पाठकोंको विदित ही है कि इन सिद्धान्तग्रंथोंकी प्राचीन प्रतियां केवल एकमात्र मूडबिंद्रीक्षेत्रके सिद्धान्तमन्दिरमें प्रतिष्ठित हैं। पूर्व प्रकाशित दो भागोंके लिये हमें इन प्राचीन प्रतियोंके पाठ-मिलानका सुअवसर प्राप्त नहीं हो सका था। किन्तु हर्षकी बात है कि अब हमें वहांके भट्टारक-स्वामी और पंचोंका सहयोग प्राप्त हो गया है, जिसके फलस्वरूप ताड़पत्रीय प्रतियोंके मिलानकी व्यवस्था हो गई है। पूर्व प्रकाशित दोनों भागों और इस तृतीय भागका मूल पाठ वहांकी ताड़पत्रीय प्रतियोंसे मिलाया जा चुका है और उससे जो पाठभेद हमें प्राप्त हुए हैं उनपर खूब विचार कर हमने उन्हें चार श्रेणियोंमें विभाजित किया है—

(अ) वे पाठभेद जो अर्थ व पाठकी दृष्टिसे अधिक शुद्ध प्रतीत हुए। (देखो परिशिष्ट पृ. २० आदि)

(ब) वे पाठभेद जो शब्द और अर्थ दोनों दृष्टियोंसे दोनों ही शुद्ध हैं, अतएव जो संभवतः प्राचीन प्रतियोंके पाठभेदोंसे ही आये हैं। (देखो परिशिष्ट पृ. २९ आदि)

(स) वे पाठभेद जो प्राकृतमें उच्चारणभेदसे उत्पन्न होते हैं और विकल्परूपसे पाये जाते हैं। (देखो परिशिष्ट पृ. ३२ आदि)

(ड) वे पाठभेद जो अर्थ या शब्दकी दृष्टिसे अशुद्ध हैं और इस कारण ग्रहण नहीं किये जा सकते। (देखो परिशिष्ट पृ. ३८ आदि)

इस श्रेणी-विभागके अनुसार मूडबिंद्रीकी प्रतियोंका पाठ-मिलान इस भागके साथ प्रकाशित हो रहा है। संक्षेपमें यह पाठभेद-परिस्थिति इस प्रकार आती है—

(अ) श्रेणीके पाठभेद भाग १ में ६२, भाग २ में २५ और भाग ३ में ६२, इस प्रकार कुल १४९ पाये गये हैं। भेद प्रायः बहुत थोड़ा है, और अर्थकी दृष्टिसे तो अत्यन्त अल्प। यह इस बातसे और भी स्पष्ट हो जाता है कि इन पाठभेदोंके कारण अनुवादमें किंचित् भी परिवर्तन करनेकी आवश्यकता केवल भाग १ में १९, भाग २ में १० और भाग ३ में ३२, इस प्रकार कुल ६१ स्थलोंपर पड़ी है। शेष ८८ स्थलोंका पाठपरिवर्तन वाञ्छनीय होनेपर भी उससे हमारे किये हुए भाषानुवादमें कोई परिवर्तन आवश्यक प्रतीत नहीं हुआ।

(ब) श्रेणीके पाठभेद भाग १ में ३०, भाग २ में कोई नहीं, और भाग ३ में ३२, इस प्रकार कुल ६२ पाये गये, और इसमें भी किंचित् अनुवाद-परिवर्तन केवल प्रथम भागमें १७ स्थलोंपर आवश्यक समझा गया है।

(स) श्रेणीके पाठभेद भाग १ में ६०, भाग २ में ३० और भाग ३ में ६७, इस प्रकार कुल १५७ पाये गये हैं। इनसे अर्थमें कोई भेदकी तो संभावना ही नहीं है। इनमेंके अधिकांश पाठ तो ऐसे हैं जो उपलब्ध प्रतियोंमें भी पाये जाते थे, किन्तु हमने प्राकृत व्याकरणके नियमोंको ध्यानमें रखकर परिवर्तित किये हैं। (देखिये 'पाठ संशोधनके नियम,' षट्खं. भाग १, प्रस्तावना पृ. १०-१३)

(ड) श्रेणीके पाठभेद भाग १ में ३८, भाग २ में १५, भाग ३ में ६७, इस प्रकार कुल १२० पाये गये। इनमेंके अधिकांश तो स्पष्टतः अशुद्ध हैं, और जहां उनके शुद्ध होनेकी संभावना हो सकती है, वहां टिप्पणी देकर स्पष्ट कर दिया गया है कि वे पाठ प्रकृतमें क्यों नहीं प्राद्य हो सकते।

इस प्रकार कुल पाठभेद $१४९+६२+१५७+१२०=४८८$ आये हैं। संक्षेपमें यह परिस्थिति इस प्रकार है—

भाग	मूल पाठमें भेद					अनुवाद परिवर्तन		
	अ	ब	स	ड	कुल	अ	ब	कुल
१	६२	३०	६०	३८	१९०	१९	१७	३६
२	२५	×	३०	१५	७०	१०	×	१०
३	६२	३२	६७	६७	२२८	३२	×	३२
कुल	१४९	६२	१५७	१२०	४८८	६१	१७	७८

मूलपाठके संशोधनमें अर्थ और शैलीकी दृष्टिसे कुछ स्थानोंपर हमें पाठ स्वल्पित प्रतीत हुए थे। प्रतियोंका आधार न होनेसे हमने वे पाठ कोष्ठकोंके भीतर रखे हैं, जिससे पाठक सुलभतासे हमारे जोड़े हुए पाठको अलग पहिचान सकें। गत द्वितीय भागमें भी इसीप्रकार पाठ कहीं कहीं जोड़ना पड़े थे। किन्तु वह आलाप प्रकरण होनेसे स्वल्पन शीघ्र दृष्टिमें आजाते हैं। पर इस

भागका विषय बहुत कुछ सूक्ष्म है, अतएव यहांके स्वलन बड़े ही गंभीर विचारके पश्चात् ध्यानमें आसके और उनका पाठ धवलाकारकी शैलीमें ही बड़े विचारके साथ रखना पड़ा। ऐसे पाठ प्रस्तुत भाग में १९ हैं। हमें यह प्रकट करते हुए हर्ष होता है कि मूडबिंद्रीके मिलानसे इन पाठोंमें के १२ पाठ जैसे हमने रखे हैं वैसे ही शब्दशः ताडपत्रीय प्रतियोंमें पाये गये। एक पाठमें हमारे रखे हुए 'खवगा' के स्थानपर 'बंधगा' पाठ आया है, किन्तु विचार करनेपर यह अशुद्ध प्रतीत होता है, वहां 'खवगा' ही चाहिये। शेष ६ पाठ मूडबिंद्रीकी प्रतिमें नहीं पाये गये। किन्तु वे पाठ अशुद्ध फिर भी नहीं हैं। यथार्थतः वहां अर्थकी दृष्टिसे वही अभिप्राय पूर्वापर प्रसंगसे लेना पड़ता है। धवलाकारकी अन्यत्र शैलीपरसे ही वे पाठ निहित किये गये हैं।

१ देखो पृष्ठ २६४, ३५४, ३८३, ३८४, ३९२, ४१२, ४२४, ४३५, ४४४, ४५१.

२ देखो पृष्ठ ४८६.

३ देखो पृष्ठ ६१, २४८, ३४८, ३५३, ४४०.

द्रव्यप्रमाणानुगम-विषयसूची

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.	क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
	१				
	विषयकी उत्थानिका	१-१०			
१	द्रव्यप्रमाणानुगमकी अपेक्षा निर्देश-भेद-कथन	१	१९	कानन्त, एकानन्त, उभयानन्त, विस्तारानन्त, सर्वानन्त और भावानन्तके भेद और स्वरूप	१५-१६
२	द्रव्यशब्दकी निरुक्ति और भेद	२		प्रकृतमें गणनानन्तसे प्रयोजनकी सिद्धि और शेष दश अनन्तोंके कथन करनेका हेतु	१६-१७
३	जीवद्रव्यका साधारण और असाधारण लक्षण	२	२०	गणनानन्तके तीन भेद-परीत, युक्त और अनन्तानन्त	१८
४	अजीवद्रव्यके रूपी और अरूपी भेद वा उनके लक्षण	२-३	२१	मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाणमें विवक्षित अनन्तानन्तका प्रतिपादन	१८
५	द्रव्यप्रमाणानुगममें प्रकृत द्रव्यका निर्देश	४	२२	अनन्तानन्तके जघन्यादि तीन भेद, तथा मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाणमें मध्यम अनन्तानन्तके ग्रहणका परिकर्मके प्रमाणपूर्वक प्रतिपादन	१९
६	प्रमाण शब्दकी निरुक्ति तथा द्रव्य-प्रमाण शब्दका समास-विच्छेद	४-५	२३	अथवा, मिथ्यादृष्टिराशि तीन चार वर्गित-संवर्गितराशिसे अनन्तगुणी तथा छह द्रव्यप्रक्षिप्तराशिसे अनन्तगुणी हीन है, इसका सोप-पात्तिक प्रतिपादन और इन राशियोंके उत्पत्तिक्रमका प्ररूपण	१९-२६
७	द्रव्यका लक्षण	५-६		कालकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि जीव-राशिका निरूपण, तथा क्षेत्र-प्रमाणके पूर्व कालप्रमाणके प्रति-पादनकी सार्थकता	२७
८	छहों समासोंके लक्षण व उदाहरण	६-७	२५	कालकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि जीव-राशिकी गणना करनेका प्रकार तथा इस गणनामें केवल अतीत-कालके ग्रहणका प्रतिपादन	२८-२९
९	संख्याकी सर्वथा एकरूपताका परिहार	७	२६	अतीतकालसे मिथ्यादृष्टिराशि बड़ी है, इसका सोलह-प्रतिक अल्प-बहुत्वसे समर्थन	३०-३१
१०	द्रव्यप्रमाणानुगमका अर्थ	८	२७	क्षेत्रकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टिराशिका प्रमाण-प्ररूपण, तथा क्षेत्रप्रमाणके पूर्व भावप्रमाणके प्रतिपादन न करनेका कारण	३२
११	निर्देशका स्वरूप और उसके भेदों-का स्पष्टीकरण	८-१०			
	२				
	ओघसे द्रव्यप्रमाणनिर्देश १०-१०१				
१२	मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण-प्ररूपण	१०			
१३	अनन्तके ११ भेद, नामानन्त और स्थापनानन्तका स्वरूप	११			
१४	द्रव्यानन्तके भेद	१२			
१५	आगम और आतका लक्षण	१२			
१६	आगम द्रव्यानन्तका स्वरूप	१२			
१७	नोआगम द्रव्यानन्तके भेद, उनका स्वरूप और तद्विषयक शंका-समाधान	१३-१५			
१८	शास्वतानन्त, गणनानन्त अप्रदेशि-				

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.	क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
२८	क्षेत्रकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टिराशिके मापनेका प्रकार	३२	४४	गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकार द्विरूपधारामें गृहीत उपरिम विकल्प-द्वारा मिथ्यादृष्टिराशिकी उत्पत्ति	५४
२९	लोक, जगच्छ्रेणी और राजुका स्वरूप	३३	४५	घनधारामें गृहीत उपरिम विकल्प	५७
३०	मध्यलोक-विस्तारके संबंधमें मत-भेद तथा ध्रुवलाकारका तत्संबंधी सयुक्तिक निर्णय	३४-३८	४६	घनाघनधारामें गृहीत उपरिम विकल्प	५८
३१	क्षेत्रप्रमाणके प्ररूपणकी सार्थकता	३८	४७	गृहीतगृहीत-उपरिम विकल्पमें तीनों धाराओंके द्वारा मिथ्यादृष्टिराशिकी उत्पत्ति	५९
३२	भावप्रमाणका स्वरूप व उसके भेद	३८-३९	४८	गृहीतगुणकार उपरिम विकल्पमें तीनों धाराओंके द्वारा मिथ्यादृष्टिराशिकी उत्पत्ति	६१
३३	सूत्रमें भावप्रमाणके नहीं कहनेमें हेतु	३९	४९	सासादनसम्यग्दृष्टिसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानतक प्रत्येक गुण-स्थानवर्ती जीवोंका प्रमाण	६३
३४	भावप्रमाणकी अपेक्षा खंडित, भाजित, विरलित और अपहृत नामक गणितकी प्रक्रियाओंके द्वारा मिथ्यादृष्टिराशिके लानेकी विधि	३९	५०	सासादनसम्यग्दृष्टियोंका प्रमाण	६३
३५	वर्गस्थानमें खंडित, आदिके द्वारा मिथ्यादृष्टिराशिके प्रमाण-निरूपणकी प्रतिज्ञा	४०	५१	क्षेत्र और कालकी अपेक्षा सासादनसम्यग्दृष्टियोंके प्रमाणकी प्ररूपणा नहीं करनेका कारण	६३
३६	मिथ्यादृष्टिराशि लानेके लिए ध्रुवराशिकी स्थापना व उसके द्वारा खंडित, भाजित, विरलित और अपहृत विधिओंसे मिथ्यादृष्टिराशिका प्रमाण-प्ररूपण	४१	५२	कालप्रमाणसंबंधी आवली, उच्छ्रुस, स्तोक, लव, नाली, मुहूर्त, भिन्न-मुहूर्त और अन्तर्मुहूर्तका स्वरूप	६५
३७	मिथ्यादृष्टिराशिका प्रमाण तथा तत्संबंधी गणितका शास्त्रीय कारण	४२-४६	५३	एक मुहूर्तमें प्राणोंकी संख्यासिद्धि और मतान्तरका खंडन	६६
३८	गणितसंबंधी नौ करण-गाथाएं	४६-४९	५४	असंयतसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत अवहारकालोंका कथन	६५
३९	सर्वजीवराशिमसे मिथ्यादृष्टि और सिद्ध-तेरस गुणस्थानोंके प्रमाण पृथक् करनेकी निश्चिन्ता	५१	५५	ओषसम्यग्मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और संयतासंयतोंका अवहारकाल आवलीके असंख्यातवें भाग न होकर 'असंख्यात आवली प्रमाण है' इस बातका समर्थन व विरोध-परिहार	६८
४०	विकल्पके अधस्तन और उपरिम भेद, तथा वर्गधारामें मिथ्यादृष्टिराशि लानेके लिए अधस्तन विकल्पकी असंभवता	५२	५६	सासादनसम्यग्दृष्टि आदि राशियोंके अनवस्थित रहने पर भी उनके निश्चित प्रमाण लानेके लिए निश्चित भागहारका समर्थन	७०
४१	घनधारामें अधस्तन विकल्प	५२			
४२	घनाघनधारामें अधस्तन विकल्प	५३			
४३	उपरिम विकल्पके तीन भेद-गृहीत,				

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.	क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
५७	खंडित, भाजित विरलित, अपहत, प्रमाण कारण और निरुक्तिके द्वारा वर्गधारा में सासादनसम्यग्दृष्टियोंके प्रमाणका प्ररूपण			पत्तिके अनुसार उपशामकों और क्षपकोंकी संख्याका मतभेद	९४
५८	अधस्तनविकल्पमें द्विरूपवर्गधारा आदिका आश्रय लेकर सासादनसम्यग्दृष्टियोंके प्रमाणका प्ररूपण	७१	७१	एक एक गुणस्थानमें उपशामक और क्षपकोंका संयुक्त प्रमाण	९५
५९	उपरिमविकल्पके तीनों भेदोंमें द्विरूपवर्गधारा आदिका आश्रय लेकर सासादनसम्यग्दृष्टियोंके प्रमाणका प्ररूपण	७४	७२	सयोगिकेवलियोंका प्रवेश व कालकी अपेक्षा प्रमाण	९५
६०	सम्यग्मिथ्यादृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत की प्ररूपणा खंडित आदि विधिसे सासादनसम्यग्दृष्टिकी प्ररूपणाके समान उनके पृथक् पृथक् अवहारकालके द्वारा करनेका निर्देश	७७	७३	सयोगिकेवली जिनोंकी लक्षपृथक्त्व संख्याके निकालनेका विधान	९५
६१	सासादनसम्यग्दृष्टि आदिके अवहारकाल, प्रमाण और पल्योपमकी अंकसंहति	८७	७४	यथाख्यातसंयतोंका, सर्वसंयतराशिका तथा उपशामक और क्षपकोंका प्रमाण	९७
६२	प्रमत्तसंयतोंका प्रमाण	८७	७५	प्रमत्त और अप्रमत्तसंयतोंकी राशिके निकालनेका एक नया प्रकार	९७
६३	अप्रमत्तसंयतोंका प्रमाण	८९	७६	दक्षिणप्रतिपत्तिवाली सर्व संयतोंकी संख्यापर आक्षेप और समाधान	९८
६४	अप्रमत्तसंयतोंके प्रमाणसे प्रमत्तसंयतोंके दूने प्रमाणका कारण	९०	७७	उत्तरप्रतिपत्तिकी अपेक्षा प्रमत्तसंयत आदिका प्रमाण	९९
६५	चारों उपशामकोंका प्रवेशकी अपेक्षा प्रमाण	९०	७८	ओघ भागाभाग प्ररूपण	१०१
६६	चारों उपशामकोंका कालकी अपेक्षा प्रमाण व उनकी संख्याके जोड़नेका प्रकार	९१	७९	अल्पबहुत्वके कथनकी प्रतिज्ञा और स्वतंत्र अल्पबहुत्व अनुयोग-द्वारके होते हुए भी यहां उसके कहनेका कारण	११४
६७	चारों क्षपक और अयोगिकेवलीका प्रवेशकी अपेक्षा प्रमाण	९२	८०	अल्पबहुत्वके दो भेद-स्वस्थान और सर्वपरस्थान	११४
६८	चारों क्षपक और अयोगिकेवलीका कालकी अपेक्षा प्रमाण व उनकी संख्याके जोड़नेका प्रकार	९३	८१	मिथ्यादृष्टिराशिमैं स्वस्थान अल्पबहुत्वका अभाव	११४
६९	उपशामकों और क्षपकोंकी संख्याके लानेका करणसूत्र	९४	८२	सासादनादि राशियोंमें स्वस्थान अल्पबहुत्व	११४
७०	उत्तरप्रतिपत्ति और दक्षिण प्रति-		८३	ओघ सर्वपरस्थान अल्पबहुत्व	११६
			३		
				आदेशसे द्रव्यप्रमाणनिर्देश	१२१-४८७
				१ गतिमार्गणा	१२१-३०५
				(नरकगति)	
			९४	सामान्य नारक मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण	१२१

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.	क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
८५	असंख्यातके नामादि ग्यारह भेद और उनका स्वरूप	१२३-१२५		विकल्पके द्वारा उक्त राशिकी प्ररूपणा	१५०
८६	प्रकृतमें गणनासंख्यातसे प्रयोजन तथा शेष असंख्यातोंके वर्णनकी सार्थकता	१२५	९९	सासादनसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानमें सामान्य नारकियोंका प्रमाण	१५६
८७	गणनासंख्यातके जघन्यपरीतासंख्यात आदि नौ भेद, तथा प्रकृतमें मध्यम असंख्यातासंख्यातका ग्रहण	१२६	१००	गुणस्थान-प्रतिपन्न सामान्य नारकियोंको गुणस्थान-प्रतिपन्न ओघप्रमाणके समान मान लेनेपर आनेवाले दोषका परिहार	१५६
८८	तीन वार वर्गित संवर्गितराशिसे असंख्यातगुणी तथा छह द्रव्य प्रक्षितराशिसे असंख्यातगुणी हीन राशिसे प्रयोजन और उक्त राशियोंका स्वरूप-निर्दर्शन	१२८	१०१	ओघ असंयतसम्यग्दृष्टि-अवहारकालके आश्रयसे गुणस्थान प्रतिपन्न देव, तिर्यच और नारकियोंके प्रमाण लानेके लिए अवहारकाल उत्पन्न करनेकी विधि और उनका प्रमाण	१५७
८९	सामान्य नारक मिथ्यादृष्टियोंका कालकी अपेक्षा प्रमाण व हेतु	१२९	१०२	प्रथम पृथिवीमें नारकियोंका प्रमाण	१६१
९०	क्षेत्रप्रमाणसे पहले काल प्रमाणके वर्णनकी सार्थकता	१३०	१०३	सामान्य नारकोंके प्रमाण समान प्रथम पृथिवीके नारकोंका प्रमाण माननेपर उत्पन्न होनेवाली आपत्तिका परिहार और विशेषताका प्रतिपादन	१६१
९१	नारक मिथ्यादृष्टियोंकी कालकी अपेक्षा गणना करनेका प्रकार	१३१	१०४	प्रथम नरकके मिथ्यादृष्टि नारकोंकी विष्कंभसूची और अवहारकाल	१६२
९२	नारकसामान्य मिथ्यादृष्टियोंका क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	१३१	१०५	उक्त नारकोंका प्रकारान्तरसे अवहारकाल	१६४
९३	नारकसामान्य मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूचीका प्रमाण	१३३	१०६	प्रत्येक पृथिवीके प्रति अवहारकाल, प्रक्षेप शलाकाएं और विष्कंभसूचीमें अपनयनरूपसंख्याके प्रमाणका प्रतिपादन	१६६
९४	सूत्रपठित 'अंगुल' शब्दसे सूच्यंगुलके ग्रहणका सप्रमाण समर्थन	१३४	१०७	सामान्य अवहारकालमात्र छह पृथिवियोंके द्रव्यका आश्रय लेकर प्रत्येक पृथिवीमें अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाएं निकालनेका विधान	१७१
९५	वर्गस्थानमें खंडित आदिके द्वारा विष्कंभसूचीका प्ररूपण	१३५	१०८	उक्त सातों अवहारकालोंके मिलानकी विधि और उनसे प्रथम	
९६	नारकसामान्य मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाण लानेके लिए विष्कंभसूचीके बलसे भागहारकी उत्पत्ति	१४१			
९७	वर्गस्थानमें प्रमाण आदिके द्वारा अवहारकालका निरूपण	१४२			
९८	नारक सामान्य मिथ्यादृष्टिराशिका प्रमाण अवहारकालसे किस प्रकार आता है, यह बताकर प्रमाण, कारण, निरुक्ति और				

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.	क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
	पृथिवीके अवहारकालके उत्पन्न करनेका क्रम	१७५		बतलानेवाली अंकसंदष्टि	१९७
१०९	प्रकारान्तरसे प्रथम पृथिवीके अवहारकाल लानेकी विधियां	१७७	१२१	दूसरीसे सातवीं पृथिवी तकके मिथ्यादृष्टि नारकियोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	१९८
११०	छठी और सातवीं पृथिवियोंका संयुक्त अवहारकाल	१७९	१२२	जगच्छ्रेणीके कितने कितने वर्ग-मूलोंके परस्पर गुणा करनेसे किस किस पृथिवीके नारक मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण आता है, इसका स्पष्टीकरण और उसमें प्रमाण	२००
१११	पांचवीं, छठी और सातवीं पृथिवियोंका संयुक्त अवहारकाल	१८०	१२३	तृतीयादि पृथिवियोंके द्रव्यके आश्रयसे दूसरी पृथिवीके द्रव्य उत्पन्न करनेकी विधि	२०१
११२	चौथी, पांचवीं, छठी और सातवीं पृथिवियोंका संयुक्त अवहारकाल	१८२	१२४	प्रथम पृथिवीके आश्रयसे दूसरी पृथिवीके द्रव्य उत्पन्न करनेकी विधि और इसी प्रकार शेष पृथिवियोंके द्रव्य उत्पन्न करनेकी सूचना	२०३
११३	तीसरीसे सातवीं तक पांच पृथिवियोंका संयुक्त अवहारकाल	१८३	१२५	दूसरीसे सातवीं पृथिवीतक गुण-स्थान प्रतिपन्न जीवोंका प्रमाण	२०६
११४	दूसरीसे सातवीं तक छह पृथिवियोंका संयुक्त अवहारकाल	१८४	१२६	दूसरीसे सातवीं पृथिवी तक गुणस्थान प्रतिपन्न जीवोंका प्रमाण ओद्यप्रमाणके समान कहनेसे उत्पन्न होनेवाले दोषका परिहार और सातों पृथिवियोंके गुणस्थान प्रतिपन्न जीवोंके अवहारकालोंका प्रतिपादन	२०६
११५	दूसरी आदि छह पृथिवियोंके संयुक्त अवहारकालसे प्रथम पृथिवीके अवहारकालके लानेकी विधि	१८६	१२७	नरकगति-सम्बन्धी भाग(भाग)	२०७
११६	हानिरूप और प्रक्षेपरूप अंकोंका ज्ञान करानेके लिये अंकसंदष्टि, तथा प्रक्षेपरूप राशिकी विधि	१८७	१२८	नरकगति-सम्बन्धी अल्पबहुत्व (तिर्यचगति)	२०८
११७	राशिके हानिरूप विधानका अंक-संदष्टि द्वारा स्पष्टीकरण	१९१	१२९	मिथ्यादृष्टिसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानतक सामान्य तिर्यचोंका प्रमाण, तथा सामान्य तिर्यचोंका प्रमाण ओद्यप्रमाणके समान माननेपर आनेवाले दोषका परिहार	२१५
११८	सामान्य अवहारकालके एक विरलनके प्रति प्राप्त सामान्य द्रव्यके सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यप्रमाण खंड करके उनका सातों पृथिवियोंमें विभाजन और इनपरसे प्रथम पृथिवीके अवहारकालकी उत्पत्ति	१९३	१३०	सामान्य तिर्यच मिथ्यादृष्टियोंकी ध्रुवराशि और गुणस्थान प्रतिपन्न	
११९	खंड शलाकाओंका आश्रय करके प्रकारान्तरसे प्रथम पृथिवीके मिथ्यादृष्टि अवहार कालकी उत्पत्ति	१९६			
१२०	नरकगतिके सामान्य और विशेष-रूपसे अवहारकाल, विष्कम्भ-सूची और प्रक्षेप अवहारकाल				

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.	क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
	सामान्य तिर्यचोंका अवहारकाल	२१६		पर्याप्तोंका प्रमाण	२२९
१३१	जहां राशिका अनन्तरूप प्रमाण बताया है वहां भी कालप्ररूपणासे द्रव्यप्ररूपणाकी सूक्ष्मता सिद्ध होती है, इसका स्पष्टीकरण	२१७	१४२	पंचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टि योनिमतियोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	२२९
१३२	पंचेन्द्रियतिर्यच मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य और कालकी अपेक्षा प्रमाण	२१७	१४३	पंचेन्द्रियतिर्यच मिथ्यादृष्टि योनिमतियोंका अवहारकाल और उसके विषयमें मतभेद	२३०
१३३	असंख्यातासंख्यात अपसर्पिणी-उत्सर्पिणीकालोंके बताने पर पंचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टिराशिके विच्छेद होनेकी शंकाका समाधान	२१८	१४४	पंचेन्द्रियतिर्यच मिथ्यादृष्टि योनिमतियोंके अवहारकालका खंडित आदिके द्वारा कथन	२३२
१३४	पंचेन्द्रियतिर्यच मिथ्यादृष्टिराशिका क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण व उनके अवहारकालकी सिद्धि	२१९	१४५	पंचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टि योनिमतियोंकी विष्कम्भ सूची और द्रव्यका वर्णन	२३७
१३५	पंचेन्द्रियतिर्यच मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालका खंडित आदिके द्वारा प्ररूपण	२२०	१४६	सासादन गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत तक प्रत्येक गुणस्थानमें पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिमतियोंका प्रमाण तथा उसे ओघवत् कहनेसे उत्पन्न हुई आपत्तिका परिहार	२३७
१३६	पंचेन्द्रियतिर्यच मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कम्भसूची और द्रव्यका समर्थन	२२५	१४७	पंचेन्द्रियतिर्यच योनिमती असंयतसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि, सासादन और संयतासंयतका अवहारकाल	२३८
१३७	सासादन गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत तक प्रत्येक गुणस्थानमें पंचेन्द्रिय तिर्यचोंका प्रमाण	२२६	१४८	पंचेन्द्रियतिर्यच पर्याप्तोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि पुरुषवेदियोंसे असंयतसम्यग्दृष्टि स्त्रीवेदियोंके, और स्त्रीवेदियोंसे, नपुंसकवेदियोंके उत्तरोत्तर कम होनेका कारण	२३८
१३८	द्रव्यप्रमाणके आदिमें कथन करनेका प्रयोजन, व द्रव्यप्रमाण अन्य प्रमाणोंसे स्तोक है, इसमें हेतु	२२७	१४९	पंचेन्द्रियतिर्यच तीनवेदवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंसे पंचेन्द्रियतिर्यच योनिमती असंयतसम्यग्दृष्टि जीव कम हैं, या अधिक हैं, इस विषयमें उपदेशका अभाव	२३८
१३९	द्रव्यप्रमाणसे कालप्रमाणके सूक्ष्मत्वकी सिद्धि	२२८	१५०	पंचेन्द्रियतिर्यच अपर्याप्तोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण व अवहारकालका निरूपण	२३९
१४०	पंचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंका क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण, तथा उनके अवहारकालका स्पष्टीकरण	२२८	१५१	तिर्यचगति सम्बन्धी भागाभाग और अस्पष्टत्व	२४०
१४१	सासादन गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत तक पंचेन्द्रिय तिर्यच				

क्रम नं.	विषय (मनुष्यगति)	पृष्ठ नं.	क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
१५२	सामान्य मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	२४४	१६४	मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण होता है, इसका समर्थन	२५४
१५३	सामान्य मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल व खंडित आदिके द्वारा उसका कथन	२४६	१६५	दो वेदवाले मनुष्य पर्याप्तोंका अवहारकाल और उनका प्रमाण	२५४
१५४	मध्यम विकल्प और उपरिम विकल्पमें भेद	२४८	१६५	बादालके घनप्रमाण मनुष्य पर्याप्तराशि है, इस मतका खंडन और सूत्रप्रतिपादित मतका समर्थन	२५५
१५५	मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकालका जगश्रेणीमें भाग देने पर रूप अधिक मिथ्यादृष्टिराशि आती है, इसमें प्रमाण	२४८	१६६	सासादनगुणस्थानसे लेकर संयतासंयततक प्रत्येक गुणस्थानमें पर्याप्त मनुष्योंका प्रमाण	२५९
१५६	ओज और शुग्म राशियोंके भेद-प्रभेद और उनके लक्षण	२४९	१६७	प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें पर्याप्त मनुष्योंका प्रमाण	२६०
१५७	यहां जीवस्थानमें मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकालका जगश्रेणीमें भाग देनेपर रूप अधिक सासादनादि तेरह गुणस्थानवर्ती अपनयनराशि आती है, इसका समर्थन	२५०	१६८	मनुष्यनियोंमें मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण व अवहारकाल निरूपण	२६०
१५८	मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालका कथन	२५१	१६९	सासादन गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली तक प्रत्येक गुणस्थानमें मनुष्यनियोंका प्रमाण, तथा गुणस्थान-प्रतिपन्न मनुष्यनी गुणस्थान-प्रतिपन्न सामान्य मनुष्योंके संख्यातवें भाग होती हैं, इसमें हेतु	२६१
१५९	सासादन गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें सामान्य मनुष्योंका प्रमाण	२५१	१७०	लघ्यपर्याप्त मनुष्योंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	२६२
१६०	सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि मनुष्योंके प्रमाणमें मतभेद	२५१	१७१	मनुष्यगतिसम्बन्धी भागाभाग और अस्पष्टत्व	२६४
१६१	प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक मनुष्योंका प्रमाण	२५२		(देवगति)	
१६२	पर्याप्त मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण और खंडित आदिके द्वारा उसका कथन	२५३	१७२	सामान्यदेवोंमें मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण	२६६
१६३	पर्याप्त मनुष्यराशिमेंसे गुणस्थान-प्रतिपन्नराशिके घटा देनेपर	२५३	१७३	संख्यात, असंख्यात और अनन्तके लक्षण व परस्पर भेद	२६७
			१७४	काल और क्षेत्रकी अपेक्षा सामान्य देव मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण	२६८
			१७५	सासादन गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान तक	

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.	क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
	प्रत्येक गुणस्थानमें साामान्य देवोंका प्रमाण	२६९		सासादन, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंका प्रमाण, तथा सनत्कुमारसे लेकर शतार सहस्रार कल्पतक मिथ्यादृष्टि देवोंका प्रमाण और भागहार	२८०
१७६	असंयतसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्या-दृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंका अवहारकाल	२६९	१८८	आनत-प्राणत कल्पसे लेकर नव त्रैवेयक तक मिथ्यादृष्ट्यादि चारों गुणस्थानवर्ती देवोंका प्रमाण	२८१
१७७	भवनवासी मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	२७०	१८९	अनुदिशोंसे लेकर अपराजित अनुत्तरविमानतक असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंका प्रमाण	२८१
१७८	सासादन, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि भवनवासियोंका प्रमाण	२७१	१९०	गुणस्थान-प्रतिपन्न सर्व देवोंके अवहारकाल	२८२
१७९	वानव्यन्तर मिथ्यादृष्टि देवोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	२७२	१९१	आनतादि उपरिम गुणस्थान-प्रतिपन्न देवोंका प्रमाण पल्योपमके असंख्यातवें भाग है, यह वचन 'इसके द्वारा अन्तर्मुहूर्तसे पल्योपम अपहृत होता है' ऐसा विशेषित करके क्यों कहा ? इसकी सफलता	२८५
१८०	वानव्यन्तर और योनिमतियोंके अवहारकालमें मतभेद और उसका निर्णय	२७३	१९२	सर्वार्थसिद्धि विमानवासी देवोंका प्रमाण	२८६
१८१	सासादन, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि वानव्यन्तरोंका प्रमाण	२७४	१९३	देवगतिसंबंधी भागाभाग	२८६
१८२	ज्योतिषी देवोंका प्रमाण, व उस प्रमाणको सामान्य देवराशिके समान कहनेसे आनेवाले दोषका परिहार	२७५	१९४	देवगतिसंबंधी अल्पबहुत्व	२८८
१८३	ज्योतिषी देवोंका अवहारकाल	२७६	१९५	चतुर्गतिसंबंधी भागाभाग	२९५
१८४	सौधर्म और पेशान कल्पवासी मिथ्यादृष्टि देवोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	२७६	१९६	चतुर्गतिसंबंधी अल्पबहुत्व २ इन्द्रियमार्गणा	३०५-३२९
१८५	सौधर्म और पेशान मिथ्यादृष्टि देवोंकी विष्कंभसूची	२७७	१९७	सामान्य एकेन्द्रिय, बाहर एकेन्द्रिय, सूक्ष्म एकेन्द्रिय और इन तीनोंके पर्याप्त तथा अपर्याप्तोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	३०५
१८६	खुदाबंधमें सामान्यसे जीवोंका प्रमाण कहते समय जो विष्कंभसूचियां बतलाई हैं, वे ही यहाँ विशेषरूपसे जीवोंका प्रमाण बताते समय कहीं गई हैं, अतः यह कथन परस्पर विरुद्ध है, इस प्रकार उत्पन्न हुई शंकाका समाधान	२७८	१९८	उक्त नौ राशियोंकी ध्रुवराशियां	३०७
१८७	सौधर्म और पेशान कल्पवासी		१९९	खंडित आदिके द्वारा उक्त नौ राशियोंका वर्णन	३०८
			२००	पर्याप्त और अपर्याप्त विकलत्रय जीवोंका द्रव्यकी अपेक्षा प्रमाण	३१०
			२०१	प्रकृतमें पर्याप्त और अपर्याप्त	

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.	क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
	तथा त्रीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय पदसे किनका ग्रहण किया गया है, इसका स्पष्टीकरण	३११	२१३	अपर्याप्तकालमें गुणस्थान-प्रतिपन्न जीव लब्धपर्याप्तक नहीं होते, इसका समर्थन	३१८
२०२	सयोगिकेवलीके पंचेन्द्रियत्वका समर्थन	३११	२१४	इन्द्रियमार्गणाकी अपेक्षा भाग-	३१८
२०३	विकलत्रय जीवोंका कालकी अपेक्षा प्रमाण	३१२	२१५	इन्द्रियमार्गणाकी अपेक्षा अल्प-बहुत्व	३२२
२०४	त्रीन्द्रियादि राशियां सर्वथा आयसहित होनेसे विच्छिन्न नहीं होती हैं, फिरभी ये असंख्याता-संख्यात अपसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा विच्छिन्न होती हैं, ऐसे विरोधका परिहार	३१२	३ कायमागणा ३२९-३८६		
२०५	विकलत्रय जीवोंका क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	३१३	२१६	पृथिवीकायिक, अष्कायिक, तैजस्कायिक, वायुकायिक, तथा बादरपृथिवीकायिक, बादरअष्कायिक, बादरतैजस्कायिक, बादरवायुकायिक, बादरवनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर तथा इन पांच बादरोंके अपर्याप्तः सूक्ष्मपृथिवीकायिक, सूक्ष्मअष्कायिक, सूक्ष्मतैजस्कायिक, सूक्ष्मवायुकायिक, तथा इन चार सूक्ष्मोंके पर्याप्त और अपर्याप्तोंका प्रमाण	३२९
२०६	पंचेन्द्रियसामान्य और पंचेन्द्रियपर्याप्तोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	३१४	२१७	पृथिवीकायिकका अर्थ, प्रसंगसे कर्मके भेदोंका उल्लेख, तथा बादरका स्वरूप	३३०
२०७	विकलत्रयोंके प्रमाण-प्रतिपादक सूत्रके साथ पंचेन्द्रियोंके प्रमाणका प्रतिपादक सूत्र क्यों नहीं कहा, इसका स्पष्टीकरण	३१५	२१८	पृथिवीकायिक आदिके प्रत्येक होते हुए उन्हें 'प्रत्येकशरीर' यह विशेषण क्यों नहीं लगाया जाता है, इसका स्पष्टीकरण	३३१
२०८	विकलेन्द्रिय और सकलेन्द्रियोंका अवहारकाल तथा द्रव्यप्रमाण	३१५	२१९	सूक्ष्म, पर्याप्त और अपर्याप्त इनके स्वरूपोंका स्पष्टीकरण	३३१
२०९	सासादनगुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक पंचेन्द्रियसामान्य और पंचेन्द्रियपर्याप्तोंका प्रमाण	३१६	२२०	विग्रहगतिमें विद्यमान वनस्पतिकायिक जीव प्रत्येक है, या साधारण, इस शंकाका समाधान	३३२
२१०	जिनकी इन्द्रियां नष्ट होगई हैं, ऐसे सयोगी अयोगी जिनको पंचेन्द्रिय कैसे कहा जा सकता है, इस शंकाका समाधान	३१७	२२१	तैजस्कायिकराशिके उत्पन्न करनेकी विधि	३३४
२११	लब्धपर्याप्त पंचेन्द्रियोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	३१७	२२२	चौथीवार कितनी गुणकारशालाकाओंके जानेपर तैजस्कायिकराशि उत्पन्न होती है, इससे	
२१२	लब्धपर्याप्त पंचेन्द्रियोंके प्रमाणका प्रतिपादक सूत्र पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाण प्रतिपादक सूत्रके साथ नहीं कहनेका कारण	३१८			

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.	क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
	लेकर इस विषयमें अनेक मतान्तरोंका उल्लेख, और कौन मत पूर्व परंपरागत है, इसका समर्थन			खंडित आदिसे राशिका कथन	३५१
२२३	प्रकारान्तरसे तैजस्कायिक-राशिके उत्पन्न करनेका विधान	३३७	२३५	बादरतैजस्कायिक पर्याप्तराशिका प्रमाण	३५५
२२४	खंडित आदिके द्वारा तैजस्कायिकराशिका वर्णन	३३९	२३६	बादरवायुकायिक पर्याप्तराशिका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	३५५
२२५	तैजस्कायिकराशिसे पृथिवी, जल और वायुकायिकराशिके उत्पन्न करनेकी प्रक्रिया, तथा इन्हीं तीनों राशियोंके अवहारकाल	३४०	२३७	बादरवायुकायिक पर्याप्तराशिका प्रमाण	३५६
२२६	प्रकृतोपयोगी करणसूत्र, तथा उक्त चारों राशियोंके सूक्ष्म, सूक्ष्मपर्याप्त, सूक्ष्मअपर्याप्त और बादरराशिसम्बन्धी अवहार काल	३४१	२३८	भेद-प्रभेदयुक्त वनस्पतिकायिक जीवोंका द्रव्य-प्रमाण	३५६
२२७	बादरतैजस्कायिक आदि राशियोंके अर्धच्छेद	३४२	२३९	'जिनका शरीर वनस्पतिरूप होता है उन्हें वनस्पतिकायिक कहते हैं' वनस्पतिकायिकका ऐसा अर्थ करनेपर विग्रहगतिमें स्थित जीवोंको वनस्पतिकायिकत्व कैसे प्राप्त होता है, इस शंकाका समाधान	३५७
२२८	बादरतैजस्कायिकराशिकी सत्तरह प्रकारकी प्ररूपणा	३४४	२४०	भेद-प्रभेदयुक्त वनस्पतिकायिक जीवोंका काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	३५८
२२९	बादरवनस्पति प्रत्येक शरीर-राशिकी सत्तरह प्रकारकी प्ररूपणा, तथा दूसरी बादरराशियोंकी पूर्वोक्त राशियोंके समान प्ररूपण करनेकी सूचना	३४४	२४१	पूर्वोक्त जीवराशियोंकी भ्रुव-राशियां	३५९
२३०	सप्रतिष्ठित और अप्रतिष्ठित प्रत्येकवनस्पतिमें भेद	३४६	२४२	त्रसकायिकसामान्य और त्रसकायिकपर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीवोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	३६०
२३१	सूत्रमें बादरवनस्पतिप्रत्येकशरीर का ही प्रमाण कहा, उनके भेदोंका नहीं, इसका कारण	३४७	२४३	सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक त्रसकायिक सामान्य और त्रसकायिकपर्याप्तोंका प्रमाण	३६२
२३२	बादरपृथिवीकायिक पर्याप्त, बादर अष्कायिक पर्याप्त और बादरवनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त राशियोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	३४८	२४४	लब्ध्यपर्याप्त त्रसकायिकोंका प्रमाण	३६२
२३३	उक्त तीनों राशियोंके भागहार	३४८	२४५	लब्ध्यपर्याप्त त्रसकायिकोंका प्रमाण लब्ध्यपर्याप्त पंचेन्द्रियोंके प्रमाणके समान कहनेसे उत्पन्न हुई आपत्तिका परिहार	३६३
२३४	बादरतैजस्कायिक पर्याप्तराशिका प्रमाण, अवहारकाल व	३५०	२४६	कायमार्गणासम्बन्धी भागाभाग	३६३
			२४७	कायमार्गणासम्बन्धी अल्पबहुत्व	३६५

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.	क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
	४ योगमार्गणा	३८६-४१३			
२४८	पांचों मनोयोगी तथा सत्य, उभय और असत्य इन तीन वचनयोगी जीवोंका प्रमाण	३८६	२६१	दनसम्यग्दृष्टियोंका प्रमाण और अवहारकाल	३९७
२४९	उक्त आठ राशियां देवोंके संख्यातवें भाग क्यों हैं? इसका समर्थन	३८६	२६२	औदारिकमिश्रकाययोगी असंयत-सम्यग्दृष्टि और सयोगिकेवली जिनोंका प्रमाण	३९७
२५०	सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयततक उक्त आठों राशियोंका प्रमाण तथा उसका ओघप्ररूपणाके समान कथन करनेमें हेतु	३८६	२६३	वैक्रियिककाययोगी मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण व अवहारकाल	३९८
२५१	प्रमत्तसंयतसे लेकर सयोगिकेवली तक उक्त आठों राशियोंका प्रमाण	३८७	२६३	वैक्रियिककाययोगी सासादन-सम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण व अवहार-काल	३९९
२५२	प्रमत्तसंयतादि गुणस्थानोंमें आठ राशियोंका प्रमाण ओघसमान न कहनेका कारण	३८७	२६४	वैक्रियिकमिश्रकाययोगी मिथ्या-दृष्टियोंका प्रमाण	४००
२५३	वचनयोगी और अनुभयवचन-योगी मिथ्यादृष्टिजीवोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	३८८	२६५	वैक्रियिकमिश्रकाययोगी सासादन-सम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंका प्रमाण व अवहारकाल	४०१
२५४	सासादनादि गुणस्थानवर्ती उक्त राशियोंका प्रमाण	३९०	२६६	आहारककाययोगी प्रमत्तसंयतों का प्रमाण	४०१
२५५	स्व-भेद-युक्त मनोयोगी, वचन-योगी और काययोगी जीवोंके अवहारकाल और जीवराशियां	३९०	२६७	आहारकमिश्रकाययोगी प्रमत्त-संयतोंका प्रमाण व मतान्तर परिहार	४०२
२५६	काययोगी और औदारिककाय-योगी मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण	३९५	२६८	कार्मणकाययोगी मिथ्यादृष्टिजीवों का प्रमाण व ध्रुवराशि	४०२
२५७	सासादनगुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली तक काययोगी और औदारिककाययोगियोंका प्रमाण, ध्रुवराशि तथा अवहार-काल	३९५	२६९	कार्मणकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंका प्रमाण व अवहारकाल	४०३
२५८	औदारिकमिश्रकाययोगी मिथ्या-दृष्टियोंका प्रमाण और ध्रुवराशि	३९६	२७०	कार्मणकाययोगी सयोगिजिनोंका प्रमाण	४०४
२५९	औदारिककाययोगीराशिके संख्या-तवें भाग औदारिकमिश्रकाय-योगीराशिके होनेमें हेतु	३९६	२७१	योगमार्गणा सम्बन्धी भागाभाग	४०४
२६०	औदारिकमिश्रकाययोगी सासा-		२७२	योगमार्गणा सम्बन्धी अल्पबहुत्व	४०८
				५ वेदमार्गणा ४१३-४२४	
			२७३	स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण, देवियोंके प्रमाणकी खुदाबंधसे सिद्धि और स्त्रीवेदियोंका अव-हारकाल	४१३
			२७४	सासादन सम्यग्दृष्टिसे लेकर संयतासंयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानमें स्त्रीवेदियोंका	

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.	क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
	प्रमाण	४१४		६ कषायमार्गणा	४२४-४३६
२७५	स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके कम होनेका कारण	४१५	२८८	क्रोध, मान, माया और लोभ-कषायी जीवोंमें मिथ्यादृष्टि गुण-स्थानसे लेकर संयतासंयत गुण-स्थान तक प्रत्येक गुणस्थानमें जीवोंका प्रमाण व अवहारकाल	४२४
२७६	प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण उपशमक व क्षपकके सवेदभाग तक स्त्री-वेदियोंका प्रमाण	४१५	२८९	प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्ति गुणस्थानतक चारों कषायवाले जीवोंका प्रमाण	४२८
२७७	पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण व अवहारकाल	४१६	२९०	लोभकषायी उपशमक, व क्षपक सूक्ष्मसाम्परायिकसंयतोंका प्रमाण	४२९
२७८	सासादनसम्यग्दृष्टिसे लेकर अनिवृत्तिकरण उपशमक व क्षपकके सवेद भाग तक पुरुष वेदियोंका प्रमाण व अवहारकाल	४१६	२९१	अकषायी जीवोंमें उपशान्तकषाय-वीतरागछद्मस्थोंका प्रमाण और द्रव्यकर्म चार प्रकारका होनेसे चार भेदोंमें विभक्त मूल उपशान्तकषायराशि प्रत्येक मूलोद्य-प्रमाणको कैसे प्राप्त होती है, इस शंकाका समाधान	४३०
२७९	मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत तकके नपुंसक वेदियोंका प्रमाण व अवहारकाल	४१७	२९२	अकषायी क्षीणकषायवीतराग-छद्मस्थ और अयोगिकेवली जिनोंका प्रमाण	४३०
२८०	प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण उपशमक क्षपकके सवेद भाग तक नपुंसकवेदियोंका प्रमाण	४१८	२९३	अकषायी सयोगिकेवली जिनोंका प्रमाण	४३१
२८१	स्त्रीवेदी प्रमत्तादिराशिसे भी नपुंसकवेदी प्रमत्तादिराशिसे संख्यातवें भाग होनेका कारण	४१९	२९४	कषायमार्गणासम्बन्धी भागाभाग	४३१
२८२	अपगतवेदी उपशामकोंका प्रवेशकी अपेक्षा प्रमाण	४१९	२९५	कषायमार्गणासम्बन्धी अल्प-बहुत्व	४३३
२८३	उपशान्तकषायजीवके उपशामक सज्ञा कैसे है, इस शंकाका समाधान	४१९		७ ज्ञानमार्गणा	४३६-४४६
२८४	अपगतवेदी उपशामकोंका संचय-कालकी अपेक्षा प्रमाण	४२०	२९६	मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी मिथ्या-दृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका प्रमाण, ध्रुवराशि और अवहारकाल	४३६
२८५	अपगतवेदी तीनों क्षपक और अयोगिकेवलियोंका प्रमाण	४२०	२९७	विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण व अवहारकाल	४३७
२८६	अपगतवेदी सयोगिकेवलियोंका प्रमाण	४२१	२९८	विभंगज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका प्रमाण	४३८
२८७	वेदमार्गणासम्बन्धी भागाभाग व अल्पबहुत्व	४२१	२९९	मति, श्रुत, और अविधिज्ञानी जीवोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि गुण-	

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.	क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
	स्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुण- स्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीवोंका प्रमाण व अवहारकाल	४३९		इस विषयका ऊहापोहात्मक शंका-समाधान	४५३
३००	अवधिज्ञानियोंमें प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीवोंका प्रमाण	४४१	३१४	चक्षुदर्शनी जीवोंमें सासादन- सम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थानतक के जीवोंका प्रमाण	४५४
३०१	मनःपर्ययज्ञानियोंमें प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थानतक जीवोंका प्रमाण	४४१	३१५	अचक्षुदर्शनियोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थानतकके जीवोंका प्रमाण व ध्रुवराशि	४५५
३०२	केवलज्ञानियोंमें सयोगिकेवली और अयोगिकेवली जिनोंका प्रमाण	४४२	३१६	अवधिदर्शनी जीवोंका प्रमाण व अवहारकाल	४५५
३०३	ज्ञानमार्गणा सम्बन्धी भागाभाग	४४२	३१७	केवलदर्शनी जीवोंका प्रमाण	४५६
३०४	ज्ञानमार्गणासम्बन्धी अल्पबहुत्व ८ संयममार्गणा ४४७-४५२	४४४	३१८	श्रुतदर्शन और मनःपर्ययदर्शन क्यों नहीं होता है, इस शंका का समाधान	४५६
३०५	संयमी जीवोंमें प्रमत्तसंयत गुण- स्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतकका प्रमाण	४४७	३१९	ज्ञानमार्गणासम्बन्धी भागाभाग	४५७
३०६	सामायिक और छेदोपस्थापना- संयतोंमें प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानका प्रमाण व दोनों संयतोंके भेदाभेद विष- यक शंकाका समाधान	४४७	३२०	ज्ञानमार्गणासम्बन्धी अल्पबहुत्व १० लेइयामार्गणा ४५९--४७१	४५८
३०७	परिहार विशुद्धिसंयमवाले प्रमत्त और अप्रमत्तसंयतोंका प्रमाण	४४९	३२१	कृष्ण, नील और कापोत लेइया- वालोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुण- स्थानतक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंका प्रमाण व ध्रुवराशि	४५९
३०८	सूक्ष्मसांपरायसंयमवाले उप- शमक व क्षपकोंका प्रमाण	४४९	३२२	तेजोलेइयावाले जीवोंमें मिथ्या- दृष्टि जीवोंका प्रमाण व अवहार- काल	४६१
३०९	यथाख्यातसंयमी, संयमासंयमी और असंयमी जीवोंका पृथक् पृथक् प्रमाण	४५०	३२३	तेजोलेइयावाले जीवोंमें सासा- दन सम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अप्रमत्तसंयत गुणस्थान- तकके जीवोंका प्रमाण	४६२
३१०	संयममार्गणासम्बन्धी भागाभाग	४५१	३२४	पद्मलेइयावाले जीवोंमें मिथ्या- दृष्टि जीवोंका प्रमाण व अवहार- काल	४६३
३११	संयममार्गणासम्बन्धी अल्पबहुत्व ९ दर्शनमार्गणा ४५३-४५९	४५१	३२५	पद्मलेइयावाले जीवोंमें सासादन गुणस्थानसे लेकर अप्रमत्तसंयत गुणस्थानतकके जीवोंका प्रमाण	४६३
३१२	चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	४५३	३२६	शुक्ललेइयावाले जीवोंमें मिथ्या-	
३१३	चक्षुदर्शनी जीव किसे कहते हैं,				

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.	क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
	दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयता-संयत गुणस्थानतक प्रत्येक गुण-स्थानमें जीवोंका प्रमाण व अव-हारकाल	४६३	३३९	उपशान्तसम्यग्दृष्टियोंमें असंयत-सम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर उपशान्तकषाय गुणस्थानतकके जीवोंका प्रमाण	४७६
३२७	शुक्ललेइयावाले जीवोंमें प्रमत्त-संयत गुणस्थानसे लेकर सयोगि-केवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुण-स्थानवर्ती जीवोंका प्रमाण	४६५	३४०	सासादनसम्यग्दृष्टि,सम्यग्मिथ्या-दृष्टि और मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण व अवहारकाल	४७७
३२८	लेइयामार्गणासंबंधी भागाभाग	४६६	३४१	सम्यक्त्वमार्गणासम्बन्धी भागा-भाग	४७९
३२९	लेइयामार्गणासंबंधी अल्पबहुत्व	४६७	३४२	सम्यक्त्वमार्गणासम्बन्धी अल्प-बहुत्व	४७९
	११ भव्यमार्गणा ४७२-४७३		३४३	प्रमत्तसंयत वेदकसम्यग्दृष्टियोंसे क्षयिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीव संख्यातगुणे कैसे हो सकते हैं, इस शंकाका समाधान	४८०
३३०	भव्यसिद्धिक जीवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीवोंका प्रमाण	४७२		१३ संज्ञीमार्गणा ४८२-४८३	
३३१	अभव्यसिद्धिक जीवोंका प्रमाण	४७२	३४४	संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण व अवहारकाल	४८२
३३२	भव्यमार्गणासम्बन्धी भागाभाग और अल्पबहुत्व	४७३	३४५	संज्ञी जीवोंमें सासादन गुणस्था-नसे लेकर क्षीणकषायगुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंका प्रमाण	४८२
	१२ सम्यक्त्वमार्गणा ४७४-४८१		३४६	असंज्ञी जीवोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	४८३
३३३	सम्यग्दृष्टि जीवोंमें असंयत-सम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीवोंका प्रमाण	४७४	३४७	संज्ञीमार्गणासंबंधी भागाभाग व अल्पबहुत्व	४८३
३३४	क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंमें असंयत-सम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर उप-शान्तकषाय गुणस्थानतक के जीवोंका प्रमाण	४७४		१४ आहारमार्गणा ४८३-४८७	
३३५	क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत संख्यात ही क्यों होते हैं, इस शंकाका समाधान	४७५	३४८	आहारक जीवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें आहारक जीवोंका प्रमाण व ध्रुव-राशि	४८३
३३६	क्षायिकसम्यग्दृष्टि चारों क्षपक व अयोगिकेवली जिनोंका प्रमाण	४७५	३४९	अनाहारक जीवोंका प्रमाण, ध्रुवराशि व अवहारकाल	४८४
३३७	क्षायिकसम्यग्दृष्टि सयोगिकेवली जिनोंका प्रमाण	४७६	३५०	अनाहारक अयोगिकेवली जीवों का प्रमाण	४८५
३३८	वेदकसम्यग्दृष्टियोंमें असंयत-सम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अप्रमत्तसंयत गुणस्थानतकके जीवोंका प्रमाण	४७६	३५१	आहारमार्गणासम्बन्धी भागाभाग	४८५
			३५२	आहारमार्गणासम्बन्धी अल्प-बहुत्व	४८५

१० अर्थसंबंधी विशेष सूचना

१. पृष्ठ ४७ की गाथा नं. २८ का प्रतियोंमें उपलब्ध पाठको रखते हुए अर्थ

दो हारोंके अन्तरसे एक हारमें भाग देने पर जो लब्ध आता है उससे भाजित पूर्व लब्धका, तथा दोनों हारोंसे अलग अलग भाजित भाज्यके भजनफलोंका अन्तर हानिवृद्धिरूप होता है। (अर्थात् उपर्युक्त दोनों प्रक्रियाओंका फल बराबर ही होता है और समानरूपसे घटता बढ़ता है।)

उदाहरण (बीजगणितसे)—

भाज्य = अ; हार (भाजक) = ब और स; पूर्वलब्ध $\frac{अ}{ब} = क$

(१) यदि स से ब छोटा है तो— $\frac{अ}{ब} - \frac{अ}{स} = क \div \frac{स}{स-ब}$

(२) यदि स से ब बड़ा है तो— $\frac{अ}{स} - \frac{अ}{ब} = क \div \frac{स}{ब-स}$

(अंकगणितसे)—

भाज्य = ३६; हार (भाजक) = ६ और ९;

पूर्वलब्ध = $\frac{३६}{६} = ६$; दूसरा लब्ध $\frac{३६}{९} = ४$; हारान्तर $९ - ६ = ३$.

$\frac{९}{३} = ३$; $\frac{६}{३} = २$; $६ - ४ = २$.

२. पृष्ठ ५०-५१ परके पश्चिम विकल्पका स्पष्टीकरण

पृ. ५०-५१ पर मूलमें जो पश्चिमविकल्प बतलाया गया है, उसके सम्बन्धमें हमारे सन्मुख दो आपत्तियां उपस्थित हुईं, कि एक तो वह ध्वलाकार द्वारा स्वीकृत अंकसंघट्टिसे घटित नहीं होता, और दूसरे प्रकृतमें उसका कोई फल नहीं दिखाई देता। इन्ही आपत्तियोंको दूर करनेके लिये मूलमें प्राप्त पाठ रखकर भी अनुवादमें हमने उस पाठका संशोधन सुझाया है। तथापि एक तरहसे बीजगणित द्वारा मूलमें दिया हुआ गणित सिद्ध भी हो सकता है। जैसे—

मानलो, जीवराशि = क; मिथ्यादृष्टिराशि = अ; सिद्धतेरसराशि = ब; अ = क - ब.

अब चूंकि क अनन्तराशि है, अतएव— $क + १ = क$; $क - १ = क$.

अब मूल पाठानुसार—

$$\frac{k^2}{k + \frac{a}{b}} = \frac{k^2}{k + \frac{k-b}{b}} = \frac{k^2}{(k-1) + \frac{k}{b}} = \frac{k^2}{k + \frac{k}{b}}$$

$$= k - \frac{k}{b+1} = k - \frac{k}{b}$$

किन्तु यह उदाहरण बनता तभी है, जब यह मान लिया जाय कि अनन्तमें एक घटाने व एक बढ़ानेसे अनन्त ही रहता है। अतएव यह उदाहरण अंकसंदाष्टिसे नहीं बतलाया जा सकता।

११ पाठसंबंधी विशेष सूचना

पृ. २८८ की पंक्ति ९ में 'एवं जोइसिय.....' आदिसे लगाकर पृ. २९० पंक्ति २ के 'एगपदत्तादो' तकका पाठ प्रतियोंमें व मूडविद्रीकी प्रतिमें निम्न प्रकार है, जो धबला-कारकी अन्यत्र पाठ-व्यवस्थासे कुछ भिन्न है। हमने उसे मुद्रणमें अन्यत्रकी व्यवस्थानुसार कुछ हेरफेरसे रख दिया है और उसका कारण भी वहीं दे दिया है। किन्तु पाठकोंकी सूचनाके लिये वह पूरा पाठ प्रतियोंके अनुसार यहां दिया जाता है—

परस्थाणे पयदं । सव्वत्थोवो असंजदसम्माइट्टिअवहारकालो । एवं जेयव्वं जाव पल्लिदोवमो त्ति । तदो उवरि मिच्छाइट्टिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सगअवहारकालस्स असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? पल्लिदोवमो । अहवा पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सूचिअंगुलाणि । केत्तियमेत्ताणि ? सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि । को पडिभागो ? पल्लिदोवमस्स संखेज्जदिभागो । उवरि सत्थाण-अंगो । एवं जोइसियवाणवत्तराणं पि जेयव्वं । भवणवासियाणं सत्थाणे सव्वत्थोवा मिच्छाइट्टिविक्खंभसूई । अवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सगअवहारकालस्स असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? विक्खंभ-सूई । अहवा सेदीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेडिपढमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? विक्खंभसूचि-वग्गो । अहवा घणंगुलं । सेदी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सगविकखंभसूई । दव्वमसंखेज्जगुणं । को गुण-गारो ? विक्खंभसूई । पदरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? अवहारकालो । लोणो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेदी । सासणादीणं मूलोवअंगो । भवणवासियाणं सव्वत्थोवो असंजदसम्माइट्टिअवहारकालो । एवं जेयव्वं जाव पल्लिदोवमो त्ति । तदो उवरि भवणवासियामिच्छाइट्टिविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सग-विकखंभसूईए असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? पल्लिदोवमो । अहवा पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असं-खेज्जाणि सूचिअंगुलाणि । केत्तियमेत्ताणि ? सूचिअंगुलपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि । को पडि-भागो ? पल्लिदोवमो । उवरि सगसत्थाणअंगो । सोहम्मादि जाव उवरिमउवरिमगेवज्जो त्ति सत्थाणव्वाअङ्गं जाणिय जेयव्वं । उवरि परत्थाणं णत्थि, तत्थ सेसगुणट्ठणाणमभावादो । सव्वट्ठे सत्थाणं पि णत्थि एकपद-त्तादो ।

शुद्धिपत्र

(पुस्तक १)

पृष्ठ	पांक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६७	१६	नानाप्रकारकी उज्वल और निर्मल धवल, निर्मल और नानाप्रकारकी विनयसे विनयसे	
१८८	४	उपदेशाष्टव्यम्	उपदेशव्यम्
२०५	६५	शंका —	×
"	२९	इसलिये	शंका— तो फिर
२५१	१	तत्प्रतिघातः	तत्प्रतिघातः
३४५	८	-सन्तापान्यूनतया	-सन्तापान्यूनतया
"	२६	सन्तापसे न्यून नहीं है,	सन्तापरूप है,

(पुस्तक २)

४३३	२८	आहार, भय और मैथुन	भय, मैथुन और परिग्रह
५३७	४	द्वेष्टेण छल्लेस्सा, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ;	द्वेष्ट-भावेहिं छल्लेस्साओ,
"	१५	द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्लेश्याएं;	द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं,

(पुस्तक ३)

९	२	अवशेषः	अविशेषः
"	१२	अवशेष	अविशेष
१५	२	कडय-रुजगदीव	कडय-रुजग-दीव
"	१४	कटक, रुचकवरद्वीप	कटक (कंकण), रुचक (ताबीज) व द्वीप
१५	३-४	चेत्तद्व्यतिरिक्त	चेत्तद्व्यतिरिक्त
"	१२	नोआगमद्रव्यान्त	नोआगमद्रव्यानन्त
१६	१४	अप्रदेशानन्त	अप्रदेशानन्त
१८	६	तस्स	तत्थ तस्स
२६	२८	दुक्खेवा	पक्खेवा
२७	३०	असंखेज्जा	असंखेज्जा
२८	७	रासमिह	रासिमिह
"	८	अवाहिरज्जादि	अवाहिरिज्जादि

पृष्ठ	पांक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
"	१३	व्यख्यान	व्याख्यान
३०	२६	शतप्रथक्त्व	शतपृथक्त्व
३२	१०	कोडवेण	कोडवेण
"	३०	कौदोके समान	या कुडव (कुड़े) से
३३	२९	घणयमाणो	घणपमाणो
३४	३	छिण्णाविसिद्धं	छिण्णावसिद्धं
३५	३०	बेगद	वेसद
३८	२	णेहासंगहो	णेहासग्गहो
"	१६	भी हो.....चाहिये,	ही है, ऐसा असत् आप्रह नहीं करना चाहिये,
३९	५	सहिय	मुहिय
४५	५	असंखेज्ज	असंखेज्ज
५१	१४	क-व (मिथ्यादृष्टि)	क-अ (मिथ्यादृष्टि)
८८	६	विरदाण णु कमेण	विरदाणणुकमेण
८९	३	पमत्तसंजदा णं	पमत्तसंजदाणं
११२	६	दसगुणट्टारासिणा	दसगुणट्टाणरासिणा
१२६	३	ज	च
१३५	७	असंखेज्जदि	असंखेज्जदि
१५७	२७	जिनबिम्ब	जिन और जिनबिम्ब
१७६	१६	जणश्रेणी	जगश्रेणी
१७६	२२	<u>१०४८५७६</u> १२३	<u>१०४८५७६</u> १२३
१९०		सव्वहीणरूवाणि	सव्वहाणिरूवाणि
२०७	६	त्तिअवहारकाला	त्ति अवहारकाला
२१७	६	पंखिदिय	पंखिदिय
१७१	२	ताण	तीण
२२१	११	गुणियं	गुणिय
२५७	२२-२४	यहां धबलाके....स्पष्ट है	x
२६०	१०	मणुसिणीणं	मणुसिणीणं
२६२	४	असंखेज्जस-	असंखेज्जस
२६३	८	पक्खिपहि	पक्खित्तपहि
"	"	पावेसु	पाठेसु
२६४	९	के	को
२८१	१	सासणादीणं	सासणादीणं
२८७	५	असंजदसम्माइट्टिणो	असंजदसम्माइट्टिणो

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२९०	२	पदत्थादो	पदत्तादो
"	१०	पदार्थ	पदत्व
"	२४	सर्वसिद्धि	सर्वार्थसिद्धि
२९१	१४	सम्यग्दृष्टियोंका	सम्यग्दृष्टियोंका
२९२	५	असंखेज्जदिभाग	असंखेज्जदिभाग
२९६	२६	जार	चार
३०२	१	ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर	ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर
३०६	१०	णादवेदव्वमिदि	णादवेदव्वमिदि
"	११	णादवेदव्वं	णादवेदव्वं
"	२६	ग्रहण	प्रारंभ
"	२८	"	"
३०७	४	सराग-	सपग-
"	६	जं तेण	जंतेण
"	१६	सरागस्वरूपसे	एकस्वरूपसे
"	१९	उस अतीत	जाते हुए
३१२	८	-वत्तादो	-वत्तीदो
३१८	९	संखेज्ज-	संखेज्ज
३३०	४	-कम्मत्त-	-कम्मंत-
३५९	११	पुवुत्त	पुब्बुत्त
३६६	५	वादरवण्फह	वादरवणण्फह
३६७	२	तेसिमपज्जत्ता ।	तेसिमपज्जत्ता ।
३६९	६	वाउणं	वाऊणं
३८१	२	पजत्ता	पज्जत्ता
४४०	१०	आवलियाए	आवलियाए
४४७	९	पुव्विल्ल	पुब्बिल्ल
४८०	१०	सव्वसम्मत्तेसुप्पायण-	सव्वसम्मत्तेसु पाएण

द्वपमाणाणुगमो

मंगलाचरणम्

पंच-परमेष्ठि-वंदणं
(धवलान्तर्गतम्)

सिद्धा ददृष्टमला विसुद्ध-बुद्धी य लद्ध-सन्वत्था ।
तिहुवण-सिर-सेहरया पसियंतु भडारया सन्वे ॥ १ ॥

तिहुवण-भरणप्पसरिय-पच्चक्खवबोह-किरण-परिवेढो ।
उइओ वि अणत्थवणो अरहंत-दिवायरो जयऊ ॥ २ ॥

ति-रयण-खग्ग-णिहाणुत्तारिय-मोह-सेण्ण-सिर-णिवहो ।
आइरिय-राउ पसियउ परिवालिय-भविय-जिय-लोओ ॥ ३ ॥

अण्णाणयंधयारे अणोरपारे भमंत-भवियाणं ।
उज्जोओ जेहि कओ पसियंतु सया उवज्झाया ॥ ४ ॥

संधारिय-सीलहरा उत्तारिय-चिरपमाद-दुस्सीलभरा ।
साहू जयंतु सन्वे सिव-सुह-पह-संठिया हु णिग्गालिय-भया ॥ ५ ॥

जयउ धरसेण-णाहो जेण महाकम्म-पयडि-पाहुड-सेलो ।
बुद्धिसिरेणुद्धरिओ समप्पिओ पुप्फयंतस्स ॥ ६ ॥



(सिरि-भगवंत-पुष्पदंत-भूदबलि-पणीदे

छक्खंडागमे

जीवट्टाणं

तस्स

सिरि-वीरसेणाइरिय-विरइया टीका

धवला

केवलणाणुओइयछइव्वमणिज्जियं पवाईहि ।

णमिऊण जिणं भणिमो दव्वणिओगं गणियसारं ॥१॥

(संपहि चोदसण्हं जीवसमासाणमत्थित्तमवगदाणं सिस्साणं तेसिं चैव परिमाण-
पडिचोहणट्ठं भूदवलियाइरियो सुत्तमाह—

दव्वपमाणाणुगमेण दुविहो णिदेसो ओघेण आदेसेण य ॥१॥

जिन्होंने केवलज्ञानके द्वारा छह द्रव्योंको प्रकाशित किया है और जो प्रवादियोंके द्वारा नहीं जीते जा सके ऐसे जिनेन्द्रदेवको मैं (वीरसेन आचार्य) नमस्कार करके गणितकी जिसमें मुख्यता है ऐसे द्रव्यानुयोगका प्रतिपादन करता हूँ ॥ १ ॥

विशेषार्थ——द्रव्यानुयोगका दूसरा नाम द्रव्यप्रमाणानुगम या संख्याप्ररूपण है। यद्यपि द्रव्य छह हैं फिर भी इस अधिकारमें गुणस्थानों और मार्गणास्थानोंका आश्रय लेकर केवल जीवद्रव्यकी संख्याका ही प्ररूपण किया गया है।

जिन्होंने चौदहों गुणस्थानोंके अस्तित्वको जान लिया है ऐसे शिष्योंको अब उन्हीं चौदहों गुणस्थानोंके अर्थात् चौदहों गुणस्थानवर्ती जीवोंके परिमाण (संख्या) के ज्ञान करानेके लिये भूलबलि आचार्य आगेका सूत्र कहते हैं—

द्रव्यप्रमाणानुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है, ओघनिर्देश और आदेश-
निर्देश ॥ १ ॥

द्रवति द्रोष्यति अदुद्रवत्पर्यायानिति द्रव्यम् । अथवा द्रूयते द्रोष्यते अद्रावि पर्याय इति द्रव्यम् । तं च द्रव्यं दुविहं, जीवद्रव्यं अजीवद्रव्यं चेदि । तत्थ जीवद्रव्यस्स लक्खणं वुच्चदे । तं जहा, ववगदपंचवण्णो ववगदपंचरसो ववगददुग्ंधो ववगदअट्टफासो सुहुमो अमुत्ती अगुरुगलहुओ असंखेज्जपदेसिओ अणिद्धिट्ठसंठाणो चि एदं जीवस्स साहारणलक्खणं । उट्टुगई भोत्ता सपरप्पगासओ चि जीवद्रव्यस्स असाहारणलक्खणं । उच्चं च—

अरसमरूवमग्ंधं अव्वत्तं चेदणागुणमसई ।

जाण अलिंगमहणं जीवमणिद्धिट्ठसंठाणं ॥ १ ॥

जं तं अजीवद्रव्यं तं दुविहं, रूवि-अजीवद्रव्यं अरूवि-अजीवद्रव्यं चेदि । तत्थ जं तं रूवि-अजीवद्रव्यं तस्स लक्खणं वुच्चदे— रूपरसगन्धस्पर्शवन्तः पुद्गलाः रूपि अजीवद्रव्यं

जो पर्यायोंको प्राप्त होता है, प्राप्त होगा और प्राप्त हुआ है उसे द्रव्य कहते हैं । अथवा, जिसके द्वारा पर्याय प्राप्त की जाती है, प्राप्त की जायगी और प्राप्त की गई थी उसे द्रव्य कहते हैं । वह द्रव्य दो प्रकारका है, जीवद्रव्य और अजीवद्रव्य । उनमेंसे जीवद्रव्यका लक्षण कहते हैं । वह इसप्रकार है, जो पांच प्रकारके वर्णसे रहित है, पांच प्रकारके रससे रहित है, दो प्रकारके गन्धसे रहित है, आठ प्रकारके स्पर्शसे रहित है, सूक्ष्म है, अमूर्ति है, अगुरुलघु है, असंख्यातप्रेक्षी है और जिसका कोई संस्थान अर्थात् आकार निर्दिष्ट नहीं है वह जीव है । यह जीवका साधारण लक्षण है । अर्थात् यह लक्षण जीवको छोड़कर दूसरे धर्मादि अमूर्त द्रव्योंमें भी पाया जाता है, इसलिये इसे जीवका साधारण लक्षण कहा है । परंतु ऊर्ध्वगतिस्वभावत्व, भोक्तृत्व और स्वपरप्रकाशकत्व यह जीवका असाधारण लक्षण है । अर्थात् यह लक्षण जीवद्रव्यको छोड़कर दूसरे किसी भी द्रव्यमें नहीं पाया जाता है, इसलिये इसे जीवद्रव्यका असाधारण लक्षण कहा है । कहा भी है—

जो रसरहित है, रूपरहित है, गन्धरहित है, अव्यक्त अर्थात् स्पर्शगुणकी व्यक्तिसे रहित है, चेतनागुणयुक्त है, शब्दपर्यायसे रहित है, जिसका लिंगके द्वारा ग्रहण नहीं होता है और जिसका संस्थान अनिर्दिष्ट है अर्थात् सब संस्थानोंसे रहित जिसका स्वभाव है उसे जीवद्रव्य जानो ॥ १ ॥

अजीवद्रव्य दो प्रकारका है, रूपी अजीवद्रव्य और अरूपी अजीवद्रव्य । उनमें जो रूपी अजीवद्रव्य है उसका लक्षण कहते हैं । रूप, रस, गन्ध और स्पर्शसे युक्त पुद्गल रूपी

१ प्रवच. २, ८०; पञ्चा. १३४.

२ 'स्पर्शरसगन्धवर्णवन्तः पुद्गलाः' तत्त्वार्थसू. ५, २३.

शब्दादि । तं च रूवि-अजीवद्वं छविहं, पुढवि-जल-छाया चउरिदियविसय-कम्म-
कखंध-परमाणू चेदि । वुत्तं च—

पुढवी जलं च छाया चउरिदियविसय-कम्म-परमाणू ।

छविहमेयं भणियं पोगलद्वं जिणकरेहिं ॥ २ ॥

जं तं अरूवि-अजीवद्वं तं चउविहं, धम्मद्वं अधम्मद्वं आगासद्वं काल-
द्वं चेदि । तत्थ धम्मद्वस्स लक्खणं वुत्ते-ववगदपंचरणं ववगदपंचरसं ववगद-
दुगंधं ववगदअट्टपासं जीव-पोगलानं गमणागमणकारणं असंखेज्जपदेसियं लोगपमाणं
धम्मद्वं । एवं चेव अधम्मद्वं पि, णवरि जीव-पोगलानं एदं द्विदिहेदू । एव-
मागासद्वं पि, णवरि आगासद्वमणंतपदेसियं सव्वगयं ओगाहणलक्खणं । एवं चेव
कालद्वं पि, णवरि स-परपरिणामहेऊ अपदेसियं लोगपदेसपरिमाणं । एदाणि छ

अजीवद्रव्य है, जैसे शब्दादि । वह रूपी अजीवद्रव्य छह प्रकारका है, पृथिवी, जल, छाया,
नेत्रको छोड़कर शेष चार इन्द्रियोंके विषय, कर्मस्कन्ध और परमाणु । कहा भी है—

जिनेन्द्रदेवने पृथिवी, जल, छाया, नेत्र इन्द्रियके अतिरिक्त शेष चार इन्द्रियोंके
विषय, कर्म और परमाणु, इसप्रकार पुद्गलद्रव्य छह प्रकारका कहा है ॥ २ ॥

विशेषार्थ—ऊपर जो पुद्गलके छह भेद बतलाये हैं वे उपलक्षणमात्र हैं, इसलिये
उपलक्षणसे उस उस जातिके पुद्गलोंका उस उस भेदमें ग्रहण हो जाता है । ग्रन्थान्तरोंमें जो
पुद्गलके स्थूल-स्थूल, स्थूल, स्थूल-सूक्ष्म, सूक्ष्म-स्थूल, सूक्ष्म और सूक्ष्म-सूक्ष्म, ये छह भेद
गिनाये हैं और उनका दृष्टान्तोंद्वारा स्पष्टीकरण करनेके लिये उपर्युक्त पृथिवी आदि छह प्रकार
बतलाये हैं, इससे भी यही सिद्ध होता है कि ये पृथिवी आदि नाम उपलक्षणरूपसे लिये
गये हैं ।

अरूपी अजीवद्रव्य चार प्रकारका है, धर्मद्रव्य, अधर्मद्रव्य, आकाशद्रव्य और काल-
द्रव्य । उनमेंसे धर्मद्रव्यका लक्षण कहते हैं । जो पांच प्रकारके वर्णसे रहित है, पांच प्रकारके
रससे रहित है, दो प्रकारके गन्धसे रहित है, आठ प्रकारके स्पर्शसे रहित है, जीव और
पुद्गलोंके गमन और आगमनमें साधारण कारण है, असंख्यातप्रदेशी है और लोकाकाशके
बराबर है वह धर्मद्रव्य है । इसीप्रकार अधर्मद्रव्य भी है, परंतु इतनी विशेषता है कि यह
जीव और पुद्गलोंकी स्थितिमें साधारण कारण है । इसीप्रकार आकाशद्रव्य भी है, पर इतनी
विशेषता है कि आकाशद्रव्य अनन्तप्रदेशी, सर्वगत और अवगाहनलक्षणवाला है । इसीप्रकार

१ गो. जी. ६०१. पुढवी जलं च छाया चउरिदियविसयकम्मपाओगा । कम्मातीदा एवं छभेया
पोगला होंति ॥ पञ्चा. ८३.

२ लोगागासपदेसे एकेके जे द्विया हु एकेका । रयणाणं रासी इव ते कालागू असंखदव्वाणि ॥ दव्व सं.
१२; गो. जी. ५८९.

दब्बाणि । एदेसु छसु दब्बेसु केण दब्बेण पगदं ? जस्स संताणिओगहारे चोद्दसमग्गण-
द्वणेहि चोद्दसजीवसमासाणमत्थित्तं परूविदं जीवदब्बस्स तेण पगदं । तं कथं णव्वदि
त्ति भणिदे ' मिच्छादिट्ठी केवडिया ' इदि सेसदब्बाणं परिमाणमुज्झिदूण जीवदब्ब-
परिमाणपरूवयसुत्तादो जाणिअदि जीवदब्बेणेकेण चेव पगदं, ण अण्णदब्बेहिं ति ।
प्रमीयन्ते अनेन अर्था इति प्रमाणम् । दब्बस्स पमाणं दब्बपमाणं । एवं तत्पुरिससमासे
कीरमाणे दब्बादो पमाणस्स भेदो ढुक्कदि, जहा देवदत्तस्स कंबलो ति । एत्थ देवदत्तादो
कंबलस्सेव भेदो ण, अभेदे वि उत्पलगंधो इच्चेवमादिसु तत्पुरिससमासदंसणादो । अधवा
दब्बादो पमाणं केण वि सरूवेण भिण्णं चेव, अण्णहा विसेसिय विसेसणभावाणुवव-

कालद्रव्य भी है, पर इतनी विशेषता है कि कालद्रव्य अपने और दूसरे द्रव्योंके परिणमनमें
साधारण कारण है, अप्रदेशी अर्थात् एकप्रदेशी है और लोकाकाशके जितने प्रदेश हैं उतने ही
कालाणु हैं । इसप्रकार ये छह द्रव्य हैं ।

शंका—इन छह द्रव्योंमेंसे यहां प्रकृतमें किस द्रव्यसे प्रयोजन है, अर्थात् किस
द्रव्यके द्वारा प्रकृत विषय कहा जायगा ?

समाधान—सत्परूपणानुयोगद्वारमें चौदहों मार्गणास्थानोंके द्वारा जिस जीवद्रव्यके
चौदहों जीवसमासोंके अस्तित्वका निरूपण कर आये हैं, प्रकृतमें उसी जीवद्रव्यसे
प्रयोजन है ।

शंका—यह कैसे जाना ?

समाधान—' मिथ्यादृष्टि जीव कितने हैं ' इसप्रकार शेष पांच द्रव्योंके परिमाणको
छोड़कर एक जीवद्रव्यके परिमाणके निरूपण करनेवाले सूत्रसे यह जाना जाता है कि प्रकृतमें
एक जीवद्रव्यसे ही प्रयोजन है, अन्य द्रव्योंसे नहीं ।

जिसके द्वारा पदार्थ मापे जाते हैं या जाने जाते हैं उसे प्रमाण कहते हैं और द्रव्यके
प्रमाणको द्रव्यप्रमाण कहते हैं ।

शंका— इसप्रकार ' द्रव्य प्रमाण ' इन दोनों पदोंमें तत्पुरुष समास करने पर द्रव्यसे
प्रमाणका भेद प्राप्त होता है, जैसे ' देवदत्तका कंबल ' ?

समाधान— देवदत्तसे कंबलका जिसप्रकार भेद है, प्रकृतमें उसप्रकारका भेद नहीं है,
क्योंकि, अभेदके रहने पर भी ' उत्पलगन्ध ' इत्यादि पदोंमें तत्पुरुष समास देखा जाता है ।
इसका यह तात्पर्य है कि ' उत्पलगन्ध ' इत्यादि पदोंमें ' उत्पलस्य गन्धः उत्पलगन्धः ' इत्यादि
रूपसे तत्पुरुष समासके रहने पर भी जिसप्रकार उत्पलसे गन्धका भेद नहीं होता है, उसी
प्रकार यहां पर भी द्रव्यसे प्रमाणका सर्वथा भेद नहीं समझना चाहिये ।

अथवा, द्रव्यसे प्रमाण किसी अपेक्षासे भिन्न ही है । यदि द्रव्यसे प्रमाणका कथंचित्
भेद न माना जाय तो द्रव्य और प्रमाणमें विशेष्य-विशेषणभाव नहीं बन सकता है । अथवा,

त्तीदो । अधवा कम्मधारयसमासो काद्व्वो द्व्वमेव पमाणं द्व्वपमाणमिदि । एत्थ वि
ण द्व्वपमाणाणमेयंतेण एगत्तं, एकत्थ समासाभावादो । अधवा दुंदसमासो काद्व्वो ।
तं जधा, दव्वं च पमाणं च द्व्वपमाणमिदि । दुंदसमासो अवयवपहाणो त्ति द्व्व-
पमाणाणं पुध पुध परूवणं पावेदि । ण च सुत्ते पुध पुध द्व्व-पमाणाणं परूवणा कदा ।
जदि वि समुदयपहाणो दुंदसमासो आसइज्जदि तो वि अवयववदिरित्तसमुदायाभावादो
अवयवाणं चैव परूवणा पावेदि । ण च सुत्ते अवयवाणं समूहस्स वा परूवणा कदा ।
तदो ण दुंदसमासो कीरिदि त्ति ? ण एस दोसो, दव्वस्स पमाणे परूविदे दव्वं पि
परूविदेमेव कुदो ? दव्ववदिरित्तपमाणाभावादो । तिकालगोयराणंतपज्जयाणमण्णोणा-
जहवुत्ती दव्वं । वुत्तं च—

नयोपनयैकान्तानां त्रिकालानां समुच्चयः ।

अत्रिभ्राड्भावसम्बन्धो द्रव्यमेकमनेकधा ॥ ३ ॥

संस्वाणं दव्वस्सेको पज्जाओ, तदो ण दोण्हमेगतमिदि । वुत्तं च—

द्रव्य और प्रमाण इन दोनों पदोंमें 'द्व्वमेव पमाणं द्व्वपमाणं' अर्थात् द्रव्य ही प्रमाण
द्रव्यप्रमाण है, इसप्रकार कर्मधारय समास करना चाहिए । यहां पर भी द्रव्य और
प्रमाण इन दोनोंमें एकान्तसे एकत्व अर्थात् अभेद नहीं है, क्योंकि, सर्वथा एकार्थमें अर्थात्
अभेदमें समास ही नहीं हो सकता है । अथवा, द्रव्य और प्रमाण इन दोनों पदोंमें द्वन्द्वसमास
करना चाहिये । वह इसप्रकार है, द्रव्य और प्रमाण द्रव्यप्रमाण ।

शंका — द्वन्द्वसमास अवयवप्रधान होता है, इसलिये द्रव्य और प्रमाणका पृथक् पृथक्
प्ररूपण प्राप्त हो जाता है । परंतु सूत्रमें द्रव्य और प्रमाणका पृथक् पृथक् कथन नहीं किया
है । यद्यपि समुदायप्रधान भी द्वन्द्वसमास हो सकता है, तो भी अवयवोंको छोड़कर समुदाय
पाया नहीं जाता है, इसलिये समुदायप्रधान द्वन्द्वसमासके करने पर भी अवयवोंकी ही प्ररू-
पणा प्राप्त होती है । परंतु सूत्रमें अवयवोंकी अथवा समूहकी प्ररूपणा नहीं की गई है । इस-
लिये द्रव्य और प्रमाण इन दोनों पदोंमें द्वन्द्वसमास नहीं किया जा सकता है ?

समाधान — यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, द्रव्यके प्रमाणके प्ररूपण कर देने पर
द्रव्यका भी प्ररूपण हो ही जाता है, क्योंकि, द्रव्यको छोड़कर उसका प्रमाण नहीं पाया जाता है ।

त्रिकालगोचर अनन्त पर्यायोंकी परस्पर अग्र्यवृत्ति द्रव्य है । कहा भी है—

जो नैगमादि नय और उनकी शाखा उपशाखारूप उपनयोंके विषयभूत त्रिकालवर्ती
पर्यायोंका अभिन्न संबन्धरूप समुदाय है उसे द्रव्य कहते हैं । वह द्रव्य कथंचित् एकरूप
और कथंचित् अनेकरूप है ॥ ३ ॥

द्रव्यकी एक पर्याय संख्यान है, इसलिये द्रव्य और प्रमाणमें एकत्व अर्थात् सर्वथा
अभेद नहीं है । कहा भी है—

एयदवियम्मि जे अत्यपञ्जया वयणपञ्जया चावि ।

तीदाणागदभूदा तावदियं तं हवदि दव्वं ॥ ४ ॥

एवं ताणं भेदो भवदु णाम, किंतु दव्वगुणपरूवणादारेणेव दव्वसंस परूवणा भवदि, अण्णहा दव्वपरूवणोवायाभावादो । उच्चं च—

नानात्मतामप्रजहत्तदेकमेकामतामप्रजहच्च नाना ।

अंगांगिभावात्तव वस्तु यत्तत् क्रमेण वाग्वाच्यमनन्तरूपम् ॥ ५ ॥

तदो दव्वगुणे पमाणे परूविदे दव्वं परूविदं चैव (एवं सुत्ते दव्वपमाणणं परूवणा अत्थि त्ति दुंदसमासो वि ण विरुज्जदे । सेससमासाणमेत्थ संभवो णत्थि । ते सव्वे पि समासा केत्तिया ? छच्चेव भवंति । उच्चं च—

बहुव्रीह्यव्ययीभावो द्वन्द्वस्तःपुरुषो द्विगुः ।

कर्मधारय इत्येते समासाः षट् प्रकीर्तिताः ॥ ६ ॥

किमिदि इदरेसिं संभवो णत्थि ? एत्थ तदत्थाभावादो । को तेसिमत्थो ?

एक द्रव्यमें अतीत, अनागत और 'अपि' शब्दसे वर्तमान पर्यायरूप जितने अर्थ-पर्याय और व्यंजनपर्याय हैं तत्प्रमाण वह द्रव्य होता है ॥ ४ ॥

यद्यपि इसप्रकार द्रव्य और प्रमाणमें भेद रहा आवे, फिर भी द्रव्यके गुणोंकी प्ररूपणाके द्वारा ही द्रव्यकी प्ररूपणा हो सकती है, क्योंकि, द्रव्यके गुणोंकी प्ररूपणाके बिना द्रव्यप्ररूपणाका कोई उपाय नहीं है । कहा भी है—

अपने गुणों और पर्यायोंकी अपेक्षा नानास्वरूपताको न छोड़ता हुआ वह द्रव्य एक है और अन्वयरूपसे एकपनेको नहीं छोड़ता हुआ वह अपने गुणों और पर्यायोंकी अपेक्षा नाना है । इसप्रकार अनन्तरूप जो वस्तु है वही, हे जिन, आपके मतमें क्रमशः अंगांगीभावसे वचनोंद्वारा कही जाती है ॥ ५ ॥

अतः द्रव्यके गुणरूप प्रमाणके प्ररूपण कर देने पर द्रव्यका कथन हो ही जाता है । इसप्रकार सूत्रमें द्रव्य और प्रमाणकी प्ररूपणा है ही, अतएव द्वन्द्वसमास भी विरोधको प्राप्त नहीं होता है । इसप्रकार तत्पुरुष, कर्मधारय और द्वन्द्व समासको छोड़कर शेष समासोंकी यहाँ संभावना नहीं है ।

शंका—वे संपूर्ण समास कितने हैं ?

समाधान—वे समास छह ही हैं । कहा भी है—

बहुव्रीहि, अव्ययीभाव, द्वन्द्व, तत्पुरुष, द्विगु और कर्मधारय, इसप्रकार ये छह समास कहे गये हैं ॥ ६ ॥

शंका—यहाँ द्रव्यप्रमाण इस पदमें उपर्युक्त तीन समासोंको छोड़कर दूसरे समासोंकी संभावना क्यों नहीं है ?

बहिरथो बहुव्रीहिः परं तत्पुरुषस्य च ।

पूर्वमव्ययीभावस्य द्वन्द्वस्य तु पदे पदे ॥ ७ ॥

संख्यापूर्वकस्तत्पुरुषो द्विगुः समासः, यथा पञ्चनदमित्यादि । एकाधिकरणः तत्पुरुषः कर्मधारय इति । एत्थ चोदगो भणदि—संखा एका चैव, एगवदिरित्तदुवादीण-मभावादो । सा च एकसंखा सव्वपदत्थाणमत्थि ति जाणिज्जदि, अण्णहा तेसिमत्थि-त्ताणुववत्तीदो । तदो किं तीए संखापरूवणाए इदि । एत्थ परिहारो वुच्चदे—सयल-पयत्थाणं जदि एका चैव संखा णियमेण भवदि तो सव्वपदत्थाणं एकादो अव्वदि-रित्ताणं एगत्तं पसज्जेज्ज । तहा च एगड्दंसणे सयलड्दंसणं, एगड्दविणासे सयलड्द-विणासो, एयड्दुप्पत्तीए सयलड्दुप्पत्ती जाएज्ज । ण च एवं, तहा अदंसणादो । तम्हा पदत्थभेदो इच्छिदव्वो । संते तव्वभेदे तत्थ द्वियसंखाए भेदो भवदि चैव, भिण्णड्द्विय-संखाणाणमेगत्तविरोधादो । होदु एकसंखा चैव बहुवा, ण तदो अण्णा संखा चे ण,

समाधान—क्योंकि यहां पर उनका अर्थ घटित नहीं होता है, इसलिये अन्य समासोंका ग्रहण नहीं किया ।

शंका — उन छहों समासोंका क्या अर्थ है ?

समाधान — अन्य अर्थप्रधान बहुव्रीहि समास है । उत्तर पदार्थप्रधान तत्पुरुष समास है । अव्ययीभाव समासमें पूर्व पदार्थप्रधान है । द्वन्द्व समासकी प्रत्येक पदमें प्रधानता रहती है ॥ ७ ॥

संख्यापूर्वक तत्पुरुषको द्विगु समास कहते हैं, जैसे पंचनद इत्यादि । जहां पर दो पदार्थोंका एक आधार दिखाया जाता है ऐसे तत्पुरुषको कर्मधारय समास कहते हैं ।

शंका, — यहां पर शंकाकार कहता है कि संख्या एकरूप ही है, क्योंकि, एकको छोड़कर दो आदिक संख्याएं नहीं पाई जाती हैं । और वह एकरूप संख्या संपूर्ण पदार्थोंमें रहती है ऐसा जाना जाता है । यदि ऐसा न माना जाय तो उन संपूर्ण पदार्थोंका अस्तित्व ही नहीं बन सकता है, इसलिये यहां पर उस संख्याकी प्ररूपणासे क्या प्रयोजन है ?

समाधान—आगे उपर्युक्त शंकाका परिहार करते हैं । संपूर्ण पदार्थोंके नियमसे एक ही संख्या होती है, यदि ऐसा मान लिया जाय तो वे संपूर्ण पदार्थ एकरूप संख्यासे अभिन्न हो जाते हैं, इसलिये उन सबको एकत्वका प्रसंग आ जाता है । और ऐसा मान लेने पर एक पदार्थका ज्ञान होने पर संपूर्ण पदार्थोंका ज्ञान, एक पदार्थके विनाश होने पर संपूर्ण पदार्थोंका विनाश और एक पदार्थकी उत्पत्ति होने पर संपूर्ण पदार्थोंकी उत्पत्ति होने लगेगी । परंतु ऐसा है नहीं, क्योंकि, ऐसा देखा नहीं जाता है, इसलिये पदार्थोंमें भेद मान लेना चाहिये । इसप्रकार पदार्थोंमें भेदके सिद्ध हो जाने पर उनमें रहनेवाली संख्यामें भेद सिद्ध हो ही जाता है, क्योंकि, अनेक पदार्थोंमें रहनेवाली संख्याओंमें एकत्व अर्थात् अभेद माननेमें विरोध आता है ।

शंका—एक यह संख्या ही अनेक रूप हो जाओ, परंतु उससे भिन्न संख्या नहीं

एकस्मिन् बहुत्त-विरोधादौ । एगत्तं पडि समाणत्तणेण एगत्तमावण्णाए दब्ब-खेत्त-काल-भावभेदेण णाणत्तमुवमदाए एकसंखाए ण बहुत्तं विरुज्झदे चेज्जदि एवं तो एगसंखादो कथंचि भेदा दुवादिसंखाए भेदो किमिदि ण इच्छिज्जदे । क्वं भेदो चे, दब्बादिभेदं पडुच्च; तदो चेव दुब्भावो समाणत्तदंसणादो । दोण्हमेगत्तं दब्बद्वियणयविवक्खादो । पञ्जवद्वियणये विवक्खिदे एकसंखादो सेसेकसंखा वदिरित्तेत्ति णाणत्तं । णेगमणए विवक्खिदे दुवादिभावो । एत्थ पुण णेगमणयविवक्खादो संखाभेदो गहेदब्बो । यथावस्त्वव-बोधः अनुगमः, केवलि-श्रुतकेवलिभिरनुगतानुरूपेणावगमो वा । द्रव्यप्रमाणस्य द्रव्य-प्रमाणयोर्वा अनुगमः द्रव्यप्रमाणानुगमः, तेन द्रव्यप्रमाणानुगमेनेति निमित्ते तृतीया । दुविहो णिदेसो, सोदारानं जहा णिच्छयो होदि तहा देसो णिदेसो । कुतीर्थपाखण्डिनः

पाई जाती है ?

समाधान—ऐसा नहीं है, क्योंकि, एक संख्याको बहुतरूप माननेमें विरोध आता है ।

शंका—एक यह संख्या एकत्वके प्रति समान होनेसे एकरूप है, और द्रव्य, क्षेत्र, काल तथा भावके भेदसे नानारूप है, इसलिये एक संख्यामें बहुत्व विरोधको प्राप्त नहीं होता है ?

प्रतिशंका—यदि ऐसा है तो एक संख्यासे कथंचित् भिन्न होनेके कारण दो आदि संख्याओंका उससे भेद क्यों नहीं मान लेते हो ?

शंका—एक संख्यासे दो आदि संख्याओंका भेद कैसे है ?

समाधान—द्रव्य, क्षेत्र आदि भेदोंकी अपेक्षासे दो आदि संख्याओंका भेद है और इसीलिये संख्याओंमें दो आदि रूपता बन जाती है, क्योंकि, द्रव्य आदि भेदोंके साथ दो आदि संख्यारूप भेदोंकी समानता देखी जाती है ।

द्रव्यार्थिकनयकी विवक्षासे एक और नाना इन दोनोंमें एकत्व है । पर्यायार्थिक-नयकी विवक्षा होने पर विवक्षित एक संख्यासे शेष एक संख्याएं भिन्न हैं, इसलिये उनमें नानात्व है । तथा नैगमनयकी विवक्षा होने पर द्वित्व आदि भाव बन जाता है । इसप्रकार (संख्याके कथंचित् एकरूप और कथंचित् नानारूप सिद्ध हो जाने पर उनमेंसे) यहां प्रकृतमें तो नैगमनयकी विवक्षासे संख्याभेद ही ग्रहण करना चाहिये ।

वस्तुके अनुरूप ज्ञानको अनुगम कहते हैं । अथवा, केवली और श्रुतकेवलियोंके द्वारा परंपरासे आये हुए अनुरूप ज्ञानको अनुगम कहते हैं । द्रव्यगत प्रमाणके अथवा द्रव्य और प्रमाणके अनुगमको द्रव्यप्रमाणानुगम कहते हैं । उससे अर्थात् द्रव्यप्रमाणानुगमकी अपेक्षा, इसप्रकार द्रव्यप्रमाणानुगम पदके साथ सूत्रमें जो तृतीया विभक्ति जोड़ी है वह निमित्तरूप अर्थमें जानना चाहिये ।

निर्देश दो प्रकारका है । जिस प्रकारके कथन करनेसे श्रोताओंको पदार्थके विषयमें

अतिशय कथनं वा निर्देशः । स द्विविधः द्विप्रकारः शरीरस्वभावरूपप्रकृतिशीलधर्मानां निर्देश इव । ओघेण, ओघं वृन्दं समूहः संपातः समुदयः पिण्डः अवशेषः अभिन्नः सामान्यमिति पर्यायशब्दाः । गत्यादिमार्गणस्थानैरविशेषितानां चतुर्दशगुणस्थानानां प्रमाणप्ररूपणमोघनिर्देशः । चतुर्दशगुणस्थानविशिष्टसकलजीवराशिप्ररूपणादादेशः किन्न स्यादिति चेन्न, सर्वजीवराशिनिरूपणं प्रति प्रतिज्ञाभावात् । क प्रतिज्ञास्याचार्यस्येति चेत्, जीवसमासप्रमाणनिरूपणे प्रतिज्ञा । सा कुतोऽवसीयत इति चेत्, ' एत्तो इमेसिं चोदसण्हं जीवसमासाणं ' इत्यादिसूत्रादवसीयते । सर्वजीवराशिव्यतिरिक्तचतुर्दशगुणस्थानानामभावात्तथापि सर्वजीवराशिरेव निरूपितस्स्यादिति चेन्न, जीवसमुदायस्या-

निश्चय होता है उस प्रकारके कथन करनेको निर्देश कहते हैं । अथवा, कुतीर्थ अर्थात् सर्वथा एकान्तवादके प्रस्थापक पाखण्डियोंको उल्लंघन करके अतिशयरूप कथन करनेको निर्देश कहते हैं । वह निर्देश शरीरके स्वभाव, रूप, प्रकृति, शील और धर्मके निर्देशके समान दो प्रकारका है । उनमेंसे एक ओघनिर्देश है । ओघ, वृन्द, समूह, संपात, समुदय, पिण्ड, अवशेष, अभिन्न और सामान्य ये सब पर्यायवाची शब्द हैं । इस ओघनिर्देशका प्रकृतमें स्पष्टीकरण इसप्रकार हुआ कि गत्यादि मार्गणस्थानोंसे विशेषताको नहीं प्राप्त हुए केवल चौदहों गुणस्थानोंके अर्थात् चौदहों गुणस्थानवर्ती जीवोंके प्रमाणका प्ररूपण करना ओघनिर्देश है ।

शंका — वह ओघनिर्देश चौदहों गुणस्थानविशिष्ट संपूर्ण जीवराशिके प्रमाणका प्ररूपण करनेवाला होनेसे आवेशनिर्देश क्यों नहीं कहलाता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, ओघनिर्देशमें संपूर्ण जीवराशिके निरूपणकी प्रतिज्ञा नहीं की गई है ।

शंका—तो फिर आचार्यने ओघनिर्देशकी किस विषयमें प्रतिज्ञा की है ?

समाधान—आचार्यने ओघनिर्देशसे जीवसमासोंके (गुणस्थानोंके) प्रमाणके निरूपणमें प्रतिज्ञा की है ।

शंका—आचार्यने ओघनिर्देशसे जीवसमासोंके प्रमाणके निरूपणमें प्रतिज्ञा की है, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—' एत्तो इमेसिं चोदसण्हं जीवसमासाणं ' इत्यादि सूत्रसे जाना जाता है कि ओघनिर्देशसे जीवसमासोंके विषयमें आचार्यकी प्रतिज्ञा है ।

शंका—संपूर्ण जीवराशिको छोड़कर चौदह गुणस्थान पाये नहीं जाते हैं, इसलिये चौदह गुणस्थानोंके निरूपण करने पर भी तो संपूर्ण जीवराशिका ही निरूपण हो जाता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, ओघनिर्देशके निरूपणमें समस्त जीवसमुदाय अविष-क्षित है ।

विशेषार्थ—यद्यपि गुणस्थानोंमें संपूर्ण जीवराशिका अन्तर्भाव हो जाता है, फिर भी एक जीवके भी एक पर्यायमें संपूर्ण गुणस्थान संभव हैं, इसलिये यह कहा गया है कि ओघनिर्देशमें

विवक्षितत्वात् । आदेशेण, आदेशः पृथग्भावः पृथक्करणं विभजनं विभक्तीकरणमित्यादयः पर्यायशब्दाः । गत्यादिविभिन्नचतुर्दशजीवसमासप्ररूपणमादेशः । ' जहा उद्देशो तथा णिद्देशो ' इति कद्दु आदेशं थर्पं कादूण ओघपरूवणद्वमुत्तरसुत्तं भणदि—

ओघेण मिच्छाइटी दव्वपमाणेण केवडिया, अणंता' ॥ २ ॥

ओघसद्व्युच्चारणाभावे ओघादेशपरूवणासु कदमेसा परूवणेत्ति सोदारस्स चित्तं मा घुलिस्सदि त्ति तच्चित्तस्स थिरत्तुप्पायणद्वं ओघेणेत्ति भणदिदं । मिच्छादिद्विगमहणाभावे कदमस्स जीवसमासस्स इमा परूवणा इदि सोदारस्स संदेहो होज्ज, तस्स संदेहुप्पत्ति- णिवारणद्वं मिच्छादिद्विगमहणं कदं । दव्वपमाणेणेत्ति अभणिय केवडिया इदि सामण्णेण पुचिच्छदे इमा पुच्छा किं दव्वविसया, किं खेत्तविसया, किं कालविसया, किं वा भाव- विसया, इदि संदेहो होज्ज; तण्णिवारणद्वं दव्वपमाणगमहणं कदं । केवडिया इदि पुच्छा ।

संपूर्ण जीवराशिके कथन करनेकी विवक्षा नहीं की गई है ।

आदेशसे कथन करनेको आदेशनिर्देश कहते हैं । आदेश, पृथग्भाव, पृथक्करण, विभजन, विभक्तीकरण इत्यादिक पर्यायवाची शब्द हैं । आदेशनिर्देशका प्रकृतमें स्पष्टीकरण इसप्रकार है कि गति आदि मार्गणाओंके भेदोंसे भेदको प्राप्त हुए चौदह गुणस्थानोंका प्ररूपण करना आदेशनिर्देश है ।

' उद्देशके अनुसार निर्देश करना चाहिये ' ऐसा समझकर आदेशको स्थागित करके पहले ओघनिर्देशका प्ररूपण करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

ओघसे मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं, अनन्त हैं ॥ २ ॥

ओघ शब्दके उच्चारण नहीं करने पर ओघ और आदेश प्ररूपणाओंमेंसे ' यह कौनसी प्ररूपणा है ' इसप्रकार श्रोताका चित्त मत घुले, इसलिये उसके चित्तकी स्थिरता उत्पन्न करनेके लिये सूत्रमें ' ओघसे ' यह पद कहा है । सूत्रमें मिथ्यादृष्टि पदके ग्रहण नहीं करने पर कौनसे जीवसमासकी यह प्ररूपणा है इसप्रकार श्रोताको संदेह हो सकता है, इसलिये उसकी सन्देहोत्पत्तिके निवारण करनेके लिये सूत्रमें मिथ्यादृष्टि पदका ग्रहण किया है । सूत्रमें ' द्रव्यप्रमाणसे ' इस पदको न कहकर ' कितने हैं ' इसप्रकार सामान्यसे पूछने पर यह पुच्छा क्या द्रव्यविषयक है, क्या क्षेत्रविषयक है, क्या कालविषयक है, अथवा क्या भावविषयक है, इसप्रकारका सन्देह हो सकता है, अतः उस सन्देहके निवारणार्थ सूत्रमें ' द्रव्यप्रमाण ' पदको ग्रहण किया है । ' कितने हैं ' यह पद प्रश्नरूप है ।

१ सामान्येन तावत् जीवा मिथ्यादृष्ट्याऽनन्तानन्ताः । स. सि. ८. मिच्छाइटी पात्राणंताणंता ॥ गां. जी. १२३. मिच्छाणंता । पञ्चमं. २, ९.

पुच्छामंतरेण 'ओघेण मिच्छाद्दृष्टी द्रव्यप्रमाणेण अणंता' इदि किण्ण वुच्चदे ? न, अस्य स्वकर्तृत्वनिराकरणद्वारेणाप्तकर्तृत्वप्रतिपादनफलत्वात् । तदपि किं फलमिति चेन्न, 'वक्तृप्रामाण्याद्वचनप्रामाण्यम्' इति न्यायात् वचनस्यास्य प्रामाण्यप्रदर्शनफलम् । भूतबल्यादीनामाचार्याणां क्व व्यापार इति चेन्न, तेषां व्याख्यातृत्वाभ्युपगमात् । अणंता इदि प्रमाणं वृत्तं, एवं वृत्ते संखेज्जासंखेज्जाणं पडिणियत्ती । तं च अणंतमणोयविधं । सं जहा—

णामं द्रवणा द्रवियं सस्सद गणणापदेसियमणंतं ।

एणो उभयादेसो वित्थारो सव्व भावो य ॥ ८ ॥

तत्थ णामाणंतं जीवाज्जिवमिस्सद्व्वस्स कारणणिरवेक्खा सण्णा अणंता इदि । जं तं द्रवणाणंतं णाम तं कट्टकम्मेषुं वा चित्तकम्मेषु वा पोत्तकम्मेषु वा लेप्पकम्मेषु वा लेण-

शंका—'कितने हैं' इसप्रकारके प्रश्नके बिना ही 'ओघनिर्देशसे मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा अनन्त हैं' इसप्रकारका सूत्र क्यों नहीं कहा ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, अपने कर्तृत्वका निराकरण करके आप्तके कर्तृत्वका प्रतिपादन करना 'कितने हैं' इस पदके सूत्रमें देनेका फल है ।

शंका—अपने कर्तृत्वका निराकरण करके आप्तकर्तृत्वके प्रतिपादन करनेका भी क्या फल है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, 'वक्ताकी प्रमाणतासे वचनोंमें प्रमाणता आती है' इस न्यायके अनुसार 'अनन्त हैं' इस वचनकी प्रमाणता दिखाना इसका फल है ।

शंका—जब कि 'ओघेण मिच्छाद्दृष्टी' इत्यादि वचनके कर्ता आप्त भिन्न हो जाते हैं तो फिर भूतबलि आदि आचार्योंका व्यापार कहाँ पर होता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, उनको आप्तके वचनोंका व्याख्याता स्वीकार किया है, इसलिये आप्तके वचनोंके व्याख्यान करनेमें उनका व्यापार होता है ।

सूत्रमें दिये गये 'अणंता' इस पदके द्वारा मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण कहा गया है । मिथ्यादृष्टि जीव अनन्त हैं, इसप्रकार कथन करने पर संख्यात और असंख्यातकी निवृत्ति हो जाती है । वह अनन्त अनेक प्रकारका है, जो इसप्रकार है—

नामानन्त, स्थापनानन्त, द्रव्यानन्त, शाश्वतानन्त, गणनानन्त, अप्रदेशिकानन्त, एकांनन्त, उभयानन्त, विस्तारानन्त, सर्वानन्त और भावानन्त, इसप्रकार अनन्तके ग्यारह भेद हैं ॥ ८ ॥

उनमेंसे कारणके बिना ही जीव, अजीव और मिश्र द्रव्यकी अनन्त पेसी संज्ञा करना नाम अनन्त है ।

काष्ठकर्म, चित्रकर्म, पुस्तकर्म, लेप्यकर्म, लेनकर्म, शैलकर्म, भित्तिकर्म, गृहकर्म,

१ सावणिखरसोगकटादिषु ×× जहासरूपेण धडियद्रवणा ×× चित्तारोहितो वण्णविसेसेहिं णिप्फण्णाणि

कम्मेषु वा सेलकम्मेषु वा भित्तिकम्मेषु वा गिहकम्मेषु वा भेंडकम्मेषु वा दंतकम्मेषु वा अक्खो वा वराडयो वा जे च अण्णे ड्वणाए ड्विदा अणंतमिदि तं सव्वं ड्वणाणंतं गाम । जं तं दव्वणंतं तं दुविहं आगमदो णोआगमदो य । आगमो गंधो सुदणाणं सिद्धंतो पवयणमिदि एगट्ठो । अत्रोपयोगिनः श्लोकाः—

पूर्वापरविरुद्धादेर्व्यपेतो दोषसंहतेः ।

द्योतकः सर्वभावानामाप्तव्याहृतिरागमः ॥ ९ ॥

आगमो ह्याप्तवचनमाप्तं दोषक्षयं विदुः ।

त्यक्तदोषोऽनृतं वाक्यं न ब्रूयद्वैत्वसंभवात् ॥ १० ॥

रागाद्वा द्वेषाद्वा मोहाद्वा वाक्यमुच्यते ह्यनृतम् ।

यस्य तु नैते दोषास्तस्यानृतकारणं नास्ति ॥ ११ ॥

तत्थ आगमदो दव्वणंतं अणंतपाहुडजाणओ अणुवज्जुत्तो । अवगम्य विस्मृता-

भेंडकर्म अथवा दन्तकर्ममें अथवा अक्ष (पासा) हो या कौड़ी हो, अथवा दूसरी कोई वस्तु हो उसमें, यह अनन्त है, इसप्रकारकी स्थापना करना यह सब स्थापनानन्त है ।

द्रव्यानन्त आगम और नोआगमके भेदसे दो प्रकारका है । आगम, ग्रन्थ, श्रुतज्ञान, सिद्धान्त और प्रवचन ये एकार्थवाची शब्द हैं । इस विषयमें उपयोगी श्लोक हैं—

पूर्वापर विरुद्धादि दोषोंके समूहसे रहित और संपूर्ण पदार्थोंके द्योतक आप्तवचनको आगम कहते हैं ॥ ९ ॥

आप्तके वचनको आगम जानना चाहिये और जिसने जन्म, जरा आदि अठारह दोषोंका नाश कर दिया है उसे आप्त जानना चाहिये । इसप्रकार जो त्यक्तदोष होता है वह असत्यवचन नहीं बोलता है, क्योंकि, उसके असत्यवचन बोलनेका कोई कारण ही संभव नहीं है ॥ १० ॥

रागसे, द्वेषसे अथवा मोहसे असत्य वचन बोला जाता है, परंतु जिसके ये रागादि दोष नहीं रहते हैं उसके असत्य वचन बोलनेका कोई कारण भी नहीं पाया जाता है ॥ ११ ॥

अनन्तविषयक शास्त्रको जाननेवाले परंतु वर्तमानमें उसके उपयोगसे रहित जीवको

चित्तकम्माणि णाम । वत्थेसु पाणसालियकसद्दादीहिं जाणिरूण किरियाए णिप्पाइत्ताणि रूवाणि छिपएहि वा कदाणि पोत्तकम्माणि णाम । लेप्पयारेहि लेविऊण जाणि णिप्पाइदाणि रूवाणि ताणि लेप्पकम्माणि णाम । एत्थ रट्टएहि जाणि पव्वदेसु घडिदाणि रूवाणि ताणि लेणकम्माणि णाम । वडूइपिडेण पासादेसु घडिदरूवाणि गिहकम्माणि णाम । तेण चैव कुड्डेसु घडिदरूवाणि भित्तिकम्माणि णाम । दंतिदंतादिसु घडिदरूवाणि दंतकम्माणि णाम । भिडेहि वडिदरूवाणि भिडकम्माणि णाम । धवला १२०९.

१ अनु. पत्र १६४. टीका.

वगमानां अवगमिष्यतां वा किमिति द्रव्यागमव्यपदेशो न स्यादिति चेन्न, शक्तिरूपो-
पयोगस्य श्रुतावरणक्षयोपशमलक्षणस्य साम्प्रतं तत्रासत्त्वात् । आगमादणो णोआगमो । जं
तं णोआगमदो द्वाणंतं तं तिविहं, जाणुगसरीरद्व्वाणंतं भवि यद्व्वाणंतं तव्वदिरित्त-
द्व्वाणंतं चेदि । तत्थ जाणुगसरीरद्व्वाणंतं अणंतपाहुडजाणुगसरीरं तिकालजादं । कधं
अणंतपाहुडादो आधारत्तणेण वदिरित्तस्स सरीरस्स अणंतववएसो ? ण, असिसदं धावदि
परसुसदं धावदि इच्चवमादिसु तदो वदिरित्तस्स वि आधारपुरुसस्स आधेयववदेसदंस-
णादो । भवदु वट्टमाणम्हि आधारस्स आधेयोवयारो णादीदाणागदकालेसु त्ति ? ण एस दोसो,
णट्ट-भविस्सरज्जम्हि वि पुरिसे राया आगच्छदि त्ति ववहारदंसणादो । पज्जयपज्जइणो

आगमद्रव्यानन्त कहते हैं ।

शंका—जिनको पहले ज्ञान था किंतु पश्चात् विस्मृत हो गया है, अर्थात् छूट गया
है अथवा जो भविष्यकालमें जानेगे उन्हें भी द्रव्यागम यह संज्ञा क्यों न दी जाय ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, श्रुतज्ञानावरण कर्मका क्षयोपशम है लक्षण जिसका ऐसा
शक्तिरूप उपयोग वर्तमानमें उन जीवोंके नहीं पाया जाता है, इसलिये उन्हें द्रव्यागम यह
संज्ञा नहीं प्राप्त हो सकती है ।

आगमसे अन्यको नोआगम कहते हैं । वह नोआगम द्रव्यानन्त तीन प्रकारका है,
ज्ञायकशरीर नोआगमद्रव्यानन्त, भव्य नोआगमद्रव्यानन्त और तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यानन्त ।
उनमेंसे, अनन्तविषयक शास्त्रको जाननेवालेके तीनों कालोंमें होनेवाले शरीरको ज्ञायकशरीर
नोआगमद्रव्यानन्त कहते हैं ।

शंका—अनन्तविषयक शास्त्र अर्थात् अनन्तविषयक शास्त्रका ज्ञाता आधेय है और
उसका शरीर आधार है, अतएव अनन्तविषयक शास्त्रके ज्ञातासे आधारतया शरीर भिन्न है,
इसलिये उस शरीरको अनन्त यह संज्ञा कैसे प्राप्त हो सकती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, सौ तरवारें (सौ तरवारवाले) दौड़ती हैं, सौ फरसा
(सौ फरसावाले) दौड़ते हैं इत्यादि प्रयोगोंमें तरवार और फरसासे भिन्न परंतु उनके
आधारभूत पुरुषोंमें भी जिसप्रकार आधेयरूप तरवार और फरसा यह संज्ञा देखी जाती है,
उसीप्रकार प्रकृतमें भी आधारभूत शरीरमें आधेयका व्यवहार जान लेना चाहिये ।

शंका—वर्तमान कालमें आधारभूत शरीरमें आधेयका उपचार भले ही हो जाओ,
परंतु अतीत और अनागतकालीन शरीरोंमें यह व्यवहार नहीं हो सकता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, जिसकी राजारूप पर्याय नष्ट हो गई है,
अथवा जिसे भविष्यमें राजारूप पर्याय प्राप्त होगी, ऐसे पुरुषमें भी जिसप्रकार ' राजा आता
है ' यह व्यवहार देखा जाता है, उसीप्रकार प्रकृतमें भी समझ लेना चाहिये ।

शंका—पर्याय और पर्यायीमें भेद न होनेके कारण वहां पर आधार-आधेयभाव नहीं

भेदाभावादो ण तत्थ आधाराधेयभावो । अहं जइ एत्थ वि आधाराधेयभावो होज्ज,
जाणुमसरीरभविषाणं पुणरुत्तदा दुक्केज्जेत्ति । जदि एवं, तो एदं परिहरिय धणुसदे
भुंजदीदि एदं गहेयव्वं । न धनुर्भृतायामेवायं व्यवहारः, धनुष्यपसार्यं भुंजानेष्वपि
धनुःशतं भुंक्त इति व्यवहारदर्शनात् । न घृतकुम्भदृष्टान्तो घटते, घटस्य घृतव्यप-
देशानुपलम्भतो दृष्टान्तदार्ष्टान्तिकयोः साधर्म्याभावात् । जं तं भविषाणंतं तं अणंत-

पाया जाता है । फिर भी यदि यहां भी आधार-आधेयभाव माना जावे; तो ज्ञायकशरीर और
भावी इन दोनोंके कथनमें पुनरुक्तता प्राप्त हो जायगी ?

समाधान—यदि ऐसा है तो इस दृष्टान्तको छोड़कर 'सौ धनुष (सौ धनुषवाले)
भोजन करते हैं' प्रकृतमें इस दृष्टान्तको लेना चाहिये । धनुषोंके धारण करनेरूप अवस्थामें
ही सौ धनुष भोजन करते हैं यह व्यवहार नहीं होता है किंतु धनुषोंको दूर करके भोजन
करनेवालोंमें भी 'सौ धनुष भोजन करते हैं' इसप्रकार व्यवहार देखा जाता है । किन्तु यहां पर
घृतकुम्भका दृष्टान्त लागू नहीं होता है, क्योंकि, घटके घृत इसप्रकारका व्यवहार नहीं पाया
जानेके कारण दृष्टान्त और दार्ष्टान्तमें साधर्म्य नहीं है ।

विशेषार्थ—नोआगमद्रव्यनिक्षेपके तीन भेद किये हैं, ज्ञायकशरीर, भावी और
तद्व्यतिरिक्त । इनमेंसे ज्ञायकशरीरमें ज्ञाताका त्रिकालभावी शरीर लिया जाता है और
भावीमें जो वर्तमानमें ज्ञाता नहीं है किंतु आगे होगा उसका ग्रहण किया जाता है । अब यदि
जो पर्याय पहले हो चुकी है या आगे होगी उसे ही ज्ञायकशरीरका अतीत और भावी मान
लें तो ज्ञायकशरीरभावी नोआगमद्रव्यमें और भावी नोआगमद्रव्यमें कोई अन्तर नहीं रह
जायगा । इसलिये ज्ञायकशरीरमें संबन्धप्राप्त भिन्न आधारमें आधेयका उपचार किया जाता है
और भावीमें वही वस्तु आगे होनेवाली पर्यायरूपसे कही जाती है ऐसा समझना चाहिये ।
यद्यपि ऊपर आधारमें आधेयका उपचार दिखानेके लिये 'असिसदं यावदि' इत्यादि
दृष्टान्त दे आये हैं जिससे यह समझमें आ जाता है कि जिसप्रकार तरवारधारी सौ
पुरुषोंके दौड़नेपर सौ तरवारें दौड़ती हैं इत्यादि रूपसे व्यवहार होता है उसीप्रकार अनन्त
आदि त्रिषयक शास्त्रके ज्ञाताके शरीरको भी नोआगमद्रव्यानन्त आदि कह सकते हैं । परंतु
जो शरीर अभी प्राप्त नहीं हुआ है या प्राप्त होगा उसे कैसे नोआगमद्रव्यानन्त आदि
कह सकते हैं, क्योंकि, उपचार संबद्ध पदार्थमें होता है । इसका समाधान यह है कि
जिसप्रकार धनुषोंको दूर रखकर भोजन करने पर भी 'धणुसदं भुंजदि' यह व्यवहार बन
जाता है, उसीप्रकार अतीत और अनागत शरीरकी अपेक्षा भी उपचारसे आधार-आधेयभाव
मान कर नोआगमद्रव्यानन्त आदि संज्ञा बन जानी है । प्रकृतमें घृतकुम्भका दृष्टान्त इसलिये
लागू नहीं होता है कि घटमें घी इसप्रकारका व्यवहार नहीं होनेसे वहां आधार-आधेयभावकी
संभावना ही नहीं है ।

प्याद्बुद्धजाणुगभायी जीवो । जं तं तच्चदिरिक्तद्व्याणंतं तं दुविहं, कम्माणंतं णोकम्मा-
णंतमिदि । जं तं कम्माणंतं तं कम्पस्स पदेसा । जं तं णोकम्माणंतं तं कडय-रुजगदीव-
समुदादि एयपदेसादि पोग्गलद्वं वा । आगममधिगम्य विस्मृतः क्कान्तर्भवतीति चेत्त-
द्वतिरिक्तद्रव्यानन्ते । जं तं सस्सदानंतं तं धम्मादिद्व्यगयं । कुदो ? सासयत्तेण
द्व्याणं विणासाभावादो । जं तं गणणाणंतं तं बहुवर्णणीयं सुगमं च । जं तं अपदेसियाणंतं
तं परमाणु । नोकर्मद्रव्यानन्ते द्रव्यत्वं प्रत्यविशिष्टयोः शाश्वताप्रदेशानन्तयोरन्तर्भावः
किमिति न स्यादिति चेत् ? उच्यते— न तावच्छाश्वतानन्तं नोकर्मद्रव्यानन्तेऽन्तर्भवति,
तयोभेदात् । अन्तो विनाशः, न विद्यते अन्तो विनाशो यस्य तदनन्तम् । द्रव्यं शाश्वतम-
नन्तं शाश्वतानन्तम् । नोकर्मं च द्रव्यगतानन्त्यापेक्षया कटक्यादीनां वास्तवान्ताभावापेक्षया
च अनन्तम्, ततो नानयोरेकत्वमिति । एकप्रदेशं परमाणौ तद्व्यतिरिक्तापरो द्वितीयः

जो जीव भविष्यकालमें अनन्तविषयक शास्त्रको जानेगा उसे भावी-नोआगमद्रव्यानन्त
कहते हैं। तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यानन्त दो प्रकारका है, कर्मतद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यानन्त
और नोकर्मतद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यानन्त । ज्ञानावरणादि आठ कर्मोंके प्रदेशोंको कर्मतद्व्य-
तिरिक्त नोआगमद्रव्यानन्त कहते हैं। कटक, रुचकवरुणीप और समुद्रादि अथवा एक प्रदेशादि
पुद्गलद्रव्य थे सब नोकर्मतद्व्यतिरिक्त-नोआगमद्रव्यानन्त हैं ।

शंका—जो आगमका अध्ययन करके भूल गया है उसका द्रव्यनिक्षेपके किस भेदमें
अन्तर्भाव होता है ?

समाधान—ऐसे जीवका तद्व्यतिरिक्त नोकर्मद्रव्यानन्तमें अन्तर्भाव होता है।

शाश्वतानन्त धर्मादि द्रव्योंमें रहता है, क्योंकि, धर्मादि द्रव्य शाश्वतिक होनेसे
उनका कभी भी विनाश नहीं होता है ।

जो गणनानन्त है वह बहुवर्णनीय और सुगम है। एक परमाणुको अप्रदेशिकानन्त
कहते हैं ।

शंका—द्रव्यत्वके प्रति अविशिष्ट ऐसे शाश्वतानन्त और अप्रदेशानन्तका नोकर्म-
द्रव्यानन्तमें अन्तर्भाव क्यों नहीं हो जाता है ?

समाधान—शाश्वतानन्तका नोकर्मद्रव्यानन्तमें तो अन्तर्भाव होता नहीं है, क्योंकि,
इन दोनोंमें परस्पर भेद है। आगे उसीका स्पष्टीकरण करते हैं। अन्त विनाशको कहते हैं,
जिसका अन्त अर्थात् विनाश नहीं होता है उसे अनन्त कहते हैं। जो धर्मादिक द्रव्य
शाश्वत अनन्त है उसे शाश्वतानन्त कहते हैं। और नोकर्म द्रव्यगत अनन्तताकी अपेक्षा और
कटक्यादिके वस्तुतः अन्तके अभावकी अपेक्षा अनन्त है, इसलिये इन दोनोंमें एकत्व नहीं
हो सकता है। एकप्रदेशी परमाणुमें उस एक प्रदेशको छोड़कर अन्त इस संज्ञाको प्राप्त होने-
वाला दूसरा प्रदेश नहीं पाया जाता है, इसलिये परमाणु अप्रदेशानन्त है। ऐसी स्थितिमें

प्रदेशोऽन्तव्यपदेशभाक् नास्तीति परमाणुरप्रदेशानन्तः। तथा च कथमयं नो कर्मद्रव्यानन्ते द्रव्यगतानन्तसंख्यापेक्षया अनन्तव्यपदेशभाज्यन्तर्भवेत्। द्रव्यं प्रत्येकत्वं तत्रास्ति इति चेत् ? अस्तु तथैकत्वं न पुनरन्येनान्येन प्रकारेणायातानन्त्यं प्रति। जं तं एयाणंतं तं लोगमज्झादो एगसेहिं पेक्खमाणे अंताभावादो एयाणंतं। ण दव्वानंते दव्वभेदमस्सि-
ऊणाद्धिदे एदमणंतं पददि, एगदव्वस्सागासस्स पज्जवसाणदंसणाभावमस्सिदूण द्धिदत्तादो। जहा अपारो सागरो, अथाहं जलमिदि। जं तं उभयाणंतं तं तथा चैव उभयदिसाए पेक्खमाणे अंताभावादो उभयादेसाणंतं। जं तं वित्थाराणंतं तं पदरागारेण आगासं पेक्खमाणे अंताभावादो भवदि। जं तं सव्वानंतं तं घणागारेण आगासं पेक्खमाणे अंता-
भावादो सव्वानंतं भवदि। जं तं भावाणंतं तं दुविहं आगमदो णोआगमदो य। आगमदो भावाणंतं अणंतपाहुडजाणगो उवजुत्तो। जं तं णोआगमदो भावाणंतं तं तिकालजादं अणंतपज्जयपरिणदजीवादिदव्वं।

एदेषु अणंतेसु केण अणंतेण पयदं ? गणणाणंतेण पयदं। तं कथं जाणिअदि ?

द्रव्यगत अनन्त संख्याकी अपेक्षा अनन्त संज्ञाको प्राप्त होनेवाले नो कर्मद्रव्यानन्तमें वह अप्रदेशानन्त कैसे अन्तर्भूत हो सकता है, अर्थात् नहीं हो सकता है, इसलिये अप्रदेशानन्त भी स्वतन्त्र है।

शंका—द्रव्यके प्रति एकत्व तो उनमें पाया ही जाता है ?

समाधान—इन अनन्तोंमें यदि द्रव्यके प्रति एकत्व पाया जाता है तो रहा आवे, परंतु इतने मात्रसे इन अनन्तोंमें अन्य अन्य प्रकारसे आवे हुए आनन्त्यके प्रति एकत्व नहीं हो सकता है।

लोकके मध्यसे आकाश-प्रदेशोंकी एक श्रेणीको देखने पर उसका अन्त नहीं पाया जाता है, इसलिये उसे एकानन्त कहते हैं। द्रव्यभेदका आश्रय लेकर स्थित द्रव्यानन्तमें यह एकानन्त अन्तर्भूत नहीं होता है, क्योंकि, यह एकानन्त एक आकाशद्रव्यका अन्त नहीं दिखाई देनेके कारण उसका आश्रय लेकर स्थित है, जैसे अपार समुद्र, अथाह जल इत्यादि। लोकके मध्यसे आकाश प्रदेशपंक्तिको दो दिशाओंमें देखने पर उसका अन्त नहीं पाया जाता है, इसलिये उसे उभयानन्त कहते हैं। आकाशको प्रतररूपसे देखने पर उसका अन्त नहीं पाया जाता है, इसलिये उसे विस्तारानन्त कहते हैं। आकाशको घनरूपसे देखने पर उसका अन्त नहीं पाया जाता है, इसलिये उसे सर्वानन्त कहते हैं। आगम और नोआगमकी अपेक्षा भावानन्त दो प्रकारका है। अनन्तविषयक शास्त्रको जाननेवाले और वर्तमानमें उसके उपयोगसे उपयुक्त जीवको आगमभावानन्त कहते हैं। त्रिकालजात अनन्त पर्यायोंसे परिणत जीवादि द्रव्य नोआगमभावानन्त है।

शंका—इन ग्यारह प्रकारके अमन्तोंमेंसे प्रकृतमें किस अनन्तसे प्रयोजन है ?

समाधान—प्रकृतमें गणनानन्तसे प्रयोजन है।

‘मिच्छादिद्वी केवडिया’ इदि सिस्सेण पुच्छिदे ‘अणंता’ इदि पमाणपरूवणादो जाणि-
ज्जदि। ण च सेस-अणंताणि पमाणपरूवयाणि तत्थ तधादंसणादो। जदि गणणाणंतेण पगदं
सेस-दसविध-अणंतपरूवणं किमट्ठं कीरदे ? वुच्चदे—

अवगयणिवारणट्ठं पयदस्स परूवणाणिमित्तं च ।

संसयविणासणट्ठं तच्चत्थवधारणट्ठं च’ ॥ १२ ॥

उत्तं च पुव्वाइरिएहि—

जत्थ बहू जाणेज्जो अपरिमिदं तत्थ णिक्खिवे सूरी ।

जत्थ बहू अ ण जाणइ चउत्थवो तत्थ णिक्खिवो’ ॥ १३ ॥

अथवा णिक्खिवेविसिट्ठमेदं वण्णिज्जमाणं वत्तारस्सुप्पथोत्थाणं कुज्जा इदि
णिक्खिवो कीरदे । तथा चोक्तम्—

प्रमाण-नयनिक्षेपैर्योऽर्थो नाभिसमीक्ष्यते ।

युक्तं चायुक्तवद् भाति तस्यायुक्तं च युक्तवत् ॥ १४ ॥

शंका— यह कैसे जाना जाता है कि प्रकृतमें गणनानन्तसे प्रयोजन है ?

समाधान— ‘मिथ्यादृष्टि जीव कितने हैं’ इसप्रकार शिष्यके द्वारा पूछने पर ‘अनन्त
हैं’ इत्यादि रूपसे प्रमाणका प्ररूपण करनेसे जाना जाता है कि प्रकृतमें गणनानन्तसे प्रयोजन
है । इस गणनानन्तको छोड़कर शेष अनन्त प्रमाणके प्ररूपण करनेवाले नहीं हैं, क्योंकि, शेष
अनन्तोंमें गणनारूपसे कथन नहीं देखा जाता है ।

शंका— यदि प्रकृतमें गणनानन्तसे प्रयोजन है तो गणनानन्तको छोड़कर शेष दश
प्रकारके अनन्तोंका प्ररूपण यहां पर किसलिये किया है ?

समाधान— अप्रकृत विषयके निवारण करनेके लिये, प्रकृत विषयके प्ररूपण करनेके
लिये, संशयका विनाश करनेके लिये, और तत्त्वार्थका निश्चय करनेके लिये यहां पर सभी
अनन्तोंका कथन किया है ॥ १२ ॥

पूर्वाचार्योंने भी कहा है—

जहां जीवादि पदार्थोंके विषयमें बहुत जानना चाहे, वहां पर आचार्य सभीका निक्षेप
करे-न तथा जहां पर बहुत न जाने, तो वहां पर चार निक्षेप अवश्य करना चाहिये ॥ १३ ॥

अथवा निक्षेपके विना वर्णन किया गया यह विषय कदाचित् वक्ताको उन्मार्गमें ले
जावे, इसलिये यहां पर सभी अनन्तोंका निक्षेप किया है । कहा भी है—

प्रमाण, नय और निक्षेपोंके द्वारा जिस पदार्थकी समीक्षा नहीं की जाती है उसका
अर्थ युक्त होते हुए भी अयुक्तसा प्रतीत होता है और कभी अयुक्त होते हुए भी युक्तसा

ज्ञानं प्रमाणमित्याहुरुपायो न्यास उच्यते ।

नयो ज्ञातुरभिप्रायो युक्तितोऽर्थपरिग्रहः' ॥ १५ ॥

जं तं गणणाणंतं तं पि तिविहं, परिचाणंतं जुत्ताणंतं अणंताणंतमिदि । अणंता इदि सामण्णेण बुत्ते एदम्हि चेवाणंते मिच्छाइड्ढि-जीवा होंति इदरेसु अणंतेसु ण होंति त्ति ण जाणिज्जदे, अणंता इदि बहुवयणणिहेसादो । जत्थ तिण्णि वि अणंताणि अत्थि तस्स चैव अणंताणंतस्स गहणं होदि इदि चे ण, मिच्छाइड्ढीणं बहुत्तमवेक्खिय बहुवयणुप्पत्तीदो । अहवा तिण्णि वि अणंताणि सभेदे अस्सिउण अणंतवियप्पाणि । तत्थ एदस्स बहुत्तविवक्खाए बहुवयणं अण्णभेदस्स' णेदि ण जाणिज्जदे ? एत्थ परिहारो बुच्चदे— 'अणंताणंताहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि ण अवहिरंति कालेण ' त्ति ज्ञापकाद-वसीयते यथा अनन्तानन्ता मिथ्यादृष्टय इति, व्याख्यानतो विशेषप्रतिपत्तिरिति

प्रतीत होता है ॥ १४ ॥

विद्वान् पुरुष सम्यग्ज्ञानको प्रमाण कहते हैं, नामादिकके द्वारा वस्तुमें भेद करनेके उपायको न्यास या निक्षेप कहते हैं और ज्ञाताके अभिप्रायको नय कहते हैं । इसप्रकार युक्तिसे अर्थात् प्रमाण, नय और निक्षेपके द्वारा पदार्थका ग्रहण अथवा निर्णय करना चाहिये ॥ १५ ॥

गणनानन्त तीन प्रकारका है, परीतानन्त, युक्तानन्त और अनन्तानन्त ।

शंका—सूत्रमें 'अणंता' इसप्रकार मिथ्यादृष्टियोंका परिमाण सामान्यरूपसे कहा गया है, पर इतने कथन करनेमात्रसे अनन्तके तीन भेदोंमेंसे इसी अनन्तमें मिथ्यादृष्टि जीव अर्थात् मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण पाया जाता है दूसरे अनन्तोंमें नहीं, यह बात नहीं जानी जाती है, क्योंकि, सूत्रमें अनन्तके किसी भी भेदका उल्लेख न करके केवल उसका बहुवचनरूपसे निर्देश किया है । जहां पर तीनों अनन्त पाये जाते हैं वहां उसी अनन्तानन्तका ग्रहण होता है, सो भी नहीं है, क्योंकि, मिथ्यादृष्टि जीवोंके बहुत्वकी अपेक्षा करके अनन्त शब्दका बहुवचन प्रयोग बन सकता है । अथवा तीनों अनन्त अपने अपने भेदोंका आश्रय करके अनन्त विकल्परूप हैं । उनके इसी भेदकी विवक्षासे बहुवचन दिया है अन्य भेदकी अपेक्षासे नहीं, यह भी नहीं जाना जाता है ?

समाधान—आगे पूर्वोक्त शंकाका परिहार करते हैं—'मिथ्यादृष्टि जीव कालकी अपेक्षा अनन्तानन्त अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत नहीं होते हैं' इस शापक सूत्रसे जाना जाता है कि मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तानन्त होते हैं । अथवा, 'व्याख्यानसे

१ प्रतिषु 'प्रमाण नयं युक्तवत् । ज्ञानं प्रमाणं परिग्रहः' । इति एतेनैव पाठेनोक्तकारिकादयस्य सूचना प्राप्यते । दे. (सं. प. गा. १०-११)

२ प्रतिषु 'उपपण्णभेदस्स' इति पाठः ।

न्यायाद्वा ।

जं तं अणंताणंतं तं पि तिचिहं, जहण्णमुक्कस्सं मज्झिममिदि । तत्थ इमं होदि च्चि ण जाणिज्जदि जहण्णमणंताणंतं ण भवदि उक्कस्समणंताणंतं च भवदि ? 'जम्हि जम्हि अणंताणंतयं मग्गिज्जदि तम्हि तम्हि अजहण्णमणुक्कस्स-अणंताणंतस्सेव गहणं' इदि परियम्मवयणादो जाणिज्जदि अजहण्णमणुक्कस्स-अणंताणंतस्सेव गहणं होदि च्चि । तं पि अणंताणंतवियप्पमत्थि च्चि इमं होदि च्चि ण जाणिज्जदि ? जहण्णअणंताणंतादो अणंताणि वग्गणट्ठाणाणि उवरि अब्भुस्सरिऊण उक्कस्स-अणंताणंतादो अणंताणि वग्गण-ट्ठाणाणि हेट्ठा ओसरिऊण अंतरे जिणदिट्ठभावो रासी घेत्तव्वो । अहवा तिण्णिवारवग्गिद-संवग्गिदरासीदो अणंतगुणो छद्दव्वपक्खिचरसीदो अणंतगुणहीणो मिच्छाद्दृष्टिरासी होदि । को तिण्णिवारवग्गिदसंवग्गिदरासी ? उच्चदे— जहण्णमणंताणंतं विरलेऊण एक्केक्कस्स रूवस्स

विशेषकी प्रतिपत्ति होती है' ऐसा न्याय है जिससे भी जाना जाता है कि मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तानन्त होते हैं ।

ऊपर जो अनन्तानन्त कह आये हैं वह भी तीन प्रकारका है, जघन्य अनन्तानन्त, उत्कृष्ट अनन्तानन्त और मध्यम अनन्तानन्त ।

शंका — उन तीनों अनन्तानन्तोंमेंसे यहां पर जघन्य अनन्तानन्त नहीं होता है और उत्कृष्ट अनन्तानन्त होता है, ऐसा कुछ भी नहीं जाना जाता है ?

समाधान— 'जहां जहां अनन्तानन्त देखा जाता है वहां वहां अजघन्यानुत्कृष्ट अर्थान् मध्यम अनन्तानन्तका ही ग्रहण होता है' इस परिकर्मके वचनसे जाना जाता है कि प्रकृतमें अजघन्यानुत्कृष्ट अर्थान् मध्यम अनन्तानन्तका ही ग्रहण है ।

शंका— वह मध्यम अनन्तानन्त भी अनन्तानन्त विकल्परूप है, इसलिये उनमेंसे यहां कौनसा विकल्प लिया है, इस बातका केवल मध्यम अनन्तानन्तके कथन करनेसे ज्ञान नहीं होता है ?

समाधान— जघन्य अनन्तानन्तसे अनन्त वर्गस्थान ऊपर जाकर और उत्कृष्ट अनन्तानन्तसे अनन्त वर्गस्थान नीचे आकर मध्यमें जिनेन्द्रदेवके द्वारा यथादृष्ट राशि यहां पर अनन्तानन्त पदसे ग्रहण करनी चाहिये । अथवा, जघन्य अनन्तानन्तके तीनवार वर्गित-संवर्गित करने पर जो राशि उत्पन्न होती है उससे अनन्तगुणी और छह द्रव्योंके प्रक्षिप्त करने पर जो राशि उत्पन्न होती है उससे अनन्तगुणी हीन मध्यम अनन्तानन्तप्रमाण मिथ्यादृष्टि जीवोंकी राशि है ।

शंका— तीन बार वर्गितसंवर्गित राशि कौनसी है ?

१ ति. प. पत्र ५३. यत्रानन्तानन्तं मार्गणं तत्राजघन्योत्कृष्टानन्तानन्तं प्राक्षम् । द. रा. वा. ३. ३८,

जहणमणंताणंतं दाऊण वग्गिदसंवग्गिदं काऊणुप्पणमहारासिं दुप्पडिरासिं काऊण
तत्थेक्करासिं विरलेऊण अवरं महारासिपमाणं रूवं पडि दाऊण वग्गिदसंवग्गिदं काऊण
पुणो उट्ठिदमहारासिं दुप्पडिरासिं काऊण तत्थेक्करासिपमाणं विरलेऊण अवरमहारासिं
विरलणरासिरूवं पडि दाऊण अण्णोण्णवभासे कदे तिण्णिवारवग्गिदसंवग्गिदरासीं णाम ।

समाधान—जघन्य अनन्तानन्तका विरलन करके और विरलित राशिके प्रत्येक
एकके ऊपर जघन्य अनन्तानन्तको देयरूपसे देकर उनके परस्पर वर्गितसंवर्गित करने पर
जो महाराशि उत्पन्न हो उसकी दो पंक्ति करनी चाहिये, अर्थात् तत्प्रमाण राशिको दो स्थानों-
पर स्थापित करना चाहिये । उनमेंसे एक राशिका विरलन करके और उस विरलित राशिके
प्रत्येक एकके ऊपर दूसरी पंक्तिमें स्थापित महाराशिको देयरूपसे देकर और उनके परस्पर
वर्गितसंवर्गित करने पर जो महाराशि उत्पन्न हो उसकी फिरसे दो पंक्ति करनी चाहिये ।
उनमेंसे एक राशिका विरलन करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर दूसरी पंक्तिमें
स्थापित महाराशिको देयरूपसे देकर उनके परस्पर गुणा करने पर जो महाराशि उत्पन्न होती
है उसे तीनवार वर्गितसंवर्गित राशि कहते हैं ।

उदाहरण (बीजगणितसे)— जघन्य अनन्तानन्त=क

$$\begin{aligned} \text{एकवार वर्गितसंवर्गित राशि} &= \text{क} \\ \text{दोवार } ,, &= \binom{\text{क}}{\text{क}} = \text{क} \times \text{क} = \text{क}^2 \\ \text{तीनवार } ,, &= \binom{\text{क}+1}{\text{क}} = \binom{\text{क}+1}{\text{क}} \times \text{क} \\ &= \frac{\text{क}+1+\text{क}}{\text{क}} = \text{क} \end{aligned}$$

(अंकगणितसे)— जघन्य अनन्तानन्त=२

$$\text{एकवार } २ = ४; \text{ दोवार } ४ = २५६; \text{ तीनवार } २५६$$

१ अवराणंताणंतं तिप्पडिरासिं करिणु विरलादिं । तिसळागं च समाणिय लद्धेदे पविस्सवेदव्वा ॥
त्रि. सा. ४८.

एसो सव्वजीवरासीदो किंचूणमिच्छादिद्विरासीदो य अणंतगुणहीणो त्ति कथं जाणिज्जदि ?
 युच्चदे— जहणपरित्ताणंतस्स अद्दच्छेदणामुवरि तस्सेव वग्गसलागाओ रूवाहियाओ
 पक्खित्ते जहण-अणंताणंतस्स वग्गसलागा भवंति । जहणपरित्ताणंतस्स अद्दच्छेदणाहि
 दुगुणिदाहि जहणपरित्ताणंतं गुणिदे जहणमणंताणंतस्स अद्दच्छेदणयसलागा हवंति ।
 एदाओ च जहणपरित्ताणंतादो असंखेज्जगुणाओ तस्सेव उवरिमवग्गादो असंखेज्ज-
 गुणहीणाओ । एदाणमुवरि जहण-अणंताणंतस्स वग्गसलागाओ जहणपरित्ताणंतस्स
 अद्दच्छेदणाहितो विसेसाहियाओ पक्खित्ते पढमवारवग्गिदसंवग्गिदरासिस्स वग्गसलागा
 भवंति । जहण-अणंताणंतस्स अद्दच्छेदणाओ जहण-अणंताणंतेण गुणिदे पढमवार-
 वग्गिदसंवग्गिदरासिस्स अद्दच्छेदणयसलागा भवंति । एदाओ जहण-अणंताणंतादो

(यदि हम २५६ को २५६ से इतने ही बार गुणा करें तो जो संख्या उत्पन्न होगी वह ६१७ अंकवाली होगी । इसप्रकार इकाईरूप छोटीसी २ संख्याको तीनबार वर्गितसंवर्गित करने पर ६१७ अंकवाली महासंख्या उत्पन्न होती है । इस परसे किसी भी मूलराशिसे उत्पन्न हुई त्रिवार वर्गितसंवर्गित राशिके विस्तारका अनुमान लगाया जा सकता है ।)

शंका— तीनबार वर्गितसंवर्गित करनेसे उत्पन्न हुई यह महाराशि संपूर्ण जीवराशिसे और संपूर्णजीवराशिसे कुछ कम (द्वितीयादि शेष तेरह गुणस्थानसंबन्धी राशि और सिद्ध-राशि प्रमाण कम) मिथ्यादृष्टि जीवराशिसे अनन्तगुणी हीन है, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— जघन्य परीतानन्तके अर्धच्छेदोंमें उसीकी अर्थात् जघन्य परीतानन्तकी एक अधिक वर्गशलाकाएं मिला देने पर जघन्य अनन्तानन्तकी वर्गशलाकाएं उत्पन्न होती हैं । तथा जघन्य परीतानन्तके द्विगुणित अर्धच्छेदोंसे जघन्य परीतानन्तके गुणित करने पर जघन्य अनन्तानन्तकी अर्धच्छेदशलाकाएं होती हैं । ये जघन्य अनन्तानन्तकी अर्धच्छेदशलाकाएं जघन्य परीतानन्तसे असंख्यातगुणी हैं और उसीके अर्थात् जघन्य परीतानन्तके उपरिम वर्गसे असंख्यातगुणी हीन हैं । इन जघन्य अनन्तानन्तकी अर्धच्छेद शलाकाओंमें, जो जघन्य परीतानन्तकी अर्धच्छेदशलाकाओंसे अधिक हैं, ऐसी जघन्य अनन्तानन्तकी वर्गशलाकाएं मिला देने पर प्रथमवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशलाएं होती हैं । जघन्य अनन्तानन्तके अर्धच्छेदोंको जघन्य अनन्तानन्तसे गुणित करने पर प्रथमवार वर्गितसंवर्गित राशिकी अर्धच्छेदशलाकाएं

तव्वग्गे पुण जायह... णंताणंतं लहु तं च तिस्सुत्ती । वग्गसु तह न तं होह णंतखेवे खिवसु छ इमे ॥ क.
 मं. ५, ८४.

१ वग्गिदवारा वग्गसलागा रासिस्स अद्दच्छेदस्स । अद्विदवारा वा खलु दलवारा होति अद्दच्छिदी ॥
 वि. सा. ७६.

२ विरलिज्जमाणरासिं दिण्णस्सद्विच्छिदीहिं संगुणिदे । अद्दच्छेदा होति हु सव्वत्थुप्पण्णरासिस्स ॥
 वि. सा. १०७.

अणंतगुणाओ तस्सेव उवरिमवग्गादो अणंतगुणहीणाओ । एदाणमुवरि पढमवारवग्गिदसं-
वग्गिदरासिस्स वग्गसलागाओ पक्खित्ते विदियवारवग्गिदसंवग्गिदरासिस्स वग्गसलागा
हवंति । पढमवारवग्गिदसंवग्गिदरासिस्स अद्धच्छेदणाहि पढमवारवग्गिदसंवग्गिदरासि
गुणिदे विदियवारवग्गिदसंवग्गिदरासिस्स अद्धच्छेदणयसलागाओ भवंति । एदाओ पढम-
वारवग्गिदसंवग्गिदरासीदो अणंतगुणाओ तस्सेव उवरिमवग्गणादो अणंतगुणहीणाओ ।
एदाणमुवरि विदियवारवग्गिदसंवग्गिदरासिस्स वग्गसलागाओ पक्खित्ते तदियवारवग्गि-

होती हैं । ये प्रथमवार वर्गितसंवर्गित राशिकी अर्धच्छेदशलाकाएं जघन्य अनन्तानन्तसे
अनन्तगुणी हैं और उसीके अर्थात् जघन्य अनन्तानन्तके उपरिम वर्गसे अनन्तगुणी हीन हैं ।
इन प्रथमवार वर्गितसंवर्गित राशिकी अर्धच्छेदशलाकाओंमें प्रथमवार वर्गितसंवर्गित
राशिकी वर्गशलाकाएं मिला देने पर दूसरीवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशलाकाएं होती
हैं । तथा प्रथमवार वर्गितसंवर्गित राशिकी अर्धच्छेदशलाकाओंके द्वारा प्रथमवार वर्गितसं-
वर्गित राशिकी गुणित करने पर दूसरीवार वर्गितसंवर्गित राशिकी अर्धच्छेदशलाकाएं होती
हैं । ये दूसरीवार वर्गितसंवर्गित राशिकी अर्धच्छेदशलाकाएं प्रथमवार वर्गितसंवर्गित राशिसे
अनन्तगुणी हैं, और उसीके, अर्थात् प्रथमवार वर्गितसंवर्गित राशिके उपरिम वर्गसे अनन्त-
गुणी हीन हैं । इन दूसरीवार वर्गितसंवर्गित राशिकी अर्धच्छेदशलाकाओंमें दूसरीवार वर्गित-
संवर्गित राशिकी वर्गशलाकाएं मिला देने पर तीसरीवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशला-
काएं होती हैं ।

विशेषार्थ— जो राशि विरलन-देयक्रमसे उत्पन्न होती है उसके अर्धच्छेद विरलित-
राशिकी देयराशिके अर्धच्छेदोंसे गुणा करने पर आते हैं । तथा उसकी वर्गशलाकाएं विरलित-
राशिके अर्धच्छेदोंमें देयराशिके अर्धच्छेदोंके अर्धच्छेद या वर्गशलाकाएं मिला देने पर होती
हैं । गणितके इस नियमके अनुसार जघन्य परीतानन्तके अर्धच्छेदोंसे जघन्य परीतानन्तको गुणा
कर देने पर जघन्य युक्तानन्तके अर्धच्छेद और जघन्य परीतानन्तके अर्धच्छेदोंमें उसीकी वर्ग-
शलाकाएं मिला देने पर जघन्य युक्तानन्तकी वर्गशलाकाएं उत्पन्न होंगी । फिर भी प्रकृतमें जघन्य
अनन्तानन्तकी वर्गशलाकाएं और अर्धच्छेद लाना है । परंतु जघन्य अनन्तानन्त जघन्य युक्ता-
नन्तके उपरिम वर्गरूप है, और वर्गसे उपरिम वर्गकी वर्गशलाकाओं और अर्धच्छेदोंको
लानेके लिये यह नियम है कि विवक्षित वर्गके अर्धच्छेदोंसे उपरिम वर्गके अर्धच्छेद दूने और
विवक्षित वर्गकी वर्गशलाकाओंसे उपरिम वर्गकी वर्गशलाकाएं एक अधिक होती हैं । इसलिये
जघन्य युक्तानन्तके अर्धच्छेदोंको दूना कर देने पर जघन्य अनन्तानन्तके अर्धच्छेद और जघन्य
युक्तानन्तकी वर्गशलाकाओंमें एक और मिला देने पर जघन्य अनन्तानन्तकी वर्गशलाकाएं

१ विरलितरासिच्छेदा दिण्णद्धच्छेदसम्मिळिदा । वग्गसलागपमाणं होति समुप्पण्णरासिस्स ॥ ति. सा. १०८.

होंगी। इस संपूर्ण व्यवस्थाको ध्यानमें रखकर यह कहा गया है कि जघन्य परीतानन्तके अर्धच्छेदोंमें उसीकी एक अधिक वर्गशलाकाएं मिला देने पर जघन्य अनन्तानन्तकी वर्गशलाकाएं और जघन्य परीतानन्तकी द्विगुणित अर्धच्छेदशलाकाओंसे जघन्य परीतानन्तको गुणित कर देने पर जघन्य अनन्तानन्तकी अर्धच्छेदशलाकाएं होती हैं। इसीप्रकार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशलाकाएं और अर्धच्छेद लानेकी पद्धतिके अनुसार प्रथम, द्वितीय और तृतीयवार वर्गितसंवर्गित राशिके अर्धच्छेद और वर्गशलाकाओंके संबन्धमें भी समझ लेना चाहिये।

उदाहरण (बीजगणितसे)—

जघन्य परीतानन्तको वर्गितसंवर्गित करनेसे जघन्य युक्तानन्त उत्पन्न होता है। तथा जघन्य युक्तानन्तके वर्गप्रमाण जघन्य अनन्तानन्त है।

$$\begin{array}{l} \text{अ} \\ २ \\ \text{मान लो जघन्य परीतानन्तका मान } २ \end{array}$$

$$\begin{array}{l} \text{अ} \\ २ + \text{अ} + १ \\ २ \\ \text{परीतानन्तकी वर्गितसंवर्गित राशिके} \\ \text{उपरिम वर्ग प्रमाण जघन्य अनन्तानन्त} \end{array} = २ = २ \text{ (मान लो)}$$

$$\begin{array}{l} \text{क} \\ २ + \text{क} \\ २ \\ \text{अनन्तानन्त प्रथमवार वर्गितसंवर्गित} \end{array} = २ = २ \text{ (मान लो)}$$

$$\begin{array}{l} \text{ख} \\ २ + \text{ख} \\ २ \\ \text{द्वितीयवार वर्गितसंवर्गित} \end{array} = २ = २ \text{ (मान लो)}$$

$$\begin{array}{l} \text{ग} \\ २ + \text{ग} \\ २ \\ \text{तृतीयवार वर्गितसंवर्गित} \end{array} = २$$

२ संख्यासे लेकर जितनीवार वर्ग करनेसे विवक्षित राशि उत्पन्न होती है उतनी उस वर्गराशिकी वर्गशलाकाएं होती हैं। जैसे ४ की वर्गशलाका १ और १६ की २ होती हैं, क्योंकि, २ का एकवार वर्ग करनेसे ४ और २ वार वर्ग करनेसे १६ उत्पन्न होते हैं। तथा विवक्षित राशिको जितनीवार आधा आधा करते हुए एक शेष रहे उतने उस राशिके

अर्धच्छेद होते हैं; जैसे १६ के अर्धच्छेद ४ होते हैं। बीजगणितसे २ राशिके अर्धच्छेद २ होंगे और वर्गशलाका अ होगी।

दसंवग्गिदरासिस्स वग्गसलागा भवन्ति । एसो वग्गसलागरासी पढमवारवग्गिदसंवग्गिदरासीदो उवरि एग्गमवि वग्गद्वानं ण च वड्ढिदो, तेणेदेसिं दोण्हं रासीणं वग्गसलागाओ सरिसाओ । एदाणं च वग्गसलागाओ जहण्णपरित्ताणंतादो असंखेज्जगुणाओ । जदि एसो रासी सव्वजीववग्गसलागरासिणा सरिसो हवदि तो तिण्णिवारवग्गिदसंवग्गिदरासिणा सव्वजीवरासी वि सरिसो होज्ज; ण च एवं । तं कथं ? ' जहण्ण-अणंताणंतं वग्गिज्जमाणे जहण्ण-अणंताणंतस्स हेट्ठिमवग्गणद्वानेहिंतो उवरि अणंतगुणवग्गद्वानाणि गंतूण सव्वजीवरासिवग्गसलागा उत्पज्जदि ' त्ति परियम्मे वुत्तं । गुणगारो पि जम्हि जम्हि अणंतयं मग्गिज्जदि तम्हि तम्हि अजहण्ण-अणुक्कस्साणंताणंतयं धेत्तव्वं । ण च तदियवारवग्गिद-

अब आगे इन सब राशियोंकी वर्गशलाकाएं और अर्धच्छेद लिखे जाते हैं—

	ज. प. अ.	ज. अ. अ.	प्र. व. सं.	द्वि. व. सं.	तृ. व. सं.
		अ	क	ख	ग
	अ	२ + अ + १	२ + क	२ + ख	२ + ग
प्रमाण	२	२	२	२	२
		अ	क	ख	ग
वर्ग श.	अ	२ + अ + १	२ + क	२ + ख	२ + ग
		अ	क	ख	ग
अर्धच्छेद	२	२	२	२	२

यह तीसरीवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशलाकाराशि प्रथमवार वर्गितसंवर्गित राशिसे ऊपर एक भी वर्गस्थानसे वृद्धिको प्राप्त नहीं हुई है, अर्थात् प्रथमवार वर्गितसंवर्गित राशिके उपरिम वर्गके भीतर ही तीसरीवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशलाकाराशि आती है, इसलिये इन दोनों राशियोंकी, अर्थात् प्रथमवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशलाकाएं और तृतीयवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशलाकाओंकी वर्गशलाकाएं समान हैं, जो वर्गशलाकाएं जघन्य परीतानन्तसे असंख्यातगुणी हैं। यदि यह तृतीयवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशलाकाराशि संपूर्ण जीवोंकी वर्गशलाकाराशिके समान होती है, ऐसा मान लिया जावे, तो तीनवार वर्गितसंवर्गितराशिके समान संपूर्ण जीवराशि भी हो जावे। परंतु ऐसा है नहीं।

शंका—यह कैसे ?

समाधान — ' जघन्य अनन्तानन्तके उत्तरोत्तर वर्ग करने पर जघन्य अनन्तानन्तके अधस्तन वर्गस्थानोंसे ऊपर अनन्तगुणे वर्गस्थान जाकर संपूर्ण जीवराशिकी वर्गशलाकाएं उत्पन्न होती हैं, ' इसप्रकार परिकर्ममें कहा है। गुणकार भी जहां जहां अनन्तरूप देखनेमें आता है वहां वहां अजघन्यानुत्कृष्ट अर्थात् मध्यम अनन्तानन्तरूप गुणकारका ग्रहण करना

संवर्गिदरासिवर्गसलागाओ हेष्टिमवर्गगणद्वानेहिंतो उवरि परियम्म-उत्त-अणंतगुणवर्गगण-
द्वानाणि गंतूणुप्पण्णाओ, किंतु हेष्टिमवर्गगणद्वानादो उवरि सादिरेयजहण्ण-परिचाणंत-
गुणमद्वानं गंतूणुप्पण्णाओ । केण कारणेण ? जहण्णपरिचाणंतस्स अद्धच्छेदणाहिंतो
विसेसाहियाहि जहण्ण-अणंताणंतस्स वर्गसलागाहि तदियवारवर्गिदसंवर्गिदरासिवर्ग-
सलागाणं वर्गसलागाओ हेष्टिमअद्वानेणूणाओ अवहिरिज्जमाणे सादिरेयजहण्णपरिचाणंत-
मागच्छदि ति । ण च जहण्ण-अणंताणंतादो हेष्टिम-अद्वानं पडुच्च सादिरेयजहण्णपरि-
चाणंतगुणं गंतूण सव्वजीवरासिवर्गसलागाओ उप्पण्णाओ, किंतु अणंताणंतगुणं गंतूण
सव्वजीवरासिवर्गसलागाओ । कुदो ? 'अणंताणंतविसए अजहण्णमणुकस्स-अणंताणंतेणव
गुणगारेण भागहारेण वि होदव्वं' इदि परियम्मवयणादो । ण च एदस्स जहण्णपरि-
चाणंतादो विसेसाहियस्स असंखेज्जत्तमसिद्धं, संते वए णडुंतस्स^१ अणंतत्तविरोहादो । ण

चाहिये । परंतु तृतीयवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशलाकाएं जघन्य अनन्तानन्तके अधस्तन
वर्गस्थानसे ऊपर परिकर्मसूत्रमें कहे गये अनन्तगुणे वर्गस्थान जाकर नहीं उत्पन्न होती हैं,
किंतु जघन्य अनन्तानन्तके अधस्तन वर्गस्थानोंसे ऊपर कुछ अधिक जघन्यपरीतानन्तगुणे
वर्गस्थान जाकर उत्पन्न होती हैं । इससे प्रतीत होता है कि संपूर्ण जीवराशिकी वर्गशलाका-
ओंसे तीनवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशलाकाएं अनन्तगुणी न्यून हैं ।

शंका — ऐसा किस कारणसे है ?

समाधान—जो कि जघन्य परीतानन्तके अर्धच्छेदोंसे अधिक हैं ऐसी जघन्य अनन्ता-
नन्तकी वर्गशलाकाओंके द्वारा जघन्य अनन्तानन्तके अधस्तन वर्गस्थानसे न्यून तीसरीवार
वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशलाकाओंकी वर्गशलाकाएं अपहृत करने पर कुछ अधिक जघन्य
परीतानन्त आता है । परंतु जघन्य अनन्तानन्तके अधस्तन वर्गस्थानोंकी अपेक्षा जघन्य
अनन्तानन्तसे कुछ अधिक जघन्य परीतानन्तगुणे वर्गस्थान जाकर संपूर्ण जीवराशिकी-
वर्गशलाकाएं नहीं उत्पन्न होती हैं, किंतु जघन्य अनन्तानन्तसे अनन्तानन्तगुणे वर्गस्थान जाकर
संपूर्ण जीवराशिकी वर्गशलाकाएं उत्पन्न होती हैं । क्योंकि, 'अनन्तानन्तके विषयमें गुणकार
और भागहार अजघन्यानुत्कृष्ट अर्थात् मध्यम अनन्तानन्तरूप ही होना चाहिये' इसप्रकार
परिकर्मसूत्रका वचन है । ऊपर जो जघन्य परीतानन्तसे विशेषाधिक कह आये हैं वह
विशेषाधिक असंख्यानरूप है यह बात असिद्ध नहीं है, क्योंकि, व्यय होने पर समाप्त
होनेवाली राशिकी अनन्तरूप माननेमें विरोध आता है । इसप्रकार कथन करनेसे अर्धपुद्गल

१ तस्मिन्नेकवारं वर्गिते द्विकवारानन्तस्य जघन्यमुत्पद्यते । ततोऽनन्तस्थानानि गत्वा वर्गशलाकाः । वि. सा.
गा. ६९ टीका । तस्मिन्नेकवारं वर्गिते जघन्यद्विकवारानंतमुत्पद्यते । ततः अनंतानंतवर्गस्थानानि गत्वा जीवराशेर्वर्गशलाका-
राशिः । गो. जी. जी. प्र. टी. (पर्याप्तिप्ररूपणा) ।

२ प्रतिपु ' णिद्धंतस्स ' इति पाठः ।

च अद्भुतगुणपरिप्रेक्ष्येण वियहिचारो, उवयारेण तस्स आणंतियादो । को वा छद्भव-
पक्खित्तरासी ? बुच्चदे— तिण्णिवारवग्गिदसंवग्गिदरासिम्हि—

सिद्धा णिगोदजीवा वणप्फदी कालो य पोग्गला चेय ।

सव्वमलोगागासं छप्पेदे णंतपक्खेवा^१ ॥ १६ ॥

एदे छप्पक्खेवपक्खित्ते छद्भवपक्खित्तरासी होदि । एदस्स अजहण्णमणुक्कस्स-
अणंतानंतयस्स जत्तियाणि रूवाणि तत्तियमेत्तो^२ मिच्छाइट्ठिरासी । एदं कथं णच्चदि त्ति
भण्णिदे अणंता इदि वयणादो । एदं वयणमसच्चत्तणं किं ण अल्लियदि त्ति भण्णिदे
असच्चकारणुम्भुक्कजिणवयणकमलविणिग्गयत्तादो । ण च पमाणपडिग्गहिओ पयत्थो
पमाणंतरेण परिक्खिज्जदि, अवट्ठणादो ।

परिवर्तनके साथ व्याभिचार हो जायगा सो भी बात नहीं है, क्योंकि, अर्धपुद्गलपरिवर्तन
कालको उपचारसे अनन्तरूप माना है ।

शंका—जिसमें छह द्रव्य प्रक्षिप्त किये गये हैं वह राशि कौनसी है ?

समाधान—तीनवार वर्गितसंवर्गित राशिमें—सिद्ध, निगोदजीव, वनस्पतिकायिक,
पुद्गल, कालके समय और अलोकाकाश ये छहों अनन्त राशियां मिला देना चाहिये ॥ १६ ॥

प्रक्षिप्त करने योग्य इन छह राशियोंके मिला देने पर छह द्रव्य प्रक्षिप्त राशि
होती है । इसप्रकार तीनवार वर्गितसंवर्गित राशिसे अनन्तगुणे और छह द्रव्य प्रक्षिप्त
राशिसे अनन्तगुणे हीन इस मध्यम अनन्तानन्तकी जितनी संख्या होती है तन्मात्र मिथ्यादृष्टि-
जीवराशि है ।

शंका—मिथ्यादृष्टिराशि इतनी है, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—सूत्रमें 'अणंता' ऐसा बहुवचनान्त पद दिया है, जिससे जाना जाता
है कि मिथ्यादृष्टिराशि मध्यम अनन्तानन्तप्रमाण होती है ।

शंका—यह वचन असत्यपनेको क्यों नहीं प्राप्त हो जाता है ?

समाधान—असत्य बोलनेके कारणोंसे रहित जिनेन्द्रदेवके मुखकमलसे निकले हुए
ये वचन हैं, इसलिये इन्हें अप्रमाण नहीं माना जा सकता । जो पदार्थ प्रमाणप्रसिद्ध है उसकी
दूसरे प्रमाणोंके द्वारा परीक्षा नहीं की जाती है, क्योंकि, वह पदार्थ प्रमाणसे
अवस्थित है ।

१ ति. प. पत्र ५३. सिद्धा णिगोदसाहियवणप्फदिपोग्गलपमा अणंतगुणा । काल अलोगागासं छप्पेदेणंत-
इवस्सेवा ॥ त्रि. सा. ४९. सिद्धा निगोदजीवा वणस्सई काल पुग्गला चेव । सव्वमलोगनहं पुण तिवाग्गिउं केवल.
पग्गि ॥ क. प्रं. ४, ८५. २ प्रतिषु 'तत्तियाणिमेत्तो' इति पाठः ।

अणंताणंताहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि ण अवहिरंति कालेण ॥ ३ ॥

किमद्दं खेत्तपमाणमइकम्म कालपमाणं वुच्चदे ? ' जं धूलं अप्पवण्णणीयं तं पुव्वमेव भाणियव्वं ' इदि णायादो । कथं कालपमाणादो खेत्तपमाणं बहुवण्णणिज्जं ? वुच्चदे— खेत्तपमाणे लोको परूवेदव्वो । सो वि सेट्ठिपरूवणाए विणा ण जाणिज्जदि त्ति सेठी परूवेदव्वा । सा वि रज्जुपरूवणाए विणा ण जाणिज्जदि त्ति रज्जू परूवेदव्वा । रज्जू वि सगच्छेदणाहि विणा ण जाणिज्जदि त्ति रज्जुच्छेदणा परूवेदव्वा । ताओ वि दीव-सागरपरूवणाए विणा ण जाणिज्जंति त्ति दीवसागरा परूवेदव्वा त्ति । ण च कालपमाणे एवं महंती परूवणा अत्थि, तदो कालादो खेत्तं सुहुममिदि जाणिज्जदे । के वि आइरिया एवं भणंति बहुवेहि पदेसेहि उवचिदं सुहुममिदि । उत्तं च—

(सुहुमो य हवदि कालो तत्तो य सुहुमदरं हवदि खेत्तं ।

अंगुल-असंखभागे हवंति कप्पा असंखेज्जा' ॥ १७ ॥ इदि ॥

कालकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तानन्त अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत नहीं होते हैं ॥ ३ ॥

शंका— क्षेत्रप्रमाणको उल्लंघन करके कालप्रमाणका कथन क्यों किया जा रहा है ?

समाधान— ' जो स्थूल और अल्पवर्णनीय होता है उसका पहले ही कथन करना चाहिये ' इस न्यायके अनुसार पहले कालप्रमाणका कथन किया जा रहा है ।

शंका— कालप्रमाणकी अपेक्षा क्षेत्रप्रमाण बहुवर्णनीय कैसे है ?

समाधान— क्षेत्रप्रमाणमें लोक प्ररूपण करने योग्य है । उसका भी जगच्छेणीके प्ररूपणके विना ज्ञान नहीं हो सकता है, इसलिये जगच्छेणीका प्ररूपण करना चाहिये । जगच्छेणीका भी रज्जुके प्ररूपण किये विना ज्ञान नहीं हो सकता है, इसलिये रज्जुका प्ररूपण करना चाहिये । रज्जुका भी उसके अर्धच्छेदोंका कथन किये विना ज्ञान नहीं हो सकता है, इसलिये रज्जुके छेदोंका प्ररूपण करना चाहिये । रज्जुके छेदोंका भी द्वीपों और सागरोंके प्ररूपणके विना ज्ञान नहीं हो सकता है, इसलिये द्वीपों और सागरोंका प्ररूपण करना चाहिये । परंतु कालप्रमाणमें इसप्रकार बड़ी प्ररूपणा नहीं है, इसलिये कालप्रमाणकी प्ररूपणाकी अपेक्षा क्षेत्रप्रमाणकी प्ररूपणा अतिसूक्ष्मरूपसे वर्णित है, यह बात जानी जाती है ।

कितने ही आचार्य ऐसा कथन करते हैं कि जो बहुत प्रदेशोंसे उपचित होता है वह सूक्ष्म होता है । कहा भी है—

कालप्रमाण सूक्ष्म है, और क्षेत्रप्रमाण उससे भी सूक्ष्म है, क्योंकि, अंगुलके असंख्या-

१ सुहुमो य होइ कालो तत्तो सुहुमदरं हवइ खेत्तं । अंगुलपेटीमेरे ओसप्पिणीओ असंखेज्जा ॥ वि. मा. पृ. २४, गा. २१८,

एदं वक्खणं ण घडदे । कुदो ? खेत्तादो दब्बस्स परूवणपसंगादो । तं कधं ? एकम्हि दब्बंगुले अणंतपरमाणुपदेसेहि णिप्फण्णे एगं खेत्तंगुलमोगाहे, गणणं पडुच्च अणंताणि खेत्तंगुलाणि हंति त्ति ।

सुद्धमं तु हवदि खेत्तं तत्तो य सुद्धमदरं हवदि दब्बं ।

खेत्तंगुला अणंता एगे दब्बंगुले हंति ॥ १८ ॥ इदि ॥

कधं कालेण मिणिज्जंते मिच्छाइड्डी जीवा ? अणंताणंताणं ओसप्पिणि-उत्सप्पिणीणं समए ठवेदूण मिच्छाइड्डीरासिं च ठवेऊण कालम्हि एगो समयो मिच्छाइड्डीरासम्हि एगो जीवो अवहिरिज्जदि । एवमवहिरिज्जमाणे अवहिरिज्जमाणे सव्वे समया अवहिरिज्जंति, मिच्छाइड्डीरासी ण अवहिरिज्जदि । एत्थ चौदगो भणदि— मिच्छाइड्डीरासी अवहिरिज्जदु, सव्वे समया ण अवहिरिज्जंति त्ति । केण कारणेण ? कालमाहप्पपरूवयसुत्तदंसणादो । किं तं सुत्तं ? उच्चदे—

तथै भागमें असंख्यात कल्प होते हैं ॥ १७ ॥

परंतु उनका इसप्रकारका अध्ययान करना घटित नहीं होता है, क्योंकि, ऐसा मान लेने पर क्षेत्रप्ररूपणाके अनन्तर द्रव्यप्ररूपणाका प्रसंग प्राप्त हो जायगा ।

शंका—यह कैसे ?

समाधान—क्योंकि, अनन्त परमाणुरूप प्रदेशोंसे निष्पन्न एक द्रव्यांगुलमें अवगाहनाकी अपेक्षा एक क्षेत्रांगुल ही है, किंतु गणनाकी अपेक्षा अनन्त क्षेत्रांगुल होते हैं, इसलिये ' जो बहुत प्रदेशोंसे उपचित होता है वह सूक्ष्म होता है ' यह कहना ठीक नहीं है ।

क्षेत्र सूक्ष्म होता है और उससे भी सूक्ष्मतर द्रव्य होता है, क्योंकि, एक द्रव्यांगुलमें अनन्त क्षेत्रांगुल होते हैं ॥ १८ ॥

शंका—कालप्रमाणकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण कैसे निकाला जाता है ?

समाधान—एक ओर अनन्तानन्त अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके समयोंको स्थापित करके और दूसरी ओर मिथ्यादृष्टि जीवोंकी राशिको स्थापित करके कालके समयोंमेंसे एक एक समय और उसीके साथ मिथ्यादृष्टि जीवराशिके प्रमाणमेंसे एक एक जीव कम करते जाना चाहिये । इसप्रकार उत्तरोत्तर कालके समय और जीवराशिके प्रमाणको कम करते हुए चले जाने पर अनन्तानन्त अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके सब समय समाप्त हो जाते हैं, परंतु मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण समाप्त नहीं होता है ।

शंका—यहां पर शंकाकारका कहना है कि मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण भले ही समाप्त हो जाओ परंतु कालके संपूर्ण समय समाप्त नहीं हो सकते हैं, क्योंकि, मिथ्यादृष्टि जीवराशिके प्रमाणकी अपेक्षा कालके समयोंका प्रमाण बहुत अधिक है । इसप्रकारसे प्ररूपण करनेवाला सूत्र भी देखनेमें आता है । वह सूत्र कौनसा है इसप्रकार पूछने पर शंकाकार कहता है—

(धम्माधम्मागासा तिण्णि वि तुल्लाणि होंति थोत्राणि ।

वड्डीदु जीवपोग्गलकालागासा अणंतगुणा ॥ १९ ॥)

ण एस दोसो, अदीदकालगहणादो । जहा सव्वे लोए^१ पत्थो तिहा विहत्तो, अणागदो वट्टमाणो अदीदो चेदि । तत्थ अणिप्फण्णो अणागदो णाम । घडिज्जमाणो वट्टमाणो । णिप्फण्णो ववहारजोग्गो अदीदो णाम । तत्थ अदीदेण पत्थेण मिणिज्जंते सव्वबीजाणि । एत्थुवसंहारगाहा—

पत्थो तिहा विहत्तो अणागदो वट्टमाणतीदो य ।

एदेसु अदीदेण दु मिणिज्जदे सव्वबीजं तु ॥ २० ॥

तथा कालो वि तिविहो, अणागदो वट्टमाणो अदीदो चेदि । तत्थ अदीदेण मिणिज्जंते सव्वे जीवा । एत्थुवसंहारगाहा—

कालो तिहा विहत्तो अणागदो वट्टमाणतीदो य ।

एदेसु अदीदेण दु मिणिज्जदे जीवरासी दु ॥ २१ ॥

धर्मद्रव्य, अधर्मद्रव्य और लोकाकाश, ये तीनों ही समान होते हुए स्तोक हैं । तथा जीवद्रव्य, पुद्गलद्रव्य, कालके समय और आकाशके प्रदेश, ये उत्तरोत्तर वृद्धिकी अपेक्षा अनन्तगुणे हैं ॥ १९ ॥

समाधान--यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण निकालनेमें अतीत कालका ही ग्रहण किया है ।

जिसप्रकार, सब लोकमें प्रस्थ तीन प्रकारसे विभक्त है, अनागत, वर्तमान और अतीत । उनमेंसे जो निष्पन्न नहीं हुआ है वह अनागत प्रस्थ है, जो बनाया जा रहा है वह वर्तमान प्रस्थ है, और जो निष्पन्न हो चुका है तथा व्यवहारके योग्य है वह अतीत प्रस्थ है । उनमेंसे अतीत प्रस्थके द्वारा संपूर्ण बीज मापे जाते हैं । यहाँ पर इस विषयकी उपसंहाररूप गाथा कहते हैं—

प्रस्थ तीन प्रकारका है, अनागत, वर्तमान और अतीत । इनमेंसे अतीत प्रस्थके द्वारा संपूर्ण बीज मापे जाते हैं ॥ २० ॥

उसीप्रकार, काल भी तीन प्रकारका है, अनागत, वर्तमान और अतीत । उनमेंसे अतीत कालके द्वारा संपूर्ण जीवराशिका प्रमाण जाना जाता है । यहाँ पर उपसंहाररूप गाथा कहते हैं—

काल तीन प्रकारका है, अनागतकाल, वर्तमानकाल और अतीतकाल । इनमेंसे अतीतकालके द्वारा संपूर्ण जीवराशिका प्रमाण जाना जाता है ॥ २१ ॥

१ प्रतिपु ' जहा लोए तथा सव्वे लोए ' इति पाठः ।

तेण कारणेण मिच्छाइड्डिरासी ण अवहिरिज्जदि, सव्वे समया अवहिरिज्जंति । अदीदकालो थोवो मिच्छाइड्डिरासी बहुमो ति कथं णव्वदे ? सोलस-पडिय-अप्पावहु-गादो । कथं सोलसपडिय-अप्पावहुगं ? सव्वत्थोवा वट्टमाणद्धा, अभवसिद्धिया अणंत-गुणा । को गुणगारो ? जहण्णजुत्ताणंतं । सिद्धकालो अणंतगुणो । को गुणगारो ? छम्मासट्टमभागेण रूवाहिण्ण छिण्ण-अदीदकालस्स अणंतिमभागो । अणाइस्स अदीद-कालस्स कथं पमाणं ठविज्जदि ? ण, अण्णहा तस्साभावपसंगादो । ण च अणादि ति जाणिदे सादित्तं पावेदि, विरोहा । सिद्धा संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? रूवसदपुधत्तं । असिद्धकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जावलियाओ । अदीदकालो विसे-साहिओ । केत्तियमेत्तेण ? सिद्धकालमेत्तेण । भवसिद्धिया मिच्छाइड्डी अणंतगुणा । को

इसलिये मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण समाप्त नहीं होता है, परंतु अतीतकालके संपूर्ण समय समाप्त हो जाते हैं ।

शंका—अतीतकाल स्तोक है और मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण उससे अधिक है, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—सोलह राशिगत अल्पबहुत्वसे यह जाना जाता है कि अतीतकालसे मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण अधिक है ।

शंका—सोलह राशिगत अल्पबहुत्व किसप्रकार है ?

समाधान—वर्तमानकाल सबसे स्तोक है । अभव्य जीवोंका प्रमाण उससे अनन्तगुणा है । यहां पर गुणकार क्या है ? जघन्य युक्तानन्त यहां पर गुणकाररूपसे अभीष्ट है । अभव्यराशिसे सिद्धकाल अनन्तगुणा है । गुणकार क्या है ? छह महीनोंके अष्टम भागमें एक मिला देने पर जो समयसंख्या आवे उससे भक्त अतीतकालका अनन्तवां भाग गुणकार है ।

शंका—अतीतकाल अनादि है, इसलिये उसका प्रमाण कैसे स्थापित किया जा सकता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, यदि उसका प्रमाण नहीं माना जाय तो उसके अभावका प्रसंग आ जायगा । परंतु उसके अनादित्वका ज्ञान हो जाता है, इसलिये उसे सादित्वकी प्राप्ति हो जायगी, सो बात भी नहीं है, क्योंकि, ऐसा माननेमें विरोध आता है ।

सिद्धकालसे सिद्ध संख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? यहां पर शतप्रथक्स्वरूप गुणकार लेना चाहिये । सिद्ध जीवोंसे असिद्धकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? यहां पर संख्यात आवलिकाएं गुणकार हैं । असिद्धकालसे अतीतकाल विशेष अधिक है । कितना विशेष अधिक है ? सिद्धकालका जितना प्रमाण है, उतने विशेषसे अधिक है । अर्थात्

१ क. आ. प्रत्योः ' दस ' इति पाठः ।

गुणगारो ? भवसिद्धिमिच्छाद्द्वीणमणंतिमभागो । भवसिद्धिया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? तेरसगुणट्टाणमेत्तेण । मिच्छाद्द्वी विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? तेरसगुणट्टाणमेत्तेण पमाणेणूण-अभवसिद्धियमेत्तेण । संसारत्था विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? तेरसगुणट्टाणमेत्तेण । सव्वे जीवा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? सिद्धजीवमेत्तेण । पोग्गलदव्वमणंतगुणं । को गुणगारो ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो । एसद्धा अणंतगुणा । को गुणगारो ? सव्वपोग्गलदव्वादो अणंतगुणो । सव्वद्धा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? वट्टमाणतीदकालमेत्तेण । अलोगागासमणंतगुणं । को गुणगारो ? सव्वकालादो अणंतगुणो । सव्वागासं विसेसाहियं । केत्तियमेत्तेण ? लोगागासपदेसमेत्तेण । जेण अदीदकालादो मिच्छाद्द्वी अणंतगुणा तेण सव्वे समया अवहिरिज्जंति मिच्छाद्द्विरासी ण अवहिरिज्जदि

असिद्धकालमें सिद्धकालका प्रमाण मिला देने पर अतीतकालका प्रमाण हो जाता है। अतीतकालसे भव्य मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तगुणे हैं। गुणकार क्या है? भव्य मिथ्यादृष्टियोंका अनन्तवां भाग गुणकार है। भव्य मिथ्यादृष्टियोंसे भव्य जीव विशेष अधिक हैं। कितने अधिक हैं? सासादन गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक जीवोंका जितना प्रमाण है उतने विशेषरूप अधिक हैं। अर्थात् भव्य मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाणमें सासादन आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवोंके प्रमाणके मिला देने पर समस्त भव्य जीवोंका प्रमाण होता है। भव्य जीवोंसे सामान्य मिथ्यादृष्टि जीव विशेष अधिक हैं। कितने विशेषरूप अधिक है? अभव्य राशिमेंसे सासादन आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवोंके प्रमाणको कम कर देने पर जो राशि अवाशिष्ट रहे उतने विशेषसे अधिक हैं। अर्थात् भव्यराशिमेंसे सासादन आदि तेरह गुणस्थानवालोंका प्रमाण कम करके अभव्यराशिको मिला देने पर सामान्य मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण होता है। सामान्य मिथ्यादृष्टियोंसे संसारी जीव विशेष अधिक हैं। कितने अधिक हैं? सासादन आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवोंका जितना प्रमाण है उतने विशेषसे अधिक हैं। संसारी जीवोंसे संपूर्ण जीव विशेष अधिक हैं? कितने अधिक हैं? सिद्ध जीवोंका जितना प्रमाण है उतने अधिक हैं। संपूर्ण जीवराशिसे पुद्गलद्रव्य अनन्तगुणा है। यहां पर गुणकार क्या है? यहां पर संपूर्ण जीवराशिसे अनन्तगुणा गुणकार है। पुद्गलद्रव्यसे अनागतकाल अनन्तगुणा है। यहां पर गुणकार क्या है? यहां पर संपूर्ण पुद्गलद्रव्यसे अनन्तगुणा गुणकार है। अनागतकालसे संपूर्ण काल विशेष अधिक है। कितना अधिक है? वर्तमान और अतीतकालमात्र विशेषसे अधिक है। संपूर्ण कालसे अलोकाकाश अनन्तगुणा है। यहां पर गुणकार क्या है? संपूर्ण कालसे अनन्तगुणा यहां पर गुणकार है। अलोकाकाशसे संपूर्ण आकाश विशेष अधिक है। कितना अधिक है? लोकाकाशके जितने प्रदेश हैं उतना विशेषरूप अधिक है। इसप्रकार इस अल्पबहुत्वसे यह प्रतीत हो जाता है कि अतीतकालसे मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तगुणे हैं, अतः अतीतकालके संपूर्ण समय अपहृत हो जाते हैं, परंतु मिथ्यादृष्टि जीवराशि अपहृत नहीं होती है, यह बात सिद्ध हो जाती है।

त्ति सिद्धं । किमद्दं कालपमाणं बुच्चदे ? मिच्छाइट्टिरासिस्स मोक्खं गच्छमाणजीवे पडुच्च संते वि वए ण वोच्छेदो होदि त्ति जाणावणद्दं ।

खेत्तेण अणंताणंता लोगा ॥ ४ ॥

खेत्तपमाणमुल्लंघिय अप्पवण्णणिज्जं भावपमाणं किमिदि ण परूविज्जदि ? खेत्त-परूवणादो भावपरूवणं महदरमिदि ण परूविज्जदे । तं जहा, भावपमाणं णाम णाणं । तं पि पंचविहं । तत्थ वि एक्केकमणेयवियप्पं । तत्थ वि अणेगाओ विप्पडिवत्तीओ त्ति । खेत्तेण कधं मिच्छाइट्टिरासी मिणिज्जदे ? बुच्चदे— जधा पत्थेण जव-गोधूमादिरासी मिणिज्जदि तथा लोएण मिच्छाइट्टिरासी मिणिज्जदि । एवं मिणिज्जमाणे मिच्छाइट्टिरासी अणंत-लोममेत्तो होदि त्ति । एत्थुवउज्जंती गाहा—

पत्थेण कोदवेण व जह कोइ मिणेज्ज सव्ववीजाइं ।

एवं मिणिज्जमाणे ह्वंति लोगा अणंता दु ॥ २२ ॥

शंका — यहां पर कालकी अपेक्षा प्रमाण किसलिये कहा गया है ?

समाधान—मोक्षको जानेवाले जीवोंकी अपेक्षा संसारी जीवराशिका व्यय होने पर भी मिथ्यादृष्टि जीवराशिका सर्वथा विच्छेद नहीं होता है, इस बातका ज्ञान करानेके लिये यहां पर कालकी अपेक्षा प्रमाण कहा है ।

क्षेत्रप्रमाणकी अपेक्षा अनन्तानन्त लोकप्रमाण मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण है ॥ ४ ॥

शंका—यहां पर क्षेत्रप्रमाणका उल्लंघन करके अल्पवर्णनीय भावप्रमाणका प्ररूपण क्यों नहीं किया गया है ?

समाधान—क्षेत्रप्रमाणके प्ररूपण करनेकी अपेक्षा भावप्रमाणका प्ररूपण अतिविस्तृत है, इसलिये भावप्रमाणका प्ररूपण पहले नहीं किया गया है । भावप्रमाणका प्ररूपण अतिविस्तृत है आगे इसीका स्पष्टीकरण करते हैं । ज्ञानको भावप्रमाण कहते हैं । वह भी पांच प्रकारका है । उन पांच भेदोंमें भी प्रत्येक अनेक भेदरूप है । उसमें भी अनेक विवाद हैं । इससे सिद्ध होता है कि भावप्रमाणका प्ररूपण क्षेत्रप्रमाणके प्ररूपणकी अपेक्षा अतिविस्तृत है ।

शंका—क्षेत्रप्रमाणके द्वारा मिथ्यादृष्टि जीवराशि कैसे मापी, अर्थात् जानी, जाती है ?

समाधान—जिसप्रकार प्रस्थसे जौ, गेहूं आदिकी राशिका माप किया जाता है, उसीप्रकार लोक प्रमाणके द्वारा मिथ्यादृष्टि जीवराशि मापी अर्थात् जानी जाती है । इसप्रकार लोकके द्वारा मिथ्यादृष्टि जीवराशिका माप करने पर वह अनन्त लोकमात्र है । यहां पर इस विषयकी उपयोगी गाथा दी जाती है—

जिसप्रकार कोई प्रस्थसे कोदोंके समान संपूर्ण बीजोंका माप करता है उसीप्रकार मिथ्यादृष्टि जीवराशिकी लोकसे अर्थात् लोकके प्रदेशोंसे तुलना करने पर मिथ्यादृष्टि जीव-

पत्थेण ताव पत्थवाहिरत्थो पुरिसो पत्थवाहिरत्थाणि बीयाणि मिणेदि । कथं लोएण लोयत्थो पुरिसो लोयत्थं मिच्छाइट्टिरासिं मिणेदि त्ति ? जदो लोणेण पण्णाए मिणिज्जंते मिच्छाइट्टिजीवा तदो ण एस दोसो । कथं पण्णाए मिणिज्जंते मिच्छाइट्टिजीवा ? बुच्चदे- एकेकम्मि लोगागासपदेसे एकेकं मिच्छाइट्टिजीवं णिक्खेविऊण एक्को लोगो इदि मणेण संकप्पेयव्वो । एवं पुणो पुणो मिणिज्जमाणे मिच्छाइट्टिरासी अणंतलोगमेत्तो होदि । एत्थुवसंहारगाहा—

लोगागासपदेसे एकेके णिक्खेवेवि तह दिट्ठं ।

एवं गणिज्जमाणे हवंति लोगा अणंता दु ॥ २३ ॥

को लोगो' णाम ? सेट्ठिणो । का सेठी' ? सत्तरज्जुमेत्तायामो । का रज्जू

राशिका प्रमाण लानेके लिये अनन्त लोक होते हैं, अर्थात् अनन्तलोकप्रमाण मिथ्यादृष्टि जीवराशि है ॥ २२ ॥

शंका— प्रस्थसे बहिर्भूत पुरुष प्रस्थसे बहिर्भूत बीजोंको प्रस्थके द्वारा मापता है, यह तो युक्त है, परंतु लोकके भीतर रहनेवाला पुरुष लोकके भीतर रहनेवाली मिथ्यादृष्टि जीवराशिको लोकके द्वारा कैसे माप सकता है ?

समाधान— जिसलिये बुद्धिसे संपूर्ण मिथ्यादृष्टि जीव लोकके द्वारा मापे जाते हैं, इसलिये उपर्युक्त दोष नहीं आता है ।

शंका— बुद्धिसे मिथ्यादृष्टि जीव कैसे मापे जाते हैं ?

समाधान— लोकाकाशके एक एक प्रदेश पर एक एक मिथ्यादृष्टि जीवको निक्षिप्त करके एक लोक हो गया इसप्रकार मनसे संकल्प करना चाहिये । इसप्रकार पुनः पुनः माप करने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि अनन्तलोकप्रमाण होती है । इसप्रकार बुद्धिसे मिथ्यादृष्टि जीवराशि मापी जाती है । इस विषयकी यहां पर उपसंहाररूप गाथा कहते हैं—

लोकाकाशके एक एक प्रदेश पर एक एक मिथ्यादृष्टि जीवको निक्षिप्त करने पर जैसा जिनेन्द्रदेवने देखा है उसीप्रकार पूर्वोक्त लोकप्रमाणके क्रमसे गणना करते जाने पर अनन्त लोक हो जाते हैं ॥ २३ ॥

शंका— लोक किसे कहते हैं ?

समाधान— जगच्छ्रेणीके घनको लोक कहते हैं ।

शंका— जगच्छ्रेणी किसे कहते हैं ?

समाधान— सात रज्जुप्रमाण आकाश प्रदेशोंकी लंबाईको जगच्छ्रेणी कहते हैं ।

१ जगसेट्ठिणयमाणो लोयायासो । ति. प. पत्र ४. पयरं सेटीए गुणिय लोगो । अनु. सू. पृ. १५९.

२ सेटी वि पल्लकेदारणं । होदि असंखेज्जदिमपमाणविदंशुलाण हवी ॥ ति. सा. ७, असंखेज्जाओ जोयण- कोडाकोडीओ सेटी । अनु. पृ. १५९.

णाम ? तिरियलोगस्स मज्झिमवित्थारो । कथं तिरियलोगस्स रुंदत्तणमाणिज्जदे ? जत्तियाणि दीवसागररूवाणि जंबूदीवच्छेदणाओ च रूवाहियाओ केषिं च आइरियाणमुत्रएसेण संखेज्जरूवाहियाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णव्भत्थरासिणा छिण्णाविसिट्ठं गुणिदे रज्जू णिप्पज्जदि । एसो एति सेटीए सत्तमभागो' । (कम्मि तिरियलोगस्स पज्जवसाणं ?

शंका— रज्जु किसे कहते हैं ?

समाधान— तिर्यग्लोकके मध्यम विस्तारको रज्जु कहते हैं ।

शंका— तिर्यग्लोककी चौड़ाई कैसे निकाली जाती है ?

समाधान— जितना द्वीपों और सागरोंका प्रमाण है उनको तथा एक अधिक जम्बूद्वीपके छेदोंको विरलित करके तथा उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दोरूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे, अर्धच्छेद करनेके पश्चात् अवशिष्ट राशिको गुणित कर देने पर रज्जुका प्रमाण उत्पन्न होता है । अथवा, कितने ही आचार्योंके उपदेशसे जितना द्वीपों और सागरोंका प्रमाण है उसको और संख्यात अधिक जम्बूद्वीपके छेदोंको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दोरूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे, छेद करनेके पश्चात् अवशिष्ट राशिको गुणा कर देने पर रज्जुका प्रमाण उत्पन्न होता है । यह जगच्छ्रेणीका सातवां भाग आता है ।

विशेषार्थ— रज्जुके विषयमें दो मत पाये जाते हैं । कितने ही आचार्योंका ऐसा मत है कि स्वयंभूरमण समुद्रकी बाह्य वेदिका पर जाकर रज्जु समाप्त होती है । तथा कितने ही आचार्योंका ऐसा मत है कि असंख्यात द्वीपों और समुद्रोंकी चौड़ाईसे रुके हुए क्षेत्रसे संख्यात गुणे योजन जाकर रज्जुकी समाप्ति होती है । स्वयं वीरसेन स्वामीने इस दूसरे मतको अधिक महत्व दिया है । उनका कहना है कि ज्योतिषियोंके प्रमाणको लानेके लिये २५६ अंगुलके वर्ग प्रमाण जो भागहार बतलाया है उससे यही पता चलता है कि स्वयंभूरमण समुद्रसे संख्यातगुणे योजन जाकर ही मध्यलोककी समाप्ति होती है । इन दोनों मतोंके अनुसार रज्जुका प्रमाण निकालनेके लिये रज्जुके जितने अर्धच्छेद हों उतने स्थानपर २ रस्स कर परस्पर गुणा करके जो लब्ध आवे उसका अर्धच्छेद करनेके अनन्तर जो भाग अवशिष्ट रहे उससे गुणा कर देना चाहिये । इसप्रकार करनेसे रज्जुका प्रमाण आ जाता है । जितने द्वीप और समुद्र हैं उनमें एक अधिक या संख्यात अधिक जम्बूद्वीपके अर्धच्छेद मिला देने पर रज्जुके अर्धच्छेद हो जाते हैं । इनके निकालनेकी प्रक्रिया इसप्रकार है—

मध्यसे रज्जुके दो भाग करना चाहिये, यह प्रथम अर्धच्छेद है । अनन्तर आधा आधा

१ जगसेटीए सत्तमभागो रज्जु य भासते । ति. प. पत्र ६. जगसेटिसत्तभागो रज्जु । ति. सा. ७. उद्धारसागराणं अद्वाइज्जाण जत्तिया समय । दुग्णादुग्णपवित्थर-दीवोदहि रज्जु एवइया ॥ बृ. क्षे. १, ३.

तिण्हं वादवलयाणं बाहिरभागे । तं कथं जाणिज्जदि? ' लोमो वादपदिट्ठिदो ' ति वियाह-
पण्णत्तीवयणादो । स्वयंभूरमणसमुद्दवाहिरवेदियाए परदो केत्तियमद्धानं गंतूण तिरियलोग-
समत्ती होदि ति भणिदे असंखेज्जदीवसमुद्दरुद्धजोयणेहिंतो संखेज्जगुणाणि गंतूण
होदि । एदं कुदो णव्वेदे ? जोइसियाणं वेछप्पणंगुलसदवग्गमेत्तभागहारपरुवयसुत्तादो,

करनेसे (पहले मतके अनुसार) दूसरा अर्धच्छेद स्वयंभूरमण समुद्रमें, तीसरा अर्धच्छेद स्वयंभूरमण द्वीपमें, इसप्रकार एक एक अर्धच्छेद उत्तरोत्तर एक एक द्वीप और एक एक समुद्रमें पड़ता है । किंतु लवण समुद्रमें दो अर्धच्छेद पड़ेंगे । उनमेंसे पहला डेड़लाख योजन भीतर जाकर और दूसरा पचास हजार योजन भीतर जाकर पड़ता है । इनमेंसे दूसरा अर्ध-च्छेद जम्बूद्वीपका मान लेने पर जितने द्वीप और समुद्र हैं उतने अर्धच्छेदोंका प्रमाण आ जाता है । अन्तमें पचास हजार योजन लवण समुद्रके और इतने ही योजन जम्बूद्वीपके अवशिष्ट रहते हैं । इनको मिला देने पर एक लाख योजन होता है । इस एक लाख योजनके १७ अर्धच्छेद करने पर एक योजन अवशिष्ट रहता है, जिसके १९ अर्धच्छेद करनेके बाद एक सूर्यगुल शेष रहता है । पल्यके अर्धच्छेदोंके वर्ग प्रमाण एक सूर्यगुलके अर्धच्छेद होते हैं । इसप्रकार पहले मतके अनुसार जितने द्वीप और समुद्र हैं उनकी संख्यामें $१+१७+१९=३७$ अर्धच्छेद अधिक पल्यके अर्धच्छेदोंके वर्ग प्रमाण अर्धच्छेद मिला देने पर रज्जुके कुल अर्धच्छेद होते हैं । तथा दूसरे मतके अनुसार इस संख्यामें संख्यात और मिला देने पर रज्जुके संपूर्ण अर्धच्छेद होते हैं, क्योंकि, इस मतके अनुसार संख्यात अर्धच्छेद हो जानेके बाद स्वयंभूरमण समुद्रमें अर्धच्छेद प्राप्त होता है ।

शंका—तिर्यग्लोकका अन्त कहां पर होता है ?

समाधान—तीनों वातवलियोंके बाह्य भागमें तिर्यग्लोकका अन्त होता है ।

शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—' लोक वातवलियोंसे प्रतिष्ठित है ' इस व्याख्याप्रज्ञप्तिके वचनसे जाना जाता है कि तीनों वातवलियोंके बाह्य भागमें लोकका अन्त होता है ।

स्वयंभूरमण समुद्रकी बाह्य वेदिकासे उस ओर कितना स्थान जाकर तिर्यग्लोककी समाप्ति होती है ऐसा पूछने पर आचार्य उत्तर देते हैं कि असंख्यात द्वीपों और समुद्रोंके व्याससे जितने योजन रुके हुए हैं उनसे संख्यात् गुणा जाकर तिर्यग्लोककी समाप्ति होती है ।

शंका—यह किससे जाना जाता है ?

समाधान—ज्योतिषी देवोंके दोसौ छप्पन अंगुलोंके वर्गमात्र भागहारके प्ररूपक

१ मज्झिम संघस्यवेसयच्छप्पअंगुलकदीए । जं लद्धं सो रासी ओदिसियसुराणं सव्वाणं । ति. प. पत्र २०१. तिण्णिसयजोयणं वेगदच्छप्पअंगुलाणं च । रुदिहिक्कपदरं वेतरजोइसियाणं च परिमाणं ॥ गो. जी. १६०. वेछप्पणंगुलसयवग्गपलिभागो पयरस्स । अनु. सू. १४२. पृ. १९२.

‘दुगुणदुगुणो दुवग्गो णिरंतरो तिरियलोगे’ त्ति तिलोयपण्णत्तिसुत्तादो य णव्वदे ण च एदं वक्खाणं जत्तियाणि दीवसागररूपाणि जंबूदीवछेदणाणि च रूवाहियाणि त्ति परियम्मसुत्तेण सह विरुज्झइ, रूवेहि अहियाणि रूवाहियाणि त्ति महणादो । अण्णाइरियवक्खाणेण सह विरुज्झदि त्ति ण, एदस्स वक्खाणस्स जं भदत्तं तेण वक्खाणाभासेण विरुद्धदाए एदस्स समवद्वाणादो । तं वक्खाणाभासमिदि कुदो णव्वदे ? जोइसियभागहारसुत्तादो चंदाइच्चबिंबपमाणपरूवयतिलोयपण्णत्तिसुत्तादो च । ण च सुत्तविरुद्धं वक्खाणं होइ, अइप्पसंगादो । किं च ण तं वक्खाणं घडदे, तम्हि वक्खाणे अवलंबिज्जमाणे सेठीए सत्तमभागम्हि अट्टसुण्णदंसणादो । ण च सेठीए सत्तमभागम्हि अट्टसुण्णओ अत्थि, तदत्थित्तविहाययसुत्ताणुवलंभादो । तदो तत्थ अट्टसुण्णविणासण्डं केत्तिण्ण वि रासिणा

सूत्रसे और ‘तिर्यग्लोकमें दोके धर्मले लेकर उत्तरोत्तर दूना दूना है’ इस त्रिलोकप्रज्ञप्तिके सूत्रसे जाना जाता है कि असंख्यात द्वीपों और समुद्रोंके व्याससे रुके हुए क्षेत्रसे संख्यातगुणा आकर तिर्यग्लोककी समाप्ति होती है । और यह व्याख्यान ‘जितने द्वीपों और सागरोंकी संख्या है और जम्बूद्वीपके रूपाधिक जितने छेद हैं उतने रज्जुके अधेच्छेद हैं’ परिकर्म सूत्रके इस व्याख्यानके साथ भी विरोधको प्राप्त नहीं होता है, क्योंकि, वहां पर रूपले अधिक अर्थात् एकसे अधिक ऐसा ग्रहण न करके रूपसे अधिक अर्थात् बहुत प्रमाणसे अधिक ऐसा ग्रहण किया है ।

शंका— यह व्याख्यान अन्य आचार्योंके व्याख्यानके साथ तो विरोधको प्राप्त होता है ?

समाधान - नहीं, क्योंकि, यह व्याख्यान जिसलिये संगत है इसलिये दूसरे व्याख्यानाभासोंसे इसके विरुद्ध पड़ने पर भी यह व्याख्यान प्रमाणरूपसे अवस्थित ही रहता है ।

शंका—अन्य आचार्योंका व्याख्यान व्याख्यानाभास है यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान — ज्योतिषियोंके भागहारके प्ररूपक सूत्रसे और चन्द्र तथा सूर्यके बिम्बोंके प्रमाणके प्ररूपक त्रिलोकप्रज्ञप्तिके सूत्रसे जाना जाता है कि पूर्वोक्त व्याख्यानके विरुद्ध जो अन्य आचार्योंका व्याख्यान पाया जाता है वह व्याख्यानाभास है । और सूत्रविरुद्ध व्याख्यान ठीक नहीं कहा जा सकता है, अन्यथा अतिप्रसंग दोष आ जायगा । तथा वह अन्य आचार्योंका व्याख्यान घटित भी तो नहीं होता है, क्योंकि, उस व्याख्यानके अवलम्बन करने पर जगच्छेर्णाके सप्तम भागका जो प्रमाण बतलाया है उसके अन्तमें आठ शून्य दिखाई देते हैं । परंतु जगच्छेर्णाके सप्तम भागरूप प्रमाणमें अन्तके आठ शून्य नहीं पाये जाते हैं, क्योंकि, अन्तमें आठ शून्योंके अस्तित्वका विधायक कोई सूत्र नहीं पाया जाता है । इसलिये

१ अट्टचउट्टतिसत्तासत य द्वाणेषु णत्र सुण्णाणि । छत्तीससत्तदुणत्रअट्टा तिचउक्का होंति अंककमा॥ एदेहि गुणिसंखेज्जरूपपदरंगुलेहिं भजिदाए । सेटिकदीए लद्धं माणं चंदाण जोइसिंदाणं ॥ तेसियमेत्ताणि राविणो इव्वंति ॥ १२, १३, १४ ॥ ति. प. पत्र २०१.

अहिण होद्वं । हंतो वि असंखेज्जभागवमहिओ संखेज्जभागवमहिओ वा ण होदि, तदणुगहकारिसुत्ताणुवलंभादो । तदो दीवसमुद्दरुद्धखेत्तायामादो संखेज्जगुणेण बाहिर-खेत्तेण होद्वमणहा पुव्वुत्तसुत्तेहि सह विरोहप्संभादो । 'जो मच्छो जोयणसहस्सिओ सयंभूरमणसमुद्दस्स बाहिरिल्लए तडे वेयणसमुग्घाएण समुद्दो काउलेस्सियाए लग्गो' ति एदेण वेयणासुत्तेण सह विरोहो किण्ण होदि ति भणिदे ण, सयंभूरमणसमुद्दस्स बाहिर-वेदियादो परभागद्धिदपुठवीए बाहिरिल्लतडत्तणेण गहणादो । तो वि काउलेस्सियाए महामच्छो ण लग्गदि ति णासंक्कणिज्जं, पुठविद्धिदपदेसम्भि चैव हेट्ठा वादवल्याणम-

रज्जुके प्रमाणके अन्तमें बतलाये हुए आठ शून्योंके नष्ट करनेके लिये जो कुछ भी राशि हो वह अधिक ही होना चाहिये । अधिक होती हुई भी वह राशि असंख्यातवांभाग अधिक अथवा संख्यातवांभाग अधिक तो हो नहीं सकती हैं, क्योंकि, इसप्रकारके कथनकी पुष्टि करनेवाला कोई सूत्र नहीं पाया जाता है । इसलिये जितने क्षेत्र-विस्तारको द्वीपों और समुद्रोंने रोक रक्खा है उससे संख्यातगुणा बाहिरी अर्थात् अन्तके समुद्रसे उस ओरका क्षेत्र होना चाहिये, अन्यथा पहले कहे गये सूत्रोंके साथ विरोधका प्रसंग आ जायगा ।

'जो एक हजार योजनका महामत्स्य है वह वेदनासमुद्रात्स पीडित हुआ स्वयंभूरमण समुद्रके बाह्य तट पर कापोतलेश्या अर्थात् तनुवातवलयसे लगता है, इस वेदनाखंडके सूत्रके साथ पूर्वोक्त व्याख्यान विरोधको क्यों नहीं प्राप्त होता है ऐसा किसीके पूछने पर आचार्य कहते हैं कि फिर भी इस कथनका पूर्वोक्त कथनके साथ विरोध नहीं आता है, क्योंकि, यहां पर 'बाह्य तट' इस पदसे स्वयंभूरमण समुद्रकी बाह्य वेदिकाके परभागमें स्थित पृथिवीका ग्रहण किया गया है ।

शंका — यदि ऐसा है तो महामत्स्य कापोतलेश्यासे संसक्त नहीं हो सकता है ?

समाधान—ऐसी आशंका नहीं करनी चाहिये, क्योंकि, पृथिवीस्थित प्रदेशोंमें अध-स्तन वातवलयका अवस्थान रहता ही है ।

विशेषार्थ—यहां ऐसा अभिप्राय जानना चाहिये कि समुद्रकी वेदिका और

१ रुवाहियदीवसागररूवाणि विशलिय विगं करिय अण्णोण्णव्मत्थं कादूण तत्थ तिरिण्ण रूवाणि अवणिय जोयणलंखेण गुणिदे दीवसमुद्दरुद्धतिरियलोगखेत्तायामुप्पत्तादो । ण च एत्तियो चैव तिरियलोगविवखंभो जगसेदीए सत्तमभागम्मि पंचसुण्णणुवलंभादो । ण च एदम्हादो रज्जुविवखंभो ऊपो होदि रज्जुअव्भंतरभूदस्स चउव्वीसजोयणमेत्त-वादरुद्धखेत्तस्स वज्जामुवलंभादो । ण च तेत्तियमेत्तं पव्विखेत्ते पंचसुण्णओ फिट्ठेति तहाणुवलंभादो । तम्हा सव्वलदीव-सायरविववखादो वाहिं केत्तिएण वि खेत्तेण होद्वं । धवला. ८८१. ति. प. प. २२५.

२ जो मच्छो जोयणसहस्सिओ सयंभूरमणसमुद्दस्स बाहिरिल्लए तड आच्छिदो ॥ ८ ॥ वेयणसमुग्घादेण समुद्दो ॥ ८ ॥ काउलेस्सियाए लग्गो, काउलेस्सिया णाम तदियो वादवलयो ॥ ९ ॥ सू. धवला. पत्त ८८१-८८२

वहाणादो । एसो अत्थो जइवि पुव्वाइरियसंपदायविरुद्धो तो वि तंतजुत्तिवलेण अम्हेहिं परूविदो । तदो इदमित्थं वेत्ति णेहासंगहो कायव्वो, अइदियत्थविसए छदुवेत्थवियप्पिद-जुत्तीणं णिण्णयहेउत्ताणुववत्तीदो । तम्हा उवएसं लद्धण विसेसणिण्णयो एत्थ कायव्वो त्ति । खेत्तपमाणपरूवणं किमट्ठं कीरदे ? असंखेज्जपदेसे लोगागासे अणंतलोममेत्तो वि जीवरासी सम्माइ त्ति जाणावणट्ठं । अट्ठसु माणेसु लोमपमाणेण मिणिज्जमाणे एत्तियलोमा होंति त्ति जाणावणट्ठं वा । तो वि ते केत्तिया होंति त्ति भणिदे एगलोमेण मिच्छाइट्ठि-रासिम्हि भागे हिदे लद्धरूवमेत्ता लोमा होंति ।

तिण्हं पि अधिगमो भावपमाणं ॥ ५ ॥

वातवलयके मध्यभागमें जो पृथिवी है वहां वातवलयकी संभावना है । और इसलिये महामत्स्य वेदनासमुद्रातके समय उससे स्पर्श कर सकता है । इसलिये स्वयंभूरमणकी बाह्य वेदिकाके उस ओर असंख्यात द्वीपों और समुद्रोंके व्याससे संख्यातगुणी पृथिवीके सिद्ध हो जाने पर भी 'वेदनासमुद्रातसे पीड़ित हुआ महामत्स्य वातवलयसे संसक्त होता है' वेदनाखंडके इस वचनके साथ उक्त कथनका कोई विरोध नहीं आता है ।

यद्यपि यह अर्थ पूर्वाचार्योंके संप्रदायके विरुद्ध है, तो भी आगमके आधारपर युक्तिके बलसे हमने (वीरसेन आचार्यने) इस अर्थका प्रतिपादन किया है । इसलिये यह अर्थ इसप्रकार भी हो सकता है, इस विकल्पका संग्रह यहां पर छोड़ना नहीं चाहिये, क्योंकि, अतीन्द्रिय पदार्थोंके विषयमें लक्ष्मण जीवोंके द्वारा कल्पित युक्तियोंके विकल्प रहित निर्णयके लिये हेतुता नहीं पाई जाती है । इसलिये उपदेशको प्राप्त करके इस विषयमें विशेष निर्णय करना चाहिये ।

शंका—यहां पर क्षेत्रप्रमाणका प्ररूपण किसलिये किया है ?

समाधान—असंख्यात प्रदेशों लोकाकाशमें अनन्तलोकप्रमाण जीवराशि समा जाती है इस बातके ज्ञान करानेके लिये यहां पर क्षेत्रप्रमाणका प्ररूपण किया है । अथवा, आठ प्रकारके प्रमाणोंमेंसे लोकप्रमाणके द्वारा जीवोंकी गणना करने पर इतने लोक हो जाते हैं इस बातके ज्ञान करानेके लिये यहां पर क्षेत्रप्रमाणका प्ररूपण किया है । तो भी वे लोक कितने होते हैं ऐसा पूछने पर आचार्य उत्तर देते हैं कि एक लोकका अर्थात् एक लोकके जितने प्रदेश हैं उनका मिथ्यादृष्टि जीवराशिमें भाग देने पर जितनी संख्या लब्ध आवे तत्प्रमाण लोक होते हैं ।

उपर्युक्त तीनों प्रमाणोंका ज्ञान ही भावप्रमाण है ॥ ५ ॥

१ भाषाः पुव्वेवरियदेवेण महामत्स्यो स्वयंभुरमणवाहिरवेइयाए बाहिरे भगि लोमणालीए सामीवे पुत्तीदो । तत्थ तिच्चवेयगावसेण वेयणसमुग्धादेण समुग्धादो जाव लोमणालीए बाहिरपेरंतो लब्धो त्ति उच्चं होदि । धवला. पत्र. ८८२.

अधिगमो णाणप्रमाणमिदि एगद्धो । सो वि अधिगमो पंचविधो मदि-सुद-ओहि-
मणपज्जव-केवलणाणभेदेण । एकेकं तिविहं दव्व-खेत्त-कालभेएण । दव्वत्थिविसयणाणं
दव्वभावप्रमाणं । खेत्तविसिद्धदव्वस्स णाणं खेत्तभावप्रमाणं । तथा कालस्स वि वत्तव्वं ।
सुत्ते भावप्रमाणं ण वुत्तं ? ण, तस्स अणुत्तसिद्धीदो । ण च भावप्रमाणमंतरेण तिण्हं
प्रमाणं सिद्धी भवदि, सहियप्रमाणाभावे गउणप्रमाणस्सासंभवादो, भावप्रमाणं बहु-
वण्णणीयमिदि वा हेदुवादाहेदुवादाणं अवधारणसिस्साणमभावादो वा । अधवा एयं
भावप्रमाणं वत्तव्वं । तं जहा— मिच्छाद्द्विरासिणा सव्वपज्जए भागे हिदे जं भागलद्धं तं
भागहारमिदि कट्टु सव्वपज्जयस्सुवरि खंडिद-भाजिद-विरलिद-अवहिदाणि वत्तव्वाणि ।
तं जहा— सव्वपज्जए भागहारमेत्ते खंडे कदे तत्थ एगखंडप्रमाणं मिच्छाद्द्विरासी
होदि । खंडिदं गदं । तेणेव भागहारेण सव्वपज्जए भागे हिदे भागलद्धप्रमाणं मिच्छा-
द्द्विरासी होदि । भाजिदं गदं । तं चेव भागहारं विरलेदूण सव्वपज्जयं समखंडं कादूण

अधिगम और ज्ञानप्रमाण ये दोनों एकार्थवाची शब्द हैं। वह ज्ञानप्रमाण भी मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्ययज्ञान और केवलज्ञानके भेदसे पांच प्रकारका है। तथा उन पांचोंमेंसे प्रत्येक ज्ञानप्रमाण द्रव्य, क्षेत्र और कालके भेदसे तीन तीन प्रकारका है। उन तीनोंमेंसे द्रव्योंके अस्तित्व विषयक ज्ञानको द्रव्यभावप्रमाण कहते हैं। क्षेत्रविशिष्ट द्रव्यके ज्ञानको क्षेत्रभावप्रमाण कहते हैं। इसीप्रकार कालभावप्रमाणके विषयमें भी जानना चाहिये।

शंका — सूत्रमें भावप्रमाणका स्वतंत्र कथन नहीं किया है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, उसकी विना कहे ही सिद्धि हो जाती है। दूसरे भाव-
प्रमाणके विना शेष तीन प्रमाणोंकी सिद्धि भी नहीं हो सकती है, क्योंकि, योग्य अर्थात्
मुख्य प्रमाणके अभावमें गौणप्रमाणका होना असंभव है। अथवा, भावप्रमाण बहुवर्णनीय
है, अथवा, हेतुवाद और अहेतुवादके अवधारण करनेवाले शिष्योंका अभाव होनेसे सूत्रमें
स्वतन्त्ररूपसे भावप्रमाणका कथन नहीं किया है।

अथवा, इस भावप्रमाणका कथन करना चाहिये। वह इस प्रकार है, मिथ्यादृष्टि
जीवराशिका संपूर्ण पर्यायोंमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उसे भागहाररूपसे स्थापित
करके संपूर्ण पर्यायोंके ऊपर खंडित, भाजित, विरलित और अपहृत इनका कथन करना
चाहिये। आगे उन्हीं चारोंका स्पष्टीकरण करते हैं—

संपूर्ण पर्यायोंके भागहारप्रमाण खंड करने पर जितने खंड आवें, उनमेंसे एक खण्डका
जितना प्रमाण हो तन्मात्र मिथ्यादृष्टि जीवराशि होती है। इसप्रकार खण्डितका वर्णन
समाप्त हुआ।

पूर्वोक्त भागहारका ही संपूर्ण पर्यायोंमें भाग देने पर जो भजनफल लब्ध आवे
तत्प्रमाण मिथ्यादृष्टि जीवराशि होती है। इसप्रकार भाजितका वर्णन समाप्त हुआ।

पूर्वोक्त भागहारको ही विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर

दिण्णे तत्थ बहुखंडाणि च्छोड्डिय एगखंडगहिदे मिच्छाइट्टिरासिपमाणं होदि । विरलिट्ठं गदं । तं चेव भागहारं सलागभूदं ठवेदूण मिच्छाइट्टिरासिपमाणं सव्वपज्जए अवहिरिअदि, सलागादो एगरूवं अवणिज्जदि । पुणो मिच्छाइट्टिरासिपमाणं सव्वपज्जयम्मि अवहिरि-ज्जदि, सलागादो एगं रूवमवणिज्जदि । एवं पुणो पुणो कीरमाणे सव्वपज्जओ व सला-गाओ च जुगवं णिट्ठिदाओ । तत्थ एगवारमवहारिदपमाणं मिच्छाइट्टिरासी होदि । अवहिदं गदं । मिच्छाइट्टिरासिस्स पमाणविसए सोदारणं णिच्छयुप्पायणट्ठं मिच्छाइट्टि-रासिस्स पमाणपरूवणं वग्गट्ठणे खंडिद-भाजिद-विरलिद-अवहिद-पमाण-कारण-णिरुत्ति-वियप्पेहि वत्तइस्सामो । सुत्ताभावे कथमेदं वुच्चदे ? सुत्तेण सूचिदत्तादो । तं जहा—

सिद्धतेरसगुणट्ठाणपमाणं मिच्छाइट्टिरासिभाजिदसिद्धतेरसगुणट्ठाणपमाणवग्गं च

संपूर्ण पर्यायोंके समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर उनमेंसे बहुत खण्डोंको छोड़कर और एक खण्डके ग्रहण करने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण होता है । इसप्रकार विरलितका वर्णन समाप्त हुआ ।

उसी भागहारको शलाकारूपसे स्थापित करके संपूर्ण पर्यायोंमेंसे मिथ्यादृष्टि जीव-राशिके प्रमाणको कम करना चाहिये, एकवार कम किया इसलिये शलाकाराशिमेंसे एक घटा देना चाहिये । दूसरीवार मिथ्यादृष्टि जीवराशिके प्रमाणको शेष संपूर्ण पर्यायोंमेंसे घटा देना चाहिये । दूसरीवार मिथ्यादृष्टि जीवराशिके प्रमाणको कम किया इसलिये शलाका राशिमेंसे एक और कम कर देना चाहिये । इसप्रकार पुनः पुनः करने पर संपूर्ण पर्यायों और उसीप्रकार शलाकाराशि युगपत् समाप्त हो जाती हैं । यहां पर संपूर्ण पर्यायोंमेंसे जितना प्रमाण एकवार घटाया गया है तत्प्रमाण मिथ्यादृष्टि जीवराशि होती है । इसप्रकार अपहृतका कथन समाप्त हुआ ।

अब आगे मिथ्यादृष्टि जीवोंकी राशिके विषयमें श्रोताओंको निश्चय उत्पन्न करानेके लिये वर्गस्थानमें खण्डित, भाजित, विरलित, अपहृत, प्रमाण, कारण, निरुक्ति और विकल्पके द्वारा मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण बतलाते हैं ।

शंका—वर्गस्थानमें खण्डित आदिकके द्वारा मिथ्यादृष्टि जीवराशिके प्रमाणका प्ररूपक सूत्र नहीं होने पर इसका कथन क्यों किया जा रहा है ?

समाधान—सूत्रसे सूचित होनेके कारण इसका कथन किया है, जो इसप्रकार है—

सिद्ध और सासादनसम्यग्दृष्टि आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिको तथा सिद्ध और तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिके वर्गमें मिथ्यादृष्टि जीवराशिके प्रमाणका भाग देने पर

सव्वजीवरासिस्सुवरि पक्खिविय तस्स धुवरासि त्ति णामं कादूण ठवेद्वो $\frac{२५६}{१३}$ । सव्व-
जीवरासिउवरिमवग्गे २५६ धुवरासिपमाणमेत्तखंडे कदे तत्थ एगखंडं १३ मिच्छाद्वि-
रासिपमाणं होदि । खंडिदं गदं । धुवरासिणा सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे भागे हिदे जं
भागलद्धं तं मिच्छाद्विरासिपमाणं होदि । भाजिदं गदं । धुवरासिं विरलेऊण एकेकस्स
रूवस्स सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे समखंडं कादूण दिण्णे एगखंडपमाणं मिच्छाद्विरासी

जो लब्ध आवे उसको संपूर्ण जीवराशिमें मिला देने पर जितना प्रमाण हो उसकी धुवराशि
 $\frac{२५६}{१३}$ ऐसी संज्ञा करके स्थापित कर देना चाहिये ।

उदाहरण (बीजगणितसे)—

जीवराशि = अ + ब; सिद्धतेरद्व्यगुणस्थानवर्ती राशि = अ; मिथ्याद्वि जीवराशि = ब.
इन संकेतोंसे पूर्वोक्त रीतिके अनुसार धुवराशि निम्न आती है—

$$अ + \frac{अ^२}{ब} + (अ + ब) = \frac{अ^२ + २अब + ब^२}{ब} = \frac{(अ + ब)^२}{ब} \text{ धुवराशि}$$

$$(अंकगणितसे) - ३ + \frac{९}{१३} + १६ = \frac{३९ + ९ + २०८}{१३} = \frac{२५६}{१३} \text{ धुवराशि}$$

इसप्रकार धुवराशिका जितना प्रमाण है ($\frac{२५६}{१३}$) उतने संपूर्ण जीवराशिके उपरिम
वर्ग २५६ के खण्ड करने पर उनमेंसे एक खण्ड १३ मिथ्याद्वि जीवराशिका प्रमाण होता है ।
इसप्रकार खण्डितका कथन समाप्त हुआ ।

संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें धुवराशिका भाग देने पर जितना भजनफल
आवे उतना मिथ्याद्वि जीवराशिका प्रमाण है । इसप्रकार भाजितका वर्णन समाप्त
हुआ ।

$$\text{उदाहरण (भाजित)— } २५६ \div \frac{२५६}{१३} = \frac{२५६}{१} \times \frac{१३}{२५६} = १३ \text{ मिथ्याद्वि राशि ।}$$

धुवराशिका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एक पर संपूर्ण जीवराशिके
उपरिम वर्गके समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर उनमेंसे एक खण्डप्रमाण मिथ्याद्वि
जीवराशि होती है । इसप्रकार विरलितका वर्णन समाप्त हुआ ।

$$\text{उदाहरण (विरलित)— धुवराशि } \frac{२५६}{१३} = १९\frac{१३}{१३}$$

धुवराशिका विरलन और जीवराशिके उपरिम वर्गके समान खंड करके स्थापित
करना .

$$\begin{array}{cccccccccccccccccccc} १३ & १३ & १३ & १३ & १३ & १३ & १३ & १३ & १३ & १३ & १३ & १३ & १३ & १३ & १३ & १३ & १३ & १३ & १३ & ९ \\ १ & ९ \\ & १३ \end{array}$$

होदि । विरलिदं गदं । तं चेव धुवरासिं सलागभूदं ठवेऊण मिच्छाइड्डिरासिपमाणं सव्वजीवरासिउपरिमवग्गमिह अवणीय धुवरासीदो एगरूवमवणिज्जदि । पुणो वि मिच्छा-इड्डिरासिपमाणं सव्वजीवरासिस्सुपरिमवग्गमिह अवणीय धुवरासीदो एगं रूवमवणिज्जदि । एवं पुणो पुणो कीरमाणे सव्वजीवरासिउपरिमवग्गो च धुवरासी च जुगवं णिट्ठिदा । तत्थ एगवारमवणिदपमाणं मिच्छाइड्डिरासी होदि । अवहिदं गदं । तस्स पमाणं केत्थियं ? सव्वजीवरासिस्स अणंता भागा अणंताणि सव्वजीवरासिपढमवग्गमूलाणि ति । तं जहा—

सव्वजीवरासिपढमवग्गमूलं विरलेऊण एक्केकस्स रूवस्स सव्वजीवरासिं समखंडं

अतः एक खंड १३ प्रमाण मिथ्यादृष्टि जीवराशि हुई ।

पूर्वोक्त धुवराशिको शलाकारूपसे स्थापित करके और मिथ्यादृष्टि जीवराशिके प्रमाणको संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गके प्रमाणमेंसे निकालकर शलाकाभूत धुवराशिमेंसे एक कम कर देना चाहिये । फिर भी मिथ्यादृष्टि राशिके प्रमाणको शेष संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गके प्रमाणमेंसे न्यून करके धुवराशिमें एक और कम कर देना चाहिये । इसप्रकार पुनः पुनः करने पर संपूर्ण जीवराशिका उपरिम वर्ग और धुवराशि युगपत् समाप्त हो जाती है । इसमें एकवार निकाली हुई राशिका जितना प्रमाण हो उतनी मिथ्यादृष्टि जीवराशि है । इसप्रकार अपहृतका वर्णन समाप्त हुआ ।

उदाहरण (अपहृत)—

शलाकारूप धुवराशि	१९ ^१ / _३	जीवराशिका उपरिम वर्ग	२५६
	-१		-१३
	१८ ^१ / _३		२४३
	-१		-१३
	१७ ^१ / _३		२३०

इस क्रमसे उपरिम वर्गमेंसे मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण और धुवराशिमेंसे एक एक घटाते जाने पर शलाकाराशि और उपरिम वर्गराशि एक साथ समाप्त होंगे । इनमें एकवार घटाई जानेवाली संख्या १३ प्रमाण मिथ्यादृष्टि हैं ।

शंका — उस मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण कितना है ?

समाधान—संपूर्ण जीवराशिके अनन्त बहुभागप्रमाण मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण है, जो प्रमाण संपूर्ण जीवराशिके अनन्त प्रथम वर्गमूलोंके बराबर होता है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है—

संपूर्ण जीवराशिके प्रथम वर्गमूलको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक

कारण दिण्णे रूवं पडि सच्चजीवरासिपढमवग्गमूलपमाणं पावदि । पुणो सिद्धतेरसगुण-
 द्वाणेहि भजिदसच्चजीवरासिपढमवग्गमूलं पुच्चविरलणाए हेट्ठा विरलिय उवरिमविरलणाए
 एगपढमवग्गमूलं घेत्तूण समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि सिद्धतेरसगुणद्वाणपमाणं
 पावेदि । तत्थुवरिमविरलणपरूवूणमेत्तसच्चजीवरासिपढमवग्गमूलाणि रूवूणहेट्ठिमविर-
 लणमेत्तसिद्धतेरसगुणद्वाणपमाणाणि च घेत्तूण मिच्छाद्दृष्टिरासी होदि । पमाणं गदं । केण
 कारणेण ? सच्चजीवरासिणा सच्चजीवरासिउवरिमवग्गे भागे हिदे किमागच्छदि ? सच्च-

एकके ऊपर जीवराशिको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक
 एकके प्रति संपूर्ण जीवराशिका प्रथम वर्गमूल प्राप्त होता है । अनन्तर सिद्धराशि और सासादन
 आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके प्रथम वर्गमूलमें भाग देने पर जो
 लब्ध आवे उसे पहले विरलनके नीचे विरलित करके उपरिम विरलनके एकके प्रति प्राप्त
 संपूर्ण जीवराशिके प्रथम वर्गमूलको ग्रहण करके और उसके समान खण्ड करके अधस्तन
 विरलनके प्रत्येक एकके ऊपर देयरूपसे स्थापित करने पर प्रत्येक एकके प्रति सिद्धराशि और
 सासादन आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है । यहां पर उपरिम
 विरलनमें प्ररूपण किये गये संपूर्ण जीवराशिके एक कम प्रथम वर्गमूलको और एक कम
 अधस्तन विरलनमात्र सिद्ध और सासादन आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवोंके प्रमाणको मिला
 देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण होता है । इसप्रकार प्रमाणका वर्णन समाप्त हुआ ।

उदाहरण (प्रमाण)— जीवराशि = १६; प्रथम वर्गमूल = ४; सिद्धतेरस = ३

(१ विरलन वर्गमूल) $\frac{४}{१} \frac{४}{१} \frac{४}{१} \frac{४}{१} = \frac{४}{३} = १ \frac{१}{३}$ सिद्धतेरसका प्रथम वर्गमूलमें
 भाग देने पर लब्ध

(२ विरलन) $\frac{३}{१} \frac{१}{३}$

(अतः मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण प्रथम विरलनकी शेष तीन राशियां $४+४+४=१२$
 और दूसरे विरलनमें प्रथम राशि (सिद्धतेरस) को छोड़कर दूसरी राशि १ मिला देने पर
 मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण $१२+१=१३$ आ जाता है ।)

किस कारणसे ?

शंका— संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर कौनसी
 राशि आती है ?

समाधान— संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर
 संपूर्ण जीवराशि ही आती है ।

उदाहरण (बीजगणितसे)— जीवराशि = क; $\frac{क}{क} = क$

जीवरासी चैव आगच्छदि । दुभागव्महियसव्वजीवरासिणा सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे भागे हिदे किमागच्छदि ? तिभागहीणसव्वजीवरासी आगच्छदि । केण कारणेण ? सव्वजीवरासिवग्गखेत्तं पुव्वावरायामेण तिणिण खंडाणि करिय तत्थेगखंडं थेत्तूण खंडं करिय संधिदे सव्वजीवरासिदुभागवित्थारं वेत्ति । भागायामखेत्तं होदि । एदं अधिय-विरलणाए दिण्णे एक्केकस्स रूवस्स तिभागहीणसव्वजीवरासी पावेदि । तिभागव्महिय-सव्वजीवरासिणा सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे भागे हिदे किमागच्छदि ? चउव्भागहीण-

(अंकगणितसे)— $२५६ \div १६ = १६$

शंका—दूसरा भाग अधिक संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर कौनसी राशि आती है ?

समाधान—तीसरा भाग हीन संपूर्ण जीवराशि आती है ।

उदाहरण (बीजगणितसे)— $\frac{क^२}{क + \frac{क}{२}} = \frac{२}{३} क = क - \frac{क}{३}$

(अंकगणितसे)—१६ का दूसरा भाग ८ है; अतः द्वितीय भाग ८ अधिक १६ = २४ का २५६ में भाग देने पर १० $\frac{२}{३}$ आता है, जो जीवराशि १६ का तीसरा भाग हीन है ।

शंका—दूसरा भाग अधिक संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर तीसरा भाग हीन जीवराशि किस कारणसे आती है ?

समाधान—संपूर्ण जीवराशिके वर्गरूप क्षेत्रके पूर्व और पश्चिमके विस्तारसे तीन खंड करके और उनमेंसे एक खंड ग्रहण करके उसके भी दो खंड करके संधित अर्थात् प्रसारित कर देने पर संपूर्ण जीवराशिका दूसरा भागरूप विस्तार जाना जाता है । यही भागायाम क्षेत्र है । इसको अधिक विरलन राशिके प्रत्येक एकके ऊपर देयरूपसे देने पर प्रत्येक एकके प्रति तीसरा भागहीन संपूर्ण जीवराशि प्राप्त होती है ।

जीवराशिवर्ग

१		अ
२		ब
३	अ	ब

शंका—तीसरा भाग अधिक संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर क्या आता है ?

समाधान—चौथा भाग हीन संपूर्ण जीवराशि आती है । यहां पर भी कारणका पहलेके समान कथन करना चाहिये । अर्थात् संपूर्ण जीवराशिके वर्गरूप क्षेत्रके पूर्व और पश्चिम विस्तारसे चार खण्ड करके और उनमेंसे एक खण्डके तीन खण्ड करके प्रसारित कर देने पर संपूर्ण जीवराशिका तीसरा भागरूप विस्तार जाना जाता है । अनन्तर इन खण्डोंको

सव्वजीवरासी आगच्छदि । एत्थ वि कारणं पुव्वं व वत्तव्वं । एवं संखेज्जभागब्भहिय-
सव्वजीवरासिणा तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे किमागच्छदि ? संखेज्जभागहीणसव्वजीव-
रासी आगच्छदि । उक्कस्ससंखेज्जभागब्भहियसव्वजीवरासिणा तदुवरिमवग्गे भागे हिदे
किमागच्छदि ? जहण्णपरित्तासंखेज्जभागहीणसव्वजीवरासी आगच्छदि । असंखेज्जभाग-
ब्भहियसव्वजीवरासिणा तदुवरिमवग्गे भागे हिदे किमागच्छदि ? असंखेज्जभागहीण-
सव्वजीवरासी आगच्छदि । उक्कस्स-असंखेज्जासंखेज्जभागब्भहियसव्वजीवरासिणा तदु-
वरिमवग्गे भागे हिदे किमागच्छदि ? जहण्णपरित्ताणंतभागहीणसव्वजीवरासी आगच्छदि ।

अधिक विरलन राशिके प्रत्येक एकके ऊपर दे देने पर चौथा भाग हीन संपूर्ण जीवराशि
आ जाती है ।

$$\text{उदाहरण (बीजगणितसे)} — \frac{k^2}{k + \frac{k}{2}} = \frac{2}{3} k = k - \frac{k}{3}$$

(अंकगणितसे) — (१६ का तीसरा भाग $5\frac{1}{3}$ है, अतः तृतीय भाग $5\frac{1}{3} + 16 = 21\frac{1}{3}$
का $21\frac{1}{3}$ में भाग देने पर १२ आते हैं, जो जीवराशि १६ का चौथा भाग हीन है ।)

शंका— इसीप्रकार संख्यातवां भाग अधिक संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके
उपरिम वर्गमें भाग देने पर क्या आता है ?

समाधान — संख्यातवां भागहीन संपूर्ण जीवराशि आती है ।

$$\text{उदाहरण (बीजगणितसे)} — \frac{k^2}{k + \frac{k}{n}} = \frac{n}{n+1} k = k - \frac{k}{n+1} \quad (\text{संख्यात} = n)$$

शंका— उत्कृष्ट संख्यातवां भाग अधिक संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके
उपरिम वर्गमें भाग देने पर क्या आता है ?

समाधान — जघन्य परीतासंख्यातवां भाग हीन संपूर्ण जीवराशि आती है ।

शंका— असंख्यातवां भाग अधिक संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम
वर्गमें भाग देने पर क्या आता है ?

समाधान — असंख्यातवां भाग हीन संपूर्ण जीवराशि आती है ।

शंका— उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यातवां भाग अधिक संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीव-
राशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर कौनसी राशि आती है ?

समाधान — जघन्य परीतानन्तवां भाग हीन संपूर्ण जीवराशि आती है ।

अणंतभागम्भहियसव्वजीवरासिणा तदुपरिमवग्गे भागे हिदे किमागच्छदि ? अणंतभाग-
हीणसव्वजीवरासी आगच्छदि । सव्वत्थ कारणं पुव्वं व वत्तव्वं । एत्थ उवउज्जंतीओ
गाहाओ—

अवहारवट्टिरूवाणवहारादो ढु लद्धअवहासे ।

रूवहिओ हाणीए होदि ढु वट्टीए विवरीदो ॥ २४ ॥

अवहारविसेसेण य छिण्णवहारादु लद्धरूवा जे ।

रूवाहियऊणा वि य अवहारो हाणिवट्टीणं ॥ २५ ॥

लद्धविसेसच्छिण्णं लद्धं रूवाहियऊणयं चावि ।

अवहारहाणिवट्टीणवहारो सो मुणेयव्वो ॥ २६ ॥

शंका — अनन्तवां भाग अधिक संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें
भाग देने पर कौनसी राशि आती है ?

समाधान—अनन्तवां भाग हीन संपूर्ण जीवराशि आती है । सर्वत्र कारणका कथन
पहलेके समान करना चाहिये । अब यहाँ पर उपयुक्त गाथाएं दी जाती हैं—

भागहारमें उसीके वृद्धिरूप अंशके रहने पर भाग देनेसे जो लब्ध भागहार (हर)
आता है वह हानिमें रूपाधिक और वृद्धिमें इससे विपरीत अर्थात् एक कम होता है ॥ २४ ॥

उदाहरण (बीजगणितसे)—

$$(१) \frac{k^2}{k + \frac{k}{n}} = k - \frac{k}{n + 1}, \quad (२) \frac{k^2}{k - \frac{k}{n}} = k + \frac{k}{n - 1}$$

$$(अंकगणितसे)— (१) \frac{१}{१ + \frac{१}{३}} = \frac{३}{४} = १ - \frac{१}{४} \quad (२) \frac{१}{१ - \frac{१}{३}} = \frac{३}{२} = १ + \frac{१}{२}$$

भागहार विशेषसे भागहारके छिन्न अर्थात् भाजित करने पर जो संख्या आती
है उसे रूपाधिक अथवा रूपन्यून कर देने पर वह क्रमसे हानि और वृद्धिमें भागहार
होता है ॥ २५ ॥

लब्ध विशेषसे लब्धको छिन्न अर्थात् भाजित करने पर जो संख्या उत्पन्न हो उसे एक
अधिक अथवा एक कम कर देने पर वह क्रमसे भागहारकी हानि और वृद्धिका भागहार
होता है ॥ २६ ॥

उदाहरण गाथा २५-२६ के (बीजगणितसे)— $\frac{k}{k} = १$; $\frac{k}{s} = १$

लङ्घनसंगुणिते अवहारे भज्यमाणरासिम्हि ।

पक्खित्ते उत्पन्नइ लङ्घस्सहियस्स जो रासी ॥ २७ ॥

हारान्तरहतहाराङ्घनेन हतस्यं पूर्वलङ्घस्य ।

हारहतभाज्यशेषः सै चान्तरं हानिवृद्धी स्तः ॥ २८ ॥

$$\begin{aligned} \text{वृद्धिका} - \frac{क}{प + म} &= \frac{क}{प \left(१ + \frac{म}{प} \right)} = \frac{\frac{क}{प}}{१ + \frac{म}{प}} = \frac{ब}{१ + \frac{म}{प}} \\ \text{हानिका} - \frac{क}{प - म} &= \frac{क}{म \left(\frac{प}{म} - १ \right)} = \frac{\frac{क}{म}}{\frac{प}{म} - १} = \frac{स}{\frac{प}{म} - १} \end{aligned}$$

(अंकगणितसे) —

वृद्धिका — $\frac{३६}{९+६} = ४$; $\frac{३६}{६} = ६$; $\frac{३}{६}$ छिन अवहार + १ = $\frac{३}{६} + १ = \frac{३}{६} + \frac{६}{६} = \frac{९}{६}$;

$९ \div \frac{९}{६} = ६$ हानिरूप अवहार। $३६ \div \frac{९}{६} = १०$ वृद्धिरूप लब्ध।

हानिका — $\frac{३}{६} - १ = -\frac{३}{६}$; $९ \div -\frac{३}{६} = १८$; $\frac{३६}{६} = ६ = ६ - ४$ हानिरूप लब्ध।

(भागहारके स्थानमें लब्ध लेकर प्रक्रिया करनेसे पहलेके समान ही भागहार आ जाता है ।)

वो लब्ध राशियोंके अन्तरसे भागहारको गुणित करके और इससे जो उत्पन्न हो उसे भज्यमान राशिमें मिला देनेपर अधिक लब्धकी जो भज्यमान राशि होगी वह उत्पन्न होती है ॥ २७ ॥

उदाहरण (बीजगणितसे) — $\frac{अ}{ब} = स, \frac{क}{ब} = ड, ब (स - ड) + क = बस = अ$

(अंकगणितसे) — भज्यमान राशि ४० और ३६; भाजक ४; $४० \div ४ = १०$; $३६ \div ४ = ९$; $१० - ९ = १$ लब्धान्तर $४ \times १ = ४ + ३६ = ४०$ अधिक लब्धकी भज्यमान राशि ।

हारान्तरसे अर्थात् हारके एक खंडसे हारको अपहत करके जो लब्ध आवे उससे पूर्व लब्धको गुणित करने पर उत्पन्न हुई राशिका (और नये लब्धका) भागहारसे भाजित भाज्य-शेष ही अन्तर है जो हानि और वृद्धिरूप होता है ॥ २८ ॥

१ प्रतिषु ' हतस्य ' इति पाठः ।

२ प्रतिषु ' शेषस्य चा-' इति पाठः । किन्तु अजमेरस्थप्रतौ अत्र स्वीकृतः पाठः उपलभ्यते ।

अवणयणरासिगुणितो अवणयणेणूणण लद्धेण ।

भजिदो हु भागहारो पक्खेवो होदि अवहारो ॥ २९ ॥

उदाहरण (बीजगणितसे) —

भज्यमान राशि— न, भाजक—स = अ × ब;

(१) लब्ध—क, शेष—र (वृद्धिरूप).

(२) लब्ध—(क + १), शेष—र' (हानिरूप).

$$न = (अ × ब) क + र — (१)$$

$$\text{और } न = (अ × ब) (क + १) - र' — (२)$$

(१) से $\frac{न}{अ} = ब × क + \frac{र}{अ}$ — वृद्धिरूप.

(२) से $\frac{न}{अ} = ब (क + १) - \frac{र'}{अ}$ — हानिरूप.

(अंकगणितसे) —

भज्यमान राशि—२६३; हार—७२; हारांतर—९;

(१) $\frac{२६३}{७२} = ३ \frac{४७}{७२}$ पूर्व लब्ध—३
भाज्य शेष—४७

$$\frac{२६३}{९} = ८ × ३ + \frac{४७}{९} \quad (\text{हारांतरहतहार—८}).$$

$$= २९ + \frac{२}{९} — (\text{वृद्धिरूप}).$$

(२) $\frac{२६३}{७२} = ४ - \frac{२५}{७२}$

$$\frac{२६३}{९} = ८ × ४ - \frac{२५}{९} = ३० - \frac{७}{९} \quad (\text{हानिरूप}).$$

भागहारको अपनयन राशिसे गुणा कर देने पर और अपनयनराशिको लब्धराशिमेंसे घटाकर जो शेष रहे उसका भाग दे देने पर जो लब्ध आता है वह भागहारमें प्रक्षेपराशि होती है ॥ २९ ॥

उदाहरण (बीजगणितसे) — $\frac{अ}{ब} = क$, इष्ट ख, अपनयन राशि क - ख

$$ब + \frac{ब(क-ख)}{ख} = \frac{ब क}{ख} \quad \text{प्रक्षेप अवहार}$$

(अंकगणितसे) — भज्यमान ३६; भाजक ४; इष्ट ६; $३६ ÷ ४ = ९$; $९ - ६ = ३$ अपनयन

राशि; $\frac{४ × ३}{६} = २$ प्रक्षेप भागहार

पक्खेवरासिगुणितो पक्खेवेणाहिण लद्धेण ।

भजिओ हु भागहारो अवणेज्जो होइ अवहारे ॥ ३० ॥

जे अहिया अवहारे रूवा तेहिं गुणित्तु पुव्वफलं ।

अहियवहारेण हिण लद्धं पुव्वफलं ऊणं ॥ ३१ ॥

जे ऊणा अवहारे रूवा तेहिं गुणित्तु पुव्वफलं ।

ऊणवहारेण हिण लद्धं पुव्वफलं अहियं ॥ ३२ ॥

भागहारको प्रक्षेपराशिसे गुणा कर देने पर और प्रक्षेपसे अधिक लब्धराशिका भाग देने पर जो लब्ध आता है वह भागहारमें अपनेय राशि होती है ॥ ३० ॥

उदाहरण (बीजगणितसे)— $\frac{अ}{ब} = क$, इष्ट ख, प्रक्षेप राशि (ख-क),

$$\text{अपनेय भागहार } ब - \frac{ब(क-ख)}{ख} = \frac{बक}{ख}$$

(अंकगणितसे)— $\frac{३६}{४} = ९$; इष्ट १२; प्रक्षेप ३; अपनेय भागहार $४ - \frac{३ \times ४}{१२} = ४ - १ = ३$

भागहारमें जितनी अधिक संख्या होती है उससे पूर्व फलको गुणित करके तथा अधिक अवहारसे हत अर्थात् भाजित करने पर जो आवे उसे पूर्वफलमेंसे घटा देने पर नया लब्ध आता है ॥ ३१ ॥

उदाहरण (बीजगणितसे)— $\frac{अ}{ब} = स$; नया भागहार— $ब + ड$

$$\text{नया लब्ध} = \frac{अ}{ब + ड} = \frac{बस}{ब + ड} = स - \frac{सड}{ब + ड}$$

अर्थात् $\frac{सड}{ब + ड}$ इसे पुराने भजनफल स में से घटा देने पर नया भजनफल आ जाता है ।

(अंकगणितसे)— $\frac{३६}{४} = ९$; १२ नया भागहार; भागहारमें अधिक ३;

$$\frac{४ \times ३}{१२} = १; ९ - १ = ३ \text{ नया भजनफल.}$$

भागहारमें जितनी न्यून संख्या होती है उससे पूर्व फलको गुणित करके तथा न्यून भागहारसे हत करने पर जो आवे उसे पूर्वफलमें जोड़ देने पर नया लब्ध आता है ॥ ३२ ॥

एदाहि गाहाहि पडिबोहियस्स सिस्सस्स पच्छिमवियप्पो वत्तव्वो । तं जहा, सिद्ध-
तेरसगुणट्ठाणोवट्ठिदमिच्छाइट्ठिभागम्महियसव्वजीवरासिणा सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे भागे
हिदे किमागच्छदि ? सिद्धतेरसगुणट्ठाणभजिदसव्वजीवरासिभागहीणसव्वजीवरासी आग-

उदाहरण (बीजगणितसे)— $\frac{अ}{ब} = स; ब - ड नया भागहार;$

$$नया लब्ध = \frac{अ}{ब - ड} = \frac{ब स}{ब - ड} = स + \frac{स ड}{ब - ड};$$

$\frac{स ड}{ब - ड}$ इसे पुराने भजनफल स में जोड़नेसे नया भजन-
फल आ जाता है ।

(अंकगणितसे) — $\frac{३६}{१२} = ३; ९ नया भागहार;$

$$\frac{३ \times ३}{९} = १; ३ + १ = ४ नया भजनफल.$$

इन गाथाओंके द्वारा जो शिष्य प्रतिबोधित किया जा चुका है उसको पश्चिम विकल्प
बतलाया जाता है । वह इसप्रकार है—

शंका— सिद्धराशि और सासादनसम्यग्दृष्टि आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिका
मिथ्यादृष्टि जीवराशिमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उससे अधिक संपूर्ण जीवराशिका
संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर कौनसी राशि आती है ?

समाधान— सिद्धराशि और सासादनसम्यग्दृष्टि आदि तेरह गुणस्थानवर्ती राशिका
संपूर्ण जीवराशिमें भाग देने पर जो प्रमाण लब्ध आवे उतनी कम संपूर्ण जीवराशि आती
है, इसमें कुछ भी संदेह नहीं है । इसप्रकार कारणका वर्णन समाप्त हुआ ।

विशेषार्थ— यहाँ पर जो अन्तिम विकल्प बतलाया गया है उसका गणित पूर्व
निश्चित संकेतोंके अनुसार निम्न प्रकार बैठता है—

उदाहरण (बीजगणितसे)—

$$\frac{क^२}{क + \frac{ब}{अ}} = क - \frac{क}{अ}$$

(अंकगणितसे)—

$$\frac{१६^२}{१६ + \frac{३३}{३}} = १६ - \frac{१६}{३}$$

किन्तु एक तो गणितसे ये राशियां समान नहीं सिद्ध होतीं, और दूसरे
उनका जो फल निकलता है वह मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण न होनेसे प्रकृतमें उसका
कोई उपयोग दिखाई नहीं देता । बहुत कुछ सोच विचार करने पर भी हम इस
विषयमें ठीक निर्णय पर नहीं पहुंच सके । तथापि विषयके पूर्वापर प्रसंगको देखते हुए यहाँ
अन्तिम विकल्पमें वही बात आना चाहिये जिससे यह प्रकरण प्रारंभ हुआ है, और जिसका कि

च्छदि त्ति ण संदेहो (?) । कारणं गदं । तस्स का णिरुत्ती ? सिद्धतेरसगुणद्व्याणपमाणेण सव्वजीवरासिं भागे हिदे जं भागलद्धं तं विरलेऊण एकेकस्स रूवस्स सव्वजीवरासिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि सिद्धतेरसगुणद्व्याणपमाणं पावदि । तत्थ बहुखंडा मिच्छाद्द्विरासिपमाणं होदि । एयं खंडं सिद्धतेरसगुणद्व्याणपमाणं हवदि । णिरुत्ती गदा ।

यहां कारण बतलाया जा रहा है, अर्थात् सर्वजीवराशि व सिद्धतेरस गुणस्थानवर्ती राशिकी अपेक्षा ध्रुवराशिके द्वारा मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण निश्चित करना । तदनुसार पाठ कुछ निम्न प्रकार होना चाहिये था—

सिद्धतेरसगुणद्व्याणेण मिच्छाद्द्विभजिदसिद्धतेरसगुणद्व्याणवगणेण च अब्बहियसव्वजीवरासिणा सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे भागे हिदे किमागच्छदि ? सिद्धतेरसगुणद्व्याणहीणसव्वजीवरासी आगच्छदि त्ति ण संदेहो ।

अर्थात् सिद्धतेरस गुणस्थानवर्ती राशिसे अधिक और मिथ्यादृष्टि राशिसे भाजित सिद्धतेरसगुणस्थानवर्गसे अधिक सर्व जीवराशिका सर्व जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर क्या आता है ? सिद्धतेरसगुणस्थान राशिसे हीन सर्वजीवराशि आती है, इसमें संदेह नहीं ।

$$\text{उदाहरण (बीजगणितसे)} — \frac{क^2}{अ + \frac{अ^2}{ब} + क} = ब = क - ब \text{ (मिथ्यादृष्टि)}$$

$$\text{(अंकगणितसे)} — \frac{१६^2}{३ + \frac{१६}{३} + १६} = १३ = १६ - ३ \text{ (मिथ्यादृष्टि)}$$

शंका — इसकी अर्थात् मिथ्यादृष्टि जीवराशिके प्रमाणके निकालनेकी निरुक्ति क्या है ?

समाधान — सिद्धराशि और सासादनसम्यग्दृष्टि आदि तेरह गुणस्थानवर्ती राशिका संपूर्ण जीवराशिमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उसका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर संपूर्ण जीवराशिको समान खण्ड करके देयरूपसे स्थापित कर देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सिद्ध और सासादनसम्यग्दृष्टि आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवोंका प्रमाण प्राप्त होता है । उसमें अर्थात् विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त खण्डोंमें एक भाग कम बहुभागरूप मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण है और एक भाग सिद्ध और सासादनसम्यग्दृष्टि आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवोंका प्रमाण है । इसप्रकार निरुक्तिका वर्णन समाप्त हुआ ।

उदाहरण सर्वजीवराशि १६; सिद्धतेरस ३; $\frac{१६}{३} = ५\frac{१}{३}$;

३ ३ ३ ३ ३ १ इसप्रकार एक खण्ड ३ सिद्ध और सासादनादि तेरह गुणस्थान-
१ १ १ १ १ १ वर्ती जीवराशिका प्रमाण और शेष बहुभाग १३ मिथ्यादृष्टि
३ राशिका प्रमाण हुआ ।

जो सो वियप्पो सो दुविहो, हेड्डिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि । तत्थ हेड्डिमवियप्पं वत्तइस्सामो । तं जहा, वेरूवे हेड्डिमवियप्पो णत्थि । कारणं सब्वजीवरासीदो धुवरासी अब्भहिओ जादो त्ति । अट्टरूवे हेड्डिमवियप्पं वत्तइस्सामो । धुवरासिणा सब्वजीवरासिं गुणेऊण सब्वजीवरासिघणे भागे हिदे मिच्छाइड्डिरासी आगच्छदि । केण कारणेण ? जदि सब्वजीवरासिणा तस्स घणो अवहिरिज्जदि तो सब्वजीवरासिउवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो वि धुवरासिणा सब्वजीवरासिउवरिमवग्गो भागे हिदे मिच्छाइड्डिरासी आगच्छदि ? एवं मिच्छाइड्डिरासिमागमणं मणेणावहारिय गुणेऊण भागग्गहणं कदं । एत्थ दुगुणादिकरणं वत्तइस्सामो । तं जहा, सब्वजीवरासिणा सब्वजीवरासिघणे ओवड्डिदे सब्वजीवरासिउवरिमवग्गो आगच्छदि । दुगुणिसब्वजीवरासिणा सब्वजीवरासिघणे ओवड्डिदे सब्वजीवरासिउवरिमवग्गस्स दुभागो आगच्छदि । तिगुणिसब्वजीवरासिणा सब्वजीवरासिघणे ओवड्डिदे सब्वजीवरासिउवरिमवग्गस्स तिभागो आगच्छदि । अणेण

विकल्प दो प्रकारका है, अधस्तनविकल्प और उपरिमविकल्प । इन दोनोंमेंसे अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है—

द्विरूपवर्गधारामें (प्रकृतमें) अधस्तनविकल्प संभव नहीं है, क्योंकि, संपूर्ण जीवराशिसे ध्रुवराशिका प्रमाण अधिक है । अब अष्टरूप अर्थात् घनधारामें अधस्तनविकल्प बतलाते हैं । ध्रुवराशिसे संपूर्ण जीवराशिको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका संपूर्ण जीवराशिके घनमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है, क्योंकि, यदि संपूर्ण जीवराशिके प्रमाणसे संपूर्ण जीवराशिका घन अपहृत किया जाता है तो संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गका प्रमाण आता है । और फिर ध्रुवराशिके प्रमाणका संपूर्ण जीवराशिके प्रमाणके उपरिमवर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है । इसप्रकार मिथ्यादृष्टिरासि आती है इस बातको मनमें निश्चित करके पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया है ।

उदाहरण—जीवराशि १६; ध्रुवराशि १९ $\frac{१}{३}$; $१६ \times १९\frac{१}{३} = \frac{५०९६}{३}$;

जीवराशि १६ का घन $४०९६ \div \frac{५०९६}{३} = १२$ मिथ्यादृष्टि

अब यहां पर द्विगुणादिकरणविधिको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है— संपूर्ण जीवराशिके प्रमाणसे संपूर्ण जीवराशिके घनके अपवर्तित करने पर संपूर्ण जीवराशिके उपरिमवर्गका प्रमाण आता है ($४०९६ \div १६ = २५६$) । द्विगुणित संपूर्ण जीवराशिके प्रमाणसे संपूर्ण जीवराशिके घनके अपवर्तित करने पर संपूर्ण जीवराशिके उपरिमवर्गका दूसरा भाग आता है ($४०९६ \div ३२ = १२८$) । त्रिगुणित संपूर्ण जीवराशिके प्रमाणसे संपूर्ण जीवराशिके घनके अपवर्तित करने पर संपूर्ण जीवराशिके उपरिमवर्गके प्रमाणका तीसरा भाग आता है ($४०९६ \div ४८ = ८५\frac{१}{३}$) । इसप्रकार इसी विधिसे जबतक ध्रुवराशिका प्रमाण

विहाणेण गुणमारो वड्ढुवेदव्वो जाव धुवरासिपमाणं पत्तो त्ति । पुणो धुवरासिगुणिद-
सव्वजीवरासिणा सव्वजीवरासिघणे ओवट्टिदे सव्वजीवरासिउवरिमवग्गस्स धुवरासिभागो
आगच्छदि सो चेव मिच्छाद्दृष्टिरासी । एदेण कारणेण धुवरासिणा सव्वजीवरासिं गुणेऊण
सव्वजीवरासिघणे ओवट्टिदे मिच्छाद्दृष्टिरासी आगच्छदि त्ति ।

घणाघणे वत्तइस्सामो । धुवरासिणा सव्वजीवरासिं गुणेऊण तेण घणपढमवग्गमूले
गुणेऊण घणाघणपढमवग्गमूले ओवट्टिदे मिच्छाद्दृष्टिरासी आगच्छदि । केण कारणेण ?
घणपढमवग्गमूलेण घणाघणपढमवग्गमूले ओवट्टिदे सव्वजीवरासिस्स घणो आगच्छदि ।
पुणो वि सव्वजीवरासिणा सव्वजीवरासिघणे ओवट्टिदे सव्वजीवरासिउवरिमवग्गो
आगच्छदि । पुणो वि धुवरासिणा सव्वजीवरासिउवरिमवग्गो भागे हिदे मिच्छाद्दृष्टिरासी
आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । एत्थ दुगुणादिकरणे
कदे हेट्ठिमवियप्पो समप्पदि ।

१९.६३ प्राप्त नहीं है जाता है तबतक गुणकारको बढ़ते जाना चाहिये । पुनः धुवराशिसे
संपूर्ण जीवराशिको गुणित करने पर जो लब्ध आवे उससे संपूर्ण जीवराशिके घनके अपवर्तित
करने पर, संपूर्ण जीवराशिके उपरिमवर्गमें धुवराशिका भाग देने पर जो लब्ध आवे,
तत्प्रमाण भाग आता है, और वही मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण है । इसी कारणसे यह
कहा कि धुवराशिसे संपूर्ण जीवराशिको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे संपूर्ण जीव-
राशिके घनके अपवर्तित करने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण— $\frac{१६}{१} \times \frac{२५६}{१३} = \frac{४०९६}{१३}$; $\frac{४०९६}{१३} \div \frac{४०९६}{१३} = \frac{४०९६}{१३} \times \frac{१३}{४०९६} = १३$ मि.

अब घनाघनमें अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं । धुवराशिसे संपूर्ण जीवराशिको
गुणित करके जो गुणनफल आवे उससे जीवराशिके घनके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो
गुणनफल आवे उसके द्वारा घनाघनके प्रथम वर्गमूलको उद्वर्तित करने पर मिथ्यादृष्टि जीव-
राशिका प्रमाण आता है, क्योंकि, घनके प्रथम वर्गमूलसे घनाघनके प्रथम वर्गमूलको उद्वर्तित
करने पर संपूर्ण जीवराशिका घन आता है । अनन्तर संपूर्ण जीवराशिसे संपूर्ण जीवराशिके
घनके अपवर्तित करने पर संपूर्ण जीवराशिका उपरिम वर्ग आता है । अनन्तर धुवराशिका
संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।
घनाघनधारामें इसप्रकार जीवराशिका प्रमाण आता है, ऐसा समझ कर पहले गुणा करके,
अनन्तर, भागका ग्रहण किया है । यहां पर द्विगुणादिकरणके कर लेने पर अधस्तन विकल्प
समाप्त हो जाता है ।

उदाहरण—१६ के घनका प्रथम वर्गमूल ६४; घनाघनका प्रथम वर्गमूल २६२१४४;

$$\frac{१९}{१३} \times १६ \times ६४ = \frac{२६२१४४}{१३}; \frac{२६२१४४}{१} \div \frac{२६२१४४}{१३} = १३ \text{ मि.}$$

उपरिमवियप्पो तिविहो, गहिदो गहिदगहिदो गहिदगुणगारो चेदि । तत्थ गहिदं वत्तइस्सामो । धुवरासिणा सव्वजीवरासिउपरिमवग्गे भागे हिदे किमागच्छदि ? मिच्छा-इट्ठिरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्तवारं रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे मिच्छाइट्ठिरासी चेव अवचिद्धे । केण कारणेण ? धुवरासिस्स अद्धच्छेदणयसलागा जदि सव्वजीवरासिअद्धच्छेदणयसलागाहि सरिसा त्ति वेपंति तो धुवरासिं अद्धच्छेदण छिदिऊणु-व्वराविदरासिपमाणं सव्वजीवरासिं मिच्छाइट्ठिरासिणा खंडिदपमाणं होदि । एवं होदि त्ति काऊण सव्वजीवरासिअद्धच्छेदणयं सलागभूदं इवेऊण सव्वजीवरासिउपरिमवग्गे अद्धच्छेदण छिणे सव्वजीवरासी आगच्छदि । पुणो मिच्छाइट्ठिरासिणोवट्ठिदसव्वजीवरासिणा उपरिम-

उपरिम विकल्प तीन प्रकारका है, गृहीत, गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकार । उनमेंसे पहले गृहीत उपरिम विकल्पको दिखलाते हैं—

शंका — धुवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर कौनसी राशि आती है ?

समाधान—मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ($२५६ \div २३ = ११$) ।

धुवराशिप्रमाण भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार जीवराशिके उपरिमवर्गरूप राशिके अर्धच्छेद करने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि ही आ जाती है ।

उदाहरण—धुवराशि $१९\frac{१}{३}$ है । इसमेंसे १६ के अर्धच्छेद ४ होते हैं । शेष $३\frac{१}{३}$ के चौथे अर्धच्छेद पर $\frac{१}{३}$ अधिक रहता है, इसलिये $१९\frac{१}{३}$ के $\frac{१}{३}$ अधिक ४ अर्ध-च्छेद हुए । अतएव जीवराशि १६ के वर्ग २५६ के इतनीवार अर्थात् ४ + $\frac{१}{३}$ वार अर्धच्छेद करने पर १३ आ जाते हैं ।

शंका—भागहारराशिके अर्धच्छेदप्रमाण जीवराशिके उपरिम वर्गके अर्धच्छेद करने पर मिथ्यादृष्टि राशि किस कारणसे आती है ?

धुवराशिकी अर्धच्छेदशलाकारं संपूर्ण जीवराशिकी अर्धच्छेदशलाकारोंके बराबर होती है, यदि ऐसा ग्रहण कर लिया जाता है तो धुवराशिको अर्धार्धरूपसे छिन्न करके शेष रही हुई राशिका प्रमाण, संपूर्ण जीवराशिको मिथ्यादृष्टि राशिसे खण्डित करने पर जो लब्ध आता है, उतना होता है ($१६ \div १३ = १\frac{३}{१३}$) । इसप्रकार होता है, इसलिये संपूर्ण जीवराशिके अर्धच्छेदोंको शलाकारूपसे स्थापित करके संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गको अर्धच्छेदोंके बराबर छिन्न करने पर संपूर्ण जीवराशिका प्रमाण आ जाता है । अनन्तर मिथ्या-दृष्टि जीवराशिके द्वारा उद्घातित संपूर्ण जीवराशिके प्रमाणसे ऊपर उत्पन्न की हुई संपूर्ण जीव-राशिमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—जीवराशि १६ के अर्धच्छेद ४ के बराबर जीवराशि के वर्ग २५६ के अर्ध-च्छेद करने पर १६ लब्ध आते हैं । अनन्तर मिथ्यादृष्टिके प्रमाणसे भाजित जीवराशिके प्रमाण

सर्वजीवरासिभिः भागे हिदे मिच्छाद्द्विरासि आगच्छदि । अथवा ध्रुवरासिअद्धच्छेदणया जदि सर्वजीवरासिउवरिमवग्गस्स अद्धच्छेदणयसरिसा हवंति तो अद्धद्वेण छिण्णावसिद्धरासिपमाणं मिच्छाद्द्विरासिणा एगरूवं खंडिदेगखंडपमाणं होदि । पुणो ध्रुवरासिअद्धच्छेदणए सलागा काऊण सर्वजीवरासिउवरिमवग्गे अद्धद्वेण छिण्णे एगरूवमामगच्छदि । पुणो तमेगरूवं मिच्छाद्द्विरासिभिजिदेगरूवेण भागे हिदे मिच्छाद्द्विरासि आगच्छदि त्ति । अथवा ध्रुवरासिणा सर्वजीवरासिस्सुवरिमवग्गं गुणेऊण तदुवरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाद्द्विरासि आगच्छदि त्ति । केण कारणेण ? सर्वजीवरासिउवरिमवग्गेण तदुवरिमवग्गे भागे हिदे सर्वजीवरासिस्स उवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो ध्रुवरासिणा सर्वजीवरासिउवरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाद्द्विरासि आगच्छदि त्ति । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स

१/३ का जीवराशिके प्रमाण १६ में भाग देने पर १३ मिथ्यादृष्टिका प्रमाण लब्ध आता है ।

अथवा, ध्रुवराशिके अर्धच्छेद यदि संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गके अर्धच्छेदोंके समान होते हैं तो उत्तरोत्तर अर्धाधरूपसे छिन्न करनेके अनन्तर अवशिष्ट रही राशिका प्रमाण, मिथ्यादृष्टि जीवराशिसे एक रूपको खंडित करके जो एक भाग आता है, उतना होता है । अनन्तर ध्रुवराशिके अर्धच्छेदोंको शलाकारूपसे स्थापित करके संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गको अर्धाधरूपसे छिन्न करने पर एक आता है । अनन्तर उस एकको मिथ्यादृष्टि जीवराशिके प्रमाणसे भक्त एकके द्वारा भाजित करने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आ जाती है ।

उदाहरण—१६ के उपरिम वर्ग २५६ के अर्धच्छेद ८ के बराबर ध्रुवराशि १९ १/३ के अर्धच्छेद करने पर आठवां अर्धच्छेद १/३ होता है जो १ में मिथ्यादृष्टिके प्रमाण १३ के भाग देने पर जो लब्ध आता है उतनेके बराबर है । पुनः इन ८ अर्धच्छेदोंको शलाका करके २५६ के इतनी बार अर्धच्छेद करने पर १ आता है । पुनः इस १ में १/३ का भाग देने पर १३ लब्ध आते हैं, यही मिथ्यादृष्टिराशि है ।

अथवा, ध्रुवराशिके द्वारा संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका उसके उपरिम वर्गमें (जीवराशिके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें) भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आ जाती है, क्योंकि, संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गका उसके उपरिम वर्गमें भाग देने पर संपूर्ण जीवराशिका उपरिम वर्ग आता है । पुनः ध्रुवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—सर्व जीवराशिका उपरिम वर्ग २५६; सर्व जीवराशिके उपरिम वर्ग २५६ का उपरिम वर्ग ६५५३६;

$$\frac{256}{13} \times \frac{256}{1} = \frac{65536}{13}; \quad \frac{65536}{1} \div \frac{65536}{13} = 13 \text{ मि.}$$

उक्त भागहारके अर्धच्छेदप्रमाण उक्त राशिके अर्धच्छेद करने पर भी मिथ्यादृष्टि

अद्वच्छेदणए कदे मिच्छाइद्विरासी आगच्छदि । एदस्स भागहारस्स अद्वच्छेदणयसलागा केत्तिया ? सव्वजीवरासीदो उवरि दोण्णि वग्गद्वाराणाणि चाडिदाणि त्ति दो रूवे विरलिय विगं करिय अण्णोण्णभत्थरासिरूवूणेण गुणिदसव्वजीवरासिअद्वच्छेदणयमेत्ता होऊण अंतिमभागहारेण अधिया भवंति । एवं भागहारस्स तिगच्छेदणए सलागा काऊण तीहि तीहि सरूवेहि रासिम्मि भागे हिदे वि मिच्छाइद्विरासी आगच्छदि । एवं चउक्कादि-छेदणयसलागाहि वि रासिम्मिह छिज्जमाणे मिच्छाइद्विरासी आगच्छदि त्ति परूवेदवं । एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु वग्गद्वाराणेषु उवरि वत्तवं । णवरि भागहारच्छेदणाओ संकलिज्जमाणे एवं संकलेदव्वाओ । तं जहा, सव्वजीवरासीदो चडिद्वाराणमेत्तवग्गसलागाओ विरलिय विगं करियण्णोण्णभत्थरासिरूवूणेण सव्वजीवरासिच्छेदणए गुणिदे भागहार-

जीवराशि आती है ।

शंका—इस भागहारकी अर्धच्छेदशलाकाएं कितनी हैं ?

समाधान—संपूर्ण जीवराशिके ऊपर दो वर्गस्थान जाकर वह भागहार उत्पन्न हुआ है, इसलिये दोका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो संख्या उत्पन्न हो उसमेंसे एक कम करके अवशिष्ट राशिके द्वारा संपूर्ण जीवराशिके अर्धच्छेदोंको गुणित करके जो प्रमाण आवे उसे अन्तिम भागहारसे अधिक करने पर अर्धच्छेदशलाकाएं होती हैं ।

उदाहरण— $2 \times 2 = 4 - 1 = 3 \times 4 = 12$ पूर्ण, और $\frac{3}{2}$ अधिक उक्त भागहारके कुल

अर्धच्छेद होते हैं ।

इसीप्रकार भागहारके त्रिकच्छेदोंको शलाका करके तीन तीनका राशिमें भाग देने पर भी मिथ्यादृष्टि जीवराशि आ जाती है । इसीप्रकार चतुर्थ आदि छेद शलाकाओंके द्वारा भी राशिके छिन्न करने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है, ऐसा कथन करना चाहिये ।

उदाहरण— $\frac{256}{13}$ के $\frac{22}{13}$, $\frac{22}{13}$ इसप्रकार २ त्रिकच्छेद हैं, अतः इतनीवार २५६ में ३ का भाग देने पर १३ लब्ध आ जाते हैं ।

इसीप्रकार संख्यात असंख्यात और अनन्त वर्गस्थानोंके ऊपर भी कथन करना चाहिये । इतनी विशेषता है कि भागहारके अर्धच्छेदोंका संकलन करते समय इसप्रकार संकलन करना चाहिये । अगे उसीका स्पष्टीकरण करते हैं—

संपूर्ण जीवराशिसे जितने वर्गस्थान ऊपर गये हों उतनी वर्गशलाकाओंका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसमेंसे एक कम करके शेष राशिसे संपूर्ण जीवराशिके अर्धच्छेदोंको गुणित करने

छेदणया भवन्ति । सव्यत्थ दुगुणादिकरणं पि वत्तव्यं । तदो वेरुवधारापरुवणा समत्ता भवदि ।

अट्टरुवधाराए गहिदं वत्तइस्सामो । धुवरासिणा सव्वजीवरासिउवरिमवग्गस्सु-
वरिमवग्गं गुणेऊण तेण घणउवरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाद्द्विरासी आग-
च्छदि । केण कारणेण ? सव्वजीवरासिउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गेण घणउवरिम-
वग्गे भागे हिदे सव्वजीवरासिउवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो वि धुवरासिणा
सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाद्द्विरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि
त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । तस्स भागहारस्स अट्टच्छेदणयमेत्ते रासिस्स
अट्टच्छेदणए कदे वि मिच्छाद्द्विरासी चेव अवचिद्वे । तस्स भागहारस्स अट्ट-
च्छेदणया केत्तिया ? एगरूवं विरलिय विगं करिय अण्णोण्णमत्थरासिणा तिगुण-

पर भागहार राशिके अर्धच्छेद होते हैं । सर्वत्र द्विगुणादिकरणका भी कथन करना चाहिये ।
तब जाकर त्रिरूप वर्गधाराका प्ररूपण समाप्त होता है ।

अब अष्टरूपधारा अर्थात् घनधारामें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—
धुवराशिके द्वारा संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको गुणित करके जो
लब्ध आवे उसका जीवराशिके घनके उपरिम वर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि
आ जाती है, क्योंकि, संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गका जीवराशिके घनके
उपरिम वर्गमें भाग देने पर संपूर्ण जीवराशिका उपरिम वर्ग आता है । अनन्तर धुवराशिका
संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है । घनधारामें इस-
प्रकार मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण
किया है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{१६^३ \times १६^३ \times २५६}{१ \times १ \times १३} = \frac{१६७७७२१६}{१३},$$

$$\frac{१६७७७२१६}{१} \div \frac{१६७७७२१६}{१३} = १३ \text{ मिथ्यादृष्टि.}$$

उक्त भागहारके अर्धच्छेदप्रमाण उक्त राशिके अर्धच्छेद करने पर भी मिथ्यादृष्टि
जीवराशि ही आ जाती है ।

शंका — उक्त भागहारके अर्धच्छेद कितने हैं ?

समाधान — एकका विरलन करके और उसे दो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो
राशि आवे उसे त्रिगुणित करके और उसमेंसे एक कम करके जो राशि रहे उससे संपूर्ण

१ प्रतिपु 'रासिणा गुण-' इति पाठः ।

रूवूणेण गुणिदसव्वजीवरासिच्छेदणयमेत्ता हवंति । उवरि सव्वत्थ दोरूवादीणमण्णोण्ण-
व्वत्थरासिणा तिगुणरूवूणेण गुणिदसव्वजीवरासिच्छेदणयमेत्ता हवंति । एवं संखेज्जा-
संखेज्जाणंतेसु णेयव्वं । सव्वत्थ दुगुणादिकरणं कायव्वं । एवं कदे अट्टपरूवणा
समत्ता भवदि ।

घणाघणे गहिदं वत्तइस्सामो । धुवरासिणा सव्वजीवरासिउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गं
गुणेऊण तेण घणउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गं गुणेऊण तेण घणाघणउवरिमवग्गे भागे हिदे
मिच्छाइद्विरासी आगच्छदि । केण कारणेण ? घणउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गेण घणाघण-
उवरिमवग्गे भागे हिदे घणउवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो वि सव्वजीवरासिउवरिम-
वग्गस्सुवरिमवग्गेण घणउवरिमवग्गे भागे हिदे सव्वजीवरासिउवरिमवग्गो आगच्छदि ।
पुणो वि धुवरासिणा सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाइद्विरासी आगच्छदि ।
एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । तस्स भागहारस्स अट्टच्छेदणयमेत्ते

जीवराशिके अर्धच्छेदोंको गुणित करने पर जो संख्या आवे उतने उक्त भागहारके अर्धच्छेद
होते हैं ।

उदाहरण— $2 = 2 \times 3 = 6 - 1 = 4 \times 8 = 20$ अर्धच्छेद; पर अन्तिम $1\frac{3}{4}$ होगा ।

ऊपर सर्वत्र दो संख्या आदिका परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसे
त्रिगुणित करके और उस त्रिगुणित राशिमसे एक कम करके शेष राशिले संपूर्ण जीवराशिके
अर्धच्छेदोंको गुणित करने पर अर्धच्छेदोंका प्रमाण होता है । इसीप्रकार संख्यात असंख्यात
और अनन्त स्थानोंमें भी लगा लेना चाहिये । सर्वत्र द्विगुणादिकरण भी करना चाहिये । इस-
प्रकार करने पर घनधारा समाप्त होती है ।

अब घनाघनधारामें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—धुवराशिले संपूर्ण
जीवराशिके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे
जीवराशिके घनके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका
घनाघनके उपरिम वर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है, क्योंकि, घनके
उपरिम वर्गके उपरिम वर्गका घनाघनके उपरिम वर्गमें भाग देने पर घनका उपरिम वर्ग आता
है । फिर संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गका घनके उपरिम वर्गमें भाग देने पर
संपूर्ण जीवराशिका उपरिम वर्ग आता है । फिर धुवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें
भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है । घनाघनधारामें इसप्रकार मिथ्यादृष्टि जीव-
राशि आती है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया है ।

उदाहरण— $16^3 \times 16^3 \times 16^3 = 640198464000$;

$$\frac{640198464000}{256} = 2500000$$

$$640198464000 \times \frac{256}{16} \times 160000000000$$

रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि मिच्छाद्द्विरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्ध-
च्छेदणया केत्तिया ? एगरूवं विरलेऊण विगं करिय अण्णोण्णभत्थरासिणा णवगुण-
रूवूणेण सव्वजीवरासिच्छेदणए गुणिदमेत्ता । उवरि सव्वत्थ चडिदद्धानसलागाओ
विरलिय विगं करिय अण्णोण्णभत्थरासिणा णवगुणरूवूणेण गुणिदसव्वजीवरासिच्छेदण-
यमेत्ता भवंति । एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं । सव्वत्थ दुगुणादिकरणं पि कायव्वं ।
एवं कदे घणाघणपरूवणा समत्ता भवदि ।

गहिदगहिदं वत्तइस्सामो । सव्वजीवरासिउवरिमवग्गस्स अणंतिमभागेण मिच्छाद्द्वि-
रासिणा उवरि इच्छिदवग्गे भागे हिदे जो भागलद्धो तेण तम्हि चैव वग्गे भागे हिदे

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त राशिके अर्धच्छेद करने पर भी
मिथ्यादृष्टि जीवराशि आ जाती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके ६८ अर्धच्छेद होंगे, पर अन्तिम अर्धच्छेद $१\frac{३}{४}$ होगा ।
अतः इतनीवार उक्त भाग्य राशिके छेद करने पर लब्ध १३ मिथ्यादृष्टि राशि आती है ।

शंका—उक्त भागहारके अर्धच्छेद कितने हैं ?

समाधान—एकका विरलन करके और उसे दो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो
राशि उत्पन्न हो उसे नौ से गुणा करके जो लब्ध आवे उसमेंसे एक कम करके जो राशि शेष
रहे उसे संपूर्ण जीवराशिके अर्धच्छेदोंसे गुणित कर देने पर जो राशि आवे उतने उक्त
भागहारके अर्धच्छेद हैं ।

उदाहरण— $२ = २ \times ९ = १८ - १ = १७ \times ४ = ६८$.

आगे सर्वत्र जितने स्थान ऊपर जावें तत्प्रमाण शलाकाओंका विरलन करके और
उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि
उत्पन्न हो उसे नौसे गुणा करके जो लब्ध आवे उसमेंसे एक कम करके शेष राशिको संपूर्ण
जीवराशिके अर्धच्छेदोंसे गुणित कर दे । ऐसा करने पर घनाघनधारा में विवक्षित भागहारके
अर्धच्छेद आ जावेंगे । इसीप्रकार घनाघनधाराके संख्यात, असंख्यात और अनन्त वर्गस्थानोंमें
भी लगा लेना चाहिये । सर्वत्र द्विगुणादिकरण भी कर लेना चाहिये । इसप्रकार करने पर
घनाघनधाराकी प्ररूपणा समाप्त होती है ।

अब गृहीतगृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गके
अनन्तिम भागरूप मिथ्यादृष्टि जीवराशिका ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो भाग लब्ध
आवे उसका उसी वर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—उपरिम वर्ग २५६ का इच्छित वर्ग ६५५३६

$$\frac{६५५३६}{१} \div \frac{१३}{१} = \frac{६५५३६}{१३}; \quad \frac{६५५३६}{१} \div \frac{६५५३६}{१३} = १३ \text{ मिथ्यादृष्टि.}$$

मिच्छाइटिरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि मिच्छाइटिरासी चेव अवचिट्ठे । तस्सद्धच्छेदणया केत्तिया ? मिच्छाइटिरासि-अद्धच्छेदणएणूणतन्मज्जिदरासिअद्धच्छेदणयमेत्ता । एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं । वेरुवपरुवणा गदा । अट्ठरुवं वत्तइस्सामो । सव्वजीवरासिघणस्स अणंतिमभागेण उवरि इच्छिदवग्गे भागे हिदे जो भागलद्धो तेण तम्हि चेव वग्गे भागे हिदे मिच्छाइटिरासी आग-च्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि मिच्छाइटिरासी आगच्छदि त्ति । एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं । एवमट्ठरुवपरुवणा गदा । घणाघणे वत्तइस्सामो । घणाघणपढमवग्गमूलस्स अणंतिमभागेण उवरि इच्छिदवग्गे

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त राशिके अर्धच्छेद करने पर भी मिथ्यादृष्टि जीवराशि ही आती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके १२ अर्धच्छेद होंगे, पर अन्तिम अर्धच्छेद $१\frac{३}{३}$ होगा। अतः इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर मिथ्यादृष्टि राशि १३ आती है ।

शंका—उक्त भागहारके अर्धच्छेद कितने हैं ?

समाधान—जिस राशिमें मिथ्यादृष्टि राशिका भाग दिया गया है उसके अर्धच्छेदोंमेंसे मिथ्यादृष्टि राशिके अर्धच्छेद कम कर देने पर उक्त भागहारके अर्धच्छेद होते हैं । इसीप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्त वर्गस्थानोंमें भी लगा लेना चाहिये । इसप्रकार गृहीतगृहीत उपरिम विकल्पमें द्विरूपवर्गधाराकी प्ररूपणा समाप्त हुई । अब गृहीतगृहीत उपरिम विकल्पमें अष्टरूप अर्थात् घनधाराको बतलाते हैं—

संपूर्ण जीवराशिके घनके अनन्तिम भागका ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उसका उसी वर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—घनराशि ४०९६ का इच्छित वर्ग १६७७७२१६;

$$\frac{१६७७७२१६}{१} \div \frac{१३}{१} = \frac{१६७७७२१६}{१३}; \frac{१६७७७२१६}{१} \div \frac{१६७७७२१६}{१३} = १३ \text{ मिथ्यादृष्टि.}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भाज्य राशिके अर्धच्छेद करने पर भी मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके २० अर्धच्छेद होंगे पर अन्तिम अर्धच्छेद $१\frac{३}{३}$ होगा। अतः इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर मिथ्यादृष्टि राशि १३ आती है ।

इसीप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्त स्थानोंमें भी लगा लेना चाहिये । इसप्रकार गृहीतगृहीत उपरिम विकल्पमें घनधाराकी प्ररूपणा समाप्त हुई । अब घनाघनधारामें गृहीत-गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—

घनाघनके प्रथम वर्गमूलके अनन्तिम भागका ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो

भागे हिदे जो भागलद्धो तेण तम्हि चेष वग्गे भागे हिदे मिच्छाद्द्विरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि मिच्छाद्द्विरासी चेष आगच्छदि । (एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं) । एवं घणाघणपरूवणा मदा । गहिद- गहिदं गदं ।

गहिदगुणगारं वत्तइस्सामो । वेरूवे सव्वजीवरासिउवरिमवग्गस्स अणंतिमभागेण उवरि इच्छिदवग्गे भागे हिदे जो भागलद्धो तेण तमेव वग्गं गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाद्द्विरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि मिच्छाद्द्विरासी चेष अवचिद्वुदे । एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं ।

भाग लब्ध आवे उसका उसी वर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—घनाघनका प्रथम वर्गमूल २६२१४४;

$$\frac{२६२१४४}{१} \div \frac{१३}{१} = \frac{२६२१४४}{१३}; \quad \frac{२६२१४४}{१} \div \frac{२६२१४४}{१३} = १३ \text{ मिथ्यादृष्टि.}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भाज्य राशिके अर्धच्छेद करने पर भी मिथ्यादृष्टि राशि ही आती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके ३२ अर्धच्छेद होंगे पर अन्तिम अर्धच्छेद $१\frac{३}{४}$ होता है ।

अतः इतनीवार उक्त भाज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर मिथ्यादृष्टि राशि १३ आती है ।

(इसीप्रकार संख्येय, असंख्येय और अनन्त वर्गस्थानोंमें भी लगा लेना चाहिये) । इसप्रकार गृहीतगृहीत उपरिम विकल्पमें घनाघनकी प्ररूपणा समाप्त हुई । इसप्रकार गृहीतगृहीत उपरिम विकल्पका कथन समाप्त हुआ ।

अब गृहीतगुणकार उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—द्विरूप वर्गधारामें संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गके अनन्तवें भागका ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उससे उसी वर्गराशिकी गुणित करके जो लब्ध आवे उसका उक्त वर्गराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—उपरिम वर्ग २५६ का इच्छित वर्ग ६५५३६;

$$\frac{६५५३६}{१} \div \frac{१३}{१} = \frac{६५५३६}{१३}; \quad \frac{६५५३६}{१३} \times \frac{६५५३६}{१} = \frac{६५५३६^२}{१३};$$

$$\frac{६५५३६^२}{१} \div \frac{६५५३६^२}{१३} = १३ \text{ मिथ्यादृष्टि.}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भाज्य राशिके अर्धच्छेद करने पर भी मिथ्यादृष्टि जीवराशि ही आती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके २८ अर्धच्छेद होते हैं । अन्तिम अर्धच्छेद $१\frac{३}{४}$ होता है ।

अतः इतनीवार उक्त भाज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर मिथ्यादृष्टि राशि १३ आती है ।

इसप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्त वर्गस्थानोंमें भी लगा लेना चाहिये । इसप्रकार

वेरूपवरूपणा गदा । अट्टरूवे वत्तइस्सामो । घणस्स अणंतिमभागेण उवरि इच्छिदवग्गे भागे हिदे जो भागलद्धो तेण तमेव वग्गं गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाइट्टिरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि मिच्छाइट्टिरासी चेव आगच्छदि । एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं । अट्टपरूपणा गदा । घणाघणे वत्तइस्सामो । घणाघणपठमवग्गमूलस्स अणंतिमभागेण उवरि इच्छिदवग्गे भागे हिदे जो भागलद्धो तेण तमेव वग्गं गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाइट्टिरासी

गृहीतगुणकार उपरिम विकल्पमें द्विरूप वर्गधाराकी प्ररूपणा समाप्त हुई। अब अष्टरूप धारामें गृहीतगुणकार उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—

घनके अनन्तिम भागका ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो लब्ध आवे उससे उसी वर्गराशिको गुणित करके लब्ध राशिका उक्त वर्गराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है।

उदाहरण—घनराशि ४०९६ का इच्छित वर्ग १६७७७२१६;

$$\frac{१६७७७२१६}{१} \div \frac{१३}{१} = \frac{१६७७७२१६}{१३}; \quad \frac{१६७७७२१६}{१३} \times \frac{१६७७७२१६}{१}$$

$$= \frac{१६७७७२१६^२}{१३}; \quad \frac{१६७७७२१६^२}{१} \div \frac{१६७७७२१६^२}{१३} = १३ \text{ मिथ्यादृष्टि.}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भाग्य राशिके अर्धच्छेद करने पर भी मिथ्यादृष्टि जीवराशि ही आती है।

उदाहरण—उक्त भागहारके ४४ अर्धच्छेद प्रमाण उक्त राशिके अर्धच्छेद करने पर मिथ्यादृष्टि राशि १३ लब्ध आती है।

इसीप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्त स्थानोंमें भी लगा लेना चाहिये। इसप्रकार गृहीतगुणकार उपरिम विकल्पमें अष्टरूप प्ररूपणा समाप्त हुई। अब घनाघनधारामें उसीको बतलाते हैं—

घनाघनके प्रथम वर्गमूलके अनन्तिम भागका ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उससे उसी वर्गराशिको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका उक्त वर्ग राशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है।

उदाहरण—घनाघनके प्रथम वर्गमूल २६२१४४ का इच्छित वर्ग ६८७१९४७६७३६;

$$\frac{६८७१९४७६७३६}{१} \div \frac{१३}{१} = \frac{६८७१९४७६७३६}{१३};$$

$$\frac{६८७१९४७६७३६}{१} \times \frac{६८७१९४७६७३६}{१३} = \frac{६८७१९४७६७३६^२}{१३};$$

$$\frac{६८७१९४७६७३६^२}{१} \div \frac{६८७१९४७६७३६^२}{१३} = १३ \text{ मिथ्यादृष्टि.}$$

आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्वच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्वच्छेदणए कदे वि मिच्छा-
इडिरासी चेव आगच्छदि । एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतैसु णेयच्चं । घणाघणपरूवणा गदा ।

(सासणसम्माइडिपहुडि जाव संजदासंजदा ति द्व्यपमाणेण
केवडिया ? पलिदोवमस्स असंखेज्जादिभागो । एदेहि पलिदोवम-
मवहिरिज्जदि अंतोमुहुत्तेणं ॥ ६ ॥)

एत्थ ताव सासणसम्माइडिरासिस्स पमाणपरूवणं वत्तइस्सामो । सासणसम्माइडि
द्व्यपमाणेण केवडिया ? पलिदोवमस्स असंखेज्जादिभागो । खेत्तकालपमाणेहि किमिदि

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भाज्य राशिके अर्धच्छेद करने
पर भी मिथ्यादृष्टि जीवराशि ही आती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके ६८ अर्धच्छेद होते हैं, अतः इतनीवार उक्त भज्यमान
राशिके अर्धच्छेद करने पर मिथ्यादृष्टि राशि १३ आती है ।

इसीप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्त स्थानोंमें भी लगा लेना चाहिये । इसप्रकार
गृहतिगुणकार उपरिम विकल्पमें घनाघनपरूपणा समाप्त हुई ।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानतक प्रत्येक गुण-
स्थानवर्ती जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र हैं ।
इन चार गुणस्थानोंमें प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंके प्रमाणकी अपेक्षा अन्तर्मुहूर्तसे पल्योपम
अपहृत होता है ॥ ६ ॥

उनमेंसे पहले यहां सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण बतलाते हैं—

सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितनी है ? पल्योपमके
असंख्यातवें भागमात्र है ।

विशेषार्थ — आगे अंकसंदृष्टिसे सासादनसम्यग्दृष्टि आदि चार गुणस्थानवर्ती
जीवराशिका प्रमाण लानेके लिये पल्योपमका प्रमाण ६५५३६ और सासादनसम्यग्दृष्टि जीव-
राशिका प्रमाण लानेके लिये अवहारकालका प्रमाण ३२ कल्पित किया है । इसप्रकार सासा-
दनसम्यग्दृष्टिके अवहारकाल ३२ का ६५५३६ प्रमाण पल्योपममें भाग देने पर सासादन-
सम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण २०४८ आता है जो कि पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र है ।
अर्थपरूपणा भी इसीप्रकार जान लेना चाहिये ।

शंका—यहां क्षेत्रप्रमाण और कालप्रमाणकी अपेक्षासे भी सासादनसम्यग्दृष्टि

१ सासादनसम्यग्दृष्टवः सम्यङ्मिथ्यादृष्टयोऽसंयतसम्यग्दृष्टवः संयतासंयताश्च पल्योपमासंख्येयभागप्रमिताः ।
स. सि., १, ८. मिच्छा सावयसासणमिस्साविस्सा दुवारणंता य। पल्लासंखेज्जदिममसंखगुणं संखसंखगुणं ॥ गो. जी. ६२४.
पल्योपसंख्यातभागास्तु परे गुणचतुष्टये । पं. सं. ५९. सासायणइचउरो होंति असंखा ॥ पञ्चसं. २, २२.

सासणसम्माइडिपरूवणा ण परूविदा ? ण, एत्थ मिच्छाइडिस्सिव तेहि परूवेदव्वस्स कारणाभावा । किं तत्थ कारणं ? बुच्चदे—असंखेज्जपएसिए लोए कधमणंतो जीवरासी सम्मादि ति जादसंदेहणिराकरणद्वं खेत्तपमाणं बुच्चदे । आयविरहिदस्स सिज्जंतजीवे अवेक्खिय सव्वयस्स सव्वजीवरासिस्स किं वोच्छेदो होदि, ण होदि ति जादसंदेहणिराकरणद्वं कालपमाणं परूविज्जदि । ण च एदेसु कारणेसु एकं पि कारणमेत्थ संभवइ, अणुवलंभादो । तम्हा खेत्तकालपरूवणा सासणादीणं गंथे ण परूविदा । एत्थ

जीवराशिका प्ररूपण क्यों नहीं किया ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, जिसप्रकार मिथ्यादृष्टि जीवराशिका क्षेत्रप्रमाण और कालप्रमाणकी अपेक्षासे प्ररूपण करनेका कारण था, उसप्रकार यहां पर उक्त दोनों प्रमाणोंके द्वारा सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिके प्ररूपण करनेका कोई कारण नहीं है । अतएव उक्त प्रमाणोंके द्वारा सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्ररूपण नहीं किया ।

शंका—वहां पर उक्त दोनों प्रमाणोंके द्वारा मिथ्यादृष्टि जीवराशिके प्ररूपण करनेका क्या कारण है ?

समाधान—असंख्यात प्रदेशी लोकमें अनन्तप्रमाण जीवराशि कैसे समा जाती है, इसप्रकारसे उत्पन्न हुए संदेहके दूर करनेके लिये क्षेत्रप्रमाणका कथन किया जाता है । तथा आयरहित और सिद्धयमान जीवोंकी अपेक्षा व्ययसहित संपूर्ण जीवराशिका विच्छेद होता है या नहीं, इसप्रकार उत्पन्न हुए संदेहके दूर करनेके लिये कालप्रमाणका प्ररूपण किया जाता है । परंतु इन कारणोंमेंसे यहां पर एक भी कारण संभव नहीं है, क्योंकि, यहां पर कोई भी कारण नहीं पाया जाता है । अतः क्षेत्रप्रमाण और कालप्रमाणके द्वारा सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्ररूपण ग्रन्थमें नहीं किया ।

विशेषार्थ—शंकाकारका कहना है कि जिसप्रकार पहले मिथ्यादृष्टि जीवराशिके प्रमाणका प्ररूपण करते समय 'अणंताणंताहि ओसप्पिणुस्सप्पिणीहि ण अवहिरंति कालेण' इस सूत्रके द्वारा मिथ्यादृष्टि जीवराशिका कालकी अपेक्षा प्रमाण कहा है, और 'खेत्तेण अणंताणंता लोगा' इस सूत्रके द्वारा मिथ्यादृष्टि जीवराशिका क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण कहा है, उसीप्रकार प्रकृतमें भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण क्षेत्र और कालप्रमाणकी अपेक्षासे कहना चाहिये । शंकाकारकी इस शंकाका समाधान इसप्रकार समझना चाहिये कि मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तानन्त होते हैं, अतएव उनका असंख्यातप्रदेशी लोकाकाशमें रहना असंभव है ऐसी शंका किसीको हो सकती है । अतः इसके परिहारके लिये मिथ्यादृष्टि जीवराशिका क्षेत्रप्रमाणकी अपेक्षा प्ररूपण किया । दूसरे, मोक्षको जानेवाले जीवोंकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि जीवराशिका व्यय तो निरंतर चालू है पर उनकी वृद्धि कभी भी नहीं होती इसलिये उनका अभाव हो जायगा, ऐसी शंका भी किसीको हो सकती है, अतएव इसके परिहार करनेके लिये कालप्रमाणकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्ररूपण किया कि अनन्तानन्त

भागहारपमाणमंतोमुहुत्तमिदि सासणसम्माइट्ठिआदिरासिपमाणविसयणिण्णमुप्पायणडुं परू-
विदं । तं च अंतोमुहुत्तमणेयवियप्पं, तदो एत्तियमिदि ण जाणिज्जदि । तत्थ णिच्छय-
जणणणिमित्तं किंचि अद्वापरूवणं कस्सामो । तं कधं ? असंखेज्जे समए घेत्तूण एया
आवलिया हवदि । तप्पाओग्गसंखेज्जावलियाओ घेत्तूण एगो उस्सासो हवदि । सत्त
उस्सासे घेत्तूण एगो थोवो हवदि । सत्त थोवे घेत्तूण एगो लवो हवदि । अठतीस लवे
अद्धलवं च घेत्तूण एया णालिया हवदि । उत्तं च—

(आवलि असंखसमया संखेज्जावलिसमूह उस्सासो ।
सत्तुस्सासो थोवो सत्तथोवा लवो एक्को ॥ ३३ ॥)

उत्सर्पिणियों और अवसर्पिणियोंके हो जाने पर भी मिथ्यादृष्टि जीवराशि समाप्त नहीं हो सकती है । परंतु सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके संबन्धमें इन दोनों प्रश्नोंमेंसे कोई प्रश्न उपस्थित नहीं होता है, क्योंकि, वे केवल पल्योपमके असंख्यातवै भागप्रमाण हैं । अतः उनकी लोकाकाशमें अवस्थिति कैसे होगी, यह बात नहीं कही जा सकती है । और सासादनसम्यग्दृष्टि जीव, यद्यपि मिथ्यात्व गुण-स्थानको प्राप्त होते रहते हैं इसलिये उनका व्यय होता है, फिर भी उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंमेंसे उसी अनुपातसे सासादन गुणस्थानको भी प्राप्त होते रहते हैं, अतएव व्ययके समान आय भी निरंतर चालू है । इसलिये उनका अभाव हो जायगा, यह भी नहीं कहा जा सकता है । इसप्रकार क्षेत्र और कालप्रमाणकी अपेक्षा सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका प्रमाण कहनेके लिये कोई कारण नहीं होनेसे उक्त प्रमाणोंके द्वारा सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका कथन नहीं किया ।

सासादनसम्यग्दृष्टि आदि जीवराशिका प्रमाण कहते समय भागहारका प्रमाण जो अन्तर्मुहूर्त कहा है वह सासादनसम्यग्दृष्टि आदि राशियोंके प्रमाण विषयक निर्णयके उत्पन्न करनेके लिये कहा है । परंतु वह अन्तर्मुहूर्त अनेक प्रकारका है, इसलिये प्रकृतमें इतना अन्तर्मुहूर्त विवक्षित है, यह नहीं जाना जाता है । इसलिये विवक्षित अन्तर्मुहूर्तके विषयमें निश्चय उत्पन्न करनेके लिये थोड़ेमें कालका प्ररूपण करते हैं ।

शंका—वह कालप्ररूपण किसप्रकार है ?

समाधान—असंख्यात समयकी एक आवली होती है । ऐसी तद्योग्य संख्यात आवलियोंका एक उच्छ्वास होता है । सात उच्छ्वासोंका एक स्तोक होता है । सात स्तोकोंका एक लव होता है, और साढे अठतीस लवोंकी एक नाली होती है । कहा भी है—

असंख्यात समयोंकी एक आवली होती है । संख्यात आवलियोंके समूहको एक उच्छ्वास कहते हैं । सात उच्छ्वासोंका एक स्तोक होता है और सात स्तोकोंका एक लव होता है ॥ ३३ ॥

अट्तीसद्वलवा णाली वे णालिया मुहुत्तो दु ।
 एगसमएण हीणो भिण्णमुहुत्तो भवे सेसं ॥ ३४ ॥
 अट्टस्स अणलसस्स य गिरुवहदस्स य जिणेहि जंतुस्स ।
 उस्सासो णिस्सासो एगो पाणो त्ति आहिदो एसो ॥ ३५ ॥
 तिण्णि सहस्सा सत्त य सयाणि तेहत्तरिं च उस्सासा ।
 एगो होदि मुहुत्तो सव्वेसिं चैव मणुयाणं ॥ ३६ ॥

सत्तसएहि वीसुत्तरेहि पाणेहि एगो मुहुत्तो होदि त्ति केवि भणंति, पाइयपुरि-
 सुस्सासे दड्डूण तण्ण घडदे । कुदो ? केवलिभासिदत्थादो पमाणभूदेण अण्णेण सुत्तेण
 सह विरोहादो । कथं विरोहो ? जेणेदं चउहि गुणिय सत्तूण-णवसदं पक्खित्ते सुत्तुत्तुस्सा-

साढ़े अट्तीस लवोंकी एक नाली होती है, और दो नालियोंका एक मुहूर्त होता है ।
 तथा मुहूर्तमेंसे एक समय कम करने पर भिन्नमुहूर्त होता है, और शेष अर्थात् दो, तीन आदि
 समय कम करने पर अन्तर्मुहूर्त होते हैं ॥ ३४ ॥

जो सुखी है, आलस्यरहित है और रोगादिककी चिन्तासे मुक्त है, ऐसे प्राणीके श्वासो-
 च्छ्वासको एक प्राण कहते हैं, ऐसा जिनेन्द्रदेवने कहा है ॥ ३५ ॥

सभी मनुष्योंके तीन हजार सातसौ तेहत्तर उच्छ्वासोंका एक मुहूर्त होता है ॥ ३६ ॥

कितने ही आचार्य सातसौ बीस प्राणोंका एक मुहूर्त होता है, ऐसा कहते हैं; परंतु
 प्राकृत अर्थात् रोगादिसे रहित स्वस्थ मनुष्यके उच्छ्वासोंको देखते हुए उन आचार्योंका इस-
 प्रकार कथन करना घटित नहीं होता है, क्योंकि, जो केवली भाषित अर्थ होनेके कारण प्रमाण
 है, ऐसे अन्य सूत्रके कथनके साथ उक्त कथनका विरोध आता है ।

शंका—सूत्रके कथनसे उक्त कथनमें कैसे विरोध आता है ?

समाधान—क्योंकि ऊपर कहे गये सातसौ बीस प्राणोंको चारसे गुणा करके जो

१ गो. जी. ५७५. होति हु असखसमया आवलिणामो तद्देव उस्सासो । संखेज्जावलिणिवहो सो चैव पाणो
 त्ति विवखादो ॥ सत्तुत्तुस्सासो थोव सत्त थवा लव त्ति णादव्वो । सत्तत्तरिदलिलदलवा णाली वे णालिया मुहुत्तं
 च ॥ ति. प. पत्र ५०. ग. सा. १, ३२-३४. असखिज्जाणं समयार्णं समुदयसमितिसमागमेणं सा एगा
 आवलिअत्ति वुच्चइ, संखेज्जाओ आवलिओ ऊसासो, संखिज्जाओ आवलिआओ निसासो, सत्त पाणूणि से थोवे,
 सत्त थोवाणि से लवे । लवाणं सत्तहत्तराए एस मुहुत्ते विआहिए । अनु. पृ. १६४. व्या. प्र. पृ. ५००.

२ गो. जी. ५७४. टी. हट्टस्स अणवगहस्स निक्खकिट्टस्स जंतुणो । एगे ऊसासनीसासे एस पाणु त्ति
 वुच्चइ । अनु. पृ. १६४. व्या. प्र. पृ. ५००.

३ आब्बानलसानुपहतमनुजोच्छ्वासैस्त्रिसप्तसप्तत्रिंशत्तमित्तैः । आहुर्मुहूर्तम्... ॥ गो. जी., जी. प्र. टी.,
 १२५. तिण्णि सहस्सा सत्त य सयाइं तेहत्तरिं च ऊसासा । एस मुहुत्तो भणिओ सव्वेहिं अणंतनाणीहिं । अनु. पृ.
 १६४. व्या. प्र. पृ. ५००.

सपमाणं पावदि । एकवीससहस्रस-उससयमेत्तपाणेहि संवच्छरियाण दिवसो होदि । एत्थ पुण एगलक्ख-तेरहसहस्रस-णउदि-सयपाणेहि दिवसो होदि । पाणेहि विप्पडिवण्णाणं संवच्छरियाणं कालववहारो कधं वडदे ? ण, केवलिभासिददिवसमुहुत्तेहि समाणदिवस-मुहुत्तव्वुवगमादो । एवं परूविदमुहुत्तुस्सासे ठवेऊण तत्थ एगो उस्सासो घेत्तव्वो । संखेज्जावलियाहि एगो उस्सासो णिप्फज्जदि त्ति सो उस्सासो संखेज्जावलियाओ कयाओ । तत्थ एगमावलियं घेत्तूण असंखेज्जेहि समएहि एगावलिया होदि त्ति असंखेज्जा समया कायव्वा । तत्थ एगसमए अवणिदे सेसकालपमाणं भिण्णमुहुत्तो उच्चदि । पुणो वि अवरेगे समए अवणिदे सेसकालपमाणमंतोमुहुत्तं होदि । एवं पुणो पुणो समया अवणेयव्वा जाव उस्सासो णिट्ठिदो त्ति । तो वि सेसकालपमाणमंतोमुहुत्तं चेव होइ । एवं सेसुस्सासे वि अवणेयव्वा जावेगावलिया सेसा त्ति । सा आवलिया वि

गुणनफल आवे उसमें सात कम नौ सौ अर्थात् आठसौ तेरानवे और मिलाने पर सूत्रमें कहे गये मुहूर्तके उच्छ्वासोंका प्रमाण होता है, इसलिये प्रतीत होता है कि उपर्युक्त मुहूर्तके उच्छ्वासोंका प्रमाण सूत्रविद्वद्द है । यदि सातसौ बीस प्राणोंका एक मुहूर्त होता है, इस कथनको मान लिया जाय तो केवल इक्यास हजार छह सौ प्राणोंके द्वारा ही ज्योतिषियोंके द्वारा माने हुए दिन अर्थात् अहोरात्रका प्रमाण होता है । किन्तु यहां आगमानुकूल कथनके अनुसार तो एक लाख तेरह हजार और एक सौ नव्वे उच्छ्वासोंके द्वारा एक दिन अर्थात् अहोरात्र होता है ।

शंका— इसप्रकार प्राणोंके द्वारा दिवसके विषयमें विवादको प्राप्त हुए ज्योतिषियोंके कालव्यवहार कैसे बन सकता है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, केवलीके द्वारा कथित दिन और मुहूर्तके समान ही ज्योतिषियोंके दिन और मुहूर्त माने गये हैं, इसलिये उपर्युक्त कोई दोष नहीं है ।

इसप्रकार केवलीके द्वारा प्रतिपादित एक मुहूर्तके उच्छ्वासोंको स्थापित करके उनमेंसे एक उच्छ्वास ग्रहण करना चाहिये । संख्यात आवलियोंसे एक उच्छ्वास निष्पन्न होता है, इसलिये उस एक उच्छ्वासकी संख्यात आवलियां बना लेना चाहिये । उन आवलियोंमेंसे एक आवलीको ग्रहण करके, असंख्यात समयोंसे एक आवली होती है, इसलिये उस आवलीके असंख्यात समय कर लेना चाहिये ।

यहां मुहूर्तमेंसे एक समय निकाल लेने पर शेष कालके प्रमाणको भिन्नमुहूर्त कहते हैं । उस भिन्नमुहूर्तमेंसे एक समय और निकाल लेने पर शेष कालका प्रमाण अन्तर्मुहूर्त होता है । इसप्रकार उत्तरोत्तर एक एक समय कम करते हुए उच्छ्वासके उत्पन्न होने तक एक एक समय निकालते जाना चाहिये । वह सब एक एक समय कम किया हुआ काल भी अन्तर्मुहूर्तप्रमाण ही होता है । इसीप्रकार जब तक आवली उत्पन्न नहीं होती है तब तक शेष रहे हुए एक उच्छ्वासमेंसे भी एक एक समय कम करते जाना चाहिये । ऐसा करते हुए जो आवली उत्पन्न होती है उसे भी अन्तर्मुहूर्त कहते हैं ।

अंतोमुहुत्तमिदि भण्णदि । तदो अवरेण आवलियाए असंखेज्जदिभाएण तम्हि आवलियम्हि भागे हिदे जं मागलद्धं तं असंजदसम्माइड्ढिअवहारकालो होदि । एसो वि कालो अंतो-मुहुत्तमेव । असंजदसम्माइड्ढिअवहारकालमवरेण आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे सम्मामिच्छाइड्ढिअवहारकालो होदि । तं संखेज्जरूवेहि गुणिदे सासणसम्माइड्ढिअव-हारकालो होदि । तमावलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे हि संजदासंजदअवहारकालो होदि । ओघसासणसम्मादिड्ढि-सम्मामिच्छाइड्ढि-संजदासंजदाणं अवहारकालो असंखेज्जदि-भागो ण होदि, असंखेज्जावलियाहि होदव्वं । तं कुदो णव्वदे ? 'उवसमसम्माइड्ढी थोवा । खइयसम्माइड्ढी असंखेज्जगुणा । वेदयसम्माइड्ढी असंखेज्जगुणा' ति अप्पावहुगसुत्तादो णव्वदे । तं जहा, खइयसम्माइड्ढीणमवहारकालेण ताव संखेज्जाव-लियमेत्तेण आवलियाए संखेज्जदिभागमेत्तेण वा होदव्वं, अण्णहा मणुस्सेसु असंखे-

तदनन्तर दूसरी आवलीके असंख्यातवें भागका उस आवलीमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उतना असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके प्रमाणके निकालनेके विषयमें अवहारकालका प्रमाण होता है । यह काल भी अन्तर्मुहूर्तप्रमाण ही है । असंयतसम्यग्दृष्टिविषयक अवहार-कालको दूसरी आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर सम्यग्मिथ्यादृष्टिविषयक अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर सासादनसम्यग्दृष्टिविषयक अवहार-काल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर संयतासंयतविषयक अवहारकाल होता है । इसप्रकार जो पूर्वोक्त चार गुणस्थानवाले जीवोंका अवहारकाल बत-लाया है उसमें सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और संयतासंयतविषयक सामान्य अवहारकाल आवलीके असंख्यातवें भाग नहीं होता, किन्तु उसे असंख्यात आवलीप्रमाण होना चाहिये ।

शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—'उपशमसम्यग्दृष्टि जीव थोड़े होते हैं, क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव उनसे असंख्यातगुणे होते हैं और वेदकसम्यग्दृष्टि जीव उनसे असंख्यातगुणे होते हैं' इस अल्प-बहुत्वके प्रतिपादन करनेवाले सूत्रसे उक्त बात जानी जाती है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है—

क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संख्यात आवली अथवा आवलीके संख्यातवें भागप्रमाण होना चाहिये । यदि ऐसा न माना जावे तो मनुष्योंमें असंख्यात क्षायिकसम्यग्दृष्टि-

१ असंजदसम्मादिड्ढिणाणं सव्वथोवा उवसमसम्मादिड्ढी । खइयसम्मादिड्ढी असंखेज्जगुणा । वेदयसम्मा-दिड्ढी असंखेज्जगुणा ॥ जी. ड्ढा. अ. व. १५-१७. सू. तदनन्तरं (औपशमिकानन्तरम्) क्षायिकग्रहणं तस्य प्रतियोगित्वात्संसार्यपेक्षया द्रव्यतत्त्वतोऽसंख्येयगुणत्वाच्च । तत उचरं मिश्रग्रहणं तदुभयात्मकत्वात्ततोऽसंख्येयगुणत्वाच्च । स. सि. २, १.

ज्जखइयसम्माइड्ढीणं संभवप्पसंगादो । संखेज्जावलियभागहारुप्पायणविहाणं उच्चदे । तं जहा, वासपुधत्तमंतरिय जइ सोहम्मदेवेषु संखेजाणं खइयसम्माइड्ढीणमुप्पत्ती लब्भइ तो संखेज्जपलिदोवमेषु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवड्ढिदाए संखेज्जावलियाहि पलिदोवमे खंडिय तत्थेगखंडमेत्ता खइयसम्माइड्ढी होंति । उवसमसम्माइड्ढीणमवहारकालो पुण असंखेज्जावलियमेत्तो, खइयसम्माइड्ढी-हिंतो तेसि असंखेज्जगुणहीणत्तणहाणुववत्तीदो । सासणसम्माइड्ढि-सम्माभिच्छा-इड्ढीणं पि अवहारकालो असंखेज्जावलियमेत्तो, उवसमसम्माइड्ढीहिंतो तेसिमसंखेज्ज-गुणहीणत्तणहाणुववत्तीदो । ' एदेहि पलिदोवमवहिरदि अंतोमुहुत्तेण कालेण ' इत्ति सुत्तेण सह विरोहो वि ण होदि, सामीप्यर्थे वर्तमानान्तःशब्दग्रहणात् । मुहूर्तस्यान्तः

योंकी उत्पत्तिका प्रसंग आ जायगा । अब आगे संख्यात आवलीरूप भागहारके उत्पन्न करनेकी विधि कहते हैं । वह इसप्रकार है—

एक वर्षपृथक्त्वके अनन्तर यदि सौधर्म देवोंमें संख्यात क्षायिक सम्यग्दृष्टियोंकी उत्पत्ति प्राप्त होती है तो संख्यात पल्योपमकी स्थितिवाले देवोंमें कितने क्षायिक सम्यग्दृष्टि जीव प्राप्त होंगे, इसप्रकार त्रैराशिक विधिके अनुसार फलराशि संख्यातको इच्छाराशि संख्यात पल्योपमसे गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें प्रमाणराशि वर्षपृथक्त्वका भाग देने पर अर्थात् संख्यात आवलियोंसे पल्योपमके खंडित करने पर जो भाग लब्ध आवे उतने एक खण्ड प्रमाण क्षायिक सम्यग्दृष्टि जीव होते हैं । उपशमसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल तो असंख्यात आवलीप्रमाण है, अन्यथा उपशमसम्यग्दृष्टि जीव क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंसे असंख्यातगुणे हीन बन नहीं सकते हैं । उसीप्रकार सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंका भी अवहारकाल असंख्यात आवलीप्रमाण है, अन्यथा उपशमसम्यग्दृष्टियोंसे उक्त दोनों गुणस्थानवाले जीव असंख्यातगुणे हीन बन नहीं सकते हैं । ' इन गुणस्थानोंमेंसे प्रत्येक गुणस्थानकी अपेक्षा अन्तर्मुहूर्तप्रमाण कालसे पल्योपम अपहृत होता है ' इस पूर्वोक्त सूत्रके साथ उक्त कथनका विरोध भी नहीं आता है, क्योंकि, अन्तर्मुहूर्तमें जो अन्तर शब्द आया है उसका सामीप्य अर्थमें ग्रहण किया गया है । इसका तात्पर्य यह हुआ कि जो मुहूर्तके समीप हो उसे अन्तर्मुहूर्त कहते हैं ।

विशेषार्थ— अन्तर्मुहूर्तका पल्योपममें भाग देने पर जो लब्ध आवे उतना सासादन आदि चार गुणस्थानोंमेंसे प्रत्येक गुणस्थानवाले जीवोंका प्रमाण है, यह पूर्वोक्त सूत्रका अभिप्राय है । पर टीकाकार वीरसेनस्वामीने यह सिद्ध किया है कि सासादन, मिश्र और देशविरतके अवहारकालका प्रमाण असंख्यात आवलियां है । अब यहाँ यह प्रश्न उत्पन्न होता

१ एदेहि पलिदोवमवहिरदि अंतोमुहुत्तेण कालेणेत्ति सुत्तेण वि ण विरोहो, तस्स उवयारणिबंधणत्तादो । भवला, अल्पव.

(अन्तर्मुहूर्तः । कुतः पूर्वनिपातः ? राजदन्तादिस्वात् । कुतः ओत्वम् ? 'एए छच्च समाणा' इत्येतस्मात्) एदेण सणक्कुमारादिगुणपडिवण्णाणमवहारकालाणं पि असंखेज्जावलयत्तं पसाहियं । एत्थ चोदगो भणदि । एदाओ रासीओ अवट्टिदाओ ण होंति, हाणिवट्टिसंजुदत्तादो । ण च हाणिवट्टीओ गत्थि ति वोत्तुं सक्किज्जे, आयव्वयाभावे मोक्खाभावादो अणादिअपज्जवसिदसासणादिगुणकालाणुवलट्ठीदो च । जदि एदाओ रासीओ अवट्टिदाओ तो एदे भागहारा घडंति, अण्णहा पुण ण घडंति । अणवट्टिदरासिभागहारेणापि अणवट्टिदसरूवेणेव अवट्टाणा होंति । एत्थ परिहारो वुच्चदे— सासणसम्माइट्टिरासीणमुक्कस्ससंचयं

है कि उक्त तीनों गुणस्थानोंकी संख्या लानेके लिये यदि अवहारकालका प्रमाण असंख्यात आवलियां मान लिया जाता है तो सूत्रमें आये हुए अन्तर्मुहूर्त प्रमाण भागहारके साथ उक्त असंख्यात आवलिप्रमाण भागहारका विरोध आता है, क्योंकि, उत्कृष्ट एक अन्तर्मुहूर्तमें संख्यात आवलियां ही होती हैं, असंख्यात नहीं । इस पर वीरखेनस्वामीने यह समाधान किया है कि यहां पर अन्तर्मुहूर्तमें आये हुए अन्तर् शब्दसे मुहूर्तके समीपवर्ती कालका ग्रहण करना चाहिये जिससे अन्तर्मुहूर्तका अभिप्राय मुहूर्तसे अधिक भी हो सकता है ।

शंका — यहां पर अन्तर् शब्दका पूर्व निपात कैसे हो गया है ?

समाधान— क्योंकि, अन्तर् शब्दका राजदन्तादि गणमें पाठ होनेसे पूर्वनिपात हो गया है ।

शंका — अन्तर् शब्दमें अर्के स्थानमें ओत्व कैसे हो गया है ?

समाधान— 'एए छच्च समाणा' इस नियामक वचनके अनुसार यहां पर ओत्व हो गया है ।

इस उपर्युक्त कथनसे गुणस्थानप्रतिपन्न सानत्कुमार आदि कल्पवासी देवोंसंबन्धी अवहारकाल असंख्यात आवलीप्रमाण सिद्ध कर दिया गया ।

शंका— यहां पर शंकाकार कहता है कि ये उपर्युक्त जीवराशियां अवस्थित नहीं होती हैं, क्योंकि, इन राशियोंकी हानि और वृद्धि होती रहती है । यदि कहा जाय कि इन राशियोंकी हानि और वृद्धि नहीं होती है, सो भी कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, यदि इन राशियोंका आय और व्यय नहीं माना जाय तो मोक्षका भी अभाव हो जायगा । तथा अनादि अपर्यवसितरूपसे सासादन आदि गुणस्थानोंका काल भी नहीं पाया जाता है, इसलिये भी इन राशियोंकी हानि और वृद्धि मान लेना चाहिये । यदि इन उपर्युक्त राशियोंको अवस्थित माना जावे तो ये भागहार बन सकते हैं, अन्यथा नहीं, क्योंकि, अनवस्थित राशियोंके भागहारोंका भी अनवस्थितरूपसे ही सद्भाव माना जा सकता है ?

समाधान— आगे पूर्वोक्त शंकाका परिहार किया जाता है । क्योंकि सासादन-

१ राजदन्तादिषु परम् । २ । २ । ३ । पाणिनि ।

तिकालगोयरमस्सिऊण जम्हा पमाणपरूवणं कदं तम्हा वड्ढिहाणीओ णत्थि त्ति भागहार-
परूवणं घडदि त्ति । सासणसम्माइडिअवहारकालेण वलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्मा-
इडिरासी आगच्छदि । सासणसम्माइडिणं पमाणपरूवणं वग्गट्टाणे खंडिद-भाजिद-विरलिद-
अवहिद-पमाण-कारण-णिरुत्ति-वियप्पेहि वत्तइस्सामो । तं जहा—

पलिदोवमे असंखेज्जावलियमेत्तखंडे कए तत्थ एगखंडं सासणसम्माइडिरासि-
पमाणं होदि । खंडिदं गदं । असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमे भागे हिदे जं भागलद्धं तं
सासणसम्माइडिरासिपमाणं होदि । भाजिदं गदं । असंखेज्जावलियाओ विरलेऊण
एकेकस्स रूवस्स पलिदोवमं समखंडं करिय दिण्णे तत्थ एगखंडपमाणं सासणसम्मा-
इडिरासी होदि । विरलिदं गदं । सासणसम्माइडिअवहारकालं सलागभूदं ठवेऊण

सम्यग्दृष्टि आदि राशियोंके त्रिकालविषयक उत्कृष्ट संचयका आश्रय लेकर प्रमाण कहा गया
है, इसलिये उस अपेक्षासे वृद्धि और हानि नहीं है। अतः पूर्वोक्त भागहारोंका कथन करना
बन जाता है।

सासादनसम्यग्दृष्टिविषयक अवहारकालका पल्योपममें भाग देने पर सासादनसम्य-
ग्दृष्टि जीवराशि आ जाती है।

अब वर्गस्थानमें खण्डित, भाजित, विरलित, अपहृत, प्रमाण, कारण, निरुक्ति और
विकल्पके द्वारा सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण कहते हैं। वह इसप्रकार है—

असंख्यात आवलीके समयोंका जितना प्रमाण हो उतने पल्योपमके खण्ड करने पर
उनमेंसे एक खण्डके बराबर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण होता है। इसप्रकार
खण्डितका वर्णन समाप्त हुआ।

उदाहरण—पल्योपमप्रमाण ६५५३६ के सासादनसम्यग्दृष्टिविषयक अवहारकाल
३२ प्रमाण खण्ड करने पर २०४८ आते हैं। यही सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण है।

असंख्यात आवलियोंका पल्योपममें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उतना सासा-
दनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण है। इसप्रकार भाजितका कथन समाप्त हुआ।

उदाहरण— $६५५३६ \div ३२ = २०४८$ सासादनसम्यग्दृष्टि.

असंख्यात आवलियोंको विरलित करके उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति पल्यो-
पमको समान खण्ड करके देयरूपसे देने पर उनमेंसे एक खण्ड प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि
जीवराशि होती है। इसप्रकार विरलितका वर्णन समाप्त हुआ।

उदाहरण— २०४८ २०४८ २०४८ इसप्रकार ३२ वार विरलित करके
१ १ १ ६५५३६ को उक्त विरलित राशिके
प्रत्येक एक पर समानरूपसे दे देने पर २०४८ सासादनसम्यग्दृष्टि राशि आ जाती है।

सासादनसम्यग्दृष्टिविषयक अवहारकालको शलाकारूपसे स्थापित करके पल्योपममेंसे

पलिदोवमम्हि सासणसम्माइट्टिरासिपमाणं अवणिज्जदि, अवहारकालादो एगरूवमव-
णिज्जदि; पुणो वि सासणसम्माइट्टिरासिपमाणं पलिदोवमम्हि अवणिज्जदि, अवहारकालादो
एगरूवमवणिज्जदि । एवं पुणो पुणो कीरमाणे पलिदोवमो अवहारकालो च जुगवं
णिट्ठिदो । तत्थ एगवारमवहिदपमाणं सासणसम्माइट्टिरासी होदि । अवहिदं गदं । तस्स
पमाणं पलिदोपमस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि ति ।
पमाणं गदं । केण कारणेण ? पलिदोवमपढमवग्गमूलेण पलिदोवमे भागे हिदे पलिदोवम-
पढमवग्गमूलमागच्छदि । तस्सेव विदियवग्गमूलादो पलिदोवमे भागे हिदे विदियवग्गमूलस्स

सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशिके प्रमाणको घटा देना चाहिये । पल्योपममेंसे सासादनसम्यग्दष्टि
जीवराशिको एकवार कम किया, इसलिये अवहारकालरूप शलाकाराशिमैंसे एक कम कर
देना चाहिये । फिर भी पल्योपममेंसे सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशिके प्रमाणको घटा देना
चाहिये । दूसरीवार यह क्रिया हुई, इसलिये अवहारकालरूप शलाकाराशिमैंसे एक और कम कर
देना चाहिये । इसप्रकार पुनः पुनः करने पर पल्योपम और अवहारकाल एक साथ समाप्त
हो जाते हैं । इस क्रियामें एकवार जितनी राशि घटाई जावे उतना सासादनसम्यग्दष्टि जीव-
राशिका प्रमाण है । इसप्रकार अपहतका कथन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—शलाका राशि	३२	पल्योपम	६५५३६	इस क्रमसे पल्योपममेंसे
	१		२०४८	२०४८ और शलाकारूप
	३१		६३४८८	भागद्वारमेंसे एक एक कम
	१		२०४८	करते जाने पर दोनों
	३०		६१४४०	

राशियां एक साथ समाप्त होती हैं । इनमेंसे एकवार घटाई जानेवाली संख्या २०४८ प्रमाण
सासादनसम्यग्दष्टि हैं ।

उस सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशिका प्रमाण पल्योपमका असंख्यातवां भाग है, जो
पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । इसप्रकार प्रमाणका वर्णन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—पल्योपम ६५५३६ का प्रथम वर्गमूल २५६ है और सासादनसम्यग्दष्टि
जीवराशिका प्रमाण २०४८ है । २५६ का २०४८ में भाग देने पर ८ आते हैं । इस ८ संख्याको
असंख्यातरूप मान लेने पर यह सिद्ध हो जाता है कि पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूल
प्रमाण सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशि होती है ।

शंका—किस कारणसे पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण सासादनसम्य-
ग्दष्टि जीवराशि आती है ?

समाधान—पल्योपमके प्रथम वर्गमूलका पल्योपममें भाग देने पर पल्योपमका प्रथम
वर्गमूल आता है । उसीके दूसरे वर्गमूलका पल्योपममें भाग देने पर, दूसरे वर्गमूलका जितना

जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पढमवग्गमूलाणि आगच्छंति । तदियवग्गमूलेण पलिदोवमे भागे हिदे विदियतदियवग्गमूलाणि अण्णोण्णमत्थे कए तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पढमवग्गमूलाणि आगच्छंति । एदेण कमेण असंखेज्जाणि वग्गट्ठाणाणि हेट्ठा ओसरिऊण ड्ढिदअसंखेज्जावलियाहि पलिदोवमे भागे हिदे असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि आगच्छंति चि ण संदेहो । कारणं गदं । तस्स का णिरुत्ती ? असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमपढमवग्गमूले भागे हिदे तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पढमवग्गमूलाणि । अधवा असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमविदियवग्गमूले भागे हिदे जं भागलद्धं तेण विदियवग्गमूलं गुणिदे तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि । अधवा असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमतदियवग्गमूले भागे हिदे जं भागलद्धं तेण तदियवग्गमूलं गुणेऊण तेण गुणिदरासिणा विदियवग्गमूलं गुणेऊण तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पढमवग्गमूलाणि आगच्छंति । एदेण कमेण असंखेज्जाणि वग्गट्ठाणाणि हेट्ठा ओसरिऊण असंखेज्जावलियाहि पदरावलियाए भागे हिदाए जं

प्रमाण हो उतने प्रथम वर्गमूल लब्ध आते है । पल्योपमके तीसरे वर्गमूलका पल्योपममें भाग देने पर दूसरे और तीसरे वर्गमूलके प्रमाणका परस्पर गुणा करनेसे जो प्रमाण आवे उतने प्रथम वर्गमूल लब्ध आते हैं । इस क्रमसे असंख्यात वर्गस्थान नीचे जाकर जो असंख्यात आवलियों स्थित हैं उनका पल्योपममें भाग देने पर असंख्यात प्रथम वर्गमूल आते हैं । इसमें संदेह नहीं है । इसप्रकार कारणका वर्णन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—पल्यके प्रथम वर्गमूल २५६ का ६५५३६ में भाग देने पर २५६ लब्ध आते हैं । दूसरे वर्गमूल १६ का ६५५३६ में भाग देने पर दूसरे वर्गमूल १६ वार २५६ अर्थात् ४०९६ लब्ध आते हैं । तीसरे वर्गमूल ४ का ६५५३६ में भाग देने पर, दूसरे वर्गमूल १६ और तीसरे वर्गमूल ४ को परस्पर गुणा करनेसे जो ६४ लब्ध आते हैं, उतने अर्थात् ६४ वार प्रथम वर्गमूल २५६ अर्थात् १६३८४ लब्ध आते हैं । इसीप्रकार उत्तरोत्तर नीचे जाने पर असंख्यात प्रथम वर्गमूल लब्ध आवेंगे इसमें कोई संदेह नहीं ।

शंका—असंख्यात प्रथम वर्गमूल आते हैं, इसकी निरुक्ति क्या है ?

समाधान—असंख्यात आवलियोंका पल्योपमके प्रथम वर्गमूलमें भाग देने पर जो प्रमाण आवे उतने प्रथम वर्गमूल होते हैं । अथवा, असंख्यात आवलियोंका पल्योपमके द्वितीय वर्गमूलमें भाग देने पर जो लब्ध आवे उससे द्वितीय वर्गमूलको गुणित कर देने पर जितना प्रमाण आवे उतने पल्योपमके प्रथम वर्गमूल होते हैं । अथवा, असंख्यात आवलियोंका पल्योपमके तीसरे वर्गमूलमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उससे तीसरे वर्गमूलको गुणित करके उस गुणित राशिसे दूसरे वर्गमूलको गुणित करके वहां जितना प्रमाण आवे उतने प्रथम वर्गमूल होते हैं । इसी क्रमसे असंख्यात वर्गस्थान नीचे जाकर असंख्यात आवलियोंका प्रतरावलीमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उससे प्रतरावलीको गुणित करके, उस गुणित राशिसे प्रतरा-

भागलद्धं तेण पदरावलियं गुणेऊण तेण गुणिदरासिणा तदुवरिमवग्गं गुणेऊण एवमुवरि-
मुवरिमवग्गमूलाणि विदियवग्गमूलंताणि गिरंतरं सव्वाणि गुणिदे तत्थ जत्तियाणि
रूवाणि तात्तियाणि पढमवग्गमूलाणि हवंति त्ति । गिरुत्ती गदा ।

वियप्पो दुविहो, हेट्ठिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि । तत्थ वेरूवे हेट्ठिमवियप्पं
वत्तइस्सामो । असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमपढमवग्गमूले भागे हिदे जं भागलद्धं तेण-
पलिदोवमपढमवग्गमूले गुणिदे सासणसम्माइट्ठिरासी हेदि । अधवा अवहारकालेण पलि-
दोवमविदियवग्गमूले भागे हिदे जं भागलद्धं तेण विदियवग्गमूलं गुणेऊण तेण गुणिद-
रासिणा पढमवग्गमूले गुणिदे सासणसम्माइट्ठिरासी हेदि । अधवा अवहारकालेण
पलिदोवमतदियवग्गमूले भागे हिदे जं भागलद्धं तेण तदियवग्गमूलं गुणेऊण तेण गुणिद-
रासिणा विदियवग्गमूलं गुणेऊण पुणो वि तेण गुणिदरासिणा पढमवग्गमूलं गुणिदे

वलीके उपरिम वर्गको गुणित करके, इसप्रकार द्वितीय वर्गमूलपर्यंत सर्व उपरिम उपरिम वर्ग-
स्थानोंको निरंतर गुणित करने पर वहां जितना प्रमाण आवे उतने प्रथम वर्गमूल होते हैं।
इसप्रकार निरुक्तिका कथन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—असंख्यात आवलीप्रमाण ३२ का भाग पल्यके प्रथम वर्गमूल २५६ में देने
पर ८ लब्ध आते हैं । इसप्रकार सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशि २०४८ में ८ ही प्रथम वर्गमूल
होते हैं । द्वितीय वर्गमूल १६ में ३२ का भाग देने पर $\frac{१}{३}$ लब्ध आता है । इसका द्वितीय वर्ग-
मूलसे गुणा करने पर ८ लब्ध आते हैं । तृतीय वर्गमूल ४ में ३२ का भाग देने पर $\frac{१}{३}$ लब्ध
आता है । इसका, दूसरे १६ और तीसरे ४ वर्गमूलके परस्पर गुणनफल ६४ से, गुणा कर देने
पर ८ लब्ध आते हैं । इसप्रकार सर्वत्र समझ लेना चाहिये ।

विकल्प दो प्रकारका है, अधस्तनविकल्प और उपरिमविकल्प । उन दोनोंमेंसे पहले
द्विरूपवर्गधारामें अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं—

असंख्यात आवलियोंसे पल्योपमके प्रथम वर्गमूलको गुणित करने पर सासादन-
सम्यग्दष्टि जीवराशि होती है ।

उदाहरण—पल्योपम ६५५३६ का प्र. वर्गमूल २५६; असंख्यात आवलियां ८.
 $२५६ \times ८ = २०४८$ सा.

अथवा, अवहारकालका पल्योपमके द्वितीय वर्गमूलमें भाग देने पर जो भाग लब्ध
आवे उससे द्वितीय वर्गमूलको गुणित करके उस गुणित राशिसे प्रथम वर्गमूलके गुणित
करने पर सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशि होती है ।

उदाहरण—६५५३६ का द्वितीय वर्गमूल १६; अवहारकाल ३२;

$१६ \div ३२ = \frac{१}{२}$; $१६ \times \frac{१}{२} = ८$; $२५६ \times ८ = २०४८$ सा.

अथवा, अवहारकालका पल्योपमके तृतीय वर्गमूलमें भाग देने पर जो भाग लब्ध
आवे उससे तृतीय वर्गमूलको गुणित करके उस गुणित राशिसे द्वितीय वर्गमूलको गुणित
करके फिर भी उस गुणित राशिसे प्रथम वर्गमूलके गुणित करने पर सासादनसम्यग्दष्टि

सासणसम्माइड्डिरासी होदि । एदेण कमेण असंखेज्जाणि वग्गट्ठाणाणि हेट्ठा ओसरिऊण असंखेज्जावलियाहि पदरावलियाए भागे हिदाए जं भागलद्धं तेण पदरावलियं गुणेऊण तेण गुणिदरासिणा तदुवरिमवग्गं गुणेऊण एवमुवरिमवग्गट्ठाणाणि पढमवग्गमूलंताणि सव्वाणि गिरंतरं गुणिदे सासणसम्माइड्डिरासी होदि । जदि वि गिरुत्तिं भण्णमाणे एसो अत्थो पुव्वं परूविदो तो वि ण पुणरुत्तो होदि, तिण्णि वि वग्गधाराओ अस्सिऊण डिदहेट्ठिमवियप्पसंबंधत्तादो । वेरूवे हेट्ठिमवियप्पो गदो ।

अट्ठरूवे हेट्ठिमवियप्पं वत्तइस्सामो । असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमपढमवग्गमूलं गुणेऊण तेण घणपल्लपढमवग्गमूले भागे हिदे सासणसम्माइड्डिरासी होदि । केण कारणेण ? पलिदोवमपढमवग्गमूलेण घणपल्लपढमवग्गमूले भागे हिदे पलिदोवममागच्छदि । पुणो असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइड्डिरासी आगच्छदि । एवमाग-

जीवराशि होती है ।

उदाहरण—२५६३६ का तृतीय वर्गमूल ४;

$$४ \div ३२ = १\frac{१}{४}; ४ \times १\frac{१}{४} = ५; १६ \times ५ = ८; २५६ \times ८ = २०४८ \text{ सा.}$$

इसी क्रमसे असंख्यात वर्गस्थान नीचे जाकर असंख्यात आवलियोंका प्रतरावलीमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उससे प्रतरावलीको गुणित करके उस गुणित राशिसे प्रतरावलीके उपरिम वर्गको गुणित करके इसीप्रकार प्रथम वर्गमूलपर्यन्त उपरिम उपरिम संपूर्ण वर्गस्थानोंको निरन्तर गुणित करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि होती है ।

उदाहरण—प्रतरावलि = २;

$$२ \div ३२ = १\frac{१}{१६}; २ \times १\frac{१}{१६} = ३; ४ \times ३ = १२;$$

$$१६ \times ३ = ८; २५६ \times ८ = २०४८ \text{ सा.}$$

यद्यपि निरुक्तिका कथन करते समय यह विषय पहले वहां पर कह आये हैं, तो भी इस विषयके यहां पर पुनः कथन करनेसे पुनरुक्त दोष नहीं होता है, क्योंकि, यहां पर तीनों ही वर्गधाराओंका आश्रय लेकर स्थित अधस्तन विकल्पका संबन्ध है । इसप्रकार द्विरूप वर्गधारामें अधस्तन विकल्पका कथन समाप्त हुआ ।

अब घनधारामें अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं । असंख्यात आवलियोंसे पल्योपमके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका घनपल्यके प्रथम वर्गमूलमें भाग देने पर सासादन-सम्यग्दृष्टि जीवराशि होती है, क्योंकि, पल्योपमके प्रथम वर्गमूलसे घनपल्यके प्रथम वर्ग-मूलके भाजित करने पर पल्योपमका प्रमाण आता है । अनन्तर असंख्यात आवलियोंसे पल्यो-पमके भाजित करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि आती है । घनपल्यमें इसप्रकार सासादन-सम्यग्दृष्टि जीवराशि आती है, ऐसा समझ कर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया ।

उदाहरण—पल्योपमका प्रथम वर्गमूल २५६; घनपल्यका प्रथम वर्गमूल १६७७७२१६;

$$२५६ \times ३२ = ८१९२; १६७७७२१६ \div ८१९२ = २०४८ \text{ सा.}$$

च्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । अट्टरूवे हेट्टिमवियप्पो भवदु णाम, वेरूवे हेट्टिमवियप्पो ण घडदे । केण कारणेण ? अवहारकालेण पलिदोवमादो हेट्टिमवग्गट्टाणाणि भागे हिदे सासणसम्माइट्टिरासी ण उप्पज्जदि त्ति । ण एस दोसो, पलिदोवमादो हेट्टिमवग्गट्टाणाणि अवहारकालेणोवट्टिय तप्पाओग्गवग्गट्टाणाणि गुणिदे केवलमोवट्टिदे च जत्थ रासी आगच्छदि सो हेट्टिमवियप्पो त्ति अब्भुवग्गमादो । मिच्छाइट्टिरासिपरूवणाए वि एदम्हि णए अवलंविज्जमाणे वेरूवे हेट्टिमवियप्पो अत्थि त्ति वत्तव्वो ? एसा परूवणा जेण अवहारकालपहाणा तेण पलिदोवमादो हेट्टिमवग्गट्टाणाणि अवहारेणोवट्टिय जदि सासणसम्माइट्टिरासी उप्पाइदुं सकिज्जदे तो हेट्टिमवियप्पस्स वि संभवो होज्ज । ण च एवं वेरूवधाराए संभवइ । एदं णयमस्सिऊण मिच्छाइट्टिरासिपरूवणाए हेट्टिमवियप्पो णत्थि त्ति भणिदं । एसो णओ एत्थ पहाणो । एवमट्टरूवपरूवणा गदा ।

शंका—घनधारामें अधस्तन विकल्प रद्दा आवे, परंतु द्विरूप वर्गधारामें अधस्तन विकल्प घटित नहीं होता है, क्योंकि, अवहारकालका पल्योपमसे नीचेके वर्गस्थानोंमें भाग दिया जाता है तो सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि उत्पन्न नहीं होती है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, पल्योपमसे नीचेके वर्गस्थानोंको अवहारकालसे अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उससे उसके योग्य वर्गस्थानोंके गुणित करने पर अथवा, केवल अपवर्तित करने पर, अर्थात् पल्योपमको अवहारकालसे भाजित करने पर, जहां पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि आती है वह अधस्तन विकल्प यहां पर स्वीकार किया गया है ।

उदाहरण—पल्योपमका अधस्तन वर्गस्थान = २५६; $२५६ \div ३२ = ८$; $२५६ \times ८ = २०४८$ सा. अथवा, $६५५३६ \div ३२ = २०४८$ सा.

शंका—मिथ्यादृष्टि जीवराशिकी प्ररूपणामें भी इस नयके अवलम्बन करने पर द्विरूपवर्गधारामें अधस्तन विकल्प बन जाता है, इसलिये वहां पर उसका कथन करना चाहिये था ?

समाधान—क्योंकि यह प्ररूपणा अवहारकालप्रधान है, इसलिये पल्योपमसे नीचेके वर्गस्थानोंको अवहारकालसे भाजित करके यदि सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि उत्पन्न करना शक्य है तो यहां पर अधस्तन विकल्प भी संभव है । परंतु मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण निकालते समय द्विरूपवर्गधारामें इसप्रकार अधस्तन विकल्प संभव नहीं है । इसी नयका आश्रय करके मिथ्यादृष्टि जीवराशिकी प्ररूपणामें अधस्तन विकल्प नहीं होता, ऐसा कहा है । यह नय यहां पर प्रधान है । इसप्रकार घनधारा समाप्त हुई ।

विशेषार्थ—सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण निकालनेके लिये असंख्यात आवली-

घणाघणे वत्तइस्सामो । असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमपढमवग्गमूलं गुणेऊण तेण घणपल्लविदियवग्गमूलं गुणेऊण तेण घणाघणपल्लविदियवग्गमूले भागे हिदे सासणसम्मा-इडिरासी आगच्छदि । केण कारणेण ? घणपल्लविदियवग्गमूलेण घणाघणपल्लविदियवग्गमूले भागे हिदे घणपल्लपढमवग्गमूलमागच्छदि । पुणो वि पलिदोवमपढमवग्गमूलेण घणपल्ल-पढमवग्गमूले भागे हिदे पलिदोवममागच्छदि । पुणो वि असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइडिरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । एत्थ दुगुणादिकरणे कदे हेट्टिमवियप्पो समप्पदि ।

उपरिमवियप्पो तिविहो, गहिदो गहिदगहिदो गहिदगुणगारो चेदि । तत्थ वेरूवधाराए गहिदं वत्तइस्सामो । असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्मा-

प्रमाण जो भागहार है वह पल्योपमके प्रथम वर्गमूलसे छोटा है, इसलिये यहां पर अधस्तन विकल्प बन जाता है । परंतु मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण निकालनेके लिये जो भागहार कह आये हैं वह जीवराशिके उपरिम वर्गके प्रथम वर्गमूलरूप जीवराशिसे बड़ा है, अतएव वहां पर द्विरूपवर्गधारामें अधस्तन विकल्प किसी प्रकार भी संभव नहीं है ।

अब घनाघनधारामें अधस्तन विकल्प बतलाते हैं—असंख्यात आवलियोंसे पल्यो-पमके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनपल्यके द्वितीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका घनाघनपल्यके द्वितीय वर्गमूलमें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है, क्योंकि, घनपल्यके द्वितीय वर्गमूलका घनाघन पल्यके द्वितीय वर्गमूलमें भाग देने पर घनपल्यका प्रथम वर्गमूल आता है । अनन्तर पल्योपमके प्रथम वर्ग-मूलका घनपल्यके प्रथम वर्गमूलमें भाग देने पर पल्योपम आता है । अनन्तर असंख्यात आव-लियोंका पल्योपममें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है । घनाघन-धारामें इसप्रकार सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया ।

उदाहरण—पल्योपमका प्रथम वर्गमूल २५६; घनपल्यका द्वितीय वर्गमूल ४०९६।
घनाघन पल्यका द्वितीय वर्गमूल ६८७१९४७६७३६;

$$\frac{६८७१९४७६७३६}{३२ \times २५६ \times ४०९६} = २०४८ \text{ सा.}$$

यहां पर द्विगुणादिकरणके कर लेने पर अधस्तन विकल्प समाप्त हो जाता है ।

उपरिम विकल्प तीन प्रकारका है, गृहीत, गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकार । उनमेंसे पहले द्विरूप वर्गधारामें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—असंख्यात आवलियोंका पल्योपममें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—६५५३६ ÷ ३२ = २०४८ सा.

इद्विरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्वच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्वच्छेदणए' कदे वि सासणसम्माइद्विरासी आगच्छदि । एवं तिय-चउक्क-पंचादिछेदणाणि वि अवलंबिय सासणसम्माइद्विरासी उप्पाएदव्वो । अथवा असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमं गुणेऊण पदरपल्ले भागे हिदे सासणसम्माइद्विरासी आगच्छदि । केण कारणेण ? पलिदोवमेण पदरपल्ले भागे हिदे पलिदोवममागच्छदि । पुणो वि असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइद्विरासी आगच्छदि । एवमामच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । तस्स भागहारस्स अद्वच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्वच्छेदणए कदे सासणसम्माइद्वि-

उक्त भागहारके जितने अर्धछेद हों उतनीवार पत्योपम राशिके अर्धछेद करने पर भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—३२ भागहारके ५ अर्धछेद होते हैं, अतः इतनीवार ६५५३६ के अर्धछेद करने पर २०४८ प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि राशि आती है ।

इसीप्रकार त्रिकछेद, चतुष्कछेद और पंचछेद आदिका अवलंबन करके भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि उत्पन्न कर लेना चाहिये ।

$$\begin{array}{r} \text{उदाहरण—३२ के त्रिकछेद} \\ \begin{array}{ccc} & १ & २ & ३ \\ २ & ३२ & ३२ & ३२ \\ & ३ & ९ & २७ \\ \hline ६५५३६ \text{ के त्रिकछेद} & \frac{६५५३६}{३} & \frac{६५५३६}{९} & \frac{६५५३६}{२७} \\ \hline \frac{६५५३६}{२७} \div \frac{३२}{२७} = २०४८ \text{ सा.} \end{array} \end{array}$$

इसीप्रकार चतुष्कछेद आदि के भी उदाहरण बना लेना चाहिये ।

अथवा, असंख्यात आवलियोंसे पत्योपमको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका प्रतरपत्यमें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है । इसका कारण यह है कि पत्योपमका प्रतरपत्यमें भाग देने पर पत्योपम आता है, और फिर असंख्यात आवलियोंका पत्योपममें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आ जाता है । द्विरूपवर्गधारामें इसप्रकार सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है, अतएव पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{६५५३६}{६५५३६} \times ३२ = २०४८ \text{ सासादनसम्यग्दृष्टि.}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धछेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धछेद करने पर भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—३२ × ६५५३६ रूप भागहारके २१ अर्धछेद होते हैं, इसलिये इतनीवार ६५५३६ × ६५५३६ के अर्धछेद करने पर भी २०४८ प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि राशि आती है ।

१ प्रतिपु 'मेत्ते सरिस्व छेदणए' इति पाठः ।

रासी आगच्छदि । तस्स अद्वच्छेदणयसलागा केत्तिया ? असंखेज्जावलियद्वच्छेदण-
याहियपलिदोवमद्वच्छेदणयमेत्ता । अधवा असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमं गुणेऊण तेण
गुणिदरासिणा पदरपल्लं गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे सासणसम्माइडिरासी आग-
च्छदि । केण कारणेण ? पदरपल्लेण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे पदरपल्लो आगच्छदि ।
पुणो वि पलिदोवमेण पदरपल्ले भागे हिदे पल्लो आगच्छदि । पुणो असंखेज्जावलियाहि
पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइडिरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि ति कट्टु गुणेऊण
भागगहणं कदं । तस्स भागहारस्स अद्वच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्वच्छेदणए कदे वि
सासणसम्माइडिरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्वच्छेदणयसलागा केत्तिया ?
पलिदोवमादो उवरि चडिदद्वानसलागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णमत्थरासि-
रूवणेण पलिदोवमस्स अद्वच्छेदणाओ गुणिय असंखेज्जावलियाणं छेदणापक्खित्तमेत्ता ।

शंका — उक्त भागहारकी अर्धच्छेद शलाकाएं कितनी हैं ?

समाधान — असंख्यात आवलियोंके अर्धच्छेदोंको पल्योपमके अर्धच्छेदोंमें मिला देने
पर जितना प्रमाण आवे उतनी उक्त भागहारकी अर्धच्छेद शलाकाएं हैं ।

उदाहरण—३२ के अर्धच्छेद ५ और ६५५३६ के अर्धच्छेद १६ इन दोनोंका जोड़ २१
होता है । यही ३२ × ६५५३६ के अर्धच्छेद जानना चाहिये ।

अथवा, असंख्यात आवलियोंसे पल्योपमको गुणित करके जो गुणा की
हुई राशि लब्ध आवे उससे प्रतरपल्यको गुणित करके जो राशि लब्ध आवे
उसका प्रतरपल्यके उपरिम वर्गमें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका
प्रमाण आता है, क्योंकि, प्रतरपल्यका प्रतरपल्यके उपरिम वर्गमें भाग देने
पर प्रतरपल्य आता है । पुनः पल्योपमका प्रतरपल्यमें भाग देने पर पल्योपम आता है ।
पुनः असंख्यात आवलियोंका पल्योपममें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण
आता है । द्विरूप वर्गधारामें इसप्रकार भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है,
इसलिये पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया ।

उदाहरण— $\frac{65536^2 \times 65536^2}{32 \times 65536 \times 65536} = 2032$ सा.

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों, उतनीवार उक्त राशिके अर्धच्छेद करने पर भी
सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—३२ × ६५५३६ × ६५५३६ रूप भागहारके ५३ अर्धच्छेद होते हैं, इसलिये
इतनीवार ६५५३६ × ६५५३६ प्रमाण भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी २०३८ आते हैं ।

शंका — उक्त भागहारकी अर्धच्छेदशलाकाएं कितनी हैं ?

समाधान—पल्योपमसे ऊपर दो स्थान आवे हैं, इसलिये दोका विरलन करके
और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दोरूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न
होवे उसमेंसे एक कमा कर जो शेष रहे उससे पल्योपमके अर्धच्छेदोंको गुणित करके जो
लब्ध आवे उसमें असंख्यात आवलियोंके अर्धच्छेदोंके मिला देने पर उक्त भागहारकी अर्धच्छेद

एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयत्वं । वेरूवपरूवणा गदा ।

अद्वरूवे वत्तइस्सामो । असंखेज्जावलियाहि पदरपल्लं गुणेऊण घणपल्ले भागे हिदे सासणसम्माइट्टिरासी आगच्छदि । केण कारणेण ? पदरपल्लेण घणपल्ले भागे हिदे पलिदोवममागच्छदि । पुणो वि असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइट्टिरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि ति कडु गुणेऊण भागगहणं कदं । तस्स भागहारस्स अद्वच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्वच्छेदणए कदे वि सासणसम्माइट्टिरासी आगच्छदि । तस्स अद्वच्छेदणयसलागा केत्तिया ? दुगुणिदपलिदोवमद्वच्छेदणएसु असंखेज्जावलियाणं अद्वच्छेदणयपक्खित्तमेत्ता । अधवा असंखेज्जावलियाहि पदरपल्लं गुणेऊण तेण गुणिदरासिणा घणपल्लं गुणेऊण घणपल्लउवरिमवग्गे भागे हिदे सासणसम्माइट्टिरासी

शलाकापं आ जाती है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{2}{1} \times 2 = 4 - 1 = 3 \times 16 = 48 + 4 = 52.$$

इसीप्रकार संख्यात असंख्यात और अनन्तराशिमें भी ले जाना चाहिये । इसप्रकार द्विरूपपरूवणा समाप्त हो गई ।

अब घनधारामें गृहीत उपरिम विकल्प बतलाते हैं—असंख्यात आवलियोंसे प्रतरपल्यको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका घनपल्यमें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आ जाता है, क्योंकि, प्रतरपल्यका घनपल्यमें भाग देने पर पल्योपम आता है । पुनः असंख्यात आवलियोंका पल्योपममें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है । घनधारामें इसप्रकार सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{64536^3}{32 \times 64536^3} = 2088 \text{ सासादनसम्यग्दृष्टि.}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उननीवार उक्त भज्यमानराशि घनपल्यके अर्धच्छेद करने पर भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आ जाता है ।

उदाहरण—उक्त भागहार 32×64536^3 के अर्धच्छेद ३७ होते हैं; इसलिये ३७ वार उक्त भज्यमान राशि 32×64536^3 के अर्धच्छेद करने पर भी २०८८ आते हैं ।

शंका—उक्त भागहारकी अर्धच्छेदशलाकापं कितनी है ?

समाधान—द्विगुणित पल्योपमके अर्धच्छेदोंमें असंख्यात आवलियोंके अर्धच्छेद मिला देने पर उक्त भागहारकी अर्धच्छेद शलाकापं होती है ।

$$\text{उदाहरण—} 16 \times 2 = 32 + 4 = 36.$$

अथवा, असंख्यात आवलियोंसे प्रतरपल्यको गुणित करके जो गुणितराशि लब्ध आवे उससे घनपल्यको गुणित करके लब्ध राशिका घनपल्यके उपरिम वर्गमें भाग देने पर

आगच्छदि । केण कारणेण ? घणपल्लेणुवरिमवग्गे भागे हिदे घणपल्लो आगच्छदि । पुणो वि पदरपल्लेण घणपल्ले भागे हिदे पलिदोवमो आगच्छदि । पुणो वि असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइट्टिरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कड्डु गुणेऊण भागगहणं कदं । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि सासणसम्माइट्टिरासी आगच्छदि । तस्सद्धच्छेदणयसलागा केत्तिया ? एगरूवं विरलिय विगं करिय अण्णोण्णभत्थरासितिगुणरूवूणेण पलिदोवमस्स अद्धच्छेदणाओ गुणिय असंखेज्जावलियाणं अद्धच्छेदणयपक्खित्तमेत्ता । एवमुवरि वि अद्धच्छेदणयाणं संकलणविहाणं वत्तव्वं । एत्थ दुगुणादिकरणं कायव्वं । एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु गेयव्वं । अट्टरूवपरूवणा गदा ।

घणाघणे वत्तइस्सामो । असंखेज्जावलियाहि पदरपल्लं गुणेऊण तेण घणपल्लुव-

सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशिका प्रमाण आ जाता है, क्योंकि, घनपल्यका घनपल्यके उपरिम वर्गमें भाग देने पर घनपल्य आता है । पुनः प्रतरपल्यका घनपल्यमें भाग देने पर पल्योपम आता है । पुनः असंख्यात आवलियोंका पल्योपममें भाग देने पर सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है । घनधारामें इसप्रकार भी सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{६५५३६^३ \times ६५५३६^३}{३२ \times ६५५३६^३ \times ६५५३६^३} = २०४८ \text{ सा.}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके ८५ अर्धच्छेद होते हैं, इसलिये ८५ वार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी २०४८ प्रमाण सासादनसम्यग्दष्टि राशि आती है ।

शंका—उक्त भागहारकी अर्धच्छेदशलाकापं कितनी होती हैं ?

समाधान—एकका विरलन करके और उसे दोरूप करके परस्पर गुणा करनेसे उत्पन्न हुई राशिको तीनसे गुणा करके जो लब्ध आवे उसमेंसे एक कम करके शेषसे पल्योपमके अर्धच्छेदोंको गुणित करके जो संख्या आवे उसमें असंख्यात आवलियोंके अर्धच्छेद मिला देने पर उक्त भागहारके अर्धच्छेद होते हैं ।

$$\text{उदाहरण—} २ = २ \times ३ = ६ - १ = ५ \times १६ = ८० + ५ = ८५.$$

इसीप्रकार ऊपर भी अर्धच्छेदोंके संकलन करनेके विधानका कथन करना चाहिये । यहां पर द्विगुणादिकरणविधि करना चाहिये । इसीप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्तस्थानोंमें भी ले जाना चाहिये । इसप्रकार घनधारा प्ररूपणा समाप्त हुई ।

अब घनाघनधारामें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— असंख्यात आवलियोंसे प्रतरपल्यको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनपल्यके उपरिम

रिमवर्गं गुणेऊण तेण घणाघणपल्ले भागे हिदे सासणसम्माइड्डिरासी आगच्छदि । केण कारणेण ? घणपल्लुवरिमवर्गेण घणाघणपल्ले भागे हिदे घणपल्लो आगच्छदि । पुणो वि पदरपल्लेण घणपल्ले भागे हिदे पलिदोवमो आगच्छदि । पुणो वि असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइड्डिरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । तस्स भागहारस्स अद्वच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्वच्छेदणए कदे वि-सासणसम्माइड्डिरासी आगच्छदि । तस्स अद्वच्छेदणयसलागा केत्तिया ? रूवूणणवहि रूवेहि पलिदोवमस्स अद्वच्छेदणए गुणिय असंखेज्जावलियद्वच्छेदणयपक्खित्तमेत्ता । अधवा असंखेज्जावलियाहि पदरपल्लं गुणेऊण तेण घणपल्लुवरिमवर्गं गुणेऊण तेण पुणो घणाघणपल्लं गुणेऊण तस्सुवरिमवर्गे भागे हिदे सासणसम्माइड्डिरासी आगच्छदि । केण कारणेण ? घणाघणेण उवरिमवर्गे भागे हिदे घणाघणो आगच्छदि । पुणो वि

वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका घनाघनपल्यमें भाग देने पर सासादन-सम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है, क्योंकि, घनपल्यके उपरिम वर्गका घनाघनपल्यमें भाग देने पर घनपल्य आता है । पुनः प्रतरपल्यका घनपल्यमें भाग देने पर पल्योपम आता है । पुनः असंख्यात आवलियोंका पल्योपममें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है । घनाघनधारामें इसप्रकार सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि आती है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{६५५३६^३ \times ६५५३६^३ \times ६५५३६^३}{३२ \times ६५५३६^३ \times ६५५३६^३ \times ६५५३६^३} = २०४८ \text{ सा.}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आ जाता है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके अर्धच्छेद १३३ होते हैं, इसलिये उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि २०४८ आती है ।

शंका— उक्त भागहारकी अर्धच्छेदशलाकाए कितनी हैं ?

समाधान— नौमेंसे एक कम करके जो शेष रहते हैं उनसे पल्योपमके अर्धच्छेदोंको गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें असंख्यात आवलियोंके अर्धच्छेद मिला देने पर उक्त भागहारके अर्धच्छेद होते हैं ।

$$\text{उदाहरण—} ९ - १ = ८ \times १६ = १२८ + ५ = १३३.$$

अथवा, असंख्यात आवलियोंसे प्रतरपल्यको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनपल्यके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनाघनपल्यको गुणित करके आवे हुए लब्धका घनाघनपल्यके उपरिम वर्गमें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है, क्योंकि, घनाघनपल्यका उसके उपरिम वर्गमें भाग देने पर घनाघनपल्य

प्रतिषु 'घणपल्लं' इति पाठः ।

घणपल्लुवरिमवग्गेण घणाघणे भागे हिदे घणपल्लो आगच्छदि । पुणो वि पदरपल्लेण घणपल्ले भागे हिदे पलिदोवमो आगच्छदि । पुणो वि असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइडिरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि सासणसम्माइडिरासी आगच्छदि । तस्सद्धच्छेदणयसलागा केत्तियां ? एगघणाघणवग्गसलागं विरलिय विगं करिय अण्णोण्णभत्थकदणवगुणरूवूणरासिणा पलिदोवमद्धच्छेदणए गुणिय असंखेज्जावलियाणं अद्धच्छेदणयपक्खित्तमेत्ता । एवं दोण्णि-चत्तारि-आदि-वग्गट्ठाणाणि विरलिय विगुणिदण्णोण्णभत्थणवगुणरूवूणरासिणा पलिदोवमद्धच्छेदणा गुणिय सादिरेगा

आता है । पुनः घनपल्यके उपरिम वर्गका घनाघनपल्यमें भाग देने पर घनपल्य आता है । पुनः प्रतरपल्यका घनपल्यमें भाग देने पर पल्योपम आता है । पुनः असंख्यात आवलियोंका पल्योपममें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है । घनाघनधारामें इसप्रकार भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है, इसलिये पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया ।

उदाहरण— $\frac{६५५३६^३ \times ६५५३६^३}{३२ \times ६५५३६^३ \times ६५५३६^३ \times ६५५३६^३ \times ६५५३६^३} = २०४८$ सा.

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके २७७ अर्धच्छेद होते हैं, अतः इतनीवार उक्त भाज्य राशिके अर्धच्छेद करने पर २०४८ प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि राशि आती है ।

शंका—उक्त भागहारकी अर्धच्छेदशलाकाए कितनी होती हैं ?

समाधान—घनाघनरूप एक वर्गशलाकाका विरलन करके और उसे दो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे उत्पन्न हुए दोको नौसे गुणा करने पर जो राशि उत्पन्न हो उसमेंसे एक कम करके जो शेष रहे उससे पल्योपमके अर्धच्छेदोंको गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें असंख्यात आवलियोंके अर्धच्छेदोंके मिला देने पर उक्त भागहारके अर्धच्छेदोंका प्रमाण आ जाता है ।

उदाहरण— $२ = २ \times २ = १८ - १ = १७ \times १६ = २७२ + ५ = २७७$.

इसीप्रकार दो वर्गस्थान या चार वर्गस्थान आदि ऊपर गये हों तो दो या चार आदिका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दोरूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि आवे उसे नौसे गुणा करके जो लब्ध आवे उसमेंसे एक कम करे, जो शेष रहे उसे पल्योपमके अर्धच्छेदोंसे गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें असंख्यात आवलियोंके अर्धच्छेद मिला कर सर्वत्र भागहारके अर्धच्छेद उत्पन्न कर लेना चाहिये । सर्वत्र द्विगुणादि-

करिय भागहारद्वच्छेदणया उप्पाएदव्वा । सव्वत्थ दुगुणादिकरणं कादव्वं । गहिद-
परूवणा गदा ।

गहिदगहिदं वत्तइस्सामो । तं जहा, पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण वेरूव-
धाराए उवरि इच्छिदवग्गे भागे हिदे जं भागलद्धं तेण तम्मिह चेव वग्गे भागे हिदे
सासणसम्माइट्टिरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्वच्छेदणयमेत्ते रासिस्स
अद्वच्छेदणए कदे वि सासणसम्माइट्टिरासी आगच्छदि । एवमुवरि सव्वत्थ कायव्वं ।
वेरूवपरूवणा गदा । अहरूवे वत्तइस्सामो । घणपल्लपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागेण
सासणसम्माइट्टिरासिणा उवरि इच्छिदवग्गे भागे हिदे जं भागलद्धं तेण तम्मिह चेव
वग्गे भागे हिदे सासणसम्माइट्टिरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्वच्छेदणयमेत्ते

करण कर लेना चाहिये । इसप्रकार गृहीत उपरिमविकल्प प्ररूपणा समाप्त हुई ।

अब गृहीतगृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है— पस्योपमके
असंख्यातवें भाग (सासादनसम्यग्दृष्टिराशि) का द्विरूपवर्गधारामें ऊपर इच्छित वर्गमें भाग
देने पर जो भाग लब्ध आवे उसका उसी इच्छित वर्गमें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि
जीवराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—६५५३६ का इच्छित वर्ग ६५५३६^२

$$\frac{६५५३६^२}{२०४८} = ६५५३६ \times ३२; \quad \frac{६५५३६^२}{६५५३६ \times ३२} = २०४८ \text{ सा.}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भाज्य राशिके अर्धच्छेद करने
पर भी सासादनसम्यग्दृष्टि राशि आती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके २१ अर्धच्छेद हैं, अतः इतनीवार उक्त भाज्यमान राशिके
अर्धच्छेद करने पर २०४८ प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि राशि आती है ।

इसीप्रकार ऊपरके वर्गस्थानोंमें भी सर्वत्र करना चाहिये । इसप्रकार द्विरूपवर्गधारकी
प्ररूपणा समाप्त हुई । अब घनधारामें गृहीतगृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—

घनपत्यके प्रथम वर्गमूलके असंख्यातवें भागरूप सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका
ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उसका उसी इच्छित वर्गमें भाग देने
पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—घन ६५५३६^३ का प्रथम वर्गमूल २५६^३

$$\frac{२५६^३}{२५६ \times ३२} = २०४८; \quad \frac{६५५३६^३ \times ६५५३६^३}{२०४८} = ६५५३६^३ \times ३२;$$

$$\frac{६५५३६^३}{६५५३६^३ \times ३२} = २०४८ \text{ सा.}$$

रासिस्स अद्वच्छेदणए कदे वि सासणसम्माइड्डिरासी आगच्छदि । एवं सव्वत्थ परू-
वेदव्वं । अद्वरूवपरूवणा गदा । घणाघणे वत्तइस्सामो । घणाघणपल्लविदियवग्गमूलस्स
असंखेज्जदिभागेण सासणसम्माइड्डिरासिणा उवरि इच्छिदवग्गे भागे हिदे जं भागलद्धं तेण
तमिह चैव वग्गे भागे हिदे सासणसम्माइड्डिरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स
अद्वच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्वच्छेदणए कदे वि सासणसम्माइड्डिरासी आगच्छदि ।
गहिदगहिदो गदो ।

गहिदगुणगारं वत्तइस्सामो । पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण सासणसम्माइड्डि-
रासिणा उवरि इच्छिदवग्गे भागे हिदे जं भागलद्धं तेण तमेव वग्गं गुणेऊण तस्सुवरिम-

उक्त भागहारके अर्धच्छेदप्रमाण उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी
सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके ८५ अर्धच्छेद होते हैं, अतः इतनीवार उक्त भज्यमान
राशिके अर्धच्छेद करने पर भी २०४८ प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टिराशि आती है ।

इसीप्रकार सर्वत्र परूपण करना चाहिये । इसप्रकार घनधारा समाप्त हुई । अब
घनाघनधारामें गृहीतगृहीत उपरिम विकल्प बतलाते हैं—

घनाघनपल्यके द्वितीय वर्गमूलके असंख्यातवें भागरूप सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिके
प्रमाणका घनाघनपल्यके ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उसका उसी
वर्गमें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—घनाघन ६५५३६ का द्वितीय वर्गमूल १६; १६ का असंख्यातवां भाग
 २×१६ ,

$$\frac{१६}{२ \times १६} = २०४८; \quad \frac{६५५३६ \times ६५५३६}{२०४८} = ६५५३६ \times ३२;$$

$$\frac{६५५३६ \times ६५५३६}{६५५३६ \times ३२} = २०४८.$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद
करने पर भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके २७७ अर्धच्छेद होते हैं, अतः इतनीवार उक्त भज्य-
मान राशिके अर्धच्छेद करने पर २०४८ प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि राशि आती है । इसप्रकार
गृहीतगृहीत उपरिम विकल्प समाप्त हुआ ।

अब गृहीतगुणकार उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—पल्योपमके असंख्यातवें भागरूप
सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिके प्रमाणका पल्योपमके ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो
भाग लब्ध आवे उससे उसी इच्छित वर्गको गुणित करके आई हुई लब्ध राशिका इच्छित
वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

वर्गमे भागे हिदे सासणसम्माइड्डिरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि सासणसम्माइड्डिरासी अवचिड्डे । एवं सव्वत्थ वत्तव्वं । वेरूवपरूवणा गदा । अद्धरूवे वत्तइस्सामो । घणपल्लपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागेण सासणसम्माइड्डिरासिणा उवरि इच्छिदवग्गे भागे हिदे जं भागलद्धं तेण तमेव वर्गं गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे सासणसम्माइड्डिरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि सासणसम्माइड्डिरासी अवचिड्डे । एवं सव्वत्थ वत्तव्वं । अद्धरूवपरूवणा गदा । घणाघणे वत्तइस्सामो । घणाघण-

$$\text{उदाहरण—} \frac{६५५३६^२}{२०४८} = ६५५३६ \times ३२; \quad ६५५३६^२ \times ६५५३६ \times ३२ = ६५५३६^३ \times ३२;$$

$$\frac{६५५३६^३ \times ६५५३६^३}{६५५३६^३ \times ३२} = २०४८ \text{ सा.}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि ही आती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके ५३ अर्धच्छेद होते हैं, अतएव इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी २०४८ प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि राशि आती है ।

इसीप्रकार सर्वत्र करना चाहिये । इसप्रकार द्विरूपप्ररूपणा समाप्त हुई । अब अष्टरूपमें गृहीतगुणकार उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—

घनपल्यके प्रथम वर्गमूलके असंख्यातवें भागरूप सासादनसम्यग्दृष्टि राशिका घनपल्यके ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उससे उसी इच्छित वर्गको गुणित करके आई हुई लब्ध राशिका इच्छित वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—६५५३६ का प्रथम वर्गमूल २५६;

$$\frac{२५६^२}{३२ \times २५६} = २०४८; \quad \frac{६५५३६^३ \times ६५५३६^३}{२०४८} = ६५५३६^३ \times ३२;$$

$$६५५३६^३ \times ६५५३६^३ \times ३२ = ६५५३६^३ \times ३२;$$

$$\frac{६५५३६^३ \times ६५५३६^३}{६५५३६^३ \times ३२} = २०४८ \text{ सा.}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि आती है ।

उक्त भागहारके १८१ अर्धच्छेद होते हैं, अतएव इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी २०४८ प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि राशि आती है ।

इसीप्रकार सर्वत्र कहना चाहिये । इसप्रकार अष्टरूप प्ररूपणा समाप्त हुई । अब

विदियवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागेण सासणसम्माइड्डिरासिणा उवरि इच्छिदवग्गे भागे हिदे जं भागलद्धं तेण तमेव वग्गं गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे सासणसम्माइड्डिरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि सासणसम्माइड्डिरासी अवचिद्धदे । एवं सव्वत्थ घणाघनधाराए वत्तव्वं । गहिदगुणगारो गदो । एवं सासणसम्माइड्डिपरूवणा समत्ता । एवं सम्मामिच्छाइड्डिअसंजदसम्माइड्डिसंजदासंजदाणं च वत्तव्वं । णवरि विसेसो अप्पणो अवहारकालेहि खंडिदादभो वत्तव्वा । एत्थ एदेसिं संदिद्धिं वत्तइस्सामो—

वत्तीस सोलस चत्तारि जाण सदसहिदमद्धवीसं च ।

एदे अवहारत्था हवंति संदिद्धिणा दिट्ठा ॥ ३७ ॥

घनाघनधारामें गृहीतगुणकार उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—

घनाघनके द्वितीय वर्गमूलके असंख्यातवें भागरूप सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका घनाघनपर्ययके ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उससे उसी इच्छित वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका उसी इच्छित वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

$$\begin{aligned} \text{उदाहरण—} \frac{१६}{२ \times १६} &= २०४८; \quad \frac{६५५३६ \times ६५५३६}{२०४८} = ६५५३६^{१०} \times ३२; \\ ६५५३६^{१०} \times ६५५३६^{१०} \times ३२ &= ६५५३६^{२०} \times ३२; \\ \frac{६५५३६^{२०}}{६५५३६^{२०} \times ३२} &= २०४८ \text{ सा.} \end{aligned}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके ५६५ अर्धच्छेद होते हैं, इसलिये इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी २०४८ प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि राशि आती है ।

सर्वत्र घनाघनधारामें आगे भी इसीप्रकार कहना चाहिये । इसप्रकार गृहीतगुणकार उपरिम विकल्प समाप्त हुआ ।

इसप्रकार सासादनसम्यग्दृष्टि प्ररूपणा समाप्त हुई ।

इसीप्रकार सम्यग्मिथ्यादृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत जीवराशिके प्रमाणका खण्डित, भाजित आदिके द्वारा कथन करना चाहिये । इतनी विशेषता है कि अपने अपने अवहारकालके द्वारा ही खण्डित, भाजित आदिका कथन करना चाहिये । आगे इन सबकी अंकसंदृष्टि बतलाते हैं—

सासादनसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकालका प्रमाण ३२, सम्यग्मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकालका प्रमाण १६, असंयतसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकालका प्रमाण ४, और संयता-

पण्णडी च सहस्सा पंचसया खलु छउत्तरा तीसं ।
 पलिदोवमं तु एवं विधाण संदिट्ठिणा दिहं ॥ ३८ ॥
 विसहस्सं अडयाळं छण्णउदी चेय चदुसहस्साणि ।
 सोलसहस्साणि पुणो तिण्णिणसया चउरसीदीया ॥ ३९ ॥
 पंचसय वारसुत्तरमुद्धिडाईं तु लद्धदव्वाइं ।
 सासण-मिस्सासंजद-विरदाविरदाण णु कमेण ॥ ४० ॥

सासणसम्माइट्ठी ३२; सम्मामिच्छाइट्ठी १६; असंजदसम्माइट्ठी ४; संजदासंजद १२८; एदे अवहारकाला । सासणसम्माइट्ठिदव्वपमाणं २०४८ सम्मामिच्छाइट्ठिदव्व-
 पमाणं ४०९६ असंजदसम्माइट्ठिदव्वपमाणं १६३८४ संजदासंजददव्वपमाणं ५१२ ।
 पलिदोवमपमाणं ६५५३६ ।

पमत्तसंजदा दव्वपमाणेण केवडिया, कोडिपुधत्तं ॥ ७ ॥

पमत्तसंजदग्गहर्णं सेसगुणद्वानाणं पडिसेहट्ठं । कोडिपुधत्तग्गहर्णं सेससंखाणिरा-

संयतसंबन्धी अवहारकालका प्रमाण १२८ जानना चाहिये । सम्यग्ज्ञानियोंके द्वारा देखे गये ये
 अवहारार्थ है ॥ ३७ ॥

पैंसठ हजार पांचसौ छत्तीसको पल्योपम जानना चाहिये ऐसा सम्यग्ज्ञानियोंने
 अवलोकन किया है ॥ ३८ ॥

सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशिका प्रमाण २०४८, सम्यग्मिथ्यादष्टि जीवराशिका प्रमाण
 ४०९६, असंयतसम्यग्दष्टि जीवराशिका प्रमाण १६३८४ और संयतासंयत जीवराशिका प्रमाण
 ५१२ आता है ॥ ३९-४० ॥

सासादनसम्यग्दष्टिसंबन्धी भागहार ३२, सम्यग्मिथ्यादष्टिसंबन्धी भागहार १६,
 असंयतसम्यग्दष्टिसंबन्धी भागहार ४ और संयतासंयतसंबन्धी भागहार १२८ है । सासादन-
 सम्यग्दष्टि जीवराशिका प्रमाण २०४८, सम्यग्मिथ्यादष्टि जीवराशिका प्रमाण ४०९६, असंयत-
 सम्यग्दष्टि जीवराशिका प्रमाण १६३८४ और संयतासंयत जीवराशिका प्रमाण ५१२ है । तथा
 पल्योपमका प्रमाण ६५५३६ समझना चाहिये ।

प्रमत्तसंयत जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? कोटिपृथक्त्वप्रमाण हैं ॥ ७ ॥

शेष गुणस्थानोंका प्रातिषेध करनेके लिये प्रमत्तसंयतपदका ग्रहण किया है । शेष
 संख्याओंका निराकरण करनेके लिये कोटिपृथक्त्व पदका ग्रहण किया है ।

१ पं. सं. पृ. ८.

२ प्रमत्तसंयताः कोटीपृथक्त्वसंख्याः । पृथक्त्वमित्यागमसंज्ञा तिसृणां कोटीनामुपरि नवानामधः । स. सि.
 १, ८, पंचेव य तेणउदी णवट्ठविसयच्छउत्तरं पमदे । गो. जी. ६२४.

करणं । पुधत्तमिदि तिण्हं कोडीणमुवरि णवण्हं कोडीणं हेट्टदो जा संखा सा धेत्तवा । सा अणेगवियप्पादो इमा होदि त्ति ण जाणिज्जदे ? ण, परमगुरूवदेसादो जाणिज्जदे । तत्थ पमत्तसंजदा णं पंच कोडीओ तेणउदिलक्खा अट्टाणउदिसहस्सा छउत्तरं विसदं च ५९३९८२०६ । एदमेत्तियं होदि त्ति कर्धं णव्वदे ? आइरियपरंपरागदजिणोवदेसादो ।

अप्पमत्तसंजदा द्व्यपमाणेण केवडिया, संखेज्जा' ॥८॥

जदि वि एदं संखेज्जा इदि वयणं सव्वसंखेज्जवियप्पाणं साहारणं हवदि तो वि कोडिपुधत्तं ण पूरेदि त्ति णव्वदे । तं कर्धं ? पुध सुत्तरंभण्णहाणुववत्तीदो, 'पमत्तद्वादो अप्पमत्तद्वा संखेज्जगुणहीणो' त्ति सुत्तादो वा । अप्पमत्तसंजदाणं पमाणं गुरूवदेसादो वुच्चदे । दो कोडीओ छण्णउदिलक्खा णवणउदिसहस्सा तिरहियसयं च । अंकदो वि एत्तिया हवंति २९६९९१०३ । वुत्तं च—

शंका — पृथक्त्व इस पदसे तीन कोटिके ऊपर और नौ कोटिके नीचे जितनी संख्या है, वह लेना चाहिये । परंतु वह मध्यकी संख्या अनेक विकल्परूप होनेसे यही संख्या यहां ली गई है यह नहीं जाना जाता है ?

समाधान — नहीं, क्योंकि, यह परम गुरुके उपदेशसे जाना जाता है । उसमें प्रमत्त-संयत जीवोंका प्रमाण पांच करोड़ तेरानवे लाख अट्टानवे हजार दोसौ छह ५९३९८२०६ है ।

शंका — यह संख्या इतनी है यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान — आचार्यपरंपरासे आये हुए जिनेन्द्रदेवके उपदेशसे यह जाना जाता है कि यह संख्या इतनी ही है ।

अप्रमत्तसंयत जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ ८ ॥

यद्यपि सूत्रमें आया हुआ 'संखेज्जा' यह वचन, संख्यात संख्याके जितने भी विकल्प हैं, उनमें समानरूपसे पाया जाता है तो भी वह कोटिपृथक्त्वको पूरा नहीं करता है, अर्थात् यहां पर कोटिपृथक्त्वसे नीचेकी संख्या इष्ट है, यह जाना जाता है ।

शंका — यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान — यहां पर पूर्वोक्त अर्थ इष्ट न होकर यदि कोटिपृथक्त्वरूप अर्थ ही इष्ट होता तो अलगसे सूत्र बनानेकी कोई आवश्यकता नहीं थी । अथवा, 'प्रमत्तसंयतके कालसे अप्पमत्तसंयतका काल संख्यातगुणा हीन है' इस सूत्रसे भी जाना जाता है कि यहां पर कोटिपृथक्त्वरूप अर्थ इष्ट नहीं है ।

अब गुरुपदेशसे अप्रमत्तसंयत जीवोंका प्रमाण कहते हैं—

अप्रमत्तसंयत जीवोंका प्रमाण दो करोड़ छयानवे लाख निन्यानवे हजार एकसौ तीन

१ अप्रमत्तसंयताः संख्येयाः । स. सि. १, ८. तिरधियसयणवणउदी छण्णउदी अप्पमत्त वे कोडी । गो जी. ६२५. कोडीसहस्रपुहुत्तं पमत्तइयरे उ थोवयरा । पञ्चसं. २. २२.

तिगहिय-सद णवणउदी छणउदी अप्पमत्त वे कोडी ।

पंचेव य तेणउदी णवट्ट विसया छउत्तरा चेयं ॥ ४१ ॥

अप्पमत्तदब्बादो पमत्तदब्बं केण कारणेण दुगुणं ? अप्पमत्तद्वादो पमत्तद्वाए दुगुणत्तादो ।

चदुण्हमुवसामगा दब्बपमाणेण केवडिया; पवेसेण एक्को वा दो वा तिणिण वा, उक्कस्सेण चउवण्णं ॥ ९ ॥

एगेगुणद्वान्णिह एगसमयम्हि चारित्तमोहणीयमुवसामेतो जहण्णेण एगो जीवो पविसइ, उक्कस्सेण चउवण्ण जीवा पविसंति । एदं सामण्णदो भवदि । विसेसदो पुण अट्ट-समयाहिय-वासपुधत्तम्भंतरे उवसमसेट्ठिपाओग्गा अट्ट समया हवंति । तत्थ पढमसमए एगजीवमाइं काऊण जा उक्कस्सेण सोलस जीवा त्ति उवसमसेट्ठिं चडंति । विदियसमए एगजीवमाइं काऊण जा उक्कस्सेण चउवीस जीवा त्ति उवसमसेट्ठिं चडंति । तदियसमए एगजीवमाइं काऊण जा उक्कस्सेण तीस जीवा त्ति उवसमसेट्ठिं चडंति । चउत्थसमए एगजीवमाइं काऊण जा उक्कस्सेण छत्तीस जीवा त्ति उवसमसेट्ठिं चडंति ।

है । अंकोंसे भी अप्रमत्तसंयत २९६९९१०३ इतने ही हैं । कहा भी है—

प्रमत्तसंयत जीवोंका प्रमाण पांच करोड़ तेरानवे लाख अट्टानवे हजार दोसौ छह है और अप्रमत्तसंयत जीवोंका प्रमाण दो करोड़ छयानवे लाख निन्यानवे हजार एकसौ तीन है ॥४१॥

शंका—अप्रमत्तसंयतके द्रव्यसे प्रमत्तसंयतका द्रव्य किस कारणसे दूना है ?

समाधान—क्योंकि, अप्रमत्तसंयतके कालसे प्रमत्तसंयतका काल दुगुणा है ।

चारों गुणस्थानोंके उपशामक द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? प्रवेशकी अपेक्षा एक या दो अथवा तीन और उत्कृष्टरूपसे चौवन होते हैं ॥ ९ ॥

उपशामश्रेणीके प्रत्येक गुणस्थानमें एक समयमें चारित्रमोहनीयका उपशाम करता हुआ जघन्यसे एक जीव प्रवेश करता है और उत्कृष्टरूपसे चौवन जीव प्रवेश करते हैं । यह कथन सामान्यसे है । विशेषकी अपेक्षा तो आठ समय अधिक वर्षपृथक्त्वके भीतर उपशामश्रेणीके योग्य (लगातार) आठ समय होते हैं । उनमेंसे प्रथम समयमें एक जीवको आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे सोलह जीवतक उपशामश्रेणी पर चढ़ते हैं । दूसरे समयमें एक जीवको आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे चौबीस जीवतक उपशामश्रेणी पर चढ़ते हैं । तीसरे समयमें एक जीवको आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे तीस जीवतक उपशामश्रेणी पर चढ़ते हैं । चौथे समयमें एक जीवको आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे

१ गो. जी. ६२५. परं तत्र 'पंचेव य तेणउदी णवट्टविसयच्छउत्तरं पमदे' इति पाठः । पं. सं. ६२, ६३.

२ चत्वार उपशामकाः प्रवेशेन एको वा द्वौ वा त्रयो वा । उत्कर्षेण चतुःपंचाशत् । स. सि. १, ८.

एगाइ चउपण्णा समगं उवसामगा य उवसंता । पञ्चसं. २, ९३.

पंचमसमए एगजीवमाइं काऊण जा उक्कस्सेण वायाल जीवा त्ति उवसमसेट्ठि चडंति ।
छट्ठसमए एगजीवमाइं काऊण जा उक्कस्सेण अडदाल जीवा त्ति उवसमसेट्ठिमारुहंति ।
सत्तमद्वमदोसु समएसु एकजीवमाइं काऊण जावुक्कस्सेण चउवण्ण जीवा त्ति उवसमसेट्ठि
चडंति । उतं च—

सोलसयं चउवीसं तीसं छत्तीस तह य वायालं ।

अडयालं चउवण्णं चउवण्णं होइ अंतिमए' ॥ ४२ ॥

अद्धं पडुच्च संखेजा' ॥ १० ॥

पुव्वुत्तेसु अट्ठसु समएसु एगोमगुणट्ठाणम्मि उक्कस्सेण संचिदसव्वजीवे एगट्ठं कदे
चउरुत्तरतिसयमेत्ता हवंति । तेसिं संखेवेण मेलावणविहाणं वुच्चदे । अट्ठं गच्छं वुविय
सत्तारसमाइं काऊण छउत्तरं करिय संकलणसुत्तेण' मेलाविदे एगोमगुणट्ठाणम्मि संचिद-

छत्तीस जीव तक उपशमश्रेणी पर चढ़ते हैं । पांचवें समयमें एक जीवको आदि लेकर उत्कृष्ट-
रूपसे व्यालीस जीव तक उपशमश्रेणी पर चढ़ते हैं । छठे समयमें एक जीवको आदि लेकर उत्कृष्ट-
रूपसे अडतालीस जीव तक उपशमश्रेणी पर चढ़ते हैं । सातवें और आठवें इन दोनों समयोंमें एक
जीवको आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे चौवन चौवन जीव तक उपशमश्रेणी पर चढ़ते हैं । कहा भी है-

निरन्तर आठ समयपर्यन्त उपशमश्रेणी पर चढ़नेवाले जीवोंमें अधिकसे अधिक प्रथम
समयमें सोलह, दूसरे समयमें चौबीस, तीसरे समयमें तीस, चौथे समयमें छत्तीस, पांचवें
समयमें व्यालीस, छठे समयमें अडतालीस, सातवें समयमें चौवन और अन्तिम अर्थात् आठवें
समयमें भी चौवन जीव उपशमश्रेणीपर चढ़ते हैं ॥ ४२ ॥

कालकी अपेक्षा उपशमश्रेणीमें संचित हुए सभी जीव संख्यात होते हैं ॥ १० ॥

पूर्वोक्त आठ समयोंमें एक एक गुणस्थानमें उत्कृष्टरूपसे संचित हुए संपूर्ण
जीवोंको एकत्रित करने पर तीनसौ चार होते हैं । आगे संक्षेपसे उन्हींके जोड़ करनेकी
विधि कहते हैं—

आठको गच्छरूपसे स्थापित करके, सत्रहको आदि अर्थात् मुख करके और छहको
उत्तर अर्थात् चय करके 'पदमेगेण विहीणं' इत्यादि संकलन सूत्रके नियमानुसार जोड़
करने पर प्रत्येक गुणस्थानमें उपशमक जीवोंकी संचित राशिका प्रमाण तीनसौ चार
भा जाता है ।

उदाहरण— $८ - १ = ७ \div २ = ३\frac{१}{२} \times ६ = २१ + १७ = ३८ \times ८ = ३०४$.

१ गो. जी. ६२७, पं. सं. ६५, ६७.

२ स्वकालेन समुदिताः संख्येयाः । स. सि. १, ८. अद्धं पडुच्च सेटीए होति सव्वे वि संखेज्जा ।
पथसं. २, २३.

३ पदमेगेण विहीणं दुमाजिदं उत्तरेण संशुण्णिदं । पभवउदं पदशुण्णिदं पदगण्णिदं तं विजाणाहि । त्रि. सा.
१६४. एकहीनं पदं वृद्धया ताडितं भामितं द्विमिः । आदियुक्तं परान्यस्तमीप्सितं गणितं मतम् ॥ पं. सं. ७७.

उवसामगाणं पमाणं हवदि । (सउक्कस्सपमाणजीवसहिदा सव्वे समया जुगवं ण लहंति त्ति के वि पुव्वुत्तपमाणं पंचूणं करेति' । एदं पंचूणं वक्खाणं पवाइज्जमाणं दक्खिण-माइरियपरंपरागममिदि जं वुत्तं होइ । पुव्वुत्तवक्खाणमपवाइज्जमाणं वाउं आइरियपरं-परा-अणागदमिदि णायव्वं ।

चउण्हं खवा अजोगिकेवली दव्वपमाणेण केवडिया; पवेसेण एको वा दो वा तिणिण वा, उक्कस्सेण अटोत्तरसदं ॥ ११ ॥

अट्टसमयाहिय-उ-मासव्वभंतरे खवगसेट्ठिपाओग्गा अट्ट समया हवंति । तेसिं समयाणं विसेसविक्खमकाऊण सामण्णपरूवणं कीरमाणे जहण्णेण एगो जीवो खवग-गुणद्वानं पडिवज्जदि । उक्कस्सेण अटोत्तरसयमेत्तजीवा खवगगुणद्वानं पडिवज्जंति । विसेसमस्सिदूण परूविज्जमाणे पढमसमए एगजीवमाइं काऊण जा उक्कस्सेण वत्तीस जीवा त्ति खवगसेट्ठिं चडंति । विदियसमए एगजीवमाइं काऊण जा उक्कस्सेण अडदालीस जीवा त्ति खवगसेट्ठिं चडंति । तदियसमए वि एगजीवमाइं काऊण जा उक्कस्सेण सट्ठि जीवा त्ति खवगसेट्ठिं चडंति । चउत्थसमए एगजीवमाइं काऊण जा उक्कस्सेण वाहत्तरे जीवा त्ति

अपने इस उत्कृष्ट प्रमाणवाले जीवोंसे युक्त संपूर्ण समय एकसाथ नहीं प्राप्त होते हैं, इसलिये कितने ही आचार्य पूर्वोक्त प्रमाणमेंसे पांच कम करते हैं । पूर्वोक्त प्रमाणमेंसे पांच कमका यह व्याख्यान प्रवादरूपसे आ रहा है, दक्षिण है और आचार्य-परंपरागत है, यह इस कथनका तात्पर्य है । तथा पूर्वोक्त ३०४ का व्याख्यान प्रवादरूपसे नहीं आ रहा है, वाम है, आचार्य-परंपरासे अनागत है, ऐसा जानना चाहिये ।

चारों गुणस्थानोंके क्षपक और अयोगिकेवली जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? प्रवेशकी अपेक्षा एक या दो अथवा तीन और उत्कृष्टरूपसे एकसौ आठ हैं ॥ ११ ॥

आठ समय अधिक छह महीनाके भीतर क्षपकश्रेणीके योग्य आठ समय होते हैं । उन समयोंके विशेष कथनकी विवक्षा न करके सामान्यरूपसे प्ररूपण करने पर जघन्यसे एक जीव क्षपक गुणस्थानको प्राप्त होता है । तथा उत्कृष्टरूपसे एकसौ आठ जीव क्षपक गुणस्थानको प्राप्त होते हैं । विशेषका आश्रय लेकर प्ररूपण करने पर प्रथम समयमें एक जीवको आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे बत्तीस जीवतक क्षपकश्रेणी पर चढ़ते हैं । दूसरे समयमें एक जीवको आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे अडतालीस जीवतक क्षपकश्रेणी पर चढ़ते हैं । तीसरे समयमें एक जीवको आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे साठ जीवतक क्षपकश्रेणी पर चढ़ते हैं । चौथे समयमें एक जीवको

१ सर्वोत्कृष्टप्रमाश्लिष्टा लव्यन्ते न यतः क्षणाः । आचार्यैरपरैवक्ताः पंचमी रहितास्ततः ॥ पं. सं. ६८.

२ चत्वारः क्षपका अयोगिकेवलिनश्च प्रवेशेन एको वा द्वौ वा त्रयो वा । उत्कर्वेणाष्टोत्तरशतसंख्याः ।
 छ. सि. १, ८. खवगा खीणाजोगी एणाइ जाव होति अट्टसयं । पञ्चसं. २, २४.

खवगसेहिं चडंति । पंचमसमए एगजीवमाईं काऊण जा उक्कस्सेण चउरासीदि जीवा ति खवगमेहिं चडंति । छट्ठमसमए एगजीवमाईं काऊण जा उक्कस्सेण छण्णउदि जीवा ति खवगसेहिं चडंति । सत्तमसमए अट्ठमसमए च एगजीवमाईं काऊण जा उक्कस्सेण अट्ठत्तरसयजीवा ति खवगसेहिं चडंति । उच्चं च—

वत्तीसमट्ठदालं सट्ठी वाइत्तरी य चुलसीई ।

छण्णउदी अट्ठत्तरसदमट्ठत्तरसयं च वेदव्वं ॥ ४३ ॥

अट्ठं पडुच्च संखेज्जा ॥ १२ ॥

अट्ठसमयसंचिदसव्वजीवे उक्कस्सेण एगट्ठे कदे अट्ठत्तरछस्सयमेत्तजीवा हवंति । तिस्से मेलावणविहाणं बुच्चदे । तं जहा-अट्ठं गच्छं डुविय चौत्तीसमाईं काऊण वारसुत्तरं करिय संकलणसुत्तेण मेलाविदे खवगरासी मिलदि । एत्थ करणगाहा—

आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे बहत्तर जीवतक क्षपकश्रेणी पर चढ़ते हैं । पांचवें समयमें एक जीवको आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे चौरासी जीवतक क्षपकश्रेणी पर चढ़ते हैं । छठे समयमें एक जीवको आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे छयानवे जीवतक क्षपकश्रेणी पर चढ़ते हैं । सातवें और आठवें समयमें एक जीवको आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे प्रत्येक समयमें एकसौ आठ जीवतक क्षपकश्रेणी पर चढ़ते हैं । कहा भी है—

निरन्तर आठ समयपर्यन्त क्षपकश्रेणी पर चढ़नेवाले जीवोंमें पहले समयमें बत्तीस, दूसरे समयमें अड़तालीस, तीसरे समयमें साठ, चौथे समयमें बहत्तर, पांचवें समयमें चौरासी, छठे समयमें छयानवें, सातवें समयमें एकसौ आठ और आठवें समयमें एकसौ आठ जीव क्षपकश्रेणी पर चढ़ते हैं, ऐसा जानना चाहिये ॥ ४३ ॥

कालकी अपेक्षा संचित हुए क्षपक जीव संख्यात होते हैं ॥ १२ ॥

पूर्वोक्त आठ समयोंमें संचित हुए संपूर्ण जीवोंको एकत्रित करने पर संपूर्ण जीव छहसौ आठ होते हैं । आगे उसी संख्याके जोड़ करनेकी विधि कहते हैं—आठको गच्छरूपसे स्थापित करके चौत्तीसको आदि अर्थात् मुख करके और बारहको उत्तर अर्थात् चय करके 'पदमेगेण विहीणं' इत्यादि संकलनसूत्रके नियमानुसार जोड़ देने पर क्षपक जीवोंकी राशिका प्रमाण प्राप्त होता है ।

उदाहरण — $८ - १ = ७$, $७ \div २ = ३\frac{१}{२}$, $३\frac{१}{२} \times १२ = ४२$, $४२ + ३४ = ७६$, $७६ \times ८ = ६०८$.

अब यहां इसी विषयमें करणगाथा दी जाती है—

१ गो. जी. ६२८. पं. सं. ७९-८०.

२ स्वकालेन समुदिताः संख्ययाः । स. सि. १, ८. अट्ठाए सयणुहुत्तं । पञ्चसं. २, २४.

३ प्रतिपु 'जीवे ण' इति पाठः ।

उत्तरदल्लहयगच्छे पचयदल्लूणे सगदिवेत्त पुणो ।

पक्खिविय गच्छगुणिदे उवसम-खवगाण परिमाणं ॥ ४४ ॥

एसा उत्तरपडिवत्ती । एत्थ दस अवणिदे दक्खिणपडिवत्ती हवदि । एसा उव-
सम-खवगापरूवणगाहा-

तिसदिं वदंति केई चउरुत्तरमत्थपंचयं केई

उवसामगेसु एदं खवगाणं जाण तद्दुगुणं ॥ ४५ ॥

चउरुत्तरतिणिसयं पमाणमुवसामगाण केई तु ।

तं चव य पंचूणं भणंति केई तु परिमाणं ॥ ४६ ॥

एगेगगुणट्टाणमिह उवसामग-खवगाणं पमाणपरूवणगाहा-

उत्तर अर्थात् प्रचयको आधा करके और उसे गच्छसे गुणित करने पर जो लब्ध आवे उसमेंसे प्रचयका आधा घटा देने पर और फिर स्वकीय आदि प्रमाणको जोड़ देने पर उत्पन्न राशिके पुनः गच्छसे गुणित करने पर उपशमक और क्षपकोंका प्रमाण आता है ॥ ४४ ॥

उदाहरण—क्षपकोंकी अपेक्षा आदि ३४, प्रचय १२, गच्छ ८; उपशमकोंकी अपेक्षा आदि १७, प्रचय ६, गच्छ ८;

$१२ \div २ = ६$; $६ \times ८ = ४८$; $४८ - ६ = ४२$; $४२ + ३४ = ७६$; $७६ \times ८ = ६०८$ एक गुणस्थानमें क्षपकोंका प्रमाण ।

$६ \div २ = ३$; $३ \times ८ = २४$; $२४ - ३ = २१$; $२१ + १७ = ३८$; $३८ \times ८ = ३०४$ एक गुणस्थानमें उपशमकोंका प्रमाण ।

विशेषार्थ—यद्यपि यह करणगाथा यहां पर उपशमकों और क्षपकोंका प्रमाण लानेके लिये उद्धृत की गई है और उसमें उपशमकों और क्षपकोंके प्रमाण लानेकी प्रतिज्ञा भी की गई है, परंतु जहां समान हानि या समान वृद्धि पाई जाती है ऐसी अनेक संख्याओंका जोड़ भी इसी नियमसे आ जाता है ।

यह उत्तरमान्यता है । ६०८ मेंसे १० निकाल देने पर दक्षिणमान्यता होती है । अब आगे उपशमक और क्षपक जीवोंके प्रमाणकी प्ररूपणा करनेवाली गाथा देते हैं—

कितने ही आचार्य उपशमक जीवोंका प्रमाण तीनसौ कहते हैं । कितने ही आचार्य तीनसौ चार कहते हैं और कितने ही आचार्य तीनसौ चारमेंसे पांच कम अर्थात् दोसौ निन्यानवे कहते हैं । इसप्रकार यह उपशमक जीवोंका प्रमाण है । क्षपकोंका इससे दूना जानो ॥ ४५ ॥

कितने ही आचार्य उपशमक जीवोंका प्रमाण तीनसौ चार कहते हैं और कितने ही आचार्य पांच कम तीनसौ चार अर्थात् दोसौ निन्यानवे कहते हैं ॥ ४६ ॥

आगे एक एक गुणस्थानमें उपशमक और क्षपक जीवोंके प्रमाणकी प्ररूपणा करनेवाली गाथा देते हैं—

एकैकगुणद्वाने अद्वसु समएसु संचिदाणं तु ।

अद्वसय सत्तणउदी उवसम-खवगाण परिमाणं ॥ ४७ ॥

सजोगिकेवली द्व्यपमाणेण केवडिया; पवेसणेण एको वा दो वा तिण्णि वा, उक्कस्सेण अट्टुत्तरसयं ॥ १३ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो पुवं व परुवेदव्वो ।

अद्धं पडुच्च सदसहस्सपुधत्तं ॥ १४ ॥

अद्वमस्सिऊण सदसहस्सपुधत्ताणयणविहाणं वुच्चदे- अद्वसमयाहियछम्मासाणम-
भंतरे जदि अद्व सिद्धसमया लब्भंति तो चालीससहस्स-अद्वसय-एक्केतालीसमेत्त-अद्व-
समयाहियछमासाभंतरे केत्तिया सिद्धसमया लब्भंति त्ति तेरासिए कदे तिण्णिलक्ख-
छव्वीससहस्स-सत्तसय-अट्टावीसमेत्त-सिद्धसमया लब्भंति । पुणो एदम्मिह सिद्धकालम्मिह
संचिदसजोगिजीवाणं पमाणायणं वुच्चदे । तं जहा- छसु सिद्धसमएसु तिण्णि तिण्णि

एक एक गुणस्थानमें आठ समयमें संचित हुए उपशमक और क्षपक जीवोंका परि-
माण आठसौ सत्तानवे है ॥ ४७ ॥

सयोगिकेवली जीव द्व्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? प्रवेशसे एक या दो
अथवा तीन और उत्कृष्टरूपसे एकसौ आठ होते हैं ॥ १३ ॥

इस सूत्रका अर्थ पहलेके समान कहना चाहिये ।

कालकी अपेक्षा संपूर्ण सयोगी जिन लक्षपृथक्त्व होते हैं ॥ १४ ॥

सयोगी जिन कालका आश्रय करके लक्षपृथक्त्व कहे हैं, आगे उसी लक्षपृथक्त्वके
लानेकी विधि कहते हैं—

आठ समय अधिक छह माहके भीतर यदि आठ सिद्ध समय प्राप्त होते हैं तो
चालीस हजार आठसौ इकतालीस मात्र अर्थात् इतनीवार आठ समय अधिक छह माहके
भीतर कितने सिद्ध समय प्राप्त होंगे, इसप्रकार त्रैराशिक करने पर तीन लाख छव्वीस हजार
सातसौ अट्टाईस सिद्ध समय आते हैं। अब आगे इस सिद्ध कालमें संचित हुए सयोगी जीवोंका
प्रमाण लानेकी विधि कहते हैं । वह इसप्रकार है—

१ सयोगिकेवल्लिनः प्रवेशेन एको वा द्वौ वा त्रयो वा । उत्कषेणाट्टोत्तरसत्तसंख्याः । स. सि. १, ८.

२ स्वकालेन समुदिताः शतसहस्रपृथक्त्वसंख्याः । स. सि. १, ८. कोडिपुहुत्तं सजोगिओ । पञ्चसं. २, २४.

३ सक्षणाष्टकषण्णमास्यामेकवाष्ट क्षणा यदि । इयतीनां तदा तासां सद्वियोग्या कति क्षणाः ॥ चत्वारिंश-
त्सहस्राणि षण्णमास्योऽष्टक्षणाधिकाः । भवन्त्यष्टशतान्येकचत्वारिंशानि सिद्धवताम् ॥ आयन्तयोः प्रमाणेच्छे विधायान्त-
स्तयोः फलम् । अन्तेन शुणितं कृत्वा भजनीयं तदादिना ॥ समयानां त्रयोलक्षाः षड्विंशतिसहस्रकाः । अष्टाविंशं
विनोद्व्यमपरे शतसप्तकम् ॥ पं. सं. ८६-८९.

जीवा केवलणाणं उप्पाएंति, दोसु समएसु दो दो जीवा जदि केवलणाणं उप्पाएंति, तो अट्टसमयसंचिदसजोगिजिणा वावीस भवंति । अट्टसु सिद्धसमएसु जदि वावीस सजोगिजिणा लब्भंति तो तिणिलक्ख-छब्बीससहस्स-सत्तसय-अट्टावीसमेत्त-सिद्धसमएसु केत्तिया सजोगिजिणा लब्भंति त्ति तेरासिए कए अट्टलक्ख-अट्टाणउदिसहस्स-दुरहिय-पंचसदमेत्ता सजोगिजिणा लद्धा हवंति । वुत्तं च—

अट्टेव सयसहस्सा अट्टाणउदी तथा सहस्साइं ।

संखा जोगिजिणाणं पंचसद विउत्तरं जाणं ॥ ४८ ॥

एदीए दिसाए बहुएहि पयारेहि सजोइरासिस्स पमाणमाणेयव्वं । तं जहा-जम्हि पुव्विल्लसिद्धकालस्स अट्टमेत्तो सिद्धकालो लब्भइ तम्हि तेरासियमेवमाणेयव्वं । तं जहा— अट्टसु सिद्धसमएसु जदि चउत्तालीसमेत्ता सजोगिजिणा लब्भंति तो एक-लक्ख-तिसट्टिसहस्स-तिणिसय-चउसट्टिमेत्त-सिद्धसमयाणं केत्तिया सजोगिजिणा लब्भंति त्ति तइरासिए कदे पुव्विल्लो चेव सजोगिरासी उप्पज्जदि । जम्हि आउ व्वे पुव्विल्ल-सिद्धकालस्स चउभागमेत्तो सिद्धकालो लब्भइ तम्हि एवं तइरासिअं कायव्वं । अट्टसु सिद्धसमएसु जदि अट्टरासीदि सजोगिजिणा लब्भंति तो एगासीदिसहस्स-छस्सय-वासीदि-

छह सिद्ध समयोंमें तीन तीन जीव, और दो समयोंमें दो दो जीव यदि केवलज्ञान उत्पन्न करते हैं, तो आठ समयोंमें संचित हुए सयोगी जिन बावीस होते हैं । इसप्रकार यदि आठ सिद्ध समयोंमें बावीस सयोगी जिन प्राप्त होते हैं तो तीन लाख छब्बीस हजार सातसौ अट्टाईस सिद्ध समयोंमें कितने सयोगी प्राप्त होंगे, इसप्रकार त्रैराशिक करने पर आठ लाख अट्टानवे हजार पांचसौ दो सयोगी जिन प्राप्त हो जाते हैं । कहा भी है—

सयोगी जीवोंकी संख्या आठ लाख अट्टानवे हजार पांचसौ दो जानो ॥ ४८ ॥

इसी दिशासे अनेक प्रकारसे सयोगी जीवोंकी राशि लाना चाहिये । आगे उसीका स्पष्टीकरण करते हैं—

जहां पर पहलेके सिद्धकालका अर्धमात्र सिद्धकाल प्राप्त होता है वहां पर इसप्रकार त्रैराशिक लाना चाहिये । वह इसप्रकार है—आठ सिद्ध समयोंमें यदि चवालीस सयोगी जिन प्राप्त होते हैं, तो एक लाख त्रैसठ हजार तीनसौ चौसठ सिद्ध समयोंमें कितने सयोगी जिन प्राप्त होंगे, इसप्रकार त्रैराशिक करने पर पूर्वोक्त ८९८५०२ सयोगी जीवोंकी ही राशि आ जाती है । अथवा, जिसमें पहलेके सिद्धकालका चौथा भागमात्र सिद्धकाल प्राप्त होता है वहां पर इसप्रकार त्रैराशिक करना चाहिये । आठ सिद्ध समयोंमें यदि अठासी सयोगी जिन प्राप्त होते हैं तो इक्यासी हजार छहसौ ब्यासीमात्र सिद्ध समयोंमें कितने सयोगी जिन प्राप्त होंगे इस-

मेत्तसिद्धसमयाणं केत्तिया सजोगिजिणा लब्भन्ति चि तेरासिए कए सो चेव रासी लब्भदि' । एवमणत्थ वि जाणिरुण वत्तव्वं । जहाक्खादसंजदाणं पमाणवणणा गाहा—

अट्टेव सयसहस्सा णवणउदिसहस्स चेव णवयसया ।

सत्ताणउदी य तथा जहक्खादा होंति ओषेण ॥ ४९ ॥

एवं परूविदसव्वं संजदरासिमेगट्टे कदे अट्टकोडीश्रो णवणउदिलक्खा णवण-उदिसहस्सा णवसद सत्ताणउदिमेत्तो होदि ८९९९९९७ । एदम्हादो रासीदो उव-सामग-खवगपमाणमवणेयव्वं । तेसिं पमाणपरूवणगाहा—

णव चेव सयसहस्सा छव्वाससया य होंति अडसीया ।

परिमाणं णायव्वं उवसम-खवगाणमेदं तु ॥ ५० ॥

एदमवणिय तीहि भागो हायव्वो । लद्धमप्पमत्तरासी हवदि । दुगुणिदे पमत्तरासी

प्रकार त्रैराशिक करने पर वही पूर्वोक्त ८९८५०२ सयोगी जीवराशि ही आ जाती है । इसी-प्रकार अन्यत्र भी जानकर कथन करना चाहिये ।

प्रमाणराशि	फलराशि	इच्छाराशि	लब्ध प्रमाण
८ समय	२२ केवली	समय ३२६७२८	८९८५०२
८ समय	४४ केवली	१६३३६४	८९८५०२
८ समय	८८ केवली	८१६८२	८९८५०२

अब यथाख्यात संयतोंकी संख्याका वर्णन करनेवाली गाथा देते हैं—

सामान्यसे यथाख्यातसंयमी जीव आठ लाख निन्यानवे हजार नौसौ सत्तानवे होते हैं ॥ ४९ ॥

इसप्रकार प्ररूपण की गई संपूर्ण संयत जीवोंकी राशिको एकत्रित करने पर कुल संख्या आठ करोड़ निन्यानवे लाख निन्यानवे हजार नौसौ सत्तानवे ८९९९९९७ होती है । इस राशिमेंसे उपशमक और क्षपक जीवोंके प्रमाणको निकाल देना चाहिये । उपशमक और क्षपक जीवोंके प्रमाणकी प्ररूपणा करनेवाली गाथा इसप्रकार है—

उपशमक और क्षपक जीवोंका परिमाण नौ लाख दो हजार छह सौ अठसी जानना चाहिये ॥ ५० ॥

संयतोंकी संपूर्ण राशिमेंसे इस उपशमक और क्षपक जीवराशिको निकालकर तीनका भाग देना चाहिये । जो तीसरा भाग लब्ध आया उतना अप्रमत्तसंयत जीवराशिका प्रमाण

हवदि । वुत्तं च—

सत्तादी अट्टंता छण्णवमञ्जा य संजदा सव्वे ।

तिगभजिदा विगगुणिदापमत्तरासी पमत्ता दु' ॥ ५१ ॥

✓ एसा दक्खिणपडिवत्ती । एसा गाहा ण भदिया त्ति के वि आइरिया जुत्तिबलेण भणंति । का जुत्ती ? वुच्चदे— सव्वतित्थयरहिंतो पउमप्पहभडारओ बहुसीसपरिवारो तीससहस्साहिय-तिण्णिलक्खमेत्तमुणिगणपरिवुदत्तादो । तेसु सत्तर-सएण गुणिदेसु एकसट्ठिलक्खाहियपंचकोडिमेत्ता संजदा हंति । एदे च पुव्विल्लगाहाए वुत्तसंजदाणं पमाणं ण पावेंति । तदो गाहा ण भदिएत्ति । एत्थ परिहारो वुच्चदे— सव्वोसप्पिणी-हिंतो अइमा हुंडोसप्पिणी) तत्थतणतित्थयरसिस्सपरिवारं जुगमाहप्पेण ओहट्टिय डहर-भावमापणं धेत्तूण ण गाहासुत्तं दूसिदुं सक्किज्जदि, सेसोसप्पिणीतित्थयरसु बहुसीस-परिवारुवलंभादो । ण च भरहेरावयवासेसु मणुसाण बहुत्तमत्थि, जेणेत्यतणेक्कतित्थयर-

है । इसे दूना करने पर प्रमत्तसंयत जीवराशिका प्रमाण होता है । कहा भी है—

जिस संख्याके आदिमें सात हैं, अन्तमें आठ हैं और मध्यमें छहवार नौ हैं, उतने अर्थात् आठ करोड़ निन्यानवे लाख निन्यानवे हजार नौ सौ सत्तात्रवे सर्व संयत हैं । (इनमेंसे उपशमक और क्षपकोंका प्रमाण ९०२६८८ निकालकर जो राशि शेष रहे उसमें) तीनका भाग देने पर २९६९९१०३ अप्रमत्तसंयत होते हैं । और अप्रमत्तसंयतोंके प्रमाणको दोसे गुणा कर देने पर ५९३९८२०६ प्रमत्तसंयत होते हैं ॥ ५१ ॥

यह दक्षिण मान्यता है । यह पूर्वोक्त गाथा ठीक नहीं है ऐसा कितने ही आचार्य युक्तिके बलसे कहते हैं ।

शंका—वह कौनसी युक्ति है ? आगे शंकाकार उसी युक्तिका समर्थन करता है कि संपूर्ण तीर्थकरोंकी अपेक्षा पद्मप्रभ भट्टारकका शिष्य-परिवार अधिक था, क्योंकि, वे तीन लाख तीस हजार मुनिगणोंसे वेष्टित थे । इस संख्याको एकसौ सत्तरसे गुणा करने पर पांच करोड़ इकसठ लाख संयत होते हैं । परंतु यह संख्या पूर्व गाथामें कहे गये संयतोंके प्रमाणको नहीं प्राप्त होती है, इसलिये पूर्व गाथा ठीक नहीं है ?

समाधान—आगे पूर्व शंकाका परिहार करते हैं कि संपूर्ण अवसर्पिणियोंकी अपेक्षा यह हुंडावसर्पिणी है, इसलिये युगके माहात्म्यसे घटकर न्हस्वभावको प्राप्त हुए हुंडावसर्पिणी कालसंबन्धी तीर्थकरोंके शिष्य-परिवारको ग्रहण करके गाथासूत्रको दूषित करना शक्य नहीं है, क्योंकि, शेष अवसर्पिणियोंके तीर्थकरोंके बड़ा शिष्य-परिवार पाया जाता है । दूसरे भरत और पेरारवत क्षेत्रमें मनुष्योंकी अधिक संख्या नहीं पाई जाती है जिससे उन दोनों क्षेत्रसंबन्धी एक तीर्थकरके संघके प्रमाणसे विदेहसंबन्धी एक तीर्थकरका संघ समान

१ सत्तादी अट्टंता छण्णवमञ्जा य संजदा सव्वे । अंजलिमौलियदूथो तियरणसुद्धे णमंसाभि । गो. जी. ६३३.

गणपमाणेण विदेहेककतिथयरगणो सरिसो होज्ज । किं तु एत्थतणमणुवेहितो विदेह-
मणुस्सा संखेज्जगुणा । तं जहा— सच्चत्थोवा अंतरदीवमणुस्सा । उत्तरकुरुदेवकुरुमणुवा
संखेज्जगुणा । हरिरम्मयवासेसु मणुआ संखेज्जगुणा । हेमवदहेरणवदमणुआ संखेज्जगुणा ।
भरहेरावदमणुआ संखेज्जगुणा । विदेहे मणुआ संखेज्जगुणा' ति बहुवमणुस्सेसु जेण
संजदा बहुआ चैव तेणेत्थतणसंजदानं पमाणं पहाणं कादूण जं दूसणं भणिदं तण्ण दूसणं,
बुद्धिविहणाइरियमुहविणिग्गयत्तादो ।

एत्तो उत्तरपडिवत्तिं वत्तइस्सामो । एत्थ पमत्तसंजदपमाणं चत्तारि कोडीओ
छासट्टिलक्खा छासट्टिसहस्सा छसद चउसट्टिमेत्तं भवदि । वुत्तं च—

चउसट्टी छच्च सया छासट्टिसहस्सं चैव परिमाणं ।

छासट्टिसयसहस्सा कोडिचउक्कं पमत्ताणं ॥ ५२ ॥

४६६६६६६४ । वे कोडीओ सत्तावीसलक्खा णवणउदिसहस्सा चत्तारिसद
अट्टाणउदिमेत्ता अप्पमत्तसंजदा हवंति । उत्तं च—

माना जाय । किन्तु भरत और पेरावत क्षेत्रके मनुष्योंसे विदेह क्षेत्रके मनुष्य संख्यातगुणे
हैं । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है—

अन्तरद्वीपोंके मनुष्य सबसे थोड़े हैं । उत्तरकुरु और देवकुरुके मनुष्य उनसे संख्यात-
गुणे हैं । हरि और रम्यक क्षेत्रोंके मनुष्य उत्तरकुरु और देवकुरुके मनुष्योंसे संख्यातगुणे
हैं । हेमवत और हेरणवत क्षेत्रोंके मनुष्य हरि और रम्यकके मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं ।
भरत और पेरावत क्षेत्रोंके मनुष्य हरि और रम्यकके मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं । विदेह क्षेत्रके
मनुष्य भरत और पेरावतके मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं । बहुत मनुष्योंमें क्योंकि संयत
बहुत ही होंगे इसलिये इस क्षेत्रसंबन्धी संयतोंके प्रमाणको प्रधान करके जो दूषण कहा
गया है वह दूषण नहीं हो सकता, क्योंकि, वह बुद्धिरहित आचार्योंके मुखसे निकला हुआ
है । अब आगे उत्तर मान्यताको बतलाते हैं—

उत्तर मान्यताके अनुसार संयतोंमें प्रमत्तसंयतोंका प्रमाण केवल चार करोड़ छ्यासठ
लाख छ्यासठ हजार छहसौ चौसठ है । कहा भी है—

प्रमत्तसंयतोंका प्रमाण चार करोड़ छ्यासठ लाख छ्यासठ हजार छहसौ चौसठ
४६६६६६६४ है ॥ ५२ ॥

दो करोड़ सत्ताईस लाख निन्यानवे हजार चारसौ अट्टानवे अप्रमत्तसंयत जीव हैं ।
कहा भी है—

१ अंतरदीवमणुस्सा थोवा ते कुरुह दससु संखेज्जा । तत्तो संखेज्जगुणा हवति हरिरम्मगेषु वंसेसु । वरिसे
संखेज्जगुणा हेरणवदम्मि हेमवदवरिसे । भरहेरावदवंसे संखेज्जगुणा विदेहे य ॥ ति. प. पत्र १६००

२ प्रतिषु ' अवत्तरिसहस्स ' इति पाठः ।

वे कोडि सत्तवीसा होंति सहस्सा तहेव णवणउदी ।

चउसद अट्टाणउदी परिसंखा होदि विदियगुणा ॥ ५३ ॥

अंकदो वि २२७९९४९८ । उवसामग-खवगपमाणपरूवणा पुवं व भाणिदव्वा । णवरि 'सजोगिकेवली अद्धं पडुच्च संखेज्जा' एदस्स परूवणा अण्णहा हवदि । तं जहा— अट्टसमयाहियछमासाणं जदि अट्टसमयमेत्तो सिद्धकालो लब्भदि तो चत्तारि-सहस्स-सत्तसद-एगूणतीसमेत्त-अट्टसमयाहिय-छम्मासाणं केत्तियो सिद्धकालो लब्भदि ति तेरासिए कदे सत्ततीससहस्स-अट्टसद-वत्तीसमेत्तसिद्धसमया लब्भंति । एदम्हि कालम्हि संचिदसजोगिजिणपमाणमाणिज्जदे । तं जहा— अट्टसु समएसु चोदस चोदस सजोगिजिणा होंति ति कट्टु जदि अट्टहं समयाणं बारहोत्तरसयमेत्ता सजोगिजिणा लब्भंति तो सत्ततीससहस्स-अट्टसद-वत्तीसमेत्तसिद्धसमयाणं केत्तिया लब्भंति ति तेरासिए कए पंचलक्ख-एगूणतीससहस्स-छस्सय-अट्टेदालीसमेत्ता सजोगिजिणा हवंति । वुत्तं च— पंचेव सयसहस्सा होंति सहस्सा तहेव उणतीसा । छच्च सया अडयाला जोगिजिणाणं हवदि संखा ॥ ५४ ॥

द्वितीय गुणस्थान अर्थात् अप्रमत्तसंयत जीवोंकी संख्या दो करोड़ सत्ताईस लाख निम्नानवे हजार चारसौ अट्टानवे है ॥ ५३ ॥

अंकोंसे भी २२७९९४९८ अप्रमत्तसंयत जीव हैं । उपशामक और क्षपक जीवोंके प्रमाणका प्ररूपण पहलेके समान कहना चाहिये । इतनी विशेषता है कि सयोगिकेवली जीव कालकी अपेक्षा संचित हुए संख्यात होते हैं । यहां पर केवलियोंके प्रमाणकी प्ररूपणा दूसरे प्रकारसे होती है । वह इसप्रकार है— आठ समय अधिक छह महीनेका यदि आठ समयमात्र सिद्धकाल प्राप्त होता है तो चार हजार सातसौ उनतीसमात्र आठ समय अधिक छह महीनोंके कितने सिद्धकाल प्राप्त होंगे; इसप्रकार त्रैराशिक करने पर सैंतीस हजार आठसौ बत्तीसमात्र सिद्ध समय प्राप्त होते हैं । अब इस कालमें संचित हुए सयोगी जिनोंका प्रमाण लाते हैं । वह इसप्रकार है— आठ समयोंमेंसे प्रत्येक समयमें चौदह चौदह सयोगी जिन होते हैं, ऐसा समझकर यदि आठ समयोंके एकसौ बारह सयोगी जिन प्राप्त होते हैं तो सैंतीस हजार आठसौ बत्तीस सिद्ध समयोंके कितने सयोगी जीव प्राप्त होंगे, इसप्रकार त्रैराशिक करने पर पांच लाख उनतीस हजार छहसौ अड़तालीस सयोगी जीव प्राप्त होते हैं । कहा भी है—

सयोगी जिन जीवोंकी संख्या पांच लाख उनतीस हजार छहसौ अड़तालीस है ॥ ५४ ॥

प्रमाणराशि	फलराशि	इच्छाराशि	लब्ध
६ माह ८ समय	८ समय	४७२९	३७८३२ समय
८ समय	११२ केवली	३७८३२ समय	५२९६४८ केवलि

५२९६४८ । एदेण अत्थपदेण अणेगेहि पयारेहि सजोगिरासी आणेयव्वो ।
उवसामग-खवगपमाणपरूवणगाहा—

पंचेव सयसहस्सा होति सहस्सा तहेव तेत्तीसा ।

अइसया चोत्तीसा उवसम-खवगाण केवल्लिणो ॥ ५५ ॥

एदे सव्वसंजदे एयडे कदे सत्तर-सदकम्मभूमिगदसव्वरिसओ भवंति । तेसिं
पमाणं छकोडीओ णवणउइलक्खा णवणउदिसहस्सा णवसय-छण्णउदिमेत्तं हवदि ।
एदस्स वेतिभागा पमत्तसंजदा हवंति । तिभागो अप्पमत्तादिसेससंजदा हवंति । वुत्तं च—
छक्कादी छक्कंता छण्णश्मञ्जा य संजदा सव्वे ।

तिगभजिदा विगगुणिदापमत्तरासी पमत्ता दु ॥ ५६ ॥

६९९९९९९६ । द्व्यपमाणेण अवगदचोहसगुणट्टाणाणं अप्पणो इच्छिद-इच्छिद-
रासिस्स एत्तियो एत्तियो भागो होदि त्ति तेसिं भागभागपरूवणा कीरदे । तं जहा— भागादो
भागो भागभागो । तं भागभागं वत्तइस्सामो । सव्वजीवरासिं सिद्धतेरसगुणट्टाणभजिदसव्व-

इस पद्धतिके अनुसार दूसरे प्रकारसे भी सयोगी जीवोंकी राशि ले आना चाहिये ।
अब उपशमक और क्षपक जीवोंके प्रमाणकी प्ररूपणा करनेवाली गाथा कहते हैं—

चारों उपशमक, पांचों क्षपक और केवली ये तीनों राशियां मिलकर कुल पांच लाख
तेतीस हजार आठसौ चौतीस हैं ॥ ५५ ॥

विशेषार्थ—ऊपर सयोगिकेवलियोंकी संख्या ५२९६४८ बतला आये हैं । उसमें चारों
उपशमकोंकी संख्या ११९६ और पांचों क्षपकोंकी संख्या २९९० और मिला देने पर तीनोंकी
संख्या ५३३८३४ हो जाती है ।

इन सब संयतोंको एकत्रित करने पर एकसौ सत्तर कर्मभूमिगत संपूर्ण ऋषि होते हैं ।
उन सबका प्रमाण छह करोड़ निन्यानवे लाख निन्यानवे हजार नौसौ छयानवे है । इसका दो
बेट तीन भाग अर्थात् ४६६६६६६४ जीव प्रमत्तसंयत हैं, और तीसरा भाग अर्थात् २३३३३३३२
जीव अप्रमत्तसंयत आदि शेष संयत हैं । कहा भी है—

जिस संख्याके आदिमें छह, अन्तमें छह और मध्यमें छहवार नौ हैं, उतने अर्थात्
छह करोड़ निन्यानवे लाख निन्यानवे हजार नौ सौ छयानवे ६९९९९९९६ जीव संपूर्ण
संयत हैं । इसमें तीनका भाग देने पर लब्ध आवे उतने अर्थात् २३३३३३३२ जीव अप्रमत्त
आदि संपूर्ण संयत हैं और इसे दोसे गुणा करने पर जितनी राशि उत्पन्न हो उतने अर्थात्
४६६६६६६४ जीव प्रमत्तसंयत हैं ॥ ५६ ॥

द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा जाने हुए चौदहों गुणस्थानोंका प्रमाण अपनी इच्छित राशिके
प्रमाणका इतनावां इतनावां भाग होता है, इसका ज्ञान करानेके लिये उनकी भागाभाग
प्ररूपणा करते हैं । वह इसप्रकार है— भागसे होनेवाला भाग भागाभाग है । आगे उसी
भागभागको बतलाते हैं—

जीवरासिमेत्ते भागे कदे तत्थ बहुभागो मिच्छाइट्टिरासिपमाणं होदि । सेसं तेरसगुण-
ट्ठाणोवट्ठिदसिद्धरासिणा रूवाहिण्ण खंडिदे बहुखंडा सिद्धा हवंति । सेसाणं भागभाग-
परूवणहं सेसरासीओ एगभागहारेणाणिज्जंते । तं जहा— संजदासंजददव्वं तप्पमाणेण
कीरमाणे एगं भवदि । सासणसम्माइट्ठिदव्वं पि संजदासंजददव्वपमाणेण कीरमाणे
सासणसम्माइट्ठि-अवहारकालेणोवट्ठिदसंजदासंजद-अवहारकालमेत्तं हवदि । सम्मामिच्छा-
इट्ठिदव्वं संजदासंजददव्वपमाणेण कीरमाणे सम्मामिच्छाइट्ठि-अवहारकालेणोवट्ठिदसंजदा-
संजद-अवहारकालमेत्तं भवदि । असंजदसम्माइट्ठिदव्वं पि संजदासंजददव्वपमाणेण
कीरमाणे असंजदसम्माइट्ठि-अवहारकालेणोवट्ठिदसंजदासंजद-अवहारकालमेत्तं भवदि ।

सिद्धराशि और सासादनसम्यग्दृष्टि आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिके प्रमाणका
संपूर्ण जीवराशिमें भाग देने पर जो प्रमाण आवे उतने संपूर्ण जीवराशिके भाग करने पर उनमेंसे
बहुभाग मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण है । जो एक भाग शेष रहता है उसे, सासादन
आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिके प्रमाणसे भाजित सिद्धराशिमें रूपाधिक करके जो
जोड़ हो उससे खण्डित करने पर जो बहुभाग आवे उतने सिद्ध होते हैं ।

उदाहरण—सर्व जीवराशि १६; सिद्ध २; सासादन आदि १;

$$१६ \div ३ = ५\frac{१}{३}; \quad \begin{array}{cccccc} ३ & ३ & ३ & ३ & ३ & १ \\ १ & १ & १ & १ & १ & १ \end{array} \begin{array}{l} \text{बहुभाग } १३ \text{ मिथ्यादृष्टि} \\ \text{और } ३ \text{ सिद्धतेरस.} \\ ३ \end{array}$$

$$२ \div १ = २ + १ = ३; \quad ३ \div ३ = १; \quad ३ - १ = २ \text{ सिद्ध; } १ \text{ सासादन आदि.}$$

अब शेष राशियोंके भागाभागेके प्ररूपण करनेके लिये शेष राशियां एक भागहारसे
लाई जाती हैं । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है—

संयतासंयत जीवराशिके द्रव्यको उसी प्रमाणसे (शलाकारूप) करने पर एक होता है
(५१२ = १ पिंडरूप) । सासादनसम्यग्दृष्टिका द्रव्य भी संयतासंयतके द्रव्यप्रमाणसे करने
पर सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालका संयतासंयत अवहारकालमें भाग देने पर जो लब्ध
आवे तत्प्रमाण होता है ।

उदाहरण—१२८ ÷ ३२ = ४ × ५१२ = २०४८ सासा.

सम्यग्मिथ्यादृष्टिका द्रव्य संयतासंयतके द्रव्यप्रमाणरूपसे करने पर सम्यग्मिथ्यादृष्टि
अवहारकालका संयतासंयत अवहारकालमें भाग देने पर जो लब्ध आवे तत्प्रमाण होता है ।

उदाहरण—१२८ ÷ १६ = ८ × ५१२ = ४०९६ सम्यग्मिथ्यादृष्टि द्रव्य.

असंयतसम्यग्दृष्टिका द्रव्य भी संयतासंयतके द्रव्यके प्रमाणरूपसे करने पर असंयत-
सम्यग्दृष्टि अवहारकालका संयतासंयत अवहारकालमें भाग देने पर जो लब्ध आवे तत्प्रमाण

१ प्रतिष्ठा ' सुखो ' इति पाठः ।

णवसंजदद्वयं संजदासंजदद्वयपमाणेण कीरमाणे एगरूवस्त असंखेज्जदिभोगं भवदि । एवमुप्पाइयसव्वसलागाओ एयइं काऊण संजदासंजद-अवहारकालमोवट्टिय लद्धेण पलिदोवमे भागे हिदे तेरसगुणट्ठाणदव्वमागच्छदि । एवं जेसिं जेसिं गुणट्ठाणणं दव्वाण-मेगभागहारेणाममणमिच्छदि तेसिं तेसिं सलागाहि संजदासंजद-अवहारकालमोवट्टिय पलिदोवमे भागे हिदे ते ते रासीओ आगच्छंति ।

अथवा सासणसम्माइट्ठि-अवहारकालेण संजदासंजद-अवहारकालमोवट्टिय लद्धेण सासणसम्माइट्ठि-अवहारकालं गुणेऊण पुणो तेणेव गुणगारेण रूवाहिण्ण तं चेवोवट्ठिदे

होता है ।

उदाहरण— $१२८ \div ४ = ३२ \times ५१२ = १६३८४$ असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्य.

छठेसे लेकर चौदहवें गुणस्थानतक नौ संयतोंका द्रव्य संयतासंयतके द्रव्यके प्रमाण-रूपसे करने पर एकरूप जो संयतासंयतका द्रव्य कह आये हैं उसका असंख्यातवां भाग होता है ।

उदाहरण— $२ \div ५१२ = \frac{१}{२५६} \times ५१२ = २$ नवसंयत द्रव्य.

इसप्रकार पहले उत्पन्न की हुई संपूर्ण शलाकाओंको एकत्रित करके और उनसे संयतासंयतसंबन्धी अवहारकालको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उससे पल्योपमके भाजित करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिका प्रमाण आ जाता है ।

उदाहरण— $१ + ४ + ८ + ३२ + \frac{१}{२५६} = ४५\frac{१}{२५६}$

$$१२८ \div ४ \times \frac{१}{२५६} = \frac{३२७६८}{११५२१}; \quad ६५५३६ \div \frac{३२७६८}{११५२१} = २३०४२.$$

इसीप्रकार जिन जिन गुणस्थानोंके द्रव्यका प्रमाण एक भागहारसे लानेकी इच्छा हो उन उन गुणस्थानोंकी शलाकाओंसे संयतासंयतसंबन्धी अवहारकालको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसका पल्योपममें भाग देने पर उन उन गुणस्थानोंकी राशियां आ जाती हैं ।

उदाहरण—असंयतसम्यग्दृष्टि शलाकाराशि ३२;

$$१२८ \div ३२ = ४; \quad ६५५३६ \div ४ = १६३८४ \text{ असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्य.}$$

अथवा, सासादनसम्यग्दृष्टिके अवहारकालसे संयतासंयतके अवहारकालको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उससे सासादनसम्यग्दृष्टिके अवहारकालको गुणित करके जो लब्ध आवे उसे एक अधिक उसी गुणाकारसे अपवर्तित करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत इन दोनोंका अवहारकाल आ जाता है ।

उदाहरण— $१२८ \div ३२ = ४; ३२ \times ४ = १२८; ४ + १ = ५; १२८ \div ५ = २५\frac{३}{५}$ सासा-दन और संयतासंयतका अवहारकाल । इसका भाग पल्योपम ६५५३६ में देने पर सासादन और संयतासंयत इन दोनों गुणस्थानोंका द्रव्य $२०४८ + ५१२ = २५६०$ आ जाता है । इसी-प्रकार आगे भी जानना चाहिये ।

सासण-संजदासंजदाणं अवहारकालो होदि । पुणो तं दो-गुणहाण-अवहारकालं सम्मा-
मिच्छाइट्ठि-अवहारकालेणोवट्ठिय लद्धेण सम्मामिच्छाइट्ठि-अवहारकालं गुणेऊण पुणो
तेणेव गुणगारेण रूवाहिण्ण पुवं गुणिद-अवहारकालमोवट्ठिदे तिण्हं गुणहाणाणमवहार-
कालो हवदि । पुणो तमवहारकालं असंजदसम्माइट्ठि-अवहारकालेणोवट्ठिय लद्धेण
असंजदसम्माइट्ठि-अवहारकालं गुणेऊण पुणो तेणेव गुणगाररासिणा रूवाहिण्ण पुव्विह्ल-
गुणिद-अवहारकालमोवट्ठिदे चउण्हं गुणहाणाणमवहारकालो हवदि । पुणो णव-संजद-
दव्वेण चउण्हं गुणहाणाणं दव्वमोवट्ठिय लद्धेण चउण्हं गुणहाणाणमवहारकालं गुणेऊण
पुणो तेणेव गुणगारेण रूवाहिण्ण तं चेव गुणिद-अवहारकालमोवट्ठिदे तेरसण्हं गुणहाणा-
णमवहारकालो होदि ।

अनन्तर उन दोनों गुणस्थानोंके अवहारकालको सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके अवहार-
कालसे भाजित करके जो लब्ध आवे उसे सम्यग्मिथ्यादृष्टिके अवहारकालसे गुणित करके
अनन्तर एक अधिक उसी पूर्वोक्त गुणकारसे पहले गुणित किये हुए अवहारकालके अपवर्तित
करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और संयतासंयत इन तीनों गुणस्थानोंका
अवहारकाल होता है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{१२८}{५} \div १६ = \frac{१२८}{८०}; \quad \frac{१२८}{८०} \times १६ = \frac{१२८}{५}; \quad \frac{१२८}{८०} + १ = \frac{२०८}{८०};$$

$$\frac{१२८}{५} \div \frac{२०८}{८०} = ९\frac{११}{३३} \text{ सा. सम्यमि. और संयतासंयतका अवहारकाल ।}$$

अनन्तर इन तीनों गुणस्थानोंसंबन्धी अवहारकालको असंयतसम्यग्दृष्टिके अवहार-
कालसे भाजित करके जो लब्ध आवे उससे असंयतसम्यग्दृष्टिके अवहारकालको गुणित करके
पुनः एक अधिक उसी पूर्वोक्त गुणकारसे पहले गुणित किये हुए अवहारकालके अपवर्तित करने
पर द्वितीयादि चार गुणस्थानोंका भागहार आ जाता है ।

$$\text{उदाहरण—} ९\frac{११}{३३} \div ४ = \frac{१२८}{५२}; \quad \frac{१२८}{५२} \times ४ = \frac{१२८}{१३}; \quad \frac{१२८}{५२} + १ = \frac{१८०}{५२};$$

$$\frac{१२८}{१३} \div \frac{१८०}{५२} = २\frac{३८}{४५} \text{ सासादनादि ४ गुणस्थानोंका अवहारकाल ।}$$

अनन्तर प्रमत्तसंयत आदि नौ संयतोंके द्रव्यसे सासादन आदि चार गुणस्थानोंके
द्रव्यको भाजित करके जो लब्ध आवे उससे उक्त चार गुणस्थानोंके अवहारकालको गुणित
करके अनन्तर एक अधिक उसी पूर्वोक्त गुणकारसे उसी गुणित अवहारकालको अपवर्तित
करने पर सासादनादि तेरह गुणस्थानोंका अवहारकाल होता है ।

उदाहरण—नवसंयतराशि २; सासादनादि चार गुणस्थानराशि २३०४०; सासादनादि

$$\text{चार गुणस्थानोंका अवहारकाल } \frac{१२८}{४५}; \quad \frac{२३०४०}{२} = \frac{११५२०}{१};$$

$$\frac{१२८}{४५} \times \frac{११५२०}{१} = \frac{२९४९१२}{९}; \quad \frac{११५२०}{१} + \frac{१}{१} = \frac{११५२१}{१};$$

अथवा संजदासंजद-अवहारकालं विरलेऊण पुणो पलिदोवमं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि संजदासंजदद्वयपमाणं पावदि । तमेगरूवस्सुवरि द्विद-संजदासंजदद्वं णवसंजदरासिणोवद्विय लद्धं विरलेऊण उवरिमविरलणाए पढमरूवधरिदसंजदासंजदद्वं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि णवसंजदरासिपमाणं पावेदि । पुणो तं धेत्तूण उवरिम-विरलणाए विदियादि-रूवाणमुवरि द्विदसंजदासंजदद्ववाणमुवरि पक्खिविद्वं जाव हेद्विम-विरलणोवरि द्विद-णवसंजदरासी सरिसच्छेदं काऊण पविट्ठो त्ति । जदि हेद्विम-विरलणादो उवरिमविरलणा रूवाहिया हवदि तो एगरूवपरिहाणी हवदि । अध वेरूवाहियदुगुणमेत्ता हवदि तो दोण्हं रूवाणं परिहाणी हवदि । अध तिरूवाहियतिउणमेत्ता हवदि तो तिण्हं रूवाणं परिहाणी हवदि । एत्थ पुण उवरिमविरलणादो हेद्विमविरलणा असंखेज्जगुणा त्ति एगरूव-असंखेज्जदिभागस्स परिहाणी हवदि । तं जहा, हेद्विमविरलण-रूवाहियमेत्तद्वाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणमिहे केवडिय-

$$\frac{२९४९१२}{९} \div \frac{११५२१}{१} = \frac{२९४९१२}{१०३६८९} = २७१७८ \text{ सासादन आवि १३ गुण-}$$

स्थान राशिका अवहारकाल.

अथवा, संयतासंयतके अवहारकालको विरलित करके अनन्तर उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर पद्योपमको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति संयतासंयत द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । अनन्तर विरलित राशिके एकके ऊपर स्थित उस संयतासंयतके द्रव्यको प्रमत्तादि नौ संयतराशिसे अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसे विरलित करके और उसके प्रत्येक एकके ऊपर उपरिम विरलनमें पहले एकके ऊपर रखे हुए संयतासंयतके द्रव्यको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति प्रमत्तादि नौ संयत राशिका प्रमाण प्राप्त होता है । अनन्तर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त उस नौ संयत द्रव्यको ग्रहण करके उपरिम विरलनके द्वितीयादि रूपोंके ऊपर स्थित संयतासंयतके द्रव्योंमें तबतक मिलाते जाना चाहिये जबतक अधस्तन विरलनके ऊपर स्थित नौ संयतराशि समान छेद करके प्रविष्ट हो सके । यदि अधस्तन विरलनसे उपरिम विरलन एक अधिक होवे तो एककी हानि होती है । यदि अधस्तन विरलनसे उपरिम विरलन दो अधिक दुगुने होवें तो दोकी हानि होती है । यदि अधस्तन विरलनसे उपरिम विरलन तीन अधिक तिगुना होवे तो तीनकी हानि होती है । यहाँ प्रकृतमें तो उपरिम विरलनसे अधस्तन विरलन असंख्यातगुणा है, इसलिये एकके असंख्यातवें भागकी हानि होती है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है—

एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर यदि एककी हानि प्राप्त होती है तो

१ प्रतिपु 'अथ वा रूवाहिय' इति पाठः ।

रूवपरिहाणिं लभामो चि तेरासिए कदे एगरूवस्स असंखेज्जदिभागो आगच्छदि । तसुवरिमविरलणाए अवणिदे णवसंजदसहियसंजदासंजदाणमवहारकालो होदि ।

पुणो सासणसम्माइट्ठि-अवहारकालं विरलेऊण पलिदोवमं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि सासणसम्माइट्ठिद्ववपमाणं पावदि । पुणो उवरिमविरलणपढमरूवधरिद-सासणसम्माइट्ठिद्ववं णवसंजदसहिदसंजदासंजदद्वेणोवट्ठिय तत्थ लद्धमावलियाए असंखेज्जदिभागं विरलेऊण उवरिमविरलणाए पढमरूवस्सुवरि ट्ठिदसासणसम्माइट्ठिद्ववं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि दसगुणट्ठाणरासीओ पावेति । एत्थ एगरूवधरिददस-गुणट्ठाणरासिपमाणं घेत्तूण उवरिमविरलणमिह सुण्णं मोत्तूण तदणंतररूवस्सुवरि ट्ठिद-सासणद्ववमिह पक्खित्ते एकारसगुणट्ठाणरासीओ सव्वे मिलिदा हवंति । एवं हेट्ठिम-

उपरिम विरलनमें कितनी हानि प्राप्त होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करने पर एकका असंख्यातवां भाग आता है । उसे उपरिम विरलनमेंसे घटा देने पर नौ संयतसहित संयतासंयत राशिका अवहारकाल होता है ।

उदाहरण—नौ संयतराशि २; संयतासंयत अवहारकाल १२८; संयतासंयत द्रव्य ५१२;

५१२	५१२	५१२	५१२	१२८ वार;	अधस्तन विरलन २५६ में १
१	१	१	१		अधिक अर्थात् २५७ स्थान जाकर
५१२ ÷ २ = २५६;					यदि १ की हानि प्राप्त होती है
२	२	२	२	२	तो उपरिम विरलन मात्र १२८
१	१	१	१	१	२५६ वार; स्थान जाकर कितनी हानि होगी,

इसप्रकार त्रैराशिकसे ३३६ की हानि प्राप्त हो जाती है । इसे उपरिम विरलन राशि १२८ मेंसे घटा देने पर १२७३३३ आते हैं । यही संयत सहित संयतासंयतके द्रव्यका अवहारकाल है ।

अनन्तर सासादनसम्यग्दष्टिके अवहारकालको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एक पर पल्योपमको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति सासादनसम्यग्दष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । अनन्तर उपरिम विरलनके पहले अंकपर रक्खे हुए सासादनसम्यग्दष्टिके द्रव्यको प्रमत्तादि नौ संयतोंके द्रव्यसहित संयतासंयतके द्रव्यसे भाजित करके वहां जो आवलीका असंख्यातवां भाग लब्ध आवे उसे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर उपरिम विरलनके पहले अंकपर स्थित सासादनसम्यग्दष्टिके द्रव्यको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति संयतासंयत आदि दश गुणस्थानवर्ती जीवोंकी संख्या प्राप्त होती है । यहां अधस्तन विरलनके एक अंकपर रक्खे हुए दश गुणस्थानकी राशिके प्रमाणको ग्रहण करके उपरिम विरलनमें शून्य स्थानको (जिस पहले अंकके ऊपर रक्खी हुई संख्यामें दश गुणस्थानोंके द्रव्यका भाग दिया है उसे) छोड़कर उसके अनन्तर अंकपर स्थित सासादनसम्यग्दष्टिके द्रव्यमें मिला देने पर सब मिल कर सासादन और संयतासंयत आदि अयोगिकेवलीपर्यंत ग्यारह गुणस्थानवर्ती

विरलणमेत्तदसगुणद्व्याणद्व्यं उवरिमविरलणाए द्विदसासणद्व्यमिह पिरंतरं दिण्णे हेट्टिम-
विरलणमेत्तदसगुणद्व्याणरासी समप्पदि । एत्थ एगरूवस्स परिहाणी लब्भदि । पुणो
उवरिमविरलणाए तदणंतररूवोवरि द्विदसासणद्व्यं हेट्टिमविरलणाए समखंडं करिय दिण्णे
रूवं पडि दसगुणद्व्याणरासिपमाणं पावेदि । एदं पि घेत्तूण पुवं व समकरणे कदे पुणो वि
उवरि एगरूवपरिहाणी लब्भदि । एवं पुणो पुणो काद्व्यं जा उवरिमविरलणा सव्वा
एकारसगुणद्व्याणअवहारकालमेत्तं पत्ता ति । एवं समकरणं करिय परिहीणरूवाणं पमाण-
माणिज्जेदे । तं जहा, हेट्टिमविरलणरूवाहियमेत्तद्व्याणमुवरिमविरलणाए गंतूण जदि
एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणमेत्तसव्वरूवेसु केवडियरूवपरिहाणिं लभामो
त्ति तेरासियं करिय रूवाहियहेट्टिमविरलणाए उवरिमविरलणमोवट्टिदे आवलियाए
असंखेज्जदिभागमेत्ताणि अवणिज्जमाणरूवाणि लब्भंति । ताणि उवरिमविरलणाए सरिस-
च्छेदं काऊण अवणिदे एकारसगुणद्व्याणमवहारकालो होदि । तेण अवहारकालेण
पलिदोवमे भागे हिदे एकारसगुणद्व्याणद्व्यमागच्छदि ।

जीवराशि होती है। इसप्रकार अधस्तन विरलनमात्र दश गुणस्थानोंके द्रव्यको उपरिम
विरलनमें स्थित सासादनसम्यग्दृष्टिके द्रव्यमें मिला देने पर अधस्तन विरलनमात्र दश
गुणस्थानोंकी जीवराशि समाप्त हो जाती हैं और यहां एककी हानि प्राप्त होती है। अनन्तर
उपरिम विरलनमें, जहां तक दश गुणस्थानराशि मिली हो उसके, अनन्तरके विरलित
अंकपर स्थित सासादनसम्यग्दृष्टिके द्रव्यको अधस्तन विरलनके ऊपर समान खण्ड करके
देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति संयतासंयत आदि दश गुणस्थानोंकी राशिका प्रमाण
प्राप्त होता है। इस राशिको भी लेकर पहलेके समान समीकरण करने पर, अर्थात् उपरिम
विरलनके शून्यस्थानको छोड़कर आगेके स्थानोंमें अधस्तन विरलनमात्र दश गुणस्थानराशिके
मिला देने पर, फिर भी ऊपर एककी हानि प्राप्त होती है। इसप्रकार जबतक संपूर्ण उपरिम
विरलन सासादन और संयतासंयतादि दश इसप्रकार ग्यारह गुणस्थानवर्ती राशिके
अवहारकालके प्रमाणको प्राप्त होवे तबतक यही विधि पुनः पुनः करते जाना चाहिये।
इसप्रकार समीकरण करके हानिको प्राप्त हुए अंकोंका प्रमाण लाते हैं। वह इसप्रकार है—

एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान उपरिम विरलनमें जाकर यदि एक अंककी
हानि प्राप्त होती है तो उपरिम विरलनमात्र संपूर्ण स्थानोंमें कितने अंकोंकी हानि प्राप्त होगी,
इसप्रकार त्रैराशिक करके एक अधिक अधस्तन विरलनसे उपरिम विरलनके भाजित करने
पर आवलीके असंख्यातवें भागमात्र अपनेयमान अंक प्राप्त होते हैं। उनको उपरिम
विरलनमेंसे समच्छेद विधान करके घटा देने पर सासादन और संयतासंयत आदि दश
इसप्रकार ग्यारह गुणस्थानवर्ती राशिका अवहारकाल प्राप्त होता है। इस अवहारकालसे
पर्योपमके भाजित करने पर उपर्युक्त ग्यारह गुणस्थानवर्ती जीवराशि आती है।

उदाहरण—सासादन-अव. ३२, द्रव्य २०४८; संयतासंयतादि १० गुणस्थान द्रव्य ५१४;

पुणो सम्मामिच्छाद्द्वि-अवहारकालं विरलेऊण पलिदोवमं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि सम्मामिच्छाद्द्विरासिपमाणं पावेदि । पुणो एकारसगुणट्टाणरासिणा सम्मामिच्छाद्द्विरासिदव्वमोवट्टिय तत्थ लद्धसंखेज्जरूवाणि विरलेऊण उवरिमविरलणपटम-रूवधरिदसम्मामिच्छाद्द्विदव्वं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि एकारसगुणट्टाणदव्वपमाणं पावेदि । तं घेतूण उवरिमविरलणाए उवरि द्विदसम्मामिच्छाद्द्विदव्वस्सुवरि परिवाडीए दिण्णे रूवाहियहेट्टिमविरलणमेत्तद्वाणं गंतूण हेट्टिमविरलणमेत्तरासी सम्पपदि, उवरिम-विरलणाए एगरूवपरिहाणी च हवदि । तत्थेगरूवं पडि वारसगुणट्टाणमेत्तरासी च हवदि । पुणो उवरिमत्तदणंतरएगरूवधरिदसम्मामिच्छाद्द्विदव्वं हेट्टिमविरलणाए

$$\begin{array}{ccc} २०४८ & २०४८ & २०४८ \\ १ & १ & १ \end{array} \quad ३२ \text{ वार;}$$

$$२०४८ \div ५१४ = ३ \frac{२५३}{२५७}$$

$$\begin{array}{cccc} ५१४ & ५१४ & ५१४ & ५०६ \\ १ & १ & १ & २५३ \\ & & & २५७ \end{array}$$

$$६५५३६ \div २५ \frac{७४३}{१२८१} = २५६२.$$

२५ $\frac{७४३}{१२८१}$ रहते हैं । यही उक्त ११ गुणस्थानवर्ती राशिके लानेके लिये अवहारकाल है ।

अनन्तर सम्यग्मिथ्यादृष्टिके अवहारकालको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर पल्योपमको समान खण्ड करके देयरूपसे दे-देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सम्यग्मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण प्राप्त होता है । अनन्तर पूर्वोक्त ग्यारह (सासादन और संयतासंयतादि १०) गुणस्थानवर्ती राशिसे सम्यग्मिथ्यादृष्टि द्रव्यको भाजित करके वहां जो संख्यात अंक लब्ध आवें उन्हें विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर उपरिम विरलनके पहले अंकके ऊपर रखे हुए सम्यग्मिथ्यादृष्टिके द्रव्यको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति ग्यारह (सासादन और संयतासंयतादि दश) गुणस्थानवर्ती द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । उसको लेकर उपरिम विरलनके ऊपर स्थित सम्यग्मिथ्यादृष्टि द्रव्यके ऊपर परिपाटीसे देने पर उपरिम विरलनके एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर अधस्तन विरलनमात्र राशि समाप्त हो जाती है और उपरिम विरलनमें एक अंककी हानि होती है । तथा उपरिम विरलनमें जहां तक अधस्तन विरलनके प्रति प्राप्त राशि दी गई है वहां तक प्रत्येक एकके प्रति बारह (सासादन, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और संयतासंयतादि दश) गुणस्थानवर्ती जीवराशि होती है । अनन्तर उपरिम विरलनमें, जिस स्थान तक ग्यारह गुणस्थानोंकी जीवराशि मिलारि हो उसके, अनन्तरके विरलित एक अंकपर स्थित सम्यग्मिथ्यादृष्टिके

अधस्तन विरलन $३३\frac{३३}{३३}$ में १ और मिला देने पर जो जोड़ हो उतने स्थान जाकर यदि उपरिम विरलनमें १ अंककी हानि होती है तो उपरिम विरलनमात्र ३२ स्थान जाकर कितनी हानि होगी, इसप्रकार तैराशिक करने पर $६५\frac{७४३}{१२८१}$ लब्ध आते हैं । इसे उपरिम विरलन ३२ मेंसे घटा देने पर

समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि एकारसगुणट्टाणमेत्तरासी पावदि । तमेकार-
सगुणट्टाणरासिं सुण्णट्टाणं मोत्तूण उवरि गिरंतरं दिण्णे रूवं पडि वारसगुण-
ट्टाणरासी हवदि । हेट्टिमविरलणाए रूवाहियं गंतूण एगरूवस्स परिहाणी च
हवदि । एवं पुणो पुणो ताव कायवं जाव खयपरिसुद्धा उवरिमविरलणा
वारसगुणट्टाणद्वस्स अवहारकालं पत्तात्ति । एत्थ परिहीणरूवाणं पमाणमाणिज्जदे ।
तं जहा, रूवाहियहेट्टिमविरलणमेत्तट्टाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो सन्विस्से
उवरिमविरलणाए केवडियरूवपरिहाणिं लभामोत्ति तेरासियं काऊण रूवाहियहेट्टिम-
विरलणाए सम्मामिच्छाइट्टि-अवहारकालमोवाट्टिय लद्धं तम्मिह चेव अवाणिदे वारसगुण-
ट्टाणाणं द्वस्स अवहारकालो हवदि । पुणो तेण अवहारकालेण पल्लिदोवमे भागे हिदे
वारसगुणट्टाणद्वमागच्छदि ।

द्रव्यको अधरतन विरलनमें समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति
ग्यारह (सासादन और संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशि प्राप्त होती है । उस
ग्यारह गुणस्थानसंबन्धी राशिको शून्यस्थानको (जिस अंकके ऊपरकी राशिको अधस्तन
विरलनमें समान खण्ड करके दी है उस स्थानको) छोड़कर उपरिम विरलनके प्रत्येक
एकके ऊपर निरन्तर देयरूपसे देने पर प्रत्येक एकके प्रति बारह (सासादन, मिश्र
और संयतासंयतादि दश) गुणस्थानसंबन्धी राशि प्राप्त होती है । तथा उपरिम विरलनमें
एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर एककी हानि होती है । इसप्रकार जबतक
उपरिम विरलनका प्रमाण हानिरूप स्थानोंसे रहित होकर उपर्युक्त बारह गुणस्थानसंबन्धी
द्रव्यके अवहारकालको प्राप्त होवे तबतक पुनः पुनः यही विधि करते जाना चाहिये । अब
यहां पर हानिको प्राप्त हुए स्थानोंका प्रमाण लाते हैं । वह इसप्रकार है—

एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर यदि उपरिम विरलनमें एककी हानि
होती है तो संपूर्ण उपरिम विरलनमें कितने अंकोंकी हानि होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करके
एक अधिक अधरतन विरलनसे सम्यग्मिथ्यादृष्टिके अवहारकालको भाजित करके जो लब्ध आवे
उसे उसी सम्यग्मिथ्यादृष्टिके अवहारकालमेंसे घटा देने पर उपर्युक्त बारह गुणस्थानसंबन्धी
द्रव्यका अवहारकाल होता है । पुनः इस अवहारकालसे पल्लोपमके भाजित करने पर उपर्युक्त
बारह गुणस्थानसंबन्धी द्रव्यका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकाल १६; द्रव्य ४०९६;

$$\begin{array}{r} ४०९६ \quad ४०९६ \quad ४०९६ \quad १६ \text{ वार;} \\ १ \quad १ \quad १ \end{array}$$

$$४०९६ \div २५६२ = \begin{array}{r} १५३४ \\ २५६२ \end{array}$$

$$\begin{array}{r} २५६२ \quad १५३४ \\ १ \quad १५३४ \\ २५६२ \end{array}$$

$$२५५३६ \div \frac{२८०७}{३३२९} = ६६५८$$

अधस्तन विरलन $\frac{१३५३४}{३३२९}$ में
एक और मिलाकर जो हो
उतने स्थान जाकर यदि उप-
रिम विरलनमें १की हानि होती
है तो उपरिम विरलनमात्र १६
स्थान जाकर कितनी हानि
होगी, इसप्रकार त्रैराशिक
करने पर $\frac{३३५३६}{३३२९}$ लब्ध आते

पुणो असंजदसम्माइडिअवहारकालं विरलेऊण पलिदोवमं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि असंजदसम्माइडिरासिपमाणं पावेदि । पुणो वारसगुणद्वाणरासिणा असंजदसम्माइडिदव्वमोवडिय लद्धमावलियाए असंखेज्जदिभागं हेडा विरलेऊण असंजदसम्माइडिदव्वं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि वारसगुणद्वाणरासिपमाणं पावेदि । पुणो उवरिमसुण्णद्वाणं मोत्तूण सेसुवरिमरूवधरिद असंजदसम्माइडिदव्वस्सुवरि हेडिमविरलणाए रूवं पडि डिदवारसगुणद्वाणरासिं पक्खित्ते रूवं पडि तेरसगुणद्वाणरासिपमाणं पावेदि, हेडिमविरलणरूवाहियमेत्तद्वाणं गंतूण एगरूवपरिहाणी च लब्भदि । पुणो वि तदणंतरएगरूवधरिद-असंजदसम्माइडिदव्वं हेडिमविरलणाए समखंडं करिय दिण्णे वारसगुणद्वाणरासिपमाणं पावेदि । पुणो तं घेत्तूण उवरिमविरलणाए उवरि डिद-असंजदसम्माइडिदव्वस्सुवरि सुण्णद्वाणं वोलिय पक्खित्ते रूवं पडि तेरसगुणद्वाणरासिपमाणं पावेदि

हैं । इसे उपरिम विरलन १६ मेंसे घटा देने पर $९\frac{३३}{३२}$ आते हैं । यही उक्त १२ गुणस्थानोंका अवहारकाल है । इस अवहारकालका भाग पल्योपम ६५५३६ में देने पर उक्त बारह गुणस्थानोंके द्रव्यका प्रमाण ६६५८ आता है ।

अनन्तर असंयतसम्यग्दृष्टिके अवहारकालको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति पल्योपमको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति असंयतसम्यग्दृष्टि राशिका प्रमाण प्राप्त होता है । अनन्तर पूर्वोक्त बारह (सासादन, मिश्र और संयतासंयतादि १०) गुणस्थानवर्ती राशिसे असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिके प्रमाणको भाजित करके जो आवलीका असंख्यातवां भाग लब्ध आवे उसे पूर्व विरलनके नीचे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति उपर्युक्त बारह गुणस्थानसंबन्धी जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है । अनन्तर उपरिम विरलनके प्रथम शून्यस्थानको छोड़कर शेष उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्यप्रमाणमें अधस्तन विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त बारह गुणस्थानसंबन्धी द्रव्यको मिला देने पर उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके प्रति तेरह गुणस्थानसंबन्धी (सासादनादि १३) जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है । और एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर एककी हानि प्राप्त होती है । पुनः जिस स्थानतक अधस्तन विरलनके प्रति प्राप्त राशि मिलाई हो उसके आगेके एक विरलनके प्रति प्राप्त असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिके प्रमाणको अधस्तन विरलनके प्रत्येक एकके ऊपर समान खण्ड करके देयरूपसे देने पर प्रत्येक एकके प्रति उपर्युक्त बारह गुणस्थानसंबन्धी जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है । पुनः अधस्तन विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त बारह गुणस्थानसंबन्धी राशिको ग्रहण करके उपरिम विरलनमें शून्यस्थानको, अर्थात् जिस स्थानकी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि अधस्तन विरलनमें बी है उसे, छोड़कर शेष विरलनोंपर स्थित

एगरूवपरिहाणी च लब्धदि । एवं पुणो पुणो कायव्वं जा उवरिमविरलणा खयपरिसुद्धा तेरसगुणट्टाण-अवहारकालमेत्तं पत्ता त्ति । पुणो एत्थ अवणयणरूवपमाणमाणिज्जदे । तं जहा, रूवाहियहेट्ठिमविरलणमेत्तद्वाणं गंतूग जदि एगरूवपरिहाणी लब्धदि तो सच्चिस्से उवरिमविरलणाए केवडियाणि परिहाणिरूवाणि लभामो त्ति तेरासियं करिय रूवाहिय-हेट्ठिमविरलणाए असंजदसम्माइट्ठि-अवहारकाले ओवट्ठिदे आवलियाए असंखेज्जदिभाग-मेत्ताणि परिहाणिरूवाणि लब्धंति । कुदो णव्वदे ? सव्वगुणट्टाणेषु पविट्ठसव्वगुणमार-संवग्गादो असंजदसम्माइट्ठि-अवहारकालो असंखेज्जगुणो त्ति एदम्हादो परमगुरूवदेसादो ।

असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिमें मिला देने पर उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके प्रति उपर्युक्त तेरह गुणस्थानसंबन्धी जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है और एककी हानि होती है । इसप्रकार जबतक उपरिम विरलनका प्रमाण, क्षयको प्राप्त हुए स्थानोंसे रहित होकर, उपर्युक्त तेरह गुणस्थानसंबन्धी अवहारकालके प्रमाणको प्राप्त होवे तबतक पुनः पुनः यही विधि करते जाना चाहिये । अब यहाँ हानिको प्राप्त हुए स्थानोंका प्रमाण लाते हैं । वह इसप्रकार है—

एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर यदि उपरिम विरलनमें एक स्थानकी हानि प्राप्त होती है तो संपूर्ण उपरिम विरलनमें कितने हानिरूप अंक प्राप्त होंगे, इसप्रकार त्रैराशिक करके एक अधिक अधस्तन विरलनके प्रमाणसे असंयतसम्यग्दृष्टिके अवहारकालको भाजित करने पर आवलीके असंख्यातवें भागमात्र हानिरूप स्थान प्राप्त होते हैं ।

उदाहरण—असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकाल ४; द्रव्य १६३८४;

१६३८४	१६३८४	१६३८४	१६३८४	अधस्तन विरलन २१५३४ में
१	१	१	१	१ और मिलाकर जो हो उतने
			१५३४	स्थान जाकर यदि उपरिम
१६३८४ ÷ ६६५८ = २			३३२९	विरलनमें १ स्थानकी हानि
				होती है तो उपरिम विरलन-
६६५८	६६५८	३०६८		मात्र ४ स्थान जाकर कितनी
१	१	१५३४		
		३३२९		

हानि होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करने पर $२ \frac{१५३४}{३३२९}$ हानिरूप स्थानांक आते हैं । इसे उपरिम विरलन ४ मेंसे घटा देने पर $२ \frac{१५३४}{३३२९}$ आते हैं । यही उक्त तेरह गुणस्थानोंका अवहारकाल है । इस अवहारकालका भाग पल्योपम ६५५३६ में देने पर सासादनादि १३ गुणस्थानराशिका प्रमाण २३०४२ होता है ।

शंका—आवलीके असंख्यातवें भाग हानिरूप स्थान प्राप्त होते हैं, यह कैसे जाना जाता है ।

समाधान—‘संपूर्ण गुणस्थानोंमें प्राप्त संपूर्ण गुणकारोंके संवर्गसे असंयत-सम्यग्दृष्टिका अवहारकाल असंख्यातगुणा है’ इस परम गुरुके उपदेशसे जाना जाता है कि

पुणो सम्मामिच्छाइट्टिपमुहरासिणा असंजदसम्माइट्टिरासिमोवट्टिय रूवाहियकद-
रासिस्स असंजदसम्माइट्टिपमुहरासिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि वारसगुण-
द्वानरासिपमाणं पावदि। तत्थ बहुभागा असंजदसम्माइट्टिरासिपमाणं होदि। पुणो एकारस-
गुणद्वानरासिणा सम्मामिच्छाइट्टिरासिमोवट्टिय लद्धं रूवाहियं विरलेऊण वारसगुणद्वान-
रासिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि एकारसगुणद्वानरासिपमाणं पावदि। तत्थ
बहुभागा सम्मामिच्छाइट्टिरासिपमाणं होदि। पुणो दसगुणद्वानरासिणा सासणसम्माइट्टि-

यहां आवलीके असंख्यातवें भाग द्वानिरूप स्थान प्राप्त होते हैं।

पुनः सम्यग्मिथ्यादृष्टि आदि बारह (सम्यग्मिथ्यादृष्टि, सासादन और संयतासंयतादि १०) गुणस्थानवर्ती राशिसे असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसमें एक मिला देने पर जो राशि हो उसके प्रत्येक एकके प्रति असंयतसम्यग्दृष्टि आदि तेरह गुणस्थानवर्ती राशिको समान खण्ड करके देयरूपसे देने पर विरलनके प्रत्येक एकके प्रति सम्यग्मिथ्यादृष्टि आदि बारह (सम्यग्मिथ्यादृष्टि, सासादन और संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिका प्रमाण प्राप्त होता है। उसमें बहुभाग असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण है।

$$\text{उदाहरण—} १६३८४ \div ६६५८ = २ \frac{१५३४}{३३२९} + १ = ३ \frac{१५३४}{३३२९}$$

$$\begin{array}{r} ६६५८ \quad ६६५८ \quad ६६५८ \quad ३०६८ \\ १ \quad १ \quad १ \quad १५३४ \\ ३३२९ \end{array}$$

इसमें बहुभाग १६३८४ प्रमाण असंयतसम्यग्दृष्टि राशि है।

अनन्तर ग्यारह (सासादन और संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिसे सम्यग्मिथ्यादृष्टि राशिको भाजित करके जो लब्ध आवे उसमें एक और मिलाकर उसका विरलन करके विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति बारह (सम्यग्मिथ्यादृष्टि, सासादन और संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति ग्यारह (सासादन और संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है। वहां बहुभाग सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण है।

$$\text{उदाहरण—} ४०९६ \div २५६२ = १ \frac{१५३४}{२५६२} + १ = २ \frac{१५३४}{२५६२}$$

$$\begin{array}{r} २५६२ \quad २५६२ \quad १५३४ \\ १ \quad १ \quad १५३४ \\ २५६२ \end{array}$$

इसमें बहुभाग ४०९६ प्रमाण सम्यग्मिथ्यादृष्टि राशि है।

अनन्तर दश (संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिसे सासादनसम्यग्दृष्टि द्रव्यको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसमें एक और मिलाकर कुल राशिका विरलन

द्वयमोवद्विय रूवाहियं करिय विरलेऊण एकारसगुणद्व्याणरासिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि दसगुणद्व्याणरासिपमाणं पावेदि । तत्थ बहुभागा सासणसम्माइद्विरासिपमाणं होदि । पुणो णवगुणद्व्याणरासिणा संजदासंजदरासिमोवद्विय रूवाहियं करिय विरलेऊण दसगुणद्व्याणरासिं समखंडं करिय दिण्णे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तविरलणरूवं पडि णवगुणद्व्याणरासिपमाणं पावेदि । तत्थ बहुभागा संजदासंजदरासिपमाणं होदि । सेसं संखेज्जभागे कदे तत्थ बहुभागा पमत्तसंजदरासिपमाणं होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए तत्थ बहुभागा अप्पमत्तसंजदरासिपमाणं होदि । सेसं संखेज्जभागे कदे तत्थ बहुभागा सजोगिरासिपमाणं होदि । सेसं संखेज्जभागे कदे तत्थ बहुभागा पंच-खवग-पमाणं होदि । सेसेगभागो चउण्हमुवसामगाणं होदि । एवं भागभागो समत्तो ।

करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति ग्यारह (सासादन और संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति दश (संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है । यहां पर बहुभाग सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण है ।

$$\text{उदाहरण—} २०४८ \div ५१४ = ३ \frac{२५३}{२५७} + १ = ४ \frac{२५३}{२५७}$$

$$\begin{array}{cccccc} ५१४ & ५१४ & ५१४ & ५१४ & ५०६ & \\ १ & १ & १ & १ & २५३ & \\ & & & & २५७ & \end{array} \quad \text{यहां पर बहुभाग २०४८ प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि राशि है ।}$$

अनन्तर नौ (प्रमत्तसंयतादि ९) गुणस्थानसंबन्धी राशिसे संयतासंयत राशिको भाजित करके जो लब्ध आवे उसे रूपाधिक करके और उसका विरलन करके विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति दश (संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिको समान खण्ड करके देयरूपसे देने पर पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र विरलनके प्रति नौ (संयतादि ९) गुणस्थानसंबन्धी राशिका प्रमाण प्राप्त होता है । यहां पर बहुभाग संयतासंयत जीवराशिका प्रमाण है ।

$$\text{उदाहरण—} ५१२ \div २ = २५६ + १ = २५७;$$

$$\begin{array}{cccccc} २ & २ & २ & २ & २ & \\ १ & १ & १ & १ & १ & २५७ \text{ वार} \end{array} \quad \text{यहां पर बहुभाग ५१२ संयता-संयत राशि है ।}$$

शेष राशिके संख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभाग प्रमत्तसंयत जीवराशिका प्रमाण है । शेष राशिके संख्यात खण्ड करने पर उनमेंसे बहुभाग अप्रमत्तसंयत जीवराशिका प्रमाण है । शेषके संख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभाग सयोगिकेवली जीवराशिका प्रमाण है । शेषके संख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभाग पांचों क्षपकोंका प्रमाण है । शेष एक भाग चारों उपशमकोंका प्रमाण है । इसप्रकार भागभाग समाप्त हुआ ।

संपहि अवगदसव्वपमाणस्त सिस्सस्स एत्थेव रासीणमप्पबहुत्तं भणिस्सामो—

अट्टमे अणियोगहारे एदं सुत्तगारो भणिस्सदि त्ति पुणरुत्तदोसो भवदि त्ति
णासंकाणिज्जं, तस्स पडिबुद्धसिस्सविसयत्तादो । अप्पडिबुद्धसिस्से अस्सिऊण सदवार-
परूवणं पि ण दोसकारणं भवदि । तत्थ अप्पाबहुगं दुविहं, सत्थाणप्पाबहुगं सव्वपर-
त्थाणप्पाबहुगं चेदि । एत्थ मिच्छाइड्डिस्स सत्थाणप्पाबहुगं णत्थि । किं कारणं ? जेण
मिच्छाइड्डिरासीदो धुवरासी अब्भहिओ जादो । तत्थ ताव सासणसम्माइड्डिस्स सत्थाण-
प्पाबहुअं वत्तइस्सामो । तं जहा, सव्वत्थोवो अवहारकालो तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं ।
को गुणगारो ? सगदव्वस्त असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सग-अवहारकालो ।
अधवा गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्ग-
मूलाणि । को पडिभागो ? सगअवहारकालवग्गो । एत्थ पडिभागणिमित्तं दुगुणादिकरणं

अब जिसने संपूर्ण जीवराशिके प्रमाणको जान लिया है ऐसे शिष्यके लिये यहाँ पर जीवराशिका अल्पबहुत्व बतलाते हैं—

शंका—सूत्रकार आठवें अनुयोगद्वारमें इसका कथन करेंगे ही, इसलिये यहाँ पर उसका कथन करनेसे पुनरुक्त दोष होता है ?

समाधान—ऐसी आशंका नहीं करनी चाहिये, क्योंकि, वह पुनरुक्तिदोषविचार प्रतिबुद्ध शिष्यका ही विषय है । किन्तु जो शिष्य अप्रतिबुद्ध है उसकी अपेक्षा सौवार प्ररूपण करना भी दोषका कारण नहीं है ।

अल्पबहुत्व दो प्रकारका है, स्वस्थान अल्पबहुत्व और सर्वपरस्थान अल्पबहुत्व ।

ओषप्ररूपणामें मिथ्यादृष्टि जीवराशिका स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है ।

शंका—इसका क्या कारण है ?

समाधान—क्योंकि, मिथ्यादृष्टि जीवराशिसे ध्रुवराशि बड़ी है । अब पहले सासादन-सम्यग्दृष्टि राशिका स्वस्थान अल्पबहुत्व बतलाते हैं । वह इसप्रकार है—सासादनसम्यग्दृष्टिका अवहारकाल सबसे स्तोक है । उसीका द्रव्य अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपने (सासादनसंबन्धी) द्रव्यका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? अपना (सासादनसंबन्धी) अवहारकाल प्रतिभाग है । अर्थात् अवहारकालका सासादन-सम्यग्दृष्टिसंबन्धी द्रव्यमें भाग देने पर जो लब्ध आवे उसको अवहारकालसे गुणित करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि होती है । अथवा, गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है जो पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? अपने अवहारकालका वर्ग प्रतिभाग है ।

उदाहरण—सासादन द्रव्य २०४८; अवहारकाल ३२; $२०४८ \div ३२ = ६४$ गुणकार;
प्रतिभाग ३२; पल्योपम ६५५३६; अवहारकालका वर्ग $३२ \times ३२ = १०२४$
प्रतिभाग; $६५५३६ \div १०२४ = ६४$ गुणकार

काद्वयं । तं जहा, वत्तइस्सामो— सगअवहारकालेण पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्मा-
इट्टिरासी आगच्छदि । विगुणिदअवहारकालेण पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइट्टि-
रासिस्स दुभागो आगच्छदि । तिगुणिदअवहारकालेण पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्मा-
इट्टिरासिस्स तिभागो आगच्छदि । एवं ताव दुगुणादिकरणं काद्वयं जाव सासणसम्माइट्टि-
अवहारकालस्स अद्धच्छेदणयमेत्तवारा गदा ति । तत्थ अंतिमवियप्पं वत्तइस्सामो ।
सासणसम्माइट्टि-अवहारकालस्स अद्धच्छेदणए विरलेऊण विगं करिय अण्णोण्णभासे
कदे सासणसम्माइट्टिरासिस्स अवहारकालो होदि । तेण अवहारकालेण सासणसम्माइट्टि-
रासिस्स अवहारकाले गुणिदे गुणगारपडिभागो होदि । सासणसम्माइट्टिद्ववादो पलि-
दोवमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सग-अवहारकालो । एवं सम्मामिच्छाइट्टि-असंजद-
सम्माइट्टि-संजदासंजदाणं च अप्पाबहुगं वत्तव्वं । पमत्तसंजदादीणं सत्थाणप्पाबहुगं
णत्थि, तेसिमवहारकालाभावादो ।

यहां पर प्रतिभागका प्रमाण निकालनेके लिये द्विगुणादिकरण विधि करना चाहिये ।
वह जिसप्रकार है आगे उसीको बतलाते हैं— अपने अवहारकालसे पल्योपमको भाजित
करने पर सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है (६५५३६ ÷ ३२ = २०४८ सा.)
द्विगुणित अवहारकालसे पल्योपमको भाजित करने पर सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशिका
दूसरा भाग आता है (६५५३६ ÷ ६४ = १०२४) । त्रिगुणित अवहारकालसे पल्योपमके भाजित
करने पर सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशिका तीसरा भाग आता है (६५५३६ ÷ ९६ = ६८२३) ।
इसप्रकार जबतक सासादनसम्यग्दष्टिसंबन्धी अवहारकालके अर्धच्छेदोंका जितना प्रमाण हो
उतनेवार द्विगुणादिकरण विधि हो जावे तबतक यह विधि करते जाना चाहिये । वहां अब
अन्तिम विकल्पको बतलाते हैं— सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशिसंबन्धी अवहारकालके अर्ध-
च्छेदोंको विरलित करके और उसको दो रूप करके परस्पर गुणा करने पर सासादनसम्यग्दष्टि
जीवराशिके अवहारकालका प्रमाण होता है । इस अवहारकालसे सासादनसम्यग्दष्टि जीव-
राशिके अवहारकालको गुणित करने पर गुणकारप्रतिभागका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—सासादनसम्यग्दष्टि अवहारकाल ३२; अर्धच्छेद ५;

$$\begin{array}{cccccc} २ & २ & २ & २ & २ & = ३२; ३२ \times ३२ = १०२४ \text{ गुणकार प्रतिभाग.} \\ १ & १ & १ & १ & १ & \end{array}$$

सासादनसम्यग्दष्टिके द्रव्यसे पल्योपम असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपना
अर्थात् सासादनसम्यग्दष्टिका अवहारकाल गुणकार है (२०४८ × ३२ = ६५५३६ पल्योपम) ।

इसीप्रकार सम्यग्मिथ्यादष्टि, असंयतसम्यग्दष्टि और संयतासंयतोंके अल्पबहुत्वका
कथन करना चाहिये । प्रमत्तसंयत आदिका स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है, क्योंकि,
उनका अवहारकाल नहीं है ।

सव्वपरत्थाणप्पावहुगं वत्तइस्सामो । तं जहा— सव्वत्थोवा चत्तारि उवसामगा ।
 पंच खवगा संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? अड्डाइज्जरूवाणि । सजोगिकेवलिदव्वं
 संखेज्जगुणं । को गुणगारो ? संखेज्जसमया वा । अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । को
 गुणगारो ? संखेज्जसमया वा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्ज-
 समया वा । सव्वत्थ हेड्डिमरासिणोवरिमरासिम्हि भागे हिदे जो भागलद्धो सो गुणगारो ।
 पमत्तसंजददव्वादो असंजदसम्माइड्डि-अवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ?
 सग-अवहारकालस्स संखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? पमत्तसंजददव्वं । सम्मामिच्छाइड्डि-
 अवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सग-अवहारकालस्स असंखेज्जदिभागो ।
 को पडिभागो ? असंजदसम्माइड्डि-अवहारकालो । सासणसम्माइड्डि-अवहारकालो संखेज्ज-

अब सर्वपरस्थान अल्पबहुत्वको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है— चारों उपशामक
 (उपशम श्रेणीके चारों गुणस्थानवर्ती जीव) सबसे स्तोक हैं । पांचों क्षपक (क्षपक श्रेणीके
 चारों गुणस्थानवर्ती और अयोगिकेवली जीव) उपशमकोंसे संख्यातगुणे हैं । यहां गुणकार
 क्या है ? ढाई अंक गुणकार है ।

उदाहरण—चारों गुणस्थानवर्ती उपशामक १२१६; $१२१६ \times ३ = ३०४०$ पांचों क्षपक ।

सयोगिकेवलियोंका द्रव्यप्रमाण पांचों क्षपकोंसे संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ?
 संख्यात समय गुणकार है । अप्रमत्तसंयत सयोगिकेवलियोंके प्रमाणसे संख्यातगुणे हैं । गुण-
 कार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । प्रमत्तसंयत अप्रमत्तसंयतोंके प्रमाणसे संख्यातगुणे
 हैं । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । यहां सर्वत्र नीचेकी राशिसे उपरिम राशिके
 भाजित करने पर जो भाग लब्ध आवे वह वहां गुणकार होता है ।

उदाहरण—सयोगिकेवली ८९८५०२; अप्रमत्त २९६९९१०३; प्रमत्त ५९३९८२०६;

४८५३७ इससे सयोगी राशिको गुणित
 $२९६९९१०३ \div ८९८५०२ = ३३$ ८९८५०२ करने पर अप्रमत्त राशि आती है ।

$५९३९८२०६ \div २९६९९१०३ = २$ इस गुणकारसे अप्रमत्त राशिको गुणित
 करने पर प्रमत्तसंयत राशि आती है ।

प्रमत्तसंयतके द्रव्यसे असंयतसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुण-
 कार क्या है ? अपने अवहारकालका संख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? प्रमत्त-
 संयतका द्रव्यप्रमाण प्रतिभाग है ।

उदाहरण—प्रमत्तसंयत ५९३९८२०६ = २; असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकाल ४;

$४ \div २ = २$ गुणकार; $२ \times २ = ४$ अवहारकाल ।

असंयतसम्यग्दृष्टिके अवहारकालसे सम्यग्मिथ्यादृष्टिका अवहारकाल असंख्यातगुणा
 है । गुणकार क्या है ? अपने अवहारकालका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ?
 असंयतसम्यग्दृष्टिका अवहारकाल प्रतिभाग है ।

गुणो । को गुणगारो ? संखेज्जसमया वा । को पडिभागो ? सम्मामिच्छाइट्ठि-अवहार-
कालो । संजदासंजद-अवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सग-अवहारस्स
असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सासणसम्माइट्ठि-अवहारकालो । तदो संजदासंजद-
दव्वं असंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सगदव्वस्स असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ?
सग-अवहारकालो । अहवा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि पलिदोवमपढ-
मवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? सग अवहारकालवग्गो । संजदासंजददव्वस्सुवरि सासण-
सम्माइट्ठिदव्वं असंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सगदव्वस्स असंखेज्जदिभागो । को
पडिभागो ? संजदासंजददव्वमवहारकालो । अहवा सासणसम्माइट्ठि-अवहारकालेण

उदाहरण—सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकाल १६; $१६ \div ४ = ४$ गुणकार; $४ \times ४ = १६$
सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकाल ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टिके अवहारकालसे सासादनसम्यग्दृष्टिका अवहारकाल संख्यातगुणा
है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय । प्रतिभाग क्या है ? सम्यग्मिथ्यादृष्टिका अवहारकाल
प्रतिभाग है ।

उदाहरण—सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकाल ३२; $३२ \div १६ = २$ गुणकार; $१६ \times २ = ३२$
सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकाल ।

सासादनसम्यग्दृष्टिके अवहारकालसे संयतासंयतका अवहारकाल असंख्यातगुणा
है । गुणकार क्या है ? अपने अवहारकालका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या
है ? सासादनसम्यग्दृष्टिका अवहारकाल प्रतिभाग है ।

उदाहरण—संयतासंयत अवहारकाल १२८; $१२८ \div ३२ = ४$ गुणकार; $३२ \times ४ = १२८$
संयतासंयत अवहारकाल ।

संयतासंयतके अवहारकालसे संयतासंयत द्रव्यप्रमाण असंख्यातगुणा है । गुणकार
क्या है ? अपने द्रव्यका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? अपना (संयता-
संयतका) अवहारकाल प्रतिभाग है । अथवा, पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो
पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? अपने (संयतासंयतके)
अवहारकालका वर्ग प्रतिभाग है ।

उदाहरण—संयतासंयत द्रव्य ५१२; $५१२ \div १२८ = ४$ गुणकार; $१२८ \times ४ = ५१२$
संयतासंयत द्रव्य । अथवा, $१२८ \times १२८ = १६३८४$; $६५५३६ \div १६३८४$
 $= ४$ गुणकार ।

संयतासंयतके प्रमाणके ऊपर सासादनसम्यग्दृष्टिका द्रव्यप्रमाण संयतासंयतके द्रव्यसे
असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपने (सासादनके) द्रव्यका असंख्यातवां भाग
गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? संयतासंयतके द्रव्यप्रमाणका अवहारकाल प्रतिभाग है ।
अथवा, सासादनसम्यग्दृष्टिके अवहारकालसे संयतासंयतके अवहारकालको भाजित करने पर

संजदासंजद-अवहारकाले भागे हिदे गुणगारो रासी आगच्छदि । अहवा उवरिमरासि-अवहारकालेण हेट्टिमरासिं गुणेऊण पलिदोवमे भागे हिदे गुणगाररासी आगच्छदि । एत्थ विगुणादिकरणं कादव्वं । तं जहा— संजदासंजदरासिपमाणेण पलिदोवमे भागे हिदे संजदासंजद-अवहारकालो आगच्छदि । विउणिदसंजदासंजदव्वपमाणेण पलिदोवमे भागे हिदे संजदासंजद-अवहारकालस्स दुभागो आगच्छदि । तिगुणिदसंजदासंजदरासिणा पलिदोवमे भागे हिदे तस्सेव अवहारकालस्स तिभागो आगच्छदि । एदेण कमेण णेदव्वं जाव संजदासंजदरासिस्स गुणगारो सासणसम्माइड्डि अवहारकालमेत्तं पत्तो त्ति । तदा सासणसम्माइड्डि-अवहारकालो संजदासंजद-अवहारकालस्स असंखेज्जदिभागो आगच्छदि । एदेण पुव्वुत्तगुणगारो साहेयव्वो । संजदासंजदगुणस्स उक्कस्सकालो संखेज्जाणि वस्साणि । सासणसम्माइड्डिगुणस्स उक्कस्सकालो छ आवलियाओ । एदेसिमुवक्कमण-कालादी अप्पणो गुणकालपडिरूवा हवंति त्ति सासणसम्माइड्डिदव्वोदो संजदासंजद-दव्वेण संखेज्जगुणेण होदव्वमिदि ? ण एस दोसो, जदि वि सासणसम्माइड्डि-उवक्क-

गुणकार राशिका प्रमाण आता है । अथवा, उपरिम राशिके अवहारकालसे अधस्तन राशिको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे पल्योपमके भाजित करने पर गुणकार राशि आती है ।

उदाहरण—सासादन द्रव्य २०४८; $२०४८ \div १२८ = १६$ गुणकार; $१२८ \times १६ = २०४८$ सासादन द्रव्यप्रमाण । अथवा, $१२८ \div ३२ = ४$ गुणकार; $५१२ \times ४ = २०४८$ सा. । अथवा, $५१२ \times ३२ = १६३८४$; $६५५३६ \div १६३८४ = ४$ गुणकार; $५१२ \times ४ = २०४८$ सा. ।

यहां पर द्विगुणादिकरण विधि करना चाहिये । वह इसप्रकार है— संयतासंयत राशिके प्रमाणसे पल्योपमके भाजित करने पर संयतासंयतका अवहारकाल आता है ($६५५३६ \div ५१२ = १२८$) । द्विगुणित संयतासंयत द्रव्यके प्रमाणसे पल्योपमके भाजित करने पर संयतासंयतके अवहारकालका दूसरा भाग आता है ($६५५३६ \div १०२४ = ६४$) । त्रिगुणित संयतासंयत राशिसे पल्योपमके भाजित करने पर संयतासंयतके अवहारकालका तीसरा भाग आता है ($६५५३६ \div १५३६ = ४२\frac{१}{३}$) । इसी क्रमसे तबतक ले जाना चाहिये जबतक संयतासंयत राशिका गुणकार सासादनसम्यग्दृष्टिके अवहारकालके प्रमाणको प्राप्त हो जावे । उस समय सासादनसम्यग्दृष्टिका अवहारकाल संयतासंयतके अवहारकालका असंख्यातवां भाग आता है । इससे पूर्वोक्त गुणकार साध लेना चाहिये ($१२८ \div ३२ = ४$ गुणकार) ।

शंका—संयतासंयत गुणस्थानका उत्कृष्टकाल संख्यात वर्ष है और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानका उत्कृष्टकाल छह आवली है । अतः इनके उपक्रमणकाल आदिक अपने अपने गुणस्थानके कालके अनुसार होते हैं, इसलिये सासादनसम्यग्दृष्टिके द्रव्यप्रमाणसे संयतासंयत द्रव्यप्रमाण संख्यातगुणा होना चाहिये ?

१ प्रतिषु 'कालमेत्त' इति पाठः ।

मणकालादो संजदासंजद-उवक्कमणकालो संखेज्जगुणो हवदि तो वि संजदासंजद-
दव्वादो सासणसम्माइड्ढिदव्वमसंखेज्जगुणमेव । कुदो ? सम्मत्त-चारित्तविरोहिसासण-
गुणपरिणामेहिंतो समयं पडि असंखेज्जगुणाए सेठीए कम्मणिज्जरणहेउभूदसंजमासंजम-
परिणामो अइदुल्लहो त्ति काऊण समयं पडि संजमासंजमं पडिवज्जमाणरासीदो समयं पडि
सासणगुणं पडिवज्जमाणरासी असंखेज्जगुणो हवदि त्ति । सासणसम्माइड्ढिरासीदो सम्मा-
मिच्छाइड्ढिदव्वं संखेज्जगुणं, सासणसम्मादिड्ढि-छ-आवलि-अभंतर-उवक्कमणकालादो
अंतोमुहुत्तमेत्त-सम्मामिच्छाइड्ढि-उवक्कमणकालस्स संखेज्जगुणत्तादो । को गुणगारो ?
संखेज्जसमया वा । एत्थ वि रासिणा रासिं भागे हिदे गुणगाररासी आगच्छदि । अव-
हारकालेण अवहारकाले भागे हिदे गुणगाररासी आगच्छदि । उवरिमरासि-अवहारकालेण
हेट्टिमरासिं गुणेऊण पलिदोवमे भागे हिदे गुणगाररासी आगच्छदि । सम्मामिच्छाइड्ढि-
दव्वस्सुवरि असंजदसम्माइड्ढिदव्वमसंखेज्जगुणं । कुदो ? सम्मामिच्छाइड्ढि-उवक्कमण-

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, यद्यपि सासादनसम्यग्दृष्टिके उपक्रमण
कालसे संयतासंयतका उपक्रमणकाल संख्यातगुणा है, तो भी संयतासंयत द्रव्यप्रमाणसे
सासादनसम्यग्दृष्टि द्रव्यप्रमाण असंख्यातगुणा ही है, क्योंकि, सम्यक्त्व और चारित्रिके
विरोधी सासादनगुणस्थानसंबन्धी परिणामोंसे प्रत्येक समयमें असंख्यातगुणी श्रेणीरूपसे
कर्मनिर्जराके कारणभूत संयमासंयमरूप परिणाम अत्यन्त दुर्लभ हैं, इसलिये प्रत्येक समयमें
संयमासंयमको प्राप्त होनेवाली जीवराशिकी अपेक्षा प्रत्येक समयमें सासादनसम्यग्दृष्टि
गुणस्थानको प्राप्त होनेवाली जीवराशि असंख्यातगुणी है ।

सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिसे सम्यग्मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण संख्यातगुणा है,
क्योंकि, सासादनसम्यग्दृष्टिके छह आवलीके भीतर होनेवाले उपक्रमण कालसे सम्यग्मिथ्या-
दृष्टि गुणस्थानका अन्तर्मुहूर्तप्रमाण उपक्रमण काल संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है? संख्यात
समय गुणकार है । यहाँ भी एक राशिका दूसरी राशिमें भाग देने पर गुणकार राशि आ
जाती है । अथवा, अवहारकालसे अवहारकालके भाजित करने पर गुणकार राशि आ जाती है ।
अथवा, उपरिम राशिके अवहारकालसे अधस्तन राशिको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका
पत्न्योपममें भाग देने पर गुणकार राशि आ जाती है ।

उदाहरण—सम्यग्मिथ्यादृष्टि द्रव्य ४०९६; $४०९६ \div ३२ = १२८$ गुणकार; ३२×१२८
 $= ४०९६$ सम्यग्मिथ्यादृष्टि द्रव्य । अथवा, $४०९६ \div २०४८ = २$ गुणकार;
 $२०४८ \times २ = ४०९६$ सम्य. द्रव्य । अथवा, $३२ \div १६ = २$ गुणकार;
 $२०४८ \times २ = ४०९६$ । अथवा, $२०४८ \times १६ = ३२७६८$; $६५५३६ \div$
 $३२७६८ = २$ गुणकार; $२०४८ \times २ = ४०९६$ ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टिके द्रव्यके ऊपर असंयतसम्यग्दृष्टिका द्रव्य उससे असंख्यातगुणा है,
क्योंकि, सम्यग्मिथ्यादृष्टिके उपक्रमण कालसे असंख्यात आवलियोंके भीतर होनेवाला असंयत-

कालादो असंखेज्जावलियब्भंतर-असंजदसम्माइडि-उवक्कमणकालस्स असंखेज्जगुणत्तादो । अहवा दोण्हं पि गुणद्वाणाणमुवक्कमणकालमणवेक्खिय असंखेज्जगुणत्तस्स कारणमण्णहा वुच्चदे । तं जहा, समयं पडि सम्मामिच्छत्तं पडिवज्जमाणरासीदो वेदगसम्मत्तं पडि-वज्जमाणरासी असंखेज्जगुणो । जेण वेदगसम्माइड्डीणमसंखेज्जदिभागो मिच्छत्तं गच्छदि । तस्स वि असंखेज्जदिभागो सम्मामिच्छत्तं गच्छदि । 'सव्वकालमवद्विदरासीणं वयाणु-सारिणा आएण होदव्वं' इदि णायादो असंजदसम्माइडिरासीदो णिप्फिडिदमेत्ता चेव अट्टवीससंतकम्मिया मिच्छाइडिणो वेदगसम्मत्तं पडिवज्जंति । तम्हा सम्मामिच्छा-इडिदव्वादो असंजदसम्माइडिदव्वमसंखेज्जगुणमिदि सिद्धं । एदं वक्खाणमेत्थ पधाण-मिदि गेण्हदव्वं । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । एत्थ वि तीहि पयारेहि गुणगारो साहेयव्वो । पलिदोवममसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सग-अवहार-

सम्यग्दृष्टिका उपक्रमण काल असंख्यातगुणा है । अथवा, पूर्वोक्त दोनों ही गुणस्थानोंके उपक्रमण कालकी अपेक्षा न करके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंसे असंयतसम्यग्दृष्टि असंख्यातगुणे हैं, इसका कारण दूसरे प्रकारसे कहते हैं । वह इसप्रकार है— प्रत्येक समयमें सम्यग्मिथ्यात्वको प्राप्त होनेवाली राशिसे वेदकसम्यक्त्वको प्राप्त होनेवाली राशि असंख्यातगुणी है । तथा जिस कारणसे वेदकसम्यग्दृष्टियोंका असंख्यातवां भाग मिथ्यात्वको प्राप्त होता है और उसका भी असंख्यातवां भाग सम्यग्मिथ्यात्वको प्राप्त होता है । तथा 'सर्वदा अवस्थित राशियोंके व्ययके अनुसार ही आय होना चाहिये' इस न्यायके अनुसार मोहनीयके अट्टवीस कर्मोंकी सत्ता रखनेवाले जितने जीव असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिमेंसे निकलकर मिथ्यात्वको प्राप्त होते हैं उतने ही मिथ्यादृष्टि वेदकसम्यक्त्वको प्राप्त होते हैं, इसलिये सम्यग्मिथ्यादृष्टिके द्रव्यसे असंयतसम्यग्दृष्टिका द्रव्य असंख्यातगुणा है, यह सिद्ध हो जाता है । यह व्याख्यान यहां पर प्रधान है ऐसा समझना चाहिये । गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । यहां पर भी पूर्वोक्त तीनों प्रकारोंसे गुणकार साध लेना चाहिये ।

उदाहरण—असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्य १६३८४; १६३८४ ÷ १६ = १०२४ गुणकार;
 १६ × १०२४ = १६३८४ असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्य । अथवा, १६३८४ ÷ ४०९६
 = ४ गुणकार; ४०९६ × ४ = १६३८४ असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्य । अथवा,
 १६ ÷ ४ = ४ गुणकार; ४०९६ × ४ = १६३८४ असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्य ।
 अथवा, ४०९६ × ४ = १६३८४; ६५५३६ ÷ १६३८४ = ४ गुणकार;
 ४०९६ × ४ = १६३८४ असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्य ।

असंयतसम्यग्दृष्टिके द्रव्यसे पल्योपम असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपना (असंयतसम्यग्दृष्टिका) अवहारकाल गुणकार है ।

उदाहरण—१६३८४ × ४ = ६५५३६ पल्योपम ।

कालो । तस्सुवरि सिद्धाणंतगुणा । को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणम-
संखेज्जदिभागो । मिच्छाइट्ठी अणंतगुणा । को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि वि अणंतगुणो
सिद्धेहि वि अणंतगुणो भवसिद्धियाणमणंताभागस्स अणंतिमभागो ।

एवमोघे चोदसगुणद्व्याणपरूवणा समत्ता ।

द्व्यद्वियमवलंबिय द्विदसिस्साणमणुग्गहणद्वं सामण्णेण चोदसगुणद्व्याणपमाण-
परूवणं करिय पज्जवद्वियणयमवलंबिय द्वियसिस्साणमणुग्गहणद्वमाह—

आदेसेण गदियाणुवादेण गिरयगईए णेरइएसु मिच्छाइट्ठी
द्व्यपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ॥ १५ ॥

आदेसेण पज्जवणयावलंबणेण गुणद्व्याणं पमाणपरूवणं कीरदे । एत्थ इत्थंभाव-
लक्षणो तदियाणिदेसो त्ति दइव्वो । गदियाणुवादेण । सा च भेदपरूवणा चोदसमग्गण-
द्व्याणाणि अस्सिऊण द्विदा । तेहि अकमेण परूवणा ण संभवदीदि अपगदमग्गणद्व्याणाणि
अवाणिय पयदमग्गणद्व्याणजाणावणद्वं गदिग्गहणं । आदेसमस्सिऊण जा गुणद्व्याणं पमाण-

पद्योपमके ऊपर सिद्ध उससे अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अभव्यसिद्धोंसे
अनन्तगुणा या सिद्धोंके असंख्यातवां भाग गुणकार है । सिद्धोंसे मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तगुणे
हैं । गुणकार क्या है ? अभव्योंसे भी अनन्तगुणा, सिद्धोंसे भी अनन्तगुणा और भव्यसिद्धोंके
अनन्त बहुभागोंका अनन्तवां भाग गुणकार है ।

इसप्रकार ओघमें चौदह गुणस्थान प्ररूपणा समाप्त हुई ।

द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन करके स्थित हुए शिष्योंका अनुग्रह करनेके लिये
सामान्यसे चौदहों गुणस्थानोंके द्रव्यप्रमाणका प्ररूपण करके अब पर्यायार्थिक नयका
अवलम्बन करके स्थित शिष्योंका अनुग्रह करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

आदेशकी अपेक्षा गतिमार्गणाके अनुवासे नरकगतिगत नारकियोंमें मिथ्यादृष्टि
जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं ॥ १५ ॥

आदेशसे अर्थात् पर्यायार्थिक नयकी अपेक्षा गुणस्थानोंके प्रमाणका प्ररूपण करते हैं ।
यहां 'आदेसेण' इस पदमें तृतीया विभक्तिका निर्देश इत्थंभावलक्षण है, ऐसा समझना
चाहिये । अब 'गदियाणुवादेण' इस पदका स्पष्टीकरण करते हैं । ऊपर जो भेदप्ररूपणाकी
प्रतिज्ञा की है वह भेदप्ररूपणा चौदहों मार्गणाओंका आश्रय लेकर स्थित है । परंतु उनके द्वारा
अक्रमसे अर्थात् युगपत् प्ररूपणा नहीं हो सकती है, इसलिये अविवक्षित मार्गणास्थानोंको
छोड़कर प्रकृत मार्गणास्थानके ज्ञान करानेके लिये सूत्रमें गति पदका ग्रहण किया है । आदेशका
आश्रय करके जो गुणस्थानोंके प्रमाणकी प्ररूपणा की जाती है वह आचार्य परंपराके द्वारा

१ असंखेज्जा णेरइया । अनु. सूत्र १४१, पृ. १७९.

२ इत्थंभूतलक्षणे (तृतीया) । पाणिनि, २, ३, २०.

परूवणा सा आइरियपरंपराए अणाइणिहणत्तणेण आगदा त्ति जाणावणहं अणुवादग्गहणं । सेसगदिणिवारणहं णिरयगदिग्गहणं कदं । सेसगदीओ मोत्तूण पुव्वं णिरयगदी चेव किमहं बुच्चदे ? ण, णेरइयदंसणेण समुप्पणसज्जसस्स भवियस्स दसलक्खणे धम्मे णिच्चल-सरूवेण बुद्धी चिद्धदि त्ति काऊण पुव्वं तप्परूवणादो । णेरइएसु त्ति किमहं ? ण, तत्थ-तणखेत्तकालपडिसेहफलत्तादो । मिच्छाइट्ठिग्गहणं किमहं ? सेसगुणट्ठाणणियत्तणहं । दव्वपमाणेणेत्ति किमहं ? खेत्तकालणिवारणहं । केवडिया इदि पुच्छा किंफला ? जिणाण-मत्थकत्तारत्तपदुप्पायणमुहेण अप्पणो कत्तारत्तपडिसेहफला । एवं गोदमसामिणा पुच्छिद्धे महावीरभयवंतेण केवलणाणेणावगदतिकालगोयरासेसपयत्थेण असंखेजा इदि तेसिं पमाणं परूविदं । एवमुत्ते संखेजाणंताणं पडिणियत्ती । तं पुण असंखेजमणेयवियप्पं । तं जहा-

अनादिनिधनरूपसे आई हुई है, इसका ज्ञान करानेके लिये सूत्रमें अनुवाद पदका ग्रहण किया है । शेष गतियोंका निराकरण करनेके लिये सूत्रमें नरकगति पदका ग्रहण किया है ।

शंका— शेष गतियोंके कथनको छोड़कर पहले नरकगतिका ही वर्णन क्यों किया जा रहा है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, नारकियोंके स्वरूपका ज्ञान हो जानेसे जिसे भय उत्पन्न हो गया है ऐसे भव्य जीवकी दशलक्षण धर्ममें निश्चलरूपसे बुद्धि स्थिर हो जाती है, ऐसा समझकर पहले नरकगतिका वर्णन किया ।

शंका— सूत्रमें ' णेरइएसु ' यह पद किसलिये दिया गया है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, नरकगतिसंबन्धी क्षेत्र और कालका प्रतिषेध करना उक्त पदका फल है ।

शंका—सूत्रमें ' मिच्छाइट्ठी ' इस पदका ग्रहण किसलिये किया है ?

समाधान—शेष गुणस्थानोंके निवारणके लिये मिथ्यादृष्टि पदका ग्रहण किया है ।

शंका—सूत्रमें ' द्रव्यप्रमाणसे ' ऐसा पद क्यों दिया है ?

समाधान—क्षेत्र और कालका प्रतिषेध करनेके लिये ' द्रव्यप्रमाणसे ' पदका ग्रहण किया है ।

शंका—' कितने हैं ' इस पृच्छाका क्या फल है ?

समाधान—जिनेन्द्रदेव ही अर्थकर्ता हैं, इस बातके प्रतिपादन द्वारा अपने (भूतबलिके) कर्तापनका निषेध करना उक्त पृच्छाका फल है । नरकगतिमें मिथ्यादृष्टि नारकी कितने हैं, इसप्रकार गौतमस्वामीके द्वारा पूछने पर जिन्होंने केवलज्ञानके द्वारा त्रिकालके विषयभूत समस्त पदार्थोंको जान लिया है, ऐसे भगवान् महावीरने ' असंख्यात हैं ' इसप्रकार नारकियोंके प्रमाणका प्ररूपण किया ।

'नरकमें मिथ्यादृष्टि नारकी असंख्यात हैं' इसप्रकार कथन करने पर संख्यात और अनन्तकी निवृत्ति हो जाती है । वद्व असंख्यात अनेक प्रकारका है । आगे उसीका स्पष्टीकरण करते हैं—

पामं ठवणा दवियं सस्सद गणणापदेसियमसंखं ।

एयं उभयादेसो वित्थारो सव्व-भावा य ॥ ५७ ॥

तत्थ णामासंखेज्जयं णाम जीवाजीवमिस्ससरूवेण द्विदअट्ठभंगासंखेज्जाणं कारण-
गिरवेक्खा सण्णा । जं तं द्ववणासंखेज्जयं तं कट्ठकम्मादिसु सव्भावासव्भावद्ववणाए ठविदं
असंखेज्जमिदि । जं तं दव्वासंखेज्जयं तं दुविहं आगमदो णोआगमदो य । आगमो गंथो
सिद्धंतो सुदणार्णं पवयणमिदि एयट्ठो ।

(पूर्वापरविरुद्धादेर्व्यपेतो दोषसंहतेः ।

द्योतकः सर्वभावानामाप्तव्याहृतिरागमः ॥ ५८ ॥)

आगमादण्णो णोआगमो । तत्थ असंखेज्जपाहुडजाणओ अणुवजुत्तो आगमदो
दव्वासंखेज्जयं । किं कारणं ? खवोवसमविसिद्धजीवद्ववस्स कथंचि खवोवसमादो अव्व-
दिरित्तस्स आगमववदेसाविरोहादो । जं तं णोआगमदो दव्वासंखेज्जयं तं तिविहं, जाणु-
गसरीरदव्वासंखेज्जयं भवियदव्वासंखेज्जयं जाणुगसरीरभवियवदिरित्तदव्वासंखेज्जयं चेदि ।
तत्थ जं तं जाणुगसरीरदव्वासंखेज्जयं तं असंखेज्जपाहुडजाणुगस्स सरीरं भवियवद्वमाण-
समुज्जादत्तणेण तिभेदमावणं । कधमणागमस्स सरीरस्स असंखेज्जववएसो ? ण एस दोसो,

नाम, स्थापना, द्रव्य, शाश्वत, गणना, अप्रदेशिक, एक, उभय, विस्तार, सर्व
और भाव इसप्रकार असंख्यात ग्यारह प्रकारका है ॥ ५७ ॥

उनमेंसे जीव, अजीव और मिश्ररूपसे स्थित असंख्यात पदार्थोंके भेदोंकी कारणके
बिना असंख्यात ऐसी संज्ञा रखना नाम असंख्यात है । काष्ठकर्मादिकमें साकार और निराकार-
रूपसे यह असंख्यात है, इसप्रकारकी स्थापना करना स्थापना असंख्यात है । द्रव्य असंख्यात
आगम और नोआगमके भेदसे दो प्रकारका है । आगम, ग्रन्थ, सिद्धान्त, श्रुतज्ञान और प्रवचन,
ये एकार्थवाची नाम हैं ।

पूर्वापर विरुद्धादि दोषोंके समूहसे रहित और संपूर्ण पदार्थोंके द्योतक आप्तवचनको
आगम कहते हैं ॥ ५८ ॥

आगमसे अन्यको नोआगम कहते हैं । जो असंख्यातविषयक प्राभृतका ज्ञाता है परंतु
वर्तमानमें उसके उपयोगसे रहित है, उसे आगमद्रव्यासंख्यात कहते हैं, क्योंकि, क्षयोपशम-
युक्त जीवद्रव्य क्षयोपशमसे कथंचित् अभिन्न है, इसलिये उसे आगम यह संज्ञा देनेमें कोई
विरोध नहीं आता है ।

नोआगमद्रव्यासंख्यात तीन प्रकारका है, ज्ञायकशरीरद्रव्यासंख्यात, भव्यद्रव्या-
संख्यात, और ज्ञायकशरीर तथा भव्य इन दोनोंसे भिन्न तद्रयतिरिक्तद्रव्यासंख्यात । असंख्यात-
विषयक शास्त्रकी जाननेवालेके भावी, वर्तमान और अतीतरूपसे तीन भेदको प्राप्त हुए शरीरको
ज्ञायकशरीरद्रव्यासंख्यात कहते हैं ।

शंका—आगमसे भिन्न शरीरको असंख्यात, यह संज्ञा कैसे दी जा सकती है ?

आधारे आधेयोवयारदंसणादो । जहा असिसदं धावदि इदि । एत्थ ण घदकुंभदिदंतो जुज्जदे, कुंभस्स घदववएसदंसणादो । घदमिदं चिद्वदि ति वट्टमाणकाले घदववएसो कुंभस्स उवल्लभदे ? चे ण, अदीदाणामदकालेसु कुंभस्स घदववएसदंसणादो । जं तं भवियासंखेज्जयं तं भविस्सकाले असंखेज्जपाहुडजाणुगजीवो । ण च एस आगमदो दव्वासंखेज्जयमिह णिवदि, संपहि एत्थ खवोवसमलक्षणदव्वाव-
ओगाभावादो । जं तं तव्वदिरित्तदव्वासंखेज्जयं तं दुविहं, कम्मासंखेज्जयं णोकम्मा-
संखेज्जयं चेदि । तत्थ अट्ट कम्माणि ट्टिदि पडुच्च कम्मासंखेज्जयं । दीवसमुद्दादि
णोकम्मासंखेज्जयं । धम्मत्थियं अधम्मत्थियं दव्वपदेसगणणं पडुच्च एससखेण अवट्टिदिमिदि
कट्टु सस्सदासंखेज्जयं । जं तं गणणासंखेज्जयं तं परियम्मे वुत्तं । जं तं अपदेसासंखेज्जयं
तं जोगविभागे पल्लिच्छेदे पडुच्च एगो जीवपदेसो । अधवा सुणोयं भंगो, असंखेज्ज-

समाधान — यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, आधारमें आधेयका उपचार देखा जाता है । जैसे, सौ तरवारें (सौ तरवारवाले) दौड़ती हैं । तात्पर्य यह है कि सौ तरवारोंके आधारभूत पुरुषोंमें आधेयभूत तरवारोंका उपचार करके जैसे सौ तरवारें दौड़ती हैं यह कहा गया है उसीप्रकार प्रकृतमें भी समझ लेना चाहिये ।

प्रकृतमें घृतकुम्भका दृष्टान्त लागू नहीं होता है, क्योंकि, कुम्भकी घृत संज्ञा व्यवहारमें नहीं देखी जाती है ।

शंका—यह घृत रक्खा है, इसप्रकार वर्तमानकालमें कुम्भकी घृत संज्ञा पायी जाती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, अतीत और अनागत कालमें कुम्भकी घृत यह संज्ञा देखी जाती है ।

जो जीव भविष्यकालमें असंख्यातविषयक प्राभूतका जाननेवाला होगा उसे भाविद्रव्यासंख्यात कहते हैं । इसका आगमद्रव्यासंख्यातमें अन्तर्भाव नहीं हो सकता है, क्योंकि, वर्तमानमें इसमें (भाविद्रव्यासंख्यातमें) क्षयोपशमलक्षण द्रव्य उपयोगका अभाव है ।

तद्व्यतिरिक्त द्रव्यासंख्यात दो प्रकारका है, कर्मतद्व्यतिरिक्तद्रव्यासंख्यात और नोकर्मतद्व्यतिरिक्तद्रव्यासंख्यात । उनमें आठों कर्म स्थितिकी अपेक्षा कर्मतद्व्यतिरिक्तद्रव्यासंख्यात हैं । अर्थात् आठों कर्मोंकी जघन्य और उत्कृष्ट स्थिति असंख्यात समय पड़ती है, इसलिये वे स्थितिकी अपेक्षा असंख्यातरूप हैं । द्वीप और समुद्रादि नोकर्मतद्व्यतिरिक्तद्रव्यासंख्यात हैं ।

धर्मास्तिकाय और अधर्मास्तिकाय द्रव्यरूप प्रदेशोंकी गणनाके प्रति सर्वदा एकरूपसे अवस्थित हैं, इसलिये वे दोनों द्रव्य शाश्वतासंख्यात हैं । गणनासंख्यातका स्वरूप परिकर्ममें कहा गया है । योगविभागमें जो अविभागप्रतिच्छेद बतलाये हैं, उनकी अपेक्षा जीवका एक प्रदेश अप्रदेशासंख्यात है । अथवा, असंख्यातमें उसका यह भेद शून्यरूप है, क्योंकि, असंख्यात पर्यायोंके आधारभूत अप्रदेशी एक द्रव्यका अभाव है । कुछ आत्माका एक प्रदेश

पञ्जायाणमाहारभूद-अप्पएसएगदव्वाभावादो । ण च एगो जीवपदेसो दव्वं, तस्स जीवदव्वावयवत्तादो । पञ्जवणए पुण अवलंबिज्जमाणे जीवस्स एगपदेसो वि दव्वं तत्तो वदिरित्तसमुदायाभावादो । जं तं एयासंखेज्जयं तं लोयायासस्स एगदिसा । कुदो ? सेट्ठि-आगारेण लोयस्स एगदिसं पेक्खमाणे पदेसगणणं पडुच्च संखातीदादो । जं तं उभया-संखेज्जयं तं लोयायासस्स उभयदिसाओ, ताओ पेक्खमाणे पदेसगणणं पडुच्च संखा-भावादो । जं तं सव्वासंखेज्जयं तं घणलोगो । कुदो ? घणामारेण लोगं पेक्खमाणे पदेसगणणं पडुच्च संखाभावादो । जं तं वित्थारासंखेज्जयं तं लोगागासपदरं, लोग-पदरामारपदेसगणणं पडुच्च संखाभावादो । जं तं भावासंखेज्जयं तं दुविहं आगमदो णोआगमदो य । आगमदो भावासंखेज्जयं असंखेज्जपाहुडजाणगो उवजुत्तो । णोआगमदो भावासंखेज्जयं ओहिणाणपरिणदो जीवो । एदेसु असंखेजेसु गणणासंखेजेण पयदं । जदि गणणासंखेजेण पयदं तो सेसदसविह-असंखेज्जपरूवणं किमट्ठं कीरदे ? अपगदमवाणिय पयदपरूवणं । वुत्तं च —

द्रव्य तो हो नहीं सकता है, क्योंकि, एक प्रदेश जीवद्रव्यका अवयव है । पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करने पर जीवका एक प्रदेश भी द्रव्य है, क्योंकि, अवयवोंसे भिन्न समुदाय नहीं पाया जाता है ।

लोकाकाशकी एक दिशा अर्थात् एक दिशास्थित प्रदेशपंक्ति एकासंख्यात है, क्योंकि, आकाश प्रदेशोंकी श्रेणीरूपसे लोकाकाशकी एक दिशा देखने पर प्रदेशोंकी गणनाकी अपेक्षा उसकी गणना नहीं हो सकती है । लोकाकाशकी उभय दिशाएँ अर्थात् दो दिशाओंमें स्थित प्रदेशपंक्ति उभयासंख्यात है, क्योंकि, लोकाकाशके दो ओर देखने पर प्रदेशोंकी गणनाकी अपेक्षा वे संख्यातीत हैं । घनलोक सर्वासंख्यात है, क्योंकि, घनरूपसे लोकके देखने पर प्रदेशोंकी गणनाकी अपेक्षा वे संख्यातीत हैं । प्रतररूप लोकाकाश विस्तारासंख्यात है, क्योंकि, प्रतररूप लोकाकाशके प्रदेशोंकी गणनाकी अपेक्षा वे संख्यातीत हैं ।

भावासंख्यात आगम और नोआगमके भेदसे दो प्रकारका है । असंख्यातविषयक प्राभृतको जाननेवाले और वर्तमानमें उसके उपयोगसे युक्त जीवको आगमभावासंख्यात कहते हैं । अब्रधिज्ञानसे परिणत जीवको नोआगमभावासंख्यात कहते हैं । इन ग्यारह प्रकारके असंख्यातोंमेंसे प्रकृतमें गणनासंख्यातसे प्रयोजन है ।

शंका — यदि प्रकृतमें गणनासंख्यातसे ही प्रयोजन है तो शेष दश प्रकारके असंख्यातोंका वर्णन क्यों किया गया ?

समाधान—अप्रकृत विषयका निवारण करके प्रकृत विषयका प्ररूपण करनेके लिये, यहां सभी असंख्यातोंका वर्णन किया है । कहा भी है—

अपगयणिवारणं पयदस्स परूवणाणिमित्तं च ।
संसयविणासणं तच्चहवहारणं च ॥ ५९ ॥

युक्तं ज पुञ्जाहरिण्हि—

(जत्थ जहा जाणेज्जो अवरिमिदं तत्थ णिक्खिक्खे णियमा ।

जत्थ बहुवं ण जाणदि चउडवो तत्थ णिक्खेयो ॥ ६० ॥ इदि ।

अधवा णिक्खेवविसिद्धमेदं भणिज्जमाणं वत्तारस्सुप्पत्थोत्थाणं कुज्जा इदि णिक्खेवो
कीरदे । तथा चोक्तम्—

प्रमाणनयनिक्षेपैर्योऽर्थो नाभिसमीक्ष्यते ।

युक्तं चायुक्तवद्भाति तस्यायुक्तं च युक्तवत् ॥ ६१ ॥

जं तं गणनासंखेज्जयं तं तिविहं, परितासंखेज्जयं जुत्तासंखेज्जयं असंखेज्जा-
संखेज्जयं चेदि वियप्पदो एकेकं तिविहं । तत्थ इमं होदि ति णिच्छओ उप्पाइज्जदे ।

अप्रकृत विषयका निवारण करनेके लिये, प्रकृत विषयका प्ररूपण करनेके लिये,
संशयका विनाश करनेके लिये और तत्त्वार्थका निश्चय करनेके लिये यहां सभी असंख्यातोंका
कथन किया है ॥ ५९ ॥

पूर्वाचार्योंने भी कहा है—

जहां पदार्थोंके विषयमें यथावास्थित जाने वहां पर नियमसे अपरिमित निक्षेप करना
चाहिये । पर जहां पर बहुत न जाने वहां पर चार निक्षेप अवश्य करना चाहिये ॥ ६० ॥

अथवा, निक्षेपके विना वर्ण्यमान विषय कदाचित् वक्ताको उत्पथमें ले जावे,
इसलिये सभीका निक्षेप किया है । उसीप्रकार कहा भी है—

प्रमाण, नय और निक्षेपके द्वारा जिसका सूक्ष्म विचार नहीं किया जाता है वह युक्त
होते हुए भी कभी अयुक्तसा प्रतीत होता है और अयुक्त होते हुए भी कभी युक्तसा प्रतीत
होता है ॥ ६१ ॥

गणनासंख्यात तीन प्रकारका है, परीतासंख्यात, युक्तासंख्यात और असंख्याता-
संख्यात । ये तीनों भी प्रत्येक उत्कृष्ट, मध्यम और जघन्यके भेदसे तीन तीन प्रकारके हैं ।
उक्त तीनों असंख्यातोंमेंसे प्रकृतमें यह असंख्यात लिया है, आगे इसीका निश्चय कराते हैं—

१ जं तं असंखेज्जयं तं तिविधं, परितासंखेज्जयं जुत्तासंखेज्जयमसंखेज्जयं चेदि । जं तं परिता-
संखेज्जयं तं तिविधं, जहण्णपरितासंखेज्जयं अजहण्णमणुक्कस्सपरितासंखेज्जयं उक्कस्सपरितासंखेज्जयं चेदि । जं तं
जुत्तासंखेज्जयं तं तिविधं, जहण्णजुत्तासंखेज्जयं अजहण्णमणुक्कस्सजुत्तासंखेज्जयं उक्कस्सजुत्तासंखेज्जयं चेदि । जं तं
असंखेज्जासंखेज्जयं तं तिविधं जहण्णअसंखेज्जासंखेज्जयं अजहण्णमणुक्कस्सअसंखेज्जासंखेज्जयं उक्कस्सअसंखेज्जा-
संखेज्जयं चेदि । ति, प. पत्र. ५२. संखेज्जमसंखणतमिदि तिविहं । संखं तिळ्ळुदु तिविहं परिच्छुत्तं ति दुगवारं ॥
त्रि. सा. १३. संखिज्जेगमसंखं परिच्छुत्तनियपयजुयं तिविहं । क. प्रं. ४, ७१.

परित्तासंखेज्जयं ण भवदि, जुत्तासंखेज्जयं पि ण भवदि, असंखेज्जासंखेज्जस्सेव गहणं, असंखेज्जा इदि बहुवयणणिहेसादो । पाइए दोसु वि बहुवयणोवलंभादो वत्तिमुहेण सव्वेसु असंखेज्जबहुत्तविरोहाभावादो वा अणेयंतिओ हेदुरिदि चेत्तिरिहि ' असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ' इत्ति पुरदो भण्णमाणसुत्तादो असंखेज्जा-संखेज्जस्स उवलद्वी हवदि । तं पि तिविहं जहण्णमुक्कस्सं अजहण्णमुक्कस्सासंखेज्जा-संखेज्जयं चेदि । तत्थ वि जहण्णमसंखेज्जासंखेज्जयं ण भवदि उक्कस्समसंखेज्जा-संखेज्जयं पि ण भवदि अजहण्णमणुक्कस्सासंखेज्जासंखेज्जस्सेव गहणं । कुदो ? ' जम्हि जम्हि असंखेज्जासंखेज्जयं मग्गिज्जदि तम्हि तम्हि अजहण्णमणुक्कस्स-असंखेज्जा-संखेज्जस्सेव गहणं भवदि ' इदि परियम्मवयणादो ।

तं पि अजहण्णमणुक्कस्सासंखेज्जासंखेज्जयमसंखेज्जवियप्पमिदि इमं होदि त्ति ण जाणिज्जदे ? जहण्ण-असंखेज्जासंखेज्जादो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि

प्रकृतमें परीतासंख्यात विवक्षित नहीं है और युक्तासंख्यात भी नहीं लिया गया है, अतः यहां असंख्यातासंख्यातका ही ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, सूत्रमें ' असंखेज्जा ' इस-प्रकार बहुवचनरूप निर्देश किया है ।

शंका — प्राकृतमें द्विवचनके स्थानमें भी बहुवचन पाया जाता है; अथवा, वृत्तिमुल्लेसे सभी असंख्यातोंमें असंख्यातके बहुत्वके स्वीकार कर लेनेमें कोई विरोध नहीं आता है, इस-लिये प्रकृतमें असंख्यातासंख्यातके ग्रहण करनेके लिये जो ' असंखेज्जा ' यह बहुवचनरूप हेतु दिया है वह अनैकान्तिक है ।

समाधान — यदि ऐसा है तो ' असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणिउस्सप्पिणीहि अव-हिरंति कालेण ' इसप्रकार अगे कहे जानेवाले सूत्रसे असंख्यातासंख्यातका ग्रहण हो जाता है ।

वह असंख्यातासंख्यात भी तीन प्रकारका है, जघन्य, उत्कृष्ट और अजघन्योत्कृष्ट असंख्यातासंख्यात । इन तीनोंमें भी प्रकृतमें जघन्य असंख्यातासंख्यात नहीं है और उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यात भी नहीं है, किंतु प्रकृतमें अजघन्यानुत्कृष्ट असंख्यातासंख्यातका ही ग्रहण है, क्योंकि, ' जहां जहां असंख्यातासंख्यात देखा जाता है वहां वहां अजघन्यानुत्कृष्ट अर्थात् मध्यम असंख्यातासंख्यातका ही ग्रहण होता है, ' ऐसा परिकर्मका वचन है ।

शंका — वह मध्यम असंख्यातासंख्यात भी असंख्यात विकल्परूप है, इसलिये यहां यह भेद लिया है, यह नहीं जाना जाता है ?

समाधान — जघन्य असंख्यातासंख्यातसे पद्योपमके असंख्यातवें भागमात्र वर्गस्थान ऊपर जाकर और जघन्य परीतानन्तसे असंख्यात लोकमात्र वर्गस्थान नीचे आकर दोनोंके

वग्गट्ठाणाणि उवरि अब्भुस्सरिदूण जहण्णपरित्ताणंतादो असंखेज्जलोगमेत्तवग्गट्ठाणाणि हेट्ठा ओसरिऊण दोण्हमंतरे जिणदिट्ठुभावरामी धेत्तवो । अथवा तिण्णिवारवग्गिदसंवग्गिदरासीदो असंखेज्जगुणो छदव्वपक्खित्तरासीदो असंखेज्जगुणहीणो । को तिण्णिवारवग्गिदसंवग्गिदरासी को वा छदव्वपक्खित्तरासि ति वुत्ते वुत्तदे—जहण्णमसंखेजासंखेज्जं विरलेऊण एक्केकस्स रूवस्स जहण्णमसंखेज्जासंखेज्जयं दाऊण वग्गिदसंवग्गिदं करिय पुणो उप्पण्णरासिं दुप्पडिरासिं करिय एगरासिं विरलेऊण एक्केकस्स रूवस्स उप्पण्णमहारासिं दाऊण अण्णोण्णभत्थं करिय पुणो उप्पण्णरासिं दुप्पडिरासिं करिय एगरासिं विरलेऊण एक्केकस्स रूवस्स उप्पण्णमहारासिं दाऊण अण्णोण्णभत्थे कदे तिण्णिवारवग्गिदसंवग्गिदरासी हवदि । एसा तिण्णिवारवग्गिदसंवग्गिदरासी पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । कुदो ? जेणेदस्स वग्गसलागाणं वग्गसलागाओ जहण्णपरित्तासंखेज्जस्स उवरिमवग्गमपावेऊणुप्पण्णाओ पल्लिदोवमवग्गसलागाणं पुण वग्ग-

मध्यमें जिनेद्रदेवने जो राशि देखी है उसका यहाँ ग्रहण करना चाहिये । अथवा, तीनवार वर्गितसंवर्गित राशिसे असंख्यातगुणी और छह द्रव्यप्रक्षिप्त राशिसे असंख्यातगुणी हीन राशि प्रकृतमें लेना चाहिये ।

शंका—तीनवार वर्गितसंवर्गित राशि कौनसी है और छह द्रव्यप्रक्षिप्त राशि कौनसी है ? इसप्रकार पूछने पर आचार्य उत्तर देते हैं—

समाधान - जघन्य असंख्यातासंख्यातका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर जघन्य असंख्यातासंख्यातको देयरूपसे दे कर उनका परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसकी फिरसे दो पंक्तियां करनी चाहिये । उनमेंसे एक राशिका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर दूसरी पंक्तिमें स्थित महाराशिको देयरूपसे देकर परस्पर गुणा करनेसे जो महाराशि उत्पन्न हो, उसकी फिरसे दो पंक्तियां करनी चाहिये । उनमेंसे एकका विरलन करके और उस विरलित राशिके ऊपर दूसरी पंक्तिमें स्थित उत्पन्न हुई महाराशिको देयरूपसे देकर परस्पर गुणा करने पर तीनवार वर्गितसंवर्गित राशि उत्पन्न होती है । (पृष्ठ २३ पर तीनवार वर्गितसंवर्गितराशिका बीजगणितसे उदाहरण दिया है उसीप्रकार यहाँ समझना चाहिये ।)

यह तीनवार वर्गितसंवर्गित राशि पल्लोपमके असंख्यातवें भाग है, क्योंकि, इसकी वर्गशलाकाओंकी वर्गशलाकाएं जघन्य परीतासंख्यातके उपरिम वर्गको नहीं प्राप्त होकर,

१ ति. प. पत्र ५२. त्रि. सा. ३८-४१. वित्तिवउपंचमगुणणे कमा सगामंख पठमचउसत्ता । णंता ते रूवज्जआ मज्जा रूवूणं गुरु पच्छा ॥ इअ सुत्तुचं अन्ने वग्गिअमिक्खिं चउत्थयमसंखं । होइ असंखासंखं लहु रूवज्जअं तु तं मज्जे ॥ रूवूणमाइमं गुरु तिवाग्गिउं तत्थिमे दसखेत्ते ॥ क. अ. ४, ७९-८१.

सलागाओ पदरावलियादो उवरि भंतूणुप्पणाओ, तम्हा तिण्णिवारवग्गिदसंबग्गिदरासीदो
गेरइयमिच्छाइड्डिरासी असंखेज्जगुणो । को छद्वपक्खित्तरासी ?

धम्माधम्मा लोयायासा पत्तेयसरीर-एगजीवपदेसा ।

बादरपदिट्ठिदा वि य छप्पेदेऽसंखपक्खेवा' ॥ ६२ ॥

एदाणि छ दव्वाणि पुच्चुत्तरासिम्हि पक्खित्ते छद्वपक्खित्तरासी होदि । एवं
विहाणेण भणिदअजहणमणुक्कस्सासंखेज्जासंखेज्जयस्स जत्तियाणि रूवाणि तत्तियमेत्तो
गेरइयमिच्छाइड्डिरासी होदि । एवं दव्वपमाणं समत्तं ।

**असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति
कालेण' ॥ १६ ॥**

किमट्ठं मिच्छाइड्डिरासी कालेण परूविज्जे ? ण, असंखेज्जरासी सव्वा णिड्ढदि

अर्थात् जघन्य परीतासंख्यातके ऊपर और उसके उपरिम वर्गके नीचे उत्पन्न हुई हैं और
पर्योपमकी वर्गशलाकाओंकी वर्गशलाकाए प्रतरावलीके ऊपर जाकर उत्पन्न हुई हैं । इससे
प्रतीत होता है कि तीनवार वर्गितसंवर्गित असंख्यातासंख्यात राशिसे नारक मिथ्यादृष्टि
जीवराशि असंख्यातगुणी है ।

शंका— छह द्रव्य प्रक्षिप्त राशि कौनसी है ?

समाधान— धर्मद्रव्य, अधर्मद्रव्य, लोकाकाश, अप्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति, एक
जीवके प्रवेश और बाहर प्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति ये छह असंख्यात राशियां तीनवार
वर्गितसंवर्गित राशिमें मिला देना चाहिये ॥ ६२ ॥

इन छह राशियोंको पूर्वोक्त राशिमें प्रक्षिप्त करने पर छह द्रव्य प्रक्षिप्त राशि
होती है ।

इस विधिसे कहे गये मध्यम असंख्यातासंख्यातका जितना प्रमाण हो उतनी नारक
मिथ्यादृष्टि जीवराशि है ।

इसप्रकार द्रव्यप्रमाणका वर्णन समाप्त हुआ ।

कालकी अपेक्षा नारक मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यातासंख्यात अपसर्पिणियों
और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत हो जाते हैं ॥ १६ ॥

शंका— नारक मिथ्यादृष्टि जीवोंका कालकी अपेक्षा किसलिये प्ररूपण किया ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, संपूर्ण असंख्यात जीवराशि समाप्त हो जाती है, इस

१ धम्माधम्मा लोगागासा एगजीवपदेसा चत्तारि वि लोगागासमेत्ता पत्तेगसरीरवादरपदिट्ठिय एदे । ति. प.
५२. धम्माधम्मिग्गिजीवगलोगागासपदेसपत्तेया । तत्तो असंखगुणिदा पदिट्ठिदा ऋप्पि रासीओ ॥ वि. सा. ४२.

२ असंखिज्जाहि उस्सप्पिणीओसप्पिणीहि अवहिरंति कालओ । अतु. सू. १४२. पृ. १८४.

त्ति पणवण्णट्टत्तादो । किमट्टं खेत्तपमाणमइकम्म कालपमाणं वुच्चदे ? ण एस दोसो, 'जदप्पवण्णणीयं तं पुव्वमेव भाणियव्वं' इदि वयणादो । कथं कालादो खेत्तं बहुवण्ण-णिज्जं ? ण, तम्मिह सेट्ठि-जगपदर-विकखंभसूचिपरूवणाणमत्थितादो । के वि आइरिया जं बहुवं तं सुहुममिदि भणंति—

सुहुमो य हवदि कालो तत्तो सुहुमं खु जायेद खेत्तं ।

अंगुल-असंखभागे हवंति कप्पा असंखेज्जा ॥ ६३ ॥

एदं ण घडदे । कुदो ? दव्वादो थूलं खेत्तं छाडिय दव्वस्स परूवणाण्णहाणुव-वत्तीदो । कथं दव्वादो खेत्तं थूलं ? वुच्चदे—

सुहुमं तु हवदि खेत्तं तत्तो सुहुमं खु जायेद दव्वं ।

दव्वंगुलम्मिह एक्के हवंति खेत्तंगुलाणंता ॥ ६४ ॥

दव्व-खेत्तंगुले परमाणुपदेसा आगासपदेसा च सरिता सि णेदं घडदे ? चे ण,

बातका ज्ञान कराना कालकी अपेक्षा प्ररूपण करनेका प्रयोजन है ।

शंका—क्षेत्रप्रमाणका उलंघन करके पहले कालप्रमाणका प्ररूपण किसलिये किया जा रहा है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, 'जो अल्पवर्णनीय होता है उसका पहले वर्णन करना चाहिये' इस वचनके अनुसार पहले कालप्रमाणका प्ररूपण किया है ।

शंका—कालसे क्षेत्र बहुवर्णनीय कैसे है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, क्षेत्रमें जगश्रेणी, जगप्रतर और विष्कम्भसूचीकी प्ररूपणा पाई जाती है, इसलिये कालसे क्षेत्र बहुवर्णनीय है ।

कितने ही आचार्य ऐसा कहते हैं कि जो बहुत अर्थात् बहुत प्रदेशोंसे उपचित होता है वह सूक्ष्म होता है । यथा—

काल सूक्ष्म होता है और क्षेत्र उससे भी सूक्ष्म होता है, क्योंकि, एक अंगुलके असंख्यातवें भागमें असंख्यात कल्पकाल आ जाते हैं । अर्थात् एक अंगुलके असंख्यातवें भागके जितने प्रदेश होते हैं असंख्यात कल्पकालके उतने समय होते हैं ॥ ६३ ॥

परंतु उन आचार्योंका यह व्याख्यान घटित नहीं होता है, क्योंकि, द्रव्यसे क्षेत्र स्थूल है, इस बातको छोड़कर ही पहले द्रव्यप्रमाणकी प्ररूपणा बन सकती है, अन्यथा क्षेत्रप्रमाणके प्ररूपणके पहले द्रव्यप्रमाणकी प्ररूपणा नहीं बन सकती है ।

शंका—द्रव्यसे क्षेत्र स्थूल कैसे है ?

समाधान—क्षेत्र सूक्ष्म होता है और उससे भी सूक्ष्म द्रव्य होता है, क्योंकि, एक द्रव्यांगुलमें (गणनाकी अपेक्षा) अनन्त क्षेत्रांगुल पाये जाते हैं ॥ ६४ ॥

शंका—एक द्रव्यांगुल और एक क्षेत्रांगुलमें परमाणुप्रदेश और आकाश-प्रदेश समान होते हैं, इसलिये पूर्वोक्त व्याख्यान घटित नहीं होता है ?

एकम्हि खेत्तंगुले ओगाहे अणंतद्वयंगुलदंसणादो । असंखेज्जासंखेज्जाणं ओसप्पिणि-
उस्सप्पिणीणं समए सलागभूदे ठवेऊण णेरइयमिच्छाइड्डिरासी च ठवेऊण सलागादो एगो
समओ अवहिरिज्जदि, णेरइयमिच्छाइड्डिरासीदो एगो जीवो अवहिरिज्जदि । एवं पुणो
पुणो अवहिरिज्जमाणे सलागरासी णेरइयमिच्छाइड्डि च जुगवं णिड्ढंति । अधवा ओस-
प्पिणि-उस्सप्पिणीओ दो वि मिलिदाओ कप्पो हवदि, तेण कप्पेण णेरइयमिच्छाइड्डि-
रासिम्हि भागे हिदे जं भागलद्धं तत्तियमेता कप्पा हवंति । एवं कालप्रमाणं समत्तं ।

खेत्तेण असंखेज्जाओ सेठीओ जगपदरस्स असंखेज्जदिभाग-
मेत्ताओ । तासिं सेठीणं विक्खंभसूचीं अंगुलवग्गमूलं विदियवग्ग-
मूलगुणिदेणं ॥ १७ ॥

समाधान — नहीं, क्योंकि, एक क्षेत्रांगुलमें अवगाहनाकी अपेक्षा अनन्त द्रव्यांगुल
देखे जाते हैं ।

असंख्यातासंख्यात अपसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके समय शलाकारूपसे एक
ओर स्थापित करके और दूसरी ओर नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिको स्थापित करके शलाका
राशिमैंसे एक समय कम करना चाहिये और नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिमैंसे एक जीव कम
करना चाहिये । इसप्रकार शलाकाराशि और नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिमैंसे पुनः पुनः एक
एक कम करने पर शलाकाराशि और नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि युगपत् समाप्त
हो जाती हैं ।

अथवा, अपसर्पिणी और उत्सर्पिणी ये दोनों मिलकर एक कल्पकाल होता है । उस
कल्पका नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिमैं भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उतने कल्पकाल
नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिकी गणनामें पाये जाते हैं ।

इसप्रकार कालप्रमाणका वर्णन समाप्त हुआ ।

क्षेत्रकी अपेक्षा जगप्रतरके असंख्यातवें भागमात्र असंख्यात जगश्रेणीप्रमाण
सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि है । उन जगश्रेणियोंकी विष्कंभसूची, सूच्यंगुलके
प्रथम वर्गमूलको उसीके द्वितीय वर्गमूलसे गुणित करने पर जितना लब्ध आवे,
उतनी है ॥ १७ ॥

विशेषार्थ — खुदाबन्धमें सामान्य नारकियोंके प्रमाण लानेके लिये विष्कंभसूचीका

१ सूचिः एकप्रदेशिका पंक्तिः । पञ्चसं. २, १४ स्वी. टी.

२ सामण्णा णेरइया वणअंगुलविदियमूलगुणसेठी । गो, जी. १४२. खेत्तओ असंखेज्जाओ सेठीओ पयरस्स
असंखिज्जइभागो तासिं णं सेठीणं विक्खंभसूचीं अंगुलपदमवग्गमूलं विइअवग्गमूलपडुप्पणं । अहव णं अंगुलविइअवग्ग-
मूलवणपमाणमेत्ताओ सेठीओ । अनु. सू. १४२. पृ. १८४. एत्थ (खुदाबन्धे) सामण्णणेरइयाणं वुत्तविक्खंभसूची

संखेज्जाणंताणं णिवारणद्वमसंखेज्जवयणं । असंखेज्जाओ सेटीओ इदि सामण्ण-
वयणेण सव्वागाससेटीए गहणं किण्ण पावदे ? ण, तस्स-

पहो सायर-सूर्इ पदरो य घणंगुलो य जगसेटी ।

लोगपदरो य लोगो अह दु माणां मुणेयच्चां ॥ ६५ ॥

इदि पमाणद्वगमंतरे अप्पिदत्तादो । ण च पमाणे परूविज्जमाणे अप्पमाणस्स-
पवेसो अत्थि, अइप्पसंगादो । अधवा ' मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण असंखेजा ' इदि
पुव्विह्वयणादो जाणिज्जेदे जहा अणंताए सव्वागाससेटीए गहणं णत्थि ति । जगपदरस्स
असंखेज्जदिभागो इदि किमट्ठं ? ण, जगपदरस्स संखेज्जदिभागप्पहुडि उवरिमसव्वसंखा-

प्रमाण पूर्वोक्त ही बतलाया है । अब यदि सामान्य नारकियोंकी और मिथ्यादृष्टि नारकियोंकी
विष्कंभसूची एक मान ली जाती है तो नरकमें गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंका अभाव प्राप्त
हो जाता है जो संगत नहीं है । अतएव यहाँ पर मिथ्यादृष्टि नारकियोंकी जो विष्कंभसूची
बतलाई है, यह सामान्य कथन है । विशेषरूपसे विचार करने पर सूच्यंगुलके प्रथम
वर्गमूलका द्वितीय वर्गमूलसे गुणा कर देने पर जो नारक सामान्य विष्कंभसूची आवे उसे
किंचित् न्यून कर देने पर मिथ्यादृष्टि नारकियोंकी विष्कंभसूची होती है ।

संख्यात और अनन्तके निवारण करनेके लिये सूत्रमें ' असंख्यात ' यह वचन दिया है ।

शंका—सूत्रमें ' असंख्यात जगश्रेणियां ' ऐसा सामान्य वचन दिया है, इसलिये
उससे संपूर्ण आकाश-श्रेणियोंका ग्रहण क्यों नहीं प्राप्त होता जाता है ?

समाधान — नहीं, क्योंकि, वह श्रेणीप्रमाण—

पथ्य, सागर, सूच्यंगुल, प्रतरांगुल, घनांगुल, जगश्रेणी, लोकप्रतर और लोक,
इसप्रकार ये आठ उपमाप्रमाण जानना चाहिये ॥ ६५ ॥

इसप्रकार इन आठ प्रमाणोंके भीतर आ जाता है । और जिसका प्रमाणके भीतर
प्ररूपण किया गया है उसमें अप्रमाणका प्रवेश नहीं हो सकता है, अन्यथा अतिप्रसंग
दोष आ जायगा ।

अथवा, ' नारक मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा असंख्यात हैं ' इस पूर्वोक्त
वचनसे जाना जाता है कि प्रकृतमें संपूर्ण आकाशकी अनन्त जगश्रेणियोंका ग्रहण नहीं है ।

शंका—सूत्रमें ' जगप्रतरका असंख्यातवें भागप्रमाण ' यह वचन किसलिये दिया ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, जगप्रतरके संख्यातवें भागको आदि लेकर उपरिम

चेव णेरइयमिच्छाइट्ठीणं जीवहाणे परूविदा, कधं तेणेदे ण विइउज्जेदे ? आलावमेदामावादो । अत्थदो पुण मेदो
अत्थि चेव, सामण्णविसंसविवखंभसूचीणं समाणत्तविरोहादो । ×× तम्हा एत्थतणविवखंभसूची पुण किंचूणघणंगुल-
विदियवगमूलमेत्ता ति वेत्तव्वं । धवला (खुदाबंध) पत्र ५१८., अ.

१ प्रतिपु ' दुव्वणा ' इति पाठः ।

२ पहो सायर सूर्इ पदरो य घणंगुलो य जगसेटी । लोयपदरो य लोगो उवमपमा एवमद्वविहा ॥ त्रि. सा. १२.

पडिसेहफलत्तादो । किमट्टं विक्खंभसूई परूविज्जदे ? ण, पदरस्स असंखेज्जदिभागो इदि सामण्णेण वुत्ते तस्स प्रमाणं किं संखेज्जा सेठीओ भवदि, किमसंखेज्जा सेठीओ भवदि इदि जादसंदेहस्स सिस्सस्स णिच्छयजणणट्टं सेठीणं विक्खंभसूईए प्रमाणं वुत्तं ।

द्वय-खेत्त-कालप्रमाणं सव्वेसिं विक्खंभसूईदो चैव णिच्छओ होदि त्ति काऊण ताव विक्खंभसूईप्रमाणपरूवणं कस्सामो । अंगुलवग्गमूले विक्खंभसूई हवदि । तं किं भूदमिदि वुत्ते विदियवग्गमूलगुणणेण उवलक्खियं । तं कथं जाणिज्जदे ? इत्थंभाव-लक्खणतइयाणिहेसादो' । जहा जो जडाहि सो भुंजदि' त्ति । अंगुलवग्गमूलमिदि वुत्ते

संपूर्ण संख्याका प्रतिबोध करना सूत्रमें दिये गये उक्त वचनका फल है ।

शंका — यहां पर विष्कंभसूचीका प्ररूपण किसलिये किया गया है ?

समाधान — नहीं, क्योंकि, 'प्रतरका असंख्यातवां भाग' ऐसा सामान्यरूपसे कहने पर उसका प्रमाण क्या संख्यात जगश्रेणियां है, अथवा असंख्यात जगश्रेणियां है, इसप्रकार जिस शिष्यको संदेह हो गया है उसको निश्चय करानेके लिये जगश्रेणियोंकी विष्कंभसूचीका प्रमाण कहा है ।

विष्कंभसूचीके कथनसे ही द्रव्यप्रमाण, क्षेत्रप्रमाण और कालप्रमाण, इन सबका निश्चय हो जाता है, ऐसा समझकर पहले विष्कंभसूचीके प्रमाणका प्ररूपण करते हैं—

सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलमें, अर्थात् सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलका आश्रय लेकर, विष्कंभसूची होती है । वह सूच्यंगुलका प्रथम वर्गमूल किसरूप है, ऐसा पूछने पर आचार्य कहते हैं कि सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलके गुणासे उपलक्षित है । अर्थात् सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलको उसीके द्वितीय वर्गमूलसे गुणित कर देने पर सामान्य नारक मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची होती है ।

उदाहरण—सूच्यंगुल 2×2 ; विष्कंभसूची २; सूच्यंगुलका प्रथम वर्गमूल २; सूच्यंगुलका द्वितीय वर्गमूल २; $2 \times 2 = 2$ विष्कंभसूची ।

शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—'विदियवग्गमूलगुणिदेण' सूत्रके इस पदमें आये हुए इत्थंभावलक्षण तृतीया विभक्तिके निर्देशसे यह जाना जाता है कि यहां पर सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे

१ गुणिदेणेत्ति णेदं तदियाए एगवयणं किं तु सत्तमीए एगवयणेण पदमाए वयणेण वा होदव्वमण्णहा सुत्तठ्ठसंबंधामावादो । धवला (खुदाबिंध) पत्र ५२८. अ.

२ इत्थंभूतलक्षणे । २ । ३ । २१ पाणिनि । कंचित्प्रकारं प्राप्तस्य लक्षणे तृतीया स्यात् । जटाभिस्तापसः । जटाभ्याभ्यतापसत्वविशिष्ट इत्यर्थः । वृत्तिः ।

पदरंगुलस्स घणंगुलस्स वा वग्गमूलस्स गहणं कधं णो पावदे ? ण, ' अट्टरूवं वग्गिज्ज-
माणे वग्गिज्जमाणे असंखेज्जाणि वग्गट्ठाणाणि गंतूण सोहम्मीसाणविकखंभसई उप्पज्जदि ।
सा सई वग्गिदा णेरइयविकखंभसई हवदि । सा सई वग्गिदा भवणवासियविकखंभसई
हवदि । सा सई वग्गिदा घणंगुलो हवदि ' त्ति परियम्मवयणादो णव्वदे घण-पदरंगुलाणं
वग्गमूलस्स गहणं ण हवदि किंतु सूचिअंगुलवग्गमूलस्सेव गहणं होदि त्ति, अण्णहा
घणंगुलविदियवग्गमूलस्स अणुप्पत्तीदो । संपहि सूचिअंगुलविदियवग्गमूलं भागहारं

गुणित प्रथम वर्गमूल लिया है। जैसे, ' जो जटाओंसे युक्त है वह तपस्वी भोजन करता है। यहां
पर इत्थंभावलक्षण तृतीया निर्वेश होनेसे जटाओंवाला यह अर्थ निकल आता है, उसीप्रकार
प्रकृतमें भी समझ लेना चाहिये।

शंका—' अंगुलका वर्गमूल ' ऐसा सामान्य कथन करने पर उससे प्रतरांगुलके
वर्गमूल अथवा घनांगुलके वर्गमूलका ग्रहण क्यों नहीं प्राप्त होता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, ' आठका उत्तरोत्तर वर्ग करते हुए असंख्यात
वर्गस्थान जाकर सौधर्म और ऐशानसंबन्धी विष्कंभसूची प्राप्त होती है। उसका (सौधर्मद्विक-
संबन्धी विष्कंभसूचीका) उसीसे वर्ग करने पर नारक सामान्यसंबन्धी विष्कंभसूची प्राप्त
होती है। उसका (नारकसंबन्धी विष्कंभसूचीका) उसीसे वर्ग करने पर भवनवासी
देवोंसंबन्धी विष्कंभसूची प्राप्त होती है। उसका (भवनवासिविष्कंभसूचीका) उसीसे वर्ग
करने पर घनांगुल प्राप्त होता है'। इस परिकर्मके वचनसे जाना जाता है कि प्रकृतमें घनांगुल
और प्रतरांगुलके वर्गमूलका ग्रहण नहीं किया है, किन्तु सूच्यंगुलके वर्गमूलका ही ग्रहण किया
है। यदि ऐसा न माना जाय तो सामान्य नारक विष्कंभसूचीको जो घनांगुलके द्वितीय
वर्गमूलप्रमाण कहा है वह नहीं बन सकता है।

विशेषार्थ—ऊपर जो परिकर्मका उद्धरण दिया है उससे स्पष्ट पता लग जाता है
कि सामान्य नारकविष्कंभसूची घनांगुलके द्वितीय वर्गमूल प्रमाण है। अब यदि सूत्रमें
अंगुल सामान्यका उल्लेख होनेसे उससे हम सूच्यंगुलका ग्रहण न करके प्रतरांगुल या
घनांगुलका ग्रहण करें तो पूर्वोक्त सूत्रके अभिप्रायका परिकर्मके वचनके साथ विरोध आ
जाता है, क्योंकि, उक्त सूत्रका अर्थ करते हुए, यदि हम घनांगुलके प्रथम वर्गमूलका द्वितीय
वर्गमूलसे गुणा करने पर सामान्य नारक विष्कंभसूचीका प्रमाण होता है, ऐसा अर्थ करते हैं
तो परिकर्मके उक्त वचनके साथ विरोध है ही। अंगुलका अर्थ प्रतरांगुल करने पर भी यही
आपत्ति आती है। हां, अंगुलका अर्थ सूच्यंगुल ले लिया जाता है तो कोई विरोध नहीं
आता है, क्योंकि, सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलका द्वितीय वर्गमूलसे गुणा करने पर जो प्रमाण
आता है वह घनांगुलके द्वितीय वर्गमूल प्रमाण ही होता है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि
सूत्रमें अंगुलसे सूच्यंगुलका ही ग्रहण करना चाहिये।

अब सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलको भागहार करके और सूच्यंगुलको भाजक करके

काऊण सूचिअंगुलं विहज्जमाणमिदि कट्टु विक्खंभसूचिपरूवणं वग्गट्ठणे खंडिद-भाजिद-विरलिद-अवहिद-पमाण-कारण-णिरुत्ति-वियप्पेहि वत्तइस्सामो । तत्थ खंडिदादिचउकं सुगमं । तस्स पमाणं केत्तियं ? सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सूचिअंगुल-पढमवग्गमूलाणि । केण कारणेण ? सूचिअंगुलपढमवग्गमूलेण सूचिअंगुले भागे हिदे सूचि-अंगुलपढमवग्गमूलमागच्छदि । सूचिअंगुलपढमवग्गमूलस्स दुभागेण सूचिअंगुले भागे हिदे दोण्णि पढमवग्गमूलाणि आगच्छंति । पुणो पढमवग्गमूलस्स तिभागेण सूचिअंगुले भागे हिदे तिण्णि पढमवग्गमूलाणि आगच्छंति । एवं पढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभाग-भूदसूचिअंगुलविदियवग्गमूलेण पढमवग्गमूले भागे हिदे लट्ठेण सूचिअंगुले भागे हिदे

वर्गस्थानमें खंडित, भाजित, विरलित, अपहृत, प्रमाण, कारण, निरुक्ति, और विकल्पके द्वारा विष्कंभसूचीका प्रतिपादन करते हैं । उनमें प्रारंभके खण्डित आदि चारका कथन सुगम है । (इन चारोंका सामान्य मिथ्यादृष्टि राशिके सम्बंधमें उदाहरण सहित कथन पृष्ठ ४१ और ४२ में किया है, उसीप्रकार यहाँ भी समझना चाहिये ।)

शंका—विष्कंभसूचीका प्रमाण कितना है ?

समाधान—सूच्यंगुलके असंख्यातवां भाग विष्कंभसूचीका प्रमाण है जो सूच्यंगुलके असंख्यात प्रथम वर्गमूल प्रमाण है ।

शंका—किस कारणसे सूच्यंगुलके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण विष्कंभसूची होती है ?

समाधान—सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलका सूच्यंगुलमें भाग देने पर सूच्यंगुलका प्रथम वर्गमूल आता है $\left(\frac{२ \times २}{२} = २ \right)$ । सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलके द्वितीय भागका

सूच्यंगुलमें भाग देने पर सूच्यंगुलके दो प्रथम वर्गमूल लब्ध आते हैं $\left(\frac{२ \times २}{२} = २ \times २ \right)$ । पुनः

सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलके तीसरे भागका सूच्यंगुलमें भाग देने पर सूच्यंगुलके तीन प्रथम वर्गमूल लब्ध आते हैं $\left(\frac{२ \times २}{२} = ३ \times २ \right)$ । इसीप्रकार सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलके असं-

ख्यातवें भागरूप सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर जो लब्ध

असंखेज्जाणि सूचिअंगुलपढमवग्गमूलाणि आगच्छंति त्ति ण संदेहो । कारणं गदं ।
णिरुत्तिं वत्तइस्सामो । अंगुलविदियवग्गमूलेण पढमवग्गमूले भागे हिदे भागलद्धमिह
जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पढमवग्गमूलाणि घेत्तूण विक्खंभसूई हवदि । अधवा
विदियवग्गमूलस्स जत्तियाणि रूवाणि तत्तिएहि पढमवग्गमूलेहि विक्खंभसूची होदि त्ति
वत्तव्वं । णिरुत्ती गदा ।

वियप्पो दुविहो हेट्ठिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि । तत्थ वेरूवे हेट्ठिमवियप्पं
वत्तइस्सामो । सूचिअंगुलविदियवग्गमूलेण सूचिअंगुलपढमवग्गमूलमोवट्ठिय लद्धेण पढम-
वग्गमूले गुणिदे विक्खंभसूई हवदि । अधवा विदियवग्गमूलेण पढमवग्गमूले गुणिदे

आवे उससे सूच्यंगुलके भाजित करने पर सूच्यंगुलके असंख्यात प्रथम वर्गमूल लब्ध आते हैं,
इसमें संदेह नहीं है । इसप्रकार कारणका वर्णन समाप्त हुआ ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{2^{\frac{2}{3}}}{2^{\frac{2}{3}}} = 2; \quad \frac{2 \times 2^{\frac{2}{3}}}{2^{\frac{2}{3}}} = 2 \quad \text{सूच्यंगुलके असंख्यात प्रथम वर्गमूल प्रमाण विक्खंभसूची ।}$$

अथ निरुक्तिका कथन करते हैं— सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे प्रथम वर्गमूलके
भाजित करने पर भागमें जितनी संख्या लब्ध आवे उतने प्रथम वर्गमूल ग्रहण करके विक्खंभ-
सूची उत्पन्न होती है । अथवा, द्वितीय वर्गमूलका जितना प्रमाण है उतने प्रथम वर्गमूलोंसे
(द्वितीय वर्गमूल प्रमाण प्रथम वर्गमूलोंको जोड़ देने पर) विक्खंभसूची होती है । इसप्रकार
निरुक्तिका वर्णन समाप्त हुआ ।

$$\text{उदाहरण—} 2^{\frac{2}{3}} \times 2^{\frac{2}{3}} = 2 \quad \text{द्वितीय वर्गमूल प्रमाण प्रथम वर्गमूलोंका जोड़, द्वितीय वर्गमूलसे प्रथम वर्गमूलको गुणाकर देने पर जितना होता है, उतना ही आता है ।}$$

विकल्प दो प्रकारका है, अधस्तन विकल्प और उपरिम विकल्प । उनमें पहले
द्विरूपधारामें अधस्तन विकल्प बतलाते हैं— सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे सूच्यंगुलके
प्रथम वर्गमूलको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उससे सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलके गुणित
करने पर विक्खंभसूचीका प्रमाण होता है । अथवा, सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे प्रथम वर्गमूलके
गुणित करने पर विक्खंभसूचीका प्रमाण होता है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{2^{\frac{2}{3}}}{2^{\frac{2}{3}}} = 2; \quad 2 \times 2^{\frac{2}{3}} = 2 \text{ वि. अथवा, } 2^{\frac{2}{3}} \times 2^{\frac{2}{3}} = 2 \text{ वि.}$$

विक्रंभसूई हवदि । अद्वरूवे वत्तइस्सामो । अंगुलविदियवग्गमूलेण पढमवग्गमूलं गुणेऊण घणंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे विक्रंभसूची आगच्छदि । केण कारणेण ? अंगुलपढमवग्गमूलेण घणंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे सूचिअंगुलो आगच्छदि । पुणो तमंगुलविदियवग्गमूलेण भागे हिदे विक्रंभसूची आगच्छदि । एत्थ विउणादिकरणं वत्तइस्सामो । अंगुलपढमवग्गमूलेण घणंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे सूचिअंगुलो आगच्छदि । विगुणिदपढमवग्गमूलेण घणंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे सूचिअंगुलस्स दुभागो आगच्छदि । तिगुणिदपढमवग्गमूलेण घणंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे सूचिअंगुलस्स तिभागो आगच्छदि ।

अब अष्टरूपमें अधस्तन विकल्प बतलाते हैं— सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनांगुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर विक्रंभसूचीका प्रमाण आता है, क्योंकि, सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलसे घनांगुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर सूच्यंगुलका प्रमाण आता है । पुनः उसे सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे भाजित करने पर विक्रंभसूचीका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—सूच्यंगुलका घन $\left(\frac{2^3}{2}\right)^3 = 2^6$ घनांगुलका प्रथम वर्गमूल 2^3 ।

$$\frac{2^6}{2^3 \times 2^3} = 2 \text{ विक्रंभसूची.}$$

अब यहां द्विगुणादिकरण विधिको बतलाते हैं— सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलसे घनांगुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर सूच्यंगुल आता है $\left(\frac{2^3}{2} = 2 \times 2^{\frac{3}{2}}\right)$ । द्विगुणित

सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलसे घनांगुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर सूच्यंगुलका दूसरा भाग आता है $\left(\frac{2^3}{2} = \frac{2 \times 2^{\frac{3}{2}}}{2}\right)$ । त्रिगुणित सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलसे घनांगुलके प्रथम

वर्गमूलके भाजित करने पर सूच्यंगुलका तीसरा भाग आता है । $\left(\frac{2^3}{2} = \frac{2 \times 2^{\frac{3}{2}}}{2}\right)$ ।

एदेण कमेण णेदच्चं जाव सूचिअंगुलपढमवग्गमूलस्स गुणगारो विदियवग्गमूलमेत्तं पत्तो त्ति । पुणो तेण सूचिअंगुलविदियवग्गमूलेण गुणिदपढमवग्गमूलेण घणंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे विदियवग्गमूलोवद्धियसूचिअंगुलो आगच्छदि । सो चेव विक्खंभसूची । घणाघणे वत्त-इस्सामो । अंगुलविदियवग्गमूलेण पढमवग्गमूलं गुणेऊण तेण घणंगुलविदियवग्गमूलं गुणेऊण तेण घणाघणविदियवग्गमूले भागे हिदे विक्खंभसूई आगच्छदि । केण कारणेण ? घणंगुल-विदियवग्गमूलेण घणाघणंगुलविदियवग्गमूले भागे हिदे घणंगुलपढमवग्गमूलमागच्छदि । पुणो वि सूचिअंगुलपढमवग्गमूलेण घणंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे सूचिअंगुलो आग-च्छदि । पुणो वि विदियवग्गमूलेण सूचिअंगुले भागे हिदे विक्खंभसूची आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । एवं हेट्ठिमवियप्पो समत्तो ।

उवरिमवियप्पो तिविहो, गहिदो गहिदगहिदो गहिदगुणगारो चेदि । तत्थ

इसप्रकार जबतक सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलका गुणकार द्वितीय वर्गमूलके प्रमाणको प्राप्त होवे तबतक इसी क्रमसे ले जाना चाहिये । पुनः उस सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनांगुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे भाजित सूच्यंगुल आता है, और वही विष्कंभसूची है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{2^2}{2 \times 2} = \frac{2 \times 2}{2} = 2 \text{ विष्कंभसूची.}$$

अब घनाघनमें अधस्तन विकल्प बतलाते हैं— सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका घनाघनांगुलके द्वितीय वर्गमूलमें भाग देने पर विष्कंभसूचीका प्रमाण आता है, क्योंकि, घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलका घनाघनांगुलके द्वितीय वर्गमूलमें भाग देने पर घनांगुलका प्रथम वर्गमूल आता है । पुनः सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलका घनांगुलके प्रथम वर्गमूलमें भाग देने पर सूच्यंगुल आता है । पुनः सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलका सूच्यंगुलमें भाग देने पर विष्कंभसूचीका प्रमाण आता है । इसप्रकार विष्कंभसूची आती है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया । इसप्रकार अधस्तन विकल्प समाप्त हुआ ।

उदाहरण—सूच्यंगुलका घनाघन $(2^3)^3 = 2^9$; सूच्यंगुलके घनाघनका द्वितीय

$$\text{वर्गमूल } 2 = 2^3; \frac{2^9}{2 \times 2 \times 2} = 2 \text{ विष्कंभसूची.}$$

उपरिम विकल्प तीन प्रकारका है, गृहीत, गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकार । उनमें

गहिदं वत्तइस्सामो । विदियवग्गमूलेण सूचिअंगुले भागे हिदे विक्खंभसूची आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि विक्खंभसूची आगच्छदि । अथवा विदियवग्गमूलेण सूचिअंगुलं गुणेऊण पदरंगुले भागे हिदे विक्खंभसूची आगच्छदि । केण कारणेण ? सूचिअंगुलेण पदरंगुले भागे हिदे सूचिअंगुलो आगच्छदि । पुणो वि विदियवग्गमूलेण सूचिअंगुले भागे हिदे विक्खंभसूची आगच्छदि । एवमागच्छदि ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे विक्खंभसूची आगच्छदि । एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेदच्चं । एत्थ

पहले गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलका सूच्यंगुलमें भाग देने पर विष्कंभसूची आती है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{2 \times 2}{2} = 2 \text{ विष्कंभसूची.}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी विष्कंभसूची आती है ।

उदाहरण— 2 के k अर्धच्छेद होते हैं । 2 के k अर्धच्छेद किये जायं तो अंतिम राशि 2 होगी । सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलमें $k = \frac{1}{2}$ है, और सूच्यंगुलमें $ख = \frac{1}{2}$ है; इसलिये $2 \times 2 = 2$ के अर्धच्छेद 2 के अर्धच्छेदोंके बराबर करने पर $2 - \frac{1}{2} = 2'$ अर्थात् 2 आ जाता है जो विष्कंभसूचीका प्रमाण है ।

अथवा, सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे सूच्यंगुलको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका प्रतरांगुलमें भाग देने पर विष्कंभसूचीका प्रमाण आता है, क्योंकि, सूच्यंगुलसे प्रतरांगुलके भाजित करने पर सूच्यंगुल आता है । पुनः सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे सूच्यंगुलके भाजित करने पर विष्कंभसूची आती है । इसप्रकार विष्कंभसूची आती है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{(2 \times 2)^{\frac{1}{2}}}{2 \times 2 \times 2} = \frac{2}{2} = 2 \text{ विष्कंभसूची.}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी विष्कंभसूचीका प्रमाण आता है । इसीप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्त स्थानोंमें ले

अद्वच्छेदणयमेत्तमेलावणविहाणं जाणिऊण वत्तच्चं । अट्टरूवे वत्तइस्सामो । विदियवग्ग-
मूलेण पदरंगुलं गुणेऊण तेण घणंगुले भागे हिदे विक्खंभसूची आगच्छदि । केण
कारणेण ? पदरंगुलेण घणंगुले भागे हिदे सूचिअंगुलमागच्छदि । पुणो वि विदियवग्ग-
मूलेण सूचिअंगुले भागे हिदे विक्खंभसूची आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्टु
गुणेऊण भागगहणं कदं । तस्स भागहारस्स अद्वच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्वच्छेदणए
कदे वि विक्खंभसूची आगच्छदि । एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयच्चं । घणाघणे
वत्तइस्सामो । विदियवग्गमूलेण पदरंगुलं गुणेऊण तेण गुणिदरासिणा घणंगुल-
उवरिमवग्गं गुणेऊण तेण घणाघणे भागे हिदे विक्खंभसूची आगच्छदि । केण

जाना चाहिये । यहां पर समस्त अर्धच्छेदोंके मिलानेकी विधिको जानकर कथन करना चाहिये ।

उदाहरण— $2^{\frac{1}{2}}$ के अर्धच्छेद $2^{\frac{1}{4}}$ होते हैं, अतः इतनीवार $2^{\frac{1}{2}}$ के अर्धच्छेद करने पर

$2^{\frac{1}{2} - \frac{1}{4}} = 2^{\frac{1}{4}} = 2$ प्रमाण विष्कंभसूची आ जाती है ।

अब अष्टरूपमें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे प्रतरांगुलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनांगुलके भाजित करने पर विष्कंभसूचीका प्रमाण आता है, क्योंकि, प्रतरांगुलसे घनांगुलके भाजित करने पर सूच्यंगुल आता है । पुनः सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे सूच्यंगुलके भाजित करने पर विष्कंभसूचीका प्रमाण आता है । इसप्रकार विष्कंभसूची आती है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{\left(\frac{2}{2}\right)^2}{\frac{2}{2} \times \frac{2}{2}} = \frac{2^2}{2^2} = 2 \text{ विष्कंभसूची.}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी विष्कंभसूचीका प्रमाण आ जाता है । इसीप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्त स्थानोंमें ले जाना चाहिये ।

उदाहरण— 2^3 के अर्धच्छेद $2^{\frac{3}{2}}$ होते हैं, अतः इतनीवार 2^3 के अर्धच्छेद करने पर

$2^{3 - \frac{3}{2}} = 2^{\frac{3}{2}} = 2$ प्रमाण विष्कंभसूची आ जाती है ।

अब घनाघनमें गृहीत उपरिम विकल्प बतलाते हैं— सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे प्रतरांगुलको गुणित करके जो गुणित राशि लब्ध आवे उससे घनांगुलके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनाघनांगुलके भाजित करने पर विष्कंभसूचीका

कारणेण ? घण-उवरिमवग्गेण घणाघणे भागे हिदे घणंगुलो आगच्छदि । पुणो वि पदरंगुलेण घणंगुले भागे हिदे सूचिअंगुलो आगच्छदि । पुणो वि विदियवग्गमूलेण सूचिअंगुले भागे हिदे विक्खंभसूची आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कड्डु गुणेऊग भागग्गहणं कदं । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि विक्खंभसूची आगच्छदि । गहिदो गदो । सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागेण घणंगुल-पढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागेण घणाघणविदियवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागेण च विक्खंभसूचिपमाणेण गहिदगहिदो गहिदगुणमारो च पुब्बं व वत्तव्वो ।

संपहि णेरइयमिच्छाइट्टिरासिस्स भागहारुप्पायणविहिं वत्तइस्सामो । सुत्ते अवुत्तो भागहारो कथमुप्पाइज्जदे ? ण, सुत्तवुत्तविक्खंभसूईदो तदुप्पत्तिसिद्धीदो । तं जहा-

प्रमाण आता है, क्योंकि, घनांगुलके उपरिम वर्गसे घनाघनांगुलके भाजित करने पर घनांगुल आता है । पुनः प्रतरांगुलसे घनांगुलके भाजित करने पर सूच्यंगुल आता है । पुनः सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे सूच्यंगुलके भाजित करने पर विष्कंभसूची आती है । इसप्रकार विष्कंभसूची आती है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{(२^४)^३}{२ \times २ \times २^६} = \frac{२^{१२}}{२^३ \times २^६} = \frac{२^{१२}}{२^{९}} = २ \text{ विष्कंभसूची.}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी विष्कंभसूचीका प्रमाण आता है । इसप्रकार गृहीत उपरिम विकल्पका वर्णन समाप्त हुआ ।

उदाहरण— $२^{११}$ के अर्धच्छेद ११ होते हैं; अतः इतनीवार $२^{११}$ के अर्धच्छेद करने पर $१२-११ = १$ $२ = २$ प्रमाण विष्कंभसूची आ जाती है ।

सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण विष्कंभसूचीसे, घनांगुलके प्रथम वर्गमूलके असंख्यातवें भागप्रमाण विष्कंभसूचीसे और घनाघनांगुलके द्वितीय वर्गमूलके असंख्यातवें भागप्रमाण विष्कंभसूचीसे गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकारका कथन पहलेके समान करना चाहिये ।

अब नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिके भागहारके उत्पन्न करनेकी विधिको बतलाते हैं—

शंका— भागहारका कथन सूत्रमें नहीं किया है, फिर यहां वह कैसे उत्पन्न किया जा रहा है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, सूत्रोक्त विष्कंभसूचीसे उक्त भागहारकी उत्पात्ति बन जाती है । वह इसप्रकार है—

१ प्रतिशु ' पुणो घण-' इति पाठः ।

जगसेठीए जगपदरे भागे हिदे एगसेठी आगच्छदि । जगसेठीदुभागेण जगपदरे भागे हिदे दोण्णि सेठीओ आगच्छंति । जगसेठितिभागेण जगपदरे भागे हिदे तिण्णि सेठीओ आगच्छंति । एवमेगादि-एगुत्तरकमेण सेठीए भागहारो वड्ढावेयव्वो जाव णेरइयविकखं-भसूचिमेत्तं पत्तो त्ति । पुणो ताए विकखंभसूचीए सेठिमोवट्टिय लद्धेण जगपदरे भागे हिदे विकखंभसूचीमेत्तसेठीओ आगच्छंति । एवमणत्थ वि विकखंभसूईदो अवहारकालो साधेयव्वो । एदेण भागहारेण सेठीए उवरि खंडिदादिवियप्पा वत्तव्वा । तत्थ ताव वग्गद्वाने पमाण-कारण-णिरुत्ति-वियप्पेहि अवहारकालं वत्तइस्सामो । तस्स पमाणं केत्तियं ? सेठीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेठिपढमवग्गमूलाणि । पमाणं गदं । केण कारणेण ? सेठिपढमवग्गमूलेण सेठिम्हि भागे हिदे सेठिपढमवग्गमूलो आग-

जगश्रेणीसे जगप्रतरके भाजित करने पर एक जगश्रेणीका प्रमाण आता है (४२९४९६७२९६ ÷ ६५५३६ = ६५५३६) । जगश्रेणीके द्वितीय भागका जगप्रतरमें भाग देने पर दो जगश्रेणियां लब्ध आती हैं (४२९४९६७२९६ ÷ ३२७६८ = १३१०७२) । जगश्रेणीके तृतीय भागसे जगप्रतरके भाजित करने पर तीन जगश्रेणियां आती हैं (४२९४९६७२९६ ÷ २१८४५ = १९६६०८) । इसप्रकार भागहार बढ़ाते हुए जबतक वह नारक विष्कंभसूचीके प्रमाणको प्राप्त होवे तबतक उसे बढ़ाते जाना चाहिये । अनन्तर उस विष्कंभसूचीसे जगश्रेणीको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उससे जगप्रतरके भाजित करने पर जितना विष्कंभसूचीका प्रमाण है उतनी जगश्रेणियां लब्ध आती हैं । इसीप्रकार अन्यत्र भी विष्कंभसूचीसे अवहारकाल साथ लेना चाहिये ।

उदाहरण—जगश्रेणी ६५५३६; जगप्रतर ४२९४९६७२९६; ६५५३६ ÷ २ = ३२७६८;
४२९४९६७२९६ ÷ ३२७६८ = १३१०७२. नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि.

अब इस भागहारका आश्रय करके जगश्रेणीके ऊपर खण्डित आदि विकल्पका कथन करना चाहिये । उनमेंसे पहले वर्गस्थानमें प्रमाण, कारण, निरुक्ति और विकल्पके द्वारा अवहारकालका प्रमाण बतलाते हैं—

शंका—सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिके लानेके लिये जो भागहार कहा है उसका प्रमाण कितना है ?

समाधान—उक्त भागहारका प्रमाण जगश्रेणीके असंख्यातवें भाग है, जो अंगश्रेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । इसप्रकार प्रमाणका वर्णन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—अवहारकाल ३२७६८; जगश्रेणीका प्रथम वर्गमूल २५६; ३२७६८ ÷ २५६ = १२८ (यहाँ १२८ को असंख्यात मान कर उतनेवार प्रथम वर्गमूल २५६ का जोड़ ३२७६८ होता है)

शंका—जगश्रेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण अवहारकाल किस कारणसे है ?

समाधान—क्योंकि, जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूलसे जगश्रेणीके भाजित करने पर

च्छदि । सेटिविदियवग्गमूलेण सेटिम्हि भागे हिदे विदियवग्गमूलस्स जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि सेटिपढमवग्गमूलाणि आगच्छंति । सेटितदियवग्गमूलेण सेटिम्हि भागे हिदे सेटिविदिय-तदियवग्गमूलाणं अण्णोण्णभागे कदे तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि सेटिपढमवग्गमूलाणि आगच्छंति । अणेण विहाणेण पलिदोवमवग्गसलागाणं असंखेज्जादिभागमेत्तवग्गट्टाणाणि हेट्टा ओसरिऊण घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेटिम्हि भागे हिदे असंखेज्जाणि सेटिपढमवग्गमूलाणि आगच्छंति त्ति ण संदेहं कायव्वं । कारणं गदं । गिरुत्तिं वत्तइस्सामो । घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेटिपढमवग्गमूले भागे हिदे तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पढमवग्गमूलाणि । अधवा तेणेव भागहारेण सेटिविदियवग्गमूले भागे हिदे तत्थागदेण तम्हि चेव गुणिदे तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि सेटिपढमवग्गमूलाणि । अधवा तेणेव भागहारेण सेटितदियवग्गमूले भागे हिदे तत्थागदेण तं चेव गुणेऊण तदो तेण विदियवग्गमूले गुणिदे तत्थ जत्तियाणि

जगश्रेणीका प्रथम वर्गमूल आता है (६५५३६ ÷ २५६ = २५६) । जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलसे जगश्रेणीके भाजित करने पर द्वितीय वर्गमूलका जितना प्रमाण होता है उतने जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूल लब्ध आते हैं (६५५३६ ÷ १६ = ४०९६ = १६ × २५६) । जगश्रेणीके तृतीय वर्गमूलसे जगश्रेणीके भाजित करने पर, श्रेणीके द्वितीय और तृतीय वर्गमूलके परस्पर गुणा करने पर वहां जितनी संख्या उत्पन्न हो उतने प्रथम वर्गमूल लब्ध आते हैं (६५५३६ ÷ ४ = १६३८४ = १६ × ४ × २५६) । इसी विधिसे पर्योपमकी वर्गशलाकाओंके असंख्यातवें भागमात्र वर्गस्थान नीचे जाकर घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगश्रेणीके भाजित करने पर जगश्रेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूल लब्ध आते हैं, इसमें संदेह नहीं करना चाहिये । इसप्रकार कारणका वर्णन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—घनांगुलका द्वितीय वर्गमूल २; ६५५३६ ÷ २ = ३२७६८ अब.

अब निरुक्तिका कथन करते हैं— घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर वहां जितना प्रमाण लब्ध आवे उतने प्रथम वर्गमूल सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकालमें होते हैं ।

उदाहरण—२५६ ÷ २ = १२८ (इतने प्रथम वर्गमूल अवहारकालमें होते हैं) ।

अथवा, उसी घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलरूप भागहारसे जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलके भाजित करने पर वहां जो प्रमाण लब्ध आवे उससे उसी द्वितीय वर्गमूलके गुणित कर देने पर वहां जो प्रमाण लब्ध आवे उतने जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूल सामान्य अवहारकालमें लब्ध आते हैं ।

उदाहरण—१६ ÷ २ = ८; १६ × ८ = १२८.

अथवा, उसी घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलरूप भागहारसे जगश्रेणीके तृतीय वर्गमूलके भाजित करने पर वहां जितना प्रमाण आवे उससे उसी तृतीय वर्गमूलको गुणित करके

रूवाणि तत्तियाणि सेटिपढमवग्गमूलाणि । अणेण विहाणेण असंखेज्जाणि वग्गट्टाणाणि हेट्ठा ओसरिऊण घणंगुलविदियवग्गमूलेण तस्सुवरिमवग्गमवहारिय लद्धेण घणंगुलपढमवग्गमूलं गुणिय तेण च गुणियरासिणा घणंगुलो गुणेयव्वो । एदेण कमेण उवरि उवरि अवट्टिदवग्गट्टाणाणि सेटिविदियवग्गमूलंताणि सव्वाणि गुणेयव्वाणि । तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पढमवग्गमूलाणि हवंति । एवं णिरुत्ती गदा ।

वियप्पो दुविहो, हेट्टिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि । वेरूवे हेट्टिमवियप्पो णत्थि, जगसेटिसमाणवेरूववग्गस्स पढमवग्गमूलं केण वि भागहारेण अवहिरिज्जंते अवहारकालस्स अणुप्पत्तीदो । ण च जगसेटिसमाणवेरूववग्गं अस्सिऊण अवहारकालुप्पत्ती वोत्तुं सक्किज्जदे, हेट्टिम-उवरिमवियप्पेसु णिरुद्धेसु मज्झिमवियप्पस्स असंभवादो । अट्टरूवे हेट्टिमवियप्पो णत्थि, विहज्जमाणसेटिपढमवग्गमूलादो अवहारकालस्स

तदनन्तर उस लब्धसे द्वितीय वर्गमूलके गुणित करने पर वहां जितना प्रमाण आवे उतने जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूल सामान्य अवहारकालमें लब्ध आते हैं ।

उदाहरण— $४ \div २ = २$; $४ \times २ = ८$; $१६ \times ८ = १२८$.

इसी विधिसे असंख्यात वर्गस्थान नीचे जाकर घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे उसके उपरिम वर्गको भाजित करके जो लब्ध आवे उससे घनांगुलके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो गुणित राशि लब्ध आवे उससे घनांगुलको गुणित करना चाहिये । इसी क्रमसे जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूल पर्यन्त ऊपर ऊपर अवस्थित संपूर्ण वर्गस्थानोंको गुणित करना चाहिये । इसप्रकार गुणा करनेसे वहां जितना प्रमाण लब्ध आवे उतने प्रथम वर्गमूल सामान्य मिथ्यादृष्टि नारक अवहारकालमें होते हैं । इसप्रकार निरुक्तिका वर्णन समाप्त हुआ ।

उदाहरण— $४ \div २ = २$; $४ \times २ = ८$; $१६ \times ८ = १२८$.

विशेषार्थ—यहां दृष्टांतके स्पष्ट करनेके लिये जो अंकसंहष्टि ली है उसमें जगश्रेणीका द्वितीय वर्गमूल और घनांगुलका प्रमाण एक पड़ जाता है जो १६ है । अतः निरुक्तिका कथन करते हुए जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलतक ऊपर ऊपर वर्गस्थानोंका उत्तरोत्तर गुणा करते जाना चाहिये । इस कथनके अनुसार अंकसंहष्टिमें वहाँ तक (१६ तक) गुणा बढ़ानेसे वह संख्या लब्ध आ जाती है जितने जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूल सामान्य मिथ्यादृष्टि नारक अवहारकालमें पाये जाते हैं ।

विकल्प दो प्रकारका है, अधस्तन विकल्प और उपरिम विकल्प । उनमेंसे यहाँ प्रकृतमें द्विरूपधारामें अधस्तन विकल्प संभव नहीं है, क्योंकि, जगश्रेणीके समान द्विरूप वर्गके प्रथम वर्गमूलको किसी भी भागद्वारासे अपहृत करने पर अवहारकाल नहीं उत्पन्न हो सकता है । यदि जगश्रेणीके समान द्विरूपवर्गका आश्रय करके अवहारकालकी उत्पात्ति कही जावे सो भी कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, विकल्पके अधस्तन और उपरिम विकल्पसे निरुद्ध हो जाने पर मध्यम विकल्प नहीं बन सकता है । यहाँ अष्टरूपमें भी अधस्तन विकल्प नहीं पाया जाता है,

बहुत्तुवलंभादो । अहवा अवहारकालामणमिन्नभागहारेण गिरुद्धरासीदो हेड्डा जं वा तं वा वग्गमूलमोवट्टिय गिरुद्धरासिस्स हेड्डिमवग्गमूलाणि एकवारं गुणिदे जत्थ इच्छिदरासी उप्पज्जदि तत्थ वि हेड्डिमवियप्पो अत्थि च्चि भणंताणमभिप्पाएण अट्टरूवे हेड्डिमवियप्पं वत्तइस्सामो । घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेट्ठिपढमवग्गमूले भागे हिदे तत्थागदलद्वेण सेट्ठिपढमवग्गमूले गुणिदे अवहारकालो होदि । अहवा तेणेव भागहारेण सेट्ठिविदियवग्गमूलमवहारिय तत्थागदेण लद्वेण तं चेव विदियवग्गमूलं गुणेऊण तेण पढमवग्गमूलं गुणिदे अवहारकालो होदि । अहवा घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेट्ठितदियवग्गमूलमवहारिय तत्थ लद्वेण तं चेव तदियवग्गमूलं गुणेऊण तेण विदियवग्गमूलं गुणिय तेण सेट्ठिपढमवग्गमूलं गुणिदे अवहारकालो होदि । अणेण विहाणेण पलिदोवमवग्गसलागाणमसंखेज्जदि-भागमेत्तवग्गट्टाणाणं पुध गिरुंभणं करिय अवहारगुणणकिरियं काऊण अवहारकालो

क्योंकि, विभज्यमान राशि जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूलसे अवहारकालका प्रमाण बहुत अधिक पाया जाता है । अथवा, अवहारकालके लानेके लिये निमित्तभूत भागहारसे निरुद्धराशि जगश्रेणीसे नीचे किसी भी वर्गमूलको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उससे निरुद्धराशिके अधस्तन वर्गमूलोंको एकवार गुणित करने पर जहां पर इच्छित राशि उत्पन्न होती है वहां पर भी अधस्तन विकल्प पाया जाता है, इसप्रकार प्रतिपादन करनेवाले आचार्योंके अभिप्रायसे अष्टरूपमें अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं—

घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर वहां जो प्रमाण लब्ध आवे उससे जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूलके गुणित कर देने पर अवहारकालका प्रमाण होता है ।

उदाहरण— $256 \div 2 = 128$; $256 \times 128 = 32768$ अव.

अथवा, उसी भागहारसे अर्थात् घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलको भाजित करके वहां जो लब्ध आवे उससे उसी जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलको गुणित करके पुनः उस गुणित राशिसे जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूलके गुणित करने पर अवहारकालका प्रमाण आता है ।

उदाहरण— $16 \div 2 = 8$; $16 \times 8 = 128$; $256 \times 128 = 32768$ अव.

अथवा, घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगश्रेणीके तृतीय वर्गमूलको भाजित करके वहां जो लब्ध आवे उससे उसी तृतीय वर्गमूलको गुणित करके पुनः उस गुणित राशिसे जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूलके गुणित करने पर अवहारकालका प्रमाण आता है ।

उदाहरण— $8 \div 2 = 4$; $8 \times 4 = 32$; $16 \times 32 = 512$; $256 \times 512 = 131072$ अव.

इसी विधिसे पल्योपमकी वर्गशलकाओंके असंख्यातवें भागमात्र वर्गस्थानोंको पृथक्-रूपसे रोककर और घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलप्रमाण भागहारसे अंतिम आदि स्थानोंको

साधेयव्वो । तत्थ अंतिमवियप्पं वत्तइस्सामो । घणंगुलविदियवग्गमूलेण घणंगुल-
पढमवग्गमूले भागे हिदे तत्थागदेण तं चेव घणंगुलपढमवग्गमूलं गुणेऊण तेण
गुणिदरासिणा घणंगुलं गुणेऊण एवमुवरि उवरि अवट्ठिदाणि वग्गट्ठणाणि
सेट्ठिपढमवग्गमूलपच्छिमाणि णिरंतरं गुणेयव्वाणि । एवं गुणिदे णेरइयमिच्छाइट्ठि-
अवहारकालो होदि । एस अत्थो जदि वि पुवं परूविदो तो वि हेट्ठिमवियप्पसंबंधेण
मंदबुद्धिसिस्साणुग्गहट्ठं पुणरवि परूविदो ।

घणाघणे वत्तइस्सामो । घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेट्ठिपढमवग्गमूलं गुणेऊण
घणलोगपढमवग्गमूले भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि । तं कथं ? सेट्ठिपढमवग्ग-
मूलेण घणलोगपढमवग्गमूले भागे हिदे सेठी आगच्छदि । पुणो घणंगुलविदियवग्गमूलेण
सेट्ठि भागे हिदे अवहारकालो होदि । एवमागच्छदि त्ति कट्ठु गुणेऊण भागग्गहणं कदं ।
अहवा एत्थ दुगुणादिकमेण अवहारकालो साहेयव्वो । अहवा घणंगुलविदियवग्गमूलेण
सेट्ठिपढमवग्गमूलं गुणेऊण तेण घणलोगविदियवग्गमूलमवहारिय तं चेव गुणिदे अवहार-

भाजित करके जो लब्ध आवे उससे जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूलपर्यंत गुणनक्रिया करके
अवहारकाल साध लेना चाहिये । उनमेंसे अंतिम विकल्पको बतलाते हैं—

घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे घनांगुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर वहां
आये हुए लब्धसे उसी घनांगुलके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो गुणित राशि आवे उससे
घनांगुलको गुणित करके पुनः जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूलपर्यंत ऊपर उपर स्थित वर्गस्थानोंको
निरन्तर गुणित करना चाहिये । इसप्रकार पूर्व पूर्व गुणित राशिसे उत्तरोत्तर वर्गस्थानके गुणित
करते जाने पर नारक मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकालका प्रमाण आता है । इस अर्थका
प्ररूपण यद्यपि पहले कर आये हैं तो भी मन्दबुद्धि शिष्योंके अनुग्रहके लिये अधस्तन विकल्पके
संबन्धसे इसका फिरसे प्ररूपण किया है ।

अब घनाघनमें अधस्तन विकल्प बतलाते हैं— घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जग-
श्रेणीके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनलोकके प्रथम वर्गमूलके
भाजित करने पर अवहारकालका प्रमाण आता है, क्योंकि, जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूलसे घन-
लोकके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर जगश्रेणीका प्रमाण आता है, पुनः घनांगुलके द्वितीय
वर्गमूलसे जगश्रेणीके भाजित करने पर अवहारकालका प्रमाण आता है । इसप्रकार अवहार-
कालका प्रमाण आता है ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया ।

उदाहरण—घनलोकका प्रथम वर्गमूल २५६^३, २५६ × २ = ५१२, $\frac{२५६^३}{५१२} = ३२७६८$ अव.

अथवा, यहां पर द्विगुणादि क्रमसे अवहारकाल साध लेना चाहिये । अथवा,
घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे
घनलोकके द्वितीय वर्गमूलको अपहृत करके जो लब्ध आवे उससे उसी घनलोकके द्वितीय

कालो होदि । एवं हेट्टा वि जाणिऊण वत्तव्वं । हेट्टिमवियप्पो गदो ।

उपरिमवियप्पो तिविहो, गहिदो गहिदगहिदो गहिदगुणगारो चेदि । तत्थ गहिदं वत्तइस्सामो । घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेट्टिसमाणवेरूववग्गं गुणेऊण तेण तच्चवग्गवग्गे भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि । तं कथं ? सेट्टिसमाणवेरूववग्गेण तच्चवग्गवग्गे भागे हिदे सेट्टी आगच्छदि । पुणो वि घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेट्टिम्मिह भागे हिदे अवहारकालो होदि । एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । अहवा अवहार-कालो विगुणादिकमेण वड्डावेयव्वो । तस्स भागहारस्स अद्वच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्वच्छेदणए कदे अवहारकालो आगच्छदि । तस्सद्वच्छेदणयसलागा केत्तिया ? घणं-गुलविदियवग्गमूलस्स अद्वच्छेदणयसहियसेट्टिसमाणवेरूववग्गस्स अद्वच्छेदणयमेत्ता ।

वर्गमूलको गुणित करने पर अवहारकालका प्रमाण आता है । इसीप्रकार नीचेके स्थानोंमें भी जानकर कथन करना चाहिये । इसप्रकार अधस्तन विकल्प समाप्त हुआ ।

उदाहरण—घनलोकका द्वितीय वर्गमूल $१६^३$; $२५६ \times २ = ५१२$; $१६^३ \div ५१२ = ८$;
 $१६^३ \times ८ = ३२७६८$ अव.

उपरिम विकल्प तीन प्रकारका है, गृहीत, गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकार । उनमेंसे पहले गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगश्रेणीके समान द्विरूपवर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका उसी जगश्रेणीके समान द्विरूपवर्गके वर्गमें भाग देने पर अवहारकालका प्रमाण आता है, क्योंकि, जगश्रेणीके समान द्विरूपवर्गका उसीके उपरिम वर्गमें भाग देने पर जगश्रेणीका प्रमाण आता है, पुनः घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलका जगश्रेणीमें भाग देने पर अवहारकालका प्रमाण आता है । अवहारकालका प्रमाण इसप्रकार आता है ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया । अथवा, द्विगुणादि-करण विधिसे अवहारकाल बढ़ा लेना चाहिये ।

उदाहरण— $६५५३६ \times २ = १३१०७२$; $६५५३६^३ \div १३१०७२ = ३२७६८$ अव.

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी अवहारकालका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके $१६ + १ = १७$ अर्धच्छेद होते हैं, अतः इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी अवहारकालका प्रमाण आता है ।

शंका—उक्त भागहारकी अर्धच्छेद शलाकाएं कितनी होती हैं ?

समाधान—जगश्रेणीके समान द्विरूपवर्गकी अर्धच्छेद शलाकाओंमें घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलकी अर्धच्छेद शलाकाएं मिला देने पर उक्त भागहारकी अर्धच्छेद शलाकाओंका प्रमाण होता है ।

उदाहरण—जगश्रेणी समान द्विरूपवर्ग ६५५३६ के अर्धच्छेद १६ घनांगुलके द्वितीय वर्गमूल २ के अर्धच्छेद १ ; $१६ + १ = १७$ अ. ।

उवरि सच्चत्थ चडिदद्धानवग्गसलागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णभत्थरासिणा तिरूवूणेण सेटिसमाणवेरूववग्गस्स अद्रच्छेदणए गुणिय घणंगुलविदियवग्गमूलस्स अद्रच्छेदणयपक्खित्तमेत्ता भवंति । एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु वग्गट्ठाणेषु णेयव्वं । वेरूवपरूवणा गदा । अट्ठरूवे वत्तइस्सामो । घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेटिम्हि भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्रच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्रच्छेदणए कदे वि अवहारकालो आगच्छदि । अहवा घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेटिं गुणेऊण जगपदरे भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि । केण कारणेण ? जगसेट्ठीए जगपदरे भागे हिदे सेट्ठी आगच्छदि । पुणो वि घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेटिम्हि भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्ठु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । अहवा अवहारकालो विउणादिकरणेण वड्ढावेयव्वो । तस्स भागहारस्स अद्रच्छेदणयमेत्ते रासिस्स

ऊपर सर्वत्र जितने वर्गस्थान ऊपर जावें उनकी वर्गशलाकाओंका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दोरूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसमेंसे तीन कम करके शेष रही हुई राशिसे जगश्रेणीके समान द्विरूप वर्गकी अर्धच्छेद शलाकाओंको गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलके अर्धच्छेद मिला देने पर जो जोड़ हो उतने विवक्षित भागहारके अर्धच्छेद होते हैं । इसीप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्त वर्गस्थानोंमें ले जाना चाहिये । इसप्रकार द्विरूप प्ररूपणा समाप्त हुई ।

अब अष्टरूपमें बतलाते हैं—घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगश्रेणीके भाजित करने पर अवहारकालका प्रमाण आता है ।

उदाहरण— $६५५३६ \div २ = ३२७६८$ अब.

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी अवहारकालका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—उक्त भागहारका १ अर्धच्छेद है, अतः इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी ३२७६८ प्रमाण अवहारकाल आता है ।

अथवा, घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगश्रेणीको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका जगप्रतरमें भाग देने पर अवहारकालका प्रमाण आता है, क्योंकि, जगश्रेणीसे जगप्रतरके भाजित करने पर जगश्रेणीका प्रमाण आता है, पुनः घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगश्रेणीके भाजित करने पर अवहारकालका प्रमाण आता है । इसप्रकार अवहारकालका प्रमाण आता है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया । अथवा द्विगुणादिकरण विधिसे अवहारकाल बड़ा लेना चाहिये ।

उदाहरण— $६५५३६ \times २ = १३१०७२$; $४२९४९६७२९६ \div १३१०७२ = ३२७६८$ अब.

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी अवहारकालका प्रमाण आता है ।

अद्वच्छेदणए कदे वि अवहारकालो आगच्छदि । एत्थ चडिदद्वाणसलागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णमत्थरासिणा रूवूणेण जगसेट्ठिअद्वच्छेदणए गुणिय घणंगुलविदियवग्गमूलस्स अद्वच्छेदणए पक्खित्ते भागहारस्स अद्वच्छेदणया हवंति । एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु वग्गट्ठाणेषु णेयव्वं । अट्टरूवपरूवणा गदा । घणाघणे वत्तइस्सामो । घणंगुलविदियवग्गमूलेण जगपदरं गुणेऊण घणलोगे भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि । केण कारणेण ? जगपदरेण घणलोगे भागे हिदे सेट्ठी आगच्छदि । पुणो घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेट्ठिम्हि भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । अहवा घणंगुलविदियवग्गमूलेण जगपदरं गुणेऊण तेण घणलोगं गुणेऊण घणलोगउपरिमवग्गे भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि । केण कारणेण ? घणलोगेण तस्सुपरिमवग्गे भागे हिदे घणलोगो आगच्छदि । पुणो वि जगपदरेण घणलोगे भागे हिदे सेट्ठी आगच्छदि । पुणो घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेट्ठिम्हि

उदाहरण—उक्त भागहारके $१६ + १ = १७$ अर्धच्छेद होते हैं, अतः इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर ३२७६८ प्रमाण अवहारकालराशि आती है ।

यहां पर जितने स्थान ऊपर गये हों उतनी शलाकाओंका विरलन करके और उस राशिके प्रत्येक एकको दो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसमेंसे एक कम करके शेष राशिसे जगश्रेणीके अर्धच्छेदोंको गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलके अर्धच्छेदोंको मिला देने पर विवक्षित भागहारके अर्धच्छेदोंका प्रमाण होता है । इसीप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्त वर्गस्थानोंमें ले जाना चाहिये । इसप्रकार अष्टरूप प्ररूपणा समाप्त हुई ।

अब घनाघनमें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगप्रतरको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनलोकके भाजित करने पर अवहारकालका प्रमाण आता है, क्योंकि, जगप्रतरसे घनलोकके भाजित करने पर जगश्रेणीका प्रमाण आता है, पुनः घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगश्रेणीके भाजित करने पर अवहारकालका प्रमाण आता है । इसप्रकार अवहारकाल आता है ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया ।

उदाहरण— $६५५३६^३ \times २ = ८५८९९३४५९२$; $६५५३६^३ \div ८५८९९३४५९२ = ३२७६८$ अच.

अथवा, घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगप्रतरको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनलोकको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका घनलोकके उपरिम वर्गमें भाग देने पर अवहारकालका प्रमाण आता है, क्योंकि, घनलोकका उसके उपरिम वर्गमें भाग देने पर घनलोक आता है, पुनः जगप्रतरका घनलोकमें भाग देने पर जगश्रेणी आती है, पुनः घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलका जगश्रेणीमें भाग देने पर अवहारकालका प्रमाण आता है । इसप्रकार

भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । तस्स भागहारस्स अद्वच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्वच्छेदणए कदे वि अवहारकालो आगच्छदि । एत्थ भागहारस्स अद्वच्छेदणयसलागाणमाणयणविही बुच्चदे- चडिदद्धानवग्गसलागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णभत्थरासिणा तिगुणरूवूणेण सेट्ठिअद्वच्छेदणए गुणिय घणंगुलविदियवग्गमूलस्स अद्वच्छेदणए पक्खित्ते भागहारस्स अद्वच्छेदणया हवंति । एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं । गहिदपरूवणा गदा । सेट्ठिसमाणवेरूववग्गवग्गस्स असंखेज्जदिभागेण सेट्ठीए असंखेज्जदिभागेण घणलोगपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागेण अवहारकालेण गहिदगहिदो गहिदगुणगारो च वत्तव्वो । एवमवहारकालपरूवणा समत्ता ।

एदेण अवहारकालेण जगपदेर भागे हिदे णेरइयमिच्छाइट्टिरासी आगच्छदि ।

अवहारकालका प्रमाण आता है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{६५५३६}{६५५३६ \times ६५५३६ \times २} = ३२७६८ \text{ अव.}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी अवहारकालका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके ८१ अर्धच्छेद होते हैं अतः इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी ३२७६८ प्रमाण अवहारकालका प्रमाण आता है ।

अब यहाँ भागहारकी अर्धच्छेद शलाकाओंके लानेकी विधि कहते हैं— जितने स्थान ऊपर गये हों उतनी वर्गशलाकाओंका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दोरूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसे तीनसे गुणा करके लब्ध राशिमेंसे एक कम करके जो शेष रहे उसे जगश्रेणीके अर्धच्छेदोंसे गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलके अर्धच्छेद मिला देने पर विवक्षित अवहारकालके अर्धच्छेद होते हैं । इसीप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्त स्थानोंमें लगा लेना चाहिये । इसप्रकार गृहीतप्ररूपणा समाप्त हुई ।

$$\text{उदाहरण—एक स्थान ऊपर गये इसलिये } २ = २ \times ३ = ६ - १ = ५ \times १६ = ८० + १ \\ = ८१ \text{ अर्ध. ।}$$

जगश्रेणीके समान द्विरूपवर्गका जो उपरिम वर्ग हो उसके असंख्यातवें भागरूप, अगश्रेणीके असंख्यातवें भागरूप और घनलोकके प्रथम वर्गमूलके असंख्यातवें भागरूप अवहारकालके द्वारा गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकारका कथन करना चाहिये । इसप्रकार अवहारकाल प्ररूपणा समाप्त हुई ।

इस अवहारकालसे जगप्रतरके भाजित करने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रामाण आता है (४२९४९.६७२९६ ÷ ३२७६८ = १३१०७२) । यहाँ पर खण्डित, भाजित,

एत्थ खंडिद-भाजिद-विरलिद-अवहिदपरूवणाओ पुव्वं व परूवेदव्वाओ । तत्थ पमाणं वत्तइस्सामो । तं जधा— जगपदरस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाओ सेठीओ । पमाणं गदं । केण कारणेण ? सेठीए जगपदरे भागे हिदे सेठी आगच्छदि । सेठिदुभागेण जगपदरे भागे हिदे दोण्णि सेठीओ आगच्छंति । सेठितिभागेण जगपदरे भागे हिदे तिण्णि सेठीओ आगच्छंति । एवं गंतूण विक्खंभसूचीभजिदसेठीए जगपदरे भागे हिदे असंखेज्जाओ सेठीओ आगच्छंति त्ति वुत्तं । कारणं गदं । गिरुत्ति वत्तइस्सामो । सेठीए असंखेज्जदिभागेण सेठिमिह भागे हिदे तत्थागदाणि जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाओ सेठीओ । अहवा विक्खंभसूईरूवमेत्ताओ । गिरुत्ती गदा ।

वियप्पो दुविहो, हेट्ठिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि । तत्थ हेट्ठिमवियप्पं वत्तइस्सामो । वेरूवे हेट्ठिमवियप्पो णत्थि । कारणं पुव्वं व वत्तव्वं । अट्ठरूवे हेट्ठिमवियप्पं

विरलित और अपहतकी प्ररूपणा पहलेके समान करना चाहिये (देखो पृष्ठ ४१, ४२) । अब नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण बतलाते हैं । वह इसप्रकार है—

नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण जगप्रतरके असंख्यातवें भाग है जो असंख्यात जगश्रेणीप्रमाण है । इसप्रकार प्रमाणका वर्णन समाप्त हुआ ।

उदाहरण— $४२९४२६७२९६ \div ३२७६८ = १३१०७२ =$ असंख्यातरूप २ जगश्रेणियोंके ।

शंका—नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण जो जगप्रतरके असंख्यातवें भाग कहा है वह असंख्यात जगश्रेणीप्रमाण किस कारणसे है ?

समाधान—जगश्रेणीसे जगप्रतरके भाजित करने पर जगश्रेणी आती है ($४२९४२६७२९६ \div ६५५३६ = ६५५३६$) जगश्रेणीके द्वितीय भागसे जगप्रतरके भाजित करने पर दो जगश्रेणियां आती हैं ($४२९४२६७२९६ \div ३२७६८ = १३१०७२$) । जगश्रेणीके तीसरे भागसे जगप्रतरके भाजित करने पर तीन जगश्रेणियां आती हैं ($४२९४२६७२९६ \div २१८४५६ = १९६६०८$) । इसप्रकार उत्तरोत्तर जाकर विष्कंभसूचीसे भाजित जगश्रेणीका जगप्रतरमें भाग देने पर असंख्यात जगश्रेणियां लब्ध आती हैं, ऐसा कहा है । इसप्रकार कारणका वर्णन समाप्त हुआ ।

उदाहरण— $६५५३६ \div २ = ३२७६८$; $४२९४२६७२९६ \div ३२७६८ = १३१०७२$ बराबर असंख्यात जगश्रेणियोंके ।

अब निरुक्तिका कथन करते हैं—जगश्रेणीके असंख्यातवें भागसे जगश्रेणीके भाजित करने पर वहां जो प्रमाण लब्ध आवे उतनी जगश्रेणियां जगप्रतरके असंख्यातवें भागमें ली हैं । अथवा, विष्कंभसूचीका जितना प्रमाण है उतनी जगश्रेणियां जगप्रतरके असंख्यातवें भागमें ली हैं । इसप्रकार निरुक्तिका कथन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—जगश्रेणीका असंख्यातवां भाग ३२७६८ ; $६५५३६ \div ३२७६८ = २$ जगश्रेणियां । अथवा, विष्कंभसूची २, अतएव विष्कंभसूची २ प्रमाण जगश्रेणियां ।

विकल्प दो प्रकारका है, अधस्तन विकल्प और उपरिम विकल्प । उनमेंसे पहले

वत्तइस्सामो । सेठीए असंखेज्जदिभागभूदअवहारकालेण सेठिमिह भागे हिदे तत्थागदेण सेठिमिह गुणिदे मिच्छाइट्टिरासी होदि । अधवा विक्खंभस्सूचीरूवेहि सेठिमिह गुणिदे मिच्छाइट्टिरासी होदि । अहवा अवहारकालेण सेठिविदियवग्गमूलमवहरिय लद्धेण तं चेव गुणिदे तेण सेठिपढमवग्गमूलं गुणेऊण तेण सेठिमिह गुणिदे वि मिच्छाइट्टिरासी आगच्छदि । अहवा अवहारकालेण सेठितदियवग्गमूलमवहरिय लद्धेण तं चेव गुणिय तेण सेठिविदियवग्गमूलं गुणिय तेण पढमवग्गमूलं गुणिय तेण गुणिदरासिणा सेठिमिह गुणिदे मिच्छाइट्टिरासी होदि । एवं हेठा वि जाणिऊण वत्तव्वं । घणाघणे वत्तइस्सामो ।

अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं— प्रकृतमें द्विरूपधारामें अधस्तन विकल्प संभव नहीं है । यहां कारणका कथन पहलेके समान कहना चाहिये ।

विशेषार्थ— यदि जगश्रेणीके किसी भी वर्गमूलमें अवहारकालका भाग दिया जाता है तो नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि उत्पन्न नहीं हो सकती है, इसलिये यहां द्विरूपधारामें अधस्तन विकल्प संभव नहीं है यह कहा ।

अब अष्टरूपमें अधस्तन विकल्प बतलाते हैं— जगश्रेणीके असंख्यातवें भागभूत अवहारकालसे जगश्रेणीके भाजित करने पर वहां जितना प्रमाण आवे उससे जगश्रेणीके गुणित करने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण— $६५५३६ \div ३२७६८ = २$; $६५५३६ \times २ = १३१०७२$ ।

अथवा, विक्खंभस्सूचीके प्रमाणसे जगश्रेणीके गुणित करने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण— $६५५३६ \times २ = १३१०७२$ ।

अथवा, अवहारकालके प्रमाणसे जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलको भाजित करके जो लब्ध आवे उससे उसी द्वितीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे जगश्रेणीके गुणित करने पर भी नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण— $१६ \div ३२७६८ = \frac{१}{२०४८}$; $१६ \times \frac{१}{२०४८} = \frac{१}{१२८}$; $२५६ \times \frac{१}{१२८} = २$;

$६५५३६ \times २ = १३१०७२$ ।

अथवा, अवहारकालके प्रमाणसे जगश्रेणीके तीसरे वर्गमूलको भाजित करके जो लब्ध आवे उससे उसी तृतीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे जगश्रेणीके गुणित करने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है । इसप्रकार नीचे भी जानकर कथन करना चाहिये ।

उदाहरण— $४ \div ३२७६८ = \frac{१}{८१९२}$; $४ \times \frac{१}{८१९२} = \frac{१}{२०४८}$; $१६ \times \frac{१}{२०४८} = \frac{१}{१२८}$;

सेढीए असंखेअदिभागेण अवहारकालेण सेढि गुणेऊण तेण घणलोगे भागे हिदे मिच्छा-
इट्टिरासी आगच्छदि । तं कथं ? सेढिणा घणलोगे भागे हिदे जगपदरमागच्छदि । पुणो
वि भागहारेण जगपदरे भागे हिदे मिच्छाइट्टिरासी आगच्छदि । अहवा अवहारकालेण
सेढि गुणेऊण घणलोगपढमवग्गमूलमवहरिय तेण तं चेव गुणिदे मिच्छाइट्टिरासी होदि ।
एवं हेट्टा जाणिऊण वत्तव्वं । हेट्टिमवियप्पो गदो ।

उपरिमवियप्पो तिविहो, गहिदो गहिदगहिदो गहिदगुणगारो चेदि । तत्थ गहिदं
वत्तहस्तामो । णेरइयमिच्छाइट्टिरासिअवहारकालेण जगपदरसमाणवेरूववग्गं गुणेऊण तेण
तव्वग्गवग्गे भागे हिदे मिच्छाइट्टिरासी आगच्छदि । तं कथं ? जगपदरसमाणवेरूव-
वग्गेण तव्वग्गवग्गे भागे हिदे जगपदरमागच्छदि । पुणो वि अवहारकालेण जगपदरे

$$२५६ \times \frac{१}{३२८} = २, ६५५३६ \times २ = १३१०७२ \text{ सा. ना. मि.}$$

अथ घनाघनमें अधस्तन विकल्प बतलाते हैं— जगश्रेणीके असंख्यातवें भागरूप
अवहारकालसे जगश्रेणीको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनलोकके भाजित करने पर
नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है, क्योंकि, जगश्रेणीसे घनलोकके भाजित करने पर
जगप्रतर आता है । पुनः भागहारसे जगप्रतरके भाजित करने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीव-
राशि आती है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{६५५३६^३}{६५५३६ \times ३२७६८} = १३१०७२ \text{ सा. ना. मि.}$$

अथवा, अवहारकालसे जगश्रेणीको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनलोकके
प्रथम वर्गमूलको अपहत करके जो प्रमाण आवे उससे उसी घनलोकके प्रथम वर्गमूलको
गुणित करने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है । इसीप्रकार नीचेके स्थानोंमें जानकर
कथन करना चाहिये । इसप्रकार अधस्तन विकल्प समाप्त हुआ ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{२५६^३}{६५५३६ \times ३२७६८} = १२८, २५६^३ \times १२८ = १३१०७२ \text{ सा. ना. मि.}$$

उपरिम विकल्प तीन प्रकारका है, गृहीत, गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकार । उनमेंसे
पहले गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिसंबन्धी अवहार-
कालसे जगप्रतरके समान द्विरूपवर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे उस द्विरूपवर्गके
वर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है, क्योंकि, जगप्रतरके समान द्विरूपवर्गका
उसके वर्गमें भाग देने पर जगप्रतरका प्रमाण आता है, पुनः अवहारकालका जगप्रतरमें
भाग देने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{४२९४९६७२९६^३}{४२९४९६७२९६ \times ३२७६८} = १३१०७२ \text{ सा. ना. मि.}$$

भागो हिदे मिच्छाइद्विरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि मिच्छाइद्विरासी आगच्छदि । एदस्स अद्धच्छेदणया केत्तिया ? अवहारद्धच्छेदणयसहिदजगपदरसमाणवेरूववग्गच्छेदणयमेत्ता । उवरि अद्धच्छेदणयमेलावणविहाणं जाणिऊण वत्तव्वं । वेरूवपरूवणा गदा । अद्धरूवे वत्तइस्सामो । अवहारकालेण जगपदरे भागे हिदे मिच्छाइद्विरासी आगच्छदि । घणंगुलविदियवग्गमूलद्धच्छेदणएहि ऊणसेदिअद्धच्छेदणयमेत्ते जगपदरस्स अद्धच्छेदणए कदे वि मिच्छाइद्विरासी आगच्छदि । अहवा अवहारकालेण जगपदरं गुणेऊण तेण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाइद्विरासी आगच्छदि । तं जहा— जगपदरेण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे जगपदरमागच्छदि । पुणो वि अवहारकालेण जगपदरे भागे हिदे मिच्छाइद्विरासी आगच्छदि । एदस्स भागहारस्स

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके ४७ अर्धच्छेद हैं, अतः इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर १३१०७२ प्रमाण नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

शंका—उक्त भागहारके अर्धच्छेद कितने हैं ?

समाधान—जगप्रतरके समान द्विरूपवर्गके जितने अर्धच्छेद हों उनमें अवहारकालके अर्धच्छेद मिला देने पर उक्त भागहारके अर्धच्छेदोंका प्रमाण होता है ।

उदाहरण—जगप्रतरसमान द्विरूपवर्ग ४२९४९६७२९६ के अर्धच्छेद ३२, ३२७६८ के १५; अतएव ३२ + १५ = ४७ अ. ।

ऊपरके स्थानोंमें भी अर्धच्छेदोंके मिलानेकी विधि जानकर कहना चाहिये । इसप्रकार द्विरूपप्ररूपणा समाप्त हुई ।

अब अष्टरूपमें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—अवहारकालसे जगप्रतरके भाजित करने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण— $४२९४९६७२९६ \div ३२७६८ = १३१०७२$ सा. ना. मि.

अथवा, घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलके अर्धच्छेदोंको जगश्रेणीके अर्धच्छेदोंमेंसे कम करके जो प्रमाण शेष रहे उतनीवार जगप्रतरके अर्धच्छेद करने पर भी नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—६५५३६ प्रमाण जगश्रेणीके अर्धच्छेद १६ मेंसे घनांगुलके द्वितीय वर्गमूल २ के अर्धच्छेद १ कम करने पर १५ शेष रहते हैं, अतः १५ वार ४२९४९६७२९६ प्रमाण जगप्रतरके अर्धच्छेद करने पर १३१०७२ प्रमाण नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

अथवा, अवहारकालसे जगप्रतरको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका जगप्रतरके उपरिम वर्गमें भाग देने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है । उसका स्पर्शीकरण इसप्रकार है—जगप्रतरका उसके उपरिम वर्गमें भाग देने पर जगप्रतर आता है । पुनः

अद्वच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्वच्छेदणए कदे वि मिच्छाइट्टिरासी आगच्छदि । एत्थ अद्व-
च्छेदणयमेलावणविहाणं पुव्वं व वत्तव्वं । एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं । अहरूव-
परूवणा गदा । घणाघणे वत्तइस्सामो । अवहारकालगुणिदजगपदरउवरिमवग्गेण घण-
लोगउवरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाइट्टिरासी आगच्छदि । केण कारणेण ? जगपदर-
उवरिमवग्गेण घणलोगुवरिमवग्गे भागे हिदे जगपदरमागच्छदि । पुणो वि अवहारकालेण
जगपदरे भागे हिदे मिच्छाइट्टिरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्वच्छेदणयमेत्ते
रासिस्स अद्वच्छेदणए कदे वि मिच्छाइट्टिरासी आगच्छदि । एत्थ अद्वच्छेदणयमेलावण-
विहाणं पुव्वं व वत्तव्वं । एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं । गहिदपरूवणा गदा ।

अवहारकालका जगप्रतरमें भाग देने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{४२९४९६७२९६}{४२९४९६७२९६ \times ३२७६८} = १३१०७२ \text{ सा. ना. मि.}$$

इस भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके ३२ + १५ = ४७ अर्धच्छेद हैं, अतः इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर १३१०७२ प्रमाण नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

यहां पर अर्धच्छेदोंके मिलानेकी विधिका पहलेके समान कथन करना चाहिये । इसीप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्त स्थानोंमें ले जाना चाहिये । इसप्रकार अष्टरूप प्ररूपणा समाप्त हुई ।

अब घनाघनमें गृहीत उपरिम विकल्प बतलाते हैं—जगप्रतरके उपरिम वर्गको अवहारकालसे गुणित करके जो लब्ध आवे उसका घनलोकके उपरिम वर्गमें भाग देने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है, क्योंकि, जगप्रतरके उपरिम वर्गका घनलोकके उपरिम वर्गमें भाग देने पर जगप्रतरका प्रमाण आता है । पुनः अवहारकालका जगप्रतरमें भाग देने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{६५५३६}{४२९४९६७२९६ \times ३२७६८} = १३१०७२ \text{ सा. ना. मि.}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके ७९ अर्धच्छेद होते हैं, अतः इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर १३१०७२ प्रमाण नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

यहां पर अर्धच्छेदोंके मिलानेकी विधिका पहलेके समान कथन करना चाहिये । इसीप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्तस्थानोंमें भी ले जाना चाहिये । इसप्रकार गृहीत उपरिम विकल्प प्ररूपणा समाप्त हुई ।

जगपदरसमाणवरूववग्गवग्गस्स असंखेज्जदिभागेण जगपदरस्स असंखेज्जदिभागेण
घणलोगस्स असंखेज्जदिभागेण च णेरइयमिच्छाइट्टिरासिणा गहिदगहिदो गहिदगुणगारो
च वत्तव्वो । मिच्छाइट्टिरासिपरूवणा समत्ता ।

सासणसम्माइट्टिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्टि ति दव्वपमाणेण
केवडिया, ओघं ॥ १८ ॥

ओघम्मि वुत्ततिण्णिगुणट्टाणरासी सव्वा वि णेरइयाणं तिण्णिगुणट्टाणरासि-
मेत्ता चेव होदि ति वुत्ते सेसगदीसु तिण्हं गुणट्टाणाणमभावो पसज्जदे ? ण एस दोसो,
णेरइयाणं तिण्हं गुणट्टाणाणं पमाणस्स ओघतिगुणट्टाणपमाणेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि-
भागत्तं पडि विसेसाभावादो एयत्ताविरोहा । पज्जवट्टियणए पुण अवलंबिज्जमाणे भेदो
दोण्हमत्थि चेव, सेसतिगदितिण्हं गुणट्टाणाणं पमाणपरूवणाणमुवरि उच्चमाणसुत्ताणं

जगप्रतरके समान द्विरूपवर्गका जितना उपरिम वर्ग हो उसके असंख्यातवें भागरूप,
जगप्रतरके असंख्यातवें भागरूप और घनलोकके असंख्यातवें भागरूप नारक मिथ्यादृष्टि
जीवराशिके द्वारा गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकारका कथन करना चाहिये ।

इसप्रकार मिथ्यादृष्टिराशिकी प्ररूपणा समाप्त हुई ।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान तक प्रत्येक
गुणस्थानमें नारकी जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? गुणस्थान प्ररूपणाके
समान हैं ॥ १८ ॥

शंका — गुणस्थानोंमें कही गई तीन गुणस्थानसंबन्धी जीवराशि संपूर्ण नारकियोंके
तीन गुणस्थानसंबन्धी जीवराशिके बराबर ही होती है, ऐसा कहने पर शेष तीन गतियोंमें
तीनों गुणस्थानोंका अभाव प्राप्त होता है ?

समाधान — यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, नारकियोंके तीन गुणस्थानसंबन्धी
जीवराशिके प्रमाणकी सामान्यसे कही गई तीन गुणस्थानसंबन्धी जीवराशिके प्रमाणके साथ
पत्न्योपमके असंख्यातवें भागत्वके प्रति कोई विशेषता नहीं है, इसलिये इन दोनोंको समान
मान लेनेमें कोई विरोध नहीं आता है । परंतु पर्यायार्थिक नयका अवलंबन करने पर दोनोंमें
भेद है ही । यदि ऐसा न माना जाय तो शेषकी तीन गतिसंबन्धी सासादनादि तीन गुणस्थानोंकी
जीवराशिके प्रमाणके प्ररूपण करनेके लिये कहे गये सूत्रोंकी सफलता नहीं बन सकती है । अब

१ सर्वाहं पृथिवीसु सासादनसम्यग्दृष्टयः सम्यग्द्विमप्यादृष्टयोऽसंयतसम्यग्दृष्टयश्च पत्न्योपमासंख्येयभाग
श्रमिताः । स. सि. १, ८.

सफलत्तण्णहाणुववत्तीदो । तस्स भेदस्स परूवणं सासणसम्माइड्डिआदिगुणपडिवण्णायं
अवहारकाले वत्तइस्सामो । तं जहा—

ओघअसंजदसम्माइड्डिअवहारकालं विरलेऊण पलिदोवमं समखंडं करिय दिण्णे
एकेकस्स रूवस्स असंजदसम्माइड्डिद्ववपमाणं पावेदि । देवगइं मोत्तूण सेसतिगदि-
असंजदसम्माइड्डिरासी सामणअसंजदसम्माइड्डिरासिस्स असंखेज्जदिभागो । तस्स को
पडिभागो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । ओघअसंजदसम्माइड्डिरासिस्स असंखेज्जा
भागा देवाणमसंजदसम्माइड्डिरासी होदि । कुदो ? देवेसु बहणं सम्मत्तुप्पत्तिकारणाण-
मुवलंभादो । देवाणं सम्मत्तुप्पत्तिकारणाणि काणि चे ? जिणबिंबिड्डिमहिमादंसण-जाइ-
स्सरण-महिड्डिदादिदंसण-जिणपायमूलधम्मसवणादीणि । तिरिक्खणेरइया पुण गरुवपाव-

उक्त भेदके प्ररूपण करनेके लिये सासादनसम्यग्दृष्टि आदि गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंका प्रमाण
लानेके लिये अवहारकालोंको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है—

सामान्यसे कहे गये असंयतसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकालको विरलित करके और
उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर पल्योपमको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर
प्रत्येक एकके प्रति असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है ।

उदाहरण— १६३८४ १६३८४ १६३८४ १६३८४ एक विरलनके प्रति प्राप्त असं-
१ १ १ १ यतसम्यग्दृष्टि जीवराशि ।

इसमें देवगतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिको छोड़कर शेष तीन गतिसंबन्धी
असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि सामान्य असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिके असंख्यातवें भाग-
प्रमाण है ।

शंका— शेष तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण पल्योपमके
असंख्यातवें भागरूप लानेके लिये प्रतिभागका प्रमाण क्या है ?

समाधान—आवलीका असंख्यातवां भाग प्रतिभागका प्रमाण है ।

सामान्यसे कही गई असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिका असंख्यात बहुभागप्रमाण
देवोंसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है, क्योंकि, देवोंमें सम्यक्त्वकी उत्पत्तिके बहुतसे
कारण पाये जाते हैं ।

शंका— देवोंमें सम्यक्त्वकी उत्पत्तिके कारण कौनसे हैं ?

समाधान— जिनबिम्बसंबन्धी अतिशयके माहात्म्यका दर्शन, जातिस्मरणका होना,
महार्थिक इन्द्रादिकका दर्शन और जिनदेवके पादमूलमें धर्मका श्रवण आदि देवोंमें सम्यक्त्वोत्पत्तिके
कारण हैं । परंतु तिर्यच और नारकी गुरुतर पापोंके भारसे नथे और बंधे होनेसे, अतिशय

१ देवानां केषांचिज्जातिस्मरणं, केषांचिद्धर्मश्रवणं, केषांचिज्जिनमहिमदर्शनं, केषांचिदेवधिदर्शनम् । स. सि. १, ७.

भारेण णत्थणद्धत्तादो संकिलिद्धत्तादो' मंदबुद्धित्तादो बहूणं सम्मत्तुप्पत्तिकारणाणमभावादो च सम्माइद्धिणो थोवा हवंति । तदो तिगदिअसंजदसम्माइद्धिरासिणा उवरिमैगरूवधरिदं ओघासंजदसम्माइद्धिदव्वमवहरिय तत्थागदमावलियाए असंखेज्जदिभागं विरलेऊण ओघा-संजदसम्माइद्धिदव्वं समखंडं करिय दिण्णे हेद्धिमविरलणरूवं पडि सेसतिगदिअसंजद-सम्माइद्धिरासिपमाणं पावदि । तप्पमाणं उवरिमविरलणाए उवरिमरूवं पडि द्धिदओघा-संजदसम्माइद्धिदव्वमिह अवणेयव्वं । एवमवणिदे उवरिमविरलणमेत्ता चेव देवअसंजद-सम्माइद्धिरासीओ तिगदिअसंजदसम्माइद्धिरासीओ च भवंति । पुगो उवरिमविरलणमेत्त-तिगदिअसंजदसम्माइद्धिरासिं देवअसंजदसम्माइद्धिरासिपमाणेण कस्सामो । तं जहा —

रूवूणहेद्धिमविरलणमेत्तेसु तिगदिअसंजदसम्माइद्धिदव्वेसु उवरिमविरलणमिह द्धिदेसु समुदिदेसु एगं देवअसंजदसम्माइद्धिरासिपमाणं लब्भदि, अवहारकालमिह एगा संकिलिष्ट परिणामी होनेसे, मन्दबुद्धि होनेसे और उनमें सम्यक्त्वकी उत्पत्तिके बहुतसे कारणोंका अभाव होनेसे सम्यग्दृष्टि थोड़े होते हैं ।

तदनन्तर उपरिम विरलनके एकके प्रति रक्खी हुई सामान्य असंयतसम्यग्दृष्टि जीव-राशिको तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिसे भाजित करके वहां जो आवलीका असंख्यातवां भाग लब्ध आवे उसका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सामान्य असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्यको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर अधस्तन विरलनके प्रत्येक एकके प्रति तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है । इस प्रमाणको उपरिम विरलनके उपरिम एकके प्रति प्राप्त सामान्य असंयत-सम्यग्दृष्टि द्रव्यमेंसे निकाल देना चाहिये । इसप्रकार निकाल देने पर उपरिम विरलनमात्र देवगतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशियां और तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशियां होती हैं ।

उदाहरण—तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि ४०९६;

$$१६३८४ \div ४०९६ = ४; \quad \begin{array}{cccc} ४०९६ & ४०९६ & ४०९६ & ४०९६ \\ १ & १ & १ & १ \end{array};$$

इस ४०९६ को उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त १६३८४ में घटा देने पर १२२८८ आते हैं । यही देवगतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है, और ४०९६ तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है ।

अब आगे उपरिम विरलनमात्र अर्थात् उपरिम विरलनगुणित तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिको देव असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिके प्रमाणसे करके बतलाते हैं । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है—

एक कम अधस्तन विरलनमात्र अर्थात् एक कम अधस्तन विरलनगुणित उपरिम विरलनमें स्थित तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्यको समुदित कर देने पर एक देव

१ प्रतिपु ' णत्थद्धत्तादो संकिलिद्धत्तादो ' इति पाठः ।

चेव पक्खेवसलागा । पुणो वि एत्तियमेत्तेसु चेव उवरिमविरलणमिह तिगदिअसंजद-
सम्माइड्ढिद्व्वेसु समुदिदेसु देवअसंजदसम्माइड्ढिद्व्वं लब्भदि, अवहारकालमिह विदिया
च पक्खेवसलागा । एवं पुणो पुणो कीरमाणे आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ
अवहारकालपक्खेवसलागाओ लब्भंति, हेट्ठिमविरलणादो उवरिमविरलणाए असंखेज्ज-
गुणत्ता । एदासिमवहारकालपक्खेवसलागाणमेगवारेण आगमणविहिं वत्तइस्सामो ।
हेट्ठिमविरलणरूवूणमेत्ततिगदिअसंजदसम्माइड्ढिद्व्वेसु जदि एगा अवहारकालपक्खेव-
सलागा लब्भदि तो उवरिमविरलणमेत्तेसु तिगदिअसंजदसम्माइड्ढिद्व्वेसु केत्तियाओ
पक्खेवसलागाओ लभामो त्ति रूवूणहेट्ठिमविरलणाए उवरि विरलिदओघअसंजदसम्मा-
इड्ढिस्स अवहारकाले भागे हिदे आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ अवहारकालपक्खेव-
सलागाओ लब्भंति । ताओ ओघअसंजदसम्माइड्ढिअवहारकालमिह पक्खेत्ते देवअसंजद-
सम्माइड्ढिअवहारकालो होदि । तमावलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे देवसम्मामिच्छा-
इड्ढिअवहारकालो होदि, असंजदसम्माइड्ढिउवक्कमणकालादो सम्मामिच्छाइड्ढिउवक्कमण-
कालस्स असंखेज्जगुणहीणत्ता । तं संखेज्जरूवेहिं गुणिदे देवसासणसम्माइड्ढिअवहारकालो

असंयतसम्यग्दष्टि जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है और अवहारकालमें एक प्रक्षेपशलाका प्राप्त होती है । फिर भी एक कम अधस्तन विरलनमात्र उपरिम विरलनमें स्थित तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दष्टि द्रव्यके समुदित कर देने पर देव असंयतसम्यग्दष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है और अवहारकालमें दूसरी प्रक्षेपशलाका प्राप्त होती है । इसीप्रकार पुनः पुनः करने पर आवलीके असंख्यातवें भागमात्र अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाएं प्राप्त होती हैं, क्योंकि, अधस्तन विरलनसे उपरिम विरलन असंख्यातगुणा है । अब इन अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाओंके एकवारमें लानेकी विधिको बतलाते हैं— एक कम अधस्तन विरलनमात्र तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दष्टि द्रव्यमें यदि एक अवहारकाल प्रक्षेपशलाका प्राप्त होती है तो उपरिम विरलनमात्र अर्थात् उपरिम विरलनगुणित तीनगतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दष्टि द्रव्योंमें कितनी प्रक्षेपशलाकाएं प्राप्त होंगी, इसप्रकार (त्रैराशिक करके) एक कम अधस्तन विरलनका ऊपर विरलित ओघ असंयतसम्यग्दष्टिके अवहारकालमें भाग देने पर आवलीके असंख्यातवें भागमात्र अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाएं प्राप्त होती हैं । उन प्रक्षेपशलाकाओंको ओघ असंयतसम्यग्दष्टिके अवहारकालमें मिला देने पर देव असंयतसम्यग्दष्टि अवहारकालका प्रमाण आता है ।

उदाहरण— एक कम अधस्तन विरलन ३; उपरिम विरलन ४; $४ \div ३ = \frac{४}{३}$;

$४ + \frac{४}{३} = \frac{१६}{३}$; $६५५३६ \div \frac{१६}{३} = १२२८८$ देव असंयतसम्यग्दष्टि द्रव्य ।

$१६३८४ - १२२८८ = ४०९६$ तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दष्टि द्रव्य ।

देव असंयतसम्यग्दष्टिसंबन्धी अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर देव सम्यग्मिथ्यादष्टि जीवराशिसंबन्धी अवहारकाल होता है; क्योंकि, असंयत-सम्यग्दष्टिके उपक्रमण कालसे सम्यग्मिथ्यादष्टिका उपक्रमणकाल असंख्यातगुणा हीन है । देव

होदि, तदो संखेज्जगुणहीण-उवक्कमणकालत्तादो । सम्मामिच्छत्तं पडिवज्जमाणरासिस्स संखेज्जदिभागमेत्ता उवसमसम्माइड्डिणो सासणगुणं पडिवज्जंति त्ति वा । तमावलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे तिरिक्खअसंजदसम्माइड्डिअवहारकालो होदि । तमावलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे तिरिक्खसम्मामिच्छाइड्डिअवहारकालो होदि । तं संखेज्जरूवेहि गुणिदे तिरिक्खसासणसम्माइड्डिअवहारकालो होदि । तमावलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे तिरिक्खसंजदासंजदअवहारकालो होदि, अपच्चक्खाणावरणणमुदयाभावस्स अइदुल्लहत्तादो । तमावलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे णेरइयअसंजदसम्माइड्डिअवहारकालो होदि । तमावलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे णेरइयसम्मामिच्छाइड्डिअवहारकालो होदि । तं संखेज्जरूवेहि गुणिदे णेरइयसासणसम्माइड्डिअवहारकालो होदि । एदेहि अवहारकालेहि पलिदोवमे भागे हिदे अप्पणो दव्वमागच्छदि ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर देव सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिसंबन्धी अवहारकाल प्राप्त होता है, क्योंकि, सम्यग्मिथ्यादृष्टिके उपक्रमणकालसे सासादनसम्यग्दृष्टिका उपक्रमणकाल संख्यातगुणा हीन है । अथवा, सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थानको प्राप्त होनेवाली जीवराशिके संख्यातवें भागमात्र उपशमसम्यग्दृष्टि जीव सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानको प्राप्त होते हैं, इसलिये भी देव सम्यग्मिथ्यादृष्टिके अवहारकालसे देव सासादनसम्यग्दृष्टिका अवहारकाल संख्यातगुणा है । देव सासादनसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकाल होता है । तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर तिर्यंच सम्यग्मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकाल होता है । तिर्यंच सम्यग्मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकाल होता है । तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर तिर्यंच संयतासंयतसंबन्धी अवहारकाल होता है, क्योंकि, अप्रत्याख्यानावरण कषायका उदयाभाव अत्यंत दुर्लभ है । तिर्यंच संयतासंयतसंबन्धी अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर नारक असंयतसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकाल होता है । नारक असंयतसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर नारक सम्यग्मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकाल होता है । नारक सम्यग्मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर नारक सासादनसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकाल होता है । इन उपर्युक्त अवहारकालोंसे पन्योपमके भाजित करने पर अपना अपना द्रव्यका प्रमाण आता है ।

१ ओवासेज्जदमिस्सयसासणसम्माण भागहारा जे । रूवूणावलियासंखेज्जेणिह भाजिय तत्थ णिविखत्ते ॥ देव्वाणं अवहारा होति ×× । गो. जी. ६३४, ६३५.

एवं पदमाए पुढवीए णेरइया' ॥ १९ ॥

णं पुढ्वं सामण्णणेरइयमिच्छाइड्ढिआदिरासिस्स पमाणपरूषणा परूविदा, पढम-
विदियपुढविआदिविसेसाभावादो । पुणो जदि पुढ्वपरूविदसव्वरासी पढमाए पुढवीए
भवदि तो विदियादिपुढवीसु जीवाभावो पसज्जदे । ण च एवं, 'विदियादि जाव सत्तमाए
पुढवीए णेरइएसु मिच्छाइड्ढि दव्वपमाणेण केवडिया' इच्चादिसुत्तेहि सह विरोहादो, तम्हा
सामण्णणेरइयमिच्छाइड्ढिविक्खंभसूई पढमपुढविमिच्छाइड्ढीणं विक्खंभसूई ण हवदि । तदो
सामण्णपरूविदअवहारकालो वि पढमपुढविणेइयाणं ण भवदि । एवं सेसगुणपडिवण्णाणं
पि अवहारकालवड्ढी वत्तव्वा । तम्हा एवं पढमाए पुढवीए णेयव्वमिदि णेदं घड्ढे ?
ण एस दोसो, असंखेज्जसेट्ठित्तणेण पदरस्स असंखेज्जदिभागत्तणेण विदियवग्गमूलगुणिद-
अंगुलवग्गमूलमेत्तविक्खंभसूचित्तणेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागत्तणेण च पढमपुढवि-

सामान्य नारकियोंके द्रव्यप्रमाणके समान पहली पृथिवीमें नारक जीव-
राशि है ॥ १९ ॥

शंका—पहले सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि आदि जीवराशिके प्रमाणका प्ररूपण किया,
क्योंकि, सामान्य प्ररूपणमें पहली पृथिवी, दूसरी पृथिवी आदिके विशेषप्ररूपणका अभाव है ।
फिर यदि पहले प्ररूपण की हुई संपूर्ण जीवराशि पहली पृथिवीमें ही होती है तो द्वितीयादि
पृथिवियोंमें जीवोंका अभाव प्राप्त होता है । परंतु ऐसा है नहीं, क्योंकि, ऐसा मान लेने पर
'दूसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवीतक मिथ्यादृष्टि नारक द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने
हैं' इत्यादि सूत्रोंके साथ पूर्वोक्त कथनका विरोध प्राप्त होता है । इसलिये सामान्य नारक
मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची प्रथम पृथिवीके नारक मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची नहीं हो
सकती है । और इसीलिये सामान्यसे कहा गया अवहारकाल भी प्रथम पृथिवीके नारकियोंका
अवहारकाल नहीं हो सकता है । इसीप्रकार प्रथम पृथिवीके दोष गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंको
भी अवहारकालकी वृद्धिका कथन करना चाहिये । इसलिये इसीप्रकार पहली पृथिवीमें ले
जाना चाहिये यह सूत्रार्थ घटित नहीं होता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, असंख्यात जगश्रेणियोंकी अपेक्षा,
जगप्रतरके असंख्यातवें भागकी अपेक्षा सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे गुणित प्रथम वर्गमूल-
प्रमाण विष्कंभसूचीकी अपेक्षा और पल्लोपमके असंख्यातवें भागकी अपेक्षा प्रथम पृथिवीसंबन्धी

१ नरकगतीं प्रथमायां पृथिव्यां नारका मिथ्यादृष्टयोऽसंख्येयाः श्रेणयः प्रतरासंख्येयभागप्रमिताः । स. सि.
१, ८. हेट्टिमळपुढवीणं रासिविहीणो दु सव्वरासी दु । पढमाएणिमिह्दि रासी णेरइयाणं तु णिदिट्ठो । गो. जी. १५४.
सेटीएक्केक्कपएसाइयसूईणमंगुलपमियं । घम्माए ×× । पञ्चसं. २, १७. अइवंगुलपएसा समुल्लयुणिया उ नेरइय-
सूई । पञ्चसं. २, १९. भवणवासीणीओ देवीओ संखेज्जगुणाओ । इमीसे रयणपमाए पुढवीए नेरइया असंखेज्जगुणा ।
पञ्चसं. २, १६ स्को, टी. (महादण्डक).

परूवणाए सामण्णणेइयपरूवणादो विसेसाभावादो । पुणो पञ्जवट्टियणए अवलंबिज्जमाणे विसेसो अत्थि चेष, अण्णहा विदियादिपुढवीसु जीवाभावप्पसंगादो । तं विसेसं वत्त-इस्सामो । तं जहा— पढमपुढविणेइयाणं दव्व-कालपमाणेसु भण्णमाणेसु ओघदव्व-काल-पमाणणि चेष असंखेज्जदिभागहीणाणि हवंति । तहा खेत्तपमाणं पि ओघखेत्तपमाणादो असंखेज्जदिभागूणं भवदि । तं कथं जाणिज्जदे ? 'विदियादि जाव सत्तमाए पुढकीए णेरइया खेत्तेण सेटीए असंखेज्जदिभागो' इदि पुरदो बुच्चमाणसुत्तादो णव्वदे जहा ओघणेइयमिच्छाइडिदव्वादो पढमपुढविणेइयमिच्छाइडिदव्वं सेटीए असंखेज्जदिभागेण हीणमिदि । एदं सुत्तमवलंबिय पढमपुढविणेइयमिच्छाइडिदं विक्खंभसूई उप्पाइस्सामो । तं जहा— ओघणेइयमिच्छाइडिरासीदो एगसेट्ठिअवणयणं पडि जदि विक्खंभसूचिभिह एगसलागाए अवणयणं लब्भदि तो किंचूणवारसवग्गमूलभजिदसेट्ठिभिह किं लभामो त्ति सेटीए फलगुणिदिच्छामोवट्टिदे किंचूणवारसवग्गमूलभजिदेगरूपमागच्छदि । एदं

प्ररूपणामें सामान्य नारकियोंकी प्ररूपणासे कोई विशेषता नहीं है । परंतु पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करने पर सामान्य प्ररूपणासे प्रथम पृथिवीसंबन्धी प्ररूपणामें विशेषता है ही । यदि ऐसा न माना जाय तो द्वितीयादि पृथिवियोंमें जीवोंके अभावका प्रसंग आ जायगा । आगे उसी विशेषताको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है—

पहली पृथिवीके नारकियोंके द्रव्य और कालकी अपेक्षा प्रमाणका कथन करने पर सामान्यसे कहे गये द्रव्यप्रमाण और कालप्रमाणको असंख्यातवें भाग न्यून कर देने पर पहली पृथिवीके नारकियोंका द्रव्य और कालकी अपेक्षा प्रमाण होता है । उसीप्रकार पहली पृथिवीके नारकियोंका क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण भी सामान्यसे कहे गये क्षेत्रप्रमाणसे असंख्यातवां भाग न्यून है ।

शंका — यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान — 'दूसरी पृथिवीसे लेकर सातवां पृथिवीतक नारकी जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? जगश्रेणीके असंख्यातवें भाग हैं' इसप्रकार आगे कहे जानेवाले सूत्रसे जाना जाता है कि नारक सामान्य मिथ्यादृष्टियोंके द्रव्यप्रमाणसे पहली पृथिवीके नारक मिथ्यादृष्टि जीवोंका द्रव्यप्रमाण जगश्रेणीका असंख्यातवां भाग हीन है ।

अब आगे इस द्वितीयादि पृथिवियोंके प्रमाणके प्ररूपण करनेवाले सूत्रका अवलम्बन लेकर पहली पृथिवीके नारक मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची उत्पन्न करते हैं । वह इसप्रकार है— जब कि सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशियोंसे एक जगश्रेणी कम करने पर विष्कंभ-सूचीमें एक शलाका कम होती है, तो कुछ कम अपने बारहवें वर्गमूलसे भाजित जगश्रेणीमें कितना प्रमाण प्राप्त होगा, इसप्रकार त्रैराशिक करके इच्छराशि अपने कुछ कम बारहवें वर्ग-मूलसे भाजित जगश्रेणीको फलराशि एकसे गुणित करके जगश्रेणीसे अपवर्तित करने पर, एकमें जगश्रेणीके कुछ कम बारहवें वर्गमूलका भाग देनेसे जो लब्ध आवे उतना आता है ।

सामण्णणेरइयमिच्छाइट्टिविक्खंभसूचिम्हि अवाणिदे पढमपुढविणेरइयमिच्छाइट्टिरासिस्स विक्खंभसूई होदि' । एदीए विक्खंभसूईए जगसेट्टिम्हि भागे हिदे पढमपुढविणेरइयमिच्छाइट्टिअवहारकालो होदि ।

उदाहरण—बारहवां वर्गमूल ४; किंचित् ऊन बारहवां वर्गमूल $\frac{१२८}{६३}$;

$$६५५३६ \div \frac{१२८}{६३} = ३२२५६; ३२२५६ \times १ = ३२२५६;$$

$$३२२५६ \div ६५५३६ = \frac{६३}{१२८} = १ \div \frac{१२८}{६३};$$

इस किंचित् ऊन बारहवें वर्गमूलभाजित एकरूपको सामान्य नारक मिथ्यादृष्टिसंबन्धी विष्कंभसूचीमेंसे घटा देने पर प्रथम पृथिवीके नारक मिथ्यादृष्टि राशिकी विष्कंभसूची होती है। इस विष्कंभसूचीसे जगश्रेणीके भाजित करने पर प्रथम पृथिवीके नारक मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है।

उदाहरण— $२ - \frac{६३}{१२८} = \frac{१९३}{१२८}$; $\frac{६५५३६}{१} \div \frac{१९३}{१२८} = \frac{८३८८६०८}{१९३}$; प्र. पृ. मि. अव.।

विशेषार्थ—जगश्रेणीके बारहवें, दशवें, आठवें, छठे, तीसरे और दूसरे वर्गमूलका जगश्रेणीमें भाग देने पर क्रमसे द्वितीयादि पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि नारकियोंका द्रव्य आता है। और इन लहों नरकोंके मिथ्यादृष्टि जीवोंका जितना प्रमाण हो उसे सामान्य मिथ्यादृष्टि राशिमेंसे घटा देने पर प्रथम पृथिवीके मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण होता है। पहले सामान्य मिथ्यादृष्टि नारकियोंका प्रमाण बतलाते समय उनकी विष्कंभसूची घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलप्रमाण बतलाई है, अर्थात् घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलका जितना प्रमाण हो उतनी जगश्रेणियोंको एकत्रित करने पर उनके प्रदेशप्रमाण सामान्य मिथ्यादृष्टि जीवराशि होती है। अब यदि प्रथम नरकके नारकियोंके प्रमाण लानेके लिये विष्कंभसूची लाना हो तो द्वितीयादि नरकके मिथ्यादृष्टि नारकियोंके प्रमाणमें जगश्रेणीका भाग देने पर जो लब्ध आवे उसे सामान्य विष्कंभसूचीमेंसे घटा देने पर प्रथम नरककी विष्कंभसूची आ जाती है। उदाहरणार्थ—दूसरे नरकका १६३८४, तीसरेका ८१९२, चौथेका ४०९६, पांचवेंका २०४८, छठेका १०२४ और सातवेंका ५१२ द्रव्य मान लेने पर इनमें जगश्रेणी ६५५३६ का भाग देने पर क्रमसे $\frac{१}{२}$, $\frac{१}{३}$, $\frac{१}{४}$, $\frac{१}{५}$, $\frac{१}{६}$ और $\frac{१}{७}$ आता है, जिनका जोड़ $\frac{१३६}{१२८}$ होता है। इसे सामान्य विष्कंभसूची २ मेंसे घटा देने पर $\frac{१९३}{१२८}$ प्रमाण प्रथम पृथिवीकी विष्कंभसूची होती है। इसी व्यवस्थाको ध्यानमें रखकर ऊपर यह कहा गया है कि किंचित् ऊन बारहवें वर्गमूल भाजित एकरूपको सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीमेंसे घटा देने पर प्रथम नरकके मिथ्यादृष्टि नारकियोंका प्रमाण

१ तद्दा पुट्टिह्विविक्खंभसूची (सामण्णणेरइयमिच्छाइट्टिविक्खंभसूची) एगरूवस्स असंखेज्जदिभागेणूणा पढमपुढविणेरइयमिच्छाइट्टिविक्खंभसूची होदि । अवला; पत्र. ५१८ अ.

अहवा अवरेण पयारेण अवहारकालो उप्पाइज्जदे । तं जहा- सामण्णअवहारकालं विरलेऊण रूवं पडि जगपदरं समखंडं करिय दिण्णे एकेकस्स रूवस्स सामण्णणेइय- मिच्छाइट्ठिरासिपमाणं पावेदि । पुणो तत्थ एगरूवधरिदसामण्णणेइयमिच्छाइट्ठिरासिम्हि छप्पुढविमिच्छाइट्ठिरासिणा भागे हिदे किंचूणवारसवग्गमूलगुणिदसामण्णणेइयमिच्छा- इट्ठिविक्खंभसूची आगच्छदि । एदं पुव्वविरलणाए हेट्ठा विरलिय उवरि एगरूवधरिदु- सामण्णणेइयमिच्छाइट्ठिद्वं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि छप्पुढविमिच्छाइट्ठिरासि- पमाणं पावेदि । तं उवरिमविरलणाए इट्ठिसामण्णणेइयमिच्छाइट्ठिरासिम्हि पुध पुध अवणिदे उवरिमविरलणमेत्ता पढमपुढविमिच्छाइट्ठिरासीओ भवंति । छप्पुढविमिच्छाइट्ठि- रासीओ वि तावदिया चेव ।

लानेके लिये विष्कंभसूची होती है । यहाँ किंचित् ऊन बारहवें वर्गमूलसे द्वितीयादि नरकोंके मिथ्यादृष्टि राशिका सम्मिलित अवहारकाल अभिप्रेत है ।

अथवा, दूसरे प्रकारसे प्रथम पृथिवीके नारक मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल उत्पन्न करते हैं । वह इसप्रकार है— सामान्य अवहारकालका विरलन करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति जगप्रतरको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है । पुनः उस विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिके द्वितीयादि छह पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका भाग देने पर कुछ कम बारहवें वर्गमूलसे गुणित सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिकी विष्कंभसूची आती है । इसे पूर्व विरलनके नीचे विरलित करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति उपरिम विरलनके एकके प्रति प्राप्त सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति द्वितीयादि छह पृथिवीसंबन्धी नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण आ जाता है । उसे उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यमेंसे पृथक् पृथक् निकाल देने पर उपरिम विरलनका जितना प्रमाण है उतनी प्रथम पृथिवीगत नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशियां होती हैं । द्वितीयादि छह पृथिवीगत नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशियां भी उतनी ही होती हैं ।

उदाहरण—छह पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि राशि ३२२५६:

$$\begin{array}{ccc} १३१०७२ & १३१०७२ & \\ १ & १ & ३२७६८ \text{ वार;} \end{array}$$

$$१३१०७२ \div ३२२५६ = \frac{२५६}{६३} = २ \times \frac{१२८}{६३}$$

$$\begin{array}{cccccc} ३२२५६ & ३२२५६ & ३२२५६ & ३२२५६ & २०४८ & \text{इस ३२२५६ को उप-} \\ १ & १ & १ & १ & ४ & \text{रिम विरलनके प्रत्येक} \\ & & & & ६३ & \text{एकके प्रति प्राप्त} \end{array}$$

१३१०७२ मेंसे घटा देने पर ९८८१६ प्रमाण प्रथम पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि द्रव्य राशियां होती हैं और शेष ३२२५६ प्रमाण द्वितीयादि छह पृथिवियोंकी मिथ्यादृष्टि द्रव्य राशियां होती हैं ।

पुणो उवरिमविरलणमेत्तल्लप्पुढविमिच्छाइड्डिद्वं पढमपुढविमिच्छाइड्डिद्वयपमाणेण कस्सामो । तं जहा— रूवूणहेट्टिमविरलणमेत्तल्लप्पुढविद्वेसु उवरिमविरलणमिह समुदिदेसु पढमपुढविमिच्छाइड्डिपमाणं होदि । तत्थ एणा अवहारकालसलागा लब्भइ । पुणो वि उवरिमविरलणमिह तत्तिएसु चैव ल्लप्पुढविद्वेसु समुदिदेसु अवरेगं पढमपुढविमिच्छा-इड्डिपमाणं होदि, विदिया च अवहारकालपक्खेवसलागा लब्भइ । एवं पुणो पुणो कीरमाणे रूवूणहेट्टिमविरलणादो उवरिमविरलणा असंखेज्जगुणा ति कड्डु सेटीए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ अवहारकालपक्खेवसलागाओ लब्भंति । तासिमेगवारेणाणयण-विही बुच्चदे । तं जहा— रूवूणहेट्टिमविरलणमेत्तल्लप्पुढविद्वेस्स जदि एणा अवहारकाल-पक्खेवसलागा लब्भदि, तो सामण्णणेइयमिच्छाइड्डिअवहारकालमेत्तल्लप्पुढविमिच्छा-इड्डिद्वेस्स केत्तियाओ लभामो ति सरिसमवणिय रूवूणहेट्टिमविरलणाए सामण्ण-अवहारकालमिह भागे हिदे अवहारकालपक्खेवसलागाओ आगच्छंति । ताओ सरिसच्छेदं काळण सामण्णणेइयमिच्छाइड्डिअवहारकालमिह 'पक्खित्ते पढमपुढविमिच्छाइड्डिअवहार-

अब उपरिम विरलनमात्र छह पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि द्रव्यको प्रथम पृथिवीगत मिथ्या-दृष्टि द्रव्यप्रमाणरूप करते हैं । उसका स्पर्धीकरण इसप्रकार है— उपरिम विरलनमें एक कम अधस्तन विरलनमात्र छह पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि द्रव्यके समुदित करने पर प्रथम पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है और वहां एक अवहारकाल प्रक्षेपशलाका प्राप्त होती है । पुनः उपरिम विरलनमें उतने ही अर्थात् एक कम अधस्तन विरलनमात्र छह पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि द्रव्यके समुदित करने पर दूसरीवार प्रथम पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है और दूसरी अवहारकाल प्रक्षेपशलाका प्राप्त होती है । इसीप्रकार पुनः पुनः करने पर एक कम अधस्तन विरलनसे उपरिम विरलन असंख्यातगुणा है, इसलिये जगश्रेणीके असंख्यातवें भागमात्र अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाएं प्राप्त होती हैं । आगे उन अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाओंकी एकवार लानेकी विधिको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है—

एक कम अधस्तन विरलनमात्र अर्थात् एक कम अधस्तन विरलनगुणित छह पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि द्रव्यके प्रति यदि एक अवहारकाल प्रक्षेपशलाका प्राप्त होती है तो सामान्य नारक मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकालमात्र अर्थात् सामान्य नारक अवहारकालगुणित छह पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि द्रव्यके प्रति कितनी अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाएं प्राप्त होंगी, इसप्रकार त्रैराशिकमें सहशका अपनयन करके एक कम अधस्तन विरलनसे सामान्य अवहारकालको भाजित करने पर अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाएं आ जाती हैं । इनको समान छेद करके सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकालमें मिला देने पर प्रथम पृथिवीसंबन्धी नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकाल

१ प्रतिशु ' मागे हिदे पक्खित्ते ' इति पाठः ।

कालो होदि । एदाओ अवहारकालपक्खेवसलागाओ सामण्णणेरइयमिच्छाइड्ढिअवहार-
कालमेत्तच्छप्पुढविमिच्छाइड्ढिद्वमस्सिऊण उप्पण्णाओ ।

पुणो एदाओ चेव अवहारकालपक्खेवसलागाओ विक्खंभसूचिम्हि अवणयणरूव-
पमाणं च पुढविं पुढविं पडि एत्तियं एत्तियं होदि त्ति परूविज्जदे । तत्थ ताव विक्खंभ-
सूचिम्हि अवणिज्जमाणरूवाणं पमाणं वुच्चदे । तं जहा- एगसोढिअवणयणं पडि जेदि
सामण्णणेरइयविक्खंभसूचिम्हि एगरूवस्स अवणयणं लब्भदि तो विदियपुढविद्वस्स
अवणयणं पडि किं लभामो त्ति सरिसमवणिय सेटिवारसवग्गमूलेण एगरूवं खंडिदे
विदियपुढविमस्सिऊण विक्खंभसूचिम्हि अवणयणपमाणमागच्छदि । तं च एदं ६३ । एवं
सेसपुढवीणं पि तेरासियकमेण विक्खंभसूचिम्हि अवणिज्जमाणरूवपमाणमाणेयव्वं । तेसिं

होता है । ये अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाएं सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकालमात्र अर्थात्
सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकालगुणित छह पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि द्रव्यका आश्रय
लेकर उत्पन्न हुई हैं ।

उदाहरण—उपरिम विरलन ३२७६८; अधस्तन विरलन $\frac{२५६}{६३}$

$$\frac{२५६}{६३} - १ = \frac{१९३}{६३}; \quad ३२७६८ \div \frac{१९३}{६३} = \frac{२०६४३८४}{१९३} \text{ अव. प्रक्षेपशलाकाएं ।}$$

$$३२७६८ + \frac{२०६४३८४}{१९३} = \frac{८३८८६०८}{१९३} \text{ पृ. पृ. अव. ।}$$

अब प्रत्येक पृथिवीके प्रति अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाओंका प्रमाण और विष्कंभसूचीमें
अपनयनरूप संख्याका प्रमाण इतना इतना होता है, इसका प्ररूपण करते हैं । उसमें भी पहले
विष्कंभसूचीमें अपनीयमान संख्याका प्रमाण कहते हैं । वह इसप्रकार है— एक जगश्रेणीके
अपनयनके प्रति यदि सामान्य नारक विष्कंभसूचीमें एक संख्या कम होती है तो द्वितीय
पृथिवीके द्रव्यके घटानेके प्रति कितनी संख्या प्राप्त होगी, इसप्रकार सदृशका अपनयन करके
(अर्थात् दूसरी पृथिवीके द्रव्यको जगश्रेणीसे अपनयन करके अर्थात् भाजित करके) जग-
श्रेणीके बारहवें वर्गमूलसे एकको खंडित करने पर दूसरी पृथिवीका आश्रय करके विष्कंभसूचीमें
अपनयनरूप संख्याका प्रमाण आ जाता है । वह यह ६३ है ।

उदाहरण— $१ \times १६३८४ = १६३८४$; $१६३८४ \div ६५५३६ = \frac{१}{४}$ अपनयनरूप ।

$$\text{अथवा, } १ \div ४ = \frac{१}{४}; \quad \left(२ - \frac{१}{४} = \frac{७}{४} \right)$$

इसीप्रकार शेष पृथिवियोंका भी त्रैराशिक क्रमसे विष्कंभसूचीमें अपनीयमान
संख्याका प्रमाण ले भाना चाहिये । प्रत्येक पृथिवीके प्रति उन अपनीयमान संख्याओंका

पमाणं सेट्टिदसम-अड्ड-छड्ड-तदिय-विदियवग्गमूलेहि पुध पुध एगरूवं खंडिदे तत्थ एगभागं होदि । विदियादिपुठवीणं एदे अवहारकाला होंति त्ति कधं णव्वेदे ?

वारस दस अट्टेव य मूला छत्तिय दुगं च' गिरएसु ।

एक्कारस णव सत्त य पण य चउक्कं च देवेसु' ॥ ६६ ॥

एदम्हादो आरिसादो णव्वेदे । तेसिमंकड्डवणा एसा $\frac{१}{२}$ $\frac{१}{३}$ $\frac{१}{४}$ $\frac{१}{५}$ $\frac{१}{६}$ । सेट्टिवारस-

प्रमाण क्रमसे जगश्रेणीके दशवें, आठवें, छठवें, तीसरे और दूसरे वर्गमूलोंसे पृथक् पृथक् एक संख्याको खंडित करने पर वहां जो एक भाग लब्ध आवे उतना होता है ।

उदाहरण—दशवां वर्गमूल ८; आठवां वर्गमूल १६; छठा वर्गमूल ३२; तीसरा वर्गमूल ६४; दूसरा वर्गमूल १२८; $१ \div ८ = \frac{१}{८}$ तीसरी पृथिवीकी अपेक्षा ।

$१ \div १६ = \frac{१}{१६}$ चौथी पृथिवीकी अपेक्षा । $१ \div ३२ = \frac{१}{३२}$ पांचवी पृथिवीकी

अपेक्षा । $१ \div ६४ = \frac{१}{६४}$ छठी पृथिवीकी अपेक्षा । $१ \div १२८ = \frac{१}{१२८}$

सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा अपनीयमान संख्याका प्रमाण ।

शंका—जगश्रेणीका बारहवां वर्गमूल, दशवां वर्गमूल आदि ये सब द्वितीयादि पृथिवियोंके अवहारकाल होते हैं, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—नरकमें द्वितीयादि पृथिवीसंबन्धी द्रव्य लानेके लिये जगश्रेणीका बारहवां, दशवां, आठवां, छठा, तीसरा और दूसरा वर्गमूल क्रमसे अवहारकाल होता है । तथा देवोंमें (सानत्कुमार आदि पांच कल्पयुगलोंका प्रमाण लानेके लिये) जगश्रेणीका ग्यारहवां, नौवां, सातवां, पांचवां और चौथा वर्गमूल क्रमसे अवहारकाल होता है ॥ ६६ ॥

इस आर्ष वचनसे जाना जाता है कि उपर्युक्त वर्गमूल द्वितीयादि पृथिवियोंके द्रव्य लानेके लिये अवहारकाल होते हैं ।

उन अपनीयमान अंकोंकी स्थापना क्रमसे $\frac{१}{२}$, $\frac{१}{३}$, $\frac{१}{४}$, $\frac{१}{५}$, $\frac{१}{६}$, $\frac{१}{७}$ इसप्रकार है ।

विशेषार्थ—यहां पर जगश्रेणीके बारहवें वर्गमूल आदिका ज्ञान करानेके लिये हरके

१ प्रतिपु ' दुपंच ' इति पाठः ।

२ सणक्कुमार जाव सदरसइस्सारकण्णवासियदेवा सत्तमपुठवीमंगो । कुदो ? सेदीए असेखेज्जभागत्तणेण एदेसिं तत्तो भेदाभावादो । विसेसदो पुण भेदो अत्थि, सेदीए एक्कारस-णवम-सत्तम-पंचम-चउत्थवग्गमूलानं जहाकमेण सेदीमागहाराणमेत्थुवलंभादो । धवला. पत्र ५२२. अ । सौधर्मद्वये किंचिदूना घनांशुलतृतीयमूलजगश्रेणिः । सनत्कुमार-द्रयादिपंचयुग्मेधु किंचिदूतः क्रमशो निजैकादशम-नवम-सप्तम-पंचम चतुर्थमूलभक्तजगश्रेणिः । ऊनता चात्र हाराधिका भेदा । गो. जी., जी. प्र., टी ६४१.

स्थानमें अंकरूपसे १२, १० आदि संख्याओंका ग्रहण किया है। तथा अंशके स्थानमें १ अंक ग्रहण करके यह बतलाया है कि १ में बारहवें आदि वर्गमूलोंका भाग देनेसे सामान्य विष्कंभ-सूचीमें अपनीयमान संख्या आ जाती है। पर इससे यहां बारहवें वर्गमूलका प्रमाण १२ और दशवें वर्गमूलका प्रमाण १० आदि नहीं लेना चाहिये। ये १२, १० आदि अंक तो केवल अनुरूप संख्याओंके द्वारा उक्त वर्गमूलोंका ज्ञान करानेके लिये संकेतमात्र हैं। इसीप्रकार इसी प्रकरणमें प्रकृत विषयके स्पष्ट करनेके लिये अंकसंदष्टिकी अपेक्षा जगश्रेणीका प्रमाण ६५५३६ लिया है, उसके भी ये १२, १० आदि अंक बारहवें और दशवें आदि वर्गमूल नहीं हैं, जो द्वितीयादि पृथिवियोंके अंकसंदष्टिकी अपेक्षा दिये गये अवधारकालोंसे स्पष्ट समझमें आ जाता है। यद्यपि ६५५३६के पहले, दूसरे, तीसरे और चौथे वर्गमूलको छोड़कर शेष सभी वर्गमूल करणीगत होते हैं, फिर भी वीरसेनस्वामीने वर्गमूलोंके परस्परके तारतम्यको ग्रहण न करके द्वितीयादि नरकोंमें नारक जीवोंकी उत्तरोत्तर हीन संख्याका परिज्ञान करानेके लिये बारहवें वर्गमूलके स्थानमें ४, दशवेंके स्थानमें ८, आठवेंके स्थानमें १६, छठवेंके स्थानमें ३२, तीसरेके स्थानमें ६४ और दूसरेके स्थानमें १२८ लिया है। इस प्रकरणमें उदाहरण देकर जीवराशि आदिकी जो संख्या निकाली है वह पूर्वोक्त आधार पर ही निकाली गई है। इससे बारहवें वर्गमूल आदिमें परस्पर जितना तारतम्य है वह उक्त संकेतरूप संख्याओंमें नहीं रहता है, और इसलिये कहीं कहीं दृष्टान्त और दार्ष्टान्तमें अन्तर प्रतीत होता है। जैसे, आगे चलकर छठी और सातवीं पृथिवीका मिला हुआ जो भागहार निकाला है उस प्रकरणमें उपरिम विरलन भी जगश्रेणीका तृतीय वर्गमूलप्रमाण है और अधस्तन विरलन भी उतना ही है। पर वर्गमूलोंके उक्त संख्याओंके अनुसार वहां उपरिम विरलन ६४ प्रमाण और अधस्तन विरलन २ संख्याप्रमाण ही आता है, क्योंकि, अंकोंके द्वारा मानी हुई सातवीं पृथिवीकी जीवराशि ५१२ रूप प्रमाणका छठी पृथिवीके द्रव्य १०२४ में भाग देने पर २ ही लब्ध आते हैं। वर्गमूलोंमें परस्पर जो तारतम्य है वह इन संकेतोंमें नहीं रहनेसे ही यहां दृष्टान्त और दार्ष्टान्तमें इसप्रकारका वैषम्य दिखाई देता है। पर यदि हम वर्गमूलोंके तारतम्यको लेकर अंकसंदष्टि जमावें तो मुख्यार्थसे दृष्टान्तमें कोई अन्तर नहीं पड़ सकता है। फिर भी दृष्टान्त एकदेश होता है इसी न्यायके अनुसार ही यहां अंकसंदष्टिसे दार्ष्टान्तको समझना चाहिये। इससे जहां कहीं दृष्टान्तसे दार्ष्टान्तका साम्य नहीं मिलता होगा वहां दृष्टान्तमें ग्रहण किये गये अंकोंमें अपेक्षित तारतम्यका अभाव ही कारण है, दार्ष्टान्तमें कोई दोष नहीं। यह बात निम्नकोष्ठकसे अतिशीघ्र समझमें आ जायगी—

६५५३६ के वर्गमूल	बारहवां	दशवां	आठवां	छठा	तीसरा	दूसरा	विष्कंभसूची
धवलाकार द्वारा माने गये संकेतांक	१२८	६४	३२	१६	८	४	२
६५५३६ = २ ^{१६} के निश्चित वर्गमूल	३ ^{१६}	३ ^{१६}	३ ^{१६}	३ ^{१६}	३ ^{१६}	३ ^{१६}	बारहवें वर्गमूलसे नीचे जाकर

वर्गमूलभजिदएगखं विकखंभसूचिम्हि अवाणिय सेठिं गुणिदे विदियपुढविदव्वेण विणा सेसछपुढविदव्वमागच्छदि । पुणो ताए चेव ऊणविकखंभसूचीए जगसेठिम्हि भागे हिदे विदियपुढविदिरित्तछपुढविमिच्छाइडिदव्वस्स अवहारकालो होदि । पुणो तम्हि चेव छपुढविदिविकखंभसूचिम्हि एगखं सेठिदसमवग्गमूलेण खंडिय तत्थ एगखंडमवणीए विदिय-तदियपुढविदिरित्तसेसपंचपुढविमिच्छाइडिदव्वस्स विकखंभसूची होदि । पुणो ताए चेव विकखंभसूचीए जगसेठिम्हि भागे हिदे पंचपुढविमिच्छाइडिदव्वस्स अवहारकालो होदि । पुणो तम्हि चेव पंचपुढविविकखंभसूचिम्हि एगखं सेठिदसमवग्गमूलेण खंडिय एगखंडमवणीदे विदिय-तदिय-चउत्थपुढविदिरित्तचत्तारिपुढविमिच्छाइडिदव्वस्स विकखं-भसूई होदि । पुणो ताए विकखंभसूईए जगसेठिम्हि भागे हिदे चउण्हं पुढवीणं मिच्छा-

जगश्रेणीके बारहवें वर्गमूलसे एक संख्याको भाजित करके जो लब्ध आवे उसे विष्कंभसूचीमेंसे घटाकर शेष प्रमाणसे जगश्रेणीके गुणित करने पर द्वितीय पृथिवीगत द्रव्यके विना शेष छह पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण आता है । तथा उसी ऊन विष्कंभसूचीसे जगश्रेणीको भाजित करने पर दूसरी पृथिवीके अवहारकालके विना शेष छह पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका अवहारकाल आता है ।

उदाहरण— $१ \div ४ = \frac{१}{४}$; $२ - \frac{१}{४} = \frac{७}{४}$; $६५५३६ \times \frac{७}{४} = ११४६८८$ दूसरी पृथिवीके द्रव्यके

विना शेष छह पृथिवियोंका मिथ्यादृष्टि द्रव्य । $६५५३६ \div \frac{७}{४} = \frac{२६२१४४}{७}$

दूसरी पृथिवीके अवहारकालके विना शेष छह पृथिवियोंका अवहारकाल ।

अनन्तर जगश्रेणीके दशवें वर्गमूलसे एक रूपको खण्डित करके जो एक खण्ड लब्ध आवे उसे पूर्वोक्त उसी छह पृथिवीसंबन्धी विष्कंभसूचीमेंसे घटा देने पर दूसरी और तीसरी पृथिवीके विना शेष पांच पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी विष्कंभसूची होती है । पुनः उसी विष्कंभसूचीसे जगश्रेणीके भाजित करने पर (दूसरी और तीसरीके विना) पांच पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका अवहारकाल होता है ।

उदाहरण— $१ \div ८ = \frac{१}{८}$; $\frac{७}{४} - \frac{१}{८} = \frac{१३}{८}$ दूसरी और तीसरीके विना शेष पांच

पृथिवियोंकी विष्कंभसूची । $६५५३६ \div \frac{१३}{८} = \frac{५२४२८८}{१३}$ दूसरी और तीसरीके

विना शेष पांच पृथिवियोंका अवहारकाल ।

अनन्तर जगश्रेणीके आठवें वर्गमूलसे एक रूपको खण्डित करके जो एक खण्ड लब्ध आवे उसे पूर्वोक्त उसी पांच पृथिवीसंबन्धी विष्कंभसूचीमेंसे घटा देने पर दूसरी, तीसरी और चौथी पृथिवीको छोड़कर शेष चार पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी विष्कंभसूची होती

इडिद्वस्स अवहारकालो होदि । पुणो तम्मिह चैव चउपुढविमिच्छाइडिद्विक्खंभसूचिम्मिह एगरूवं सेटिछद्वग्गमूलेण खंडिऊण तत्थ एगखंडमवणिदे विदिय-तदिय-चउत्थ-पंचम-पुढविदिरित्तसेसतिपुढविमिच्छाइडिद्वस्स विक्खंभसूई होदि । पुणो ताए विक्खंभसूईए जगसेटिम्मिह भागे हिदे तिपुढविमिच्छाइडिद्वस्स अवहारकालो होदि । पुणो सेटि-तदियवग्गमूलेण एगरूवं खंडिय तत्थ एगं खंडं तिण्हं पुढवीणं विक्खंभसूचिम्मिह अवणिदे पढम-सत्तमपुढवीणं मिच्छाइडिद्वस्स विक्खंभसूई आगच्छदि । पुणो ताए विक्खंभसूईए जगसेटिम्मिह भागे हिदे पढम-सत्तमपुढवीणं मिच्छाइडिद्वस्स अवहारकालो आगच्छदि ।

है । अनन्तर उस विष्कंभसूचीका जगश्रेणीमें भाग देने पर पूर्वोक्त चार पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका अवहारकाल होता है ।

उदाहरण— $1 \div 16 = \frac{1}{16}$; $\frac{16}{16} - \frac{1}{16} = \frac{15}{16}$ दूसरी, तीसरी और चौथी पृथिवीके

विना शेष चार पृथिवियोंकी विष्कंभसूची । $64436 \div \frac{15}{16} = \frac{108096}{15}$

पूर्वोक्त चार पृथिवियोंका अवहारकाल ।

अनन्तर जगश्रेणीके छठे वर्गमूलसे एक रूपको खण्डित करके वहां जो एक खंड लब्ध आवे उसे उन्हीं पूर्वोक्त चार पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीमेंसे घटा देने पर दूसरी, तीसरी, चौथी और पांचवी पृथिवीको छोड़कर शेष तीन पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी विष्कंभसूची होती है । अनन्तर उस विष्कंभसूचीका जगश्रेणीमें भाग देने पर पूर्वोक्त तीन पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यका अवहारकाल होता है ।

उदाहरण— $1 \div 32 = \frac{1}{32}$; $\frac{32}{32} - \frac{1}{32} = \frac{31}{32}$ पहली, छठी और सातवीं पृथिवी-

संबन्धी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची । $64436 \div \frac{31}{32} = \frac{2096144}{31}$ पूर्वोक्त

तीन पृथिवियोंका अवहारकाल ।

अनन्तर जगश्रेणीके तृतीय वर्गमूलसे एकरूपको खंडित करके वहां जो एक खंड लब्ध आवे उसे पूर्वोक्त तीन पृथिवियोंकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीमेंसे घटा देने पर पहली और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी विष्कंभसूची आती है । अनन्तर उस विष्कंभसूचीका जगश्रेणीमें भाग देने पर पहली और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका अवहारकाल आता है ।

उदाहरण— $1 \div 64 = \frac{1}{64}$; $\frac{64}{64} - \frac{1}{64} = \frac{63}{64}$ पहली और सातवीं पृथिवीकी मिथ्या-

दृष्टि विष्कंभसूची । $64436 \div \frac{63}{64} = \frac{3998304}{63}$ पहली और सातवीं

पुणो दोपुठविविक्खंभसूचिम्हि सेट्टिविदियवग्गभूलेण एगरूवं खंडिय तत्थ एगखंड-
मवणिदे पढमपुठविमिच्छाइट्टिद्वस्स विक्खंभसूची होदि । पुणो ताए विक्खंभसूईए
जगसेट्टिम्हि भागे हिदे वि पढमपुठविमिच्छाइट्टिद्वस्स अवहारकालो आगच्छदि ।

पुणो संपहि सामण्णअवहारकालमेत्तच्छणुपुठविद्वमस्सिऊण पुठविं पडि अवहार-
कालपक्खेवसलागाओ आणिज्जंति । तत्थ ताव विदियपुठविमस्सिऊण उप्पण्णअवहार-
कालपक्खेवसलागाओ भणिस्सामो । तं जहा- विदियपुठविमिच्छाइट्टिद्वेण पढमपुठवि-
मिच्छाइट्टिद्वमवहरिय लद्धमेत्तेसु विदियपुठविमिच्छाइट्टिद्वेसु सामण्णअवहारकालमेत्त-
विदियपुठविद्वम्मि समुदिदेसु एगं पढमपुठविमिच्छाइट्टिद्वपमाणं लब्भइ, एगा
अवहारकालपक्खेवसलागा । पुणो वि एत्तियमेत्तेसु विदियपुठविमिच्छाइट्टिद्वेसु समु-
दिदेसु पढमपुठविमिच्छाइट्टिद्वपमाणं लब्भइ, विदिया अवहारकालपक्खेवसलागा च ।
एवं पुणो पुणो कीरमाणे सेट्टीए असंखेज्जभागमेत्ताओ अवहारकालपक्खेवसलागाओ

पृथिवीका अवहारकाल ।

अनन्तर जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलसे एकरूपको खंडित करके वहां जो एक खंड
लब्ध आवे उसे पूर्वोक्त दो पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीमेंसे घटा देने पर पहली
पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी विष्कंभसूची होती है । अनन्तर उस विष्कंभसूचीका जग-
श्रेणीमें भाग देने पर पहली पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यका अवहारकाल आता है ।

उदाहरण— $१ \div १२८ = \frac{१}{१२८} \times \frac{९७}{६४} = \frac{१}{१२८} = \frac{१९३}{१२८}$ पहली पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि

विष्कंभसूची । $६५५३६ \div \frac{१९३}{१२८} = \frac{८३८८६०८}{१९३}$ पहली पृथिवीका मिथ्यादृष्टि

अवहारकाल ।

अब सामान्य अवहारकालका जितना प्रमाण है उतनीवार छह पृथिवियोंके द्रव्यका
आश्रय लेकर प्रत्येक पृथिवीके प्रति प्रक्षेप अवहारकाल शलाकाएं लाते हैं । उनमें पहले दूसरी
पृथिवीका आश्रय लेकर उत्पन्न हुई अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाओंका कथन करते हैं । वह
इसप्रकार है—दूसरी पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे पहली पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि
द्रव्यको अपहृत करके जो लब्ध आवे तन्मात्र स्थानों पर स्थापित दूसरी पृथिवीसंबन्धी
मिथ्यादृष्टि द्रव्यको सामान्य अवहारकालमात्र (सामान्य अवहारकालका जितना प्रमाण है
उतनी वार स्थापित) दूसरी पृथिवीसंबन्धी द्रव्यमेंसे समुदित करने पर पहलीवार प्रथम
पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण आता है, और अवहारकालमें एक प्रक्षेपशलाका
उत्पन्न होती है । फिर भी इतनेमात्र दूसरी पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यके समुदित कर देने
पर दूसरीवार प्रथम पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है, और अवहार-
कालमें दूसरी प्रक्षेपशलाका प्राप्त होती है । इसीप्रकार पुनः पुनः करने पर जगश्रेणीके

लभन्ति । तं जहा— सेटिवारसवग्गमूलगुणिदपढमपुढविक्खंभस्सुचिमेत्तद्वानं गंतूण जदि एगा अवहारकालपक्खेवसलागा लभदि तो सामण्णअवहारकालम्हि केत्तियाओ लभामो त्ति पढमपुढविक्खंभस्सुचिगुणिदसेटिवारसवग्गमूलेण सामण्णअवहारकालम्हि भागे हिदे विदियपुढविद्वमस्सिऊणुप्पण्णपक्खेवसलागाओ सव्वाओ आगच्छंति । एदाओ पुध सामण्णअवहारकालस्स पक्खे विरलिय सामण्णअवहारकालमेत्तविदियपुढविद्वे समखंड करिय दिण्णे रूवं पडि पढमपुढविमिच्छाइट्टिद्ववपमाणं होऊण पावदि । एवं चेव सामण्णअवहारकालमेत्तदियादिपंचपुढविद्ववाणि अस्सिऊण तासिं तासिं पुढवीणं

असंख्यातवें भागमात्र अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाएं प्राप्त होती हैं । जैसे— जगश्रेणीके बारहवें वर्गमूलसे प्रथम पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीको गुणित करके जो लब्ध आवे तन्मात्र स्थान जाकर यदि एक अवहारकाल प्रक्षेपशलाका प्राप्त होती है तो सामान्य अवहारकालमें कितनी प्रक्षेपशलाकाएं प्राप्त होंगी, इसप्रकार त्रैराशिक करके प्रथम पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीसे गुणित जगश्रेणीके बारहवें वर्गमूलका सामान्य अवहारकालमें भाग देने पर दूसरी पृथिवीका आश्रय करके उत्पन्न हुई संपूर्ण प्रक्षेप शलाकाएं आ जाती हैं ।

उदाहरण— $8 \times \frac{193}{128} = \frac{193}{16}$; $\frac{32768}{1} \div \frac{193}{16} = \frac{108448}{193}$ दूसरी पृथिवीके आश्रयसे उत्पन्न हुई प्रक्षेप अवहारकाल शलाकाएं ।

इन अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाओंको पृथक् रूपसे सामान्य अवहारकालके पासमें विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर सामान्य अवहारकालमात्र अर्थात् जितना सामान्य अवहारकालका प्रमाण हो उतनीवार स्थापित दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्रथम पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है ।

उदाहरण—ऊपर जो $5833 \frac{1}{2}$ प्रक्षेप अवहारकाल आया है उसका विरलन करके विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सामान्य अवहारकालमात्र अर्थात् सामान्य अवहारकालगुणित द्वितीय पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यको देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति प्रथम पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्य प्राप्त होता है, जो सामान्य अवहारकालगुणित द्वितीय पृथिवीके द्रव्यमें उक्त प्रक्षेप अवहारकालका भाग देने पर भी आ जाता है । यथा—

$$32768 \times 16328 = 536400928; \quad 536400928 \div \frac{108448}{193}$$

$$= 96616 \text{ प्र. पृ. मि. द्रव्य.}$$

इसीप्रकार सामान्य अवहारकालमात्र अर्थात् जितना सामान्य अवहारकालका प्रमाण हो उतनीवार तीसरी आदि पांच पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका आश्रय लेकर उन उन

पक्खेवअवहारकालसलागाओ आणेयव्वाओ । णवरि विसेसो सेट्ठिदसमवग्गमूलगुणिद-
पठमपुढविक्खंमसूईए सामण्णअवहारकालमिह भागे हिदे तदियपुढविअवहारकाल-
पक्खेवसलागाओ आगच्छंति । एदाओ पुव्विह्लदोण्हं विरलणाणं पस्से विरलिय सामण्ण-
अवहारकालमेत्ततदियपुढविदव्वं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि पठमपुढविदव्वपमाणं
पावदि । पठमपुढविक्खंमसूचिगुणिदसेट्ठिअट्टमवग्गमूलेण सामण्णअवहारकालमिह भागे
हिदे चउत्थपुढविअवहारकालपक्खेवसलागाओ आगच्छंति । ताओ वि पुव्विह्लतिण्हं
विरलणाणं पस्से विरलिय सामण्णअवहारकालमेत्तचउत्थपुढविमिच्छाइड्ढिदव्वं समखंडं

पृथिवियोंकी अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाएं ले आना चाहिये। केवल इतनी विशेषता है कि जगध्रेणीके दशवें वर्गमूलसे प्रथम पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका सामान्य अवहारकालमें भाग देने पर तीसरी पृथिवीका आश्रय करके अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाएं आ जाती हैं।

$$\text{उदाहरण—} ८ \times \frac{१९३}{१२८} = \frac{१९३}{१६}; ३२७६८ \div \frac{१९३}{१६} = \frac{५२४२८८}{१९३} \text{ तीसरी पृथिवीके}$$

आश्रयसे उत्पन्न हुई प्र. अ. श.।

इन प्रक्षेप अवहारकाल शलाकाओंको पूर्वोक्त दोनों विरलनोंके पासमें विरलित करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर सामान्य अवहारकालमात्र अर्थात् सामान्य अवहारकाल गुणित तीसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्रथम पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है।

$$\text{उदाहरण—} ३२७६८ \times ८१९.२ = २६८४३५४५६;$$

$$२६८४३५४५६ \div \frac{५२४२८८}{१९३} = ९८८१६ \text{ प्र. पृ. मि. द्रव्य.}$$

प्रथम पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीसे जगध्रेणीके अष्टम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका सामान्य अवहारकालमें भाग देने पर चौथी पृथिवीके आश्रयसे उत्पन्न हुई अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाएं आ जाती हैं।

$$\text{उदाहरण—} १६ \times \frac{१९३}{१२८} = \frac{१९३}{८}; ३२७६८ \div \frac{१९३}{८} = \frac{२६२१४४}{१९३} \text{ चौथी पृथिवीके}$$

आश्रयसे उत्पन्न हुई प्रक्षेप अवहारकाल शलाकाएं।

चौथी पृथिवीके आश्रयसे उत्पन्न हुई उन प्रक्षेप अवहारकाल शलाकाओंको पूर्वोक्त तीन विरलनोंके पासमें विरलित करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर सामान्य अवहारकालमात्र अर्थात् सामान्य अवहारकालगुणित चौथी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्रथम पृथिवीके

करिय दिण्णे रूवं पडि एदं पढमपुढविदव्वपमाणं होदि । पुणो पढमपुढविविक्खंभसूचि-
गुणिदसेदिछट्टुमवग्गमूलेण सामण्णअवहारकालमिह भागे हिदे पंचमपुढविपक्खेवअवहार-
कालो आगच्छदि । तं पुव्विल्लचउण्हं विरलणाणं पस्से विरलिय सामण्णअवहारकालमेत्तपंचम-
पुढविदव्वं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि पढमपुढविमिच्छाइट्टिदव्वं पावदि । पुणो पढम-
पुढविविक्खंभसूचिगुणिदसेदितदियवग्गमूलेण सामण्णअवहारकालमिह भागे हिदे छट्टुपुढवि-
पक्खेवअवहारकालो आगच्छदि । एदं पि पुव्विल्लपंचण्हं विरलणाणं पासे विरलिय सामण्णअव-

मिध्याहृष्टि द्रव्यका प्रमाण होता है ।

उदाहरण— $३२७६८ \times ४०९६ = १३४२१७७२८$;

$$१३४२१७७२८ \div \frac{२६२१४४}{१९३} = ९८८१६ \text{ प्र. पृ. मि. द्रव्य.}$$

अनन्तर प्रथम पृथिवीकी विष्कंभसूचीसे जगश्रेणीके छठे वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका सामान्य अवहारकालमें भाग देने पर पांचवी पृथिवीके आश्रयसे उत्पन्न हुई प्रक्षेप अवहारकाल शलाकार्ण आती है ।

उदाहरण— $३२ \times \frac{१९३}{१२८} = \frac{१९३}{४}$; $३२७६८ \div \frac{१९३}{४} = \frac{१३१०७२}{१९३}$ पांचवी पृथिवीका

आश्रय करके उत्पन्न हुई प्रक्षेप अवहारकाल शलाकार्ण ।

पांचवी पृथिवीके आश्रयसे उत्पन्न हुई उन प्रक्षेप अवहारकाल शलाकाओंको पूर्वोक्त चारों विरलनोंके पासमें विरलित करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर सामान्य अवहारकालमात्र अर्थात् सामान्य अवहारकालगुणित पांचवी पृथिवीके द्रव्यको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर प्रथम पृथिवीके मिध्याहृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है ।

उदाहरण— $३२७६८ \times २०४८ = ६७१०८८६४$;

$$६७१०८८६४ \div \frac{१३१०७२}{१९३} = ९८८१६ \text{ प्र. पृ. मि. द्रव्य.}$$

अनन्तर प्रथम पृथिवीकी विष्कंभसूचीसे जगश्रेणीके तृतीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका सामान्य अवहारकालमें भाग देने पर छठी पृथिवीके आश्रयसे उत्पन्न हुई प्रक्षेप अवहारकाल शलाकार्ण आती है ।

उदाहरण— $६४ \times \frac{१९३}{१२८} = \frac{१९३}{२}$; $३२७६८ \div \frac{१९३}{२} = \frac{६५५३६}{१९३}$ छठी पृथिवीके

आश्रयसे उत्पन्न हुई प्रक्षेप अवहारकाल शलाकार्ण ।

छठी पृथिवीके आश्रयसे उत्पन्न हुई इन प्रक्षेप अवहारकाल शलाकाओंको पूर्वोक्त पांच विरलनोंके पासमें विरलित करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर सामान्य अवहारकालमात्र अर्थात् सामान्य अवहारकाल गुणित छठी पृथिवीके मिध्याहृष्टि द्रव्यको

हारकालमेत्तच्छुद्धपुढविद्वं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि एदं पि पढमपुढविमिच्छाइडि-
द्ववपमाणेण पावदि। पुणो पढमपुढविमिच्छाइडिविक्खं भसूचिगुणिदसेडिविदियवग्गमूलेण
सामणअवहारकालम्हि भागे हिदे सत्तमपुढविपक्खेवअवहारकालो आगच्छदि। तं
पुव्विल्लुल्लहं विरलणाणं पासे विरलिय सामणअवहारकालमेत्तसत्तमपुढविमिच्छाइडिद्वं
समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि पढमपुढविमिच्छाइडिद्ववपमाणेण पावदि। एदाओ सत्त
वि विरलणाओ घेत्तूण पढमपुढविमिच्छाइडिअवहारकालो होदि।

तेसिं सत्तहं पि अवहारकालाणं मेलावणविहाणं बुच्चदे। तं जहा— सत्तमपुढवि-
पक्खेवअवहारकालो सगपमाणेण एको हवदि। सत्तमपुढविपक्खेवअवहारकालपमाणेण
छुद्धपुढविपक्खेवअवहारकालो सेडितदियवग्गमूलमेत्तो हवदि। पंचमपुढविपक्खेवअवहार-

समान खंड करके देयरूपसे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्रथम पृथिवीके
मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है।

$$\text{उदाहरण—} ३२७६८ \times १०२४ = ३३५५४४३२;$$

$$३३५५४४३२ \div \frac{६५५३६}{१९३} = ९८८१६ \text{ प्र. पृ. मि. द्र.}$$

अनन्तर प्रथम पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीसे जगश्रेणीके दूसरे वर्गमूलको
गुणित करके जो लब्ध आवे उसका सामान्य अवहारकालमें भाग देने पर सातवीं पृथिवीके
आश्रयसे उत्पन्न हुई प्रक्षेप अवहारकाल शलाकार्थ आती हैं।

$$\text{उदाहरण—} १२८ \times \frac{१९३}{१२८} = १९३; ३२७६८ \div १९३ = \frac{३२७६८}{१९३} \text{ सातवीं पृथिवीके}$$

आश्रयसे उत्पन्न हुई प्रक्षेप अवहारकाल शलाकार्थ।

सातवी पृथिवीके आश्रयसे उत्पन्न हुई इन प्रक्षेप अवहारकाल शलाकाओंको पूर्वोक्त
छहों विरलनोंके पासमें विरलित करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर सामान्य
अवहारकालमात्र अर्थात् सामान्य अवहारकाल गुणित सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यको
समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्रथम पृथिवीके
मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है।

$$\text{उदाहरण—} ३२७६८ \times ५१२ = १६७७७२१६;$$

$$१६७७७२१६ \div \frac{३२७६८}{१९३} = ९८८१६ \text{ प्र. पृ. मि. द्र.}$$

इन सातों विरलनोंको ग्रहण करके भी प्रथम पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका अवहार-
काल होता है। आगे उन्हीं सातों अवहारकालोंके मिलानेकी विधिका कथन करते हैं। वह
इसप्रकार है—

सातवीं पृथिवीके आश्रयसे उत्पन्न हुआ प्रक्षेप अवहारकाल अपने प्रमाणसे एक है
($\frac{३३७६८}{१९३} = १$ पिंडरूप) सातवीं पृथिवीके प्रक्षेपरूप अवहारकालकी अपेक्षा छठी पृथिवीका

कालो सत्तमपुढविपक्खेवअवहारकालपमाणेण सेदितदियवग्गमूलमादिं काऊण जाव
 छट्ठमवग्गमूलो त्ति चउण्हं वग्गाणं अण्णोण्णब्भासेणुप्पण्णरासिमेत्तो हवदि । चउत्थ-
 पुढविपक्खेवअवहारकालो सत्तमपुढविपक्खेवअवहारपमाणेण सेदितदियवग्गमूलमादिं
 काऊण जाव अट्ठमवग्गमूलो त्ति ताव लण्णं वग्गाणं अण्णोण्णब्भासेणुप्पण्णरासिमेत्तो
 हवदि । तदियपुढविपक्खेवअवहारकालो सत्तमपुढविपक्खेवअवहारपमाणेण सेदितदिय-
 वग्गमूलमादिं काऊण जाव दसमवग्गमूलो त्ति ताव अट्ठण्हं वग्गाणं अण्णोण्णब्भासेणु-
 प्पण्णरासिमेत्तो हवदि । विदियपुढविपक्खेवअवहारकालो सत्तमपुढविपक्खेवअवहार-
 पमाणेण सेदितदियवग्गमूलप्वहुडि दसण्हं वग्गाणमण्णोण्णब्भासेणुप्पण्णरासिमेत्तो हवदि ।
 सामण्णअवहारकालो सत्तमपुढविपक्खेवअवहारकालपमाणेण पढमपुढविपक्खंभसूचि-
 गुणिदसेदिविदियवग्गमूलमेत्तो हवदि । पुणो एदाओ सच्चसलागाओ एगडं करिय
 सत्तमपुढविपक्खेवअवहारकालं गुणिदे पढमपुढविमिच्छाइडिअवहारकालो होदि ।

अवहारकाल जगश्रेणीके तृतीय वर्गमूलमात्र होता है ($2^3 \times 2^3 = 2^6 = 2$) पांचवीं पृथिवीका प्रक्षेप
 अवहारकाल सातवीं पृथिवीके प्रक्षेपरूप अवहारकालकी अपेक्षा जगश्रेणीके तीसरे वर्गमूलसे
 लेकर छठे वर्गमूलपर्यन्त चार वर्गोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो तन्मात्र है
 ($2^3 \times 2^3 = 4$) चौथी पृथिवीका प्रक्षेप अवहारकाल सातवीं पृथिवीके प्रक्षेपरूप अवहार-
 कालकी अपेक्षा जगश्रेणीके तीसरे वर्गमूलसे लेकर आठवें वर्गमूलपर्यन्त छह वर्गोंके परस्पर
 गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो तन्मात्र है ($2^3 \times 2^3 = 8$) । तीसरी पृथिवीका प्रक्षेप
 अवहारकाल सातवीं पृथिवीके प्रक्षेपरूप अवहारकालकी अपेक्षा जगश्रेणीके तीसरे वर्गमूलसे
 लेकर दशवें वर्गमूलपर्यन्त आठ वर्गोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो तन्मात्र है
 ($2^3 \times 2^3 = 16$) । दूसरी पृथिवीका प्रक्षेप अवहारकाल सातवीं पृथिवीके प्रक्षेपरूप
 अवहारकालकी अपेक्षा जगश्रेणीके तीसरे वर्गमूलसे लेकर दश वर्गोंके परस्पर गुणा करनेसे
 जो राशि उत्पन्न हो तन्मात्र है ($2^3 \times 2^3 = 32$) । सामान्य अवहारकाल सातवीं पृथिवीके
 प्रक्षेपरूप अवहारकालके प्रमाणकी अपेक्षा प्रथम पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीसे
 जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उतना है ($12 \times 2^3 = 192$) ।

अनन्तर इन सर्व शलाकाओंको एकत्रित करके उससे सातवीं पृथिवीके प्रक्षेप अवहार-
 कालके गुणित करने पर पहली पृथिवीका मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है ।

उदाहरण— $1 + 2 + 4 + 8 + 16 + 32 + 192 = 245$;

$$\frac{245}{192} \times 192 = \frac{4608}{192} \text{ प्र. पृ. मि. अव.}$$

अहवा ताहि चैव सलागाहि समुदिदाहि पढमपुढविसामणविकखंभसूचीहि अण्णोण्णभत्थाहि गुणिदसेटिविदियवग्गमूलमोवट्टिय सेटिम्हि भागे हिदे पढमपुढविमिच्छाइट्टिअवहारकालो आगच्छदि । अहवा छण्हं पुढवीणं सत्तमपुढविपक्खेवअवहारकालपमाणेण कयसव्वसलागाहि सेटिविदियवग्गमूलमोवट्टिय अण्णोण्णभत्थपढमपुढविसामण्णेरइयविकखंभसूईहि गुणिय जगसेटिम्हि भागे हिदे सव्वत्थुप्पण्णपक्खेवअवहारकालो आगच्छदि । तेण सव्वत्थुप्पण्णअवहारकालेण सामण्णेरइयअवहारकालम्हि भागे हिदे जं भागलद्धं तेण सामण्णेरइयविकखंभसूईं गुणिदे पुणो तं रासिं तेणेव गुणगारेण, रूवाहिणोवट्टिय जगसेटिम्हि भागे हिदे पढमपुढविअवहारकालो आगच्छदि ।

अथवा, प्रथम पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची और सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची इन दोनोंके परस्पर गुणा करनेसे जो लब्ध आवे उससे जगश्रेणीके द्वितीय वर्ग-मूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उसे एकत्रित की हुई पूर्वोक्त शलाकाओंसे अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसका जगश्रेणीमें भाग देने पर पहली पृथिवीका मिथ्यादृष्टि जीव-राशिसंबन्धी अवहारकाल आता है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{१९३}{१२८} \times २ = \frac{१९३}{६४}; \quad १२८ \times \frac{१९३}{६४} = ३८६; \quad ३८६ \div २५६ = \frac{१९३}{१२८};$$

$$६५५३६ \div \frac{१९३}{१२८} = \frac{८३८८६०८}{१९३} \text{ प्र. पु. मि. अ.}$$

अथवा, सातवीं पृथिवीके प्रक्षेप अवहारकालके प्रमाणकी अपेक्षा छह पृथिवियोंके आश्रयसे उत्पन्न हुए प्रक्षेप अवहारकालकी जो सर्व शलाकाएं की गईं उनसे जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसको प्रथम पृथिवी और सामान्य नारकियोंकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचियोंके परस्पर गुणा करनेसे उत्पन्न हुई राशिसे गुणित करके जो लब्ध आवे उसका जगश्रेणीमें भाग देने पर सर्वत्र उत्पन्न हुए प्रक्षेप अवहारकालका प्रमाण आता है । सर्वत्र उत्पन्न हुए उस प्रक्षेप अवहारसे सामान्य मिथ्यादृष्टि नारकियोंके अवहारकालके भाजित करने पर जो भाग लब्ध आवे उससे सामान्य मिथ्यादृष्टि नारकियोंकी विष्कंभसूचीके गुणित करने पर अनन्तर उस गुणित राशिको एक अधिक उसी पूर्वोक्त गुणकारसे अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसका जगश्रेणीमें भाग देने पर प्रथम पृथिवीका मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकाल आता है ।

$$\text{उदाहरण—} १२८ \div ६३ = \frac{१२८}{६३}; \quad २ \times \frac{१९३}{१२८} = \frac{३८६}{१२८}; \quad \frac{१२८}{६३} \times \frac{३८६}{१२८} = \frac{३८६}{६३}$$

$$\frac{६५५३६}{१} \div \frac{३८६}{६३} = \frac{२०६४३८४}{१९३} \text{ प्रक्षेप अवहारकाल ।}$$

$$३२७६८ \div \frac{२०६४३८४}{१९३} = \frac{१९३}{६३}; \quad २ \times \frac{१९३}{६३} = \frac{३८६}{६३}; \quad १ + \frac{१९३}{६३} = \frac{२५६}{६३}$$

अहवा पढमपुढाविविक्खंभसूईए सामण्णणेइयविविक्खंभसूइमोवट्टिदे एगरूवमेगरूवस्स असंखेज्जदिभागो आगच्छदि । तस्स एगरूवासंखेज्जदिभागस्स को पडिभागो ? किंचूणसेटिवारसवग्गमूलगुणिदपढमपुढाविविक्खंभसूची पडिभागो । पुणो एदाओ दो रासीओ पुध मज्जे इविय तेरासियं कायव्वं । तं जहा— सामण्णणेइयरासिम्हि जदि एगरूवं एगरूवस्स असंखेज्जदिभागो च पढमपुढाविमिच्छाइट्टिअवहारकालो लब्धदि तो सामण्णणेइयअवहारकालमेत्तसामण्णणेइयमिच्छाइट्टिरासिम्हि किं लभामो त्ति सरिसमवणिय सामण्णणेइयमिच्छाइट्टिअवहारकालेण एगरूवमेगरूवस्स असंखेज्जदिभागं गुणिदे पढमपुढाविमिच्छाइट्टिअवहारकालो आगच्छदि ।

$$\frac{३८६}{६३} \div \frac{२५६}{६३} = \frac{३८६}{२५६}; \quad ६५५३६ \div \frac{३८६}{२५६} = \frac{८३८८६०८}{१९३} \text{ प्र. पृ. मि. अव.}$$

अथवा, प्रथम पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीसे सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीके अपवर्तित करने पर एक और एकका असंख्यातवां भाग लब्ध आता है ।

$$\text{उदाहरण—} २ \div \frac{१९३}{१२८} = \frac{२५६}{१९३} = १ \frac{६३}{१९३}$$

शंका—उस एकके असंख्यातवें भागके लानेके लिये प्रतिभाग क्या है ?

समाधान—जगश्रेणीके कुछ कम बारहवें वर्गमूलसे गुणित प्रथम पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची एकके असंख्यातवें भागके लानेके प्रतिभाग है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{१९३}{१२८} \times \frac{१२८}{६३} = \frac{१९३}{६३} \text{ प्रतिभाग ।}$$

अनन्तर इन दो राशियोंको पृथक् रूपसे मध्यमें स्थापित करके त्रैराशिक करना चाहिये । वह इसप्रकार है— सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि राशिमें प्रथम पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि जीवोंका अवहारकाल यदि एक और एकका असंख्यातवां भाग प्राप्त होता है तो सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकालमात्र अर्थात् सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकालगुणित सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि राशिमें कितना प्राप्त होगा, इसप्रकार सदृश राशि अंश और हररूप सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिका अपनयन करके सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे एक और एकके असंख्यातवें भागको गुणित करने पर प्रथम पृथिवीके मिथ्यादृष्टि जीवराशिका अवहारकाल आता है ।

उदाहरण—यहां १३१०७२ प्रमाण नारक मिथ्यादृष्टि राशि प्रमाणराशि है, $\frac{३५६}{६३}$ फलराशि है और सामान्य अवहारकाल ३२७६८ गुणित सामान्य नारक राशि १३१०७२ इच्छाराशि है । इसलिये इच्छाराशि और फलराशिका गुणा करके जो लब्ध आवे उसमें प्रमाण राशिका भाग देने पर प्रथम पृथिवीका मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आ जाता है । यथा—

$$\frac{३२७६८ \times १३१०७२ \times २५६}{१३१०७२ \times १९३} = \frac{८३८८६०८}{१९३} \text{ प्र. पृ. मि. अ-}$$

अहवा पढमपुढविमिच्छाइड्डिअवहारकालो अण्णेण पयारेण आणिज्जेदे । तं जहा-
 छट्टमपुढविअवहारकालं विरलेऊण एकेकस्स रूवस्स जगसेटिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं
 पडि छट्टमपुढविमिच्छाइड्डिद्वं पावदि । पुणो तत्थ एगरूवधरिदछट्टपुढविद्वं सत्तम-
 पुढविद्वेण भागे हिदे सेटितदियवग्गमूलमागच्छदि । तं विरलेऊण छट्टपुढविद्वं
 समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि सत्तमपुढविद्वं पावदि । तं कमेण उवरिमविरलण-
 छट्टमपुढविद्वस्सुवरि सुण्णट्ठाणं मोत्तूण दिण्णे रूवं पडि छट्ट-सत्तमपुढविद्वपमाणं
 पावदि हेट्टिमविरलणरूवाहियमेत्तट्ठाणं भंतूण एगरूवस्स परिहाणी च लब्भदि । पुणो
 उवरिमअणंतरछट्टपुढविद्वं हेट्टिमविरलणाए समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि सत्तम-
 पुढविद्वपमाणं पावदि । तं घेत्तूण उवरि सुण्णट्ठाणं मोत्तूण छट्टमपुढविद्वस्सुवरि दिण्णे
 हेट्टिमविरलणमेत्तरूवं पडि छट्ट-सत्तमपुढविद्वपमाणं होदि हेट्टिमविरलणरूवाहिय-

हर और अंशरूप सदशका अपनयन करने पर उक्त उदारणका निम्नरूप होता है—

$$\frac{२५६}{१९३} \times ३२७६८ = \frac{८३८६०८}{१९३} \text{ प्र. पू. मि. अ.}$$

अथवा, प्रथम पृथिवीका मिथ्यादृष्टि अवहारकाल दूसरे प्रकारसे लाते हैं। वह इसप्रकार है- छठवीं पृथिवीके अवहारकालको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति जगश्रेणीको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति छठवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है। अनन्तर वहाँ एक विरलनके प्रति प्राप्त छठवीं पृथिवीके द्रव्यको सातवीं पृथिवीके द्रव्यसे भाजित करने पर जगश्रेणीका तीसरा वर्गमूल लब्ध आता है। आगे उस लब्ध राशिका विरलन करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति छठवीं पृथिवीके द्रव्यको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति सातवीं पृथिवीका द्रव्य प्राप्त होता है। उस अधस्तन विरलनके प्रति प्राप्त सातवीं पृथिवीके द्रव्यको उपरिम विरलनमें छठवीं पृथिवीके द्रव्यके ऊपर शून्य स्थानको (उपरिम विरलनके जिस स्थानका द्रव्य अधस्तन विरलनमें दिया है उसे) छोड़कर क्रमसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति छठवीं और सातवीं पृथिवीके द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है और एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर एककी हानि प्राप्त होती है। पुनः उपरिम विरलनके अनन्तर स्थान (जहाँ तक सातवीं पृथिवीका द्रव्य दिया है उसके आगेके स्थान) के प्रति प्राप्त छठवीं पृथिवीके द्रव्यको अधस्तन विरलनमें समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति सातवीं पृथिवीके द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है। उसे लेकर उपरिम विरलनमें शून्यस्थानको (जिस स्थानका द्रव्य अधस्तन विरलनमें दिया है उसे) छोड़कर छठवीं पृथिवीके द्रव्यके ऊपर देने पर उपरिम विरलनके अधस्तन विरलनमात्र स्थानोंके प्रति छठवीं और सातवीं पृथिवीके द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है और उपरिम विरलनमें एक अधिक

मेसद्वाणं गंतूण एगरूवस्स परिहाणी च लब्भदि । एवं पुणो पुणो कायव्वं जाव उवरिम-
विरलणा परिसमत्तेत्ति । एत्थ पुणं हेट्ठिम-उवरिमविरलणाओ सरिसाओ त्ति एगमवि रूवं
ण परिहायदि । पुणो एत्थ एत्तियं परिहायदि त्ति बुच्चदे । तं जहा- हेट्ठिमविरलण
रूवाहियमेत्तद्वाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणम्हि किं
परिहाणिं लभामो त्ति रूवाहियसेट्ठितदियवग्गमूलेण सेट्ठितदियवग्गमूले भागे हिदे एग-
रूवस्स असंखेज्जभागा आगच्छंति त्ति किंनूणेगरूवं सरिसच्छेदं काळण तदियवग्ग-
मूलम्हि अवणिदे सेट्ठिविदियवग्गमूलं रूवाहियसेट्ठितदियवग्गमूलेण भजिदएगभागो
छट्ठ-सत्तमपुढवीमिच्छाइड्ढिदव्वणं भागहारो होदि । तेण जगसेट्ठिम्हि भागे हिदे छट्ठ-
सत्तमपुढविमिच्छाइड्ढिदव्वं होदि ।

पुणो सेट्ठिछट्ठमवग्गमूलं विरलिय जगसेट्ठिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि

अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर एककी हानि होती है। इसप्रकार जब तक उपरिम
विरलन समाप्त होवे तब तक पुनः पुनः यही विधि करते जाना चाहिये। परंतु यहां अधस्तन
और उपरिम विरलन समान हैं, इसलिये एक भी विरलनांककी हानि नहीं होती है। फिर भी
यहां इतनी हानि होती है आगे उसीको बतलाते हैं। वह इसप्रकार है- उपरिम विरलनमें एक
अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर यदि एककी हानि प्राप्त होती है तो संपूर्ण उपरिम
विरलनमें कितनी हानि प्राप्त होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करके जगश्रेणीके एक अधिक तृतीय
वर्गमूलसे जगश्रेणीके तृतीय वर्गमूलके भाजित करने पर एकके असंख्यात बहुभाग प्राप्त
होते हैं, इसलिये कुछ कम एकको समान छेद करके तृतीय वर्गमूलमेंसे घटा देने पर
जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलको जगश्रेणीके एक अधिक तृतीय वर्गमूलसे भाजित करके जो एक
भाग लब्ध आवे वह छठी और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका भागहार होता है। उक्त
भागहारसे जगश्रेणीके भाजित करने पर छठी और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका
प्रमाण होता है।

उदाहरण—१०२४ १०२४
१ १ ६४ वारः

$$१०२४ \div ५१२ = २$$

$$५१२ \quad ५१२$$

$$१ \quad १$$

$$६५५३६ \div \frac{१२८}{३} = १५३६.$$

यदि १ अधिक अधस्तन विरलनमात्र अर्थात्
३ स्थान जाकर उपरिम विरलनमें एककी
हानि प्राप्त होती है तो संपूर्ण उपरिम विर-
लनोंमें कितने विरलनोंकी हानि प्राप्त होगी,

इसप्रकार त्रैराशिक करने पर २१३ की हानि

प्राप्त होती है। इसे उपरिम विरलन ६४ मेंसे घटा देने पर ४२३ आते हैं। इसका जग-
श्रेणीमें भाग देने पर १०२४+५१२=१५३६ प्रमाण छठी और सातवीं पृथिवीका द्रव्य आता है।

अनन्तर जगश्रेणीके छठे वर्गमूलको विरलित करके और विरलित राशिके प्रत्येक

१ प्रतिषु ' गुण ' इति पाठः ।

२ प्रतिषु ' जगभागो ' इति पाठः ।

पंचमपुढविमिच्छाइद्विद्वयपमाणं पावेदि । पुणो छड्ड-सत्तमपुढविमिच्छाइद्विद्वेहि पंचम-
पुढविमिच्छाइद्विद्वयमिह भागे हिदे सेदितदियवग्गमूलादीणं हेड्डा चउण्हं वग्गाणं
अण्णोण्णवभासेणुपण्णरासिं रूवाहियसेदितदियवग्गमूलेण खंडिदेयखंडमागच्छदि । पुणो
वि तं विरलेऊण उवरिमविरलणेगरूवधरिदपंचमपुढविद्वयं समखंडं करिय दिण्णे रूवं
पडि छड्ड-सत्तमपुढविमिच्छाइद्विद्वयपमाणं पावेदि । पुणो तमुवरिमविरलणमिह सुण्णट्टाणं
मोत्तूण पंचमपुढविमिच्छाइद्विद्वयस्सुवरि परिवाडीए पक्खित्ते हेड्डिमविरलणमेत्तउवरिम-
विरलणरूवेसु पंचम छड्ड-सत्तमपुढविमिच्छाइद्विद्वयपमाणं पावेदि एगरूवपरिहाणी च
लब्भदि । पुणो तदणंतरउवरिमरूवोवरिद्विदपंचमपुढविमिच्छाइद्विद्वयं हेड्डिमविरलणाए
समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि छड्ड-सत्तमपुढविमिच्छाइद्विद्वयं पावेदि । पुणो तमु-
वरिमविरलणाए सुण्णट्टाणं मोत्तूण हेड्डिमविरलणमेत्तपंचमपुढविमिच्छाइद्विद्वयमिह पक्खित्ते
रूवं पडि पंचम-छड्ड-सत्तमपुढविमिच्छाइद्विद्वयं पावेदि विदियरूवपरिहाणी च लब्भदि ।
एवं पुणो पुणो कायव्वं जाव उवरिमविरलणा परिसमत्तेत्ति । एत्थ परिहीणरूवपमाण-

एकके ऊपर जगश्रेणीको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति पांचवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । अनन्तर छठी और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यप्रमाणसे पांचवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यमें भाग देने पर, जगश्रेणीके तीसरे वर्गमूलसे लेकर नीचेके चार वर्गोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसे जगश्रेणीके एक अधिक तृतीय वर्गमूलसे खंडित करने पर एक खंड आता है । पुनः उसे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर उपरिम विरलनके एकके प्रति प्राप्त पांचवीं पृथिवीके द्रव्यको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति छठी और सातवीं पृथिवीके द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । अनन्तर उपरिम विरलनमें उस शून्यस्थानको (जिसके द्रव्यको अधस्तन विरलनमें बांटा है उसे) छोड़कर पांचवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके ऊपर क्रमसे प्रक्षिप्त करने पर अधस्तन विरलनप्रमाण उपरिम विरलनके अंकों पर पांचवीं, छठी और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है और एककी हानि प्राप्त होती है । पुनः तदनन्तर उपरिम विरलनके एक अंक पर स्थित पांचवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यको अधस्तन विरलनके प्रत्येक एकके ऊपर समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति छठी और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । अनन्तर उपरिम विरलनमें उस शून्यस्थानको (जिसके द्रव्यको अधस्तन विरलनमें बांटा है उसे) छोड़कर अधस्तन विरलनप्रमाण छठी और सातवीं पृथिवीके द्रव्यको पांचवीं पृथिवीके द्रव्यमें मिला देने पर प्रत्येक एकके प्रति पांचवीं, छठी और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है और दूसरे अंककी हानि भी प्राप्त होती है । इसप्रकार जबतक उपरिम विरलन समाप्त होवे तबतक पुनः पुनः करना चाहिये । अब यहाँ पर हानिरूप विरलनोंका प्रमाण लाने हैं । वह इसप्रकार है—उपरिम विरलनमें एक अधिक अधस्तन

माणिज्जेदे । तं जहा— हेट्टिमविरलणरूवाहियमेत्तद्वानं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणमिहे केवडियरूवपरिहाणिं लभामो ति रूवाहियहेट्टिमविरलणाए जगसेट्ठिइट्टवग्गमूलमोवट्टिय लद्धं तमिहे चैव अवणिदे सेट्ठिविदियवग्गमूलं तदियादिचउण्हं वग्गणमण्णोण्णभासेणुप्पण्णरासिमिहे रूवाहियसेट्ठितदियवग्गमूलं पक्खिविय अवाहिदएगभागो तिण्हं पुढवीणं अवहारकालो होदि । तेण जगसेट्ठिमिहे भागे हिदे पंचमादि-तिण्हं हेट्टिमपुढवीणं मिच्छाइट्टिदव्वमागच्छदि ।

पुणो जगसेट्ठिमिहे अट्टमवग्गमूलं विरलेऊग जगसेट्ठिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि चउत्थपुढविमिच्छाइट्टिदव्वं पावेदि । पुणो चउत्थपुढविमिच्छाइट्टिदव्वं पंचमादि-हेट्टिमतिपुढविमिच्छाइट्टिदव्वेहि ओवट्टिय लद्धं हेट्टा विरलिय चउत्थपुढविदव्वं उवरिम-विरलणाए पढमरूवोवरि द्विदं समखंडं करिय दिण्णे पंचमादिहेट्टिमतिपुढविमिच्छाइट्टि-

विरलनमात्र स्थान जाकर यदि एककी हानि प्राप्त होती है तो संपूर्ण उपरिम विरलनोंमें कितनी हानि प्राप्त होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करके एक अधिक अधस्तन विरलनसे जगश्रेणीके छठे वर्गमूलको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसे उसी जगश्रेणीके छठे वर्गमूलमेंसे घटा देने पर जो आता है वह जगश्रेणीके तृतीय वर्गमूल आदि चार वर्गोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसमें एक अधिक तृतीय वर्गमूलको मिलाकर जो जोड़ आवे उससे जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलको भाजित करने पर जो एक भाग लब्ध आवे उतना होता है और यही पूर्वोक्त तीन पृथिवियोंका अवहारकाल है। उक्त अवहारकालसे जगश्रेणीके भाजित करने पर पांचवीं आदि तीन पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—२०४८ २०४८

$$\begin{array}{r} 1 \quad 1 \quad 32 \text{ वार;} \\ 2048 \div 1436 = 14 \\ 1436 \quad 1436 \\ 1 \quad 1 \\ \quad 2 \\ 21436 \div \frac{128}{6} = 3268 \end{array}$$

अधस्तन विरलन १३ में १ जोड़कर २३ होते हैं । यदि इतने स्थान जाकर उपरिम विरलनमें १ की हानि होती है तो संपूर्ण उपरिम विरलनमें कितनी हानि होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करने पर १३ हानिरूप अंक आते हैं । इसे उपरिम विरलन ३२ मेंसे घटा देने पर १३९ आते हैं । इसका जगश्रेणीमें भाग पर ३२६४ प्रमाण पांचवीं आदि तीन पृथिवियोंका मिथ्यादृष्टि द्रव्य आता है ।

अनन्तर जगश्रेणीके आठवें वर्गमूलको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति जगश्रेणीको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति चौथी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । पुनः चौथी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यको पांचवीं आदि नीचेके तीन पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसे नीचे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर उपरिम विरलनके प्रथम एक पर स्थित चौथी पृथिवीके द्रव्यको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर

द्व्यं पावेदि । एत्थ पुव्वं व समकरणं कादव्वं । एत्थ परिहीणरूवाणं पमाणमाणिज्जदे । तं जहा- हेट्टिमविरलणरूवाहियमेत्तद्वाणं गंतूण जदि उवरिमविरलणमिह एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणमिह केवडियरूवपरिहाणिं लभामो त्ति रूवाहियहेट्टिमविरलणाए जगसेदिअट्टमवग्गमूलमोवट्टिय लद्धं तमिह चेव अवाणिदे चउत्थ-पंचम-छट्ठ-सत्तमपुढवीणं सत्तमपुढविमिच्छाइट्टिसलागाहि जगसेदिविदियवग्गमूलमोवट्टिय चउत्थपुढविआदिहेट्टिम-मिच्छाइट्टिदव्वस्स अवहारकालो होदि । तेण जगसेदिमिह भागे हिदे चउण्हं पुढवीणं मिच्छाइट्टिदव्वमागच्छदि ।

पुणो जगसेदिदसमवग्गमूलं विरलेऊण जगसेदिं समखंडं करिय दिण्णे रूपं पडि

प्रत्येक एक पर पांचवीं आदि नीचेकी तीन पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । यहां पर समीकरण पहलेके समान कर लेना चाहिये । अब यहां पर हानिरूप अंकोंका प्रमाण लाते हैं । वह इसप्रकार है— उपरिम विरलनमें एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर यदि उपरिम विरलनमें एककी हानि प्राप्त होती है तो संपूर्ण उपरिम विरलनमें कितनी हानि प्राप्त होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करके एक अधिक अधस्तन विरलनसे जग-श्रेणीके आठवें वर्गमूलको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसे उसी जगश्रेणीके आठवें वर्गमूलमेंसे घटा देने पर जो आता है वह चौथी, पांचवीं, छठी और सातवीं पृथिवीकी सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा की गई मिथ्यादृष्टि शलाकाओंसे जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलको अपवर्तित करके जो लब्ध आता है उतना होता है । और यही चौथी आदि नीचेकी चार पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका अवहारकाल है । उक्त अवहारकालसे जगश्रेणीके भाजित करने पर चार पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—४०९६ ४०९६

१ १ १६ वार

$$४०९६ \div ३५८४ = \frac{८}{७}$$

३५८४ ५१२

१ १

७

$$६५५३६ \div \frac{१२८}{१५} = ७६८०;$$

अधस्तन विरलन १६ में १ जोड़ने पर २६ होते हैं । यदि इतने स्थान जाकर उपरिम विरलनमें १ की हानि होती है तो संपूर्ण उपरिम विरलन १६ में कितनी हानि होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करने पर $\frac{११२}{७}$ हानिरूप अंक आते हैं । इसे उपरिम विरलन १६ मेंसे घटा देने पर $\frac{१२८}{१५}$ होता है जो सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा की गई चौथी आदि चार

पृथिवियोंकी मिथ्यादृष्टि शलाकाओं १ + २ + ४ + ८ = १५ से जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूल १२८ को अपवर्तित करने पर जितना आता है उतनेके बराबर होता है । इससे ६५५३६ प्रमाण जगश्रेणीके भाजित करने पर ७६८० प्रमाण चौथी आदि चार पृथिवियोंका मिथ्यादृष्टि द्रव्य आता है ।

अनन्तर जगश्रेणीके दशवें वर्गमूलको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर जगश्रेणीको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति

तदियपुढविमिच्छाइड्ढिद्ववपमाणं पावेदि । पुणो तं तदियपुढविमिच्छाइड्ढिद्ववं हेड्ढिमचउत्थ-
पुढविमिच्छाइड्ढिद्वेण ओवड्ढिय लद्धं विरलेऊण तदियपुढविद्ववमुवरिमविरलणपढम-
रूवोवरि ड्ढिदं घेत्तूण समखंडं करिय दिण्णे चउत्थपुढविमिच्छाइड्ढिद्ववं रूवं पडि पावेदि ।
पुणो एदं उवरिमविरलणड्ढिदतदियपुढविद्ववमिह दाऊण पुवं व समकरणं करिय परि-
हाणिरूवाणि आणेयव्वाणि । तं जहा- हेड्ढिमविरलणरूवाहियमेत्तद्व्वाणं गंतूण जदि एग-
रूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणमिह केवड्ढियरूवपरिहाणिं पेच्छामो त्ति रूवाहिय-
हेड्ढिमविरलणाए सेड्ढिदसमवग्गमूलमोवड्ढिय लद्धं तमिह चेव सरिसच्छेदं काऊण अवणिदे
तदियादिपंचपुढविमिच्छाइड्ढिअवहारकालो होदि । तस्स पमाणं केत्तियं ? तदियादि-
पंचपुढवीणं सत्तमपुढविद्ववस्स सलागाहि सेड्ढिविदियवग्गमूलमिह ओवड्ढिदे जं लद्धं

तीसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है। पुनः उस तीसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यको नीचेकी चार पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके प्रमाणसे अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसका विरलन करके उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर उपरिम विरलनके प्रथम अंकके ऊपर स्थित तीसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यको ग्रहण करके और समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति चौथी आदि चार पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है। पुनः इस अधस्तन विरलनके प्रति प्राप्त द्रव्यको उपरिम विरलनके प्रति प्राप्त तीसरी पृथिवीके द्रव्यके ऊपर देकर पहलेके समान समीकरण करके हानिरूप विरलन अंक ले आना चाहिये। जैसे- उपरिम विरलनमें एक अधिक अधस्तन विरलन-मात्र स्थान जाकर यदि एककी हानि प्राप्त होती है तो संपूर्ण उपरिम विरलनमें कितनी हानि प्राप्त होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करके एक अधिक अधस्तन विरलनसे जगश्रेणीके दशवें वर्गमूलको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसे समान छेद करके जगश्रेणीके उसी दशवें वर्गमूलमेंसे अपनयन करने पर तीसरी आदि पांच पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका अवहार-काल होता है।

$$\begin{array}{r} \text{उदाहरण—} \\ \begin{array}{r} ८१९२ \quad ८१९२ \\ १ \quad १ \quad ८ \text{ वार;} \\ ८१९२ \div ७६८० = \frac{१६}{१५} \\ \begin{array}{r} ७६८० \quad ५१२ \\ १ \quad १ \\ \hline १५ \end{array} \end{array} \end{array}$$

अधस्तन विरलन $१\frac{१६}{१५}$ में १ मिला देने पर $२\frac{३२}{१५}$ होते हैं। यदि इतने स्थान जाकर उपरिम विरलनमें १ की हानि प्राप्त होती है तो उपरिम विरलनमात्र ८ स्थान जाने पर कितनी हानि होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करने पर $१\frac{३२}{३५}$ की हानि आ जाती है। इसे

उपरिम विरलन ८ मेंसे घटा देने पर $\frac{१३२}{३५}$ शेष रहते हैं।

शंका—तृतीयादि पांच पृथिवियोंके उक्त भागहारका प्रमाण कितना है ?

समाधान—तृतीयादि पांच पृथिवियोंकी सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी अपेक्षा की गई शलाकाओंसे जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलके अपवर्तित करने पर जितना लब्ध आवे

तत्तियमेत्तं । तेण जगसेटिम्हि भागे हिदे पंचपुढविमिच्छाइड्डिद्व्वमागच्छदि । पुणो सेटिवारसवग्गमूलं विरलेऊग जगसेटिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि विदियपुढविमिच्छाइड्डिद्व्वं पावेदि । हेट्टिमपंचपुढविद्व्वेण तमोवड्डिय लद्धं विरलिय उवरिमविरलणपढमरूवोवरि हेदविदियपुढविमिच्छाइड्डिद्व्वं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि तदियादिपंचपुढविमिच्छाइड्डिद्व्वं पावेदि । तमुवरिमविरलणोवरि ड्डिदविदियपुढविमिच्छाइड्डिद्व्वस्सुवरि पक्खिविय समकरणं करिय परिहाणिरूवाणि आणेयव्वाणि । तेसिं पमाणमेगवारेणाणज्जे । तं जहा— रूवाहियहेट्टिमविरलणमेत्तद्वाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणम्हि केवड्डियरूवपरिहाणिं पेच्छामो त्ति रूवाहियहेट्टिमविरलणाए सेटिवारसवग्गमूलमोवड्डिय लद्धं तम्हि चेव सरिसच्छेदं काऊण अवणिदे

तन्मात्र उक्त भागहारका प्रमाण है । उक्त भागहारसे जगश्रेणीके भाजित करने पर तृतीयादि पांच पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण आता है ।

$$\text{उदाहरण—} १६ + ८ + ४ + २ + १ = ३१; \quad १२८ \div ३१ = \frac{१२८}{३१};$$

$$६५५३६ \div ३१ = २१४७२ \text{ तृतीयादि पांच पृथिवियोंका मिथ्यादृष्टि द्रव्य ।}$$

अनन्तर जगश्रेणीके बारहवें वर्गमूलको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति जगश्रेणीको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । अनन्तर उस दूसरी पृथिवीके द्रव्यको नीचेकी तीसरी आदि पांच पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति उपरिम विरलनके प्रथम अंक पर स्थित दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यको समान खण्ड करके दे देने पर अधस्तन विरलनराशिके प्रत्येक एकके प्रति तीसरी आदि पांच पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । पुनः इस अधस्तन विरलनके प्रति प्राप्त द्रव्यको उपरिम विरलनके प्रति प्राप्त दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके ऊपर प्राक्षिप्त करके पहलेके समान समीकरण करके हानिरूप अंक ले आना चाहिये । आगे उन्हीं हानिरूप अंकोंका एकवारमें प्रमाण लाते हैं । जैसे—

उपरिम विरलनमें एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर यदि एककी हानि प्राप्त होती है तो संपूर्ण उपरिम विरलनमें कितनी हानि प्राप्त होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करके एक अधिक अधस्तन विरलनके प्रमाणसे जगश्रेणीके बारहवें वर्गमूलको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसे समान छेद करके उसी जगश्रेणीके बारहवें वर्गमूलमेंसे घटा देने पर द्वितीयादि छह पृथिवियोंका अवहारकाल प्राप्त होता है ।

विदियादिछप्पुठविअवहारकालो होदि । तस्स पमाणं केत्तियं ? विदियादिछप्पुठवीणं सत्तम-
पुठविमिच्छाइड्डिसलागाहि जगसेट्ठिविदियवग्गमूलमवहिदएगभागो हवदि । तेण जगसेट्ठिम्हि
भागे हिदे छप्पुठविमिच्छाइड्डिदव्वमागच्छदि । तं जगसेट्ठिणा खंडेऊणेगखंडं सामण्णणेरइय-
विक्खंभसूचिम्हि अवणिय सेसेण जगसेट्ठिम्हि भागे हिदे पढमपुठविअवहारकालो आग-
च्छदि । अहवा पुव्वमाणिदछप्पुठविदव्वेण सामण्णणेरइयअवहारकालं गुणेऊण तम्हि

उदाहरण— $१६३८४ \quad १६३८४$
 $\quad \quad \quad १ \quad \quad \quad १ \quad \quad \quad ४ \text{ वार}$
 $१६३८४ \div १५८७२ = \frac{३२}{३१}$
 $\quad \quad \quad १५८७२ \quad \quad \quad ५१२$
 $\quad \quad \quad १ \quad \quad \quad १$
 $\quad \quad \quad \quad \quad \quad \quad ३१$

अधस्तन विरलन $१\frac{१}{३}$ में १ मिला देने पर $२\frac{१}{३}$ होता है । यदि इतने स्थान जाकर उपरिम विरलनमें १ की हानि होती है तो उपरिम विरलनमात्र ४ स्थान जाकर कितनी हानि प्राप्त होगी ? इसप्रकार त्रैशिक करने पर $१\frac{२४}{३१}$ हानिरूप अंक आ जाते हैं ।

इसे उपरिम विरलन ४ मेंसे घटा देने पर $१\frac{२४}{३१}$ प्रमाण द्वितीयादि छह पृथिवियोंका अवहार-काल होता है ।

शंका—द्वितीयादि छह पृथिवियोंके उक्त भागहारका प्रमाण कितना है ?

समाधान—सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी अपेक्षा की गई द्वितीयादि छह पृथिवियोंकी मिथ्यादृष्टि शलाकाओंसे जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलके भाजित करने पर जो एक भाग लब्ध आता है उतना द्वितीयादि छह पृथिवियोंका अवहारकाल है । उक्त भागहारसे जगश्रेणीके भाजित करने पर द्वितीयादि छह पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण आता है ।

उदाहरण— $३२ + १६ + ८ + ४ + २ + १ = ६३$; $१२८ \div ६३ = \frac{१२८}{६३}$ द्वितीयादि छह पृथिवियोंका अवहारकाल ।

$$६५५३६ \div \frac{१२८}{६३} = ३२२५६ \text{ द्वितीयादि छह पृथिवियोंका मिथ्यादृष्टि द्रव्य ।}$$

उक्त छह पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यको जगश्रेणीसे खण्डित करके जो एक खण्ड लब्ध आवे उसे सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीमेंसे घटा कर जो शेष रहे उससे जगश्रेणीको भाजित करने पर पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका अवहारकाल आता है ।

$$\text{उदाहरण—} ३२२५६ \div ६५५३६ = \frac{६३}{१२८}; \quad २ - \frac{६३}{१२८} = \frac{१९३}{१२८};$$

$$६५५३६ \div \frac{१९३}{१२८} = \frac{८३८८६०८}{१९३} \text{ प्र. पृ. मि. अव.}$$

अथवा, पहले लाये हुए छह पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके प्रमाणसे सामान्य मिथ्यादृष्टि नारकियोंके अवहारकालको गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें पहली पृथिवीके

पठमपुढविद्वेण भागे हिदे सच्चथुप्पणपक्खेवअवहारकालो आगच्छदि। तं सरिसच्छेदं काऊण सामणअवहारकालमिह पक्खित्ते पठमपुढविमिच्छाइडिअवहारकालो होदि।

एत्थ परिहाणिपक्खेवाणं सुहावगमणद्वं संदिट्ठिं वत्तइस्सामो। तं जहा— सोलस रूवाणि विरालिय वेसदळप्पणं रूवं पडि समखंडं करिय दिण्णे एक्केकस्स रूवस्स सोलस सोलस रूवाणि पावेंति। एत्थ तिण्हं रूवाणं वड्ढिमिच्छामो त्ति वड्ढिरूवेहि एगरूवधरिद- मोवड्ढिदे पंचरूवाणि सतिभागाणि आगच्छंति। ताणि हेट्ठा विरालिय एगरूवधरिद- सोलसरूवाणि समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि तिण्णि तिण्णि रूवाणि पावेंति। एग- रूवतिभागस्स एगरूवं पावेदि। तं कथं ? सकलेगरूवस्स जदि तिण्णि रूवाणि लभंति तो एगरूवतिभागस्स किं लभामो त्ति फलेण इच्छं गुणिय पमाणेण भागे हिदे एगमेव

मिथ्यादृष्टि द्रव्यके प्रमाणका भाग देने पर सब जगह उत्पन्न हुआ प्रक्षेप अवहारकाल आता है। उस प्रक्षेप अवहारकालको समान छेद करके सामान्य अवहारकालमें मिला देने पर पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका अवहारकाल होता है।

$$\text{उदाहरण—} \frac{३२७६८ \times ३२२५६}{९८८१६} = \frac{२०६४३८४}{१९३} \text{ प्र. अव.}$$

$$३२७६८ + \frac{२०६४३८४}{१९३} = \frac{८३८८६०८}{१९३} \text{ प्र. पू. मि. अव.}$$

अब यहां पर हानिरूप और प्रक्षेपरूप अंकोंके सरलतासे ज्ञान करानेके लिये संदृष्टि बतलाते हैं। वह इसप्रकार है—

सोलह अंकोंका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति दोसौ छप्पन अंकोंको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सोलह सोलह संख्या प्राप्त होती है। यहां पर हम तीन संख्याकी वृद्धि करना चाहते हैं, इसलिये वृद्धिरूप संख्या तीनसे एक विरलनके प्रति प्राप्त सोलहको अपवर्तित करने पर एक तृतीय भाग सहित पांच पूर्णांक लब्ध आते हैं। इसे पूर्व विरलनके नीचे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति एक विरलनके प्रति प्राप्त सोलहको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर विरलनराशिके प्रत्येक एकके प्रति तीन संख्या प्राप्त होती है। तथा एक तृतीयांशके प्रति एक संख्या प्राप्त होती है, क्योंकि, पूर्णांकरूप एक विरलनके प्रति यदि तीन संख्या प्राप्त होती है तो एक तृतीयांशके प्रति क्या प्राप्त होगा, इसप्रकार त्रैराशिक करके फल राशि तीनसे इच्छाराशि एक तृतीयांशको गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें प्रमाणराशि एकका भाग देने पर एक संख्या ही प्राप्त होती है।

उदाहरण—विरलन १६; देय २५६; वृद्धिरूप अंक ३;

$$\begin{array}{cccccccccccccccccccc} १६ & १६ & १६ & १६ & १६ & १६ & १६ & १६ & १६ & १६ & १६ & १६ & १६ & १६ & १६ & १६ & १६ & १६ \\ १ & १ & १ & १ & १ & १ & १ & १ & १ & १ & १ & १ & १ & १ & १ & १ & १ & १ \end{array}$$

रूवं लब्धमिदि त्ति । पुणो ताणि तिण्णि रूवाणि घेत्तूण उवरिमविरलणपंचरूवोवरि द्विद-
पंचसु सोलसेसु परिवाडीए पक्खित्ते रूवं पडि एककुणवीसरूवाणि हवंति । पुणो सत्तम-
रूवं तिण्णि भागे करिय तेसिं तिभागणं सोलसरूवाणि समखंडं करिय दिण्णे एकेकस्स
तिभागस्स सतिभागपंचरूवाणि पावेंति । पुणो एगरूवतिभागधरिदसतिभागं पंचरूवं
तत्थेव द्विविय सेस-वे-तिभागे अप्पणो धरिदरासिसहिदं पुध द्विविय पुणो सट्ठाणद्विद-
एगरूवतिभागेण धरिदसतिभागपंचरूवेषु हेद्विमविरलणाए तिभागरूवोवरि द्विद-एगरूवं
पक्खित्ते तत्थ सतिभाग-छ-रूवाणि^१ हवंति, एत्थ एगरूवपरिहाणी लद्धा । पुणो
तदर्णांतररूवधरिद-सोलसरूवाणि हेद्विमविरलणाए समखंडं करिय दिण्णे पुवं व रूवं
पडि तिण्णि तिण्णि रूवाणि पावेंति । पुणो तत्थ सकलपंचरूवोवरि द्विद-तिण्णि रूवाणि
घेत्तूण सुण्णट्ठाणं वंचिय उवरिमविरलण-पंचरूवोवरि द्विद-पंचसु सोलसेसु परिवाडीए
पक्खित्तेसु रूवं पडि एगूणवीसरूवाणि हवंति । पुणो पुव्वमाणेऊण पुध द्विविद-वे-

$$१६ ÷ ३ = ५ \frac{१}{३}; \quad \begin{array}{cccccc} ३ & ३ & ३ & ३ & ३ & १ \\ १ & १ & १ & १ & १ & १ \\ & & & & & ३ \end{array}$$

पुनः नीचेके विरलनके प्रति प्राप्त उन तीन तीन अंकोंको लेकर उपरिम विरलनके
(द्वितीयादि) पांच विरलन अंकों पर स्थित पांच सोलह अंकोंके ऊपर परिपाटी क्रमसे
दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति उन्नीस अंक प्राप्त होते हैं । पुनः सप्तम विरलनरूप एक
अंकके तीन भाग करके उन तीन भागोंके ऊपर सोलहको समान खंड करके देयरूपसे दे देने
पर प्रत्येक एक त्रिभागके प्रति एक त्रिभागसहित पांच अंक प्राप्त होते हैं । अनन्तर एक
त्रिभागके प्रति प्राप्त एक त्रिभागसहित पांच अंकोंको वहाँ पर रखकर और शेष
दो त्रिभागोंको अपने ऊपर रखी हुई राशिके साथ अलग स्थापित करके अनन्तर अपने
स्थान पर स्थित एक त्रिभागके प्रति प्राप्त एक त्रिभागसहित पांच अंकोंमें अधस्तन विरलनके
एक त्रिभागके ऊपर स्थित एकको मिला देने पर वहाँ एक त्रिभागसहित छह अंक आ
जाते हैं । इसप्रकार यहाँ एक विरलन अंककी हानि प्राप्त हुई । पुनः उसके अर्थात् सातवें
विरलनके अनन्तर एक विरलन अंक पर स्थित सोलहको अधस्तन विरलनके प्रत्येक एकके प्रति
समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर पहलेके समान अधस्तन विरलनके प्रत्येक एकके प्रति
तीन तीन अंक प्राप्त होते हैं । अनन्तर वहाँ पूर्णांक पांच विरलनरूप अंकोंके ऊपर स्थित
तीन संख्याको ग्रहण करके शून्यस्थानको (जिस आठवें स्थानके १६ को अधस्तन विरलनमें
घांटा है उसे) छोड़कर उपरिम विरलनके पांच विरलन अंकोंके ऊपर स्थित पांच सोलह
अंकोंके ऊपर क्रमसे प्रक्षिप्त कर देने पर उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके प्रति उन्नीस अंक प्राप्त
होते हैं । अनन्तर पहले लाकर अलग स्थापित दो त्रिभागोंमेंसे एक त्रिभागके ऊपर रखे हुए

१ प्रतिषु ' सरूवाणि ' इति पाठः ।

तिभागेषु एगतिभागधरिदसतिभागपंचरूवमाणेऊण तदणंतरखेत्तं द्विविय^१ एगरूवति-
भागधरिदएगरूवं तत्थ पक्खित्ते एत्थ वि सतिभाग-छ-रूवाणि हवंति, विदियरूव-
परिहाणी च लब्भदि । पुणो तदणंतररूवोवरि द्विद-सोलसरूवाणि घेत्तूण हेट्टिमविरलणाए
समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि तिण्णि तिण्णि रूवाणि पावेंति । तत्थ वेरूवधरिद-
तिण्णि रूवाणि घेत्तूण तदणंतरवेरूवधरिदसोलसरूवेषु पक्खित्तेसु एगूणवीसरूवाणि
हवंति । ताणं दोण्हं रूवाणमंते पुब्बमवणिदएगरूवतिभागधरिदसतिभागपंचरूवमाणेऊण
द्विविय तत्थ हेट्टिमविरलणाए एगरूवतिभागोवरिद्विदएगरूवं पक्खित्ते सतिभाग-छ-रूवाणि
हवंति । सेसाणि तिण्णिरूवधरिदणवरूवाणि तथा चैव अवचिद्धते । तेसिं विरलणरूवमुप्पा-

एक त्रिभागसहित पांच अंकोंको लाकर पहले रक्खे हुए एक त्रिभागसहित छह के अनन्तर
स्थापित करके और उसमें अधस्तन विरलनके एक त्रिभागके प्रति प्राप्त एकको मिला देने
पर यहां भी एक त्रिभागसहित छह अंक हो जाते हैं और दूसरे विरलन अंकोंकी हानि प्राप्त
होती है । पुनः उसके (जहांतक उपरिम विरलनमें तीन अंक दिये गये हैं उसके) अनन्तरके
विरलन अंकके ऊपर स्थित सोलह संख्याको ग्रहण करके और अधस्तन विरलनके
प्रत्येक एकके प्रति समान खंड करके दे देने पर अधस्तन विरलनके प्रत्येक एकके प्रति
तीन तीन अंक प्राप्त होते हैं । उनमेंसे दो विरलनोंके प्रति प्राप्त तीन अंकोंको ग्रहण करके
उन्हें उपरिम विरलनमें पहले जहांतक तीन अंक दिये जा चुके हैं उसके अनन्तरके दो उपरिम
विरलनोंके प्रति प्राप्त सोलह संख्यामें मिला देने पर प्रत्येक एकके प्रति उन्नीस संख्या प्राप्त
होती है । तथा पहले निकाले हुए एक त्रिभागके प्रति प्राप्त एक त्रिभागसहित पांच संख्याको
उन दो अंकोंके अन्तमें लाकर स्थापित करके उसमें अधस्तन विरलनके एक त्रिभागके प्रति
प्राप्त एक संख्याको मिला देने पर एक त्रिभागसहित छह होते हैं । अधस्तन विरलनके शेष
तीन अंकोंके प्रति प्राप्त नौ अंक उसीप्रकार स्थित रहते हैं ।

उदाहरण—

$$\begin{array}{cccccccccccccccc}
 & ३ & ३ & ३ & ३ & ३ & & ३ & ३ & ३ & ३ & ३ & & ३ & ३ \\
 \times & १६ & १६ & १६ & १६ & १६ & * & \times & १६ & १६ & १६ & १६ & १६ & \times & १६ & १६ \\
 & १ & १ & १ & १ & १ & १ & १ & १ & १ & १ & १ & १ & १ & १ & १ \\
 \hline
 & ५\frac{१}{३} & + & १ & = & ६\frac{१}{३} & & ५\frac{१}{३} & + & १ & = & ६\frac{१}{३} & & ५\frac{१}{३} & + & १ & = & ६\frac{१}{३} = १९
 \end{array}$$

यहां सातवें विरलनके तीन भाग किये और उस पर १६ को बांटा तब $५\frac{१}{३}$ प्राप्त हुआ । अनन्तर अधस्तन विरलनके $\frac{१}{३}$ के प्रति प्राप्त एक जोड़ा तब $६\frac{१}{३}$ हुआ ।

तीसरीवार अधस्तन विरलन $\frac{१}{३}$ १ १ १ १ १ ३ ३ ३ = ९ शेष रहे ।

(जिन अंकों पर × ऐसा चिन्ह है उनका द्रव्य अधस्तन विरलनमें बांटा गया है। तथा जिस पर * ऐसा चिन्ह है उसके तीन भाग करके उसका द्रव्य उन तीनों भागोंमें बांटा है।)

१ अ-आ-प्रबो: 'तदणंतरखेत्तविय' इति पाठः ।

इज्जदे । तं जहा—एगूणवीसरूवाणं जदि एगं विरलणरूवं लब्भदे तो णवण्हं रूवाणं किं लभामो ति एगूणवीसेहि फलगुणिदिच्छाए भागे हिदे एगरूवं एगूणवीस खंडाणि काऊण तत्थ णव खंडाणि आगच्छंति । अवणिदसेसाणि रूवाणि एगडे कदे तेरहरूवाणि एगरूवं एगूणवीसखंडाणि कदे णव खंडाणि च हवंति । संपहि परिहाणिरूवाणि आणिज्जंते । तं जहा—हेट्टिमविरलणरूवाहियमेत्तद्वाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो सतिभागतिण्हं रूवाणं किं लभामो ति फलगुणिदइच्छमिह पमाणेण भागे हिदे एगरूवं एगूणवीसखंडाणि कदे तत्थ दस खंडाणि लब्भंति । पुव्वलद्ध-दो-रूवाणि तत्थ पविखत्ते परिहाणिरूवाणि हवंति । अहवा सव्वहीणरूवाणि एगवारेणाणिज्जंते । तं जहा—हेट्टिमविरलणरूवाहियमेत्तद्वाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिम-

अब उन अवशिष्ट नौ अंकोंका विरलन कितना होगा यह उत्पन्न करके वतलाते हैं । वह इसप्रकार है— उन्नीस अंकोंके प्रति यदि एक विरलन प्राप्त होता है तो नौ अंकोंके प्रति कितना प्राप्त होगा, इसप्रकार त्रैराशिक करके फलराशि एकसे इच्छाराशि नौको गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें प्रमाणराशि उन्नीसका भाग देने पर एकके उन्नीस खंड करके उनमेंसे ९ खंड लब्ध आते हैं । इसप्रकार उपरिम विरलनमेंसे जितनी संख्या घट जाती है उससे शेष रहे हुए सभी अंकोंको एकत्रित करने पर पूर्णांक तेरह और एक अंकके उन्नीस खंड करके उनमेंसे नौ खंड होते हैं ।

उदाहरण—प्रमाणराशि १९; फलराशि १; इच्छाराशि ९;

$$९ \times १ = ९; ९ \div १९ = \frac{९}{१९} \text{ नौके प्रति विरलनरूपका प्रमाण ।}$$

$$१९ - २\frac{९}{१९} = १६\frac{१०}{१९} \text{ कुल विरलनरूप अंकोंका प्रमाण ।}$$

अब हानिरूप अंक लाते हैं । जैसे— एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर यदि एककी हानि प्राप्त होती है तो एक त्रिभागसहित तीन विरलनस्थानोंके प्रति क्या प्राप्त होगा, इसप्रकार त्रैराशिक करके फलराशि एकसे इच्छाराशि एक त्रिभागसहित तीन विरलनको गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें प्रमाणराशि एक अधिक अधस्तन विरलनका भाग देने पर एकके उन्नीस खंड करने पर उनमें दश खंड लब्ध आते हैं । पुनः पहले लब्ध आवे हुए दोको उसमें मिला देने पर संपूर्ण हानिरूप अंक हो जाते हैं ।

उदाहरण—प्रमाणराशि $\frac{१०}{३}$; फलराशि १; इच्छाराशि $\frac{१०}{३}$;

$$\frac{१०}{३} \times १ = \frac{१०}{३}; \frac{१०}{३} \div \frac{१०}{३} = \frac{१०}{१०}; \frac{१०}{१०} + २ = २\frac{१०}{१०} \text{ हानि अंक ।}$$

अथवा, संपूर्ण हानिरूप विरलनस्थान एकवारमें लाते हैं । जैसे— एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर यदि एककी हानि प्राप्त होती है तो उपरिम विरलनमें

१ अ. प्रती ' एवरूवं ' ; आ. का. प्रत्योः ' णवरूवं ' इति पाठः ।

विरलणम्हि किं लभामो त्ति रूवाहियहेडिमविरलणाए फलगुणिदिच्छाए भागे हिदाए सव्वपरिहीणरूवाणि आगच्छंति । ताणि उवरिमविरलणरूवेसु अवणिदे अवहारकालो होदि । एवं सव्वत्थ समकरणविहाणं जाणिऊण वत्तच्चं ।

संपहि रासिपरिहाणिविहाणं वत्तइस्सामो । तं जहा— तत्थ ताव तिण्हं रूवाणं परिहाणि उच्चदे— उवरिमविरलणरूवधरिदसोलसरूवेसु हेडिमविरलणाए सगलेगरूवधरिद-
तिणिण रूवाणि रूवं पडि अवणिय पुध द्वेयव्वाणि । संपहि उवरिमविरलणमेत्ततिणिण
रूवाणि अवणिदसेसपमाणेण कस्सामो । तं जहा— उवरिमविरलणचउरूवधरिदतिणिण
तिणिण रूवाणि एगडुं करिय पुणो पंचमरूवधरिदतिण्हं रूवाणं तिभागं घेत्तूण तत्थ
पक्खित्ते अवणिदसेसपमाणं होदि । हेडिमविरलणाए अंते एगरूवं विरलिय अणंतरूपणण

कितनी हानि प्राप्त होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करके फलराशि एकसे इच्छाराशि सोलहको गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र इच्छाराशिका भाग देने पर संपूर्ण हानिरूप विरलनस्थान आ जाते हैं । इन्हें उपरिम विरलनकी संख्यामेंसे घटा देने पर अवहारकालका प्रमाण आता है । इसीप्रकार सर्वत्र समीकरण विधानको जानकर कथन करना चाहिये ।

उदाहरण—प्रमाणराशि ६३; फलराशि १; इच्छाराशि १६.

$$१६ \times १ = १६ \quad १६ \div \frac{१९}{२} = २ \frac{१०}{१९} \text{ हानिरूप अंक ।}$$

$$१६ - २ \frac{१०}{१९} = १३ \frac{९}{१९} \text{ अवहारकाल ।}$$

अब राशिके हानिरूप विधानको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है—उस विषयमें तीन अंकोंकी हानिका कथन किया जाता है—उपरिम विरलनके प्रत्येक विरलनके प्रति प्राप्त सोलहमेंसे अधस्तन विरलनके सकल एक विरलनके प्रति प्राप्त तीन संख्याको घटा कर पृथक् स्थापित कर देना चाहिये । अब उपरिम विरलनमात्र अर्थात् सोलहवार स्थापित तीन तीन अंकोंको, उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त सोलहमेंसे तीन घटा देने पर जो शेष रहता है, उसके प्रमाणसे करते हैं । जैसे—उपरिम विरलनके चार विरलनोंके प्रति प्राप्त तीन तीन अंकोंको एकत्रित करके पुनः पांचवें विरलनके ऊपर रखे हुए तीनके त्रिभागको ग्रहण करके मिला देने पर सोलहमेंसे तीनको घटा कर जो शेष रहता है उसका प्रमाण होता है । इस अभी उत्पन्न हुए तीनको घटा कर शेष रहे हुए प्रमाणको अधस्तन विरलनके अन्तमें एकका विरलन करके उसके ऊपर दे देना चाहिये । पुनः उपरिम विरलनके चार विरलनोंके प्रति प्राप्त तीन तीन संख्याको

१ प्रतिषु 'अवणिदे सेसरूवाणं' इति पाठः ।

अवणिदसेसपमाणं दादच्चं । पुणो उवरिमविरलणम्मिह चउरूवधरिदतिणिण तिणिण
रूवाणि एगं करिय पुच्चइविदेवेतिभागम्मिह' एगं तिभागं धेत्तूण पक्खित्ते एदमवि
अवणिदसेसपमाणं होदि । एदस्स कारणेण पुच्चविरलिदएगरूवस्स पासे अवरमेगरूवं
विरलिय तस्सुवरि सो संपहि वुप्पण्णअवणिदसेसरासी दादच्चो । पुणो वि उवरिम-
विरलणचउरूवधरिदतिणिण तिणिण रूवाणि मेलाविय पुध इविय तिभागं तत्थ पक्खित्ति
एदमवि अवणिदसेसपमाणं होदि । एदस्स कारणेण पुच्चविरलिददोण्हं रूवाणं पासे अण्णेगं
रूवं विरलिय तस्सुवरि सो रासी ठवेयच्चो । पुणो अवसेसाणि तिरूवधरिदतिणिण तिणिण
रूवाणि णव भवंति । एदाणं विरलणरूवाणं पमाणमुप्पाइज्जदे । रूवूणहेट्ठिमविरलणमेत्त-
द्धाणं गंतूण जदि एगअवहारपक्खेवरूवं लब्भदि तो तिण्हं रूवाणं किं लभामो त्ति रूवूण-

एकत्रित करके पहले अलग स्थापित हुए तीनके दो त्रिभागोंमेंसे एक त्रिभागको ग्रहण करके
मिला देने पर यह भी तीनको घटाकर जो शेष रहे उसका प्रमाण होता है । इसलिये पहले
विरलन किये हुए एक विरलनके पासमें दूसरे एकको विरलित करके उसके ऊपर यह अभी
उत्पन्न हुए तीनको घटाकर शेष रही राशि दे देना चाहिये । फिर भी उपरिम विरलनके चार
विरलनोंके प्रति प्राप्त तीन तीन संख्याको मिला कर अलग स्थापित करके तीनका त्रिभाग
उसमें मिला देने पर यह भी तीन घटा कर शेष रही राशिका प्रमाण होता है । इसलिये पहले
विरलन किये हुए दो विरलनोंके पासमें और एकका विरलन करके उसके ऊपर यह राशि
स्थापित कर देना चाहिये । पुनः उपरिम विरलनके अवशिष्ट तीन विरलनोंके प्रति प्राप्त
अवशेष तीन तीन अंक मिल कर नौ होते हैं ।

उदाहरण—उपरिम विरलनके प्रत्येक १६ मेंसे ३ निकाल देने पर १३ रहते हैं । यथा—

$$\begin{array}{cccccccccccccccc} १३ & १३ & १३ & १३ & १३ & १३ & १३ & १३ & १३ & १३ & १३ & १३ & १३ & १३ & १३ & १३ \\ १ & १ & १ & १ & १ & १ & १ & १ & १ & १ & १ & १ & १ & १ & १ & १ \end{array}$$

अब १६ जगह जो ३ हैं उनको १३ रूप करनेके लिये इसप्रकार जोड़ो—

$$\begin{array}{l} ३+३+३+३+१=१३; ३+३+३+३+१=१३; ३+३+३+३+१=१३; \\ ३+३+३=९ \end{array}$$

इसप्रकार उपरिम विरलनके १६ स्थानोंमें ये ३ और मिला देने पर कुल १९ स्थान
होते हैं जिनमें प्रत्येक पर १३ प्राप्त हैं । बाकी ९ रहते हैं जिसके लिये १३ विरलन प्राप्त
होगा । इसप्रकार १९ $\frac{१}{३}$ कुल विरलन अंक आते हैं । २५६ में भाग देकर १३ लब्ध लानेके
लिये यही १९ $\frac{१}{३}$ भागहार है ।

अब इन तीन विरलनके प्रति प्राप्त नौ अंकोंका विरलन प्रमाण उत्पन्न करते हैं— एक
कम अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर यदि एक अवहारप्रक्षेपशलाका उत्पन्न होती है तो तीनके

२ प्रतिषु ' जेत्तियाभागम्मिह ' इति पाठः ।

हेट्टिमविरलणाए तिणिण रूवाणि ओवट्टिदे एगरूवं तेरहखंडाणि कदे तत्थ णव खंडाणि हवंति । एदं पुव्विल्लतिण्हं रूवाणं पासे विरलिय एदस्सुवरि णव रूवाणि दादव्वाणि । अहवा सव्वपक्खेवरूवाणि एगवारेण आणिज्जंते । तं जहा— रूवूणहेट्टिमविरलणमेत्तद्वाणं गंतूण जदि एगा अवहारपक्खेवसलागा लब्भदि तो उवरिमविरलणमिह केत्तियाओ अवहारपक्खेवसलागाओ लभामो त्ति पमाणेण इच्छाए ओवट्टिदाए सव्वाओ पक्खेवसलागाओ लब्भंति । एदाओ उवरिमविरलणमिह पक्खित्ते इच्छिदअवहारकालो होदि । एवं सव्वत्थ रासिपरिहाणिमिह जाणिऊण समकरणं कायव्वं ।

अहवा सामणअवहारकालं विरलेऊण एकेकस्स रूवस्स जगपदरं तमखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि सामणणेरइयमिच्छाइट्टिदव्वं पावेदि । तत्थ एगरूवधरिदसामणणेरइय-

प्रति क्या प्राप्त होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करके एक कम अधस्तन विरलनसे तीनको अपवर्तित करने पर एकके तेरह खंड करने पर उनमेंसे नौ खण्ड लब्ध आते हैं । इसे पूर्वोक्त तीन विरलन अंकोंके पासमें विरलित करके इसके ऊपर नौ अंक दे देना चाहिये ।

उदाहरण— $4 \frac{1}{3} - 1 = 3 \frac{1}{3}$ प्रमाणराशि; १ फलराशि; ३ इच्छाराशि ।

$3 \times 1 = 3 \div \frac{1}{3} = \frac{9}{1}$ तीन विरलनोंके प्रति तीन तीन रूपसे दिये हुए ९ अंकोंका अवहारकाल ।

अथवा, संपूर्ण प्रक्षेपरूप अवहारकालको एकवारमें लाते हैं । जैसे— एक कम अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर यदि एक अवहारकाल प्रक्षेपशलाका प्राप्त होती है तो उपरिम विरलनमें कितनी प्रक्षेपशलाकाएं प्राप्त होंगी, इसप्रकार त्रैराशिक करके फलराशि एकसे इच्छाराशि उपरिम विरलनको गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें एक कम अधस्तन विरलनमात्र प्रमाणराशिका भाग देने पर संपूर्ण अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाएं आ जाती हैं । इनको उपरिम विरलनमें मिला देने पर इच्छित अवहारकाल होता है । इसीप्रकार सर्वत्र राशिकी दानिमें जानकर समीकरण करना चाहिये ।

उदाहरण—प्रमाणराशि $3 \frac{1}{3}$; फलराशि १; इच्छाराशि १६;

$16 \times 1 = 16$; $16 \div \frac{1}{3} = \frac{48}{1}$ प्रक्षेप अवहारकाल ।

$16 + \frac{48}{3} = 32 \frac{1}{3}$ इच्छित अवहारकाल ।

अथवा, सामान्य अवहारकालका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति जगप्रतरको समान खंड करके देने पर प्रत्येक एकके प्रति सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि प्राप्त होती है ।

मिच्छाइड्ढिद्वं सत्तमपुढविमिच्छाइड्ढिद्वपमाणेण कस्सामो । तं जहा-सेट्ठिविदियवग्ग-
मूलमज्जिदजगसेटीए जदि एकं सत्तमपुढविमिच्छाइड्ढिद्वपमाणं लब्भदि तो सामण-
णेरइयमिच्छाइड्ढिद्वमिह केत्तियं लभामो त्ति फलेण इच्छं गुणिय पमाणेण भागे हिदे
विक्खं भसूचिगुणिदेसेट्ठिविदियवग्गमूलमेत्ताणि सत्तमपुढविमिच्छाइड्ढिद्वखंडाणि आग-
च्छंति । एवं सामणणेरइयभवहारकालरूवाणमुवरि ड्ढिसामणणेरइयरासी पत्तेयं पत्तेयं
सत्तमपुढविमिच्छाइड्ढिद्वपमाणेण कायव्वो । पुणो तत्थ एगरूवधरिदखंडेसु सत्तम-
पुढविमिच्छाइड्ढिद्वपमाणं एगखंडपमाणं होदि । छट्ठपुढविमिच्छाइड्ढिद्वं सेट्ठितदिय-
वग्गमूलमेत्तखंडाणि धेत्तूण भवदि । पुणो पंचमपुढविमिच्छाइड्ढिद्वं सेट्ठितदियवग्ग-
मूलादिचउवग्गमूलाणि गुणिदे तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियमेत्तखंडाणि धेत्तूण हवदि ।

उदाहरण—१३१०७२ १३१०७२ सा. ना. मि. रा.
१ १ ३२७६८ वार.

अब एक विरलनके प्रति प्राप्त सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यको सातवीं पृथिवीके
मिथ्यादृष्टि द्रव्यके प्रमाणरूपसे करके बतलाते हैं । जैसे— जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलका जग-
श्रेणीमें भाग देने पर यदि एकवार सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है तो
सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यमें कितना प्राप्त होगा, इसप्रकार त्रैराशिक करके फलराशिसे
इच्छाराशिको गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें प्रमाणराशिका भाग देने पर जगश्रेणीके
द्वितीय वर्गमूलको विष्कंभसूचीसे गुणित करके जो लब्ध आवे उतने सातवीं पृथिवीके मिथ्या-
दृष्टि द्रव्यके खंड होते हैं ।

उदाहरण—प्रमाणराशि $\frac{६५५३६}{१२८}$; फलराशि १; इच्छाराशि १३१०७२;

$$१३१०७२ \times १ = १३१०७२; १३१०७२ \div \frac{६५५३६}{१२८} = २५६ = १२८ \times २ \text{ खंड.}$$

इसीप्रकार सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकालकी संख्याके ऊपर स्थित प्रत्येक
सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिको सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके प्रमाणरूपसे
कर लेना चाहिये । परंतु वहां पर एक विरलनके प्रति प्राप्त खंडोंमें सातवीं पृथिवीके
मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण एक खंड प्रमाण होता है । छठी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य
जगश्रेणीके तृतीय वर्गमूलमात्र सातवीं पृथिवीके द्रव्य-खंडोंको लेकर होता है । पुनः पांचवीं
पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य जगश्रेणीके तीसरे वर्गमूलसे लेकर चार वर्गमूलोंके परस्पर गुणा
करने पर वहां जितना प्रमाण आवे तन्मात्र सातवीं पृथिवीके द्रव्य-खंडोंको लेकर होता है ।

१ प्रतिषु 'पमाणं' इति पाठः ।

चउत्थपुढविमिच्छाइट्टिद्वं सेठितदियवग्गमूलादिछव्वग्गमूलाणि गुणिदे तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियमेत्तखंडाणि घेत्तूण हवदि । तदियपुढविमिच्छाइट्टिद्वं सेठितदियवग्गमूलादिअट्टवग्गमूलाणि अण्णोणं गुणिदे तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियमेत्तखंडाणि घेत्तूण पावदि । विदियपुढविमिच्छाइट्टिद्वं तदियवग्गमूलादिदसवग्गमूलाणि अण्णोण-
 ङ्मत्थाणि कदे तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियमेत्तखंडाणि घेत्तूण हवदि । पुणो एदाओ छपुढविमिच्छाइट्टिखंडसलागाओ विवखंभसूचीगुणिदसेठिविदियवग्गमूलादो सोधिदे पढमपुढविमिच्छाइट्टिखंडपमाणसलागा हवंति । एवं सामणअवहारकालमेत्तसामण-
 णेरइयमिच्छाइट्टिद्वं खंडसलागाओ पुध पुध करिय दरिसेदव्वाओ । पुणो एवं ठविय पढमपुढविअवहारकालो उप्पाइज्जे । तं जहा— पढमपुढविमिच्छाइट्टिखंडसलागा-

चौथी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य जगश्रेणीके तीसरे वर्गमूलसे लेकर छह वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करने पर वहाँ जितना प्रमाण उत्पन्न होवे तन्मात्र सातवीं पृथिवीके द्रव्य-खंडोंको लेकर होता है । तीसरी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य जगश्रेणीके तीसरे वर्गमूलसे लेकर आठ वर्ग-
 मूलोंके परस्पर गुणा करने पर वहाँ जितना प्रमाण आवे तन्मात्र सातवीं पृथिवीके द्रव्य-
 खंडोंको लेकर प्राप्त होता है । दूसरी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य जगश्रेणीके तीसरे वर्गमूलसे लेकर दश वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करने पर वहाँ जितना प्रमाण आवे तन्मात्र सातवीं पृथिवीके द्रव्य-खंडोंको लेकर होता है ।

उदाहरण—सामान्य अवहारकालके एक विरलनके प्रति प्राप्त सामान्य शशि १३१०७२ के सातवीं पृथिवीके द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा खंड करने पर २५६ खंड हुए । उनमेंसे एक खंड प्रमाण सातवीं पृथिवीका द्रव्य है । दो खण्ड प्रमाण छठीका, चार खण्ड प्रमाण पांचवीका, आठ खण्ड प्रमाण चौथीका, १६ खण्ड प्रमाण तीसरीका और बत्तीस खण्ड प्रमाण दूसरीका द्रव्य है । इसप्रकार ये खण्डशलाकाएं ६३ होती हैं । यदि वर्गमूलोंके अपेक्षित तारतम्यसे खण्डशलाकाएं की जायें तो जो मूलमें कहा है तदनुसार खण्डशलाकाएं आवेंगी ।

पुनः इन छह पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि खण्डशलाकाओंको विष्कंभसूची गुणित जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलमेंसे घटा देने पर प्रथम पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यके खंडोंका जितना प्रमाण हो उतनी खंड शलाकाएं लब्ध आती हैं ।

उदाहरण— $१२८ \times २ = २५६$; $२५६ - ६३ = १९३$;

इसीप्रकार सामान्य अवहारकालमात्र अर्थात् सामान्य अवहारकालगुणित सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यमें खण्डशलाकाएं पृथक् पृथक् निकाल करके दिखलाना चाहिये । पुनः इसप्रकार खण्डशलाकाएं स्थापित करके प्रथम पृथिवीका अवहारकाल उत्पन्न करते हैं । वह इसप्रकार है—प्रथम पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि खंडशलाकाओंसे यदि एक अवहारकालशलाका

१ अ. आ. प्रत्योः ' सोधिदे ' इति पाठः ।

हितो जदि एगा अवहारकालसलागा लब्धदि तो सामण्णअवहारकालमेत्तसामण्णणेइय-
खंडसलागाणं किं लभामो त्ति पमाणेण इच्छाए ओवड्ढिदाए पढमपुढविमिच्छाइड्ढि-
अवहारकालो होदि । अहवा पढमपुढविमिच्छाइड्ढिखंडसलागाहि सामण्णअवहारकाल-
मोवड्ढिय लद्वेण छपुढविखंडसलागा गुणिदे पक्खेवअवहारकालो होदि । अहवा लद्वं
छप्पडिरासिं काऊण छण्हं पुढवीणं सग-सगखंडसलागाहि गुणिदे सग-सगपक्खेवअव-

प्राप्त होती है तो सामान्य अवहारकालमात्र नारक मिथ्यादृष्टि खंडशलाकाओंकी कितनी
खंडशलाकाएं प्राप्त होंगी, इसप्रकार त्रैराशिक करके प्रमाणराशि प्रथम पृथिवीसंबन्धी खण्ड-
शलाकाओंसे इच्छाराशि सामान्य मिथ्यादृष्टि अवहारकालगुणित सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि
खण्डशलाकाओंको अपवर्तित करने पर प्रथम पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका अवहारकाल
होता है ।

उदाहरण—प्रमाणराशि १९३; फलराशि १; इच्छाराशि ३२७६८ × २५६;

$$\frac{३२७६८ \times २५६}{१९३} = \frac{८३८८६०८}{१९३} \text{ प्र. पृ. मि. अ.}$$

अथवा, प्रथम पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि खंडशलाकाओंसे सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि
अवहारकालको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उससे छह पृथिवियोंकी मिथ्यादृष्टि खंड-
शलाकाओंके गुणित करने पर प्रक्षेप अवहारकाल होता है ।

उदाहरण—३२७६८ ÷ १९३ = $\frac{३२७६८}{१९३}$; $\frac{३२७६८}{१९३} \times ६३ = \frac{२०६४३८४}{१९३} \text{ प्र. अ. का.}$

अथवा, प्रथम पृथिवी मिथ्यादृष्टि खंडशलाकाओंसे सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि
अवहारकालको अपवर्तित करके जो लब्ध आया उसकी छह प्रतिराशियां करके छह पृथिवियोंकी
अपनी अपनी शलाकाओंसे गुणित करने पर अपना अपना प्रक्षेप अवहारकाल होता है ।

उदाहरण— $\frac{३२७६८}{१९३} \times १ = \frac{३२७६८}{१९३}$ सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा,
 $\frac{३२७६८}{१९३} \times २ = \frac{६५५३६}{१९३}$ छठी पृथिवीकी अपेक्षा,
 $\frac{३२७६८}{१९३} \times ४ = \frac{१३१०७२}{१९३}$ पांचवीं पृथिवीकी अपेक्षा,
 $\frac{३२७६८}{१९३} \times ८ = \frac{२६२१४४}{१९३}$ चौथी पृथिवीकी अपेक्षा,
 $\frac{३२७६८}{१९३} \times १६ = \frac{५२४२८८}{१९३}$ तीसरी पृथिवीकी अपेक्षा,
 $\frac{३२७६८}{१९३} \times ३२ = \frac{१०४८५७६}{१९३}$ दूसरी पृथिवीकी अपेक्षा प्र. अवहारकाल.

हारकालो होदि । एवं विहाणेणुप्पण्णपक्खेवअवहारकालं सामण्णअवहारकालमिह पक्खित्ते पढमपुढविमिच्छाइड्डिअवहारकालो होदि । एदमत्थपढमवहारिय अण्णत्थ वि उहररासिपमाणेण महत्तरासीओ काऊण पक्खेवअवहारकालो साधेयव्वो । एत्थ गिरयगईए संदिट्ठी- ६५५३६ एदं जगसेट्ठिपमाणं । एदं पि जगपदरपमाणं ४२९४९६७३९६ । सामण्णणेर- इयमिच्छाइड्डिविक्खंभसई 'एसा २ । सामण्णअवहारकालो ३२७६८ । दव्वं १३१०७२ । पक्खेवअवहारकालो $\frac{२०६४३८४}{१९३}$ । पढमपुढविमिच्छाइड्डिअवहारकालो $\frac{८३८८६०८}{१९३}$ । लद्धपमाणं ९८८१६ । विदियपुढविमिच्छाइड्डिअवहारकालो ४, दव्वं १६३८४ । तदिय- पुढविमिच्छाइड्डिअवहारकालो (८, दव्वं ८१९२ । चउत्थपुढविमिच्छाइड्डिअवहारकालो) १६, दव्वं ४०९६ । पंचमपुढविमिच्छाइड्डिअवहारकालो ३२, दव्वं २०४८ । छट्ठम- पुढविमिच्छाइड्डिअवहारकालो ६४, दव्वं १०२४ । सत्तमपुढविमिच्छाइड्डिअवहारकालो

इस विधिसे जो प्रक्षेप अवहारकाल उत्पन्न हो उसे सामान्य अवहारकालमें मिला देने पर प्रथम पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{३२७६८}{१९३} + \frac{६५५३६}{१९३} + \frac{१३१०७२}{१९३} + \frac{२६२१४४}{१९३} + \frac{५२४२८८}{१९३} + \frac{१०४८५७६}{१९३}$$

$$= \frac{२०६४३८४}{१९३} \text{ प्र. अ. का.}$$

$$३२७६८ + \frac{२०६४३८४}{१९३} = \frac{८३८८६०८}{१९३} \text{ प्र. पृ. का. अव.}$$

इसप्रकार इस अर्थपदका अवधारण करके अन्यत्र भी बड़ी राशिको छोटी राशिके प्रमाणसे करके प्रक्षेप अवहारकाल साध लेना चाहिये! अब यहां नरकगतिकी संदृष्टि दी जाती है—

६५५३६ जगश्रेणीका प्रमाण है । ४२९४९६७३९६ यह जगप्रतरका प्रमाण है । सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीका प्रमाण २ है । सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण ३२७६८ है । सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्य १३१०७२ है । प्रक्षेप अवहारकाल $\frac{२०६४३८४}{१९३}$ है । प्रथम पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्यसंबन्धी अवहारकाल $\frac{८३८८६०८}{१९३}$ है । प्रथम पृथिवीमें लब्धराशि मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण ९८८१६ है । दूसरी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि अवहारकाल ४ और द्रव्य १६३८४ है । तीसरी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि अवहारकाल ८ और द्रव्य ८१९२ है । चौथी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि अवहारकाल १६ और द्रव्य ४०९६ है । पांचवी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि अवहारकाल ३२ और द्रव्य २०४८ है । छठी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि अवहारकाल ६४ और द्रव्य १०२४ है । सातवीं पृथिवीका मिथ्यादृष्टि अवहारकाल १२८ और

१ प्रतिपु ' एसा १२। ' इति पाठः ।

२ कौष्ठकान्तर्गतपाठः प्रतिपु नास्ति ।

१२८, दव्वं ५१२' । विदियादिछप्पुढविमिच्छाइड्ढिदव्वसमूहो ३२२५६ ।

विदियादि जाव सत्तमाए पुढवीए णेरइएसु मिच्छाइट्ठी दव्व-
पमाणेण केवडिया, असंखेजा ॥ २० ॥

एदस्स सुत्तस्स आदेसोघदव्वपरूवयसुत्तस्सेव वक्खणं कायव्वं ।

असंखेजासंखेजाहि ओसप्पिणिउस्सप्पिणीहि अवहिरंति
कालेण ॥ २१ ॥

एदस्स वि सुत्तस्स आदेसोघकालप्रमाणपरूवयसुत्तस्सेव वक्खणं कायव्वं ।
एदाओ दव्वकालपरूवणाओ थूलाओ । कुदो ? सोदारणं णिण्णयाणुप्पायणादो । दव्व-
परूवणादो कालपरूवणा सुहुमा, असंखेजासंखेजसंखाविसेसिददव्वणिरूवणादो । इदाणि
दव्वकालपरूवणाहिंतो सुहुमखेत्तपरूवणट्ठं सुत्तमाह —

द्रव्य ५१२ है । दूसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवीतक छह पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका
समूह ३२२५६ है ।

दूसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवीतक प्रत्येक पृथिवीमें नारकियोंमें मिथ्यादृष्टि
जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं ॥ २० ॥

आदेशसे सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्ररूपण करनेवाले सूत्रके व्याख्यानके
समान इस सूत्रका व्याख्यान करना चाहिये ।

कालप्रमाणकी अपेक्षा दूसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवीतक प्रत्येक पृथिवीके
नारक मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यातासंख्यात अपसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा
अपहृत होते हैं ॥ २१ ॥

आदेशसे सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्ररूपण करनेवाले सूत्रके व्याख्यानके
समान इस सूत्रका भी व्याख्यान करना चाहिये । यहां यह जो द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा और
कालप्रमाणकी अपेक्षा द्वितीयादि छह पृथिवियोंकी मिथ्यादृष्टि जीवराशिकी प्ररूपणा की है
वह स्थूल है, क्योंकि, श्रोताओंको इस प्ररूपणासे निर्णय नहीं हो सकता है । फिर भी द्रव्य
प्ररूपणासे कालप्ररूपणा सूक्ष्म है, क्योंकि, कालप्ररूपणाके द्वारा असंख्यातासंख्यात संख्या
विशिष्ट द्रव्यका प्ररूपण किया गया है । अब द्रव्य और काल इन दोनों ही प्ररूपणाओंसे सूक्ष्म
क्षेत्रप्रमाणके प्ररूपण करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

१ प्रतिष्ठु ' ५०२ ' इति पाठः ।

‘खेत्तेण सेठीए असंखेज्जदिभागो । तिस्से सेठीए आयामो
असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ पढमादियाणं सेठिवग्गमूलाणं
संखेज्जाणं अण्णोण्णवभासेणं ॥ २२ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो वुत्तदे । तं जहा—द्वयकालप्रमाणसुत्तेहि विदियादि-
छप्पुटविमिच्छाद्द्विजावाणं प्रमाणं परुविदमसंखेज्जमिदि । तं च असंखेज्जं पल्ल-सायरंगुल-
जगसेठि-पदर-लोगादिभेदेण अण्येयवियप्पमिदि इमं होदि त्ति ण जाणिज्जे, तदो सेठि-
जगपदरादिउपरिमसंखाणियत्तावणद्धमिदमाह ‘सेठीए असंखेज्जदिभागो’ त्ति । सेठीए
असंखेज्जदिभागो वि पल्ल-सायर-रूपंगुलादिभेएण अण्येयवियप्पो त्ति सूइअंगुलादि-
हेट्ठिमवियप्पपडिसेहट्ठं ‘तिस्से सेठीए आयामो असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ’ त्ति वुत्तं ।
सेठीए असंखेज्जदिभागो त्ति पुरिसलिग्गणिहेसो तिस्से त्ति त्थीलिंगणिहेसो, तदो दोण्हं

क्षेत्रकी अपेक्षा द्वितीयादि छह पृथिवियोंमें प्रत्येक पृथिवीके नारक मिथ्यादृष्टि
जीव जगश्रेणीके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं । उस जगश्रेणीके असंख्यातवें भागकी जो
श्रेणी है उसका आयाम असंख्यात कोटि योजन है, जिस असंख्यात कोटि योजनका
प्रमाण, जगश्रेणीके संख्यात प्रथमादि वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जितना प्रमाण
उत्पन्न हो, उतना है ॥ २२ ॥

अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । वह इसप्रकार है—द्रव्यप्रमाण और कालप्रमाणके
प्ररूपण करनेवाले सूत्रोंद्वारा द्वितीयादि छह पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण ‘असं-
ख्यात है’ ऐसा कह आये हैं । परंतु वह असंख्यात पल्ल, सागर, अंगुल, जगश्रेणी, जगप्रतर
और लोक आदिके भेदसे अनेक प्रकारका है, इसलिये इनमेंसे यहां यह असंख्यात लिया गया
है, यह कुछ नहीं जाना जाता है । अतः जगश्रेणी और जगप्रतर आदि उपरिम संख्याका
नियंत्रण अर्थात् निवारण करनेके लिये ‘द्वितीयादि छह पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि नारकी
जगश्रेणीके असंख्यातवें भाग हैं’ यह कहा । जगश्रेणीका असंख्यातवां भाग भी पल्ल, सागर,
कल्प और अंगुल आदिके भेदसे अनेक प्रकारका है, इसलिये सूत्र्यंगुल आदि अधस्तन
विकल्पोंका निषेध करनेके लिये ‘उस श्रेणीका आयाम असंख्यात कोटि योजन है’ यह कहा ।

शंका—‘सेठीए असंखेज्जदिभागो’ इसमें पुल्लिंग निर्देश है और ‘तिस्से’ यह

१ द्वितीयादिप्रा सप्तम्या मिथ्यादृष्टयः श्रेण्यसंख्येयभागप्रमिताः । स चासंख्येयभागः असंख्येया योजन
कोट्यः । स. सि. १, ८. विदियादिब्रारदसअडडत्तिडुणिजपदहिदा सेठी । गो. जी. १५३. सेठिअसंखेज्जतो
सेसाहु जहोत्तरं तह य । पञ्चसं. २, १३.

२ प्रतिष्ठु ‘अव्भासो’ इति पाठः । किंतु पुरतः टकार्या ‘अव्भासेणेत्ति’ लभ्यते ।

समाणमहियरणं णत्थि त्ति सुत्तमिदमसंबद्धमिदि ? ण एस दोसो, तिस्से सेढीए असंखे-
ज्जदिभागस्स सेढीए वा आयामो त्ति णेवं वत्तव्वं, भिण्णाहियरणत्ता विसेसणस्स फला-
भावादो च । किंतु सेढीए असंखेज्जदिभागस्स जा सेढी पंती तिस्से सेढीए आयामो त्ति
वत्तव्वमिदि । असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ वि पदरंगुल-घणंगुलादिभेदेण असंखेज्ज-
वियप्पाओ त्ति सेढिपढमवग्गमूलादिहेट्ठिमसंखापडिसेहट्ठं 'पढमादियाणं सेढिवग्गमूल्लणं
संखेज्जाणं अण्णोण्णव्भासेण' त्ति वुत्तं । तत्थ सेढिपढमवग्गमूलमादिं काऊण हेट्ठा वारसण्हं
वग्गमूलाणं अण्णोण्णव्भासो विदियपुढविणेरइयमिच्छाइट्ठिदव्वपमाणं होदि । तं चेव
आदिं करिय हेट्ठा दसण्हं वग्गमूलाणं अण्णोण्णव्भासे कदे तदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्व-
पमाणं हवदि । तं चेव आदिं करिय अट्ठण्हं वग्गमूलाणं संवग्गो चउत्थपुढविमिच्छाइट्ठि-
दव्वपमाणं हवदि । छण्हं सेढिवग्गमूलाणं संवग्गो पंचमपुढविदव्वं होदि । तिण्हं संवग्गो
छट्ठमपुढविदव्वं होदि । दोण्हं संवग्गो सत्तमपुढविदव्वं होदि । एत्तियाणं वग्गमूलाणं

स्त्रीलिंग निर्देश है । अतः इन दोनों पदोंका समान अधिकरण नहीं है, इसलिये यह पूर्वोक्त
सूत्र असंबद्ध है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, यहां पर 'तिस्से सेढीए' इस पदका
श्रेणीके असंख्यातवें भागका आयाम अथवा जगश्रेणीका आयाम ऐसा अर्थ नहीं करना चाहिये,
क्योंकि, इससे भिन्नाधिकरणत्व प्राप्त हो जाता है और विशेषणकी कोई सार्थकता नहीं रहती
है । किंतु प्रकृतमें 'जगश्रेणीके असंख्यातवें भागकी जो श्रेणी अर्थात् पंक्ति है उस श्रेणीका
आयाम' ऐसा अर्थ करना चाहिये । असंख्यात कोटि योजन भी प्रतरांगुल और घनांगुल
आदिके भेदसे असंख्यात प्रकारका है, इसलिये जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूल, द्वितीय वर्गमूल
आदि नीचेकी संख्याका प्रतिषेध करनेके लिये सूत्रमें 'जगश्रेणीके प्रथमादि संख्यात वर्गमूलोंके
परस्पर गुणा करनेसे' इतना पद कहा है । उनमेंसे यहां जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूलसे लेकर
नीचेके बारह वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जितनी संख्या उत्पन्न हो उतना दूसरी पृथिवीके
नारक मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण है । तथा जगश्रेणीके उसी पहले वर्गमूलसे लेकर दश
वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करने पर तीसरी पृथिवीके नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण होता है ।
तथा जगश्रेणीके उसी प्रथम वर्गमूलसे लेकर आठ वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करने पर जो
राशि आवे उतना चौथी पृथिवीके नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण है । तथा जगश्रेणीके
प्रथमादि छह वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उतना पांचवी पृथिवीके
मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण है । तथा जगश्रेणीके प्रथमादि तीन वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे
जो राशि उत्पन्न हो उतना छठी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण है । तथा पहले और
दूसरे वर्गमूलके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उतना सातवी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि
द्रव्यका प्रमाण है ।

शुंका — इतने इतने वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करने पर द्वितीयादि पृथिवियोंके मिथ्या-

संवग्गं कदे विदियादिपुढविमिच्छाइट्टीणं द्व्यपमाणं होदि त्ति कथं जाणिज्जदे ? आइ-
रियपरंपरागय-अविरुद्धोवदेसादो जाणिज्जदि ।

वारस दस अट्टेव य मूला छत्तिय दुगं च' गिरएसु ।

'एक्कारस णव सत्त य पण य चउक्कं च देवेसु ॥ ६७ ॥

एदासिं अवहारकालपरूयगाहासुत्तादो वा परियम्मपमाणादो वा जाणिज्जदे ।

एदासिं पुढवीणं द्व्यमाहप्पजाणावणट्ठं किंचि अत्थपरूयणं कस्सामो । तं जहा-
विदियपुढविमिच्छाइट्टिद्वं तदियपुढविमिच्छाइट्टिद्वंतादो ताव उप्पाइज्जदे । वारस-

दृष्टि द्रव्यका प्रमाण होता है, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान — आचार्य परंपरासे आये हुए अविरोद्ध उपदेशसे जाना जाता है कि इतने
इतने वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करने पर द्वितीयादि पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण
होता है । अथवा—

नारकियोंमें द्वितीयादि पृथिवियोंका द्रव्य लानेके लिये जगश्रेणीका बारहवां, दशवां,
आठवां, छठा, तीसरा और दूसरा वर्गमूल अवहारकाल है और देवोंमें सानत्कुमार आदि
पांच कल्पयुगलोंका द्रव्य लानेके लिये जगश्रेणीका ग्यारहवां, नौवां, सातवां, पांचवां और
चौथा वर्गमूल अवहारकाल है ॥ ६७ ॥

इन अवहारकालोंके प्ररूपण करनेवाले इस गाथा सूत्रसे जाना जाता है । अथवा,
परिकर्मके वचनसे जाना जाता है कि जगश्रेणीके प्रथमादि इतने इतने वर्गमूलोंके परस्पर
गुणा करनेसे द्वितीयादि पृथिवियोंका द्रव्य आता है ।

विशेषार्थ — एक वर्गात्मक राशिके प्रथम आदि जितने वर्गमूल होंगे उनमेंसे जिस
वर्गमूलका उक्त वर्गात्मक राशिमें भाग देनेसे जो लब्ध आयगा वह, जिस वर्गमूलका भाग दिया
उस वर्गमूलतक प्रथमादि वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न होगी, उतना ही
होगा । उदाहरणार्थ ६५५३६ में उसके चौथे वर्गमूल २ का भाग देनेसे ३२७६८ लब्ध आते हैं ।
अब यदि प्रथमादि चार वर्गमूलोंका परस्पर गुणा किया तो भी ३२७६८ प्रमाण ही राशि
उत्पन्न होगी । ६५५३६ का पहला वर्गमूल २५६, दूसरा १६, तीसरा ४ और चौथा २ है । अब
इनके परस्पर गुणा करनेसे $२५६ \times १६ \times ४ \times २ = ३२७६८$ ही आते हैं । पर नरकोंमें जो
अंकसंहष्टिकी अपेक्षा राशियां बतलाई हैं उनके निकालनेमें कल्पित वर्गमूल लिये गये हैं,
इसलिये ही वहां यह नियम नहीं घटाया जा सकता है ।

अब इन पृथिवियोंके द्रव्यके महत्त्वका ज्ञान करानेके लिये किंचित् अर्थप्ररूपणा करते
हैं । वह इसप्रकार है— उसमें भी पहले दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यको तीसरी पृथिवीके

१ प्रतिषु ' दु पंच ' इति पाठः । इयं गाथा पूर्वमपि ६६ क्रमाङ्केनागता ।

२ ततो (देवेषु) एगार-णव-सग-पण-चउणियमूलभाजिदा सेढी । गो. जी. १६२.

वग्गमूलेण एक्कारसवग्गमूलं गुणिय तदियपुढविमिच्छाइड्ढिदव्वमिह गुणिदे विदियपुढविमिच्छाइड्ढिदव्वं होदि । तस्स गुणगारस्स अद्धच्छेदणयमेत्तवारं तदियपुढविमिच्छाइड्ढिदव्वं दुगुणिदे' विदियपुढविमिच्छाइड्ढिदव्वं होदि । अहवा गुणगारद्धच्छेदणयसलागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णमत्थरासिणा तदियपुढविमिच्छाइड्ढिदव्वमिह गुणिदे विदियपुढविमिच्छाइड्ढिदव्वं होदि । जहा तीहि पयारेहि तदियपुढविदव्वदो विदियपुढविदव्वमुप्पाइदं तथा सेसचउपुढविदव्वेहिंतो तीहि तीहि पयारेहि विदियपुढविदव्वमुप्पादेदव्वं । एवमुप्पादिदे पण्णारस भंगो लद्धा भवंति ।

मिथ्यादृष्टि द्रव्यप्रमाणसे उत्पन्न करते हैं— जगश्रेणीके बारहवें वर्गमूलसे जगश्रेणीके ग्यारहवें वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे तीसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके गुणित करने पर दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण होता है। अथवा, उक्त गुणकारके (बारहवें वर्गमूलसे ग्यारहवें वर्गमूलको गुणा करनेसे जो लब्ध आया उसके) जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार तीसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके द्विगुणित करने पर भी दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण होता है। अथवा, उक्त गुणकारकी अर्धच्छेद शलाकाओंका विरलन करके और उनको दो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे तीसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके गुणित कर देने पर भी दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण होता है। यहां जिसप्रकार उक्त तीन प्रकारसे तीसरी पृथिवीके द्रव्यसे दूसरी पृथिवीका द्रव्य उत्पन्न किया है, उसीप्रकार चौथी आदि शेष चार पृथिवियोंके द्रव्यसे उक्त तीन तीन प्रकारसे दूसरी पृथिवीका द्रव्य उत्पन्न कर लेना चाहिये। इसप्रकार उत्पन्न करने पर पंद्रह भंग प्राप्त होते हैं।

विशेषार्थ— चौथी पृथिवीकी अपेक्षा दूसरी पृथिवीका द्रव्य उत्पन्न करते समय जगश्रेणीके नौवें वर्गमूलसे बारहवें वर्गमूलतक चार वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे चौथी पृथिवीके द्रव्यको गुणित करने पर दूसरी पृथिवीका द्रव्य आता है। पांचवी पृथिवीकी अपेक्षा जगश्रेणीके सातवें वर्गमूलसे लेकर बारहवें वर्गमूलतक छह वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे पांचवी पृथिवीके द्रव्यको गुणित करने पर दूसरी पृथिवीका द्रव्य आता है। छठी पृथिवीकी अपेक्षा जगश्रेणीके चौथे वर्गमूलसे लेकर बारहवें वर्गमूलतक नौ वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे छठी पृथिवीके द्रव्यको गुणित करने पर दूसरी पृथिवीका द्रव्य आता है। सातवी पृथिवीकी अपेक्षा जगश्रेणीके तीसरे वर्गमूलसे लेकर बारहवें वर्गमूलतक दश वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे सातवी पृथिवीके द्रव्यके गुणित करने पर दूसरी पृथिवीका द्रव्य आता है। गुणकार राशिके अर्धच्छेदोंका विरलनादि करते समय

१ क प्रती ' गुणिदे ' इति पाठः ।

संपहि पढमपुढविमिच्छाइड्ढिद्व्वादो विदियपुढविमिच्छाइड्ढिद्व्वस्स उप्पादण-
विहाणं बुच्चदे- पढमपुढविविक्खंभसूचिगुणिदसेढिवारसवग्गमूलेण पढमपुढविमिच्छाइड्ढि-
द्व्वम्हि भागे हिदे विदियपुढविमिच्छाइड्ढिद्व्वमागच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्दुच्छेदण-
यमेत्ते पढमपुढविद्व्वस्स अद्दुच्छेदणए कदे वि विदियपुढविमिच्छाइड्ढिद्व्वमागच्छदि ।
सेढिवारसवग्गमूलस्स अद्दुच्छेदणाओ पढमपुढविविक्खंभसूचीअद्दुच्छेदणयसहिदाओ
विरालिय विगं करिय अण्णोण्णम्भत्थरासिणा पढमपुढविमिच्छाइड्ढिद्व्वम्हि भागे हिदे
विदियपुढविमिच्छाइड्ढिद्व्वमागच्छदि । एदे तिण्णि भंग्गा पुच्चिल्लपण्णारसभंग्गेषु पक्खित्ते
विदियपुढवीए अट्टारस भंग्गा हवन्ति । एवं सव्वासिं पुढवीणं पत्तेगं पत्तेगं अट्टारस भंग्गा
उप्पाएद्व्वा । सव्वभंग्गसमासो सदं छव्वीसुत्तरं ।

भी जहां जितने वर्गमूलोंका परस्पर गुणा करके जो राशि लाई गई हो उसी राशिके
अर्धच्छेदोंका विरलन करके और उस विरलित राशिको दोरूप करके परस्पर गुणा करनेसे
जो लब्ध आवे उससे उस उस पृथिवीके द्रव्यको गुणित करना चाहिये । अथवा, इसी क्रमसे
अर्धच्छेद लाकर उतनीवार उस उस पृथिवीके द्रव्यको द्विगुणित करना चाहिये । इसप्रकार
करनेसे दूसरी पृथिवीके द्रव्यका प्रमाण आता है ।

अब पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके उत्पन्न
करनेकी विधि बतलाते हैं— पहली पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीसे जगश्रेणीके बारहवें
वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके भाजित
करने पर दूसरी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य आता है ।

$$\text{उदाहरण—} ४ \times \frac{१९३}{१२८} = \frac{१९३}{३२}; ९८८१६ \div \frac{१९३}{३२} = १६३८४ \text{ द्वि. पृ. मि. द्र.}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार भज्यमान राशि प्रथम पृथिवीके
द्रव्यके अर्धच्छेद करने पर भी दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण आता है ।

अथवा, जगश्रेणीके बारहवें वर्गमूलके अर्धच्छेदोंमें पहली पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि
विष्कंभसूचीके अर्धच्छेद मिला देने पर जितना योग हो उतनी राशिका विरलन करके और
उसे दोरूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि
द्रव्यके भाजित करने पर दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण आता है । इन तीन
भंगोंकी पूर्वाक्त पद्धत भंगोंमें मिला देने पर दूसरी पृथिवीके अठारह भंग होते हैं । इसीप्रकार
सभी पृथिवियोंमें प्रत्येक पृथिवीके अठारह अठारह भंग उत्पन्न कर लेना चाहिये । इन सब
भंगोंका जोड़ एकसौ छवीस होता है ।

विशेषार्थ—प्रथमादि पृथिवियोंके द्रव्यकी अपेक्षा दूसरी पृथिवीका द्रव्य किसप्रकार

१ प्रतिपु ' सेदे छवीसुत्तरा ' इति पाठः ।

आता है, इसका थोडासा विवेचन मूलमें ही किया है। और वहां यह भी कहा है कि इसीप्रकार तृतीयादि पृथिवियोंके द्रव्यके उत्पन्न करनेसे कुल १२६ भंग होते हैं। उनमेंसे जिन १८ भंगोंसे दूसरी पृथिवीका द्रव्य आता है उन १८ भंगोंको १२६ मेंसे कम कर देने पर शेष १०८ भंग रहते हैं। इसलिये आगे उन्हीं १०८ भंगोंका स्पष्टीकरण किया जाता है। द्वितीयादि छह पृथिवियोंकी अपेक्षा पहली पृथिवीका द्रव्य उत्पन्न करते समय दूसरी पृथिवीकी अपेक्षा बारहवें वर्गमूलसे, तीसरी पृथिवीकी अपेक्षा दशवें वर्गमूलसे, चौथी पृथिवीकी अपेक्षा आठवें वर्गमूलसे, पांचवी पृथिवीकी अपेक्षा छठे वर्गमूलसे, छठी पृथिवीकी अपेक्षा तीसरे वर्गमूलसे और सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा दूसरे वर्गमूलसे पहले नरककी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीके गुणित करने पर जो लब्ध आवे उससे द्वितीयादि पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके पृथक् पृथक् गुणित करने पर क्रमशः द्वितीयादि पृथिवियोंकी अपेक्षा पहली पृथिवीका द्रव्य आता है। पहली पृथिवीके द्रव्यकी अपेक्षा तीसरी, चौथी, पांचवी, छठी और सातवीं पृथिवीका द्रव्य लाते समय पहली पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीसे पृथक् पृथक् दशवें, आठवें, छठे, तीसरे और दूसरे वर्गमूलको गुणित करके जो जो लब्ध आवे उस उससे पहली पृथिवीके द्रव्यके भाजित करने पर पहली पृथिवीकी अपेक्षा क्रमशः तीसरी, चौथी, पांचवी, छठी और सातवीं पृथिवीका द्रव्य होता है। दूसरी पृथिवीकी अपेक्षा तीसरी पृथिवीका द्रव्य लाते समय ग्यारहवें और बारहवें वर्गमूलका, चौथी पृथिवीका द्रव्य लाते समय नौवेंसे लेकर बारहवें तक चार वर्गमूलोंका, पांचवी पृथिवीका द्रव्य लाते समय सातवेंसे लेकर बारहवें तक छह वर्गमूलोंका, छठी पृथिवीका द्रव्य लाते समय चौथेसे लेकर बारहवें तक नौ वर्गमूलोंका, सातवीं पृथिवीका द्रव्य लाते समय तीसरेसे लेकर बारहवें तक दश वर्गमूलोंका परस्पर गुणा करनेसे जो जो राशि आवे उस उसका भाग दूसरी पृथिवीके द्रव्यमें देने पर क्रमशः दूसरी पृथिवीकी अपेक्षा तीसरी, चौथी, पांचवी, छठी और सातवीं पृथिवीका द्रव्य आता है। तीसरी पृथिवीकी अपेक्षा चौथी पृथिवीका द्रव्य लाते समय नौवें और दशवें वर्गमूलका, पांचवी पृथिवीका द्रव्य लाते समय सातवेंसे लेकर दशवें तक चार वर्गमूलोंका, छठीका द्रव्य लाते समय चौथेसे लेकर दशवें तक सात वर्गमूलोंका और सातवीं पृथिवीका द्रव्य लाते समय तीसरेसे लेकर दशवें तक आठ वर्गमूलोंका परस्पर गुणा करनेसे जो जो राशि उत्पन्न हो उस उससे तीसरी पृथिवीके द्रव्यके भाजित करने पर क्रमशः चौथी, पांचवी, छठी और सातवीं पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य आता है। चौथी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी अपेक्षा पांचवी पृथिवीका द्रव्य लाते समय सातवें और आठवें वर्गमूलका, छठी पृथिवीका द्रव्य लाते समय चौथेसे लेकर आठवें तक पांच वर्गमूलोंका, सातवीं पृथिवीका द्रव्य लाते समय तीसरेसे लेकर आठवें तक छह वर्गमूलोंका परस्पर गुणा करनेसे जो जो राशि उत्पन्न हो उस उससे चौथी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके भाजित करने पर क्रमशः पांचवी, छठी और सातवीं पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य उत्पन्न होता है। पांचवी पृथिवीकी अपेक्षा छठी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य लाते समय चौथे, पांचवे और छठे वर्गमूलका तथा सातवीं

पृथिवीका द्रव्य लाते समय तीसरेसे लेकर छठे तक चार वर्गमूलोंका परस्पर गुणा करनेसे जो जो राशि उत्पन्न हो उस उससे पांचवी पृथिवीके द्रव्यके भाजित करने पर क्रमशः छठी और सातवीं पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य आता है। छठी पृथिवीकी अपेक्षा सातवीं पृथिवीका द्रव्य लाते समय तीसरे वर्गमूलसे छठी पृथिवीके द्रव्यके भाजित करने पर सातवीं पृथिवीका द्रव्य आता है। चौथी, पांचवी, छठी और सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा तीसरी पृथिवीका द्रव्य लाते समय चौथीकी अपेक्षा नौवें और दशवें वर्गमूलका, पांचवीकी अपेक्षा सातवेंसे लेकर दशवें तक चार वर्गमूलोंका, छठीकी अपेक्षा चौथेसे लेकर दशवेंतक सात वर्गमूलोंका और सातवींकी अपेक्षा तीसरेसे लेकर दशवेंतक आठ वर्गमूलोंका परस्पर गुणा करनेसे जो जो राशि उत्पन्न हो उस उससे चौथी, पांचवी, छठी और सातवींके द्रव्यके गुणित कर देने पर क्रमशः चौथी, पांचवी, छठी और सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा तीसरी पृथिवीका द्रव्य आता है। पांचवी, छठी और सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा चौथी पृथिवीका द्रव्य लाते समय पांचवीकी अपेक्षा सातवें और आठवें वर्गमूलोंका, छठीकी अपेक्षा चौथेसे लेकर आठवें तक पांच वर्गमूलोंका, सातवींकी अपेक्षा तीसरेसे लेकर आठवेंतक छह वर्गमूलोंका परस्पर गुणा करके जो जो राशि आवे उस उससे पांचवी, छठी और सातवीं पृथिवीके द्रव्यके गुणित करने पर क्रमशः पांचवी, छठी और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी अपेक्षा चौथी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य आता है। छठी और सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा पांचवी पृथिवीका द्रव्य लाते समय छठीकी अपेक्षा चौथेसे लेकर छठेतक तीन वर्गमूलोंका और सातवींकी अपेक्षा तीसरेसे लेकर छठेतक चार वर्गमूलोंका परस्पर गुणा करके जो जो राशि आवे उस उससे छठी और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके गुणित करने पर क्रमशः छठी और सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा पांचवी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य आता है। तथा सातवीं पृथिवीके द्रव्यको तीसरे वर्गमूलसे गुणित करने पर सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी अपेक्षा छठी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य आता है। पहले जहां ऊपरकी पृथिवियोंसे नीचेकी पृथिवियोंका द्रव्य उत्पन्न करते समय जो जो भागहार कह आये हैं उस उसके अर्धच्छेद करके तत्प्रमाण भाज्य राशिके आधे आधे करने पर भी नीचेकी पृथिवियोंका द्रव्य आ जाता है। अथवा, अर्धच्छेदप्रमाण दो रखकर उनके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि आवे उसका भाज्य राशिमें भाग देने पर भी नीचेकी पृथिवियोंका द्रव्य आ जाता है। उसीप्रकार नीचेकी पृथिवियोंसे ऊपरकी पृथिवियोंका द्रव्य लाते समय जहां जो गुणकार हो उसके अर्धच्छेदोंका जितना प्रमाण हो उतनीवार गुण्य राशिके दूने दूने करने पर ऊपरकी पृथिवियोंका द्रव्य आता है। अथवा उक्त अर्धच्छेदप्रमाण दो रखकर उनके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि हो उससे गुण्य राशिके गुणित कर देने पर भी ऊपरकी पृथिवियोंका द्रव्य आ जाता है। इसप्रकार ये कुल भंग १०८ हुए इनमें दूसरी पृथिवीके १८ भंग मिला देने पर सातों पृथिवियोंके द्रव्य निकालनेके १२६ भंग होते हैं।

सासणसम्माइडिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइडि ति ओघं ॥२३॥

पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागत्तं पडि विसेसाभावादो विदियादिपुढविगुणपडि-
वण्णाणं परूवणा ओघमिदि वुत्ता दव्वड्डियसिस्साणुग्गहट्ठं । पज्जवड्डियणए पुण अव-
लंबिज्जमाणे विसेसो अत्थि चैव, अण्णहा एमपुढविगुणपडिवण्णाणं सत्तपमाणणवत्था
च दुप्पडिसेज्जा पसज्जदे । तं (गुणपडिवण्णजीवविसेसं पुव्वाइरियाणमविरुद्धोवएसेण
आइरियपरंपरागदेण वत्तइस्सामो) । तं जहा— पुव्वमुप्पाइयसामण्णणेरइयअसंजदसम्माइडि-
अवहारकालमावलिआए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे लद्धं तम्मिह चैव पक्खित्ते पढम-

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानतक प्रत्येक
गुणस्थानमें द्वितीयादि छह पृथिवियोंमेंसे प्रत्येक पृथिवीके नारकी जीव सामान्य
प्ररूपणाके समान पर्योपमके असंख्यातवें भाग हैं ॥ २३ ॥

विशेषार्थ— इस सूत्रमें 'दव्वपमाणेण केवडिया' अर्थात् द्रव्यप्रमाणसे कितने हैं? ऐसा
पृच्छावाक्य नहीं पाया जाता जिससे सूत्रसंख्या २ की टीकामें जो उक्त पृच्छावाक्यका फल
स्वकर्तृत्वनिराकरणपूर्वक आप्तकर्तृत्वप्रतिपादन बतलाया है उसकी यहां आकांक्षा रह जाती
है। तथापि सूत्र सदैव संक्षेपार्थ हुआ करते हैं और उनमें यह सार्वत्रिक नियम है कि 'सूत्रेष्वदृष्टं
पदं सूत्रान्तरादनुवर्तनीयं सर्वत्र' अर्थात् जो अपेक्षित पद प्रस्तुत सूत्रमें न पाया जाय उसकी
अन्य सूत्रोंसे अनुवृत्ति सदैव कर लेना चाहिये। इसप्रकार प्रस्तुत सूत्रमें भी उक्त पृच्छा-
पदकी अनुवृत्ति हो जाती है। आगे भी जहां कहीं उक्त पद न पाया जाय वहां इसी नियमका
आधिकार समझ लेना चाहिये।

द्वितीयादि गुणस्थानोंकी सामान्य संख्या और द्वितीयादि पृथिवियोंमें गुणस्थान-
प्रतिपन्न जीवोंकी संख्या, ये राशियां पर्योपमके असंख्यातवें भागत्वके प्रति समान हैं, इसलिये
द्रव्यार्थिक नयकी अपेक्षा रखनेवाले शिष्योंके अनुग्रहके लिये द्वितीयादि पृथिवियोंके गुणस्थान-
प्रतिपन्न जीवोंकी संख्या सामान्य प्ररूपणाके समान है, ऐसा कहा। पर्यायार्थिक नयका
अवलंबन करने पर तो गुणस्थानप्रतिपन्न सामान्य नारकी जीवोंकी संख्या और द्वितीयादि
पृथिवियोंके गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंकी संख्या, इन दोनोंमें विशेष है ही। यदि ऐसा नहीं माना
जाय तो एक पृथिवीके गुणस्थान प्रतिपन्न जीवोंकी संख्या और सातों पृथिवियोंके गुणस्थान
प्रतिपन्न जीवोंकी संख्या एकसी हो जायगी जिसके निषेधके दुष्कर होनेका प्रसंग आ जाता है।
अब गुणस्थान प्रतिपन्न जीवोंके उस विशेषको आचार्य-परंपरासे आये हुए पूर्वोचार्थोंके अवि-
रुद्ध उपदेशके अनुसार बतलाते हैं। वह इसप्रकार है—

सामान्य नारक असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल जो पहले उत्पन्न करके बतला
आये हैं, उसे आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी नारक
सामान्य असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालमें ही मिला देने पर प्रथम पृथिवीके असंयत-

पुढविअसंजदसम्माइड्डिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे पढमपुढविसम्माभिच्छाइड्डिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहिं गुणिदे सासणसम्माइड्डिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे विदियाए असंजदसम्माइड्डिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे सम्मामिच्छाइड्डिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहिं गुणिदे सासणसम्माइड्डिअवहारकालो होदि । एवं तदियादि जाव सत्तमपुढवि त्तिअवहारकाला परिवाडीए उप्पाएदव्वा । एदेहिं अवहारकालेहिं पलिदोवमस्सुवरि खंडिदादीणं ओचभंगो ।

भागाभागं द्रव्यप्रमाणविसयणिण्णयजणणटं वत्तइस्सामो । सब्वजीवरासिस्स अणंतेसु भागेसु कदेसु तत्थ बहुभागा तिरिक्खा होंति । सेसस्स अणंतेसु भागेसु कदेसु तत्थ बहुभागा सिद्धा होंति । सेसस्स असंखेज्जेसु भागेसु कदेसु तत्थ बहुभागा देवा होंति । सेसस्स असंखेज्जेसु भागेसु कदेसु तत्थ बहुभागा णेरइया होंति । सेसेगभागो मणुसा हवंति । पुणो णेरइयरासिस्स असंखेज्जेसु खंडेसु कदेसु तत्थ बहुभागा पढमपुढवि-

सम्यग्दृष्टि जीवोंका अवहारकाल होता है । उस पहली पृथिवीके असंयतसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर प्रथम पृथिवीके सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंका अवहारकाल होता है । उस पहली पृथिवीके सम्यग्मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर प्रथम नरकका सासादनसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकाल होता है । पहले नरकके सासादनसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर दूसरी पृथिवीका असंयतसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकाल होता है । दूसरी पृथिवीके असंयतसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर दूसरी पृथिवीका सम्यग्मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकाल होता है । उस दूसरी पृथिवीके सम्यग्मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर दूसरी पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसीप्रकार तीसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवीतक अवहारकाल परिपाटी-क्रमसे उत्पन्न कर लेना चाहिये । इन अवहारकालोंके द्वारा पल्लोपमके ऊपर खंडित आदिकका कथन सामान्य प्ररूपणाके समान है ।

अब द्रव्यप्रमाणविषयक निर्णयका ज्ञान करानेके लिये भागाभागको बतलाते हैं—संपूर्ण जीवराशिके अनन्त भाग करने पर उनमेंसे बहुभाग तिर्यच होते हैं । शेष एक भागके अनन्त भाग करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सिद्ध होते हैं । शेष एक भागके असंख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण देव होते हैं । शेष एक भागके असंख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण नारकी होते हैं । शेष एक भागप्रमाण मनुष्य होते हैं । पुनः नारक जीवराशिके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि जीव

१ प्रतिष्ठा ' गुणिदे तम्हि चेव सम्मा—' इति पाठः ।

मिच्छाइट्ठी होंति । सेसस्स असंखेज्जेसु खंडेसु कदेसु तत्थ बहुभागा विदियपुढवि-
मिच्छाइट्ठी होंति । एवं तदिय-चउत्थ-पंचम-छट्ठ-सत्तमपुढवीणं अच्चा मोहेण भागभागे
कायव्वो । पुणो सेसस्स असंखेज्जेसु भागेसु कदेसु तत्थ बहुभागा पढमाए पुढवीए
असंजदसम्माइट्ठिणो हवंति । सेसस्स असंखेज्जेसु भागेसु कदेसु तत्थ बहुभागा पढम-
पुढविसम्मामिच्छाइट्ठिणो हवंति । सेसस्स संखेज्जेसु भागेसु कदेसु तत्थ बहुभागा
पढमपुढविसासणसम्मामिच्छाइट्ठिणो हवंति । सेसस्स असंखेज्जेसु भागेसु कदेसु तत्थ बहुभागा
विदियपुढविअसंजदसम्मामिच्छाइट्ठिणो हवंति । सेसस्स असंखेज्जेसु भागेसु कदेसु तत्थ बहुखंडा
तत्थतणसम्मामिच्छाइट्ठिणो हवंति । सेसस्स संखेज्जेसु भागेसु कदेसु तत्थ बहुभागा
तत्थतणसासणसम्मामिच्छाइट्ठिणो हवंति । एवं तदियादि जाव सत्तमपुढवि त्ति गुणपाडिवण्णाणं
भागाभागो कायव्वो । एवं भागाभागो समत्तो ।

अप्पाबहुगं तिविहं, सत्थाणं परत्थाणं सव्वपरत्थाणं चेदि । तत्थ सत्थाणप्पा-
बहुगं वुच्चदे । सव्वत्थोवा सामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूची । अवहारकालो असंखेज्ज-
गुणो । को गुणगारो ? अवहारकालस्स असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सगविक्खंभ-

होते हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण दूसरी पृथिवीके
मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं । इसीप्रकार तीसरी, चौथी, पांचवी छठी और सातवीं पृथिवीकी
जीवराशिका साधधानीसे भागाभाग कर लेना चाहिये । पुनः सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंके
अनन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके असंख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण पहली
पृथिवीके असंयतसम्यग्दृष्टि जीव होते हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे
बहुभागप्रमाण पहली पृथिवीके सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं । शेष एक भागके संख्यात भाग
करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण पहली पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टि जीव होते हैं । शेष एक
भागके असंख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण दूसरी पृथिवीके असंयतसम्यग्दृष्टि
जीव होते हैं । शेष एक भागके असंख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण दूसरी
पृथिवीके सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं । शेष एक भागके संख्यात भाग करने पर उनमेंसे
बहुभागप्रमाण दूसरी पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टि जीव होते हैं । इसीप्रकार तीसरी पृथिवीसे
लेकर सातवीं पृथिवीतक गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंका भागाभाग करना चाहिये ।

इसप्रकार भागाभाग समाप्त हुआ ।

अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है, स्वस्थान अल्पबहुत्व, परस्थान अल्पबहुत्व और सर्व-
परस्थान अल्पबहुत्व । उनमेंसे पहले स्वस्थान अल्पबहुत्वका कथन करते हैं— सामान्य
नारक मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची सबसे स्तोक है । सामान्य नारक मिथ्या-
दृष्टियोंका अवहारकाल सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणा है । गुणकार

१ प्रतिषु ' संखेज्जेसु ' इति पाठः ।

२ प्रतिषु ' असंखेज्जेसु ' इति पाठः ।

सूची । अहवा सेठीए असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाणि सेठिपढमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? सगविकखंभसूचीवग्गो घणंगुलपढमवग्गमूलं वा । सेठी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सगविकखंभसूई । द्ववमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? विकखंभसूई । पदरंमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? अवहारकालो । लोगो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेठी । सासणसम्माइड्ढि-सम्मामिच्छाइड्ढि-असंजदसम्माइड्ढीणमोधसत्थाणभंगो । एवं चेव पढमाए पुढवीए । विदियाए पुढवीए सच्चत्थोवो मिच्छाइड्ढिअवहारकालो । तस्सेव द्ववम-संखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सगद्ववस्स असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सग-अवहारकालो । अहवा सेठीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेठिपढमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? सगअवहारकालवग्गो सेठिएकारसवग्गमूलं वा । सेठी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सेठिवारसवग्गमूलं । पदरो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेठी । लोगो

क्या है ? अपने अवहारकालका असंख्यातवां भाग है । प्रतिभाग क्या है ? अपनी विष्कंभसूची प्रतिभाग है । अथवा, जगश्रेणीका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? अपनी विष्कंभसूचीका वर्ग प्रतिभाग है । अथवा, घनांगुलका प्रथम वर्गमूल प्रतिभाग है । सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे जगश्रेणी असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कंभसूची गुणकार है । जगश्रेणीसे सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कंभसूची गुणकार है । सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे जगप्रतर असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकाल गुणकार है । जगप्रतरसे घनलोक असंख्यातगुणा है ? गुणकार क्या है ? जगश्रेणी गुणकार है । सामान्य नारक सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व सामान्य स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान जानना चाहिये । इसीप्रकार पहली पृथिवीमें स्वस्थान अल्पबहुत्व है । दूसरी पृथिवीमें मिथ्यादृष्टि अवहारकाल सबसे स्तोक है । दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपने द्रव्यका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? अपना अवहारकाल प्रतिभाग है । अथवा, जगश्रेणीका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? अपने अवहारकालका (बारहवें वर्गमूलका) वर्ग अथवा जगश्रेणीका ग्यारहवां वर्गमूल प्रतिभाग है । दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे जगश्रेणी असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीका बारहवां वर्गमूल गुणकार है । जगश्रेणीसे जगप्रतर असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणी गुणकार है । जगप्रतरसे घनलोक असंख्यातगुणा है । गुणकार

१ प्रतिपु ' पदम० ' (अ), ' पदम ' (आ.), ' पदमं ' (क.) इति पाठः ।

असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेठी । सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्मा-इट्ठीणमोघसत्थाणभंगो । तदियादि जाव सत्तमपुढवि त्ति एवं चेव सत्थाणप्पावहुगं वत्तव्वं । णवरि अप्पप्पणो अवहारकाले जाणिऊण भाणिदव्वं ।

परत्थाणप्पावहुगं वत्तइस्सामो । सव्वत्थोवो असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो । एवं जाव पलिदोवमो त्ति णेदव्वं । पलिदोवमादो उवरि सामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? विक्खंभसूईए असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? पलिदोवमं । अहवा सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सूचिअंगुलपढमवग्ग-मूलाणि । को पडिभागो ? पलिदोवमगुणिदसूइअंगुलविदियवग्गमूलं । उवरि सत्थाणभंगो । एवं चेव पढमाए पुढवीए । विदियाए पुढवीए सव्वत्थोवो असंजदसम्माइट्ठिअवहार-कालो । एवं जाव पलिदोवमो त्ति णेदव्वो । तदो मिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? वारसवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? पलिदोवमं । उवरि सत्थाणभंगो । एवं तदियादि जाव सत्तमपुढवि त्ति परत्थाणप्पावहुगं वत्तव्वं । णवरि

क्या है ? जगश्रेणी गुणकार है । दूसरी पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टियोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व सामान्य स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है । तीसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवी तक स्वस्थान अल्पबहुत्वका कथन इसीप्रकार करना चाहिये । विशेष यह है कि प्रत्येक पृथिवीका स्वस्थान अल्पबहुत्व कहते समय अपने अपने अवहारकालको जानकर उसका कथन करना चाहिये ।

अब परस्थान अल्पबहुत्वको बतलाते हैं— असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकाल सबसे स्तोक है । उससे सम्यग्मिथ्यादृष्टिका, उससे सासादनसम्यग्दृष्टिका अवहारकाल, इसप्रकार अल्पबहुत्व कहते हुए पल्योपम तक ले जाना चाहिये । पल्योपमके ऊपर सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि विक्खंभसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? विक्खंभसूचीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? पल्योपम प्रतिभाग है । अथवा, सूच्यंगुलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो सूच्यंगुलके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? पल्योपमसे सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलके गुणित करने पर जो लब्ध आवे उतना प्रतिभाग है । इस विक्खंभसूचीके ऊपर परस्थान अल्पबहुत्व स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान जानना चाहिये । इसीप्रकार पहली पृथिवीमें परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये ।

दूसरी पृथिवीमें असंयतसम्यग्दृष्टिका अवहारकाल सबसे स्तोक है । इसीप्रकार उत्तरोत्तर अल्पबहुत्व कहते हुए पल्योपमतक ले जाना चाहिये । पल्योपमसे दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके बारहवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? पल्योपम प्रतिभाग है । इसके ऊपर अल्पबहुत्व स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान जानना चाहिये । इसीप्रकार तीसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवीतक परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये । इतना

अप्पप्पणो अवहारकाले जाणिऊण वत्तव्वं ।

सव्वपरत्थानप्पावहुगं वत्तइस्सामो । सव्वत्थोवो पढमपुढविअसंजदसम्माइट्ठि-
अवहारकालो । सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलि-
याए असंखेज्जदिभागो । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ?
संखेज्जा समया । तदो विदियपुढविअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को
गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो ।
सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । एवं जाव सत्तमाए पुढवीए सासणसम्माइट्ठि-
अवहारकालो त्ति णेयव्वो । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । सम्मामिच्छाइट्ठिदव्वं संखेज्ज-
गुणं । असंजदसम्माइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।
एवं पडिलोमेण णेदव्वं जाव पढमपुढविअसंजदसम्माइट्ठिदव्वं पत्तमिदि । तदो पलि-
दोवममसंखेज्जगुणं । तदो पढमपुढविणेरइयमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा ।
सामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई विसेसाहिया । तदो विदियपुढविमिच्छाइट्ठिअवहार-

विशेष है कि अपना अपना अवहारकाल जानकर ही कथन करना चाहिये ।

अब सर्व परस्थान अल्पबहुत्वको बतलाते हैं -पहली पृथिवीके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका
अवहारकाल सबसे स्तोक है । उससे पहली पृथिवीके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल
असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । सम्यग्मिथ्या-
दृष्टियोंके अवहारकालसे पहली पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा
है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । पहली पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टियोंके
अवहारकालसे दूसरी पृथिवीके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार
क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । दूसरी पृथिवीके असंयतसम्यग्दृष्टियोंके
अवहारकालसे वहींके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । सम्यग्मिथ्या-
दृष्टियोंके अवहारकालसे वहींके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है ।
इसीप्रकार सातवीं पृथिवीतक सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालतक ले जाना चाहिये ।
सातवीं पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे उन्हींका द्रव्य असंख्यातगुणा है ।
सासादनसम्यग्दृष्टियोंके द्रव्यसे वहींके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य संख्यातगुणा है । सम्य-
ग्मिथ्यादृष्टियोंके द्रव्यसे वहींके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार
क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । इसीप्रकार उत्तरोत्तर प्रतिलोम पद्धतिसे
जब पहली पृथिवीके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य प्राप्त होवे तब तक ले जाना चाहिये ।
पहली पृथिवीके असंयतसम्यग्दृष्टियोंके द्रव्यसे पल्योपम असंख्यातगुणा है । पल्योपमसे
पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि नारकियोंकी विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है । उक्त विष्कंभसूचीसे
सामान्य मिथ्यादृष्टि नारकियोंकी विष्कंभसूची विशेष अधिक है । सामान्य मिथ्यादृष्टि
नारकियोंकी विष्कंभसूचीसे दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा

कालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? वारसवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि तेरसवग्गमूलाणि । तस्स को पडिभागो ? घणंगुलविदियवग्गमूलं । तदियपुढविमिच्छा-इट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? दसमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि एकारसवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? सेटिवारसवग्गमूलं । चउत्थपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? अट्टमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि णवमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? दसमवग्गमूलं । पंचमपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? छट्ठवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सत्तमवग्गमूलाणि । तस्स को पडिभागो ? अट्टमवग्गमूलं । छट्ठपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? तदियवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि चउत्थवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? छट्ठवग्गमूलं । सत्तमपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? तदियवग्गमूलं । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सेटिपढमवग्गमूलं । छट्ठपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं

है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके बारहवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात तेरहवें वर्गमूलप्रमाण है । उसका प्रतिभाग क्या है ? घनांगुलका द्वितीय वर्गमूल प्रतिभाग है । दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे तीसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है ? गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके दशवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात ग्यारहवें वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? जगश्रेणीका बारहवां वर्गमूल प्रतिभाग है । तीसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे चौथी पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आठवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात नौवें वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? दशवां वर्गमूल प्रतिभाग है । चौथी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे पांचवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके छठवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग है जो असंख्यात सातवें वर्गमूलप्रमाण है । उसका प्रतिभाग क्या है ? जगश्रेणीका आठवां वर्गमूल प्रतिभाग है । पांचवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे छठी पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके तीसरे वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है । जो जगश्रेणीके असंख्यात चौथे वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? जगश्रेणीका छठा वर्गमूल प्रतिभाग है । छठवां पृथिवीके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे सातवां पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीका तीसरा वर्गमूल गुणकार है । सातवां पृथिवीके अवहारकालसे उसीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीका प्रथम वर्गमूल गुणकार है । सातवां पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे छठवां पृथिवीका

असंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? तदियवग्गमूलं । पंचमपुढविमिच्छाइड्डिदव्वं असंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? चउत्थ-पंचम-छट्टवग्गाणि अण्णोण्णगुणिदाणि । अहवा सेढित्तदियवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेढित्तचउत्थवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? छट्टमवग्गमूलं । चउत्थपुढविमिच्छाइड्डिदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? अण्णोण्णगुणिदसेढिसत्तम-अट्टम-वग्गमूलाणि । अहवा छट्टमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सत्तमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? अट्टमवग्गमूलं । तदियपुढविमिच्छाइड्डिदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? अण्णोण्णगुणिदसेढिणवम-दसमवग्गमूलाणि । अहवा अट्टमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि णवमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? दसमवग्गमूलं । विदियपुढविमिच्छाइड्डिदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? अण्णोण्णवमत्थेकारस-वारसवग्गमूलाणि । अहवा दसमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि एकारसवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? वारसवग्गमूलं । सामण्णोणेरइयमिच्छाइड्डिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को

मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीका तीसरा वर्गमूल गुणकार है । छठवींके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे पांचवीं पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके चौथे, पांचवे और छठवे वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उतना गुणकार है । अथवा, जगश्रेणीके तीसरे वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात चौथे वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? जगश्रेणीका छठा वर्गमूल प्रतिभाग है । पांचवींके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे चौथी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके सातवें और आठवें वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उतना गुणकार है । अथवा, जगश्रेणीके छठवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात सप्तम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? जगश्रेणीका आठवां वर्गमूल प्रतिभाग है । दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे तीसरी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके नौवें और दशवें वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उतना गुणकार है । अथवा, जगश्रेणीके आठवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात नौवें वर्गमूल प्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? जगश्रेणीका दशवां वर्गमूल प्रतिभाग है । तीसरीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे दूसरी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके ग्यारहवें और बारहवें वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो तत्प्रमाण गुणकार है । अथवा, जगश्रेणीके दशवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात ग्यारहवें वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? जगश्रेणीका बारहवां वर्गमूल प्रतिभाग है । दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे सामान्य नारकियोंका मिथ्यादृष्टि

गुणगारो ? वारसवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि तेरसवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? घणंगुलविदियवग्गमूलं । पढमपुढविमिच्छाइट्ठिविक्खंमसूई । पढमपुढविमिच्छाइट्ठिद्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? पढमपुढविमिच्छाइट्ठिविक्खंमसूई । पढमपुढविमिच्छाइट्ठिद्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? पढमपुढविमिच्छाइट्ठिविक्खंमसूई । सामग्गणेरइयमिच्छाइट्ठिद्वमसंखेज्जभागभूदविदियादिल्लपुढविमिच्छाइट्ठिद्वमेत्तेण । पदरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? अवहारकालो । लोगो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेढी । एवं णिरयगई समत्ता ।

अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके बारहवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात तेरहवें वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? घनांगुलका द्वितीय वर्गमूल प्रतिभाग है । सामान्य नारकियोंके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे पहली पृथिवीके नारकियोंका मिथ्यादृष्टि अवहारकाल विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? सामान्य अवहारकालके असंख्यातवें भागरूप प्रक्षेप अवहारकालरूप विशेषसे अधिक है । पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे जगश्रेणी असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? पहली पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची गुणकार है । जगश्रेणीसे पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पहली पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची गुणकार है । पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्य विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यके असंख्यातवें भागरूप दूसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवी तक छह पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टियोंका जितना प्रमाण है तन्मात्रसे विशेष अधिक है । सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे जगप्रतर असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाल गुणकार है । जगप्रतरसे लोक असंख्यात गुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणी गुणकार है ।

विशेषार्थ— सर्व परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करते समय ऊपर गुणस्थानप्रतिपन्न असंयतसम्यग्दृष्टि आदि सामान्य नारकियोंका अल्पबहुत्व नहीं कहा गया है । यदि इनके

१ प्रतिपु ' सेढी असंखेज्जगुणगारो ' इति पाठः ।

२ दिसाणुवाएणं सञ्चत्थोवा अहे सत्तमापुढवीनेरइया पुरच्छिमपच्चत्थिमउत्तरेणं, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा । दाहिणेहिंती अहे सत्तमापुढवीनेरइएहिंती छट्ठीए तमाए पुढवीए नेरइया पुरच्छिमपच्चत्थिमउत्तरेणं दाहिणेणं असंखेज्जगुणा । दाहिणिञ्जेहिंती तमाए पुढवीनेरइएहिंती पंचमाए धूमप्पमाए पुढवीए नेरइया पुरच्छिमपच्चत्थिमउत्तरेणं असंखेज्जगुणा दाहिणेणं असंखेज्जगुणा । दाहिणिञ्जेहिंती धूमप्पमापुढवीनेरइएहिंती चउत्थीए पंकप्पमाए पुढवीए नेरइया पुरच्छिमपच्चत्थिमउत्तरेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा । दाहिणिञ्जेहिंती पंकप्पमापुढवीनेरइएहिंती तइयाए बालुयप्पमाए पुढवीए नेरइया पुरच्छिमपच्चत्थिमउत्तरेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा । दाहिणिञ्जेहिंती

तिरिक्खगईए तिरिक्खेसु मिच्छाइट्टिप्पहुडि जाव संजदा- संजदा ति ओघं ॥ २४ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो उच्चदे । तं जहा— अणंतत्तणेण तिरिक्खगदिमिच्छाइट्टीणं ओघमिच्छाइट्टीजीवेहिंतो विसेसाभावादो तिरिक्खगइमिच्छाइट्टीणं दव्व-खेत्त-काले अस्सि-उण जा ओघमिच्छाइट्टिपरूवणा सा सव्वा संभवदि । गुणपडिवण्णाणं पि असंखेज्जत्तणेण ओघपडिवण्णेहि समाणाणं जा ओघपडिवण्णपरूवणा सा सव्वा संभवदि । तम्हा दव्व-ट्टियणए अवलंबिज्जमाणे तिरिक्खोघस्स परूवणा ओघववदेसं लब्भेदे । पज्जवंट्टियणए अवलंबिज्जमाणे पुण ओघपरूवणा ण भवदि, तिरिक्खगइवदिरित्ततिगदीणमत्थित्तस्स-

अल्पबहुत्वको मिलाकर कथन किया जाता तो प्रारंभमें जो प्रथम नरकके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सबसे स्तोक कहा है उसके स्थानमें 'नारक सामान्य असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है और इससे विशेष अधिक प्रथम पृथिवीके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल है, इत्यादि कहा जाता । पर यहां पर इस सब कथनको टीकाकारने क्यों छोड़ दिया है, यह बतलाना कठिन है ।

इसप्रकार नरकगतिका वर्णन समाप्त हुआ ।

तिर्यंच गतिका आश्रय करके तिर्यंचोंमें मिथ्यादृष्टिसे लेकर संयतासंयत तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती तिर्यंच सामान्य प्ररूपणाके समान हैं ॥ २४ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । वह इसप्रकार है—तिर्यंचगतिके मिथ्यादृष्टियोंमें ओघ मिथ्यादृष्टि जीवोंसे अनन्तत्वकी अपेक्षा कोई विशेषता नहीं है, इसलिये द्रव्य, क्षेत्र और कालप्रमाणका आश्रय करके जो ओघ मिथ्यादृष्टियोंकी प्ररूपणा है वह संपूर्ण तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवोंके संभव है । उसीप्रकार गुणस्थानप्रतिपन्न तिर्यंच भी असंख्यातत्वकी अपेक्षा सामान्य गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके समान हैं, इसलिये गुणस्थानप्रतिपन्न सामान्य जीवोंकी जो प्ररूपणा है वह संपूर्ण गुणस्थानप्रतिपन्न तिर्यंचोंके संभव है । अतएव द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन करने पर सामान्य तिर्यंचोंकी प्ररूपणा ओघ व्यपदेशको प्राप्त होती है । परंतु पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करने पर सामान्य प्ररूपणा तिर्यंचोंके नहीं पाई जाती है, क्योंकि, यदि ऐसा नहीं माना जाय तो तिर्यंच गतिके अतिरिक्त शेष तीन गतियोंका अस्तित्व ही नहीं

वालयप्पमापुदवीनेरइएहिंतो दोच्चाए सक्करप्पभाए पुदवीए नेरइया पुरच्छिमपच्चत्थिमउत्तरेण असंखेज्जगुणा, दाहिणेण असंखेज्जगुणा । दाहिणिल्लेहिंतो सक्करप्पमापुदवीनेरइएहिंतो इमीसे रयणप्पभाए पुदवीए नेरइया पुरच्छिमपच्चत्थिमउत्तरेण असंखेज्जगुणा, दाहिणेण असंखेज्जगुणा । म, सू. ३, १. पृ. ३४८-३५०.

१ तिर्यंगतौ तिरश्चां मिथ्यादृष्टयोऽनन्तानन्ताः । सासादनसम्यग्दृष्टयः संयतासंयतान्ताः पच्योपमासंख्येय-
मागप्रमिताः । स. सि. १, ८. संसारी × × तिगदिहीणया × × सामण्णा × × तेरिक्खा । गो. जी. १५५.

णहाणुववत्तीदो । तदो पज्जवद्वियणए अवलंबिज्जमाणे ओघपरूवणादो तिरिक्खगदिपरूवणाए णाणत्तं वत्तइस्सामो । सच्चजीवरासिस्सुवरि सगुणपडिवण्णसिद्धतिगदिरासिं पक्खिविय पुणो तेसिं चैव वग्गं तिरिक्खमिच्छाइट्टिरासिभजिदं च पक्खित्ते तिरिक्खामिच्छाइट्टीणं धुवरासी होदि । एसो मिच्छाइट्टिपरूवणमिह विसेसो ? गुणपडिवण्णपरूवणाए विसेसं वत्तइस्सामो । तं जहा— देवसासणसम्माइट्टिअवहारकाले आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे तिरिक्खअसंजदसम्माइट्टिअवहारकालो होदि । सो आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे तिरिक्खसम्मामिच्छाइट्टिअवहारकालो होदि । सो संखेज्जरूवेहि गुणिदे सासणसम्माइट्टिअवहारकालो होदि । सो आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे तिरिक्खसंजदासंजदअवहारकालो होदि । एदेहि अवहारकालेहि पल्लिदोवमे भागे हिदे तिरिक्खगदिगुणपडिवण्णाणं रासीओ हवंति । एसो गुणपडिवण्णपरूवणाए विसेसो, णत्थि अण्णमिह कम्मि वि ।

बन सकता है । अतः पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करने पर ओघ प्ररूपणासे तिर्यंच गतिकी प्ररूपणामें भेद है । आगे इसी बातको बतलाते हैं—

संपूर्ण जीवराशिमें गुणस्थानप्रतिपन्न तीन गतिसंबन्धी जीवराशि और सिद्धराशिको मिलाकर पुनः गुणस्थानप्रतिपन्न तीन गतिसंबन्धी जीवराशि और सिद्धराशिके वर्गको तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवराशिसे भाजित करके जो लब्ध आवे उसे भी पूर्वोक्त राशिमें मिला देने पर तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंकी ध्रुवराशि होती है । तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंकी प्ररूपणामें इतना विशेष है ।

विशेषार्थ—यहां पर ध्रुवराशिरूपसे जो तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवराशिके उत्पन्न करनेके लिये भागहार उत्पन्न करके बतलाया है, इसका भाग संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें देनेसे तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

अब आगे गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंकी प्ररूपणामें विशेषताको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है— देव सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंका अवहारकाल होता है । तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर तिर्यंच सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । तिर्यंच सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर तिर्यंच संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है । इन अवहारकालोंसे पथ्योपमके भाजित करने पर गुणस्थानप्रतिपन्न तिर्यंचोंकी राशियां होती हैं । यही गुणस्थानप्रतिपन्न प्ररूपणाकी विशेषता है । अन्य कथनमें कहीं भी कोई विशेषता नहीं है ।

१ प्रतिपु ' हवदि ' इति पाठः ।

संपहि अणंतरासीसु द्व्यपरूवणादो कालपरूवणा सुहुमा भवदु णाम, तत्थ अणताणंतस्स पुव्वमणुवलद्धस्स उवलद्धीदो अदीदकालादो अणंतगुणत्तुवलंभादो च । ण कालपरूवणादो खेत्तपरूवणा सुहुमा, अधिगोवलद्धीए अणिमित्तत्तादो । तदो परूवण-परिवाडी ण घडदे इदि ? ण, अणंतलोगमेत्ताणं एगलोगम्मि अवगासो अत्थि त्ति विसेसुवलंभादो कालादो खेत्तस्स सुहुमत्तं पडि विरोहाभावादो ।

(पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइटी द्व्यप्रमाणेण केवडिया, असं-
खेज्जा' ॥ २५ ॥)

एदस्स सुत्तस्स णिरओघद्व्यपरूवणासुत्तस्सेव वक्खाणं कायव्वं । एवं कए द्व्यपरूवणा गदा भवदि ।

(असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति
कालेण ॥ २६ ॥)

शंका—अनन्तप्रमाण राशियोंमें द्रव्यप्ररूपणासे कालप्ररूपणा सूक्ष्म रही आओ, क्योंकि, कालप्ररूपणामें पहले नहीं उपलब्ध हुए अनन्तानन्तकी उपलब्धि पाई जाती है, और अतीतकालसे अनन्तगुणत्व पाया जाता है । परंतु कालप्ररूपणासे क्षेत्रप्ररूपणा सूक्ष्म नहीं हो सकती है, क्योंकि, क्षेत्रप्ररूपणामें अधिक उपलब्धिका कोई निमित्त नहीं पाया जाता है । इसलिये द्रव्यप्ररूपणाके अनन्तर कालप्ररूपणा और कालप्ररूपणाके अनन्तर क्षेत्रप्ररूपणा, इसप्रकार प्ररूपणाकी परिपाटी नहीं बन सकती है ?

समाधान—नहीं, अनन्त लोकमात्र द्रव्योंका एक लोकमें अवकाश पाया जाता है, इसप्रकारकी विशेषताकी उपलब्धि होनेसे कालकी अपेक्षा क्षेत्र सूक्ष्म है, इसमें कोई विरोध नहीं आता है ।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ?
असंख्यात हैं ॥ २५ ॥

सामान्य नारकियोंके द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा प्ररूपण करनेवाले सूत्रके व्याख्यानके समान ही इस सूत्रका व्याख्यान करना चाहिये (देखो सूत्र १५) । इसप्रकार व्याख्यान करने पर द्रव्यप्रमाणकी प्ररूपणा समाप्त होती है ।

कालकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ २६ ॥

एदस्स सुत्तस्स वि दोहि पयारेहि अवदारं' परूविय गिरओधकालपरूवणा-
सुत्तस्सेव वक्खणं कायच्चं । एत्थ मिच्छाइट्ठिणिहेसो किमट्ठं ण कदो ? ण, अणंतरादीद-
सुत्तादो मिच्छाइट्ठि ति अणुवट्ठमाणत्तादो ।

अध सिया असंखेज्जासंखेज्जासु ओसप्पिणि-उत्सप्पिणीसु अदिक्कंतासु तिरिक्ख-
गईए पंचिदियतिरिक्खणं वोच्छेदो हवदि, पंचिदियतिरिक्खट्ठिदीए उवरि तत्थ
अवट्ठणाभावादो ति ? ण एस दोसो, एइंदिय-विगल्लिदिएहिंतो देव-णेइय-मणुस्सेहिंतो च
पंचिदियतिरिक्खेसुप्पज्जमाणजीवसंभवादो । आयविरहिय-सव्वयरासीए^१ वोच्छेदो हवदि ।
एसा पुण सव्वया आयसहिया चेदि ण वोच्छज्जदे । सम्मामिच्छाइट्ठिरासीव किं ण
भवदीदि चेण्ण, तत्थ गुणट्ठिदिकालादो अंतरकालस्स बहुत्तुवलंमादो । ण च एत्थ
पंचिदियतिरिक्खेसु भवट्ठिदिकालादो विरहकालस्स बहुत्तणमत्थि, अंतरकालस्स अंतो-

इस सूत्रका भी दोनों प्रकारसे अवतारका प्ररूपण करके सामान्य नारकियोंके काल
प्रमाणकी अपेक्षा प्ररूपण करनेवाले सूत्रके व्याख्यानके समान व्याख्यान करना चाहिये
(देखो सूत्र १६) ।

शंका—इस सूत्रमें मिथ्यादृष्टि पदका निर्देश क्यों नहीं किया ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, अनन्तर पूर्ववर्ती सूत्रसे 'मिथ्यादृष्टि' इस पदकी अनुवृत्ति
चली आ रही है ।

शंका—कदाचित् असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके निकल
जाने पर तिर्यचगतिके पंचेन्द्रिय तिर्यचोंका विच्छेद हो जायगा, क्योंकि, पंचेन्द्रिय तिर्यचकी
स्थितिके ऊपर तिर्यचगतिमें उनका अवस्थान नहीं रह सकता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, पकेन्द्रियों और विकलेन्द्रियोंमेंसे तथा
देव, नारकी और मनुष्योंमेंसे पंचेन्द्रिय तिर्यचोंमें उत्पन्न होनेवाले जीव संभव हैं । जो राशि
व्ययसहित और आयरहित होती है उसका ही सर्वथा विच्छेद होता है । परंतु यह पंचेन्द्रिय
तिर्यच मिथ्यादृष्टि राशि तो व्यय और आय इन दोनों सहित है, इसलिये इसका विच्छेद नहीं
होता है

शंका—जिसप्रकार सम्यग्मिथ्यादृष्टि राशि कदाचित् विच्छिन्न हो जाती है, उसीप्रकार
यह राशि भी क्यों नहीं होती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, वहां पर गुणस्थानके कालसे अन्तरकाल बड़ा है, इसलिये
सम्यग्मिथ्यादृष्टि राशिका कदाचित् विच्छेद हो जाता है । परंतु यहां पंचेन्द्रिय तिर्यचोंमें
भवस्थितिके कालसे विरहकाल बड़ा नहीं है, क्योंकि, आगममें पंचेन्द्रिय तिर्यचोंके अन्तर-

१ अ प्रतौ ' अवहारं ' इति पाठः ।

२ प्रतिषु ' सव्वरासीए ' इति पाठः ।

मुहुत्तुवणसादो । भवद्विदिकालस्स' सादिरेयतिण्णपलिदोवमोवदेसादो । 'णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा' चि सुत्तादो वा विरहाभावो णव्वदे । एवं कालपरूवणा गदा ।

**खेत्तेण पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठीहि पदरमवहिरदि देव-
अवहारकालादो असंखेज्जगुणहीणकालेण ॥ २७ ॥**

असिद्धेण देवअवहारकालेण कथं पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठीणमवहारकालो साहि-
ज्जदे ? ण एस दोसो, अणाइणिहणस्स आगमस्स असिद्धत्ताणुववत्तीदो । अणवगमो
असिद्धत्तणमिदि चे ण, वक्खाणादो तदवगमसिद्धीदो । संपहि वेसय-छप्पणंगुलवग्ग-
मावलियाए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठीअवहारकालो होदि ।
अहवा आवलियाए असंखेज्जदिभागेण वेसय-छप्पणमेत्तसूचिअंगुलेसु भागे हिदेसु
तत्थ जं लद्धं तं वग्गिदे पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठीअवहारकालो होदि । अहवा पुव्विल्ल-
मावलियाए असंखेज्जदिभागं वग्गेऊण पण्हिसहस्स-पंचसय-छत्तीसमेत्तपदरंगुलेसु भागे

कालका अन्तर्मुहूर्तमात्र उपदेश पाया जाता है; और भवस्थिति कालका कुछ अधिक तीन
पल्योपमका उपदेश दिया है । इसलिये पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि राशिका विच्छेद नहीं
होता है । अथवा, 'नाना जीवोंकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीव सर्व काल रहते हैं'
इस सूत्रसे भी पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंका विरहाभाव जाना जाता है । इसप्रकार काल-
प्ररूपणा समाप्त हुई ।

क्षेत्रकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंके द्वारा देवोंके अवहारकालसे
असंख्यातगुणे हीन कालसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ २७ ॥

शंका—देवोंका प्रमाण लानेके लिये जो अवहारकाल कहा है वह असिद्ध है,
इसलिये असिद्ध देव अवहारकालसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल कैसे
साधा जाता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, अनादिनिधन आगम असिद्ध नहीं
हो सकता है ।

शंका—आगमका ज्ञान नहीं होना ही आगमका असिद्धत्व है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, व्याख्यानसे आगमके ज्ञानकी सिद्धि हो जाती है ।

अब बतलाते हैं कि दोसौ छप्पन सूच्यंगुलके वर्गको आवलीके असंख्यातवें भागसे
भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । अथवा, आवलीके
असंख्यातवें भागसे दोसौ छप्पन सूच्यंगुलोंके भाजित करने पर वहां जो लब्ध आवे उसका वर्ग
कर देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकाल होता है । अथवा, पहले स्थापित
आवलीके असंख्यातवें भागको वर्गित करके जो प्रमाण आवे उससे पैंसठ हजार पांचसौ

१ प्रतिषु 'अवद्विदिकालस्स' इति पाठः ।

हिदेसु पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्टिअवहारकालो आगच्छदि^१ । अहवा पण्णट्टिसहस्स-पंच-सय-छत्तीसरूवोवट्टिदआवलियाए असंखेज्जदिभागस्स वग्गेण पदरंगुले भागे हिदे पंचि-दियतिरिक्खमिच्छाइट्टिअवहारकालो आगच्छदि ।

एत्थ खंडिदादिविहिं वत्तइस्सामो । तं जहा- पदरंगुले असंखेज्जे खंडे कए एयं खंडं पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्टिअवहारकालो होदि ॥ खंडिदं गदं । आवलियाए असंखेज्जदिभागेण पदरंगुले भागे हिदे पंचि-दियतिरिक्खमिच्छाइट्टिअवहारकालो होदि । भाजिदं गदं । आवलियाए असंखेज्जदिभागं विरलेऊण एकेकस्स रूवस्स पदरंगुलं समखंडं करिय दिण्णे तत्थेगखंडं पंचिदियतिरिक्ख-मिच्छाइट्टिअवहारकालो होदि । विरलिदं गदं । तमवहारकालं सलागभूदं ठवेऊण पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्टिअवहारकालपमाणेण पदरंगुलादो अवहिरिज्जदि सलागाहितो एगरूवमवणिज्जदि । एवं पुणो पुणो अवणिज्जमाणे सलागाओ पदरंगुलं च जुगवं णिट्टिदं^२ । तत्थ आदीए वा अंते वा मज्जे वा एगवारमवहिदपमाणं पंचिदियतिरिक्ख-

छत्तीसमात्र प्रतरांगुलोंके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकाल होता है । अथवा, पैंसठ हजार पांचसौ छत्तीससे आवलीके असंख्यातवें भागके वर्गको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उससे प्रतरांगुलके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकाल आता है । अब यहां खंडित आदिककी विधिको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है—

प्रतरांगुलके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे एक खंडप्रमाण पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है । इसप्रकार खंडितका वर्णन समाप्त हुआ । आवलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है । इसप्रकार भाजितका वर्णन समाप्त हुआ । आवलीके असंख्यातवें भागको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्रतरांगुलको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर उनमेंसे एक विरलनके प्रति प्राप्त एक खंडप्रमाण पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है । इसप्रकार विरलितका वर्णन समाप्त हुआ । उस आवलीके असंख्यातवें भागरूप अवहारकालको शलाकारूपसे स्थापित करके अनन्तर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकालके प्रमाणको प्रतरांगुलमेंसे घटा देना चाहिये । एकवार घटाया इसलिये शलाका-राशिमैंसे एक कम कर देना चाहिये । इसप्रकार पुनः पुनः प्रतरांगुलमेंसे आवलीके असंख्यातवें भागको और शलाकाराशिमैंसे एकको उत्तरोत्तर कम करते जानेपर शलाकाराशि और प्रतरांगुल एक साथ समाप्त होते हैं । यहां पर आदिमें अथवा मध्यमें अथवा अन्तमें एकवार जितना प्रमाण घटाया उतना पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है । इसप्रकार

१ अ-प्रती ' होदि ', आ-प्रती ' होदि आगच्छदि ' इति पाठः ।

२ प्रतिषु ' णिट्टिदं ' इति पाठः ।

मिच्छादृष्टिअवहारकालो होदि । अवहिदं गदं । तस्स पमाणं पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागे असंखेजाणि सूचिअंगुलाणि । पमाणं गदं । केण कारणेण ? सूचिअंगुलेण पदरंगुले भागे हिदे सूचिअंगुलमागच्छदि । सूचिअंगुलपढमवग्गमूलेण पदरंगुले भागे हिदे सूचिअंगुल-पढमवग्गमूलमिह जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि सूचिअंगुलाणि लब्धंति । एवमसंखेज्जजाणि वग्गङ्गाणाणि हेद्वा ओसरिऊण आवलियाए असंखेज्जदिभागेण पदरंगुले भागे हिदे असंखेज्जजाणि सूचिअंगुलाणि आगच्छंति । कारणं गदं । आवलियाए असंखेज्जदिभागेण सूचिअंगुले भागे हिदे लद्धम्मि जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि सूचिअंगुलाणि । अहवा आवलियाए असंखेज्जदिभागेण सूचिअंगुलपढमवग्गमूलमवहरिय लद्धेण सूचिअंगुल-पढमवग्गमूलं चेव गुणिदे तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि सूचिअंगुलाणि पंचिदिय-तिरिखमिच्छादृष्टिअवहारकालो होदि । एवं गंतूण आवलियाए असंखेज्जदिभागेण आवलियाए भागे हिदाए लद्धेण आवलियं गुणियं तदो पदरावलियं गुणिय एवं जाव सूचिअंगुलपढमवग्गमूलं ति गिरंतरं सयलवग्गाणं अण्णोण्णम्भत्थे कदे तत्थ जत्तियाणि

अपहतका कथन समाप्त हुआ । उस पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण प्रतरांगुलके असंख्यातवें भाग है जो असंख्यात सूच्यंगुलप्रमाण होता है । इसप्रकार प्रमाणका वर्णन समाप्त हुआ ।

शंका — पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण असंख्यात सूच्यंगुल किस कारणसे है ?

समाधान — सूच्यंगुलसे प्रतरांगुलके भाजित करने पर एक सूच्यंगुलका प्रमाण आता है । सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलसे प्रतरांगुलके भाजित करने पर सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलका जितना प्रमाण हो उतने सूच्यंगुल लब्ध आते हैं । इसीप्रकार असंख्यात वर्गस्थान नीचे जाकर आवलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके भाजित करने पर असंख्यात सूच्यंगुल लब्ध आते हैं । इसप्रकार कारणका वर्णन समाप्त हुआ ।

आवलीके असंख्यातवें भागसे सूच्यंगुलके भाजित करने पर वहां जितना प्रमाण लब्ध आवे उतने सूच्यंगुलप्रमाण पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल है । अथवा, आवलीके असंख्यातवें भागसे सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलको अपहत करके जो लब्ध आवे उससे सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलके गुणित करने पर जितना प्रमाण लब्ध आवे उतने सूच्यंगुलप्रमाण पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल है । इसीप्रकार असंख्यात वर्गस्थान नीचे जाकर आवलीके असंख्यातवें भागसे आवलीके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उससे आवलीको गुणित करके पुनः उस गुणित राशिसे प्रतरावलीको गुणित करके इसीप्रकार सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलपर्यंत संपूर्ण वर्गोंके निरन्तर परस्पर गुणित करने पर यहां जितना प्रमाण लब्ध आवे उतने सूच्यंगुल आते हैं और यही पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल

रूपाणि तप्तियाणि सूचिअंगुलाणि हवंति । गिरुत्ती गदा ।

वियप्पो दुविहो, हेट्टिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि । तत्थ हेट्टिमवियप्पं वत्तइस्सामो । आवलियाए असंखेज्जदिभागेण सूचिअंगुले भागे हिदे लद्धेण तं चेव गुणिदे पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्टिअवहारकालो होदि । अहवा तेणेव भागहारेण सूचिअंगुलपटमवग्गमूले भागे हिदे लद्धेण तं चेव गुणेऊण तेण सूचिअंगुले गुणिदे पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्टिअवहारकालो होदि । एवमसंखेज्जाणि वग्गद्वानाणि हेट्टा ओसरिऊण आवलियाए असंखेज्जदिभागेण आवलियाए भागे हिदाए जं लद्धं तेण तं चेव गुणिय तस्सुवरिमवग्गं गुणिय एवं जाव सूचिअंगुलेत्ति गिरंतरं सच्चवग्गाणं अण्णोण्णभासे कए पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्टिअवहारकालो होदि । वेरूवे हेट्टिमवियप्पो गदो । अट्टरूवे वत्तइस्सामो । आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदसूचिअंगुलेण घणंगुले भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्टिअवहारकालो होदि । तं जहा—सूचिअंगुलेण घणंगुले भागे हिदे पदरंगुलमागच्छदि । पुणो आवलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरंगुले भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्टिअवहारकालो होदि । घणाघणे हेट्टिमवियप्पं वत्तइस्सामो । आवलियाए

हे । इसप्रकार निरुक्तिका वर्णन समाप्त हुआ ।

विकल्प दो प्रकारका है, अधस्तन विकल्प और उपरिम विकल्प । उनमेंसे अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं—आवलीके असंख्यातवें भागसे सूच्यंगुलके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उससे उसी सूच्यंगुलके गुणित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण होता है । अथवा, उसी आवलीके असंख्यातवें भागरूप भागहारसे सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उससे सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे सूच्यंगुलके गुणित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है । इसीप्रकार असंख्यात वर्गस्थान नीचे जाकर आवलीके असंख्यातवें भागसे आवलीके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उससे उसी आवलीको गुणित करके पुनः उस गुणित राशिसे उस आवलीके उपरिम वर्गको गुणित करके इसीप्रकार गुणित करते हुए सूच्यंगुलपर्यंत संपूर्ण वर्गोंके निरन्तर परस्पर गुणित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है । इसप्रकार द्विरूपमें अधस्तन विकल्प समाप्त हुआ ।

अब अष्टरूपमें अधस्तन विकल्प बतलाते हैं—आवलीके असंख्यातवें भागसे सूच्यंगुलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनांगुलके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है—सूच्यंगुलका घनांगुलमें भाग देने पर प्रतरांगुल आता है । पुनः आवलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है ।

१ अ-आ-प्रत्योः 'अंगुलस्स' क-प्रती 'अंगुल' इति पाठः ।

असंखेज्जदिभागेण गुणिदसूचिअंगुलेण घणंगुलपढमवग्गमूलं गुणेऊण तेण घणाघणंगुल-
पढमवग्गमूले भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइड्डिअवहारकालो होदि । तं जहा-
घणंगुलपढमवग्गमूलेण घणाघणंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे घणंगुलमागच्छदि । पुणो
सूचिअंगुलेण घणंगुले भागे हिदे पदरंगुलमागच्छदि । पुणो आवलियाए असंखेज्जदि-
भाएण पदरंगुले भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइड्डिअवहारकालो होदि । एवं
हेट्टिमवियप्पो गदो ।

उवरिमवियप्पो तिविहो, गहिदो गहिदगहिदो गहिदगुणमारो चेदि । तत्थ वेरूवे
गहिदं वत्तइस्सामो । आवलियाए असंखेज्जदिभागेण पदरंगुलं भागे हिदे पंचिदिय-
तिरिक्खमिच्छाइड्डिअवहारकालो आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते
रासिस्स छेदणए कदे पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइड्डिअवहारकालो होदि । एसो मज्झिम-
वियप्पो, एदमवेक्खिय हेट्टिम-उवरिमववएससंभवादो । एसो उवयारेण उवरिमवियप्पो

अथ घनाघनमें अधस्तन विकल्प बतलाते हैं— आवलीके असंख्यातवें भागसे सूच्य-
गुलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनांगुलके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध
आवे उससे घनाघनांगुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि
अवहारकाल होता है । इसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— घनांगुलके प्रथम वर्गमूलसे
घनाघनांगुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर घनांगुलका प्रमाण आता है । पुनः सूच्यंगुलसे
घनांगुलके भाजित करने पर प्रतरांगुलका प्रमाण आता है । पुनः आवलीके असंख्यातवें भागसे
प्रतरांगुलके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है । इसप्रकार
अधस्तन विकल्प समाप्त हुआ ।

उपरिम विकल्प तीन प्रकारका है, गृहीत, गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकार । उनमेंसे
द्विरूपमें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— आवलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके
भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है । उक्त भागहारके जितने
अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी पंचेन्द्रिय तिर्यंच
मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है । वास्तवमें यह मध्यम विकल्प है और इसीकी अपेक्षा करके
ही अधस्तन और उपरिम संज्ञा संभव है, इसलिये उपचारसे यह उपरिम विकल्प कहा
जाता है ।

विशेषार्थ— विवक्षित भाजकका किसी विवक्षित भाज्यमें भाग देनेसे जो लब्ध आता है
वही लब्ध जब उस विवक्षित भाज्य और भाजकसे नीचेकी संख्याओंका आश्रय लेकर निकाला
जाता है, तब वह अधस्तन विकल्प कहलाता है; और जब वही लब्ध उस विवक्षित भाज्य और
भाजकसे ऊपरकी संख्याओंका आश्रय लेकर निकाला जाता है, तब उसे उपरिम विकल्प कहते
हैं । इस नियमके अनुसार प्रकृतमें भाजक आवलीका असंख्यातवां भाग और भाज्य प्रतरांगुल,
इन दोनोंसे नीचेकी संख्याओंका आश्रय लेकर जब पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल

सि बुद्धे । संपहि अणुवयारेण उवरिमवियप्पं वत्तइस्सामो । तं जहा— आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदपदरंगुलेण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खमिच्छा-इड्ढिअवहारकालो होदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइड्ढिअवहारकालो होदि । एत्थ अद्धच्छेदणयमेलावणविहाणं चितिय वत्तव्वं । एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु पेयव्वं । अट्ठरूवे वत्तइस्सामो । आवलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरंगुलउवरिमवग्गं गुणेऊण तेण घणंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइड्ढिअवहारकालो होदि । तं जहा— पदरंगुलउवरिमवग्गेण घणंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे पदरंगुलमागच्छदि । पुणो आवलियाए असंखेज्जदिभाएण-पदरंगुले भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइड्ढिअवहारकालो आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइड्ढि-

लाया जायगा, तब इस प्रक्रियाको अधस्तन विकल्प कहेंगे; और जब उक्त दोनों संख्याओंसे ऊपरकी संख्याओंका आश्रय लेकर उक्त अवहारकाल लाया जायगा, तब उसे उपरिम विकल्प कहेंगे । आवलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरांगुलको भाजित करके पंचेन्द्रिय तिर्यंच अवहारकालके लानेकी जो प्रक्रिया है वही वास्तवमें अधस्तन या उपरिम विकल्प नहीं कहीं जा सकती है, क्योंकि, अधस्तन और उपरिम विकल्पके निश्चित करनेके लिये यहाँ वही आधार है । अतः वास्तवमें वह मध्यम विकल्प ही है, उपरिम नहीं ।

अब अनुपचारसे उपरिम विकल्पको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है— आवलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरांगुलको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका प्रतरांगुलके उपरिम वर्गमें भाग देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण होता है । उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भ्रज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण होता है । यहाँ पर अर्धच्छेदोंके मिलानेकी विधिका विचार कर कथन करना चाहिये । इसीप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्त-स्थानोंमें भी ले जाना चाहिये ।

अब अष्टरूपमें उपरिम विकल्प बतलाते हैं— आवलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनांगुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण आता है । वह इसप्रकार है— प्रतरांगुलके उपरिम वर्गसे घनांगुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर प्रतरांगुल आता है । पुनः आवलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण आता है । उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भ्रज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल

अवहारकालो आगच्छदि । एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं । घणाघणे वत्तइस्सामो । आवलियाए असंखेज्जादिभाएण पदरंगुलउवरिमवग्गं गुणेऊण तेण घणंगुलउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गं गुणेऊण घणाघणंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि । तं जहा— घणंगुलउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गेण घणाघणंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे घणंगुलउवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो पदरंगुलउवरिमवग्गेण घणंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे पदरंगुलमागच्छदि । पुणो आवलियाए असंखेज्जादिभाएण पदरंगुले भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि । पदरंगुलस्स घणंगुलस्स घणाघणंगुलपढमवग्गमूलस्स चासंखेज्जादिभागेण पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालेण गहिदगहिदो गहिदगुणगारो वत्तव्वो । एदेण अवहारकालेण जगसेट्ठिभिह भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई आगच्छदि । जहा णेरइयमिच्छाइट्ठिअवहारकालस्स खंडिदादिपरूवणा कदा तहा एदिस्से विक्खंभसूईए खंडिदादिपरूवणा कायव्वा । एदेण अवहारकालेण जगपदरे भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिद्वयमागच्छदि । एत्थ खंडिद-

आता है । इसीप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्तस्थानोंमें ले जाना चाहिये ।

अब घनाघनमें गृहीत उपरिम विकल्प बनलाते हैं— आवलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनांगुलके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनाघनांगुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण आता है । उसका स्पर्शकरण इसप्रकार है— घनांगुलके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गसे घनाघनांगुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर घनांगुलका उपरिम वर्ग आता है । पुनः प्रतरांगुलके उपरिम वर्गसे घनांगुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर प्रतरांगुल आता है । पुनः आवलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण आता है । उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण आता है । प्रतरांगुलके असंख्यातवें भागरूप, घनांगुलके असंख्यातवें भागरूप और घनाघनांगुलके प्रथम वर्गमूलके असंख्यातवें भागरूप पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकालके द्वारा गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकारका कथन (पहलेके समान) करना चाहिये । इस अवहारकालसे जगश्रेणीके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीका प्रमाण आता है । पहले जिसप्रकार नारक मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीके खंडित आविककी प्ररूपणा कर आवे हैं, उसीप्रकार इस विष्कंभसूचीके खंडित आविकका प्ररूपण करना चाहिये ।

पूर्वोक्त अवहारकालसे जगप्रतरके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि

भाजिद-विरलिद-अवहिद-पमाण-कारण-गिरुत्ति-वियप्पा जहा णेरइयमिच्छाइडिदव्वपरू-
वणाए परूविदा तथा परूवेयव्वा ।

सासणसम्माइडिप्पहुडि जाव संजदासंजदा ति तिरि-
क्खोघं ॥ २८ ॥

एदस्स सुत्तस्स जहा तिरिक्खोघगुणपडिवण्णपमाणपरूवणसुत्तस्स वक्खाणं कदं
तहा कायव्वं । तिरिक्खेसु पंचिदिए मोत्तूण अण्णत्थ गुणपडिवण्णजीवाणं संभवाभावादो ।
एवं पंचिदियतिरिक्खपरूवणा समत्ता ।

संपहि पज्जत्तणामकम्मोदयपंचिदियतिरिक्खपमाणपरूवणं हवदि —

पंचिदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्टी दव्वपमाणेण केवडिया,
असंखेज्जा' ॥ २९ ॥

एत्थ पंचिदियगहणं एइंदिय-विगलिंदियवुदासट्टं । तिरिक्खणिहेसो देव-णेरइय-
मणुसवुदासट्टो । पज्जत्तणिहेसो अपज्जत्तवुदासट्टो । मिच्छाइडिणिहेसेण सेसगुणद्वान-

द्रव्यका प्रमाण आता है । खंडित, भाजित, विरलित, अपहृत, प्रमाण, कारण, निरुक्ति
और विकल्पका प्ररूपण जिसप्रकार नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी प्ररूपणाके समय कर
आये हैं उसीप्रकार यहां पर उन सबका प्ररूपण करना चाहिये ।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानतक पंचेन्द्रिय
तिर्यंच प्रत्येक गुणस्थानमें सामान्य तिर्यंचोंके समान पत्योपमके असंख्यातवें भाग हैं ॥ २८ ॥

जिसप्रकार सामान्य तिर्यंचोंमें गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके प्रमाणके प्ररूपण करनेवाले
सूत्रका व्याख्यान कर आये हैं उसीप्रकार इस सूत्रका व्याख्यान करना चाहिये, क्योंकि,
तिर्यंचोंमें पंचेन्द्रिय जीवोंको छोड़कर दूसरे तिर्यंचोंमें गुणस्थानप्रतिपन्न जीव संभव नहीं हैं ।
इसप्रकार पंचेन्द्रिय तिर्यंच प्ररूपणा समाप्त हुई ।

अब जिनके पर्याप्त नामकर्मका उदय पाया जाता है ऐसे पर्याप्त पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंके
प्रमाणका प्ररूपण करते हैं—

पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ?
असंख्यात हैं ॥ २९ ॥

सूत्रमें एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रियोंके निराकरण करनेके लिये पंचेन्द्रिय पदका ग्रहण
किया है । देव, नारकी और मनुष्योंके निराकरण करनेके लिये तिर्यंच पदका निर्देश किया है ।
अपर्याप्त जीवोंके निराकरण करनेके लिये पर्याप्त पदका निर्देश किया है । सूत्रमें मिथ्यादृष्टि

बुदासो कदो हवदि । द्वयपमाणेणेत्ति णिद्देसेण खेत्त-कालबुदासो कदो हवदि । केवडिया इदि पुच्छासुत्तणिद्देसेण छदुमत्थाणं कत्तारत्तमवणिदं हवदि । असंखेज्जा इदि णिद्देसेण संखेज्जाणंताणं बुदासो कदो । किमटं द्वयपमाणमेव पढमं परूविज्जदि ? ण एस दोसो, अदीवंथूलत्तादो द्वयपरूवणा पढमं परूविज्जदे । कधमेदिस्से थूलत्तणं ? असंखेज्जमेत्त-विसेसिदजीवोवलंभणिमित्तादो । खेत्त-कालेहिंतो द्वयं थोवेत्ति वा पुवं परूविज्जदे । द्वयथोवत्तणं कथं जाणिज्जदे ? ' वड्डीदु जीव-पोगल-कालागासा अणंतगुणा ' एदम्हादो गाहासुत्तादो णव्वदे । सेसपरूवणा जहा णेरइयमिच्छाइद्विद्वयपमाणपरूवणसुत्तस्स उत्ता तथा वत्तवा ।

असंखेजासंखेजाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ३० ॥

पदके निर्देशसे शेष गुणस्थानोंका निराकरण हो जाता है । 'द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा' इसप्रकारके निर्देशसे क्षेत्र और कालप्रमाणका निराकरण हो जाता है । 'कितने हैं' इसप्रकार पृच्छारूप सूत्रके निर्देशसे छद्मस्थकर्तृकत्वका निराकरण हो जाता है । 'असंख्यात हैं' इसप्रकारके निर्देशसे संख्यात और अनन्तका निराकरण हो जाता है ।

शंका—पहले द्रव्यप्रमाणका ही प्ररूपण क्यों किया जा रहा है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, द्रव्यप्ररूपणा अतीव स्थूल है, इसलिये उसका पहले प्ररूपण किया जाता है ।

शंका—यह द्रव्यप्ररूपणा स्थूल कैसे है ?

समाधान—क्योंकि, यह द्रव्यप्ररूपणा केवल असंख्यात विशेषणसे युक्त जीवोंके ग्रहण करनेमें निमित्त है, इसलिये स्थूल है ।

अथवा, क्षेत्र और कालसे द्रव्य स्तोक है, इसलिये उक्त दोनों प्ररूपणाओंके पहले द्रव्यप्ररूपणाका कथन किया जाता है ।

शंका—क्षेत्र और कालसे द्रव्य स्तोक है, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—'बुद्धिकी अपेक्षा जीव, पुद्गल, काल और आकाश उत्तरोत्तर अनन्तगुणे हैं' इस गाथासूत्रसे जाना जाता है कि काल और क्षेत्रसे द्रव्य स्तोक है ।

शेष प्ररूपणा जिसप्रकार नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यके प्रमाणके प्ररूपण करनेवाले सूत्रकी कह आये हैं उसप्रकार कहना चाहिये ।

कालकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ३० ॥

१ प्रतिष्ठु 'अहीद' इति पाठः ।

एत्थ असंखेज्जासंखेज्जाणिदेसो सेस-असंखेज्जाणं बुदासद्धो । ओसप्पिणि-उस्स-
प्पिणीणिदेसो कप्पमाणपरूवणद्धो । कालेणेत्ति णिदेसो खेत्तादिणियत्तणद्धो । कथं दच्च-
परूवणादो कालपरूवणा सुहुमा ? असंखेज्जासंखेज्जोवलंभणिमित्तादो पल्ल सायर-कप्पाण-
मुवरिमसंखाविसेसिदजीवोवलंभणिमित्तत्तादो च । संपहि सुहुमदरपरूवणद्धं सुत्तमाह—

**खेत्तेण पंचिदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठीहि पदरमवहिरदि
देवअवहारकालादो संखेज्जगुणहीणेण कालेण ॥ ३१ ॥**

एत्थ पदरगहणेण जगपदरस्स गहणं, ण पदरंगुलस्स, 'देवअवहारकालादो
संखेज्जगुणहीणेण कालेण' इदि वयणणहाणुववत्तीदो । देवाणमवहारकाले संखेज्जरूवेहि
भागे हिदे जो भागलद्धो सो पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागो होदि । तं कथं जाणिज्जेदे ?
संविग्गीदत्थ-आइरियाणमविरुद्धवयणादो णव्वदे । एसो पंचिदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छा-
इट्ठीणमवहारकालो होदि । अहवा संखेज्जरूवेहि सूचिश्रंगुले भागे हिदे लद्धे वग्गिदे

शेष असंख्यातोंके निराकरण करनेके लिये यहां सूत्रमें असंख्यातासंख्यात पदका
ग्रहण किया है । कल्पके प्रमाणके प्ररूपण करनेके लिये अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी पदका
ग्रहण किया है । क्षेत्रादि प्रमाणोंके निराकरण करनेके लिये 'कालकी अपेक्षा' इस पदका
ग्रहण किया है ।

शंका—द्रव्यप्ररूपणासे कालप्ररूपणा सूक्ष्म कैसे है ?

समाधान—असंख्यातासंख्यातके ग्रहण करनेका निमित्त कालप्ररूपणा है । अथवा,
कालप्ररूपणा पत्य, सागर और कल्पसे ऊपरकी संख्यासे विशिष्ट जीवोंके ग्रहण करानेमें
निमित्त है, इसलिये द्रव्यप्ररूपणासे कालप्ररूपणा सूक्ष्म है ।

अथ अत्यंत सूक्ष्मप्ररूपणाके प्ररूपण करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

**क्षेत्रकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियों द्वारा देव अवहारकालसे
संख्यातगुणे हीन कालसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ ३१ ॥**

यहां सूत्रमें प्रतर पदके ग्रहण करनेसे जगप्रतरका ग्रहण किया है, प्रतरांगुलका नहीं,
क्योंकि, यदि ऐसा न माना जाय तो 'देव अवहारकालकी अपेक्षा संख्यातगुणे हीन कालसे'
यह बचन नहीं बन सकता है । देवोंके अवहारकालमें संख्यातका भाग देने पर जो लब्ध आवे
वह प्रतरांगुलका संख्यातका भाग होता है ।

शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—संविज्ञ होकर जिन्होंने पदार्थोंका निरूपण किया है ऐसे आचार्योंके
अविरुद्ध उपदेशसे जाना जाता है कि देवोंके अवहारकालमें संख्यातका भाग देने पर
प्रतरांगुलका संख्यातका भाग लब्ध आता है । और यही पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टि-
योंका अवहारकाल है । अथवा, संख्यातसे सूत्र्यंगुलके भाजित करने पर जो लब्ध आवे
उसका वर्ग कर देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता

पंचिदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठीणमवहारकालो होदि । अहवा तप्पाओग्गसंखेज्जरूवे वग्गिऊण पदरंगुले भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठीणमवहारकालो होदि । एदस्स खंडिदादओ जाणिय भाणियव्वा । एदेण अवहारकालेण जगपदरे भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठिद्वं होदि । एवं पंचिदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठि-द्व्यपरूवणा गदा ।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा ति ओघं ॥ ३२ ॥

एदस्स सुत्तस्स जहा तिरिक्खगुणपडिवण्णाणं सुत्तस्स वक्खाणं कदं तथा कायव्वं, विसेसाभावादो । एवं पंचिदियतिरिक्खपरूवणा समत्ता ।

**पंचिदियतिरिक्खजोणिणीसु मिच्छाइट्ठी द्व्यपमाणेण केव-
डिया, असंखेज्जा ॥ ३३ ॥**

एत्थ पंचिदियणिहेसो सेसिदियवुदासट्ठो । तिरिक्खणिहेसो सेसगदिवुदासट्ठो । जोणिणीणिहेसो पुरिस-णवुंसयलिंगवुदासट्ठो । मिच्छाइट्ठिणिहेसो सेसगुणपडिवण्णवुदासट्ठो ।

है । अथवा, तद्योग्य संख्यातका वर्ग करके और उस वर्गित राशिका प्रतरांगुलमें भाग देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इस अवहारकालके खंडित आदिकको समझकर कथन करना चाहिये ।

इस अवहारकालसे जगप्रतरके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य होता है । इसप्रकार पंचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंकी द्रव्यप्ररूपणा समाप्त हुई ।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती पंचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्त जीव ओघप्ररूपणाके समान पल्योपमके असंख्यातवें भाग हैं ॥ ३२ ॥

जिसप्रकार तिर्यचोंमें गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके प्रतिपादन करनेवाले सूत्रका व्याख्यान कर आये हैं, उसीप्रकार इस सूत्रका भी व्याख्यान करना चाहिये, क्योंकि, उस सूत्रके व्याख्यानसे इस सूत्रके व्याख्यानमें कोई विशेषता नहीं है । इसप्रकार पंचेन्द्रिय तिर्यच प्ररूपणा समाप्त हुई ।

- पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिमतियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं ॥ ३३ ॥

सूत्रमें पंचेन्द्रिय पदका निर्देश शेष इन्द्रियोंके निवारण करनेके लिये किया है । तिर्यच पदका निर्देश शेष गतियोंके निवारण करनेके लिये किया है । योनिमती पदका निर्देश पुरुषलिंग और नपुंसकलिंगके निवारण करनेके लिये किया है । मिथ्यादृष्टि पदका निर्देश

१ असंखिज्जा पंचिदियतिरिक्खजोणिआ । अनु. सू. १४१ पृ. १७९.

केवडिया इदि पुच्छाणिहेसो सुत्तस्म पमाणपडिवायणट्टो । असंखेज्जा इदि णिहेसो संखेज्जाणंताणं पडिसेहफलो । सेसं पुव्वं व परूवेदव्वं ।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ३४ ॥

एत्थ पुव्वमुत्तादो मिच्छाइट्ठि ति अणुवट्ठवेयव्वं, अण्णहा सुत्तत्थाणुववत्तीदो । सेसं पंचिदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठिकालपरूवणसुत्तमिह वुत्तविहाणेण वत्तव्वं ।

खेत्तेण पंचिदियतिरिक्खजोणिणिमिच्छाइट्ठीहि पदरमवहिरदि देवअवहारकालादो संखेज्जगुणेण कालेण ॥ ३५ ॥

एदस्स सुत्तस्स वक्खणं कीरदे । तं जहा- तिणिणसयसहस्स-चउवीससहस्स-कोडिरूवेहि देवअवहारकालं गुणिदे तदो संखेज्जगुणो पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छा-इट्ठिअवहारकालो होदि । अहवा छज्जोयणसदमंगुलं काऊण वग्गिदे इग्गीसकोडाकोडि-सयाणि तेवीसकोडाकोडीओ छत्तीसकोडिसयसहस्साणि चउसट्ठिकोडिसहस्साणि पदर-गुलाणि पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । अहवा इग्गीसकोडा-

शेष गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके निवारण करनेके लिये किया है। 'कितने हैं' इसप्रकार पृच्छारूप पदका निर्देश सूत्रकी प्रमाणताके प्रतिपादन करनेके लिये किया है। 'असंख्यात' इस पदके निर्देश करनेका फल संख्यात और अनन्तका प्रतिषेध करना है। शेष व्याख्यान पहलेके समान करना चाहिये।

कालकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती मिथ्यादृष्टि जीव असंख्याता-संख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ३४ ॥

यहां पहलेके सूत्रसे मिथ्यादृष्टि इस पदकी अनुवृत्ति कर लेना चाहिये, अन्यथा सूत्रार्थ नहीं बन सकता है। शेष कथन पंचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाणका कालकी अपेक्षा प्ररूपण करनेवाले सूत्रके अनुसार करना चाहिये।

क्षेत्रकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंके द्वारा देवोंके अवहारकालसे संख्यातगुणे अवहारकालसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ ३५ ॥

आगे इस सूत्रका व्याख्यान करते हैं। वह इसप्रकार है— तीन लाख चौबीस हजार करोड़ संख्यासे देवोंके अवहारकालके गुणित करने पर जो लब्ध आवे उससे भी संख्यातगुणा पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकाल है। अथवा, छहसौ योजनके अंगुल करके वर्ग करने पर एकवीससौ कोड़ाकोड़ी, तेवीस कोड़ाकोड़ी, छत्तीस कोड़ी लाख और चौसठ कोड़ी हजार प्रतरांगुल प्रमाण पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता

१ छस्सयजोयणकदिहिदजगपदरं जोणिणीण परिमाणं । गो. जी. १५६.

कोडिसद-तेवीसकोडाकोडि-छत्तीसकोडिलख-चउसट्टिकोडिसहस्सरूवेहि पदरंगुलमोवट्टे-
ऊण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खजोगिणीमिच्छाइट्टिअवहारकालो होदि ।
एदं केसिंचि आइरियवक्खाणं पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्टिजोगिणीअवहारकालपडिबद्धं ण
घडदे । कुदो ? पुरदो वाणवेंतरदेवाणं तिणिणजोयणसदअंगुलवग्गमेत्तअवहारकालो होदि
त्ति वक्खाणदंमणादो । इदं वक्खाणं असच्चं वाणवेंतरअवहारकालपमाणवक्खाणं सच्चमिदि
कथं जाणिज्जेदे ? णत्थि एत्थ अम्हाणमेयंतो, किंतु दोण्हं वक्खाणाणं मज्जे एकेण
वक्खाणेण असच्चेण होदव्वं । अहवा दोणिण वि वक्खाणाणि असच्चाणि, एसा अम्हाणं
पइज्जा ॥ कथमेदं जाणिज्जेदे ? ' पंचिदियतिरिक्खजोगिणीहिंतो वाणवेंतरदेवा संखेज्जगुणा,

है । अथवा इक्वीससौ कोड़ाकोड़ी, तेवीस कोड़ाकोड़ी, छत्तीस कोड़ी लाख, और चौसठ
कोड़ी हजार प्रमाण संख्यासे प्रतरांगुलको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसका प्रतरांगुलके
उपरिम वर्गमें भाग देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है ।

विशेषार्थ—एक योजनके चार कोस, एक कोसके दो हजार धनुष, एक धनुषके
चार हाथ और एक हाथके चौबीस अंगुल होते हैं,* इसलिये एक योजनके अंगुल करने पर
 $१ \times ४ \times २००० \times ४ \times २४ = ७६८०००$ प्रमाण अंगुल आते हैं । ७६८००० को ६०० से गुणा
कर देने पर ६०० योजनके ४६,०८,००००० प्रमाण अंगुल हो जाते हैं । ४६०८००००० संख्यातका
वर्ग कर लेने पर २१,२३,३६,६४,०००००००००० प्रमाण प्रतरांगुल होते हैं । इनका भाग
जरप्रतरमें देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण आता है ।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंके अवहारकालसे संबन्ध रखनेवाला यह कितने ही
आचार्योंका व्याख्यान घटित नहीं होता है, क्योंकि, तीनसौ योजनोंके अंगुलोंका वर्गमात्र व्यंतर
देवोंका अवहारकाल होता है, ऐसा आगे व्याख्यान देखा जाता है ।

शंका—यह पूर्वोक्त पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंके अवहारकालका व्याख्यान असत्य
है और वाणव्यंतर देवोंके अवहारकालके प्रमाणका व्याख्यान सत्य है, यह कैसे जाना जाता है?

समाधान—इस विषयमें पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतीसंबन्धी अवहारकालका व्याख्यान
असत्य ही है और व्यन्तर देवोंके अवहारकालका व्याख्यान सत्य ही है, ऐसा कुछ हमारा
एकान्त मत नहीं है, किंतु हमारा इतना ही कहना है कि उक्त दोनों व्याख्यानोंमेंसे कोई एक
व्याख्यान असत्य होना चाहिये । अथवा, उक्त दोनों ही व्याख्यान असत्य हैं, यह हमारी
प्रतिज्ञा है ।

शंका—उक्त दोनों व्याख्यान असत्य हैं, अथवा, उक्त दोनों व्याख्यानोंमेंसे एक

* छहि अंगुलेहि वादो वेवादेहिं विहत्थिणामा य । दोणिण विहत्थी इत्था वेहत्थेहिं हवे रिक्कू ॥ वेरिक्कूहिं
दंडो दंडसमा जुगधणूणि मुसलं वा । तस्स तहा णाली दोदंडसहस्सयं कोसं ॥ चउकोसेहिं जोयणं × × ।
ति. प. पत्र ५ ।

तत्थेव देवीओ संखेज्जगुणाओ' एदम्हादो खुदाबंधसुत्तादो जाणिअदे । ण च सुत्तम-
प्पमाणं काऊण वक्खणं पमाणमिदि वोत्तुं सक्किअदे, अइप्पसंगादो । ण च एक्केकस्स
देवस्स एका चेव देवी होदि त्ति जुत्ती अत्थि, भवणादियाणं भूओदेवीणमागमेणो-
बलंभादो देवेहिंतो देवीओ वत्तीसगुणाओ' त्ति वक्खणदंसणादो च । तम्हा जदि
वाणवेंतरदेवअवहारकालो तिण्णिजोयणसदअंगुलवग्गमेत्तो त्ति णिच्छओ अत्थि तो
जोणिणीअवहारकालमुप्पायणदं तिण्णिजोयणसदअंगुलवग्गमिहि वत्तीसोत्तरसदपहुडि जिण-
दिट्ठभावो गुणगारो पवेसेयव्वो । अध जोणिणीअवहारकालो छज्जोयणसदअंगुलवग्गमेत्तो
त्ति णिण्णओ अत्थि तो वाणवेंतरअवहारकालमुप्पायणदं छज्जोयणसदअंगुलवग्गो तेत्तीस-
पहुडि जिणदिट्ठभावसंखेज्जरूवेहि ओवट्टेयव्वं । अहवा उभयत्थ वि पदरंगुलस्स तप्पा-
ओम्पो गुणगारो दादव्वो ।

एत्थ खंडिदादिनिहिं वत्तइस्सामो । तं जहा— पदरंगुलउवरिमवग्गे पदरंगुलस्स

व्याख्यान तो असत्य है ही, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान — 'पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंसे वाणव्यन्तर देव संख्यातगुणे हैं और उनकी देवियां वाणव्यन्तर देवोंसे संख्यातगुणी हैं' इस खुदाबंधके सूत्रसे उक्त अभिप्राय जाना जाता है । सूत्रको अप्रमाण करके उक्त व्याख्यान प्रमाण है, ऐसा तो कहा नहीं जा सकता है, अन्यथा, अतिप्रसंग दोष आ जायगा । यदि एक एक देवके एक एक ही देवी होती है, यह युक्ति वी जाय सो भी ठीक नहीं है, क्योंकि, भवनवासी आदि देवोंके बहुतसी देवियोंका आगममें उप देश पाया जाता है । और 'देवोंसे देवियां वत्तीसगुणी होती हैं' ऐसा व्याख्यान भी देखा जाता है । इसलिये वाणव्यन्तरदेवोंका अवहारकाल तीनसौ योजनोंके अंगुलोंका वर्गमात्र है, यदि ऐसा निश्चय है तो पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंके अवहारकालके उत्पन्न करनेके लिये तीनसौ योजनके अंगुलोंके वर्गमें जो राशि जिनदेवने देखी हो तदनुसार वत्तीस अधिक सौ आदि रूप गुणकारका प्रवेश कराना चाहिये । अथवा, 'पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंका अवहारकाल छहसौ योजनोंके अंगुलोंका वर्गमात्र है' यदि ऐसा निश्चय है तो वाणव्यन्तर देवोंका अवहारकाल उत्पन्न करनेके लिये तेतीस आदि जो संख्या जिनेन्द्रदेवने देखी हो उससे छहसौ योजनोंके अंगुलोंके वर्गको अपवर्तित करना चाहिये । अथवा, वाणव्यन्तर और पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती, इन दोनोंके अवहारकालोंके लिये दोनों स्थानोंमें भी प्रतरांगुलके उसके योग्य गुणकार दे देना चाहिये ।

अब यहां खंडित आदिककी विधिको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है— प्रतरांगुलके उपरिम वर्गके प्रतरांगुलके संख्यातवें भागमात्र खंड करने पर उनमेंसे एक खंड प्रमाण

१ प्रतिष्णु 'अणादियादीणं' इति पाठः ।

२ इगिपुरिसे वत्तीस देवी । गो. जी. २७८.

३ प्रतिष्णु 'तिण्णिजोयण' इति पाठः ।

संखेज्जदिभागमेत्तखंडे कए तत्थेयखंडं पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइड्डिअवहारकालो होदि । खंडिदं गदं । पदरंगुलस्स संखेज्जदिभाएण पदरंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइड्डिअवहारकालो होदि । भाजिदं गदं । पदरंगुलस्स-संखेज्जदिभागं विरलेऊण एकेकस्स रूवस्स पदरंगुलस्सुवरिमवग्गं समखंडं करिय दिण्णे तत्थ एगखंडं पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइड्डिअवहारकालो होदि । विरलिदं गदं । पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागं सलागभूदं ठवेऊण पदरंगुलउवरिमवग्गादो पंचिंदियतिरिक्ख-जोणिणीमिच्छाइड्डिअवहारकालपमाणमवणिय सलागादो एगरूवमवणेयत्वं । एवं पुणो पुणो अवहिरिज्जमाणे पदरंगुलउवरिमवग्गो सलागाओ च जुगवं णिट्ठिदाओ । तत्थ आदीए अंते मज्जे वा एयवारमवहिदपमाणं पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइड्डिअवहार-कालो होदि । अवहिदं गदं । तस्स पमाणं पदरंगुलउवरिमवग्गस्स असंखेज्जदिभागो संखेज्जाणि पदरंगुलाणि । तं जहा—पदरंगुलेण पदरंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे पदरंगुल-मागच्छदि । पदरंगुलस्स दुभाएण पदरंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे दोणिण पदरंगुलाणि आगच्छंति । पदरंगुलस्स तिभाएण पदरंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे तिणिण पदरंगुलाणि

पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसप्रकार खंडितका वर्णन समाप्त हुआ । प्रतरांगुलके संख्यातर्वे भागसे प्रतरांगुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसप्रकार भाजितका वर्णन समाप्त हुआ । प्रतरांगुलके संख्यातर्वे भागको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्रतरांगुलके उपरिम वर्गको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर वहां एक खंडमात्र पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसप्रकार विरलितका वर्णन समाप्त हुआ । प्रतरांगुलके संख्यातर्वे भागको शलाकारूप स्थापित करके प्रतरांगुलके उपरिम वर्गमेंसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल घटा देना चाहिये । एकवार घटाया, इसलिये शलाकाराशिमेंसे एक कम कर देना चाहिये । इसप्रकार प्रतरांगुलके उपरिम वर्गमेंसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल और शलाकाराशिमेंसे एक पुनः पुनः घटाते जाने पर प्रतरांगुलका उपरिम वर्ग और शलाकाएं एकसाथ समाप्त हो जाती हैं । वहां आदिमें, अन्तमें अथवा मध्यमें एकवार जितना प्रमाण घटाया जाय उतना पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसप्रकार अपहृतका वर्णन समाप्त हुआ । उस पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण प्रतरांगुलके उपरिम वर्गका असंख्यातर्वां भाग है जो संख्यात प्रतरांगुलप्रमाण है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है—प्रतरांगुलका प्रतरांगुलके उपरिम वर्गमें भाग देने पर एक प्रतरांगुल आता है । प्रतरांगुलके दूसरे भागका प्रतरांगुलके उपरिम वर्गमें भाग देने पर दो प्रतरांगुल लब्ध आते हैं । प्रतरांगुलके तीसरे भागका प्रतरांगुलके उपरिम वर्गमें भाग देने पर तीन प्रतरांगुल लब्ध आते हैं । इसीप्रकार क्रमसे आगे जाकर

आगच्छंति । एवं कमेण गंतूण पदरंगुलस्स संखेज्जादिभागेण पदरंगुलुवरिमवग्गे भागे हिदे संखेज्जाणि पदरंगुलाणि आगच्छंति । पमाण-कारणाणि गदाणि । तस्स का णिरुत्ती ? पदरंगुलस्स संखेज्जादिभागेण पदरंगुले भागे हिदे लद्धमिह जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पदरंगुलाणि हवंति । णिरुत्ती गदा ।

वियप्पो दुविहो, हेट्टिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि । तत्थ हेट्टिमवियप्पं वत्तइस्सामो । पदरंगुलस्स संखेज्जादिभागेण पदरंगुले भागे हिदे लद्धेण तं चेव गुणिदे पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्टिअवहारकालो होदि । अहवा वेरूवे हेट्टिमवियप्पो णत्थि, विहज्जमाणरासीदो हेट्टिमपदरंगुलं पेक्खिय पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्टिअवहारकालस्स बहुत्तुवलंभादो । ण च थोवरासिमवहरिय तत्तो बहुवरासी उप्पादेहुं सक्किज्जदे, विरोहा । अट्टरूवे वत्तइस्सामो । पदरंगुलस्स संखेज्जादिभागेण पदरंगुलं गुणेऊण पदरंगुलघणे भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्टिअवहारकालो होदि । तं जहा-पदरंगुलेण पदरंगुलघणे भागे हिदे पदरंगुलउवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो पदरंगुलस्स संखेज्जादिभागेण पदरंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्टि-

प्रतरांगुलके संख्यातवें भागका प्रतरांगुलके उपरिम वर्गमें भाग देने पर संख्यात प्रतरांगुल लब्ध आते हैं । इसप्रकार प्रमाण और कारणका वर्णन समाप्त हुआ ।

शंका— इसकी क्या निरुक्ति है ?

समाधान— प्रतरांगुलके संख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके भाजित करने पर लब्धमें जो प्रमाण आवे उतने प्रतरांगुल योनिमती मिथ्यादृष्टि अवहारकालमें होते हैं । इसप्रकार निरुक्तिका कथन समाप्त हुआ ।

विकल्प दो प्रकारका है, अधस्तन विकल्प और उपरिम विकल्प । उनमेंसे अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं— प्रतरांगुलके संख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उससे उसीके अर्थात् प्रतरांगुलके गुणित कर देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । अथवा, यहां द्विरूपधारामें अधस्तन विकल्प नहीं बनता है, क्योंकि, भज्यमान राशिकी अपेक्षा अधस्तन प्रतरांगुलको देखते हुए पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल बहुत बड़ा है । कुछ स्तोत्र राशिकी अपहृत करके उससे बड़ी राशि नहीं उत्पन्न की जा सकती है, क्योंकि, ऐसा माननेमें विरोध आता है ।

अब अष्टरूपमें अधस्तन विकल्प बतलाते हैं— प्रतरांगुलके संख्यातवें भागसे प्रतरांगुलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे प्रतरांगुलके घनके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— प्रतरांगुलसे प्रतरांगुलके घनके भाजित करने पर प्रतरांगुलका उपरिम वर्ग आता है । पुनः प्रतरांगुलके संख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच

१ प्रतिषु ' विरोहाभावादो ' इति पाठः ।

अवहारकालो आगच्छदि । अट्टवरूवणा गदा । घणाघणे वत्तइस्सामो । पदरंगुलस्स संखेज्जदिभाएण पदरंगुलं गुणेऊण तेण पदरंगुलघणस्स पढमवग्गमूलं गुणिय घणाघणंगुले भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्टिअवहारकालो आगच्छदि । तं जहा-
घणंगुलेण घणाघणंगुले भागे हिदे घणंगुलउवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो पदरंगुलेण घणंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे पदरंगुलउवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो पदरंगुलस्स संखेज्जदिभाएण पदरंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्टिअव-
हारकालो आगच्छदि । हेट्टिमवियप्पो गदो ।

गहिदादिभेएण उवरिमवियप्पो तिविहो । तत्थ वेरूवे गहिदं वत्तइस्सामो । पदरंगुलस्स संखेज्जदिभाएण पदरंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खजोणिणी-
मिच्छाइट्टिअवहारकालो आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अट्टच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अट्टच्छेदणए कदे वि पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्टिअवहारकालो होदि । एसो मज्झिमवियप्पो उवरिमवियप्पणिणयजणणट्ठं संभाविदो^१ । पदरंगुलस्स संखेज्जदिभाएण पदरंगुलउवरिमवग्गं गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खजोणिणी-

योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल आता है । इसप्रकार अष्टरूप प्ररूपणा समाप्त हुई ।

अब घनाघनमें अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं— प्रतरांगुलके संख्यातवें भागसे प्रतरांगुलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे प्रतरांगुलके घनके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका घनाघनांगुलमें भाग देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल आता है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— घनांगुलसे घना-
घनांगुलके भाजित करने पर घनांगुलका उपरिम वर्ग आता है । पुनः प्रतरांगुलसे घनांगुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर प्रतरांगुलका उपरिम वर्ग आता है । पुनः प्रतरांगुलके संख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल आता है । इसप्रकार अधस्तन विकल्प समाप्त हुआ ।

गृहीत आदिके भेदसे उपरिम विकल्प तीन प्रकारका है । उनमेंसे द्विरूपमें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— प्रतरांगुलके संख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल आता है । उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है । यह मध्यम विकल्प है जो उपरिम विकल्पका निर्णय करानेके लिये बतलाया गया है । प्रतरांगुलके संख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका प्रतरांगुलके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है । इसीप्रकार

१ प्रतिष्ठु 'संभवाविदो' इति पाठः ।

मिच्छाइष्टिअवहारकालो आगच्छदि । एवमुवरि जाणिऊण वत्तव्वं ।

अट्टरूवे वत्तइस्सामो । पदरंगुलस्स संखेज्जदिभाएण पदरंगुलउवरिमवग्गस्सु-
वरिमवग्गं गुणेऊण घणंगुलउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिदियतिरिक्ख-
जोणिणीमिच्छाइष्टिअवहारकालो आगच्छदि । तं जहा— पदरंगुलउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गेण
घणंगुलउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे पदरंगुलउवरिमवग्गो आगच्छदि । पुष्पो
पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागेण पदरंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खजोणिणी-
मिच्छाइष्टिअवहारकालो आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स
अद्धच्छेदणए कदे वि पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइष्टिअवहारकालो आगच्छदि ।
घणाघणे वत्तइस्सामो । पदरंगुलस्स संखेज्जदिभाएण पदरंगुलउवरिमवग्गस्सु-
वरिमवग्गं गुणेऊण तेण घणंगुलउवरिमवग्गस्स तच्चवग्गवग्गं गुणेऊण घणाघणंगुलउव-
रिमवग्गस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइष्टिअवहारकालो आग-
च्छदि । तं जहा— घणंगुलउवरिमवग्गस्स तच्चवग्गवग्गेण घणाघणंगुलउवरिमवग्गस्सु-
वरिमवग्गे भागे हिदे घणंगुलउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो पदरंगुलउवरिम-

ऊपर जानकर भी कथन करना चाहिये ।

अब अष्टरूपमें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— प्रतरांगुलके संख्यातवें
भागसे प्रतरांगुलके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका घनां-
गुलके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टि
अवहारकाल आता है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— प्रतरांगुलके उपरिम वर्गके उपरिम
वर्गका घनांगुलके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर प्रतरांगुलका उपरिम वर्ग आता
है । पुनः प्रतरांगुलके संख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय
तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है । उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों
उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती
मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है ।

अब घनाघनमें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— प्रतरांगुलके संख्यातवें भागसे
प्रतरांगुलके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनांगुलके उपरिम
वर्गके वर्गके वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका घनाघनांगुलके उपरिम वर्गके उपरिम
वर्गमें भाग देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है । उसका
स्पष्टीकरण इसप्रकार है— घनांगुलके उपरिम वर्गके वर्गके वर्गका घनाघनांगुलके उपरिम
वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर घनांगुलके उपरिम वर्गका उपरिम वर्ग आता है । पुनः

१ प्रतिपु ' तत्तस्स वग्गं ' इति पाठः ।

वग्गस्सुवरिमवग्गेण घणंगुलउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे पदरंगुलउवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो पदरंगुलस्स संखेज्जदिभाएण पदरंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइड्ढिअवहारकालो आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्वच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्वच्छेदणए कदे वि पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइड्ढिअवहारकालो आगच्छदि । एवमुवरि जाणिऊण पेयव्वं । पदरंगुलउवरिमवग्गस्स घणंगुलउवरिमवग्गस्स घणाघणंगुलस्स च असंखेज्जदिभाएण पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइड्ढिअवहारकालेण गहिदगहिदो गहिदगुणगारो च साहेयव्वो । एदेण अवहारकालेण जगसेट्ठिभिह भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइड्ढिविक्खंभसूई आगच्छदि । तेणेव जगपदरे भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइड्ढिद्ववमागच्छदि ।

सासणसम्माइड्ढिप्पहुडि जाव संजदासंजदा ति ओघं ॥३६॥

द्ववट्टियणयमस्सिऊण ओघपरूवणा हवदि । पज्जवट्टियणए पुण अवलंबिज्जमाणे तिरिक्खोघपरूवणाए पंचिदियतिरिक्खपज्जत्तोघपरूवणाए वा पंचिदियतिरिक्खजोणिणीगुणपडिवणणपरूवणा समाणा ण हवदि, तिवेदरासीदो इत्थिवेदेगरासिस्स समाणत्ताणुवप्रतरांगुलके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गका घनांगुलके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर प्रतरांगुलका उपरिम वर्ग आता है । पुनः प्रतरांगुलके संख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है । उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है । इसीप्रकार ऊपर जानकर ले जाना चाहिये । प्रतरांगुलके उपरिम वर्गके असंख्यातवें भागरूप, घनांगुलके उपरिम वर्गके असंख्यातवें भागरूप और घनाघनांगुलके असंख्यातवें भागरूप पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टि अवहारकालके द्वारा गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकारको साध लेना चाहिये । इस अवहारकालसे जगश्रेणीके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची आती है । और उसी अवहारकालसे जगप्रतरके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टि द्रव्य आता है ।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानमें पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती जीव तिर्यंच-सामान्य प्ररूपणाके समान पल्योपमके असंख्यातवें भाग हैं ॥ ३६ ॥

द्रव्यार्थिक नयका आश्रय लेकर सासादनसम्यग्दृष्टि आदि गुणस्थानवर्ती पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती जीवोंकी प्ररूपणा तिर्यंच सामान्य प्ररूपणाके समान है । परंतु पर्यायार्थिक नयका अवलम्ब करने पर तिर्यंच सामान्य प्ररूपणा अथवा पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त सामान्य प्ररूपणाके समान पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंकी प्ररूपणा नहीं होती है, क्योंकि, तीन वेदवाली राशिसे एक स्त्रीवेदी जीवराशिकी समानता नहीं बन

वत्तीए, तम्हा विसेसेण होदञ्चं । तं विसेसं पुव्वाइरियाविरुद्धोवएसेण वत्तइस्सामो । तं जहा— पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तअसंजदसम्माइड्डिअवहारकाले आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीअसंजदसम्माइड्डिअवहारकालो होदि । तमावलि-याए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसम्मामिच्छाइड्डिअवहारकालो होदि । तं संखेज्जरूवेहिं गुणिदे तत्थेव सासणसम्माइड्डिअवहारकालो होदि । तमावलि-याए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे संजदासंजदअवहारकालो होदि । एदेहि अवहारकालेहि खंडिदादओ ओघभंगो । पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तेसु पुरिसवेदासंजदसम्माइड्डिरासीदो तत्थेव इत्थिवेदासंजदसम्माइड्डिरासी किमट्टमसंखेज्जगुणहीणा ? पुरिसवेदादो सुट्टु अप्प-सत्थित्थिवेदोदएण पउरं दंसणमोहणीयस्वओवसमाभावादो । जदि एवं तो तत्थतणइत्थि-वेदअसंजदसम्माइड्डिरासीदो तत्तो अप्पसत्थतणणवुंसगवेदअसंजदसम्माइड्डिरासिस्स असं-खेज्जगुणहीणत्तं पसज्जदे ? भवदु णाम अविरुद्धत्तादो । पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्ततिवेद-सम्मामिच्छाइड्डिरासीदो पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीअसंजदसम्माइड्डिरासी किं समो किं

सकती है । इसलिये सामान्य प्ररूपणासे यह प्ररूपणा विशेष होना चाहिये । आगे उस विशेषको पूर्व आचार्योंके अविरुद्ध उपदेशके अनुसार बतलाते हैं । वह इसप्रकार है— पंचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्त असंयतसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकाल होता है । उसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती सम्यग्मिध्या-दृष्टि अवहारकाल होता है । उसे संख्यातसे गुणित करने पर वहाँ पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिमतियोंमें सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । उसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती संयतासंयत अवहारकाल होता है । इन अवहार-कालोंके द्वारा खंडित आदिकका कथन सामान्य तिर्यचोंके खंडित आदिकके कथनके समान है ।

शंका— पंचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्तोंमें पुरुषवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिसे वहाँ पर स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि असंख्यातगुणी हीन किस कारणसे है ?

समाधान— पुरुषवेदकी अपेक्षा अप्रशस्त स्त्रीवेदके उदयके साथ प्रचुररूपसे दर्शन-मोहनीयके क्षयोपशमका अभाव है ।

शंका— यदि ऐसा है तो उन्हीं पंचेन्द्रिय तिर्यचोंमें स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीव-राशिसे स्त्रीवेदियोंसे भी अप्रशस्त नपुंसकवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिके असंख्यातगुणी हीनता प्राप्त हो जाती है ?

समाधान— स्त्रीवेदियोंसे नपुंसकवेदियोंके असंख्यातगुणी हीनता प्राप्त होती है तो हो जाओ, क्योंकि, ऐसा स्वीकार कर लेनेमें कोई विरोध नहीं आता है ।

पंचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्त तीनों वेदवाली सम्यग्मिध्यादृष्टि जीवराशिसे पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि क्या समान है, या संख्यातगुणी है, या असंख्यातगुणी

संखेज्जगुणो किमसंखेज्जगुणो किं संखेज्जगुणहीणो किमसंखेज्जगुणहीणो किं विसेसा-
हिओ विसेसहीणो वा त्ति णत्थि संपहियकाले उवएसो ।

पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया, असं-
खेज्जा ॥ ३७ ॥

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहिं अवहिरंति
कालेण ॥ ३८ ॥

एदाणि दोण्णि वि सुत्ताणि सुगमाणि । किंतु एत्थ अपज्जत्ता इदि वुत्ते
अपज्जत्तणामकम्मोदयपंचिंदियतिरिक्खा धेत्तव्वा । पज्जत्तणामकम्मस्स उदए अपज्जत्तो
वि पज्जत्तो चेव, णोकम्मणिव्वत्तिअवेक्खाभावादो ।

खेत्तेण पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तेहि पदरमवहिरदि देवअवहार-
कालादो असंखेज्जगुणहीणेण कालेण ॥ ३९ ॥

पण्णट्टिसहस्स-पंचसय-लुत्तीसपदरंगुलमेत्तदेवअवहारकालमावलियाए असंखेज्जदि-
भाएण भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तअवहारकालो होदि । अवसेसा खंडिदादि-
वियप्पा पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाड्ढीणं व भाणेदव्वा ।

है, या संख्यातगुणी हीन है, या असंख्यातगुणी हीन है, या विशेषाधिक है, या विशेष हीन
है, इत्यादिरूपसे इस कालमें कोई उपदेश नहीं पाया जाता है ।

पंचेन्द्रिय तिर्यच अपर्याप्त जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात
हैं ॥ ३७ ॥

कालकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय तिर्यच अपर्याप्त जीव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों
और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ३८ ॥

ये दोनों भी सूत्र सुगम हैं । किंतु यहां पर अपर्याप्त ऐसा कथन करने पर अपर्याप्त
नामकर्मके उदयसे युक्त पंचेन्द्रिय तिर्यचोंका ग्रहण करना चाहिये । तथा जिसके पर्याप्त
नामकर्मका उदय है वह (शरीर पर्याप्तिके पूर्ण होने तक) अपर्याप्त होता हुआ भी पर्याप्त ही
है, क्योंकि, यहां पर नोकर्मकी निर्वृत्तिकी अपेक्षा नहीं है ।

क्षेत्रकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय तिर्यच अपर्याप्तोंके द्वारा देवोंके अवहारकालसे असं-
ख्यातगुणे हीन कालसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ ३९ ॥

पंसठ हजार पांचसौ लुत्तीस प्रतरांगुलमात्र देवोंके अवहारकालमें आधलीके असंख्या-
तवें भागका भाग देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यच अपर्याप्त अवहारकाल होता है । अवशिष्ट खंडित
आदि विकल्पोंका कथन पंचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टियोंके खंडित आदिके कथनके समान
करना चाहिये ।

भागाभागं वत्तइस्सामो । तिरिक्खरासिमणंतखंडे कदे तत्थ बहुखंडा एइंदिय-
वियलिंदिया होंति । सेसं संखेज्जखंडे कदे तत्थ बहुखंडा पंचिंदियतिरिक्खलद्धिअपजत्ता
होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छादिही होंति ।
सेसमसंखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइही होंति ।
सेसमसंखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा पंचिंदियतिरिक्खतिवेदअसंजदसम्माइद्धिदच्चं होदि ।
सेसं संखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा पंचिंदियतिरिक्खतिवेदसम्माभिच्छाइद्धिदच्चं होदि ।
सेसमसंखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा पंचिंदियतिरिक्खतिवेदसासणसम्माइद्धिदच्चं होदि ।
सेसेगखंडा संजदासंजदा होंति ।

अप्पाबहुअं तिविहं सत्थाणं परत्थाणं सव्वपरत्थाणं चेदि । तत्थ सत्थाणे भण्ण-
माणे तिरिक्खमिच्छाइहीणं सत्थाणं णत्थि, रासीदो धुवरासिस्स बहुत्तुवलंभादो ।
सासणादीणं सत्थाणमोघं । पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइहीणं सत्थाणप्पाबहुगं वुच्चदे ।
सव्वत्थोवो पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइद्धिअवहारकालो । तस्सेव विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा ।
को गुणगारो ? सगविक्खंभसूईए असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सगअवहारकालो ।

अब भागाभागको बतलाते हैं— तिर्यंच राशिके अनन्त खंड करने पर उनमेंसे
बहुखंडप्रमाण एकेन्द्रिय और विक्खलेन्द्रिय जीव हैं । शेषके संख्यात खंड करने पर
उनमेंसे बहुभाग पंचेन्द्रिय तिर्यंच लब्धपर्याप्तक जीव हैं । शेषके संख्यात खंड करने
पर उनमेंसे बहुभाग पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेषके असंख्यात
खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेषके
असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग पंचेन्द्रिय तिर्यंच तीन वेदवाले असंयतसम्यग्दृष्टि-
योंका द्रव्य है । शेषके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग पंचेन्द्रिय तिर्यंच तीन
वेदवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य है । शेषके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग
पंचेन्द्रिय तिर्यंच तीन वेदवाले सासादनसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य है । शेष एक खंडप्रमाण
पंचेन्द्रिय तिर्यंच तीन वेदवाले संयतासंयत हैं ।

अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है, स्वस्थान अल्पबहुत्व, परस्थान अल्पबहुत्व और
सर्वपरस्थान अल्पबहुत्व । उनमेंसे स्वस्थान अल्पबहुत्वका कथन करने पर तिर्यंच मिथ्या-
दृष्टियोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है, क्योंकि, तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवराशिसे
धुवराशिका प्रमाण बड़ा है । सासादनसम्यग्दृष्टि आदि जीवोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व सामान्य
प्ररूपणाके समान है । अब पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व बतलाते
हैं— पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल सबसे थोड़ा है । उन्हीं पंचेन्द्रिय तिर्यंच
मिथ्यादृष्टियोंकी विक्खंभसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपनी विक्खंभसूचीका
असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? अपना अवहारकाल प्रतिभाग है । अथवा,

अहवा सेठीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेट्ठिपढमवग्गमूलाणि । को पड्डि-
भागो ? सगअवहारकालवग्गो । अहवा असंखेज्जाणि घणंगुलाणि । केत्तियमेत्ताणि ?
सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि । सेठी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सग-
अवहारकालो । द्वयमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सगविकखंभसुई । पदरमसंखेज्जगुणं ।
को गुणगारो ? सगअवहारकालो । लोगो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेठी । एवं
चेव पंचिदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठीणं पि । णवरि जम्हि सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदि-
भागमेत्ताणि घणंगुलाणि त्ति वुत्तं तम्हि सूचिअंगुलस्स संखेज्जदिभागमेत्ताणि त्ति
वत्तव्वं । एवं चेव पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठीणं हि । णवरि जम्हि सूचि-
अंगुलस्स संखेज्जदिभागमेत्ताणि त्ति वुत्तं तम्हि संखेज्जसूचिअंगुलमेत्ताणि त्ति वत्तव्वं ।
पंचिदियतिरिक्खापज्जत्तसत्थाणप्पाबहुगं पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिसत्थाणभंगो ।
पंचिदियतिरिक्खपज्जत्त-पंचिदियतिरिक्खजोणिणीगुणपडिवण्णाणं सत्थाणं तिरिक्खगुण-
पडिवण्णसत्थाणभंगो ।

परत्थाणे पयदं । असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालादो जाव पलिदोवमेत्ति

जगश्रेणीका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण
है । प्रतिभाग क्या है ? अपने अवहारकालका वर्ग प्रतिभाग है । अथवा, असंख्यात घनांगुल
गुणकार है । वे कितने हैं ? सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागमात्र हैं । विष्कंभसूचीसे जगश्रेणी
असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाल गुणकार है । जगश्रेणीसे पंचेन्द्रिय
तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कंभसूची गुणकार
है । पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंके द्रव्यसे जगप्रतर असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ?
अपना अवहारकाल गुणकार है । जगप्रतरसे लोक असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ?
जगश्रेणी गुणकार है । इसीप्रकार पंचेन्द्रिय तिर्यंच पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टियोंका भी स्वस्थान
अल्पबहुत्व कहना चाहिये । पर इतना विशेष है कि जहां पर सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागमात्र
घनांगुल होते हैं ऐसा कहा है वहां पर सूच्यंगुलके संख्यातवें भागमात्र घनांगुल होते हैं ऐसा
कहना चाहिये । इसीप्रकार पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका भी स्वस्थान
अल्पबहुत्व होता है । इतना विशेष है कि जहां पर सूच्यंगुलके संख्यातवें भागमात्र घनांगुल होते
हैं ऐसा कहा है वहां पर संख्यात सूच्यंगुलमात्र घनांगुल होते हैं ऐसा कहना चाहिये । पंचेन्द्रिय
तिर्यंच अपर्याप्तोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंके स्वस्थान
अल्पबहुत्वके समान है । पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त और पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती गुणस्थान-
प्रतिपन्न जीवोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व तिर्यंच गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके स्वस्थान अल्पबहुत्वके
समान है ।

अब परस्थानमें अल्पबहुत्वका कथन प्रकृत है— असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे

१ प्रतिगु 'सूचि-' इति पाठः ।

ओघपरस्थाणभंगो । तदो मिच्छाइट्ठी अणंतगुणा । को गुणगारो ? तिरिक्ख-
मिच्छाइट्ठिणवुंसगसंखेज्जदिभागो । पंचिंदियतिरिक्खेसु असंजदस्स अवहारकालो जाव
पलिदोवमेत्ति ओघपरस्थाणभंगो । तदो मिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को
गुणगारो ? पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सूचिअंगुलाणि सूचिअंगुलस्स
असंखेज्जदिभागमेत्ताणि । को पडिभागो ? असंखेज्जाणि पलिदोवमाणि । उवरि सस्थाण-
भंगो । एवं पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्ताणं पि वत्तव्वं । णवरि जम्हि असंखेज्जाणि
पलिदोवमाणि त्ति वुत्तं तम्हि संखेज्जाणि पलिदोवमाणि त्ति वत्तव्वं । एवं जोणिणीणं
पि । णवरि जम्हि संखेज्जाणि पलिदोवमाणि त्ति वुत्तं तम्हि पलिदोवमस्स संखेज्जदि-
भागो । पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तपरस्थाणं सगसस्थाणतुल्लं ।

सव्वपरस्थाणे पयदं । सव्वत्थोवो असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो । एवं जाव
पलिदोवमेत्ति णेयव्वं । तदो पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो ।
को गुणगारो । पुव्वभणिदो । पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तअवहारकालो विसेसाहिओ
केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदएयखंडमेत्तेण । पंचिंदियतिरिक्ख-

लेकर पल्योपमतक ओघ परस्थान अल्पबहुत्वके कथनके समान कथन जानना चाहिये ।
पल्योपमसे मिथ्यादृष्टि द्रव्य अनन्तगुणा है । गुणकार क्या है ? तिर्यच मिथ्यादृष्टि नपुंसक-
वेवियोंका संख्यातवां भाग गुणकार है । पंचेन्द्रिय तिर्यचोंमें असंयतोंके अवहारकालसे लेकर
पल्योपमतक ओघ परस्थानके कथनके समान कथन जानना चाहिये । पल्योपमसे मिथ्यादृष्टि
अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? प्रतरांगुलका असंख्यातवां भाग गुणकार
है जो सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागमात्र असंख्यात सूच्यंगुलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या
है ? असंख्यात पल्योपमोंका प्रमाण प्रतिभाग है । इसके ऊपर स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान
कथन जानना चाहिये । इसीप्रकार पंचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्तोंके अल्पबहुत्वका भी कथन करना
चाहिये । इतना विशेष है कि जहां पर असंख्यात पल्योपम हैं ऐसा कहा है वहां पर संख्यात
पल्योपम हैं ऐसा कथन करना चाहिये । इसीप्रकार योनिमतियोंके अल्पबहुत्वका भी कथन
करना चाहिये । इतना विशेष है कि जहां पर संख्यात पल्योपम हैं ऐसा कहा है वहां पर
पल्योपमका संख्यातवां भाग है ऐसा कथन करना चाहिये । पंचेन्द्रिय तिर्यच अपर्याप्तोंका
परस्थान अल्पबहुत्व अपने स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है ।

अब सर्व परस्थानमें अल्पबहुत्वका कथन प्रकृत है— असंयतसम्यग्दृष्टियोंका
अवहारकाल सबसे स्तोक है । इसीप्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये । पल्योपमसे
पंचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पूर्व कथित
प्रतरांगुलका असंख्यातवां भाग गुणकार है । पंचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे
पंचेन्द्रिय तिर्यच अपर्याप्तोंका अवहारकाल विशेष अधिक है । कितने मात्र विशेषसे अधिक है ?
पंचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके

पज्जत्तअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जदिभागो । पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्टिविक्खंभवइ असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्जा समया । तस्सेव विक्खंभवइ असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? पुव्वभणिदो । पंचिदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्टिविक्खंभवइ संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्जा समया । पंचिदियतिरिक्खअपज्जत्तविक्खंभवइ असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्टिविक्खंभवइ विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण विसेसो ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदमेत्तो । सेठी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? अवहारकालो । पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्टिद्ववमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सगविक्खंभवइ । पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्टिपज्जत्तदंवं संखेज्जगुणं । को गुणगारो ? संखेज्जा समया । पंचिदियतिरिक्खअपज्जत्तदंवंसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जभागो । पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्टि-

जो एक खंड लब्ध आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है । पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंके अवहारकालसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीवोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है ? गुणकार क्या है ? आवलीके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग गुणकार है । पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । उन्हीं पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची उन्हींके अवहारकालसे असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? पहले कह आये हैं । पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूचीसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची संख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूचीसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंकी विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंकी विष्कंभसूचीसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची विशेष अधिक है । कितनेमात्रसे अधिक है ? पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंकी विष्कंभसूचीको आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करने पर जितना लब्ध आवे तन्मात्र अधिक है । पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूचीसे जगश्रेणी असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाल गुणकार है । जगश्रेणीसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कंभसूची गुणकार है । पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंके द्रव्यसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि पर्याप्तोंका द्रव्य संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि पर्याप्तोंके द्रव्यसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग गुणकार है । पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंके द्रव्यसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य

द्व्वं विसेसाहियं । केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभागखंडिदमेत्तेण । पदरम-
संखेज्जगुणं । को गुणगारो ? अवहारकालो । लोगो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ?
सेढी । तिरिक्खमिच्छाइट्टिद्व्वमणंतगुणं । को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो
सिद्धेहि वि अणंतगुणो भवसिद्धियजीवाणमणंताभागस्स असंखेज्जदिभागो ।

**मणुसगईए मणुस्सेसु मिच्छाइटी दव्वपमाणेण केवडिया,
असंखेज्जा ॥ ४० ॥**

एत्थ मणुसगइगहणेण सेसगइपडिसेहो कदो । मणुस्सेसु त्ति वयणेण तत्थ ट्टिद-
सेसजीवादिदव्वपडिसेहो कओ । मिच्छाइट्टि त्ति वयणेण सेसगुणट्टाणपडिसेहो कदो ।
खेत्त-कालपमाणवुदासट्टं दव्वमहणं । सुत्तस्स पमाणपरूवणट्टं केवडियमहणं । संखेज्जाणंताणं
वुदासट्टं असंखेज्जमहणं । अइथूलपरूवणं परूविय सुहुमट्टपरूवणट्टं उत्तरसुत्तं भणदि—

विशेष अधिक है । कितनेमात्रसे अधिक है ? पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंके द्रव्यको आवलीके
असंख्यातवं भागसे खंडित करके जो एक खंड लब्ध आवे तन्मात्रसे अधिक है ।
पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंके द्रव्यसे जगप्रतर असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ?
पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल गुणकार है । जगप्रतरसे लोक असंख्यातगुणा है ।
गुणकार क्या है ? जगश्रेणी गुणकार है । लोकसे तिर्यंच मिथ्यादृष्टि द्रव्य अनन्तगुणा है । गुणकार
क्या है ? अभव्यसिद्धोंसे अनन्तगुणा, सिद्धोंसे भी अनन्तगुणा या भव्यसिद्ध जीवोंके अनन्त
बहुभागोंका असंख्यातवां भाग गुणकार है ।

**मनुष्यगतिप्रतिपन्न मनुष्योंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्य प्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ?
असंख्यात हैं ॥ ४० ॥**

इस सूत्रमें 'मनुष्यगति' इस पदके ग्रहण करनेसे शेष गतियोंका प्रतिषेध कर दिया
गया है । 'मनुष्योंमें' इसप्रकारके वचनसे वहां पर स्थित शेष जीवादि द्रव्योंका प्रतिषेध
कर दिया है । 'मिथ्यादृष्टि' इस वचनसे शेष गुणस्थानोंका प्रतिषेध कर दिया है । क्षेत्रप्रमाण
और कालप्रमाणका निराकरण करनेके लिये द्रव्य पदका ग्रहण किया है । सूत्रकी प्रमाणताका
प्ररूपण करनेके लिये 'कितने हैं' इस पदका ग्रहण किया है । संख्यात और अनन्तका
निराकरण करनेके लिये असंख्यात पदका ग्रहण किया है । अब अतिस्थूल प्ररूपणाका प्ररूपण
करके सूक्ष्म प्ररूपणाका प्ररूपण करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

१ प्रतिपु '—भाए' इति पाठः ।

२ असंखिज्जा मणुस्सा । अनु. सू. १४१ पृ. १७९.

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति-
कालेण ॥ ४१ ॥

द्वयप्रमाणमवेक्खिय कालप्रमाणस्स महत्तोवलंभादो असंखेज्जासंखेज्जदिओस-
प्पिणि-उस्सप्पिणिविसेससंखापरूवणादो वा कालप्रमाणस्स सुहुमत्तणं वत्तव्वं । सेसपरूवणा
पुव्वं व परूवेयव्वा ।

खेत्तेण सेठीए असंखेज्जदिभागो । तिस्से सेठीए आयामो
असंखेज्जदिजोयणकोडीओ । मणुसमिच्छाइट्ठाहि रूवा पक्खित्तएहि
सेठी अवहिरदि अंगुलवग्गमूलं तदियवग्गमूलगुणिदेणं ॥ ४२ ॥

सेठीए असंखेज्जदिभागो इदि सामणवयणेण संखेज्जजोयणप्पहुडि हेट्ठिमसंखा-
वियप्पाणं सब्बेसिं गहणे संपत्ते तप्पडिसेहट्ठं असंखेज्जजोयणकोडीओ त्ति वुत्तं । तिस्से
सेठीए असंखेज्जदिभागस्स सेठीए पंतीए आयामो दीहत्तणमिदि संबंधेयव्वं । असंखेज्जदि-

कालकी अपेक्षा मनुष्य मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों
और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ४१ ॥

द्वयप्रमाणकी अपेक्षा कालप्रमाणकी महत्ता पाई जानेके कारण अथवा, कालप्रमाण
असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणी और उत्सर्पिणीरूप विशेष संख्याका प्ररूपण करनेवाला होनेसे
उसकी (कालप्रमाणकी) सूक्ष्मताका कथन करना चाहिये । शेष प्ररूपणाका कथन पहलेके
समान करना चाहिये ।

श्रेणीकी अपेक्षा जगश्रेणीके असंख्यातवें भागप्रमाण मनुष्य मिथ्यादृष्टि जीव-
राशि है । उस श्रेणीका आयाम (अर्थात् जगश्रेणीके असंख्यातवें भागरूप श्रेणीका
आयाम) असंख्यात करोड़ योजन है । सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलको सूच्यंगुलके
तृतीय वर्गमूलसे गुणित करके जो लब्ध आवे उसे शलाकारूपसे स्थापित करके रूपाधिक
(अर्थात् एकाधिक तेरह गुणस्थानवर्ती राशिसे अधिक) मनुष्य मिथ्यादृष्टि राशिके द्वारा
जगश्रेणी अपहृत होती है ॥ ४२ ॥

सूत्रमें ' जगश्रेणीके असंख्यातवें भागप्रमाण ' इसप्रकार सामान्य वचन देनेसे संख्यात
योजन आदि अधस्तन संपूर्ण संख्याका ग्रहण प्राप्त होता है, अतः उसका प्रतिषेध करनेके
लिये ' असंख्यात करोड़ योजन ' पदका ग्रहण किया । सूत्रमें आये हुए ' उस श्रेणीका आयाम '
इस पदसे उस श्रेणीके असंख्यातवें भागकी पंक्तिका आयाम अर्थात् दीर्घता ऐसा संबन्ध

१ मनुष्यगतौ मनुष्या मिथ्यादृष्टयः श्रेण्यसंख्येयभागप्रमिताः । स चासंख्येयभागः असंख्येया योजन-
कौत्वः । स. सि. १, ८. सेठी सुईअंगुलआदिमतदियपदमाजिदेण्णा । सामणमणुसरासी । गो. जी. १५७.
उत्तकोसपए मणुया सेठी रूवाहिया अवहरंति । तइयमूलाइएहि अंगुलमूलप्पएसेहि । पंचस. २, २१.

जोयणकोडीओ त्ति वयणे पदरंगुल-घणंगुलादीणं गहणे पत्ते तप्पडिसेहट्टं अंगुलवग्गमूलं तदियवग्गमूलगुणिदेणेत्ति' वयणं । अंगुलवग्गमूलमिदि वुत्ते सूचिअंगुलपढमवग्गमूलं गहेयव्वं । तदियवग्गमूलमिदि वुत्ते सूचिअंगुलतदियवग्गमूलस्स गहणं । कुदो ? सूचि-अंगुलसहचारादो अणुवट्टणादो वा । सूचिअंगुलतदियवग्गमूलेण तस्सेव पढमवग्गमूलं गुणिदे मणुसमिच्छाइट्टीण अवहारकालो होदि । अहवा सूचिअंगुलविदियवग्गमूलेण तदिय-वग्गमूलं गुणिय सूचिअंगुले भागे हिदे मणुसमिच्छाइट्टिअवहारकालो आगच्छदि । तस्स खंडिद-भाजिद-विरलिद-अवहिदाणि जाणिऊण वत्तव्वाणि । तस्स पमाणं सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सूचिअंगुलपढमवग्गमूलाणि । तं जहा— सूचिअंगुलपढम-वग्गमूलेण सूचिअंगुले भागे हिदे पढमवग्गमूलमेव लभामहे । विदियवग्गमूलेण सूचि-अंगुले भागे हिदे विदियवग्गमूलमिह जत्तियाणि रूवाणि तात्तियाणि पढमवग्गमूलाणि लब्भंति । विदिय-तदियवग्गमूलमणोणव्भरथं कारिय सूचिअंगुले भागे हिदे असंखेज्जाणि सूचिअंगुलपढमवग्गमूलाणि लब्भंति त्ति ण संदेहो । तस्स णिरुत्ती तदियवग्गमूलेण

करना चाहिये । 'असंख्यात करोइ योजन' इसप्रकारका वचन रहने पर प्रतरांगुल और घनांगुल आदिका ग्रहण प्राप्त होता है, अतः उसका प्रतिषेध करनेके लिये सूच्यंगुलका प्रथम वर्गमूल तृतीय वर्गमूलसे गुणित' इसप्रकारका वचन दिया है । यहां पर 'अंगुलका वर्गमूल' ऐसा कथन करने पर उससे सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलका ग्रहण करना चाहिये । 'तृतीय वर्गमूल' ऐसा कथन करने पर उससे सूच्यंगुलके तृतीय वर्गमूलका ग्रहण करना चाहिये । क्योंकि, यहां पर सूच्यंगुलका साहचर्य संबन्ध है । अथवा, ऊपरसे उसीकी अनुवृत्ति है । इसका तात्पर्य यह हुआ कि सूच्यंगुलके तृतीय वर्गमूलसे उसी सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलके गुणित करने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । अथवा, सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे तृतीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका सूच्यंगुलमें भाग देने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल आता है । इस अवहारकालके खंडित, भाजित, विरलित और अपहृतको जानकर उनका कथन करना चाहिये । उस मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है जो सूच्यंगुलके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलसे सूच्यंगुलके भाजित करने पर सूच्यंगुलका प्रथम वर्गमूल ही प्राप्त होता है । सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे सूच्यंगुलके भाजित करने पर सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलमें जितनी संख्या हो उतने सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूल लब्ध आते हैं । इसीप्रकार सूच्यंगुलके दूसरे और तीसरे वर्गमूलोंका परस्पर गुणा करके जो लब्ध आवे उससे सूच्यंगुलके भाजित करने पर सूच्यंगुलके असंख्यात प्रथम वर्गमूल लब्ध आते हैं, इसमें संदेह नहीं । उसी मनुष्य मिथ्यादृष्टि

१ प्रतिषु 'शुणिदे सि' इति पाठः ।

विदियवग्गमूले भागे हिदे लद्धस्स जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पढमवग्गमूलाणि ।

वियप्पो दुविहो, हेट्ठिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि । तत्थ हेट्ठिमवियप्पं वत्तइस्सामो । विदिय-तदियवग्गमूले अण्णोण्णगुणे करिय पढमवग्गमूले भागे हिदे लद्धेण तं चेव गुणिदे अवहारकालो होदि । अहवा वेरूवे हेट्ठिमवियप्पो णत्थि, सूचिअंगुल-पढमवग्गमूलादो अवहारकालस्स बहुत्तादो । अट्ठरूवे वत्तइस्सामो । सूचिअंगुलविदिय-वग्गमूलगुणिदतदियवग्गमूलेण पढमवग्गमूलं गुणेऊण घणंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे अवहारकालो होदि । तं जहा-सूचिअंगुलपढमवग्गमूलेण घणंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे सूचिअंगुलमागच्छदि । विदियवग्गमूलगुणिदतदियवग्गमूलेण सूचिअंगुले भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि । घणाघणे वत्तइस्सामो । विदियवग्गमूलगुणिदतदियवग्गमूलेण अंगुलवग्गमूलं गुणेऊण तेण घणंगुलविदियवग्गमूलं गुणिय घणाघणंगुलविदियवग्गमूले भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि । तं जहा-घणंगुलविदियवग्गमूलेण घणाघणंगुल-

अवहारकालकी निरुक्ति इसप्रकार है—सूच्यंगुलके तृतीय वर्गमूलसे सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलके भाजित करने पर लब्ध राशिका जितना प्रमाण हो उतने सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूल मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकालमें होते हैं ।

विकल्प दो प्रकारका है, अधस्तन विकल्प और उपरिम विकल्प । उनमेंसे अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं—सूच्यंगुलके दूसरे और तीसरे वर्गमूलका परस्पर गुणा करके जो लब्ध आवे उसका सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलमें भाग देने पर जो लब्ध आया उससे उसी सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलके गुणित करने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है । अथवा, यहां द्विरूपधारामें अधस्तन विकल्प नहीं बनता है, क्योंकि, सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलसे मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल बहुत बड़ा है ।

अब अष्टरूपमें अधस्तन विकल्प बतलाते हैं—सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे तृतीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके लब्ध राशिका घनांगुलके प्रथम वर्गमूलमें भाग देने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है । जैसे, सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलसे घनांगुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर सूच्यंगुल आता है । पुनः सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे तृतीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे सूच्यंगुलके भाजित करने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है ।

अब घनाघनमें अधस्तन विकल्प बतलाते हैं—सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे सूच्यंगुलके तृतीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलको गुणित करके आई हुई लब्ध राशिसे घनाघनांगुलके द्वितीय वर्गमूलके भाजित करने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है । जैसे, घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे घनाघनांगुलके द्वितीय वर्गमूलके भाजित करने पर

विदियवग्गमूले भागे हिदे घणंगुलपढमवग्गमूलमागच्छदि । पुणो सूचिअंगुलपढम-
वग्गमूलेण (घणंगुलपढमवग्गमूले) भागे हिदे सूचिअंगुलमागच्छदि । पुणो अण्णोण्ण-
गुणिदविदिय-तदियवग्गमूलेण (सूचिअंगुले) भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि ।

गहिदादिभेएण उवरिमवियप्पो तिविहो । तत्थ गहिदं वत्तइस्सामो । तेणेव
भागहारेण सूचिअंगुलं गुणिय पदरंगुले भागे हिदे मणुसमिच्छाइड्डिअवहार-
कालो आगच्छदि । तं जहा- सूचिअंगुलेण पदरंगुले भागे हिदे सूचिअंगुल-
मागच्छदि । पुणो पुव्वभागहारेण सूचिअंगुले भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि ।
अड्डरूवे वत्तइस्सामो । सूचिअंगुलविदिय-तदियवग्गमूलं अण्णोण्णं गुणिय तेण पदरंगुलं
गुणिय घणंगुले भागे हिदे मणुस्सअवहारकालो आगच्छदि । एसो मज्झिमवियप्पे किण्ण
पददि त्ति बुत्ते ण, सूचिअंगुलादो अहियरासिमवलंबिय उप्पाइज्जमाणे उवरिमवियप्पत्तं
पडि विरोहाभावादो । घणाघणे वत्तइस्सामो । विदिय-तदियवग्गमूलेहि पदरंगुलं गुणिय
तेण घणंगुलउवरिमवग्गं गुणिय तेण घणाघणंगुले भागे हिदे मणुसमिच्छाइड्डिअवहारकालो

घनांगुलका प्रथम वर्गमूल आता है । पुनः सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलसे घनांगुलके प्रथम
वर्गमूलके भाजित करने पर सूच्यंगुल आता है । पुनः सूच्यंगुलके दूसरे और तीसरे वर्ग-
मूलका परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे सूच्यंगुलके भाजित करने पर मनुष्य
मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है ।

गृहीत भादिके भेदसे उपरिम विकल्प तीन प्रकारका है । उनमेंसे गृहीत उपरिम
विकल्पको बतलाते हैं— उसी भागहारसे अर्थात् सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूल गुणित तृतीय
वर्गमूलसे सूच्यंगुलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे प्रतरांगुलके भाजित करने पर
मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है । जैसे, सूच्यंगुलसे प्रतरांगुलके भाजित करने पर
सूच्यंगुल आता है । पुनः पूर्वोक्त भागहारसे अर्थात् सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूल गुणित तृतीय
वर्गमूलसे सूच्यंगुलके भाजित करने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है ।

अब अष्टरूपमें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— सूच्यंगुलके दूसरे और तीसरे
वर्गमूलको परस्पर गुणित करके जो लब्ध आवे उससे प्रतरांगुलको गुणित करके आई हुई
लब्ध राशिसे घनांगुलके भाजित करने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है ।

शंका— प्रस्तुत विकल्प मध्यम विकल्पमें समाविष्ट क्यों नहीं होता है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, सूच्यंगुलसे बड़ी राशिका अवलम्बन करके मनुष्य मिथ्या-
दृष्टि अवहारकालके उत्पन्न करने पर इसे उपरिम विकल्पके होनेमें कोई विरोध नहीं आता है ।

अब घनाघनमें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— परस्पर गुणित सूच्यंगुलके
दूसरे और तीसरे वर्गमूलसे प्रतरांगुलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनांगुलके
उपरिम वर्गको गुणित करके लब्ध राशिका घनाघनांगुलमें भाग देने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टि अव-

आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते घणाघगंगुलस्स अद्धच्छेदणए कदे वि मणुसमिच्छाइद्धिअवहारकालो आगच्छदि । सूचिअंगुल-घणंगुलपढमवग्गमूल-घणाघणंगुल-विदियवग्गमूलाणं असंखे जदिभाएण भागहारेण गहिदगहिदो गहिदगुणगारो च साहेयव्वो । एदेण भागहारेण जगसेदिमिह भागे हिदे रूवाहिओ मणुसरासी आगच्छदि । तं कथं जाणिअदि ति बुत्ते 'मणुसगईए मणुमेदि रूवं पक्खितएहि सेठी अवहिरदि अंगुलवग्गमूलं तदियवग्गमूलगुणिदेण' इदि खुद्दाबंधसुत्तादो । एत्थ रासी दुविहा भवदि, ओजं जुम्मं चेदि । ओजं दुविहं, तेजो जं कलिओजं चेदि । तं जहा—जमिह रासिमिह चदुहि अवहिरिज्जमाणे तिणिणं द्वांति सो तेजो जं । चदुहि अवहिरिज्जमाणे जमिह एगं ठादि तं कलिओजं । जुम्मं दुविहं, कदजुम्मं बादरजुम्मं चेदि । तं जहा—चदुहि अवहिरिज्जमाणे जमिह रासिमिह चत्तारि द्वांति तं कदजुम्मं । जमिह रासिमिह दोणिणं द्वांति तं बादरजुम्मं । जमहा मणुस्सरासी तेजो जं तमहा लद्धमिह कदजुम्ममिह एगरूवमवणेयव्वं । अवसेसिद-

हारकाल आता है । उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशि घना-घनांगुलके अर्धच्छेद करने पर भी मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है । सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागरूप, घनांगुलके प्रथम वर्गमूलके असंख्यातवें भागरूप और घनाघनांगुलके द्वितीय वर्गमूलके असंख्यातवें भागरूप भागहारसे गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकारको साथ लेना चाहिये ।

उक्त भागहारसे जगश्रेणीके भाजित करने पर एक अधिक मनुष्यराशि आती है । यह कैसे जाना जाता है, ऐसा पूछने पर आचार्य उत्तर देते हैं कि 'मनुष्यगतिमें सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलसे सूच्यंगुलके तृतीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उसे शलाकाराशि करके एक अधिक मनुष्य जीवोंके द्वारा जगश्रेणी अपहृत होती है, अर्थात् एक अधिक मनुष्यराशिको जगश्रेणीमेंसे घटाते जाना चाहिये और शलाकाराशिमेंसे उत्तरोत्तर एक कम करते जाना चाहिये । इसप्रकार करनेसे शलाकाराशिके साथ जगश्रेणी समाप्त हो जाती है' । इस खुद्दाबंधके सूत्रसे जाना जाता है कि उक्त भागहारसे जगश्रेणीके अपहृत करने पर एक अधिक मनुष्य राशि लब्ध आती है ।

राशि दो प्रकारकी है, ओजराशि और युग्मराशि । उनमेंसे ओजराशि दो प्रकारकी है, तेजो जं और कलिओज । आगे इन्हींका स्पष्टीकरण करते हैं—जिस राशिको चारसे भाजित करने पर तीन शेष रहते हैं वह तेजो जंराशि है । जिस राशिको चारसे भाजित करने पर एक शेष रहता है वह कलिओजराशि है । युग्मराशि दो प्रकारकी है, कृतयुग्म और बादरयुग्म । आगे उसी युग्मराशिके भेदोंका स्पष्टीकरण करते हैं—जिस राशिको चारसे भाजित करने पर चार शेष रहते हैं अर्थात् जिसमें चारका पूरा भाग जाता है वह कृतयुग्म-राशि है । तथा चारसे भाजित करने पर जिस राशिमें दो शेष रहते हैं वह बादरयुग्मराशि है । प्रकृतमें क्योंकि मनुष्यराशि तेजो जंरूप है, इसलिये जगश्रेणीमें सूच्यंगुलके प्रथम

मणुसप्तसिपरुवणादो जुत्तं खुदाबन्धमिह भागलद्वादो एयरुवस्स अवणयणं, एत्थ पुण जीवद्वानमिह मिच्छत्तविसेसिदजीवपमाणपरुवणे कीरमाणे रूवाहियतेरसगुणद्वानमेत्तेण अवणयणरासिणा होदन्वमिदि । तं कथं जाणिज्जेदे ? ' मणुसमिच्छाइट्ठीहि रूवा पक्खि-
त्तएहि सेठी अवहिरिज्जदि ' ति सुत्तमिह रूवा इदि बहुवयणणिदेसादो । अहवा रूवपक्खि-
त्तएहि चि बहुवीहिसमासेण लक्खणविसेसेण कयपुच्चणिवाएण अवणिद्वहुवयणादो
बहुत्तोवलद्धी होज्ज । रूवं पक्खित्तएहि ति एगवयणमपि कर्हि दिस्सदे तो वि ण दोसो,
बह्वणं जीवाणं जादिदुवारेण एयत्तदंसणादो' । का एत्थ जाई णाम ? चेदणादिसमाण-
परिणामो । तदो भागलद्वादो रूवाहियतेरसगुणद्वानपमाणे अवणिदे मणुसमिच्छाइट्ठी-

और तृतीय वर्गमूलके गुणनफलरूप भागहारका भाग देनेसे जो राशि लब्ध आयगी वह कृत्वयुग्मरूप होनेसे उसमेंसे एक कम कर देना चाहिये ।

खुदाबन्धमें मिथ्यादृष्टि इत्यादि विशेषणसे रहित सामान्य मनुष्यराशिका प्ररूपण होनेसे वहां पर सूच्यंगुलके प्रथम और तृतीय वर्गमूलोंके परस्पर गुणफलरूप भागहारका जगश्रेणीमें भाग देनेसे जो लब्ध आवे उसमेंसे एक संख्याका कम करना युक्त है । परंतु यहां जीवस्थानमें तो मिथ्यात्व विशेषणसे युक्त जीवोंके प्रमाणका प्ररूपण किया गया है, अतएव मिथ्यादृष्टि मनुष्यराशि लानेके लिये उक्त भागहारसे जगश्रेणीके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसमेंसे एक अधिक तेरह गुणस्थानवर्ती मनुष्यराशि अपनयनराशि होना चाहिये ।

शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—'रूपाधिक मनुष्य मिथ्यादृष्टि जीवराशिके द्वारा जगश्रेणी अपहृत होती है' इस सूत्रमें 'रूवा' यह बहुवचन निर्देश पाया जाता है, जिससे जाना जाता है कि यहां पर उक्त भागहारसे जगश्रेणीके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसमेंसे एक अधिक तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशि अपनयनराशि है । अथवा, 'रूवपक्खित्तएहि' इस पदमें नियम-विशेषसे जिसमें पूर्वनिपात हो गया है ऐसा बहुवीहि समास होनेके कारण रूप पदके बहु-वचनसे रहित होनेके कारण भी उससे बहुवचनी उपलब्धि हो जाती है । कहीं पर 'रूवं पक्खित्तएहि' इसप्रकार एकवचन भी कहीं देखा जाता है, तो भी कोई दोष नहीं आता है, क्योंकि, बहुत जीवोंका जातिद्वारा एकत्व देखनेमें आता है ।

शंका—यहां पर जातिसे क्या अर्थ अभिप्रेत है ?

समाधान—यहां पर चेतना आदि समान परिणाम जातिसे अभिप्रेत है ।

इसलिये उक्त भागहारका जगश्रेणीमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उसमेंसे एक अधिक तेरह गुणस्थानवर्ती जीवारशिके प्रमाणके कम कर देने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टि

२ 'जालाख्यायामेकस्मिन्बहुवचनमन्यतरस्याम्' १. २, ५८. पाणिनि । एकोऽप्यर्थो वा बहुत्ववद-
नमिति । इति: '

रासी होदि त्ति सिद्धं । एदस्स खंडिदादओ विदियपुढविमिच्छाइड्डीणं जहा वुत्ता सख्ख
वत्तव्वा । णवरि एत्थ अंगुलवग्गमूलेण तदियवग्गमूलं गुणिदे अवहारकालो होदि ।
सव्वत्थ रूवाहियतेरसगुणट्ठाणपमाणमवणेयव्वं ।

**सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति द्ववपमाणेण
केवडिया, संखेज्जा ॥ ४३ ॥**

एत्थ पहुडिसहो आदिसदत्थे वट्ठे । तेण सासणसम्माइट्ठिमादिं करिय जाव
संजदासंजदा एदेसु गुणट्ठाणेसु मनुसरासी संखेज्जा चेव होदि त्ति जं वुत्तं होदि ।
संखेज्जा इदि सामण्णेण वुत्तं वावण्णकोडिमेत्ता सासणसम्माइट्ठिणो हवंति । तत्तो दुगुणा
सम्माभिच्छाइट्ठिणो हवंति । सत्तसयकोडिमेत्ता असंजदसम्माइट्ठिणो हवंति । (संजदा-

जीवराशिका प्रमाण होता है, यह सिद्ध हो गया ।

विशेषार्थ—सूच्यंगुलके प्रथम और तृतीय वर्गमूलका परस्पर गुणा करके जो लब्ध
आये उसका जगत्रेणीमें भाग देने पर एक अधिक सामान्य मनुष्यराशिका प्रमाण आता है ।
अतएव लब्धमें एक कम कर देने पर सामान्य मनुष्यराशिका प्रमाण होता है । परंतु प्रकृतमें
मिथ्यादृष्टि मनुष्यराशि लाना है, अतएव उक्त सामान्य मनुष्यराशिमेंसे सासादन आदि तेरह
गुणस्थानवर्ती मनुष्यराशिके प्रमाणको और कम कर देना चाहिये, तब मिथ्यादृष्टि
मनुष्यराशिका प्रमाण होगा ।

जिसप्रकार दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंके खंडित आदिका कथन कर आये हैं उसी-
प्रकार इस मनुष्य मिथ्यादृष्टि जीवराशिके खंडित आदिकका कथन करना चाहिये । इतना विशेष
है, कि यहां पर सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलसे तृतीय वर्गमूलके गुणित करने पर अवहारकालका
प्रमाण होता है । तथा मनुष्य मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण लानेके लिये सर्वत्र एक अधिक तेरह
गुणस्थानवर्ती जीवराशिका प्रमाण घटा देना चाहिये ।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानतक प्रत्येक गुण-
स्थानमें मनुष्य द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ ४३ ॥

यहां पर प्रभृति शब्द आदि शब्दके अर्थमें आया है, इसलिये सासादनसम्यग्दृष्टिसे प्रारंभ
करके संयतासंयत गुणस्थानतक इन चार गुणस्थानोंमें प्रत्येक गुणस्थानवर्ती मनुष्यराशि संख्यात
ही होती है, यह इस सूत्रका अभिप्राय है । सासादनसम्यग्दृष्टि आदि चार गुणस्थानोंमेंसे प्रत्येक
गुणस्थानवर्ती मनुष्यराशि संख्यात है, ऐसा सामान्यरूपसे कथन करने पर सासादनसम्य-
ग्दृष्टि मनुष्य बावन करोड़ है । सम्यग्मिथ्यादृष्टि मनुष्य सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्योंके प्रमाणसे
दूने हैं । असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्य सातसौ करोड़ प्रमाण हैं । संयतासंयतोंका प्रमाण तेरह

१ सासादनसम्यग्दृष्ट्यादयः संयतासंयतान्ताः संख्येयाः । स. सि. १, ८.

२ प्रतिषु अतः परं ' तत्तो दुगुणा सम्माइट्ठिणो हवंति ' इत्यधिकः पाठः ।

संज्ञदाणं पमाणं तेरहकोडीओ ~~के~~ वि आइरिया सासणसम्माइद्वीणं पमाणं पण्णारस कोडीओ हवंति सम्मामिच्छाइ द्वैपमाणं ततो दुगुणमिदि भणंति । पुब्बिह्लपमाणमेत्थ भेत्तव्वं । किं कारणं ? आइरियपरंपरागदादो । वुत्तं च—

तेरह कोडी देसे बावणं सासणे तु पोयव्वा ।

मिस्से वि य तद्दुगुणा असंजदे सत्तकोडिसया^१ ॥ ६८ ॥

अहवा—

तेरह कोडी देसे पण्णासं सासणे सुणेयव्वा ।

मिस्से वि य तद्दुगुणा^२ असंजदे सत्तकोडिसया ॥ ६९ ॥

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि ति ओघं ॥ ४४ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो पुव्वं परूविदो ति इह ण वुत्तदे । कुदो ? मणुसगदि-
वदिरित्तसेसगईसु पमत्तादिगुणद्वानाणमसंभवादो । मणुसेसु पमत्तादीणं ओघपरूवणा चेव ।

करोड़ है । कितने ही आचार्य सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्योंका प्रमाण पचास करोड़ कहते हैं । सम्यग्मिथ्यादृष्टि मनुष्योंका प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्योंके प्रमाणसे दूना कहते हैं । परंतु यहां पर पूर्वोक्त प्रमाणका ही ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, पूर्वोक्त प्रमाण आचार्य परंपरासे आया हुआ है । कहा भी है—

संयतासंयतमें तेरह करोड़, सासादनमें बावन करोड़, मिश्रमें सासादनके प्रमाणसे दूने और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें सातसौ करोड़ मनुष्य जानना चाहिये ॥ ६८ ॥

अथवा—

संयतासंयतमें तेरह करोड़, सासादनमें पचास करोड़, मिश्रमें सासादनके प्रमाणसे दूने और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें सातसौ करोड़ मनुष्य जानना चाहिये ॥ ६९ ॥

प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानमें मनुष्य सामान्य प्ररूपणाके समान संख्यात हैं ॥ ४४ ॥

इस सूत्रका अर्थ पहले कह आये हैं, इसलिये यहां नहीं कहा जाता है, क्योंकि, मनुष्य-
गतिको छोड़कर शेष तीन गतियोंमें प्रमत्तसंयत आदि गुणस्थानोंका होना असंभव है । अतः
मनुष्योंमें प्रमत्तसंयत आदिका प्रमाणप्ररूपण सामान्य प्ररूपणाके समान ही है ।

१ गो. जी. ६४२, स. सि. १, ८, टि. ।

२ प्रतिष्ठु ' तद्दुगुणा ' इति पाठः ।

३ प्रमत्तादीनां सामान्योक्ता संख्या । स. सि. १, ८.

मणुसपज्जत्तेसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, कोडा-
कोडाकोडीए उवरि कोडाकोडाकोडाकोडीए हेट्टदो' छण्हं वग्गाण-
मुवरि सत्तण्हं वग्गाणं हेट्टदो' ॥ ४५ ॥

छट्टवग्गस्स उवरि सत्तमवग्गस्स हेट्टदो ति वुत्ते अत्थवत्ती ण जादेत्ति अत्थवत्ती-
करणट्ठं कोडाकोडाकोडीए उवरि कोडाकोडाकोडाकोडीए हेट्टदो ति वुत्तं । एदस्स मणुस-
पज्जत्तमिच्छाइट्ठिरासिस्स पमाणपरूवणमाइरियोवएसेण वुत्तदे । वेरूवस्स पंचमवग्गेण
छट्टमवग्गं गुणिदे मणुसपज्जत्तरासी होदि । सत्तमवग्गे संखेज्जखंडे कए एगखंडं
मणुसपज्जत्तरासी होदि । खंडिदं गदं । पंचमवग्गेण सत्तमवग्गे भागे हिदे मणुसपज्जत्त-
रासी होदि । भाजिदं गदं । विरलिदं अवहिदं च चितिय वत्तव्वं । पमाणं सत्तमवग्गस्स

मनुष्य पर्याप्तोंमें मिथ्यादृष्टि मनुष्य द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ?
कोड़ाकोड़ाकोड़िके ऊपर और कोड़ाकोड़ाकोड़ाकोड़िके नीचे छह वर्गोंके ऊपर और सात
वर्गोंके नीचे अर्थात् छठवें और सातवें वर्गके बीचकी संख्याप्रमाण मनुष्यपर्याप्त
होते हैं ॥ ४५ ॥

' छठवें वर्गके ऊपर और सातवें वर्गके नीचे ' ऐसा कहने पर अर्थकी प्रतिपत्ति नहीं
होती है, इसलिये अर्थकी प्रतिपत्ति करनेके लिये 'कोड़ाकोड़ाकोड़िके ऊपर और कोड़ाकोड़ाकोड़ा-
कोड़िके नीचे ' ऐसा कहा । अब इस मनुष्य पर्याप्त मिथ्यादृष्टि राशिके प्रमाणका प्ररूपण
अन्य आचार्योंके उपदेशानुसार कहते हैं—

द्विरूपके पांचवें वर्गसे उसीके छठवें वर्गके गुणित करने पर मनुष्य पर्याप्त राशि
होती है । द्विरूपके सातवें वर्गके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे एक खंडप्रमाण मनुष्य पर्याप्त
राशि होती है । इसप्रकार खंडितका कथन समाप्त हुआ । द्विरूपके पांचवें वर्गसे उसीके
सातवें वर्गके भाजित करने पर मनुष्य पर्याप्त राशि होती है । इसप्रकार भाजितका घर्णन
समाप्त हुआ । इसीप्रकार विचार कर विरलित और अपहृतका कथन कर लेना चाहिये । मनुष्य

१ एकं दस सयं सदस्सं दमसदस्सं लक्खं दहलक्खं कोडिं दहकोडिं कोडिमयं कोडिसइस्सं दसकोडिसहस्सं
कोडिलक्खं दहकोडिलक्खं कोडाकोडी दहकोडाकोडी कोडाकोडिमयं कोडाकोडिसहस्सं दहकोडाकोडिसहस्सं कोडा-
कोडिलक्खं दहकाडाकाडिलक्खं कोडाकोडिकोडी दहकोडाकोडिकोडी कोडाकोडिकोडिसयं कोडाकाडिकाडसहस्सं
दहकोडाकाडिकोडिसहस्सं कोडाकोडिकोडिलक्खं दहकोडाकोडाकाडिलक्खं कोडाकोडिकाडिकोडा । इत्यायं कवाचनप्रकारः ।
लो. प्र. सर्ग ७, पत्र १०८.

२ सामणमणुसरसी पंचमकदिवणसमा पुण्णा ॥ गो. जी. १५७. गर्मजानां मनुष्याणामथ मानं निरूप्यते ।
एकोनत्रिंशतीकैस्ते मित्ता जवन्यतीऽपि हि ॥ लो. प्र. सर्ग ७, पत्र १०७. संख्या च तेषां जवन्यतीऽपि पंचमवर्ग-
गुणितषष्ठवर्गप्रमाणा द्रष्टव्या ॥ अयं च राशिरेकोनत्रिंशदंस्थानो न कोडाकोड्यादिप्रकारेणामिधातु कथमपि शक्यते ।
× × एष च राशिः पूर्वसूरिमिस्त्रियमलपदादूर्ध्वं चतुर्थमलपदस्याधस्तादित्युपवर्ष्यते । पत्रसं. २, २१ टीका.

संखेअदिभागो संखेज्जाणि छट्टवग्गाणि । तं जहा— छट्टमवग्गेण सत्तमवग्गे भागे हिदे
छट्टवग्गो आगच्छदि । पंचमवग्गेण सत्तमवग्गे भागे हिदे संखेज्जा छट्टवग्गा' आगच्छंति ।
कारणं गदं । गिरुत्ती वियप्पो य चित्ति य वत्तव्वो । एदम्हादो मणुसपज्जत्तरासीदो—

तेरस कोडी देसे वावण्णं सासणे सुणेयव्वा ।

मिस्से वि य तद्दुग्गुणा असंज्जे सत्तकोडिसया ॥ ७० ॥

एदीए गाहाए वुत्तगुणपडिवण्णरासीओ एयत्तं करिय पमत्तादि-णव-संजदरासिं
च तत्थेव पक्खिविय अवणिदे मणुसपज्जत्तमिच्छाइट्टिरासी होदि ।

पंचमवग्गं चदुहि रूवेहि गुणिदे दुवेदमणुसपज्जत्तअवहारकालो होदि । तेण सत्तम-
वग्गे भागे हिदे मणुसपज्जत्तदुवेदरासी आगच्छदि । मणुसपज्जत्ता वायालवग्गसस षण-

पर्याप्त मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण द्विरूपके सातवें वर्गका संख्यातवां भाग है जो संख्यात छठवें
वर्गप्रमाण है । आगे उसीका स्पर्शीकरण करते हैं— द्विरूपके छठवें वर्गका उसीके सातवें वर्गमें
भाग देने पर छठवां वर्ग आता है । पांचवें वर्गसे सातवें वर्गके भाजित करने पर संख्यात छठवें
वर्ग आते हैं । इसप्रकार कारणका वर्णन समाप्त हुआ । निरुक्ति और विकल्पका विचार कर
कथन करना चाहिये । इस मनुष्य पर्याप्त राशिमेंसे—

संयतासंयतमें तेरह करोड़, सासादनमें बावन करोड़, मिश्रमें सासादनके प्रमाणसे
दूने और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें सातसौ करोड़ मनुष्य होते हैं ॥ ७० ॥

इस माथाके द्वारा कही गई गुणस्थानप्रतिपन्न राशिको एकत्रित करके और प्रमत्त-
संयत आदि नौ संयतराशिको उसी पूर्वोक्त एकत्र की हुई राशिमें मिलाकर जो जोड़ हो उसके
घटा देने पर मनुष्य पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीवराशि होती है ।

द्विरूपके पांचवें वर्गको चारसे गुणित करने पर दो वेदवाले मनुष्य पर्याप्तोंका
अवहारकाल होता है । उस अवहारकालसे सातवें वर्गके भाजित करने पर मनुष्य पर्याप्त दो
वेदवाले जीवोंकी राशि आती है ।

विशेषार्थ— किसी भी विवक्षित वर्गात्मक राशिको चारसे गुणित करके लब्धका उस
वर्गात्मक राशिके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर उस विवक्षित वर्ग राशिके घनका
चौथा भाग लब्ध आता है । तदनुसार प्रकृतमें द्विरूपके पांचवें वर्गको चारसे गुणित करके
उसका सातवीं वर्गराशिमें भाग देने पर पांचवें वर्गके घनप्रमाण पर्याप्त मनुष्य राशिका
चौथा भाग लब्ध आता है । खीवेदियोंको छोड़कर द्विवेदी मनुष्योंका यही प्रमाण है ।

१ प्रतिपु ' अट्टवग्गा ' इति पाठः ।

२ चउ अट्ट पंच सत्तह णव य पंचट्ट तिद य अट्ट णवा ति चउकट्टणहाई छ लक पंचट्ट दुग छवल
थउका । णस सत्त गयण अट्ट णव एकं पज्जत्तरासिपरिमाणं ॥ १९८०७०४०६२८५६६०८४३९८३८५९८७५८४,
ति. प. १६० पत्र.

मेत्ता त्ति जं वक्खाणे भणिदं जुत्तीए जोइज्जमाणे तं ण घडदे, 'कोडाकोडाकोडीए उवरि कोडाकोडाकोडाकोडीए हेडुदो' त्ति सुत्तेण सह विरोधत्तादो । तं कथं जाणिज्जदे ? एगुणतीसट्टाणेषु द्विदवायालवग्गघणस्स एगुणतीसट्टाणेहिंतो ऊणत्तविरोहादो । किं च जदि वायालवग्गघणमेत्तो मणुसपज्जत्तरासी होज्ज तो माणुसखेत्ते ६१९७०८४६६६८१६-४१६२००००००००० ।*

गयणट्ट-णय-कसाया चउसट्टि-मियंक-वसु-खरा-दव्वा ।

छायाल-वसु-णभाचल-पयत्थ-चंदो रिदू कमसो ॥ ७१ ॥

'मनुष्य पर्याप्त जीवराशि बादालके घनमात्र है' यह जो ऊपर व्याख्यान करते समय कह आये हैं, युक्तिसे विचार करने पर वह कथन घटित नहीं होता है, क्योंकि, 'कोडाकोडाकोडीके ऊपर और कोडाकोडाकोडाकोडीके नीचे मनुष्य पर्याप्त राशि है' इस सूत्रके साथ उक्त कथनका विरोध आता है ।

शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—क्योंकि, उनतीस स्थानोंमें स्थित बादालरूप वर्गके घनको उनतीस स्थानोंसे कम अंकप्रमाण माननेमें विरोध आता है ।

विशेषार्थ—ऊपर सूत्रद्वारा पर्याप्त मनुष्य राशिका प्रमाण कोडाकोडाकोडीके ऊपर और कोडाकोडाकोडाकोडीके नीचे बीचकी कोई संख्या बतलाई जा चुकी है । जब कि एक अंकके ऊपर २१ शून्य रखनेसे बाईस अंकप्रमाण कोडाकोडाकोडी होती है और एक अंकके ऊपर २८ शून्य रखनेसे उनतीस अंकप्रमाण कोडाकोडाकोडाकोडी होती है, तब यह निश्चित हो जाता है कि सूत्रानुसार पर्याप्त मनुष्य राशिका प्रमाण उनतीस अंकके नीचे और बावीस अंकके ऊपर बीचकी कोई संख्या होना चाहिये । अब यदि द्विरूपके पांचवें वर्गके घनप्रमाण पर्याप्त मनुष्य राशि मानी जाय तो पूर्वोक्त सूत्रके कथनके साथ इस कथनका विरोध आ जाता है, क्योंकि द्विरूपके पांचवें वर्गके घनका प्रमाण उनतीस अंकप्रमाण होते हुए भी कोडाकोडाकोडाकोडीके प्रमाणके ऊपर है, इसलिये द्विरूपके पांचवें वर्गके घनका प्रमाण उनतीस अंकसे नीचेकी संख्या नहीं हो सकती है । पर सूत्रानुसार पर्याप्त मनुष्यराशिका प्रमाण उनतीस अंकसे नीचेकी संख्या विवक्षित है, इसलिये 'पंचमकदिघणसमा पुण्णा' इत्यादि रूपसे जो पर्याप्त मनुष्यराशिका प्रमाण पाया जाता है, वह सूत्रानुसार नहीं है, ऐसा प्रतीत होता है ।

दूसरे, यदि बादालरूप वर्गके घनप्रमाण मनुष्य पर्याप्त राशि होवे तो वह राशि मनुष्य-क्षेत्रमें ६१९७०८४६६६८१६४१६२००००००००० अर्थात्—

क्रमशः आठ शून्य, नय अर्थात् दो, कषाय अर्थात् सोलह, चौसठ, सृगांक अर्थात् एक,

* प्रतिशु अष्टानां शून्यानां प्राक् ' ६२ ' इति स्थाने केवल ' ६ ' इति पाठ ; ।

एत्तियमेत्तपदरंगुलेण सम्माएज्ज । मणुसखेत्तपदरंगुले आणिज्जमाणे—

(सत्त णव सुण्ण पंच छह णव चदु एकं च पंच सुण्ण च ।
जंबूदीवस्सेदं गणिदफलं होदि णादव्वा ॥ ७२ ॥)

७९०५६९४१५० एदग्धि तेरसंगुलं च किंचूणअद्वंगुलं च पक्खिविय आणे-
यव्वं । किंचूणपमाणं—

सत्तसहस्सडसीदेहि खंडिदे पंचवणखंडाणि ।

अद्वंगुलस्स हीणं करेह अद्वंगुलं णियइं ॥ ७३ ॥

३ एदाणि जंबूदीवपदरजोयणाणि माणुसखेत्तजंबूदीवसलागाहि दो-समुद्द-
सलागूणाहि गुणिय पदरंगुलाणि कायव्वाणि ।

आठ, खर अर्थात् छह, द्रव्य अर्थात् छह, छयालीस, आठ, शून्य, अचल अर्थात् सात, पदार्थ
अर्थात् नौ, चन्द्र अर्थात् एक, और ऋतु अर्थात् छह,— ॥ ७१ ॥

इतने प्रतरांगुलोंके द्वारा समा जाना चाहिये । मनुष्यक्षेत्रमें प्रतरांगुलोंके लाने पर—

सात, नौ, शून्य, पांच, छह, नौ, चार, एक, पांच, शून्य, अर्थात् सात अरब नब्बे
करोड़ छपन लाख चौरानवे हजार एक सौ पचास योजन, यह जम्बूद्वीपका गणितफल अर्थात्
क्षेत्रफल है, ऐसा जानना चाहिये ॥ ७२ ॥

७९०५६९४१५० इस संख्यामें तेरह अंगुल और कुछ कम आधा अंगुल मिलाकर
मनुष्य क्षेत्रके प्रतरांगुल ले आना चाहिये । आधे अंगुलमें कुछ कमका प्रमाण—

अर्धांगुलके पचवन खंडोंको अर्थात् $\frac{५५}{२}$ को सात हजार अठासीसे खंडित अर्थात्
भाजित करने पर जो लब्ध आवे उतना हीन अर्धांगुल निश्चित करना चाहिये ॥ ७३ ॥

$$\text{यथा } \frac{१}{२} \times \frac{५५}{७०८८}$$

$$\text{उदाहरण— } \frac{१}{२} - \left(\frac{१}{२} \text{ का } \frac{५५}{७०८८} \right) = \frac{१}{२} - \frac{५५}{१४१७६} = \frac{७०३३}{१४१७६} \text{ हीन अर्धांगुल.}$$

जम्बूद्वीपसंबन्धी इन प्रतर योजनोंको लवण और कालोद समुद्रकी शलाकाओंसे
न्यून मनुष्यक्षेत्रकी जम्बूद्वीप प्रमाणसे की गई शलाकाओंके द्वारा गुणित करके पुनः प्रतरांगुल
कर लेना चाहिये ।

१ जम्बूद्वीपस्य गणितपदं बक्ष्येऽथ तत्त्वतः ॥ ३५ ॥ शतानि सप्तकोटीनां नवतिः कोटयः पराः ।
लक्षाणि सप्तपंचाशत् षट्सहस्रोन्नितानि च ॥ ३६ ॥ सार्द्धं शतं योजनानां पादोनक्रोशयामलम् । धनुषि पंचदश च
सार्द्धं करद्वयं तथा ॥ ३७ ॥ अंकतोऽपि यो. ७९०५६९४१५० को. १ धनुः १५१५ कर २ अं. १२ लो. प्र. सर्ग
१५, पत्र १६५.

विशेषार्थ—यद्यपि 'विक्रमं भवग्गदहगुणकरणी वट्टस्स परिरेओ होदि' अर्थात् किसी वृत्त क्षेत्रकी परिधि लानेके लिये पहले उस क्षेत्रका जितना विस्तार हो उसका वर्ग कर ले। अनन्तर उस वर्गित राशिको दशसे गुणित करके उसका वर्गमूल निकाल ले। इसप्रकार जो वर्गमूलका प्रमाण होगा वही उस गोल क्षेत्रकी परिधिका प्रमाण होगा। इस नियमके अनुसार एक लाख विस्तारवाले जम्बूद्वीपकी परिधिका प्रमाण तीन लाख सोलह हजार दोसौ सत्ताईस योजन, तीन कोस, एकसौ अट्ठाईस धनुष और साढ़े तेरह अंगुलसे कुछ अधिक आता है। परंतु धवलाकारने साढ़े तेरह अंगुलसे कुछ अधिकके स्थानमें साढ़े तेरह अंगुलसे कुछ कम ग्रहण किया है। उन्होंने कुछ कमका प्रमाण $\frac{27}{2}$ मेंसे $\frac{1}{2} \times \frac{44}{6000}$ कम बतलाया प्रतीत होता है। यद्यपि इसका निश्चित कारण प्रतीत नहीं होता है, फिर भी इसे ग्रहण करके उक्त परिधिके प्रमाणके ऊपरसे जम्बूद्वीपका क्षेत्रफल लानेके लिये 'वासचउत्थाहदो दु खेत्तफलं' अर्थात् परिधिके प्रमाणको व्यासकी चौथाईरूप प्रमाणसे गुणित कर देने पर क्षेत्रफलका प्रमाण होता है, इस नियमके अनुसार पच्चीस हजारसे गुणित कर देने पर जम्बूद्वीपका क्षेत्रफल आ जाता है। यहां सर्व क्षेत्रफल योजनोंमें लानेके लिये यथायोग्य प्रक्रिया कर लेना चाहिये। अब यहां पर दो समुद्रोंके क्षेत्रफलको छोड़कर जम्बूद्वीप, धातकीखंडद्वीप और पुष्करार्थद्वीपका सम्मिलित क्षेत्रफल लाना है, अतएव 'बाहिरसुईवग्गं' इत्यादि करणसूत्रसे ढाई द्वीपके जम्बूद्वीपप्रमाण खंड लाने पर वे १३२९ होते हैं। इनसे उपर्युक्त क्षेत्रफलके गुणित करने पर दो समुद्रोंके क्षेत्रफलके बिना ढाई द्वीपका क्षेत्रफल योजनोंमें आता है। इसके प्रतरांगुल बनानेके लिये एक योजनके चार कोस, एक कोसके दो हजार धनुष, एक धनुषके चार हाथ और एक हाथके चौबीस अंगुलोंके वर्गसे गुणा कर देना चाहिये, क्योंकि, पूर्वोक्त राशि वर्गात्मक है अतएव वर्गात्मक राशिके गुणकार और भागहार भी वर्गात्मक ही होना चाहिये। इस प्रक्रियासे दो समुद्रोंके क्षेत्रफलके बिना ढाई द्वीपका क्षेत्रफल प्रमाणप्रतरांगुलोंमें आ जाता है। आगे गणितद्वारा उसीका स्पष्टीकरण किया गया है। यहां धवलाके उपलभ्य पाठमें जो संशोधनकी कल्पना पादटिप्पणमें व्यक्त की गई है, उसीके अनुसार अर्थ किया गया है क्योंकि मूलकी अंकसंदाष्टि की सार्थकता तभी सिद्ध होती है जो कि निम्न उदाहरणसे स्पष्ट है—

उदाहरण—३१६२२७ यो., ३ को., १२८ ध., और कुल कम $१३\frac{1}{2}$ अंगुल जो थी धव-

लके अनुसार $\frac{27}{2} - \frac{1}{2} \times \frac{44}{6000}$ अंगुल होते हैं। यह जम्बूद्वीपकी परिधि है।

जम्बूद्वीपका क्षेत्रफल लानेके लिये उपर्युक्त प्रमाणमें जम्बूद्वीपके व्यासके चतुर्थांश अर्थात् पच्चीस हजारसे गुणा करना चाहिये जिससे जम्बूद्वीपका क्षेत्रफल आया—

$$\frac{८६७०६२०३७२४५०२२५}{१०८८७१६८} \text{ प्रतर योजन}$$

७९२२८१६२५१४२६४३३७५९३५४३९५०३३६ एतियमेत्तमणुसपज्जत्तरासिम्हि^१ संखेज्जपदरंगुलेहि गुणिदे माणुसखेत्तादो संखेज्जगुणत्तप्पसंगा । माणुसलोग-खेत्तफलपमाणपदरंगुलेसु संखेज्जुस्सेहंगुलमेत्तोगाहणो मणुसपज्जत्तरासी सम्मादि त्ति णासंकणिज्जं, सव्वुकस्सोगाहणमणुसपज्जत्तरासिम्हि संखेज्जपमाणपदरंगुलमेत्तोगाहण-गुणमारमुहवित्थारुवलंभादो । सव्वद्वसिद्धिदेवाणं पि मणुसपज्जत्तरासीदो संखेज्जगुणोणं ण सव्वद्वसिद्धिविमाणे जंबूदीवपमाणे ओगाहो अत्थि, तत्तो संखेज्जगुणोगाहणाणं तत्थावट्ठाणविरोहादो । तम्हा मणुसपज्जत्तरासी एयकोडाकोडाकोडीओ सादिरेया त्ति थेत्तच्चा ।

इसे दो समुद्रोंके बिना द्वारद्वीपकी जम्बूद्वीपप्रमाण की गई खंडशलाकाओं अर्थात् १३२९ से गुणित कर देने पर दो समुद्रोंके बिना द्वारद्वीपका क्षेत्रफल आया—

$$\frac{११४३८७८५४४७४९८६३४९०२५}{१०८८७१६८} \text{ प्रमाण प्रतर योजन}$$

इसके प्रमाणप्रतरांगुल बनानेके लिये पूर्वोक्त मापके प्रमाणानुसार $४^{\circ} \times २०००^{\circ} \times ४^{\circ} \times २४^{\circ}$ से गुणित करने पर इष्ट क्षेत्रफल आया—

$$६१९७०८४६६६८१६४१६२०००००००० \text{ प्रमाण प्रतर अंगुल.}$$

अब यदि ७९२२८१६२५१४२६४३३७५९३५४३९५०३३६ इतनी मनुष्य पर्याप्त राशिको संख्यात प्रतरांगुलोंसे गुणा किया जाय तो उस प्रमाणको मनुष्य क्षेत्रसे संख्यातगुणोका प्रसंग आ जायगा । यदि कोई ऐसी आशंका करे कि मनुष्यलोकका क्षेत्रफल जो प्रमाण प्रतरांगुलोंसे लाया गया है उसमें संख्यात उल्लेधांगुलमात्र अवगाहनासे युक्त मनुष्य पर्याप्त राशि समा जायगी, सो ठीक नहीं है, क्योंकि, सबसे उत्कृष्ट अवगाहनासे युक्त मनुष्य पर्याप्त राशिमें संख्यात प्रमाण-प्रतरांगुलमात्र अवगाहनाके गुणकारका मुख विस्तार पाया जाता है । उसीप्रकार मनुष्य पर्याप्त राशिसे संख्यातगुणे सर्वार्थसिद्धिके देवोंकी भी जम्बूद्वीपप्रमाण सर्वार्थसिद्धिके विमानमें अवगाहना नहीं बन सकती है, क्योंकि, सर्वार्थसिद्धि विमानके क्षेत्रफलसे संख्यातगुणी अवगाहनासे युक्त देवोंका वहां पर अवस्थान माननेमें विरोध आता है । इसलिये मनुष्य पर्याप्त राशि एक कोड़ाकोड़ाकोड़ीसे अधिक है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये ।

विशेषार्थ—मनुष्योंका निवास क्षेत्र द्वार द्वीप है, जिसका व्यास पैंतालीस लाख योजन है । इसका क्षेत्रफल १६००९०३०६५४६०१३३६ योजनप्रमाण होता है । इसके प्रतरांगुल $९४४२५१०४९६८१९४३४०००००००००$ होते हैं, परंतु द्वार द्वीपके क्षेत्रफलमेंसे दो समुद्रोंका

१ तललीनमधुगविमलं धूमसिलागाविचोरभयमेरु । तटहरिखक्षसा होंति हु माणुसपज्जत्तसंखंका ॥ गो. जी. १५८. छ ति ति ख पण नव तिग चउ पण द्विग नव पंच सग तिग चउरो । छ दु चउ इग पण दु छ इग अउ दु दु नव सग जहच नरा ॥ लो. प्र. सर्ग ७. पत्र १०८.

सासणसम्माइट्टिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति द्व्यपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ॥ ४६ ॥

क्षेत्रफल घटा देने पर शेष क्षेत्रफल ६१९७०८४६६६८१६४१६२०००००००० प्रतरांगुलप्रमाण रहता है, क्योंकि, दोनों समुद्रोंमें अन्तर्द्वीपज मनुष्य होते हुए भी उनका प्रमाण अत्यल्प होनेसे उनके क्षेत्रफलकी यहां विवक्षा नहीं की गई है। एक मनुष्यका निवास क्षेत्र संख्यात प्रतरांगुल-प्रमाण है, इसलिये ऊपर जो प्रतरांगुलोंकी संख्या बतलाई है मनुष्यराशि उससे कम ही होना चाहिये। पर मनुष्यराशिको २९ अंकप्रमाण मान लेने पर २५ अंकप्रमाण क्षेत्रफलवाले क्षेत्रमें उनका रहना किसी प्रकार भी संभव नहीं है। कारण कि ढाई द्वीपका क्षेत्रफल २५ अंकप्रमाण ही है। कदाचित् यह कहा जाय कि ऊपर जो २५ अंक प्रतरांगुल-प्रमाण क्षेत्रफल कहा है वह प्रमाणांगुलकी अपेक्षा कहा गया है। यदि इसके उत्सेधांगुल कर लिये जाय तो इसमें २९ अंकप्रमाण मनुष्यराशि समा जायगी, सो भी बात नहीं है, क्योंकि, उत्कृष्ट अवगाहनाकी अपेक्षा २९ अंकप्रमाण मनुष्यराशिका उक्त क्षेत्रमें समा जाना अशक्य है। आकाशकी अवगाहनाकी विचित्रतासे यह कोई दोष नहीं रहता है, ऐसा कहना भी युक्तियुक्त नहीं है, क्योंकि, अवगाह्यमान पदार्थोंका संयोगरूप अन्योन्य प्रवेशरूप संबन्ध ही अत्र क्षेत्रमें बहुत पदार्थोंके अधिष्ठानके लिये कारण है। परन्तु मनुष्योंमें परस्पर इसप्रकारका संबन्ध गर्भादि अवस्थाको छोड़कर प्रायः नहीं पाया जाता है, इसलिये सूत्रमें जो कोड़ाकोड़ाकोड़ाकोड़ीसे नीचेकी और कोड़ाकोड़ाकोड़ीसे ऊपरकी संख्या मनुष्योंका प्रमाण कहा है वही युक्तियुक्त है। दूसरे यदि उनतीस अंकप्रमाण मनुष्यराशि मान ली जाय, तो मनुष्यनियोंसे तिगुणे अथवा, सातगुणे जो सर्वार्थसिद्धिके देवोंका प्रमाण कहा है वह नहीं बन सकता है, क्योंकि, एक लाख योजनप्रमाण सर्वार्थसिद्धिके विमानमें इतने देवोंका रहना अशक्य है। इसका कारण यह है कि एक लाख योजनके क्षेत्रफलके उत्सेधरूप प्रतरांगुल करने पर भी उनका प्रमाण अट्ठाईस अंकप्रमाण आता है और सर्वार्थसिद्धिके देवोंका प्रमाण मनुष्यराशिको २९ अंकप्रमाण मान लेने पर ३० अंकप्रमाण होता है। यह तो निश्चित है कि एक देव संख्यात प्रतरांगुलोंमें रहता है, परन्तु यहां क्षेत्रफलके प्रतरांगुल देवोंके प्रमाणसे कम है, इसलिये ३० अंकप्रमाण देवोंका २८ अंकप्रमाण क्षेत्रफलवाले क्षेत्रमें रहना किसी प्रकार भी संभव नहीं है। इससे भी यही सिद्ध होता है कि सूत्रमें पर्याप्त मनुष्यराशिका प्रमाण जो कोड़ाकोड़ाकोड़ाकोड़ीके नीचे और कोड़ाकोड़ाकोड़ीके ऊपर कहा है वही ठीक है।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानतक प्रत्येक गुण-स्थानमें पर्याप्त मनुष्य द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ ४६ ॥

१ एतेभ्यः पर्याप्तमनुष्याणां संख्यातगुणत्वेऽपि आकाशस्यावगाहशक्तिवैचिथ्यासंशीतिर्न कर्तव्या ।
गो. जी. १५९ टीका.

एदग्धि सुत्तग्धि मणुसोधे जं चउण्हं गुणद्व्याणानं पमाणं वुत्तं तं चेव पमाणं वत्तव्वं, संगहिदतिवेदत्तणेण पज्जत्तभावेण च दोण्हं विसेसाभावादो ।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अजोगकेवलि ति ओघं ॥ ४७ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो पुव्वं परूविदो ति ण वुच्चदे ।

मणुसिणीसु मिच्छाद्विद्वि दव्वपमाणेण केवडिया ? कोडाकोडा-
कोडीए उवरि कोडाकोडाकोडाकोडीए हेद्वदो छण्हं वग्गाणमुवरि
सत्तण्हं वग्गाणं हेद्वदो ॥ ४८ ॥

एदस्स सुत्तस्स वक्खणं मणुसपज्जत्तसुत्तवक्खणेण तुल्लं । णवरि पंचमवग्गस्स
तिभागे पंचमवग्गग्धि चेव पविस्सत्ते मणुसिणीणमवहारकालो होदि । तेण सत्तमवग्गे
भागे हिदे मणुसणीणं दव्वमागच्छदि । लद्धादो सगतेरसगुणद्व्याणपमाणे अवणिदे मणु-
सिणीमिच्छाद्विद्विदव्वं होदि ।

सामान्य मनुष्य राशिका प्रमाण कहते समय सासादनादि चार गुणस्थानवर्ती राशिका
जो प्रमाण कह आये हैं, इस सूत्रका व्याख्यान करते समय उसी प्रमाणका व्याख्यान करना
चाहिये, क्योंकि, संगृहीत त्रिवेदत्वकी अपेक्षा और पर्याप्तपनेकी अपेक्षा उक्त दोनों राशियोंमें
कोई विशेषता नहीं है ।

प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें
पर्याप्त मनुष्य सामान्य प्ररूपणके समान संख्यात हैं ॥ ४७ ॥

इस सूत्रका अर्थ पहले कह आये हैं, इसलिये यहां नहीं कहा जाता है ।

मनुष्यनियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? कोडाकोडा-
कोडीके ऊपर और कोडाकोडाकोडाकोडीके नीचे छठवें वर्गके ऊपर और सातवें वर्गके
नीचे मध्यकी संख्याप्रमाण हैं ॥ ४८ ॥

इस सूत्रका व्याख्यान मनुष्य पर्याप्तकी संख्याके प्रतिपादन करनेवाले सूत्रके व्याख्यानके
तुल्य है । इतनी विशेषता है कि पांचवें वर्गके त्रिभागको पांचवें वर्गमें प्रक्षिप्त कर देने पर
मनुष्यनियोंके प्रमाण लानेके लिये अवहारकाल होता है । उस अवहारकालसे सातवें वर्गके
भाजित करने पर मनुष्यनियोंके द्रव्यका प्रमाण आता है । इसप्रकार जो मनुष्यनियोंकी संख्या
लब्ध आवे उसमेंसे अपने तेरह गुणस्थानके प्रमाणके घटा देने पर मनुष्यनी मिथ्यादृष्टियोंका
प्रमाण होता है ।

१ दो पण सग दुग छण्णव सग पण इमि पंच णवां एकं । त्रिय पण दुग अड छण्णव अट्ठं एकं दुगमेकं ।
इमि दुग चउ णव पंच य मणुसिणिरासिस्स परिमाणं । ५९४२११२१८८५६९८२५३१५५१५७९६२७५२ ति.
पं. १६० पत्र. पज्जत्तमणुस्साणं तिचउत्थो माणुसीण परिमाणं ॥ गो. जी. १५९.

मणुसिणीसु सासणसम्माइट्टिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि ति द्व्यपमाणेण केवडिया ? संखेज्जा ॥ ४९ ॥

मणुसोथे वुत्तसासणादीणं संखेज्जदिभागो सासणादीणं गुणपडिवण्णाणं पमाणं मणुसिणीसु हवदि । कुदो ? अप्पसत्थवेदोदण सह पउरं सम्महंसणलंभाभावादो । तं कथं जाणिज्जे ? 'सव्वत्थोवा णवुंसयवेदअसंजदसम्मादिट्टिणो । इत्थिवेदअसंजदसम्मा-इट्टिणो असंखेज्जगुणा । पुरिसवेदअसंजदसम्माइट्टिणो असंखेज्जगुणा' इदि अप्पावहुअसुत्तादो कारणस्स थोवत्तणं जाणिज्जे । तदो सासणसम्माइट्टिआदीणं पि थोवत्तणं सिद्धं

विशेषार्थ — किसी भी विवक्षित वर्गमें उसीके त्रिभाग को जोड़कर उसका उसके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर उस विवक्षित वर्गके घनका तीन चतुर्थांश लब्ध आता है । तदनुसार पांचवें वर्गमें उसीका त्रिभाग जोड़कर सातवें वर्गमें भाग देने पर पांचवें वर्गके घनरूप मनुष्य राशिका तीन चतुर्थांश लब्ध आता है । यही मनुष्य योनिमतियोंका प्रमाण है । इसमेंसे सासादन आदि तेरह गुणस्थानवर्ती राशिका प्रमाण घटा देने पर मिथ्यादृष्टि स्त्रियोंका प्रमाण होता है, यह जो मूलमें कहा है इससे प्रतीत होता है कि उपर्युक्त प्रमाण स्त्रियोंका भाववेदकी प्रधानतासे कहा गया है । यदि यह प्रमाण द्रव्यस्त्रियोंका होता तो मूलमें 'इसमेंसे सासादनदि तेरह गुणस्थानराशिका प्रमाण घटाने पर मिथ्यादृष्टि मनुष्य योनिमतियोंका प्रमाण होता है' ऐसा न कह कर केवल इतना ही कहा जाता कि इस प्रमाणमेंसे सासादनदि चार गुणस्थानवर्ती राशिका प्रमाण घटाने पर मिथ्यादृष्टि योनिमतियोंका प्रमाण होता है । परंतु गोम्मटसारकी टीकामें यह प्रमाण द्रव्यवेदकी अपेक्षा बतलाया है ।

मनुष्यनियोंमें सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अजोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानमें जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ ४९ ॥

सामान्य मनुष्योंमें सासादनसम्यग्दृष्टि आदि गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंकी जो संख्या कही गई है उसके संख्यातवें भाग मनुष्यनियोंमें सासादनसम्यग्दृष्टि आदि गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंका प्रमाण है, क्योंकि, अप्रशस्त वेदके उदयके साथ प्रचुर जीवोंको सम्यग्दर्शनका लाभ नहीं होता है ।

शंका — यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान — 'नपुंसकवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीव सबसे स्तोत्रक हैं । स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीव उनसे असंख्यातगुण हैं । और पुरुषवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि उनसे असंख्यातगुण हैं ।' इस अल्पबहुत्वके प्रतिपादन करनेवाले सूत्रसे स्त्रीवेदियोंके अल्प होनेके कारणका स्तोत्रकपना जाना जाता है । और इसीसे सासादनसम्यग्दृष्टि आदिकके भी स्तोत्रकपना सिद्ध हो

१ पर्याप्तमनुष्यराशेः त्रिचतुर्भागी मानुषीणां द्रव्यस्त्रीणां परिमाणं भवति । गो. जी. १५९ टीका.

हवदि । णवरि एत्तियं तेसिं पमाणमिदि ण णव्वदे, संपहि उवएसाम्भावादो ।

मणुसअपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया ? असंखेज्जा ॥ ५० ॥

एत्थ णिव्वत्ति-अपज्जत्ते मोत्तूण लद्धि-अपज्जत्ताणं गहणं कायव्वं । कुदो ? एत्थ गुणपडिवण्णपमाणपरूवणाभावण्णहाणुववत्तीदो । सामण्णेण अवगद-असंखेज्जसविसेसपरूवणडुमुत्तरसुत्तमाह—

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसण्णिणि-उस्सण्णिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ५१ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो पुव्वं बहुसो परूविदो त्ति पुणो ण वुच्चदे पुणरुत्तभएण ।

खेत्तेण सेढीए असंखेज्जदिभागो । तिस्से सेढीए आयामो असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ । मणुस-अपज्जत्तेहि रूवा पक्खित्तेहि सेढिमवाहिरदि अंगुलवग्गमूलं तदियवग्गमूलगुणिदेण ॥ ५२ ॥ इदि एदं वयणं ण घडदे, फलाभावा । संते संभवे वियहिचारे च विसेसणमत्थवंतं

जाता है। परंतु इतनी विशेषता है कि उन सासादनसम्यग्दृष्टि आदि योनिमतियोंका प्रमाण इतना है, यह नहीं जाना जाता है, क्योंकि, इस कालमें इसप्रकारका उपदेश नहीं पाया जाता है।

लब्धपर्याप्त मनुष्य द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं ॥ ५० ॥

यहां पर निर्वृत्त्यपर्याप्तकोंको ग्रहण न करके लब्धपर्याप्तकोंका ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके प्रमाणके प्ररूपणका अभाव अन्यथा बन नहीं सकता है।

अपर्याप्त मनुष्य राशि असंख्यातरूप है यह बात सामान्यरूपसे तो जान ली, पर विशेषरूपसे उसका ज्ञान नहीं हुआ, अतः उस असंख्यातके विशेषरूपसे प्ररूपण करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

कालकी अपेक्षा लब्धपर्याप्त मनुष्य असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ५१ ॥

इस सूत्रका अर्थ पहले अनेकवार कह आये हैं, अतः पुनरुक्त दोषके भयसे पुनः नहीं कहते हैं।

क्षेत्रकी अपेक्षा जगश्रेणीके असंख्यातवें भागप्रमाण लब्धपर्याप्त मनुष्य हैं। उस जगश्रेणीके असंख्यातवें भागरूप श्रेणीका आयाम असंख्यात करोड़ योजन है। मूच्यंगुलके तृतीय वर्गमूल गुणित प्रथम वर्गमूलको शलाकारूपसे स्थापित करके रूपाधिक लब्धपर्याप्तक मनुष्योंके द्वारा जगश्रेणी अपहृत होती है ॥ ५२ ॥

शंका—यह सूत्र-वचन घटित नहीं होता है, क्योंकि, इस वचनका कोई फल नहीं

भवदि । एत्थ पुण संभवो णेव इदि । परिहारो वुच्चदे । सुत्तेण विणा सेठी असंखेज्ज-
जोयणकोडिपमाणो होदि त्ति ण जाणिज्जदे, तदो असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ सेठिपमाण-
मिदि जाणावणडुमिदं वयणं । परियम्मादो असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ सेठीए पमाण-
मवगदमिदि चे ण, एदस्स सुत्तस्स बलेण परियम्मपवुत्तीदो । अहवा सेठीए असंखेज्जदि-
भागो वि सेठी वुच्चदे, अवयविणामस्स अवयवे पवुत्तिदंसणादो । जहा गामेगदेसे दद्धे
गामो दद्ध इदि । अहवा एवं संबंधो कायव्वो । तिस्से सेठीए असंखेज्जदिभागस्स आयामो
दीहत्तणं असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ होदि त्ति । अपज्जत्तएहि रूवपक्खित्तएहि रूवा
पक्खित्तएहि रूवं पक्खित्तएहिं ति तिसु वि पादेसु रूवाहियपज्जत्तरासी पक्खिविदव्वो ।
पुणो लद्धमिह रूवाहियमणुसपज्जत्तरासिमवणिदे मणुस्सापज्जत्ता होंति । अंगुलवग्गमूलं
च तं तदियवग्गमूलगुणिदं च अंगुलवग्गमूलतदियवग्गमूलगुणिदं तेण सलागभूदेण सेठी
अवहिरिज्जदि त्ति जं वुत्तं होदि ।

है । व्यभिचारकी संभावना होने पर ही विशेषण फलवाला होता है । परंतु यहां पर तो उसकी संभावना ही नहीं है ?

समाधान—आगे पूर्वोक्त शंकाका परिहार करते हैं । सूत्रके विना 'जगश्रेणीके असंख्यातवें भागरूप श्रेणी असंख्यात करोड़ योजनप्रमाण है' यह नहीं जाना जाता है, अतः जगश्रेणीके असंख्यातवें भागरूप श्रेणीका प्रमाण असंख्यात करोड़ योजन है, इसका ज्ञान करानेके लिये उक्त वचन दिया है ।

शंका—जगश्रेणीके असंख्यातवें भागरूप श्रेणीका आयाम असंख्यात करोड़ योजन है, यह परिकर्मसे जाना जाता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, इस सूत्रके बलसे परिकर्मकी प्रवृत्ति हुई है ।

अथवा, जगश्रेणीके असंख्यातवें भागको भी श्रेणी कहते हैं, क्योंकि, अवयवीके नामकी अवयवमें प्रवृत्ति देखी जाती है । जैसे, ग्रामके एक भागके दग्ध होने पर ग्राम जल गया ऐसा कहा जाता है । अथवा, इसप्रकारका संबन्ध कर लेना चाहिये कि उस श्रेणीके असंख्यातवें भागका आयाम अर्थात् लंबाई असंख्यात करोड़ योजन है । 'अपज्जत्तएहि रूवपक्खित्तएहि रूवा पक्खित्तएहि रूवं पक्खित्तएहि' इन तीनों भी स्थानोंमें किसी भी वचनसे रूपाधिक पर्याप्त मनुष्य राशिका प्रक्षेप करना चाहिये । पुनः लब्धमेंसे रूपाधिक पर्याप्त मनुष्य राशिके घटा देने पर लब्धपर्याप्त मनुष्योंका प्रमाण होता है । सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलको तृतीय वर्गमूलसे गुणित करके जो लब्ध आवे शलाकारूप उस राशिसे जगश्रेणी अपहृत होता है, यह इस सूत्रका अभिप्राय है ।

विशेषार्थ—सामान्य मनुष्यराशिके प्रमाणमेंसे पर्याप्त मनुष्यराशिका प्रमाण घटा देने पर लब्धपर्याप्त मनुष्यराशिका प्रमाण शेष रहता है । सूच्यंगुलके प्रथम और तृतीय वर्गमूलके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि आवे उससे जगश्रेणीको भाजित करके लब्ध

भागाभागं वत्तइस्सामो । मणुसरासिमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा मणुस-अपजत्ता
 होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मणुसिणीमिच्छाइट्ठी होंति । सेसं संखेज्जखंडे
 कए तत्थ बहुखंडा मणुसपज्जत्तमिच्छाइट्ठी होंति । (सेसं संखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा
 असंजदसम्माइट्ठिणो होंति ।) सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सम्मामिच्छाइट्ठिणो होंति ।
 सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सासणसम्माइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए तत्थ
 बहुखंडा संजदासंजदा होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा पमत्तसंजदा होंति ।
 सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा अपमत्तसंजदा होंति । उवरि ओघं ।

अप्पायहुगं तिविहं, सत्थाणं परत्थाणं सव्वपरत्थाणं चेदि । तत्थ सत्थाणं
 वत्तइस्सामो । सव्वत्थोवो मणुसमिच्छाइट्ठिअवहारकालो । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । के
 गुणगारो ? सगदव्वस्स असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सगअवहारकालो । अहवा
 सेटीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेट्ठिपढमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? सगअवहार-

राशिमैंसे एक कम कर देने पर सामान्य मनुष्यराशिका प्रमाण आता है और इसमेंसे पर्याप्त
 मनुष्यराशिका प्रमाण घटा देने पर लब्धपर्याप्त मनुष्यराशिका प्रमाण आता है ।

अब भागाभागको बतलाते हैं— मनुष्यराशिके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे
 बहुभागप्रमाण अपर्याप्त मनुष्य हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे
 बहुभागप्रमाण मनुष्यनी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर
 उनमेंसे बहुभागप्रमाण मनुष्य पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड
 करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्य हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड
 करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सम्यग्मिथ्यादृष्टि मनुष्य हैं । शेष एक भागके संख्यात भाग
 करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्य हैं । शेष एक भागके संख्यात
 खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण संयतासंयत मनुष्य हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड
 करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण प्रमत्तसंयत मनुष्य हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने
 पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण अप्रमत्तसंयत मनुष्य हैं । इसके ऊपर सामान्य प्ररूपणाके समान
 भागाभाग जानना चाहिये ।

अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है, स्वस्थान अल्पबहुत्व, परस्थान अल्पबहुत्व और सर्व
 परस्थान अल्पबहुत्व । उनमेंसे स्वस्थान अल्पबहुत्वको बतलाते हैं— मनुष्य मिथ्यादृष्टि
 अवहारकाल सबसे स्तोक है । उन्हीं मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्यप्रमाण अवहारकालसे
 असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपने द्रव्यका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग
 क्या है ? अपना अवहारकाल प्रतिभाग है । अथवा, जगश्रेणीका असंख्यातवां भाग गुणकार है
 जो जगश्रेणीका असंख्यातवां भाग जगश्रेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग
 क्या है ? अपने अवहारकालका वर्ग प्रतिभाग है । अथवा, प्रतरांगुलका असंख्यातवां भाग

कालवग्गो । अहवा पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सूचिअंगुलाणि । केत्तिय-
मेत्ताणि ? विदियवग्गमूलमेत्ताणि । सेढी असंखेज्जगुणा । को गुणमारो ? सगअवहारकालो ।
एवं मणुसअपज्जत्ताणं पि सत्थाणप्पाबहुगं वत्तव्वं । सासणादीणं सत्थाणं णत्थि ।
मणुसपज्जत्त-मणुसिणीणं पि णत्थि सत्थाणप्पाबहुगं ।

परत्थाणे पयदं— सव्वत्थोवा चत्तारि उवसामगा । पंच खवगा संखेज्जगुणा ।
सजोगिकेवली संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा ।
संजदासंजदा संखेज्जगुणा । सासणसम्माइट्ठी संखेज्जगुणा । सम्मामिच्छाइट्ठी संखेज्जगुणा ।
असंजदसम्माइट्ठी संखेज्जगुणा । तदो मिच्छाइट्ठिवहारकालो असंखेज्जगुणो । को
गुणमारो ? सगअवहारकालस्स संखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? असंजदसम्माइट्ठिणो ।
तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणमारो ? पुव्वभणिदो । सेढी असंखेज्जगुणा । को
गुणमारो ? पुव्वं भणिदो । मणुसपज्जत्तेसु सव्वत्थोवा चत्तारि उवसामगा । पंच खवगा
संखेज्जगुणा । एवं जाव असंजदसम्माइट्ठि ति । तदो मिच्छाइट्ठिव्वं संखेज्जगुणं । को

गुणकार है जो प्रतरांगुलका असंख्यातवां भाग असंख्यात सूच्यंगुलप्रमाण है । असंख्यात
सूच्यंगुलोंका प्रमाण कितना है ? सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलप्रमाण है । मनुष्यमिथ्यादृष्टि द्रव्यसे
जगश्रेणी असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाल गुणकार है । इसीप्रकार
मनुष्य लब्धपर्याप्तोंके स्वस्थान अल्पबहुत्वका भी कथन करना चाहिये । सासादनसम्यग्दृष्टि
आदि गुणस्थानवर्ती मनुष्योंका स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं है । उसीप्रकार पर्याप्त मनुष्य
और मनुष्यनियोंका भी स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं है ।

अब परस्थान अल्पबहुत्वका आश्रय लेकर प्रकृत विषयका वर्णन करते हैं— चारों
गुणस्थानवर्ती उपशामक सबसे स्तोक हैं । पांचों गुणस्थानवर्ती क्षपक संख्यातगुणे हैं । सयो-
गिकेवली क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं । अप्रमत्तसंयत जीव सयोगिकेवलियोंसे संख्यातगुणे हैं ।
प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । संयतासंयत मनुष्य प्रमत्तसंयतोंसे
संख्यातगुणे हैं । सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्य संयतासंयत मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं । सम्य-
न्मिथ्यादृष्टि मनुष्य सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं । असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्य
सम्यन्मिथ्यादृष्टि मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं । असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्योंके प्रमाणसे मनुष्य
मिथ्यादृष्टि अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपने अवहारकालका
संख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्योंका प्रमाण प्रतिभाग
है । उन्हीं मिथ्यादृष्टि मनुष्योंका द्रव्यप्रमाण अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या
है ? पहले कह आये है । मनुष्य मिथ्यादृष्टि द्रव्यप्रमाणसे जगश्रेणी असंख्यातगुणी है । गुणकार
क्या है ? पहले कह आये हैं । मनुष्य पर्याप्तकोंमें चारों गुणस्थानवर्ती उपशामक सबसे थोड़े
हैं । पांचों गुणस्थानवर्ती क्षपक उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । इसीप्रकार उत्तरोत्तर
असंयतसम्यग्दृष्टि तक अल्पबहुत्व समझना चाहिये । असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्योंके प्रमाणसे

गुणगारो ? संखेज्जा समया । एवं चैव मणुसिणीसु वि परत्थाणं वत्तव्वं ।

सव्वपरत्थाणे पयदं- सव्वत्थोवा अजोगिकेवलिणो । चत्तारि उवसामगा संखेज्ज-
गुणा । चत्तारि खवगा संखेज्जगुणा । सजोगिकेवली संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसंजदा
संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । संजदासंजदा संखेज्जगुणा । सासणसम्मा-
इट्ठिणो संखेज्जगुणा । सम्मामिच्छाइट्ठिणो संखेज्जगुणा । असंजदसम्माइट्ठिणो संखेज्जगुणा ।
मणुसपज्जत्तमिच्छाइट्ठिणो संखेज्जगुणा । मणुसिणीमिच्छाइट्ठिणो संखेज्जगुणा । मणुस-
अपज्जत्तअवहारकालो असंखेज्जगुणो । मणुसअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । उवरि जाव
लोगो चि ताव जाणिऊण वत्तव्वं । मणुसिणीगुणपडिवण्णाणं पमाणमेत्तियमिदि णावहारिदं,
तम्हा सव्वपरत्थाणप्पाबहुए तेसिं परूवणा ण कदा ।

एवं मणुसगई समत्ता ।

**देवगईए देवेषु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असं-
खेज्जा ॥ ५३ ॥**

मिथ्यादृष्टि पर्याप्त मनुष्योंका द्रव्यप्रमाण संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय
गुणकार है । इसीप्रकार मनुष्यनियोंमें भी परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये ।

अब सर्व परस्थानमें अल्पबहुत्वका कथन प्रकृत है- अयोगिकेवली मनुष्य सबसे स्तोक
हैं । चारों गुणस्थानवर्ती उपशामक अयोगियोंसे संख्यातगुणे हैं । चारों गुणस्थानवर्ती क्षपक
उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । सयोगिकेवली क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं । अप्रमत्तसंयत मनुष्य
सयोगियोंसे संख्यातगुणे हैं । प्रमत्तसंयत मनुष्य अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । संयतासंयत
मनुष्य प्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्य संयतासंयतोंसे संख्यातगुणे
हैं । सम्यग्मिथ्यादृष्टि मनुष्य सासादनसम्यग्दृष्टियोंसे संख्यातगुणे हैं । असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्य
सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंसे संख्यातगुणे हैं । मनुष्य पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीव असंयतसम्यग्दृष्टियोंसे
संख्यातगुणे हैं । मनुष्यनी मिथ्यादृष्टि जीव पर्याप्त मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं । मनुष्य अपर्याप्त
अवहारकाल मनुष्यनी मिथ्यादृष्टियोंसे असंख्यातगुणा है । मनुष्य अपर्याप्तोंका द्रव्य उन्हींके
अवहारकालसे असंख्यात गुणा है । इसके ऊपर लोक तक जानकर अल्पबहुत्वका कथन करना
चाहिये । गुणस्थानप्रतिपन्न मनुष्यनियोंका प्रमाण इतना है, यह निश्चित नहीं है, इसलिये सर्व
परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करते समय गुणस्थानप्रतिपन्न उनके प्रमाणकी प्ररूपणा नहीं की ।

इसप्रकार मनुष्यगतिका कथन समाप्त हुआ ।

**देवगतिप्रतिपन्न देवोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ?
असंख्यात हैं ॥ ५३ ॥**

एत्थ देवगइगहणेण सेसगइपडिसेहो कदो हवदि । देवेसु त्ति वयणेण तत्थ द्विददव्वपडिसेहो कदो हवदि । मिच्छाइट्ठि त्ति वयणेण सेसगुणट्ठाणपडिसेहो कदो हवदि । दव्वपमाणेणेत्ति वयणेण खेत्तादिपडिसेहो कदो हवदि । केवडिया इदि वयणेण सुत्तस्स पमाणत्तं सूचिदं हवदि । असंखेज्जा इदि वयणेण संखेज्जाणंताणं पडिणियत्ती कदो हवदि ।

किमसंखेज्जं णाम ? जो रासी एगेगरूवे अवणिज्जमाणे णिट्ठादि सो असंखेज्जो । जो पुण ण समप्पइ सो रासी अणंतो । जदि एवं तो वयसहिदसक्खयअट्ठपोग्गलपरियट्ठकालो वि असंखेज्जो जायदे ? होदु णाम । कथं पुणो तस्स अट्ठपोग्गलपरियट्ठस्स अणंतववएसो ? इदि चे ण, तस्स उवयारणिबंधणत्तादो । तं जहा— अणंतस्स केवलणाणस्स विसयत्तादो अट्ठपोग्गलपरियट्ठकालो वि अणंतो होदि । केवलणाणविसयत्तं पडि विसेसाभावा सव्वसंखाणाणमणंतत्तणं जायदे ? चे ण, ओहिणाणविसयवदिरित्तसंखाणे अणणविसयत्तणेण तदुवयारपवुत्तीदो । अहवा जं संखाणं पंचिदियविसओ तं संखेज्जं

सूत्रमें देवगति पदके ग्रहण करनेसे शेष गतियोंका प्रतिषेध हो जाता है । 'देवोंमें' ऐसा वचन देनेसे देवलोकमें स्थित अन्य द्रव्योंका प्रतिषेध हो जाता है । 'मिथ्याइष्टि' इस वचनसे अन्य गुणस्थानोंका प्रतिषेध हो जाता है । 'द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा' इस वचनसे क्षेत्र आदि प्रमाणोंका प्रतिषेध हो जाता है । 'कितने हैं' इस वचनसे सूत्रकी प्रमाणता सूचित हो जाती है । 'असंख्यात हैं' इस वचनसे संख्यात और अनन्त संख्याकी निवृत्ति हो जाती है ।

शंका— असंख्यात किसे कहते हैं, अर्थात् अनन्तसे असंख्यातमें क्या भेद है ?

समाधान— एक एक संख्याके घटाते जाने पर जो राशि समाप्त हो जाती है वह असंख्यात है और जो राशि समाप्त नहीं होती है वह अनन्त है ।

शंका— यदि ऐसा है तो व्ययसहित होनेसे नाशको प्राप्त होनेवाला अर्धपुद्गल परिवर्तन काल भी असंख्यातरूप हो जायगा ?

समाधान— हो जाओ ।

शंका— तो फिर उस अर्धपुद्गल परिवर्तनरूप कालको अनन्त संज्ञा कैसे दी गई है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, अर्धपुद्गल परिवर्तनरूप कालको जो अनन्त संज्ञा दी गई है वह उपचारनिमित्तक है । आगे उसीका स्पष्टीकरण करते हैं— अनन्तरूप केवलज्ञानका विषय होनेसे अर्धपुद्गल परिवर्तनकाल भी अनन्त है, ऐसा कहा जाता है ।

शंका— केवलज्ञानके विषयत्वके प्रति कोई विशेषता न होनेसे सभी संख्याओंको अनन्तत्व प्राप्त हो जायगा ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, जो संख्याएं अवधिज्ञानका विषय हो सकती हैं उनसे अतिरिक्त ऊपरकी संख्याएं केवलज्ञानको छोड़कर दूसरे और किसी भी ज्ञानका विषय नहीं हो सकती हैं, अतएव ऐसी संख्याओंमें अनन्तत्वके उपचारकी प्रवृत्ति हो जाती है । अथवा, जो संख्या पांचों इन्द्रियोंका विषय है वह संख्यात है । उसके ऊपर जो संख्या अवधिज्ञानका विषय

णाम । तदो उवरि जमोहिणाणविसओ तमसंखेज्जं णाम । तदो उवरि जं केवलणाणस्सेव विसओ तमणंतं णाम । संपहि सुहुमदरपरूवणडुमुत्तरसुत्तमाह—

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति
कालेण ॥ ५४ ॥

णादत्थमिदं सुत्तं ।

खेत्तेण पदरस्स वेळ्ळप्पणंगुलसयवग्गपडिभागेण ॥ ५५ ॥

देवमिच्छाड्डि ति अणुवडुदे । अंगुलमिदि वुत्ते एत्थ सूचिअंगुलं धेत्तव्वं । सद-

है वह असंख्यात है । उसके ऊपर जो केवलज्ञानके विषयभावको ही प्राप्त होती है वह अनन्त है ।

अब अतिसूक्ष्म प्ररूपणाके प्ररूपण करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

कालकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि देव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्स-
र्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ५४ ॥

इस सूत्रका अर्थ पहले बतलाया जा चुका है ।

क्षेत्रकी अपेक्षा जगप्रतरके दोसौ छप्पन अंगुलोंके वर्गरूप प्रतिभागसे देव मिथ्या-
दृष्टि राशि आती है, अर्थात् दोसौ छप्पन सूच्यंगुलके वर्गरूप भागहारका जगप्रतरमें
भाग देने पर देव मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ॥ ५५ ॥

विशेषार्थ—यद्यपि दोसौ छप्पन सूच्यंगुलोंके वर्गका भाग जगप्रतरमें देनेसे ज्योतिषी
देवोंकी संख्या आती है, फिर भी व्यन्तर आदि शेष देवोंका प्रमाण ज्योतिषी देवोंके संख्यातवें
भागमात्र है, इसलिये यहाँ पर द्रव्यार्थिक नयकी अपेक्षा संपूर्ण देवराशिका प्रमाण पूर्वोक्त
कहा है । विशेषरूपसे विचार करने पर तो दोसौ छप्पन सूच्यंगुलोंके वर्गका जगप्रतरमें भाग
देने पर जो लब्ध आवे उससे कुछ अधिक संपूर्ण देवोंका प्रमाण है, ऐसा समझना चाहिये ।
साथ ही यह भी ध्यानमें रखना चाहिये कि यहाँ जीवट्टाणमें चौदह मार्गणाओंमें मिथ्यादृष्टि
आदि गुणस्थानोंकी अपेक्षा पृथक् पृथक् संख्या बतलाई है । इसलिये उस उस मार्गणामें
सामान्य संख्याके प्रमाणसे मिथ्यादृष्टिके प्रमाणको कुछ कम कहना चाहिये था । परंतु वैसा
न कह कर सामान्य संख्याका प्रमाण ही यहाँ प्रायः कर मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण कहा है
सो यह कथन भी द्रव्यार्थिक नयकी अपेक्षासे ही सर्वत्र समझना चाहिये । विशेषरूपसे
विचार करने पर तो सामान्य संख्याके प्रमाणमेंसे गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके प्रमाणको घटा
देने पर ही मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण होगा ।

यहाँ पर देव मिथ्यादृष्टि पदकी अनुवृत्ति हुई है । सूत्रमें ' अंगुल ' ऐसा सामान्य पद

१ देवगतौ देवा मिथ्यादृष्टयोऽसंख्येयाः श्रेणयः प्रतरासंख्येयभागप्रसिताः । स. सि. १, ८.

सदो वेण्हं विसेसणं हवदि, ण छप्पणस्स । वेहि विसेसिदछप्पणसदस्स गहणं पसज्जदि त्ति ण च एवं, अण्डुत्तादो । पडिभागो भागहारो । तदो वेसयछप्पणंगुलवग्गेण जगपदरे खंडिदे तत्थ एगखंडेण तुल्ला देवमिच्छाइड्डी होंति त्ति जं बुत्तं होदि । पण्णट्टिसहस्स-पंचसय-छत्तीसपदरंगुलाणि भागहारं कट्ठु जगपदरस्सुवरि खंडिदादओ पंचिदियतिरिक्ख-जोणिणीमिच्छाइड्डीणं वत्तव्वा ।

सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठीणं ओघं
॥ ५६ ॥

एदेसिं देवगुणपडिवण्णाणं परूवणा सामण्णेण ओघगुणपडिवण्णद्व्यपमाण-परूवणमणुहरदि त्ति ओघेणेत्ति भणिदं । पज्जवट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे अत्थि विसेसो, अण्णहा सेसगइगुणपडिवण्णाणमभावप्पसंगा । तं विसेसं वत्तइस्सामो । तं जहा—आवलियाए असंखेज्जदिभाएण ओघअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालं खंडेऊण लद्धं तम्मिह चेव पक्खित्ते देवअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तमावलियाए असं-

कहने पर यहां उससे सूच्यंगुलका ग्रहण करना चाहिये । शत शब्द दोगा विशेषण है, छप्पनका नहीं । यदि कोई कहे कि दो विशिष्ट छप्पनसौका ग्रहण हो जाना चाहिये सो बात नहीं है, क्योंकि, ऐसा मानना इष्ट नहीं है । प्रतिभागका अर्थ भागहार है, अतः यह अभिप्राय हुआ कि दोसौ छप्पन सूच्यंगुलोंके वर्गसे जगप्रतरके खंडित करने पर उनमेंसे एक खंडके बराबर देव मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं । पैंसठ हजार पांचसौ छत्तीस प्रतरांगुलोंको भागहार करके जगप्रतरके ऊपर खंडित आदिको पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंके खंडित आदिकके समान कहना चाहिये ।

सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यमिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि सामान्य देवोंका द्रव्यप्रमाण ओघ प्ररूपणाके समान पर्योपमके असंख्यातवें भाग है ॥ ५६ ॥

इन गुणस्थानप्रतिपन्न देवोंकी संख्या-प्ररूपणा सामान्यरूपसे गुणस्थानप्रतिपन्न सामान्य जीवोंकी संख्या-प्ररूपणाका अनुकरण करती है, अतएव 'ओघसे' ऐसा कहा है । पर्या-यार्थिक नयका अवलम्बन करने पर तो विशेषता है ही, अन्यथा शेष गतिसंबन्धी गुणस्थान-प्रतिपन्न जीवोंके अभावका प्रसंग आ जाता है । आगे उसी विशेषताको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है—

आवलीके असंख्यातवें भागसे सामान्य असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालको खंडित करके जो लब्ध आवे उसे उसी सामान्य असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालमें मिला देने पर देव असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । उस देव असंयतसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकालको

२ सासादनसम्यग्दृष्टि-सम्यमिथ्यादृष्ट्यसंयतसम्यग्दृष्टयः पर्योपमासंख्येयभागप्रमिताः स. सि. १, ८.

खेज्जदिभाएण गुणिदे देवसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तं संखेज्जरूवेहि गुणिदे देवसासणसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । एदेहि अवहारकालेहि पल्लिदोवमस्सुवरि खंडि-
दादओ पुव्वं व वत्तव्वा ।

भवनवासियदेवेसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असं-
खेज्जा' ॥ ५७ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो सुगमो ।

असंखेज्जासंखेज्जाहि' ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति
कालेण ॥ ५८ ॥

एदस्स वि अत्थो सुगमो चैव ।

खेत्तेण असंखेज्जाओ सेठीओ पदरस्स असंखेज्जदिभागो । तेसिं
सेठीणं विक्खंभसूई अंगुलं अंगुलवग्गमूलगुणिदेण' ॥ ५९ ॥

एदस्स अइसुहुमट्ठसुत्तस्स विवरणं बुच्चदे । असंखेज्जासंखेज्जमणेयवियप्पं । तत्थ

आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर देव सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । उस देव सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर देव सासा-
दनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इन अवहारकालोंके द्वारा पल्लोपमके ऊपर खंडित
आदिकका कथन पहलेके समान कहना चाहिये ।

भवनवासी देवोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असं-
ख्यात हैं ॥ ५७ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है ।

कालकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि भवनवासी देव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों
और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ५८ ॥

इस सूत्रका भी अर्थ सुगम ही है ।

क्षेत्रकी अपेक्षा भवनवासी मिथ्यादृष्टि देव असंख्यात जगश्रेणीप्रमाण हैं जो
असंख्यात जगश्रेणियां जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं । उन असंख्यात जग-
श्रेणियोंकी विष्कंभसूची, सूच्यंगुलको सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलसे गुणित करके जो लब्ध
आवे, उतनी है ॥ ५९ ॥

अत्यन्त सूक्ष्म अर्थका प्रतिपादन करनेवाले इस सूत्रका विवरण लिखा जाता है—

१ असंखेज्जा असुरकुमारा जाव असंखेज्जा यणियकुमारा । अतु. का. सू. १४१, पृ. १७९.

२ प्रतिष्ठु ' संखेज्जासंखेज्जाहि' इति पाठः ।

३ षण्णअंगुलपदमपदं × × सेटिसंयुणं × × । भवणे × × देवाणं होदि परिमाणं । गो. जी. १६१.

असंखेज्जाओ सेढीओ इदि वुत्तं जगपदरमाई काऊण उवारिम-असंखेज्जासंखेज्जवियप्प-पडिसेहट्टं । पदरस्स असंखेज्जदिभागो वि अणेयवियप्पो इदि कडु तं णिण्णयट्टं सेढीणं विक्खंभसूई उत्ता । तिस्से पमाणं वुच्चदे । अंगुलं अंगुलवग्गमूलगुणिदं भवणवासिय-मिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई हवदि त्ति संबंधेयव्वं । घणंगुलपढमवग्गमूलमिदि जं वुत्तं होदि । अंगुलवग्गमूलगुणिदेणेत्ति तइयाणिहेसो कधं वडदे ? पढमाविहत्तीए अट्टे एसो तइया-णिहेसो दडुवो । अण्णत्थ ण एवं दिस्सदीदि चे ण, ' वेळ्ळप्पणंगुलसदवग्गपडिभागेण ' इच्चादिसु सुत्तेसुवलंभा । अहवा णिमित्ते एसा तइयाविहत्ती दडुव्वा । अंगुलवग्गमूल-गुणकारणेण जमुप्पणंगुलं सा विक्खंभसूई होदि त्ति जं वुत्तं होदि । एदाए विक्खंभ-सूईए जगसेट्ठिं गुणिदे भवणवासियमिच्छाइट्ठिपमाणं होदि ।

सासणसम्माइट्ठि-सम्भामिच्छाइट्ठि--असंजदसम्माइट्ठिपरुवणा ओंधं ॥ ६० ॥

असंख्यातासंख्यात अनेक प्रकारका है, इसलिये जगप्रतरको आवि करके उपरिम असंख्याता-संख्यातके विकल्पोंका प्रतिषेध करनेके लिये भवनवासी मिथ्यादृष्टि देवोंका प्रमाण असंख्यात जगश्रेणिप्रमाण कहा है । वह जगप्रतरका असंख्यातवां भाग भी अनेक प्रकारका है ऐसा समझकर उसका निर्णय करनेके लिये उन असंख्यात जगश्रेणियोंकी विष्कंभसूची कही । आगे उस विष्कंभसूचीका प्रमाण कहते हैं— सूच्यंगुलको सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलसे गुणित करके जो लब्ध आवे इतनी भवनवासी मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची है, ऐसा इस कथनका संबन्ध करना चाहिये । जो विष्कंभसूची घनांगुलके प्रथम वर्गमूलप्रमाण है, यह इस कथनका अभिप्राय है ।

शंका—' अंगुलवग्गमूलगुणिदेण ' इसप्रकार यहां तृतीया विभक्तिका निर्देश कैसे बन सकता है ?

समाधान—प्रथमा विभक्तिके अर्थमें यह तृतीया विभक्तिका निर्देश जानना चाहिये ।

शंका—दूसरी जगह ऐसा नहीं देखा जाता है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, ' वेळ्ळप्पणंगुलसदवग्गपडिभागेण ' इत्यादिक सूत्रोंमें प्रथमा विभक्तिके अर्थमें तृतीया विभक्ति देखी जाती है । अथवा निमित्तरूप अर्थमें यह तृतीया विभक्ति जानना चाहिये । जिससे यह अभिप्राय हुआ कि अंगुलके वर्गमूलके गुणनकारणसे जो अंगुल उत्पन्न हो तत्प्रमाण भवनवासी मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची है । इस विष्कंभसूचीसे जगश्रेणिके गुणित करने पर भवनवासी मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण होता है ।

सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि भवनवासी जीवोंकी प्ररूपणा सामान्य प्ररूपणाके समान है ॥ ६० ॥

द्ववट्टियणए अवलंबिज्जमाणे ओघेण सह एगत्तदंसणादो । पञ्जवट्टियणए अव-
लंबिज्जमाणे अत्थि विसेसो तं पुरदो भणिस्सामो ।

वाणवेंतरदेवेसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा^१
॥ ६१ ॥

एदस्स थूलत्थस्स सुत्तस्स अत्थो सुगमो ।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति
कालेण ॥ ६२ ॥

एदस्स वि सुहुमत्थसुत्तस्स अत्थो णव्वदे ।

खेत्तेण पदरस्स संखेज्जजोयणसदवग्गपडिभाएण^२ ॥ ६३ ॥

एदस्स अहसुहुमद्वपरूवणद्वमागदसुत्तस्स अत्थो बुच्चदे । पदरस्सेदि विहज्जमाण-
रासिणिदेसो । संखेज्जजोयणसदवग्गपडिभाएणेत्ति लद्धणिदेसो । पदरस्स संखेज्जजोयण-

द्रव्यार्थिक नयका अवलम्ब करने पर ओघ प्ररूपणाके साथ गुणस्थानप्रतिपन्न भवन-
वासी प्ररूपणाकी एकता अर्थात् समानता देखी जाती है । परंतु पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन
करने पर तो उक्त दोनों प्ररूपणाओंमें विशेषता है ही । उस विशेषताको आगे बतलावेंगे ।

वानव्यन्तर देवोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात
हैं ॥ ६१ ॥

स्थूल अर्थका प्रतिपादन करनेवाले इस सूत्रका अर्थ सुगम है ।

कालकी अपेक्षा वानव्यन्तर देव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और
उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ६२ ॥

सूक्ष्म अर्थका प्रतिपादन करनेवाले इस सूत्रका भी अर्थ ज्ञात है ।

क्षेत्रकी अपेक्षा जगत्तरके संख्यातसौ योजनोंके वर्गरूप प्रतिभागसे वानव्यन्तर
मिथ्यादृष्टि राशि आती है, अर्थात् संख्यातसौ योजनोंके वर्गरूप भागहारका जगत्तरमें
भाग देने पर जो लब्ध आवे उतने वानव्यन्तर मिथ्यादृष्टि देव हैं ॥ ६३ ॥

अति सूक्ष्म अर्थका प्रतिपादन करनेके लिये आये हुए इस सूत्रका अर्थ कहते हैं—
सूत्रमें ' पदरस्स ' इस पदसे अपह्रियमाण राशिका निर्देश किया है । ' संखेज्जजोयणसदवग्ग-
पडिभाएण ' इस पदसे भागहार राशिके प्रतिपादनपूर्वक लब्ध राशिका निर्देश किया है ।

१ असंखिज्जा वाणमंतरा । अनु. द्वा. सू. १४१ पत्र १७९.

२ तिप्पिणसयजोयणाणं × × । कदिहिदपदरं वेंतरपरिमाणं ॥ गो. जी. १६०. संखेज्जजोयणाणं सूएएसेहिं
माइओ पयरो । वंतरसुरेहिं हीरइ एवं एकेकभेए णं ॥ पञ्चसं. २, १४.

सयवग्गपडिभागो वाणवेंतरमिच्छाइड्ढिद्ववपमाणं होदि । पडिभागो इदि किं वुत्तं हवदि ? संखेज्जजोयणसयवग्गमेत्तजगपदरस्स भागेषु एगभागो पडिभागो णाम । पडिभागसदो भागहारम्मि वट्टमाणो कज्जे कारणोवयारेण लद्धम्मि वट्टदि त्ति घेत्तव्वं । एत्थ पढमाए विहत्तीए अट्टे तदिया दट्टुच्चा । अहवा एस णिहेसो पढमाविहत्ती चेव जहा हवदि तहा साहेयव्वो । संखेज्जजोयणेत्ति वुत्ते तिण्णिजोयणसयमंगुलं काऊण वग्गिदे जो उप्पज्जदि रासी सो घेत्तव्वो । तस्स पमाणं पंच कोडाकोडिसयाणि तीसकोडा-कोडीओ चउरासीदिकोडिसयसहस्साणि सोलसकोडिसहस्साणि च भवदि । जदि जोणिणीणमवहारकालो तप्पाओग्गसंखेज्जरूवगुणिदल्लज्जजोयणसयमंगुलवग्गमेत्तो हवदि तो वाणवेंतरमिच्छाइड्ढीणं पि अवहारकालो एत्तियपदरंगुलमेत्तो हवदि । अध जदि पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइड्ढीणमवहारकालो लज्जजोयणसयमंगुलवग्गमेत्तो चेव तो वाणवेंतरमिच्छाइड्ढीअवहारकालेण तिण्णिजोयणसयमंगुलवग्गस्स संखेज्जदिभाएण होदव्वं, अण्णहा अप्पावहुगसुत्तेण सह विरोहादो । एदेण अवहारकालेण जगपदरे भागे हिदे

इसका यह तात्पर्य हुआ कि जगप्रतरमें संख्यातसौ योजनोंके वर्गका भाग देने पर जो प्रतिभाग आवे उतना वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टि देवोंका प्रमाण है ।

शंका — प्रतिभाग इस पदसे यहां क्या कहा गया है ?

समाधान — संख्यातसौ योजनोंके वर्गका जितना प्रमाण हो उतने जगप्रतरके भाग करने पर उनमेंसे एक भागरूप प्रतिभाग है । अर्थात् प्रतिभाग शब्दसे यहां लब्धरूप अर्थ लिया गया है । यद्यपि प्रतिभाग शब्द भागहाररूप अर्थमें रहता है तो भी कार्यमें कारणके उपचारसे यहां लब्धमें उसका ग्रहण करना चाहिये ।

यहां प्रथमा विभक्तिके अर्थमें तृतीया विभक्ति जानना चाहिये । अथवा, 'पडिभाएण' यह निर्देश प्रथमा विभक्तिरूप जिसप्रकार होवे उसप्रकार सिद्ध कर लेना चाहिये । सूत्रमें 'संख्यात योजन' ऐसा कहने पर तीनसौ योजनोंके अंगुल करके वर्गित करने पर जो राशि उत्पन्न हो वह राशि लेना चाहिये । उन अंगुलोंका प्रमाण पांचसौ कोड़ाकोड़ी, तीस कोड़ाकोड़ी, चौरासी लाख कोड़ी और सोलह हजार कोड़ी ५३०८४१६०००००००००० है । यदि तिर्यंच योनिमतियोंका अवहारकाल तद्योग्य संख्यात गुणित छहसौ योजनोंके अंगुलोंका वर्गमात्र हो तो वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टियोंका भी अवहारकाल इतने अर्थात् तीनसौ योजनोंके अंगुलोंके वर्गरूप प्रतरांगुलप्रमाण हो सकता है । और यदि पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल छहसौ योजनोंके अंगुलोंके वर्गमात्र ही है तो वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल तीनसौ योजनोंके किये गये अंगुलोंके वर्गके संख्यातवें भाग होना चाहिये, अन्यथा अल्पबहुत्वके सूत्रके साथ इस कथनका विरोध आता है ।

१ प्रतिपु 'अवहारकालो' इति पाठः ।

वाणवंतरमिच्छाइट्टिपमाणमागच्छदि ।

सासणसम्माइट्टि-सम्मामिच्छाइट्टि-असंजदसम्माइट्टि ओघं

॥ ६४ ॥

दच्चट्टियणए अवलंबिज्जमाणे केण वि अंसेण विसेसाभावादो ओघत्तमिदि बुद्धे । पज्जवट्टियणए अवलंबिज्जमाणे अत्थि विसेसो । तं विसेसं पुरदो भणिस्सामो ।

उक्त अवहारकालसे जगप्रतरके भाजित करने पर वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण आता है ।

विशेषार्थ—वाणव्यन्तर देवोंका अवहारकाल तीनसौ योजनोंके अंगुलोंका वर्ग है और पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिमतियोंका अवहारकाल छहसौ योजनोंके अंगुलोंका वर्ग है । तीनसौ योजनोंके प्रतरांगुल ५३०८४१६००००००००० होते हैं और छहसौ योजनोंके प्रतरांगुल २१२३३६४००००००००० होते हैं । किसी विवक्षित राशिके वर्गसे उस राशिसे दूनी राशिका वर्ग चौगुना होता है । जैसे ४ के वर्ग १६ से, ४के दूने ८ का वर्ग ६४ चौगुना है । तथा किसी एक भ्रज्यमें ८ के वर्ग ६४ का भाग देनेसे जो लब्ध आयगा, ४ के वर्ग १६ का भाग देनेसे पूर्वोक्त लब्धसे चौगुना ही लब्ध आयगा । इसीप्रकार यहां तीनसौ योजनोंके प्रतरांगुलोंसे छहसौ योजनोंके प्रतरांगुल चौगुने होते हैं, अतएव छहसौ योजनोंके प्रतरांगुलोंका जगप्रतरमें भाग देनेसे तिर्यच योनिमतियोंका जितना प्रमाण लब्ध आयगा, उससे, तीनसौ योजनोंके प्रतरांगुलोंका उसी जगप्रतरमें भाग देने पर वाणव्यन्तर देवोंका प्रमाण, चौगुना ही लब्ध आता है । पर अल्पबहुत्व अनुयोगद्वारमें तिर्यच योनिमतियोंसे वाणव्यन्तर देव संख्यातगुणे कहे हैं और उन्हींकी देवीयां देवोंसे संख्यातगुणी कही हैं । देवगतिमें निकृष्ट देवके भी बर्त्तित देवियां होती हैं । इसप्रकार आगमानुसार तिर्यच योनिमतियोंके प्रमाणसे वाणव्यन्तर देवोंका प्रमाण १ + ३२ = ३३ गुणेसे अधिक ही होना चाहिये पर पूर्वोक्त भागहारके अनुसार चौगुना ही आता है । इससे प्रतीत होता है कि उक्त दोनों भागहारोंमेंसे कोई एक भागहार असत्य है । यदि वाणव्यन्तरोंका भागहार सत्य है ऐसा मान लिया जाता है तो योनिमतियोंका भागहार छहसौ योजनोंके प्रतरांगुलोंसे संख्यातगुणा होना चाहिये और यदि तिर्यच योनिमतियोंका भागहार सत्य मान लिया जाय तो वाणव्यन्तरोंका भागहार तीनसौ योजनोंके प्रतरांगुलोंका संख्यातवां भाग होना चाहिये ।

सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि वाणव्यन्तर देव सामान्य प्ररूपणाके समान पत्योपमके असंख्यातवें भाग हैं ॥ ६४ ॥

द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन करने पर किसी भी प्रकारसे गुणस्थानप्रतिपन्न सामान्य प्ररूपणा और गुणप्रतिपन्न वाणव्यन्तरोंकी प्ररूपणामें विशेषता न होनेसे गुणस्थानप्रतिपन्न वाणव्यन्तरोंकी प्ररूपणा गुणस्थानप्रतिपन्न सामान्य प्ररूपणाके समान कही । पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करने पर तो विशेषता है ही । उस विशेषताका कथन आगे करेंगे ।

किमद्वं सव्वत्थ द्व्वद्विय-पज्जवद्वियणयद्वयमवलंबिय परूवणा कीरदे ? ण एस दोसो, संगह-वित्थररुचिसत्ताणुग्गहवावदत्तादो । अण्णहा असमाणदापसंगादो ।

जोइसियदेवा देवगईणं भंगो ॥ ६५ ॥

देवगईणमिदि बहुवयणणिदेसो ण घडदे, एक्काए देवगईए बहुत्ताभावादो इदि ? ण एस दोसो, संगहिदाणेयत्ते एयत्ते बहुत्ताविरोहादो । जोइसियदेवा इदि गुणा-विसिद्धदेवग्गहणादो जोइसियदेवेषु चदुण्हं गुणट्टाणाणं पमाणपरूवणा ओघपरूवणाए तुल्ला । एसो द्व्वद्वियणयमवलंबिय णिदेसो कओ । पज्जवद्वियणए अवलंबिज्जमाणे अत्थि विसेसो । तं जहा— तत्थ ताव मिच्छाइट्ठीसु विसेसो वुच्चदे । वाणवेंतरादिसेससव्वे देवा जोइसियदेवाणं संखेज्जदिभागमेत्ता हवंति । तेहि सामण्णदेवरासिमोवद्विदे संखेज्ज-

शंका—सर्वत्र द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिक इन दो नयोंका अवलम्बन करके प्रमाण-प्ररूपणा क्यों की जा रही है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, संग्रहरुचि और विस्तररुचि शिष्योंके अनुग्रहके लिये इन दोनों नयोंका व्यापार हुआ है। यदि ऐसा नहीं माना जाय तो असमानताका प्रसंग आ जाता है।

देवगतिप्रतिपन्न सामान्य देवोंकी संख्या जितनी कही है ज्योतिषी देव उतने हैं ॥ ६५ ॥

शंका—सूत्रमें आये हुए 'देवगईणं' यह बहुवचन निर्देश घटित नहीं होता है, क्योंकि, देवगति एक है, अतः उसे बहुत्व प्राप्त नहीं हो सकता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, जिसमें बहुत्व संगृहीत है ऐसे एकत्वमें बहुत्वके रहनेमें विरोध नहीं आता है।

'जोइसियदेवा' इसप्रकार मिथ्यादृष्टि आदि गुणोंकी विशेषतासे रहित सामान्य ज्योतिषी देवोंका ग्रहण करनेसे ज्योतिषी देवोंमें चारों गुणस्थानोंकी संख्या-प्ररूपणा सामान्य देवगतिसंबन्धी संख्या-प्ररूपणाके समान है, ऐसा सिद्ध होता है। यह कथन द्रव्यार्थिक नयका आश्रय लेकर किया है। परंतु पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करने पर विशेषता है ही। वह इसप्रकार है। उसमें भी पहले मिथ्यादृष्टियोंमें विशेषताको बतलाते हैं—वाणव्यन्तर आदि शेष संपूर्ण देव ज्योतिषी देवोंके संख्यातर्षे भाग हैं। उनसे सामान्य देवराशिके अपवर्तित करने पर

१ असंखिज्जा जोइसिया । अनु. द्वा. १४१ सू. १७९ पत्र. XX नेसदळ्ळपणअंगुलाणं च । कदिहिद-पदं XX जोइसियाणं च परिमाणं ॥ गो. जी. १६०. छप्पन्नदोसयंगुलसुइपपुसिं भाइओ पयरो । जोइसिपुहिं हीरइ सङ्गाणे र्थिय संखगुणा । पञ्चसं. २, १५.

२ प्रतिपु 'संगहिदो गेयत्ते' इति पाठः ।

३ प्रतिपु 'परूवणादिबोध' इति पाठः ।

रूवाणि आगच्छंति । ताणि विरलिय दव्वमिच्छाइड्डिरासिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि वाणवेंतरप्पमुहमिच्छाइड्डिरासी पवेदि । तमुवरिमरूवधरिदसामण्णदेवमिच्छाइड्डिरासिंमिह अवणिदे जोइसियदेवमिच्छाइड्डिरासी होदि । एवं समकरणं करिय रूवूणहेड्डिम-विरलणाए देवअवहारकाले भागे हिदे पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागो आगच्छदि । तं देव-अवहारकालमिह पक्खिचे जोइसियदेवमिच्छाइड्डिअवहारकालो होदि । सेसं देवमिच्छा-इड्डिभंगो । सासणादिगुणह्राणगदविसेसं पुरदो वत्तइस्सामो ।

सोहम्मीसाणकप्पवासियदेवेसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केव-
डिया, असंखेज्जा ॥ ६६ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो अवगदो त्ति पुणो ण तुच्चदे ।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति
कालेण ॥ ६७ ॥

एदस्स सुत्तस्सत्थो सुगमो चेय । सव्वत्थ सुहुम-सुहुमदर-सुहुमतमभेएण तिविहा परूवणा किमट्ठं परूविज्जदे ? ण एस दोसो, तिव्व-मंद-मज्झिमसत्ताणुग्गहट्ठत्तादो । अण्णहा

संख्यात लब्ध आते हैं । उनका (संख्यातका) विरलन करके सामान्य देव मिथ्यादृष्टि राशिको समान खंड करके दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति वाणव्यन्तर आदि मिथ्यादृष्टि देवराशि प्राप्त होती है । उसे उपरिम एकके प्रति प्राप्त सामान्य देव मिथ्यादृष्टि राशिमेंसे घटा देने पर ज्योतिषी मिथ्यादृष्टिराशि आती है । इसप्रकार समीकरण करके एक कम अधस्तन विरलनसे देव अवहारकालके भाजित करने पर प्रतरांगुलका संख्यातवां भाग लब्ध आता है । उसे देव अवहारकालमें मिला देने पर ज्योतिषी देव मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है । शेष कथन देव मिथ्यादृष्टि प्ररूपणाके समान है । सासादन आदि गुणस्थानगत विशेषताको आगे बतलावेंगे ।

सौधर्म और ऐशान कल्पवासी देवोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं ॥ ६६ ॥

इस सूत्रका अर्थ अधगत है, इसलिये फिरसे नहीं कहते हैं ।

कालकी अपेक्षा सौधर्म और ऐशान कल्पवासी मिथ्यादृष्टि देव असंख्याता-संख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ६७ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम ही है ।

शंका—सब जगह सूक्ष्म, सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतमके भेदसे तीन प्रकारकी प्ररूपणा किसलिये कही जा रही है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, तीव्र बुद्धिवाले, मंद बुद्धिवाले और मध्यम बुद्धिवाले जीवोंके अनुग्रहके लिये तीन प्रकारकी प्ररूपणा कही है । यदि ऐसा न माना जाय तो

जिणाणं सव्वसत्तसमाणत्तविरोहो । ण पुणरुत्तदोसो वि जिणवयणे संभवइ, मंदबुद्धि-
सत्ताणुग्गहड्डदा एदस्स साफल्लादो ।

खेत्तेण असंखेज्जाओ सेठीओ पदरस्स असंखेज्जदिभागो ।
तासिं सेठीणं विक्खंभसूई अंगुलविदियवग्गमूलं तदियवग्गमूल-
गुणिदेण ॥ ६८ ॥

पदरस्स असंखेज्जदिभागो इदि णिदेसो जगपदरादिउवरिमवियप्पणियत्तावणट्ठो ।
असंखेज्जाओ सेठीओ इदि णिदेसो जगसेठीदो हेट्ठिमअसंखेज्जासंखेज्जवियप्पणियत्ता-
वणट्ठो । तासिं सेठीणं पमाणपरिच्छेदं काउं अंगुलविदियवग्गमूलं तदियवग्गमूलगुणिदेण
इदि विक्खंभसूई वुत्ता । गुणिदेणेत्ति पठमाणिदेसो दड्डव्वो । सूचिअंगुलविदियवग्गमूलं
तदियवग्गमूलेण गुणिदं सोहम्मीसाणमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई होइ । अहवा सूचिअंगुल-
तदियवग्गमूलेण पठमवग्गमूले भागे हिदे सोहम्मीसाणदेवमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई होदि ।
एदिस्से विक्खंभसूईए खंडिदादओ जहा णेरइयविक्खंभसूईए तहा वत्तव्वा ।

जिनदेव सर्व जीवोंमें समान परिणामी होते हैं इस कथनमें विरोध आ जायगा । जिनवचनमें
पुनरुक्त दोष भी संभव नहीं है, क्योंकि, जिनवचन मंदबुद्धि शिष्योंका भी अनुग्रह करनेवाला
होनेसे पुनः पुनः कथन करनेकी सफलता है ।

क्षेत्रकी अपेक्षा सौधर्म और ऐशान कल्पवासी मिथ्यादृष्टि देव असंख्यात
जगश्रेणीप्रमाण हैं जो असंख्यात जगश्रेणियोंका प्रमाण जगप्रतरके असंख्यातवें भाग
है । उन असंख्यात जगश्रेणियोंकी विष्कंभसूची, सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलको तृतीय
वर्गमूलसे गुणा करने पर जितना लब्ध आवे, उतनी है ॥ ६८ ॥

सूत्रमें 'जगप्रतरका असंख्यातवां भाग' यह निर्देश जगप्रतर आदि उपरिम विकल्पोंके
निराकरण करनेके लिये दिया है । 'असंख्यात जगश्रेणियां' इसप्रकारका निर्देश जगश्रेणीसे
नीचेके असंख्यातासंख्यात विकल्पोंकी निवृत्तिके लिये दिया है । उन श्रेणियोंके प्रमाणका
ज्ञान करानेके लिये सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलको उसीके तृतीय वर्गमूलसे गुणा करने पर जो
लब्ध आवे उतनी उन श्रेणियोंकी विष्कंभसूची कही । 'गुणिदेण' यह पद प्रथमा विभक्तिरूप
जानना चाहिये, जिससे यह तात्पर्य हुआ कि सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलको तृतीय वर्गमूलसे
गुणित करने पर जो लब्ध आवे उतनी सौधर्म और ऐशान कल्पवासी मिथ्यादृष्टि देवोंकी
विष्कंभसूची होती है । अथवा, सूच्यंगुलके तृतीय वर्गमूलसे प्रथम वर्गमूलके भाजित करने
पर सौधर्म और ऐशान कल्पवासी देवोंकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची होती है । ऊपर जिसप्रकार
नारक मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीके खंडित आदिकका कथन कर आये हैं उसीप्रकार इस विष्कंभ-
सूचीके खंडित आदिकका कथन करना चाहिये ।

संपहि खुदाबंधेण सामण्णेण जीवपमाणपरुवएण जाओ विक्खंभसूईओ णेरइय-सोहम्मसाण-भवनवासियदेवाणं वुत्ताओ ताओ चेव विक्खंभसूईओ एत्थ वि जीवद्वाने मिच्छाइड्डिपरुवणाए अण्णुणाहियाओ वुत्ताओ । तं जहा-अंगुलस्स वग्गमूलं विदियवग्गमूलगुणिदेण इदि एसा खुदाबंधे णेरइयविक्खंभसूई उत्ता । तासिं सेठीणं विक्खंभसूई अंगुलं अंगुलवग्गमूलगुणिदेण इदि एसा भवनवासियविक्खंभसूई खुदाबंधे उत्ता । तासिं सेठीणं विक्खंभसूई अंगुलविदियवग्गमूलं तदियवग्गमूलगुणिदेण इदि एसा सोहम्मसाणदेवविक्खंभसूई खुदाबंधे वुत्ता । एत्थ वि णेरइय-भवनवासिय-सोहम्मसाणमिच्छाइड्डिणं विक्खंभसूईओ एदाओ चेव वुत्ताओ । एदं च ण घडदे, सामण्णविसेसपरुवणाणमेगत्तविरोहादो । तम्हा एत्थ वुत्तविक्खंभसूईहि ऊणियाहि खुदाबंधवुत्तविक्खंभसूईहि वा अधियाहि होदव्वमिदि चोदगो भणदि । एत्थ परिहारो वुच्चदे । जीवद्वानवुत्तविक्खंभसूईओ संपुण्णाओ खुदाबंधमिह वुत्तविक्खंभसूईओ

शंका— सामान्यसे जीवराशिके प्रमाणका प्ररूपण करनेवाले खुदाबंधके द्वारा नारकी, सौधर्म-पेशान और भवनवासी देवोंकी जो विष्कंभसूचियां कही हैं, न्यूनता और अधिकतासे रहित वे ही विष्कंभसूचियां यहां जीवद्वानमें भी नारकी, सौधर्म-पेशान और भवनवासी देवोंसंबन्धी मिथ्यादृष्टि जीवराशिकी प्ररूपणामें कही हैं । आगे इसी विषयका स्पष्टीकरण करते हैं— सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलको द्वितीय वर्गमूलसे गुणित करने पर जितना लब्ध आवे उतनी खुदाबंधमें सामान्य नारकियोंकी विष्कंभसूची कही है । भवनवासियोंके प्रमाणरूपसे जो असंख्यात जगश्रेणियां बतलाई हैं उन जगश्रेणियोंकी विष्कंभसूची सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलको द्वितीय वर्गमूलसे गुणित करने पर जितना लब्ध आवे उतनी है, यह भवनवासियोंकी विष्कंभसूची खुदाबंधमें कही है । सौधर्म और पेशान कल्पवासी देवोंके प्रमाणरूपसे जो असंख्यात जगश्रेणियां बतलाई हैं उन जगश्रेणियोंकी विष्कंभसूची, सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलको तृतीय वर्गमूलसे गुणित करके जो लब्ध आवे, उतनी है, यह सौधर्म और पेशान कल्पवासी देवोंकी विष्कंभसूची खुदाबंधमें कही है । यहां जीवद्वानमें भी नारकी, भवनवासी और सौधर्म-पेशान मिथ्यादृष्टि जीवोंकी विष्कंभसूचियां ये ही (खुदाबंधमें कही हुई) कही हैं । परंतु यह कथन घटित नहीं होता है, क्योंकि, सामान्य प्ररूपण और विशेष प्ररूपण इन दोनोंको एक माननेमें विरोध आता है । अतएव जीवद्वानमें जो विष्कंभसूचियां कही गई हैं वे खुदाबंधमें कही गई विष्कंभसूचियोंसे न्यून होनी चाहिये या खुदाबंधमें कही गई विष्कंभसूचियां यहां जीवद्वानमें कही गई विष्कंभसूचियोंसे अधिक होनी चाहिये, ऐसा शंकाकारका कहना है ?

समाधान— आगे इस शंकाका परिहार करते हैं— जीवद्वानमें जो विष्कंभसूचियां कही गई हैं वे संपूर्ण हैं और खुदाबंधमें कही गई विष्कंभसूचियां जीवद्वानमें कही गई विष्कंभसूचियोंसे साधिक हैं ।

साधियाओ । तं कथं जाणिज्जेद ? अण्णहा वग्गट्ठाने हेट्ठिम-उवरिमवियप्पाणुववत्तीदो । खुदाबंधमिह वुत्तविकखंभसूईओ संपुण्णाओ किण्ण होंति त्ति चे ण, तदाविधगुरूवदेसा-
भावा । अहवा एत्थ वुत्तविकखंभसूईओ देसूणाओ खुदाबंधमिह वुत्तविकखंभसूईओ
संपुण्णाओ । कुदो ? अट्ठरूवे वग्गिज्जमाणे सोहम्मीसाणविकखंभसूचिं पावदि, सा सइं
वग्गिदा णेरइयविकखंभसूई पावदि, सा सइं वग्गिदा भवणवासियविकखंभसूचिं पावदि
त्ति परियम्भे वग्गसमुट्ठिसामणविकखंभसूचिपादादो खुदाबंधे वि घणधारुप्पण-
विकखंभसूईणं पादोवलंभादो वा । जीवट्ठानमिच्छाइट्ठिविकखंभसूचिपादो वि खुदाबंध-
सामणविकखंभसूचिपादेण समाणो उवलंभदे चे ण, द्व्वट्ठियणयदो समाणत्तुवलंभा ।
पज्जवट्ठियणए पुण अवलंबिज्जमाणे णियमेण तत्थ अत्थि विसेसो । खुदाबंधुवसंहार-
जीवट्ठानस्स मिच्छाइट्ठिविकखंभसूईए सामणविकखंभसूचिसमाणत्तविरोहा । एवं खुदा-
बंधमिह वुत्तसव्वअवहारकाला जीवट्ठाने सादिरेया वत्तव्वा । एदं वक्खानमेत्थ पधाणमिदि
गेण्हिदव्वं ण पुण्विल्लं ।

शंका — यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—यदि ऐसा न माना जाय तो वर्गस्थानमें अधस्तन और उपरिम विकल्प नहीं बन सकता है ।

शंका — खुदाबंधमें कही गई विष्कंभसूचियां संपूर्ण क्यों नहीं होती हैं ?

समाधान — नहीं, क्योंकि, इसप्रकारका गुरुका उपदेश नहीं पाया जाता है ।

अथवा, यहां जीवट्ठानमें कही गई विष्कंभसूचियां कुछ कम हैं और खुदाबंधमें कही गई विष्कंभसूचियां संपूर्ण हैं, क्योंकि, अष्टरूपके उत्तरोत्तर वर्ग करने पर सौधर्म और पेशान देवोंकी विष्कंभसूचीका प्रमाण प्राप्त होता है । उसका (सौधर्मद्विकसंबन्धी विष्कंभसूचीका) उसीसे वर्ग करने पर नारक विष्कंभसूची प्राप्त होती है । उसका (नारक विष्कंभसूचीका) उसीसे वर्ग करने पर भवनवासी देवोंकी विष्कंभसूची प्राप्त होती है, इसप्रकार परिकर्ममें वर्गस्थान प्रकरणमें कही गई सामान्य विष्कंभसूचियोंके अभिप्रायसे अथवा खुदाबंधमें भी घनधारामें उत्पन्न हुई विष्कंभसूचियोंके अभिप्रायके पाये जानेसे यह जाना जाता है कि खुदाबंधमें कही गई विष्कंभसूचियां संपूर्ण हैं ।

शंका—जीवट्ठानमें कहे गये मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूचियोंके अभिप्रायसे खुदाबंधमें कहा गया सामान्य विष्कंभसूचियोंका अभिप्राय समान पाया जाता है ?

समाधान - नहीं, क्योंकि, इन दोनों कथनोंमें द्रव्यार्थिक नयकी अपेक्षा समानता पाई जाती है । पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करने पर तो नियमसे उन दोनों कथनोंमें विशेषता है ही, क्योंकि, खुदाबंधके उपसंहाररूपसे जीवट्ठानमें कही गई मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचियोंसे सामान्य विष्कंभसूचियोंके समान माननेमें विरोध आता है । इसीप्रकार खुदाबंधमें कहे गये संपूर्ण अवहारकाल जीवट्ठानमें कुछ अधिक जान लेना चाहिये । यह व्याख्यान यहां पर प्रधान है, इसलिये इसका ग्रहण करना चाहिये, पहलेके व्याख्यानका नहीं ।

सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठी ओघं
॥ ६९ ॥

सोहम्मीसाणकप्पवासियदेवेसु देवगईए इदि च दुवयणमणुवट्ठे । एसा दब्ब-
ट्ठियणयमस्सिऊण परूवणा उत्ता । पज्जवट्ठियणयमास्सिऊण एदेसिं परूवणं
पुरदो भणिस्सामो ।

सणक्कुमारप्पहुडि जाव सदार-सहस्सारकप्पवासियदेवेसु जहा
सत्तमाए पुढवीए णेरइयाणं भंगो ॥ ७० ॥

एत्थ जहा इदि वुत्ते तं जहा इदि एदस्स अत्थो ण वत्तच्चो किं तु उवमत्थे जहा
सदो घेत्तच्चो । जहा सत्तमाए पुढवीए णेरइयाणं पमाणं परूविदं तथा सणक्कुमारादि-
देवाणं पमाणं परूवेदच्चं (णवरि आइरियपरंपरागदोवदेसेण विसेसपरूवणं कस्सामो)
तं जहा—

सणक्कुमार-माहिंदे जगसेढीए भागहारो सेढीए हेडा एक्कारसवग्गमूलं । बम्ह-बम्हो-
त्तरकप्पे णवमवग्गमूलं । लांतव-कापिट्ठकप्पे सत्तभवग्गमूलं । सुक्क-महासुक्ककप्पे पंचमवग्ग-

सासादनसम्यग्दट्ठि, सम्यग्मिथ्यादट्ठि और असंयतसम्यग्दट्ठि सौधर्म-ऐशान
कल्पवासी देव सामान्य प्ररूपणाके समान पल्लोपमके असंख्यातवें भाग हैं ॥ ६९ ॥

‘सोहम्मीसाणकप्पवासियदेवेसु देवगईए’ इन दो शब्दोंकी यहां अनुवृत्ति होती है ।
यहां द्रव्यार्थिक नयका आश्रय करके यह प्ररूपणा कही है । पर्यार्थिक नयका आश्रय करके
इनकी प्ररूपणा आगे कहेंगे ।

जिसप्रकार सातवीं पृथिवीमें नारकियोंकी प्ररूपणा कही गई है उसीप्रकार
सनत्कुमारसे लेकर शतार और सहस्सार तक कल्पवासी देवोंमें मिथ्यादट्ठि देवोंकी
प्ररूपणा है ॥ ७० ॥

सूत्रमें ‘जहा’ इसप्रकार कहने पर ‘तं जहा’ इसका अर्थ नहीं कहना चाहिये, किंतु
यहां उपमारूप अर्थमें ‘जहा’ शब्दका ग्रहण करना चाहिये । इससे यह अभिप्राय हुआ कि
जिसप्रकार सातवीं पृथिवीमें नारकियोंका प्रमाण कहा गया है उसीप्रकार सानत्कुमार आदि
देवोंके प्रमाणका कथन करना चाहिये । अब आगे आचार्य परंपरासे आये हुए उपदेशके
अनुसार विशेष प्ररूपणा करते हैं । वह इसप्रकार है—

सानत्कुमार और माहेन्द्र स्वर्गमें जगश्रेणीका भागहार जगश्रेणीके नीचे ग्यारहवां वर्ग-
मूल है । ब्रह्म और ब्रह्मोत्तर कल्पमें जगश्रेणीका भागहार जगश्रेणीका नौवां वर्गमूल है । लांतव और
कापिट्ठ कल्पमें जगश्रेणीका भागहार जगश्रेणीका सातवां वर्गमूल है । शुक्क और महाशुक्क कल्पमें

मूलं । सदार-सहस्सारकण्ठे चउत्थवग्गमूलं भागहारो हवदि । सासणदीणं पमाणपरुवणा वि सत्तमपुढविपरुवणाए समाणा । विसेसपरुवणं पुरदो वत्तइस्सामो ।

आणद-पाणद जाव णवगेवेज्जविमाणवासियदेवेसु मिच्छाइट्ठि-
प्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि ति द्व्वपमाणेण केवडिया, पलिदो-
वमस्स असंखेज्जदिभागो । एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहु-
त्तेण ॥ ७१ ॥

मुहुत्तसदो कालवाची चैव, तेण पुध कालग्गहणं ण कदं । द्व्वपमाणपरुवणाए चैव अत्थणिच्छओ जादो ति एत्थ खेत्त-कालेहि परुवणा ण कदा । ' पलिदोवमस्स असं-
खेज्जदिभागो ' इदि सामणेण वुत्ते द्व्वपमाणेण सुट्ठु णिच्छओ ण जादो ति तत्थ
णिच्छयउप्पायणट्ठं 'एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण' ति भागहारपरुवणा विद्वज्ज-
माणपरुवणा च कदा । एत्थ आइरिओवएसमस्सिऊण विसेसवक्खाणं पुरदो भणिस्सामो ।

अणुहिस जाव अवराइदविमाणवासियदेवेसु असंजदसम्माइट्ठी
द्व्वपमाणेण केवडिया, पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । एदेहि
पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण ॥ ७२ ॥

जगश्रेणीका भागहार जगश्रेणीका पांचदां वर्गमूल है । शतार और सहस्रार कल्पमें जगश्रेणीका भागहार जगश्रेणीका चौथा वर्गमूल है । सानत्कुमारसे लेकर सहस्रारतक सासादनसम्यग्दृष्टि आदि गुणस्थानवर्ती देवोंके प्रमाणकी प्ररूपणा भी सातवीं पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टि भावि जीवोंके प्रमाणकी प्ररूपणाके समान है । विशेष प्ररूपणाको आगे बतलावेंगे ।

आनत और प्राणतसे लेकर नौ ग्रैवेयक तक विमानवासी देवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीव द्रव्य-प्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? पल्योपमके असंख्यातवें भाग हैं । इन उपर्युक्त जीव-राशियोंके द्वारा अन्तर्मुहूर्तसे पल्योपम अपहृत होता है ॥ ७१ ॥

मुहूर्त शब्द कालवाची ही है, इसलिये सूत्रमें पृथक् रूपसे काल पदका ग्रहण नहीं किया । प्रकृतमें द्रव्यप्रमाणके प्ररूपण करनेसे ही अर्थका निश्चय हो जाता है, इसलिये यहाँ पर क्षेत्रप्रमाण और कालप्रमाणके द्वारा प्ररूपणा नहीं की । ' पल्योपमके असंख्यातवें भाग हैं ' इसप्रकार सामान्यसे कहने पर द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा अच्छी तरह निश्चय नहीं हो पाता है, इसलिये इस विषयमें निश्चयके उत्पन्न करानेके लिये ' इन जीवराशियोंके द्वारा अन्तर्मुहूर्तसे पल्योपम अपहृत होता है ' इसप्रकार भागहारप्ररूपणा और विभज्यमाणराशिकी प्ररूपणा की । इस विषयमें आचार्योंके उपदेशका आश्रय करके विशेष व्याख्यान आगे कहेंगे ।

अनुदिश विमानसे लेकर अपराजित विमानतक उनमें रहनेवाले असंयतसम्य-

एत्थ असंजदसम्माइड्डिदव्वपरूवणं सेसगुणद्वानाणं तत्थाभावं सूचेदि । ण च संतं ण परूवेति जिणा, तेसिमजिणत्तप्पसंगादो । एत्थ आइरिओवएसेण सव्वदेवगुण-पडिवण्णाणं विसेसपरूवणं भणिस्सामो । तं जहा— देवअसंजदसम्माइड्डिअवहारकाल-मावलियाए असंखेज्जादिभाएण खंडिय तत्थेगखंडं तम्हि चेव पक्खित्ते सोहम्मीसाण-असंजदसम्माइड्डिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जादिभाएण गुणिदे सम्मामिच्छाइड्डिअवहारकालो होदि । कुदो ? उवक्कमणकालभेदादो । तम्हि संखेजरूवेहि गुणिदे सासणसम्माइड्डिअवहारकालो होदि । कुदो ? उवक्कमणकालभेदादो उभयगुणं पडिवज्जमाणरासिविसेसदो वा । तम्हि आवलियाए असंखेज्जादिभाएण गुणिदे सण-क्कुमार-माहिंदअसंजदसम्माइड्डिअवहारकालो होदि । कुदो ? सुहक्कम्माहियजीववहुत्ता-भावादो । एवं णेयव्वं जाव सदार-सहस्सारो त्ति । तस्स सासणसम्माइड्डिअवहारकाल-मावलियाए असंखेज्जादिभाएण गुणिदे जोइसियदेवअसंजदसम्माइड्डिअवहारकालो होदि ।

गृष्टि देव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? पल्योपमके असंख्यातवें भाग हैं । इन उपर्युक्त जीवराशियोंके द्वारा अन्तर्गृहर्तसे पल्योपम अपहृत होता है ॥ ७२ ॥

इन अनुदिश आदि विमानोंमें असंयतसम्यग्गृष्टि जीवराशिकी प्ररूपणा वहां पर शेष गुणस्थानोंके अभावको सूचित करती है । यदि कोई कहे कि यहां पर शेष गुणस्थानोंके प्रमाणकी प्ररूपणा नहीं की होगी सो बात नहीं है, क्योंकि, जिनदेव विद्यमान अर्थका प्ररूपण नहीं करते हैं ऐसा नहीं हो सकता, क्योंकि, ऐसा मान लेने पर उन्हें अजिनपनेका प्रसंग आ जाता है । अब यहां आचार्योंके उपदेशानुसार संपूर्ण गुणस्थानप्रतिपन्न देवोंकी विशेष प्ररूपणाको कहते हैं । वह इसप्रकार है— देव असंयतसम्यग्गृष्टि अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके उनमेंसे एक खंडको उसी देव असंयतसम्यग्गृष्टि अवहारकालमें मिला देने पर सौधर्म और पेशानसंबन्धी असंयतसम्यग्गृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर सौधर्म और पेशानसंबन्धी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है, क्योंकि, सम्यग्गृष्टियोंके उपक्रमण कालसे सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके उपक्रमण कालमें भेद है । सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर सौधर्म और पेशानसंबन्धी सासादनसम्यग्गृष्टियोंका अवहारकाल होता है, क्योंकि, सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके उपक्रमण कालसे सासादनसम्यग्गृष्टियोंके उपक्रमण कालमें भेद है । अथवा, उक्त दोनों गुणस्थानोंको प्राप्त होनेवाली राशियोंमें विशेषता है । सौधर्म और पेशान सासादनसम्यग्गृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर सानत्कुमार और माहेंद्र असंयतसम्यग्गृष्टियोंका अवहारकाल होता है, क्योंकि, ऊपर शुभ कर्मोंकी बहुलता होनेसे बहुत जीव नहीं पाये जाते हैं । इसीप्रकार शतार सहस्रार कल्पतक ले जाना चाहिये । उन शतार-सहस्रार कल्पके सासादनसम्यग्गृष्टिसंबन्धी अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर ज्योतिषी असंयतसम्यग्गृष्टि देवोंका अवहारकाल होता है, क्योंकि,

कुदो ? तत्थ वोग्गाहिदादिमिच्छत्तेण सह उप्पण्णदेवेसु जिणसासणपडिकूलेसु बहूणं सम्मत्तं पडिवज्जमाणजीवाणमसंभवादो । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । एत्थ कारणं पुवं व वत्तव्वं । एवं वाणवेंतर-भवणवासियदेवेसु णेयव्वं । कुदो ? मिच्छत्तोच्छाइदिट्ठीसु भूओसम्महंसणुप्पत्तिसंभवाभावादो । भवणवासियसासणसम्माइट्ठिअवहारकाले आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे आणद-पाणदअसंजद सम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । कुदो ? सुहकम्माणं दीहाऊणं बहूणमसंभवा । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे आरणच्चुदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । कारणं उवरिम-उवरिमकप्पेसु उप्पज्जमाणसुहकम्माहियदीहाउवजीवेहिंतो हेट्ठिमहेट्ठिमकप्पेसु थोवपुण्णेण उहरभवट्ठिदीसु उप्पज्जमाणजीवाणं बहुत्तोवलंभादो । होंता वि असंखेज्जगुणा चैय । कारणं सबीजीभूदमणुसपज्जत्तरासिम्हि संखेज्जत्तुवलंभादो । एवं णेयव्वं जाव उवरिम-उवरिमगेवज्जअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो त्ति । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे आणद-

वहां पर व्युद्ग्राहित आदि मिथ्यात्वके साथ उत्पन्न हुए और जिन शासनके प्रतिकूल देवोंमें सम्यक्त्वको प्राप्त होनेवाले बहुत जीवोंका अभाव है । उन असंयतसम्यग्दृष्टि ज्योतिषी देवोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर सम्यग्मिथ्यादृष्टि ज्योतिषियोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि ज्योतिषियोंका अवहारकाल होता है । यहां पर उत्तरोत्तर संख्यादानि या अवहारकालकी वृद्धिके कारणका कथन पहलेके समान कर लेना चाहिये । इसीप्रकार वाणव्यन्तर और भवनवासी देवोंमें क्रमसे अवहारकाल ले जाना चाहिये, क्योंकि, जिनकी दृष्टि मिथ्यात्वसे आच्छादित है उनमें बहुत सम्यग्दृष्टियोंकी उत्पत्ति संभव नहीं है । भवनवासी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर आनत और प्राणतकल्पके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है, क्योंकि, शुभ कर्मवाले दीर्घायु जीव बहुत नहीं होते हैं । इस असंयतसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर आरण और अच्युत कल्पवासी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है, क्योंकि, उपरिम उपरिम कल्पोंमें उत्पन्न होनेवाले शुभ कर्मोंकी अधिकतासे दीर्घायुवाले जीवोंसे नीचे नीचेके कल्पोंमें स्तोक पुण्यसे स्तोक भवस्थितिमें उत्पन्न होनेवाले जीव अधिक पाये जाते हैं । नीचे नीचे अधिक जीव होते हुए भी वे असंख्यातगुणे ही होते हैं, क्योंकि, बारहवें कल्पसे लेकर ऊपरके कल्पोंमें जीव मनुष्य राशिसे आकर ही उत्पन्न होते हैं । इसलिये ऊपरके कल्पोंमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंके लिये मनुष्यराशि बीजीभूत है और मनुष्य राशि संख्यात ही होती है, अतः ऊपर ऊपरके कल्पोंसे नीचेके कल्पोंमें जीव असंख्यातगुणे हैं । यही क्रम उपरिम उपरिम त्रैवेयकके असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकाल तक ले जाना चाहिये । उपरिम उपरिम त्रैवेयकके असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर आनत और प्राणतके मिथ्यादृष्टियोंका

पाणदमिच्छाइट्टिअवहारकालो होदि । कुदो ? जिणलिंगं घेत्तूण दव्वसंजमेण इदिसंजदाणं बहूणं मणुसेसु अणुवलंभादो । तम्मिह संखेज्जरूवेहि गुणिदे आरणच्चुदमिच्छाइट्टिअवहारकालो होदि । एत्थ कारणं पुवं व वत्तवं । एवं णेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेवज्जमिच्छाइट्टिअवहारकालो ति । तम्मिह संखेज्जरूवेहि गुणिदे णवाणुद्दिअसंजदसम्माइट्टिअवहारकालो होदि । तम्मिह संखेज्जरूवेहि गुणिदे अणुत्तरविजय-वइजयंत-जंयत-अवराइद-विमाणवासियअसंजदसम्माइट्टिअवहारकालो होदि । तमावलिवाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे आणद-पाणदसम्मामिच्छाइट्टिअवहारकालो होदि । कुदो ? उवक्कमणजीवाणं थोवत्तादो । तम्मिह संखेज्जरूवेहि गुणिदे आरणच्चुदसम्मामिच्छाइट्टिअवहारकालो होदि । एवं णेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेवज्जसम्मामिच्छाइट्टिअवहारकालो ति । तम्मिह संखेज्जरूवेहि गुणिदे आणद-पाणदसासणसम्मामिच्छाइट्टिअवहारकालो होदि । कुदो ? थोवुवक्कमणकालत्तादो । तम्मिह संखेज्जरूवेहि गुणिदे आरणच्चुदसासणसम्मामिच्छाइट्टिअवहारकालो होदि । एवं णेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेवज्जसासणसम्मामिच्छाइट्टिअवहारकालो ति । एदेहि अवहारकालेहि खंडि-

अवहारकाल होता है, क्योंकि, जिनलिंगको स्वीकार करके द्रव्यसंयमके साथ स्थित हुए बहुतसे संयतोंका मनुष्योंमें सद्भाव नहीं पाया जाता है। आनत और प्राणतसंबन्धी मिथ्यादृष्टि अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर आरण और अच्युतके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है। यहां कारण पहलेके समान कहना चाहिये, अर्थात् जिनलिंगको स्वीकार करके द्रव्यसंयमके साथ बहुतसे मनुष्य नहीं होते हैं, इसलिये आरण और अच्युतमें कम मिथ्यादृष्टि पाये जाते हैं। इसीप्रकार उपरिम उपरिम त्रैवेयकके मिथ्यादृष्टि अवहारकाल तत्र ले जाना चाहिये। उपरिम उपरिम त्रैवेयकके मिथ्यादृष्टि अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर नौ अनुदिशोंके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे संख्यातसे गुणित करने पर विजय, वैजयन्त, जयन्त और अपराजित इन चार अनुत्तर विमानवासी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसे आबलोंके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर आनत और प्राणतके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है, क्योंकि, यहां पर सम्यग्मिथ्यात्वके साथ उत्पन्न होनेवाले जीव थोड़े हैं। आनत और प्राणतके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर आरण और अच्युतके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसीप्रकार उपरिम उपरिम त्रैवेयकके सम्यग्मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकालतक ले जाना चाहिये। उपरिम उपरिम त्रैवेयकके सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर आनत और प्राणतके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है, क्योंकि, सासादनसम्यग्दृष्टियोंका उपक्रमणकाल स्तोत्र है। आनत और प्राणतके सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर आरण और अच्युतके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। इसीप्रकार उपरिम उपरिम

१ देवाणं अवहारा हंति असंखेण ताणि अवहरिय । तत्थेव य पक्खित्ते सोहम्मसाण अवहाण ॥ सोहम्म-

दादओ जाणिय वत्तव्वा । सव्वदेवगुणपडिवण्णाणं ओघभंगो इदि भणिय आणदादि-
उवरिमगुणपडिवण्णाणं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ' एदेहि पलिदोवममवहिरदि
अंतोमुहुत्तेण ' इदि त्रिसेसिय किमहं वुच्चदे ? एवं भणंतस्स अहिप्पाओ परूविज्जदे ।
तं जहा — ओघभंगो इच्चेदेण आणद्वत्तादो सुत्तमिदमणत्थयं । अणत्थयं च जाणावयं
होदि । किमेदेण जाणाविज्जदि ? सोहम्मअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो आवलियाए
असंखेज्जदिभागो । तत्थतणखइयसम्माइट्ठीणमवहारकालो संखेज्जावलियमेत्तो । एदे दो
वि अवहारकाले मोत्तूण अवसेसगुणपडिवण्णाणं सव्वे अवहारकाला असंखेज्जावलिमेत्ता
विउलत्तवाइणो अंतोमुहुत्तसदेण वुच्चंति त्ति जाणाविदं, तदो णाणत्थयमिदं सुत्तं ।

त्रैवेयकके सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालतक ले जाना चाहिये । इन अवहारकालोंके द्वारा
खंडित आदिकका कथन जान कर करना चाहिये ।

सर्व गुणस्थानप्रतिपन्न देवोंका प्रमाण सामान्य प्ररूपणाके समान है ऐसा कथन
करके ' गुणस्थानप्रतिपन्न इन आनत आदि देवोंके द्वारा अन्तर्मुहूर्त कालसे पत्योपम अपहृत
होता है ' इतनेसे विशेषित करके गुणस्थानप्रतिपन्न आनतादि देवोंका प्रमाण पत्योपमके
असंख्यातर्वे भागप्रमाण किसलिये कहा । आगे ऐसा कथन करनेवालेके अभिप्रायका प्ररूपण
करते हैं । वह इसप्रकार है—

सर्व गुणस्थानप्रतिपन्न देवोंका प्रमाण ' सामान्य प्ररूपणाके समान है ' इतनेमात्रसे
संबन्धित होनेके कारण यह सूत्र अनर्थक है, फिर भी जो सूत्र अनर्थक होता है वह किसी
स्वतन्त्र नियमका स्थापक होता है ।

शंका—इससे क्या स्थापन होता है ?

समाधान—सौघर्म असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल आवलीके असंख्यातर्वे भाग
है । वहींके क्षायिक सम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संख्यात आवलीमात्र है । इन दो अवहार-
कालोंको छोड़कर शेष गुणस्थानप्रतिपन्नोके संपूर्ण अवहारकाल असंख्यात आवलीमात्र हैं,
अवहारकालकी विपुलताको माननेवाले आचार्य अन्तर्मुहूर्त शब्दसे ऐसा कहते हैं, यह इस
सूत्रसे स्थापित होता है, इसलिये यह सूत्र अनर्थक नहीं है ।

साणहारमसंखेण य संखल्लवसंगुणिदे । उवरि असंजद-मिस्सय-सासणसम्माण अवहारा ॥ सोहम्मादासारं जोहसि-वण-
भवण-तिरिय पुढवीसु । अवरिद-मिस्से संखं संखापंखगुण सासणे वेसे ॥ चरमधरासाणहरा आणदसम्माण आरणप्पहुदि ।
अंतिमगेवेज्जंतं सम्माणमसंखसंखगुणहारा ॥ तत्तो ताणुत्ताणं नामाणमणुदिसाण विजयादि । सम्माणं संखगुणो
आणदमिस्से असंखगुणो ॥ तत्तो संखेज्जगुणो सासणसम्माण होदि संखगुणो । उच्छट्ठाणे कमसो पणळस्सत्तट्ठवदुर-
संदिट्ठी ॥ गो. जी. ६६५-६७०.

सर्वद्विसिद्धिविमानवासियदेवा दन्वपमाणेण केवडिया,
संखेज्जा ॥ ७३ ॥

मणुसिणीरासीदो तिउणमेत्ता हवंति ।

भागभागं वत्तइस्सामो । सच्चदेवरासिमसंखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा जोइ-
सियदेवमिच्छाइट्ठी होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा वाणवेंतरमिच्छाइट्ठी
होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुभागा सोहम्मीसाणमिच्छाइट्ठी होंति । एवं जाव
सदार-सहस्सारमिच्छाइट्ठी ति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुभागा सोहम्मीसाणअसंजद-
सम्माइट्ठी होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुभागा सम्मामिच्छाइट्ठीणो होंति । सेसम-
संखेज्जखंडे कए बहुभागा सासणसम्माइट्ठीणो होंति । एवं सणक्कुमार-माहिंदप्पहुडि
जाव सहस्सारो ति णेयव्वं । तदो जोइसिय-वाणवेंतर-भवनवासिएत्ति णेयव्वं । पुणो
सेसस्स संखेज्जखंडे कए बहुखंडा आणद-पाणदअसंजदसम्माइट्ठीणो होंति । सेसस्स
संखेज्जखंडे कए बहुखंडा आरणच्चुदअसंजदसम्माइट्ठीणो होंति । एवं णेयव्वं

सर्वाथसिद्धि विमानवासी देव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? संख्यात हैं ॥७३॥

सर्वार्थसिद्धि विमानवासी देव मनुष्यनियोंके प्रमाणसे तिगुणे हैं ।

आगे भागभागको बतलाते हैं— सर्व देवराशिके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे
बहु भागप्रमाण ज्योतिषी मिथ्यादृष्टि देव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर
उनमेंसे बहुभाग वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टि देव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर
उनमेंसे बहुभागप्रमाण सौधर्म और पेशान कल्पके मिथ्यादृष्टि देव हैं । इसीप्रकार शतार और
सहस्रार कल्पके मिथ्यादृष्टि देवों तक ले जाना चाहिये । शतार और सहस्रारके मिथ्यादृष्टि
प्रमाणके अनन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण
सौधर्म और पेशान कल्पके असंयतसम्यग्दृष्टि देव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड
करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण वहाँके सम्यग्मिथ्यादृष्टि देव हैं । शेष एक भागके असंख्यात
खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण वहाँके सासादनसम्यग्दृष्टि देव हैं । इसीप्रकार
सानत्कुमार और माहेन्द्र कल्पसे लेकर सहस्रार कल्पतक ले जाना चाहिये । सहस्रार कल्पसे
आगे ज्योतिषी, वाणव्यन्तर और भवनवासी देवों तक यही क्रम ले जाना चाहिये । पुनः
भवनवासी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके प्रमाणके अनन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके संख्यात
खंड करने पर बहुभागप्रमाण भानत और प्राणतके असंयतसम्यग्दृष्टि देव हैं । शेष एक भागके
संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण आरण और अरुपुतके असंयतसम्यग्दृष्टि देव हैं ।

जावुवरिमउवरिमगेवज्जो ति । सेसस्स संखेज्जखंडे कए बहुभागा आणद-पाणदमिच्छा-इट्ठिणो होंति । सेसस्स संखेज्जखंडे कए बहुभागा आरणच्चुदमिच्छाइट्ठिणो होंति । एवं णेयव्वं जावुवरिमउवरिमगेवज्जो ति । सेसस्स संखेज्जखंडे कए बहुभागा अणुदिस-असंजदसम्माइट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुभागा अणुत्तरविजय-वइजयंत-जयंत-अवराइदअसंदसम्माइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुभागा आणद-पाणदसम्मा-मिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुभागा आरणच्चुदसम्मामिच्छाइट्ठिणो होंति । एवं णेयव्वं जावुवरिमउवरिमगेवज्जो ति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुभागा आणद-पाणदसासणसम्माइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुभागा आरणच्चुद-सासणसम्माइट्ठिणो होंति । एवं णेयव्वं जावुवरिममज्झिमगेवज्जसासणसम्माइट्ठि ति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुभागा उवरिमउवरिमगेवज्जसासणसम्माइट्ठिणो होंति । एय-खंडं सव्वट्ठसिद्धिअसंजदसम्माइट्ठी होंति । एवं भागाभागं समत्तं ।

इसीप्रकार उपरिम उपरिम त्रैवेयक तक ले जाना चाहिये । उपरिम उपरिम त्रैवेयकके असं-यतसम्यग्दृष्टियोंके प्रमाण आनेके अनन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके संख्यात खंड करने पर बहुभागप्रमाण आनत और प्राणतके मिथ्यादृष्टि देव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग आरण और अच्युतके मिथ्यादृष्टि देव हैं । इसीप्रकार उपरिम उपरिम त्रैवेयकतक ले जाना चाहिये । उपरिम उपरिम त्रैवेयकके मिथ्यादृष्टिप्रमाणके अनन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके संख्यात खंड करने पर बहुभाग अनुविशके असंयतसम्यग्दृष्टि होते हैं । शेषके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग विजय, वैजयन्त, जयन्त और अपराजित इन चार अनुत्तर विमानोंके असंयतसम्यग्दृष्टि देव हैं । शेषके संख्यात खंड करने पर बहुभागप्रमाण आनत और प्राणतके सम्यग्मिथ्यादृष्टि देव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण आरण और अच्युतके सम्यग्मिथ्या-दृष्टि देव हैं । इसीप्रकार उपरिम उपरिम त्रैवेयक तक ले जाना चाहिये । उपरिम उपरिम त्रैवेयकके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाणके अनन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण आनत और प्राणतके सासादनसम्यग्दृष्टि देव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण आरण और अच्युतके सासादनसम्यग्दृष्टि देव हैं । इसीप्रकार उपरिम मध्यम त्रैवेयकके सासादनसम्यग्दृष्टियोंके प्रमाण आने तक ले जाना चाहिये । उपरिम मध्यम त्रैवेयकके सासादनसम्यग्दृष्टियोंके प्रमाणके अनन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण उपरिम उपरिम त्रैवेयकके सासादनसम्यग्दृष्टि देव हैं । शेष एक खंडप्रमाण सर्वार्थसिद्धिके असंयतसम्यग्दृष्टि देव हैं । इस-प्रकार भागाभाग समाप्त हुआ ।

अप्पाबहुअं तिविहं, सत्थाणं परत्थाणं सव्वपरत्थाणं चेदि । सत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवो देवमिच्छाइट्ठिअवहारकालो । विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? विक्खंभसूईए असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सगअवहारकालो । अहवा सेठीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेट्ठिपढमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? अवहारकालवग्गो । अहवा असंखेज्जाणि घणंगुलाणि । केत्तियमेत्ताणि ? पण्णाट्टिसहस्स-पंचसय-छत्तीसवग्गसूचिअंगुलमेत्ताणि । सेठी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? अवहारकालो । दव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सगविक्खंभसूई । पदरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सगअवहारकालो । लोगो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेठी । सासणादीणं मूलोघभंगो । एवं जोइसिय-वाणवेतराणं पि णेयव्वं । भवणवासियाणं सत्थाणे सव्वत्थोवा मिच्छाइट्ठि-विक्खंभसूई । अवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सगअवहारकालस्स असंखे-ज्जदिभागो । को पडिभागो ? विक्खंभसूई । अहवा सेठीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेट्ठिपढमवग्गमूलाणि । को पडिभागो । विक्खंभसूचिवग्गो । अहवा घणंगुलं । सेठी

अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है, स्वस्थान अल्पबहुत्व, परस्थान अल्पबहुत्व और सर्वपरस्थान अल्पबहुत्व । इनमेंसे स्वस्थान अल्पबहुत्वमें प्रकृत विषयका निरूपण करते हैं- देव मिथ्यादृष्टि अवहारकाल सबसे स्तोक है । उन्हींकी विष्कंभसूची अवहारकालसे असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कंभसूचीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? अपना अवहारकाल प्रतिभाग है । अथवा, जगश्रेणीका असंख्यातवां भाग गुणकार है, जो जगश्रेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? अवहारकालका वर्ग प्रतिभाग है । अथवा, असंख्यात घनांगुल गुणकार है । वे कितने हैं ? पैंसठ हजार पांचसौ छत्तीसके वर्गरूप सूत्र्यंगुलप्रमाण हैं । देव विष्कंभसूचीसे जगश्रेणी असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाल गुणकार है । जगश्रेणीसे मिथ्यादृष्टि देवोंका प्रमाण असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कंभसूची गुणकार है । देव मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे जगप्रतर असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाल गुणकार है । जगप्रतरसे घनलोक असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणी गुणकार है । देव सासा-द्वनसम्यग्दृष्टियोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व सामान्य प्ररूपणाके समान है । इसीप्रकार ज्योतिषी और वाणव्यन्तरोका भी स्वस्थान अल्पबहुत्व ले जाना चाहिये । भवनवासियोंके स्वस्थान अल्पबहुत्वमें सबसे स्तोक मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची है । उससे अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपने अवहारकालका असंख्यातवां भाग गुणकार है प्रतिभाग क्या है ? विष्कंभसूची प्रतिभाग है । अथवा, जगश्रेणीका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? अपनी विष्कंभसूचीका वर्ग प्रतिभाग है । अथवा घनांगुल गुणकार है । जगश्रेणी अवहारकालसे असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या

असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सगविकखंभसूई । द्व्यमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? विकखंभसूई । पदरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? अवहारकालो । लोगो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेठी । सासणादीणं मूलोघभंगो । सोहम्मादि जाव उवरिमगेवज्जो ति सस्थानप्पावहुगं जाणिय णेयव्वं ।

परत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवो असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो । एवं णेयव्वं जाव पलिदोवमो ति । तदो उवरि मिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सगअवहारकालस्स असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? पलिदोवमो । अहवा पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सूचिअंगुलाणि । केत्तियमेत्ताणि ? सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि । को पडिभागो ? पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागो । उवरि सस्थानभंगो । भवणवासियाणं सव्वत्थोवो असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो । एवं णेयव्वं जाव पलिदोवमो ति । तदो उवरि भवणवासियमिच्छाइट्ठिविकखंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सगविकखंभसूईए असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? पलिदोवमो । अहवा पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागो । असंखेज्जाणि सूचिअंगुलाणि । केत्तियमेत्ताणि ? सूचिअंगुलपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि । को पडिभागो ? पलिदोवमो । उवरि

है ? अपनी विष्कंभसूची गुणकार है । उन्हींका द्रव्य जगभ्रेणीसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? विष्कंभसूची गुणकार है । द्रव्यसे जगप्रतर असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अवहारकाल गुणकार है । जगप्रतरसे लोक असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगभ्रेणी गुणकार है । सासादनसम्यग्दृष्टि आदिका मूलोघके समान स्वस्थान अल्पबहुत्व है । सौधर्मसे लेकर उपरिम त्रैवेयकतक स्वस्थान अल्पबहुत्व जान कर ले जाना चाहिये ।

अब परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सबसे स्तोके है । इसीप्रकार पल्योपमतके ले जाना चाहिये । पल्योपमके ऊपर मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपने अवहारकालका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? पल्योपम प्रतिभाग है । अथवा, प्रतरांगुलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो असंख्यात सूच्यंगुलप्रमाण है । असंख्यात सूच्यंगुलोंका प्रमाण कितना है ? सूच्यंगुलका असंख्यातवां भाग उनका प्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? पल्योपमका संख्यातवां भाग प्रतिभाग है । इसके ऊपर अपने स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है । भवनवासियोंके परस्थानका कथन करने पर असंयत-सम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सबसे स्तोके है । इसीप्रकार पल्योपमतके ले जाना चाहिये । पल्योपमके ऊपर भवनवासी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कंभसूचीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? पल्योपम प्रतिभाग है । अथवा, प्रतरांगुलका असंख्यातवां भाग गुणकार है, जो असंख्यात सूच्यंगुल-प्रमाण है । वे कितने हैं ? सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलके असंख्यातवे भागप्रमाण हैं । प्रतिभाग क्या है ? पल्योपम प्रतिभाग है । इसके ऊपर वाणव्यन्तरोसे लेकर उपरिम उपरिम त्रैवेयकतक अपने

सगसत्थाणभंगो (वाणवेंतरादि जाव उवरिमउवरिमगेवज्जो त्ति ।) उवरि परत्थाणं णत्थि, तत्थ सेसगुणद्वानाणमभावादो । सव्वहे सत्थाणं पि णत्थि एगपदत्थादो ।

सव्वपरत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा सव्वद्वसिद्धिविमाणवासियदेवा । सोहम्मीसाण-असंजदसम्माइद्धिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदि-भागस्स संखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सव्वद्वसिद्धिदेवसम्मादिद्धि त्ति । तत्थेव सम्मा-मिच्छाइद्धिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइद्धिअवहारकालो संखेज्जगुणो । तदो सणक्कुमार-माहिंदअसंजदसम्माइद्धिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । एवं णेयव्वं जाव सदर-सहस्सारेत्ति । तदो जोइसिय-वाणवेंतर-भवणवासियाणं पि क्रमेण णेयव्वं । भवणवासिय-

स्वस्थानके समान है । उपरिम उपरिम त्रैवेयकके ऊपर परस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है, क्योंकि, वहां पर शेष गुणस्थान नहीं पाये जाते हैं । सर्वार्थसिद्धिमें एक पदार्थ होनेसे स्वस्थान अल्पबहुत्व भी नहीं है ।

विशेषार्थ—प्रतियोंमें देवोंके स्वस्थान और परस्थान अल्पबहुत्वके पाठ गड़बड़ और कुछ छूट हुए प्रतीत होते हैं । बहुत कुछ विचारके पश्चात् दूसरे प्रकरणोंके अल्पबहुत्वके विभागानुसार यहां भी उन्हें व्यवस्थित करनेका प्रयत्न किया गया है । प्रतियोंमें पहले सामान्य देवोंका स्वस्थान और परस्थान अल्पबहुत्व कहकर अनन्तर इसी प्रकार वाणव्यन्तर और ज्योतिषियोंका है, ऐसा कहा है । तदनन्तर भवनवासियोंका स्वस्थान और परस्थान अल्पबहुत्व कह कर सौधर्मादि उपरिम उपरिम त्रैवेयकतक स्वस्थान अल्पबहुत्वको समझकर लगा लेनेकी सूचना की है । अनन्तर अनुदिशादिमें परस्थानके अभावका कारण और सर्वार्थसिद्धिमें दोनोंके अभावका कारण बतलाया है ।

इन अल्पबहुत्वोंको व्यवस्थित कर देने पर भी सौधर्मादि उपरिम उपरिम त्रैवेयकतक परस्थानकी कोई व्यवस्था नहीं पाई जाती है । अनुदिशादिमें परस्थानके अभावका कारण बतलाया है, पर स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है । इसे देखते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि यहां कुछ पाठ भी छूट गया है ।

अब सर्व परस्थान अल्पबहुत्वमें प्रकृत विषयको बतलाते हैं—सर्वार्थसिद्धि विमान-वासी देव सबसे स्तोक हैं । उनसे सौधर्म और पेशान कल्पके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? सर्वार्थसिद्धिके सम्यग्दृष्टि देवोंका प्रमाण प्रतिभाग है । वहीं पर सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है । सौधर्म और पेशान कल्पके सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे सानत्कुमार और माहेन्द्र कल्पके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार शतार और सहस्रार कल्पतक ले जाना चाहिये । शतार और सहस्रार कल्पके आगे ज्योतिषी, वाणव्यन्तर और भवनवासियोंका भी क्रमसे ले जाना चाहिये ।

सासणाण अवहारकालादो आणद-पाणदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तदो आरणच्चुदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । एवं गेयव्वं जाव उवरिम-उवरिमगेवज्जअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो ति । तदो आणद-पाणदमिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । तदो आरणच्चुदमिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । एवं गेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेवज्जो ति । तदो अणुदिसअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । तदो अणुत्तरविजय-वइजयंत-जयंत-अवराइदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । तदो आणद-पाणदसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तदो आरणच्चुदसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । एवं गेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेवज्जो ति । तदो आणद पाणदसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । तदो आरणच्चुद-सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । एवं गेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेवज्जो ति । तदो उवरि तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । उवरिममज्झिमसासणसम्माइट्ठिदव्वं संखेज्जगुणं । तदो उवरिमहेट्ठिमसासणसम्माइट्ठिदव्वं संखेज्जगुणं । एवं गेयव्वं

भवनवासी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे आनत और प्राणतके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । उससे आरण और अच्युतके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है । इसीप्रकार उपरिम उपरिम त्रैवेयकके असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालतक ले जाना चाहिये । उपरिम उपरिम त्रैवेयकके असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे आनत और प्राणतके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है । इससे आरण और अच्युतके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है । इसीप्रकार उपरिम उपरिम त्रैवेयकतक ले जाना चाहिये । उपरिम उपरिम त्रैवेयकके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे अनु-दिशोंके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है । इससे विजय, वैजयन्त, जयन्त और अपराजित इन चार अनुत्तर विमानवासी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है । इससे आनत और प्राणतके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । इससे आरण और अच्युतके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है । इसीप्रकार उपरिम उपरिम त्रैवेयकतक ले जाना चाहिये । उपरिम उपरिम त्रैवेयकके सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे आनत और प्राणतके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है । इससे आरण और अच्युतके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है । इसी-प्रकार उपरिम उपरिम त्रैवेयकतक ले जाना चाहिये । तदनन्तर उपरिम उपरिम त्रैवेयकके सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालके ऊपर उसी उपरिम उपरिम त्रैवेयकका सासादनसम्यग्दृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है । इससे उपरिम मध्यम त्रैवेयकके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य संख्यातगुणा है । इससे उपरिम अधस्तन त्रैवेयकके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य संख्यातगुणा है । इसीप्रकार अवहारकालके प्रतिलोमरूपसे जबतक सौधर्म और पेशान कल्पके असंयत-

अवहारकालपडिलोमेण जाव सोहम्मीसाणअसंजदसम्माइट्टिदव्वं पत्तं ति । तदो पलि-
 दोवममसंखेज्जगुणं । तदो उवरि सोहम्मीसाणविकखंभसूची असंखेज्जगुणा । को
 गुणगारो ? सगविकखंभसूईए असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? पलिदोवमपडिभागो ।
 अहवा सूचिअंगुलपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि विदियवग्गमूलाणि ।
 केत्तियमेत्ताणि ? तदियवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि । को पडिभागो ? पलि-
 दोवमपडिभागो । भवणवासियमिच्छाइट्टिविकखंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ?
 पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सूचिअंगुलाणि । केत्तियमेत्ताणि ?
 तदियवग्गमूलमेत्ताणि । को पडिभागो ? सोहम्मीसाणमिच्छाइट्टिविकखंभसूई व ।
 मिच्छाइट्टिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागो
 संखेज्जाणि सूचिअंगुलपढमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? भवणवासियमिच्छाइट्टि-
 विकखंभसूई पडिभागो । जोइसियदेवमिच्छाइट्टिअवहारकालो विसेसाहिओ । केवडिओ
 विसेसो ? पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागो । वाणवैतरमिच्छाइट्टिअवहारकालो संखेज्जगुणो ।
 को गुणगारो ? संखेज्जा समया । सणक्कुमार-माहिंदमिच्छाइट्टिअवहारकालो असंखेज्जगुणो ।

सम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य प्राप्त होवे तबतक ले जाना चाहिये । सौधर्म और पेशान कल्पके
 असंयतसम्यग्दृष्टियोंके द्रव्यसे पत्योपम असंख्यातगुणा है । पत्योपमके ऊपर सौधर्म और
 पेशान कल्पकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपनी
 विष्कंभसूचीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? पत्योपम प्रतिभाग है ।
 अथवा, सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो सूच्यंगुलके असंख्यात
 द्वितीय वर्गमूलप्रमाण है । सूच्यंगुलके उन असंख्यात द्वितीय वर्गमूलोंका प्रमाण कितना
 है ? तीसरे वर्गमूलके असंख्यातवें भाग है । प्रतिभाग क्या है ? पत्योपम प्रतिभाग है । सौधर्म
 और पेशान कल्पके मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूचीसे भवनवासी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची
 असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? प्रतरांगुलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो असंख्यात
 सूच्यंगुलप्रमाण है । उन असंख्यात सूच्यंगुलोंका प्रमाण कितना है ? तृतीय वर्गमूलमात्र
 है । प्रतिभाग क्या है ? सौधर्म और पेशान कल्पकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीके
 प्रतिभागके समान प्रतिभाग है । सामान्य देव मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है ।
 गुणकार क्या है ? सूच्यंगुलके असंख्यातवें भाग गुणकार है जो सूच्यंगुलके संख्यात प्रथम
 वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? भवनवासियोंकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची प्रतिभाग
 है । इस देव मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे ज्योतिषी देवोंके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल
 विशेष अधिक है । कितना विशेष है ? प्रतरांगुलका संख्यातवां भाग विशेष है । ज्योतिषियोंके
 मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे वाणव्यन्तरोंके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है ।
 गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे
 सानत्कुमार और माहेन्द्र कल्पके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार

को गुणगारो ? सेट्टिएकारसवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि वारसवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? वाणवेंतरमिच्छाइड्डिअवहारकालो पडिभागो । तस्सुवरि बम्ह-बम्होत्तर-मिच्छाइड्डिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेट्टिणवमवग्गमूलस्स असंखे-ज्जदिभागो असंखेज्जाणि दसमवग्गमूलाणि । लांतव-काविट्टमिच्छाइड्डिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सत्तमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि अट्टम-वग्गमूलाणि । सुक्क-महासुक्कमिच्छाइड्डिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पंचमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि छट्टमवग्गमूलाणि । सदार-सहस्सार-मिच्छाइड्डिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पंचमवग्गमूलं । तदो सदार-सहस्सारद्ववमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सगद्ववस्स असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सगअवहारकालपडिभागो । एवं गेयव्वं पडिलोमेण जाव सणक्कुमार-माहिंदमिच्छा-इड्डिद्ववमिदि । तस्सुवरि वाणवेंतरमिच्छाइड्डिविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? तस्सेव विक्खंभसूईए असंखेज्जदिभागो एकारसवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि

क्या है ? जगश्रेणीके ग्यारहवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात बारहवें वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल प्रतिभाग है । सानत्कुमार और माहेन्द्रके मिथ्यादृष्टि अवहारकालके ऊपर ब्रह्म और ब्रह्मोत्तर मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके नौवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात दशम वर्गमूलप्रमाण है । ब्रह्मद्विकके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे लान्तव और कापिष्ठके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके सातवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात आठवें वर्गमूलप्रमाण है । लान्तवद्विकके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे शुक्र और महाशुक्रके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके पांचवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात छठवें वर्गमूलप्रमाण है । शुक्रद्विकके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे शतार और सहस्रारके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीका पांचवां वर्गमूल गुणकार है । शतारद्विकके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे शतार और सहस्रारका मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपने द्रव्यका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? अपना अवहारकाल प्रतिभाग है । इसीप्रकार प्रतिलोमकमसे सानत्कुमार और माहेन्द्र कल्पके मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाण आने तक ले जाना चाहिये । सानत्कुमारद्विकके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके ऊपर वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? उन्हीं वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूचीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । अथवा, जगश्रेणीके ग्यारहवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके

वारसवग्गमूलाणि वा । को पडिभागो ? सणक्कुमार-माहिंदमिच्छाइट्टिद्व्वपडिभागो । जोइसियमिच्छाइट्टिविक्खंभसूई संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । देव-मिच्छाइट्टिविक्खंभसूई विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? संखेज्जरूवखंडिदएयखंडमेत्तेण । भवणवासिमिच्छाइट्टिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पुव्वं भणिदो । सोहम्मीसाणमिच्छाइट्टिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पुव्वं भणिदो । सेठी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? विक्खंभसूई । तस्सेव द्व्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सगविक्खंभसूई । भवणवासियमिच्छाइट्टिद्व्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? पुव्वं भणिदो । वाणवेंतरमिच्छाइट्टिद्व्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सेठीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेठिपढमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? भवण-वासिविक्खंभसूचिगुणिदसगअवहारकालपडिभागो । जोइसियमिच्छाइट्टिद्व्वं संखेज्ज-गुणं । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । देवमिच्छाइट्टिद्व्वं विसेसाहियं । केत्तियमेत्तेण ? संखेज्जरूवखंडिदएयखंडमेत्तेण । पदरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? अवहारकालो । लोगो

असंख्यात बारहवें वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? सानत्कुमार और माहेंद्र कल्पके मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण प्रतिभाग है । वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीसे ज्योतिषियोंकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची संख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । ज्योतिषी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीसे देव मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची विशेष अधिक है । कितनेमात्रसे अधिक है । ज्योतिषी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीको संख्यातसे खंडित करके जो एक खंड लब्ध आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है । देव मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीसे भवनवासी मिथ्यादृष्टि अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पहले कह आये हैं । भवनवासी मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे सौधर्म और पेशान कल्पके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पहले कह आये हैं । सौधर्म और पेशान कल्पके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे जगश्रेणी असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? विष्कंभसूची गुणकार है । जगश्रेणीसे उन्हीं सौधर्म कल्पके मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कंभसूची गुणकार है । सौधर्म और पेशान कल्पके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे भवनवासियोंका मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पहले कह आये हैं । भवनवासी मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पहले कह आये हैं जो जगश्रेणीके असंख्यातवें भाग है । जिस जगश्रेणीके असंख्यातवें भागका प्रमाण जगश्रेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूल है । प्रतिभाग क्या है ? भवनवासी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीसे अपने अवहारकालको गुणित करके जो लब्ध आवे उतना प्रतिभाग है । वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे ज्योतिषी मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । ज्योतिषी मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे देव मिथ्यादृष्टि द्रव्य विशेष अधिक है । कितनेमात्रसे अधिक है ? संख्यातसे ज्योतिषी मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाणके खंडित करने पर उनमेंसे एक खंड-

असंखेज्जगुणो ? को गुणगारो ? सेठी ।

चउगइभागाभागं वत्तइस्सामो । तं जहा- सच्चजीवरासिमणंतखंडे कए तत्थ बहुखंडा एइंदिय-विगळिंदिया होंति । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा सिद्धा होंति । सेसम-संखेज्जखंडे कए बहुखंडा पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा जोइसियमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा भवणवासियमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा पढमपुढविमिच्छाइट्ठी होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सोहम्मीसाणमिच्छाइट्ठी होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा मणुस-अपज्जत्ता होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा विदियपुढविमिच्छाइट्ठी होंति । सेसम-संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सणक्कुमार-माहिंदमिच्छाइट्ठी होंति । एवं तदियपुढवि-बम्ह-बम्होत्तर-चउत्थपुढवि-लांतवकाविट्ठ-पंचमपुढवि-सुक्कमहासुक्क-सदारसहस्सार-छट्ठपुढवि-सत्तमपुढविमिच्छाइट्ठि ति णेयव्वं । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सोहम्मीसाणअसंजद-

मात्र विशेषसे अधिक है । देव मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे जगप्रतर असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अवहारकाल गुणकार है । जगप्रतरसे लोक असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जग-श्रेणी गुणकार है ।

अब चतुर्गतिसंबन्धी भागाभागको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है— सर्व जीवराशिके अनन्त खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय जीव हैं । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभागप्रमाण सिद्ध हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्या-दृष्टि हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभागप्रमाण ज्योतिषी मिथ्यादृष्टि देव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण भवनवासी मिथ्यादृष्टि देव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि नारकी हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सौधर्म और पेशान कल्पके मिथ्यादृष्टि देव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण मनुष्य अपर्याप्त हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि नारकी हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सानत्कुमार और माहेन्द्र कल्पके मिथ्यादृष्टि देव हैं । इसीप्रकार तीसरी पृथिवी, ब्रह्म और ब्रह्मोत्तर, चौथी पृथिवी, लांतव और कापिष्ठ, पांचवी पृथिवी, शुक्र और महाशुक्र, शतार और सहस्वार, छठवी पृथिवी और सातवी पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण आनेतक ले जाना चाहिये । सातवी पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण आनेके अनन्तर शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुखंडप्रमाण सौधर्म और पेशान कल्पके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका प्रमाण है । शेष एक भागके

सम्माइट्टिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा तस्सेव सम्मामिच्छाइट्टिणो होंति । सेसं असंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सासणसम्माइट्टिणो होंति । एवं णेयव्वं जाव सदार-सहस्सरो त्ति । तदो जोइसिय-वाणवेंतर-भवणवासिय-तिरिक्ख-पढमादि जाव सत्तमपुढवि त्ति णेयव्वं । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा आणद-पाणदअसंजदसम्माइट्टिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा आरणच्चुदअसंजदसम्माइट्टिणो होंति । एवं णेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेवज्जअसंजदसम्माइट्टि त्ति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा आणद-पाणद-मिच्छाइट्टी होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा आरणच्चुदमिच्छाइट्टी होंति । एवं णेयव्वं जाव उवरिमुवरिमगेवज्जमिच्छाइट्टि त्ति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा अणु-दिसअसंजदसम्माइट्टिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा अणुत्तरविजय-वइ-जयंत-जयंत-अवराइदअसंजदसम्माइट्टी होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा आणद-पाणदसम्मामिच्छाइट्टी होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा आरणच्चुदसम्मामिच्छाइट्टी होंति । एवं णेयव्वं जाव उवरिमुवरिमगेवज्जसम्मामिच्छाइट्टि त्ति । सेसं संखेज्जखंडे कए

संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण उन्हीं सौधर्म और पेशान कल्पके सम्यग्मिथ्या-दृष्टि जीवोंका प्रमाण है । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सौधर्म और पेशान कल्पके सासादनसम्यग्दृष्टि जीव हैं । इसप्रकार शतार और सहस्रार कल्पतक ले जाना चाहिये । इसके आगे ज्योतिषी, वाणव्यन्तर, भवनवासी, तिर्यंच और प्रथमादि सातों पृथिवियोंतक ले जाना चाहिये । सातवीं पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टियोंके प्रमाणके अनन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके संख्यात खंड करने पर बहुभागप्रमाण आनत और प्राणतके असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग-प्रमाण आरण और अच्युतके असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं । इसीप्रकार उपरिम उपरिम त्रैवेयकके असंयतसम्यग्दृष्टियोंके प्रमाण आनेतक ले जाना चाहिये । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभागप्रमाण आणत और प्राणतके मिथ्यादृष्टि देव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभागप्रमाण आरण और अच्युत कल्पके मिथ्यादृष्टि देव हैं । इसीप्रकार उपरिम उपरिम त्रैवेयकके मिथ्यादृष्टि देवोंके प्रमाण आनेतक ले जाना चाहिये । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभागप्रमाण अनुदिशके असंयतसम्यग्दृष्टि देव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभागप्रमाण विजय, वैजयंत, जयन्त और अपराजित इन चार अनुत्तरोंके असंयतसम्यग्दृष्टि देव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण आनत और प्राणतके सम्यग्मिथ्यादृष्टि देव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण आरण और अच्युतके सम्यग्मिथ्यादृष्टि देव हैं । इसीप्रकार उपरिम उपरिम त्रैवेयकके सम्यग्मिथ्यादृष्टि देवोंके प्रमाण आनेतक ले जाना चाहिये । उपरिम उपरिम त्रैवेयकके सम्यग्मिथ्यादृष्टि देवोंके प्रमाणके अनन्तर शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे

बहुखंडा आणद-पाणदसासणसम्माइड्डी होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा आरण-
 च्चुदसासणसम्माइड्डी होंति । एवं णेयव्वं जाव उवरिममज्झिमसासणेत्ति । सेसमसंखेज्जखंडे
 कए बहुखंडा उवरिमउवरिमसासणसम्माइड्डी होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा
 सव्वड्ढिसिद्धिविमाणवासियदेवा होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मणुसिणीमिच्छाइड्डी
 होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मणुसपज्जत्तमिच्छाइड्डी होंति । सेसं संखेज्जखंडे
 कए बहुखंडा मणुसअसंजदसम्माइड्डी होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सम्मा-
 मिच्छाइड्डी होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सासणसम्माइड्डी होंति । सेसं संखेज्ज-
 खंडे कए बहुखंडा संजदासंजदा होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा पमत्तसंजदा
 होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा अपमत्तसंजदा होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए
 बहुखंडा सजोगित्ति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा चउण्हं खवगा । सेसं
 संखेज्जखंडे कए बहुखंडा चउण्हमुवसामगा । सेसेगखंडं अजोगिकेवली होंति । एवं
 चउग्गइभागाभागं समत्तं ।

एत्तो चउग्गइअप्पाबहुगं वत्तइस्सामो । तं जहा । सव्वत्थोवो अजोगिकेवलिरासी ।

बहुभागप्रमाण आनत और प्राणतके सासादनसम्यग्दृष्टि देव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड
 करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण आरण और अच्युतके सासादनसम्यग्दृष्टि देव हैं । इसीप्रकार
 उपरिम मध्यम त्रैवेयकके सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंका प्रमाण आनेतक ले जाना चाहिये । शेष
 एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण उपरिम उपरिम त्रैवेयकके सासा-
 दनसम्यग्दृष्टि देव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सर्वार्थ-
 सिद्धि विमानवासी देव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण
 मनुष्यनी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण
 मनुष्य पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे
 बहुभागप्रमाण मनुष्य असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर
 उनमेंसे बहुभागप्रमाण सम्यग्मिथ्यादृष्टि मनुष्य हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर
 उनमेंसे बहुभागप्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्य हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर
 उनमेंसे बहुभागप्रमाण संयतासंयत मनुष्य हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर
 उनमेंसे बहुभागप्रमाण प्रमत्तसंयत मनुष्य हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर
 उनमेंसे बहुभागप्रमाण अप्रमत्तसंयत मनुष्य हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर
 उनमेंसे बहुभागप्रमाण सयोगिकेवली जिन हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर
 उनमेंसे बहुभागप्रमाण चारों गुणस्थानके क्षपक हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर
 उनमेंसे बहुभागप्रमाण चारों गुणस्थानोंके उपशामक हैं । शेष एक खंडप्रमाण अयोगि-
 केवली जिन हैं ।

इसप्रकार चारों गतिसंबन्धी भागाभाग समाप्त हुआ ।

अब इसके आगे चारों गतिसंबन्धी अल्पबहुत्वको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है—

चउण्हमुवसामगा संखेज्जगुणा । चउण्हं खवगा संखेज्जगुणा । सजोगिकेवली संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । मणुससंजदासंजदा संखेज्जगुणा । मणुससासणा संखेज्जगुणा । सम्मामिच्छाइट्ठी संखेज्जगुणा । असंजदसम्माइट्ठी संखेज्जगुणा । मणुसपज्जत्तमिच्छाइट्ठी संखेज्जगुणा । मणुसिणीमिच्छाइट्ठी संखेज्जगुणा । सव्वड्डसिद्धि-विमाणवासियदेवा तिउणा सत्तगुणा वा । सोहम्मीसाणअसंजदसम्माइट्ठीअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सव्वड्डसिद्धिदेवपडिभागो । सम्मामिच्छाइट्ठीअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । सासणसम्माइट्ठीअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । एवं णेयव्वं जाव सदार-सहस्सरो त्ति । तदो जोइसिय-वाणवेंतर-भवनवासियदेवि त्ति णेयव्वं । तदो तिरिक्खअसंजदसम्माइट्ठी अवहारकालो असंखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाइट्ठीअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइट्ठीअवहारकालो संखेज्जगुणो ।

अयोगिकेवली जीवराशि सबसे स्तोक है । इससे चारों गुणस्थानोंके उपशामक संख्यातगुणे हैं । चारों गुणस्थानोंके क्षपक उपशामकोंसे संख्यागुणे हैं । सयोगिकेवली क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं । अप्रमत्तसंयत जीव सयोगिकेवलियोंसे संख्यातगुणे हैं । प्रमत्तसंयत जीव अमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । मनुष्य संयतासंयत प्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्य संयतासंयत मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं । सम्यग्मिथ्यादृष्टि मनुष्य सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं । असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्य सम्यग्मिथ्यादृष्टि मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं । पर्याप्त मिथ्यादृष्टि मनुष्य असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं । मिथ्यादृष्टि मनुष्यनी पर्याप्त मिथ्यादृष्टि मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं । सर्वार्थसिद्धि विमानवासी देव मिथ्यादृष्टि मनुष्यनियोंसे तिगुणे अथवा सातगुणे हैं । सौधर्म और ऐशान कल्पके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सर्वार्थसिद्धिके देवोंसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? सर्वार्थसिद्धिके देवोंका प्रमाण प्रतिभाग है । सौधर्म और ऐशान कल्पके देवोंका सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकाल उन्हींके असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । उन्हींके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल उन्हींके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । इसीप्रकार शतार और सहस्रार कल्पक ले जाना चाहिये । शतार और सहस्रार कल्पके सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे ज्योतिषी, वाणव्यन्तर और भवनवासी देवियों तक ले जाना चाहिये । भवनवासी देवियोंके सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे तिर्यचोंका असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकाल असंख्यातगुणा है । इससे उन्हींका सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकाल असंख्यातगुणा है । इससे उन्हींका सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकाल संख्यातगुणा

१ तिगुणा सत्तगुणा वा सव्वड्डा माणुसीपमाणादो । गो. जी. १६३.

संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तदो पढमपुढविअसंजदसम्माइड्डिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाइड्डिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइड्डिअवहारकालो संखेज्जगुणो । एवं णेयव्वं विदियादि जाव सत्तमपुढवि ति । तदो आणद-पाणदअसंजद-सम्माइड्डिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । आरणच्चुदअसंजदसम्माइड्डिअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । एवं णेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेवज्जो ति । तदो आणद-पाणदमिच्छाइड्डिअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । आरणच्चुदमिच्छाइड्डिअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । एवं णेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेवज्जो ति । तदो अणुदिसअसंजदसम्माइड्डिअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । अणुत्तरविजय-वइजयंत-जयंत-अपराजिद-असंजदसम्माइड्डिअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । तदो आणद-पाणदसम्मामिच्छाइड्डिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । आरणच्चुदसम्मामिच्छाइड्डिअवहारकालो

है । इससे उन्हींका संयतासंयत अवहारकाल असंख्यातगुणा है । तिर्येव संयतासंयतोंके अवहारकालसे प्रथम पृथिवीके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । इससे उन्हींका सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकाल असंख्यातगुणा है । इससे उन्हींका सासादन-सम्यग्दृष्टि अवहारकाल संख्यातगुणा है । इसीप्रकार दूसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवीतक ले जाना चाहिये । सातवीं पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे आनत और प्राणतके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । इससे आरण और अच्युतके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । इसीप्रकार उपरिम उपरिम त्रैवेयकतक ले जाना चाहिये । उपरिम उपरिम त्रैवेयकके असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे आनत और प्राणतके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । इससे आरण और अच्युतके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । इसीप्रकार उपरिम उपरिम त्रैवेयकतक ले जाना चाहिये । उपरिम उपरिम त्रैवेयकके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे अनुविशके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । अनुविशोंके असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे विजय, वैजयन्त, जयन्त और अपराजित इन अनुत्तरवासी देवोंका असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकाल संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । इससे आनत और प्राणतके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । इससे आरण और अच्युतके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । इसीप्रकार

संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । एवं णेयच्चं जाव उवरिमउवरिमगेवज्जो ति । तदो आणद-पाणदसासणसम्माइड्डिअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । आरणच्चुदसासणसम्माइड्डिअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । एवं णेयच्चं जाव उवरिमउवरिमगेवज्जो ति । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । उवरिममज्झिमसासण-सम्माइड्डिदव्वं संखेज्जगुणं । एवमवहारकालपडिलोमेण णेयच्चं जाव सोहम्मीसाणअसंजद-सम्माइड्डिदव्वं ति । तदो पलिदोवमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? अवहारकालो । सोहम्मी-साणविकखंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सूचिअंगुलपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदि-भागो असंखेज्जाणि विदियवग्गमूलाणि । केत्तियमेत्ताणि ? तदियवग्गमूलस्स असंखेज्जदि-भागमेत्ताणि । को पडिभागो ? पलिदोवमपडिभागो । मणुसअपज्जत्तअवहारकालो असं-खेज्जगुणो । को गुणगारो ? सूचिअंगुलविदियवग्गमूलं । णेरइयमिच्छाइड्डिविकखंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सूचिअंगुलतदियवग्गमूलं । भवणवासियमिच्छाइड्डि-विकखंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? णेरइयमिच्छाइड्डिविकखंभसूई । पंचिदिय-

उपरिम उपरिम त्रैवेयकतक ले जाना चाहिये । उपरिम उपरिम त्रैवेयकके सम्यग्मिथ्या-दृष्टियोंके अवहारकालसे आन्त और प्राणतके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । इससे आरण और अच्युतके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । इसीप्रकार उपरिम उपरिम त्रैवेयकतक ले जाना चाहिये । उपरिम उपरिम त्रैवेयकके सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे उर्हींका द्रव्यप्रमाण असंख्यातगुणा है । इससे उपरिम मध्यम त्रैवेयकके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य संख्यातगुणा है । इसप्रकार अवहार-कालके प्रतिलोम क्रमसे जब सौधर्म और ऐशानकल्पके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य आवे तबतक ले जाना चाहिये । सौधर्मद्विकके असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्यसे पत्योपम असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाल गुणकार है । पत्योपमसे सौधर्म और ऐशान-कल्पके मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो सूच्यंगुलके असंख्यात द्वितीय वर्गप्रमाण है । वे असंख्यात द्वितीय वर्गमूल कितने हैं ? सूच्यंगुलके तृतीय वर्गमूलके असंख्यातवें भागमात्र हैं । प्रतिभाग क्या है ? पत्योपम प्रतिभाग है । सौधर्मद्विककी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीसे मनुष्य अपर्याप्त अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? सूच्यंगुलका द्वितीय वर्ग-मूल गुणकार है । मनुष्य अपर्याप्त अवहारकालसे नारक मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? सूच्यंगुलका तृतीय वर्गमूल गुणकार है । नारक मिथ्यादृष्टि विष्कंभ-सूचीसे भवनवासियोंकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? नारक

१ प्रतिषु ' पलिदोवम संखेज्जगुणं ' इति पाठः ।

तिरिक्खमिच्छाइट्टिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सूचिअंगुलपढमवग्ग-
मूलस्स असंखेज्जदिभागो । पंचिदियतिरिक्खअपज्जत्तअवहारकालो विसेसाहियो । केत्तिय-
मेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदमेत्तेण । पंचिदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छा-
इट्टिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जदि-
भागो । देवमिच्छाइट्टिअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । जोइ-
सियमिच्छाइट्टिअवहारकालो विसेसाहियो । केत्तियमेत्तेण ? संखेज्जरूवेहिं खंडिदएयखंड-
मेत्तेण । वाणवंतरमिच्छाइट्टिअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जसमया ।
पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्टिअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्ज-
समया । विदियपुढविमिच्छाइट्टिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? वारहवग्ग-
मूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि तेरसवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? जोणिणीअव-

मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची गुणकार है । भवनवासी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीसे पंचेन्द्रिय
तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? सूच्यंगुलके प्रथम
वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है । पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे
पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंका अवहारकाल विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ?
आवलीके असंख्यातवें भागसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालको खंडित करके
जो एक भाग लब्ध आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है । पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त अवहारकालसे
पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ?
आवलीके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग गुणकार है । पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त
अवहारकालसे देव मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ?
संख्यात समय गुणकार है । देव मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे ज्योतिषी मिथ्यादृष्टियोंका
अवहारकाल विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? देव मिथ्यादृष्टियोंके
अवहारकालको संख्यातसे खंडित करके जो एक खंड लब्ध आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक
है । ज्योतिषी मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल
संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टियोंके
अवहारकालसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा
है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंके अव-
हारकालसे दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार
क्या है ? जगश्रेणीके वारहवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके
असंख्यात तेरहवें वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? योनिमतियोंका अवहारकाल प्रतिभाग

१ प्रतिपु ' संखेज्ज० असंखेज्ज० ' इति पाठः ।

हारकालपडिभागो । तदो सणक्कुमारमाहिंद-तदियपुढवि-ब्रम्हब्रम्होत्तर-चउत्थपुढवि-लांतव-
काविट्ट-पंचमपुढवि-सुकमहासुक-सदारसहस्सार-छट्ट-सत्तमपुढवीणं मिच्छाइट्टिविक्खंभवहारकालो
कमेण असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेटिवारसमेक्कारसम-दसम-णवम-अट्टम-सत्तम-छट्टम-
पंचम-चउत्थ-तदियवग्गमूलानि जहाकमेण गुणगारा । तदो सत्तमपुढविअवहारकालस्सुवरि
तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? पढमवग्गमूलं । तदो छट्टपुढवि-सदारसहस्सार-सुक-
महासुक-पंचमपुढवि-लांतवकाविट्ट-चउत्थपुढवि-ब्रम्हवम्होत्तर-तइयपुढवि-सणक्कुमारमाहिंद-
विदियपुढवीणं मिच्छाइट्टिविक्खं कमेण असंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सेटितदिय-चउत्थ-
पंचम-छट्ट-सत्तम-अट्टम-णवम-दसम-एक्कारसम-वारसमवग्गमूलानि जहाकमेण गुणगारा ?
तदो विदियपुढविमिच्छाइट्टिविक्खंभसूई पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्टिविक्खंभसूई
असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? वारसमवग्गमूलस्स असंखेज्जादिभागो असंखेज्जाणि
तेरसवग्गमूलानि । वाणवेंतरमिच्छाइट्टिविक्खंभसूई संखेज्जगुणा । को गुणगारो ?
संखेज्जसमया । जोइसियमिच्छाइट्टिविक्खंभसूई संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्ज-
समया । देवमिच्छाइट्टिविक्खंभसूई विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? संखेज्जसमय-

है । दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे सानत्कुमार-माहेन्द्र, तीसरी पृथिवी, ब्रह्म-
ब्रह्मोत्तर, चौथी पृथिवी, लान्तव-कापिष्ठ, पांचवीं पृथिवी, शुक-महाशुक, शतार-सहस्रार
छठवीं और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल क्रमसे असंख्यातगुणा है । गुणकार
क्या है ? जगश्रेणीका बारहवां, ग्यारहवां, दशवां, नौवां, आठवां, सातवां, छठा, पांचवां, चौथा
तीसरा वर्गमूल क्रमसे गुणकार है । तदनन्तर सातवीं पृथिवीके अवहारकालके ऊपर उसीका
मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीका प्रथम वर्गमूल गुणकार
है । इससे छठी पृथिवी, शतार-सहस्रार, शुक-महाशुक, पांचवी पृथिवी, लावत-कापिष्ठ,
चौथी पृथिवी, ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर, तीसरी पृथिवी, सानत्कुमार-माहेन्द्र और दूसरी पृथिवीके
मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य क्रमसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीका तीसरा,
चौथा, पांचवां, छठा, सातवां, आठवां, नौवां, दशवां, ग्यारहवां और बारहवां वर्गमूल क्रमसे
गुणकार हैं । अनन्तर दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके ऊपर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती
मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके बारहवें
वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात तेरहवें वर्गमूलप्रमाण है ।
इससे वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची संख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? संख्यात
समय गुणकार है । इससे ज्योतिषी मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची संख्यातगुणी है । गुणकार
क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । इससे देव मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची विशेष अधिक
है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है । संख्यात समयोंसे ज्योतिषी मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभ-
सूचीको खंडित करके जो एक भाग लब्ध आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है । इससे पंचेन्द्रिय

खंडिदएयखंडमेत्तेण । पंचिदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्टिविक्खंभसूई संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्जगुणमया । पंचिदियतिरिक्खअपज्जत्तविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जदिभागो । पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्टिविक्खंभसूई विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदएयखंडमेत्तेण । भवणवासियमिच्छाइट्टिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सूचिअंगुलपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो । पढमपुढविमिच्छाइट्टिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? णेरइयविक्खंभसूई । मणुसअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सूचिअंगुलतदियवग्गमूलं । सोहम्मीसाणमिच्छाइट्टिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सूचिअंगुलविदियवग्गमूलं । सेठी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? विक्खंभसूई । सोहम्मीसाणमिच्छाइट्टिदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? विक्खंभसूई । पढमपुढविमिच्छाइट्टिदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सोहम्मीसाणविक्खंभसूई । भवणवासियमिच्छाइट्टिदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? णेरइयमिच्छाइट्टिविक्खंभसूई । पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्टिदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सेठीए असंखेज्जदिभागो असंखे-

तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची संख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । इससे पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंकी विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? आवलीके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग गुणकार है । इससे पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? आवलीके असंख्यातवें भागसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंकी विष्कंभसूचीको खंडित करके जो एक खंड लब्ध आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है । इससे भवनवासियोंका मिथ्यादृष्टि अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है । इससे पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? नारकियोंकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची गुणकार है । पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे मनुष्य अपर्याप्तोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? सूच्यंगुलका तृतीय वर्गमूल गुणकार है । मनुष्य अपर्याप्तोंके द्रव्यसे सौधर्म और पेशानके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? सूच्यंगुलका द्वितीय वर्गमूल गुणकार है । सौधर्मद्विकके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे जगश्रेणी असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? विष्कंभसूची गुणकार है । जगश्रेणीसे सौधर्म और पेशानके मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कंभसूची गुणकार है । सौधर्मद्विकके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे पहली पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? सौधर्म और पेशानकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची गुणकार है । पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे भवनवासी मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? नारकियोंकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची गुणकार है । भवनवासी मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टि द्रव्य

ज्जाणि सेट्ठिपढमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? असंखेज्जाणि घणंगुलाणि पडिभागो । केत्तियमेत्ताणि ? संखेज्जसूईपढमवग्गमूलमेत्ताणि । वाणवैतरमिच्छाइट्ठिदव्वं संखेज्जगुणं । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । जेइसियमिच्छाइट्ठिदव्वं संखेज्जगुणं । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । देवमिच्छाइट्ठिदव्वं विसेसाहियं । केत्तियमेत्तेण ? संखेज्जरूवखंडिदमेत्तेण । पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तदव्वं संखेज्जगुणं । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । पंचिंदिय-तिरिक्खअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । पंचि-दियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिदव्वं विसेसाहियं । केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभाग-खंडिदमेत्तेण । पदरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सगअवहारकालो । लोगमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सेठी । सिद्धा अणंतगुणा । को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? लोगपडिभागो । एइंदिय-विगलेंदिया अणंत-गुणा । को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धेहिं वि अणंतगुणो जीववग्गमूलस्स

असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? असंख्यात घनांगुल प्रतिभाग है । उन असंख्यात घनांगुलोंका प्रमाण कितना है ? सूच्यंगुलके संख्यात प्रथम वर्गमूलोंका जितना प्रमाण हो उतना है । पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंके द्रव्यसे वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । वाण-व्यन्तर मिथ्यादृष्टियोंके द्रव्यसे ज्योतिषी मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । ज्योतिषी मिथ्यादृष्टियोंके द्रव्यसे देव मिथ्यादृष्टि द्रव्य विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? संख्यातसे ज्योतिषी मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाणको खंडित करके जो एक भाग लब्ध आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है । देव मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यात-गुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि द्रव्य विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? आवलीके असंख्यातवें भागसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त मिथ्यादृष्टि द्रव्यको खंडित करके जो एक खंड लब्ध आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है । पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे जगप्रतर असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाल गुणकार है । जगप्रतरसे लोक असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणी गुणकार है । लोकसे सिद्ध अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अभव्यसिद्धोंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? लोक प्रतिभाग है । सिद्धोंसे पंचेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय जीव अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अभव्यसिद्धोंसे अनन्तगुणा, सिद्धोंसे भी अनन्तगुणा, जीवराशिके प्रथम वर्गमूलसे भी अनन्तगुणा और भव्यसिद्ध जीवोंके अनन्त

वि अणंतगुणो भवसिद्धियजीवणमणंताभागस्स अणंतिमभागो । को पडिभागो ? सिद्धपडि-
भागो । एवं चदुगदिअप्पावहुगं समत्तं ।

एवं गइमग्गणा समत्ता ।

**इंदियाणुवादेण एइंदिया बादरा सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता द्व्व-
पमाणेण केवडिया ? अणंता' ॥ ७४ ॥**

एत्थ एइंदियगहणेण सेसिंदियाणं पडिसेहो कदो भवदि । सुहुमपडिसेहट्ठं बादर-
ग्गहणं । बादरपडिसेहफलो सुहुमणिहेसो । अपज्जत्तपडिसेहफलो पज्जत्तणिहेसो । पज्जत्त-
पडिसेहफलो अपज्जत्तणिहेसो । एइंदिया बादरेइंदिया सुहुमेइंदिया पज्जत्ता अपज्जत्ता च
एदे णव वि रासीओ द्व्वपमाणेण केवडिया इदि पुच्छिदं होदि (किमट्ठं सव्वत्थ पण्हपुव्वं
परिमाणं वुच्चदे ? ण एस दोसो, मंदबुद्धिसिस्साणुग्गहणट्ठत्तादो । अणंता इदि परिमाणणिहेसो
संखेज्ज-असंखेज्जपरिमाणपडिसेहफलो । सेसं जहा मूलोघसुत्ते वुत्तं तहा वत्तव्वं)

बहुभागोंका अनन्तर्वां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? सिद्धराशि प्रतिभाग है । इसप्रकार
चारों गतिसंबन्धी अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

इसप्रकार गतिमार्गणा समाप्त हुई ।

इन्द्रिय मार्गणाके अनुवादसे एकेन्द्रिय, एकेन्द्रिय पर्याप्त, एकेन्द्रिय
अपर्याप्त, बादर एकेन्द्रिय, बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त, बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त, सूक्ष्म
एकेन्द्रिय, सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त और सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव द्रव्यप्रमाणकी
अपेक्षा कितने हैं ? अनन्त हैं ॥ ७४ ॥

इस सूत्रमें एकेन्द्रिय पदके ग्रहण करनेसे शेषेन्द्रिय जीवोंका निषेध किया है । सूक्ष्म
जीवोंका प्रतिषेध करनेके लिये बादर पदका ग्रहण किया है । बादर जीवोंका निषेध करनेके
लिये सूक्ष्म पदका ग्रहण किया है । अपर्याप्त जीवोंका निषेध करनेके लिये पर्याप्त पदका
ग्रहण किया है । और पर्याप्त जीवोंका निषेध करनेके लिये अपर्याप्त पदका ग्रहण किया
है । एकेन्द्रिय जीव, बादर एकेन्द्रिय जीव और सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव ये तीन राशियां तथा
ये तीनों पर्याप्त और तीनों अपर्याप्त, इसप्रकार कुल नौ जीवराशियां द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा
कितनी हैं, यहां पेसा पूंछनेका अभिप्राय है ।

शंका—सर्वत्र प्रश्नपूर्वक परिमाण (संख्या) किसलिये कहा जाता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, मन्दबुद्धि शिष्योंके अनुग्रहके लिये
पेसा कहा गया है ।

संख्यात और असंख्यातका निषेध करनेके लिये सूत्रमें अनन्तरूप परिमाणका निर्देश

१ एकेन्द्रिया मिय्याट्ठयोऽनन्तानन्ताः । स. सि. १, ८. तसहीणो संसारी एयक्खा ताण संखगा भागा ।
पुण्णाणं परिमाणं संखेज्जदिमं अपुण्णाणं ॥ गो. जी. १७६.

अणंताणंताहि ओसपिणि-उस्सपिणीहि ण अवहिरंति कालेण ॥ ७५ ॥

अदीदकालो ओसपिणि-उस्सपिणिपमाणेण कीरमाणो अणंतोसपिणि-उस्सपिणि-पमाणं होदि । तेण तारिसेण वि अदीदकालेण एदे णव वि रासीओ ण अवहिरिज्जंति । एइंदिएहिंतो एगजीवमाइं काऊण जा उक्कस्सेण पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता जीवा तसकाइएसुप्पज्जंति । तसकाइया वि एगजीवमाइं काऊण जा उक्कस्सेण पदरस्स असंखे-ज्जदिभागमेत्ता एइंदिएसुप्पज्जंति । वादेरेइंदिया विसयं पडि अणंता सुहुमेइंदिएसुप्पज्जंति । सुहुमेइंदिया वि तत्तिया चेव वादेरेइंदिएसुप्पज्जंति । एवं चेव सव्वेसिं पज्जत्ताणमपज्जत्ताणं च वत्तव्वं । तदो सरिसाय-व्वयत्तादो एदेसिं णवण्हं रासीणं वोच्छेदो तिसु वि कालेसु णत्थि त्ति अणुत्तसिद्धीदो एदं सुत्तं णादेरेदव्वमिदि । एत्थ परिहारो बुच्चदे । तं जहा-एदेसिं णवण्हं रासीणं जदि आय-व्वया सरिसा हवंति तो एदं सुत्तं णादेरेदव्वं भवदि । किं तु आयादो वओ अब्भहिओ । कुदो ? तत्तो णिप्फदिऊण तसेसुप्पज्जिय सम्मत्तं धेत्तूण किया है । शेष कथन जिसप्रकार मूलोद्य सूत्रमें कह आये हैं उसप्रकार जानना चाहिये ।

कालप्रमाणकी अपेक्षा पूर्वोक्त एकेन्द्रिय जीव आदि नौ राशियां अनन्तानन्त अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत नहीं होती हैं ॥ ७५ ॥

अतीत कालको अवसर्पिणी और उत्सर्पिणीके प्रमाणसे करने पर अनन्त अवसर्पिणी और उत्सर्पिणीप्रमाण अतीत काल होता है । इसप्रकारके भी उस अतीत कालके द्वारा ये नौ राशियां अपहृत नहीं होती हैं ।

शंका — एकेन्द्रियोंमेंसे एक जीवको आदि करके उत्कृष्टरूपसे जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण जीव त्रसकायिकोंमें उत्पन्न होते हैं और त्रसकायिक भी एक जीवको आदि करके उत्कृष्टरूपसे जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण जीव एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न होते हैं । विषयकी अपेक्षा अनन्त बादर एकेन्द्रिय जीव सूक्ष्म एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न होते हैं और सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव भी उतने ही बादर एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न होते हैं । इसप्रकार सभी पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंका भी कथन करना चाहिये । इसप्रकार समान आय और व्यय होनेसे इन नौ राशियोंका विच्छेद तीनों भी कालोंमें नहीं होता है, इसलिये यह कथन अनुक्तसिद्ध होनेसे यह सूत्र ग्रहण करने योग्य नहीं है ?

समाधान — आगे पूर्वोक्त कथनका परिहार किया जाता है । वह इसप्रकार है — इन पूर्वोक्त नौ राशियोंका आय और व्यय यदि समान हो तो यह सूत्र ग्रहण करने योग्य नहीं होवे, किन्तु इन राशियोंका आयसे व्यय अधिक है, क्योंकि, पूर्वोक्त नौ राशियोंमेंसे निकल कर और त्रसोंमें उत्पन्न होकर तथा सम्यक्त्वको ग्रहण करके जिन संसारी जीवोंने एकेन्द्रिय-

विणासिदएहंदिप-वीहंदिप-तीहंदिप-चउरिंदिय-असण्णिपंचिंदिय-णेरइय-तिरिक्ख-भवणवासिय-
वाणवेंतर-जोइसिय-इत्थि-णवुंसय-हय-गय-गंधव्व-णागादि-संसारिजीवाणं पुणो तेसु पवेसा-
भावादो । तदो एदे णव वि रासीओ वयसहिया णिच्छएण हवंति । एवं हि वए संते
वि एदे णव वि रासीओ ण वोच्छेज्जंति^१ सरागसरुवेण द्विदअदीदकालत्तादो । सव्व-
जीवरासीदो अदीदकाले अणंतगुणे संते अदीदकालेण सव्वजीवा अवहिरिज्जंति । ण च एवं,
तथा अणुवलंभादो । जं तेण कालेण सव्वजीवाणं वोच्छेदो किण्ण होदि त्ति भणिदे ण,
अभव्वपडिवक्खवोच्छेदे अभव्वत्तस्स विधिणासप्पसंगादो (संसं वक्खणं जहा ओघकाल-
सुत्तमिह भणिदं तथा वत्तव्वं ।)

खेत्तेण अणंताणता लोगा ॥ ७६ ॥

एदस्स सुत्तस्स वक्खणो भण्णमाणे जहा मूलोघखेत्तसुत्तस्स भणिदं तथा भणिदव्वं ।
णवरि एत्थ धुवरासी एवमुप्पाएदव्वो । तं जहा— वेहंदिप-तेहंदिप-चउरिंदिय-पंचिंदिय-

द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय असंज्ञीपंचेन्द्रिय, नारकी, तिर्यंच, भवनवासी, वाणव्यन्तर,
ज्योतिषी, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, घोड़ा, हाथी, गंधर्व और नाग आदि पर्यायोंका नाश
कर दिया है वे पुनः उन पर्यायोंमें प्रवेश नहीं करते हैं, इसलिये ये नौ राशियां नियमसे
व्ययसहित हैं । इसप्रकार इन नौ राशियोंके व्ययसहित होने पर भी ये नौ राशियां कभी भी
विच्छिन्न नहीं होती हैं, क्योंकि, अतीतकालसे वे अपने सरागस्वरूपसे स्थित हैं । यदि
संपूर्ण जीवराशिके अतीतकाल अनन्तगुणा होता तो अतीतकालसे संपूर्ण जीवराशि अपहृत
होती; परंतु ऐसा तो है नहीं, क्योंकि, इसप्रकारकी उपलब्धि नहीं होती है ।

शंका— उस अतीत कालके द्वारा संपूर्ण जीवराशिका विच्छेद क्यों नहीं होता है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, अभव्यराशिकी प्रतिपक्षभूत भव्यराशिकत विच्छेद मान
लेने पर अभव्यत्वकी सत्ताके नाशका प्रसंग आ जाता है ।

शेष व्याख्यान ओघप्ररूपणाके कालसूत्रमें जिसप्रकार कर आये हैं उसप्रकार उसका
कथन करना चाहिये ।

क्षेत्रप्रमाणकी अपेक्षा पूर्वोक्त एकेन्द्रियादि नौ जीवराशियां अनन्तानन्त लोकप्रमाण
हैं ॥ ७६ ॥

इस सूत्रका व्याख्यान करने पर जिसप्रकार मूलोघ प्ररूपणाके समय क्षेत्रसूत्रका
अर्थ कह आये हैं उसप्रकार कथन करना चाहिये । परंतु यहां पर धुवराशि इसप्रकार उत्पन्न
करना चाहिये । वह इसप्रकार है—

द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय और अनिन्द्रिय जीवोंकी राशिको संपूर्ण जीव

१ प्रतिषु ' वोच्छेज्जंतो ' इति पाठः ।

अणिदियाणं रासिं सव्वजीवरासिस्सुवरि पक्खिविय तस्स चैव वग्गं एइंदियभाजिदं तत्थेव पक्खित्ते एइंदियधुवरासी होदि । तं संखेज्जरूवेहि भागे हिदे लद्धं तम्हि चैव पक्खित्ते एइंदियपज्जत्तधुवरासी होदि । एइंदियधुवरासिं संखेज्जरूवेहि गुणिदे एइंदियअपज्जत्तधुवरासी होदि । पुणो एइंदियधुवरासिमसंखेज्जलोएण गुणिदे वादरेइंदियधुवरासी होदि । तमसंखेज्जलोएण गुणिदे वादरेइंदियपज्जत्ताणं धुवरासी होदि । तमसंखेज्जलोएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चैव पक्खित्ते वादरेइंदियअपज्जत्ताणं धुवरासी होदि । सामण्णेइंदियधुवरासिमसंखेज्जलोएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चैव पक्खित्ते सुहुमेइंदियधुवरासी होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि भागे हिदे लद्धं तम्हि चैव पक्खित्ते सुहुमेइंदियपज्जत्तधुवरासी होदि । सामणसुहुमेइंदियधुवरासिं संखेज्जरूवेहि गुणिदे सुहुमेइंदियअपज्जत्तधुवरासी होदि । सग्गसग्गधुवरासीहि सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे खंडिदादओ ओघमिच्छाइट्ठीणं व वत्तव्वा । णवरि पमाणं भण्णमाणे एइंदियाणं ओघभंगो । एइंदियपज्जत्ता सव्वजीवरासिस्स संखेज्जा भागा । तेसिं चैव अपज्जत्ताणं पमाणं सव्वजीवरासिस्स संखेज्जदिभागो । वादरेइंदियाणं

राशिमें ऊपर प्रक्षिप्त करके और उन्हीं द्वीन्द्रियादि जीवोंके प्रमाणके वर्गको एकेन्द्रिय जीवराशिसे भाजित करके जो लब्ध आवे उसे उसी पूर्वोक्त राशिमें प्रक्षिप्त करने पर एकेन्द्रिय जीवराशिसंबन्धी ध्रुवराशि होती है । इसे संख्यातसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी पूर्वोक्त ध्रुवराशिमें मिला देने पर एकेन्द्रिय पर्याप्तसंबन्धी ध्रुवराशि होती है । एकेन्द्रिय जीवसंबन्धी ध्रुवराशिको संख्यातसे गुणित करने पर एकेन्द्रिय अपर्याप्तसंबन्धी ध्रुवराशि होती है । पुनः एकेन्द्रिय जीवसंबन्धी ध्रुवराशिको असंख्यात लोकसे गुणा करने पर बादर एकेन्द्रिय जीवसंबन्धी ध्रुवराशि होती है । इसे असंख्यात लोकसे गुणित करने पर बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तसंबन्धी ध्रुवराशि होती है । इसमें असंख्यात लोकका भाग देने पर जो लब्ध आवे उसे उसीमें मिला देने पर बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तसंबन्धी ध्रुवराशि होती है । सामान्य एकेन्द्रियसंबन्धी ध्रुवराशिमें असंख्यात लोकका भाग देने पर जो लब्ध आवे उसको उसीमें मिला देने पर सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंकी ध्रुवराशि होती है । इसे संख्यातसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे इसी सूक्ष्म एकेन्द्रिय ध्रुवराशिमें मिला देने पर सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तसंबन्धी ध्रुवराशि होती है । सामान्य सूक्ष्म एकेन्द्रियसंबन्धी ध्रुवराशिको संख्यातसे गुणित करने पर सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तसंबन्धी ध्रुवराशि होती है । इन अपनी अपनी ध्रुवराशियोंके द्वारा संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गके ऊपर खंडित आदिकका कथन ओघ मिथ्यादृष्टियोंके खंडित आदिकके कथनके समान करना चाहिये । इतनी विशेषता है कि प्रमाणका कथन करते समय एकेन्द्रियोंका प्रमाण सामान्य प्ररूपणके समान कहना चाहिये । एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव संपूर्ण जीवराशिके संख्यात बहुभागप्रमाण हैं । उन्हीं एकेन्द्रिय अपर्याप्तका प्रमाण संपूर्ण जीवराशिके संख्यातवें भाग हैं । बादर एकेन्द्रिय तथा बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त

तेसिं पज्जत्तापज्जत्ताणं पमाणं सव्वजीवरासिस्स असंखेज्जदिभागो । सुहुमेइंदिया सव्व-
जीवरासिस्स असंखेज्जा भागा । सुहुमेइंदियपज्जत्ता सव्वजीवरासिस्स संखेज्जा भागा ।
सुहुमेइंदियापज्जत्ता सव्वजीवरासिस्स संखेज्जदिभागो । कारणमेइंदियाणं ताव बुच्चदे ।
सेसिंदियाणिदिएहि सव्वजीवरासिस्सिह भागे हिदे लद्धं विरलेऊण एकेकस्स रूवस्स
सव्वजीवरासिं समखंडं करिय दिण्णे तत्थेयखंडं सेसिंदियाणिदिया च होंति । सेसवहुखंडा
एइंदिया हवंति । सेसिंदियाणिदिय-एइंदियापज्जत्तेहि य सव्वजीवरासिस्सिह भागे हिदे लद्धं
संखेज्जरूवाणि विरलिय सव्वजीवरासिं समखंडं करिय दिण्णे तत्थ बहुखंडा एइंदियपज्जत्ता
होंति । एइंदियअपज्जत्तेहि चेव सव्वजीवरासिस्सिह भागे हिदे संखेज्जरूवाणि लब्भंति ।
ताणि विरलिय सव्वजीवरासिं समखंडं करिय दिण्णे तत्थ एगखंडं एइंदियअपज्जत्ता
होंति । सेसिंदिय-अणिदिय-वादेइंदिएहि य सव्वजीवरासिस्सिह भागे हिदे तत्थ लद्धअसं-
खेज्जदिलोगरासिं विरलिय सव्वजीवरासिं समखंडं करिय दिण्णे तत्थ बहुखंडा सुहुमेइंदिया
होंति । वि-ति चट्ठु-पंचाणिदिस्-वादेइंदियसहिदसुहुमेइंदिअपज्जत्तएहि सव्वजीवरासिस्सिह

और अपर्याप्तोंका प्रमाण संपूर्ण जीवराशिके असंख्यातवें भाग है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव संपूर्ण
जीवराशिके असंख्यात बहुभागप्रमाण हैं । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सर्व जीवराशिके
संख्यात बहुभागप्रमाण हैं । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव सर्व जीवराशिके संख्यातवें भाग हैं ।
अब एकेन्द्रियोंके प्रमाणका कारण कहते हैं- शेषेन्द्रिय अर्थात् द्वीन्द्रियादि जीव और अनिन्द्रिय
जीव इनके प्रमाणसे सर्व जीवराशिके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसको विरलित
करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सर्व जीवराशिको समान खंड करके दे देने
पर उनमेंसे एक खंडप्रमाण द्वीन्द्रियादि शेष इन्द्रियवाले और अनिन्द्रिय जीवोंका प्रमाण
होता है । शेष बहुभागप्रमाण एकेन्द्रिय जीव हैं । द्वीन्द्रियादि शेष इन्द्रियवाले, अनिन्द्रिय
और एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके प्रमाणसे सर्व जीवराशिके भाजित करने पर जो संख्यात
लब्ध आवे उसका विरलित करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सर्व जीवराशिको
समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर वहां बहुभागप्रमाण एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव होते
हैं । एकेन्द्रिय अपर्याप्तोंके प्रमाणसे भी सर्व जीवराशिके भाजित करने पर संख्यात लब्ध
आते हैं । उसे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सर्व जीवराशिको
समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर वहां एक खंडप्रमाण एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव होते हैं ।
द्वीन्द्रियादि शेष इन्द्रियवाले, अनिन्द्रिय और बादर एकेन्द्रिय जीवोंके प्रमाणसे सर्व जीव-
राशिके भाजित करने पर वहां जो असंख्यात लोकप्रमाण राशि लब्ध आवे उसे विरलित
करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सर्व जीवराशिको समान खंड करके
देयरूपसे दे देने पर वहां बहुभागप्रमाण सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव होते हैं । द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय,
चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय, अनिन्द्रिय और बादर एकेन्द्रिय जीवोंसे युक्त सूक्ष्म एकेन्द्रिय
अपर्याप्त जीवोंके प्रमाणसे सर्व जीवराशिके भाजित करने पर संख्यात लब्ध आते हैं । उसका

भागे हिदे संखेज्जरूवाणि आगच्छंति । ताणि विरलिय सव्वजीवरासिं समखंडं करिय दिण्णे तत्थ बहुखंडा सुहुमेइंदियपज्जत्ता हंति । सुहुमेइंदियअपज्जत्तेहि सव्वजीवरासिंमिह भागे हिदे तत्थ लद्धसंखेज्जरूवाणि विरलिय सव्वजीवरासिं समखंडं करिय दिण्णे तत्थे-
गखंडं सुहुमेइंदियअपज्जत्ता हंति । बादरेइंदिएहि सव्वजीवरासिंमिह भागे हिदे तत्थ लद्धअसंखेज्जलोगे विरलिय सव्वजीवरासिं समखंडं करिय दिण्णे तत्थेगरूवधरिदं बादरे-
इंदिया हंति । बादरेइंदियअपज्जत्तेहि सव्वजीवरासिंमिह भागे हिदे तत्थ लद्धअसंखेज्ज-
लोगे विरलिय सव्वजीवरासिं समखंडं करिय दिण्णे तत्थेगरूवधरिदं बादरेइंदियअपज्जत्ता
हंति । एवं बादरेइंदियपज्जत्ताणं पि वत्तव्वं । एसा चैव णिरुत्ती हवदि । कुदो ? एत्थ
कारणादो णिरुत्तीए भेदाणुवलंभादो ।

वेइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिया तस्सेव पज्जत्ता अपज्जत्ता दव्व-
पमाणेण केवडिया, असंखेज्जा' ॥ ७७ ॥

विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सर्व जीवराशिको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर वहां बहुभागप्रमाण सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव प्राप्त होते हैं । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके प्रमाणसे सर्व जीवराशिके भाजित करने पर वहां जो संख्यात अंक लब्ध आवें उनका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सर्व जीवराशिको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर वहां एक खंड प्रमाण सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव होते हैं । बादर एकेन्द्रिय जीवोंके प्रमाणसे सर्व जीवराशिके भाजित करने पर वहां जो असंख्यात लोक लब्ध आवें उन्हें विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सर्व जीवराशिको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर वहां एक विरलनके प्रति जितना प्रमाण प्राप्त हो उतने बादर एकेन्द्रिय जीव होते हैं । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके प्रमाणसे सर्व जीवराशिके भाजित करने पर वहां जो असंख्यात लोकप्रमाण राशि लब्ध आवे उसे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सर्व जीवराशिको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर वहां एक विरलनके प्रति जितना प्रमाण प्राप्त हो उतने बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव होते हैं । इसीप्रकार बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तोंका भी कथन करना चाहिये । और यही निरुक्ति है, क्योंकि, यहां पर कारणसे निरुक्तिमें भेद नहीं पाया जाता है ।

द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीव तथा उन्हींके पर्याप्त और अपर्याप्त जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं ॥ ७७ ॥

१ धावरसंखपिपिलियभमर ×× आदिगा समेदा जे । जुगवारमसंखेज्जा ॥ गो. जी. १७५. असंखेज्जा
वेइंदिया जाव असंखिज्जा चउरिंदिया । अनु. द्वा. सू. १४१ पत्र १७९.

बहूणं वीइंदियादीणं तस्सेवेति एगवयणणिहेसो कथं घडदे ? ण एस दोसो, बहूणं पि जादीए एयत्तविरोहाभावादो । एत्थ अपज्जत्तवयणेण अपज्जत्तणामकम्मोदयसहिदजीवा घेत्तव्वा । अण्णहा पज्जत्तणामकम्मोदयसहिदणिव्वत्ति-अपज्जत्तणं पि अपज्जत्तवयणेण गहणप्पसंगादो । एवं पज्जत्ता इदि वुत्ते पज्जत्तणाम-कम्मोदयसहिदजीवा घेत्तव्वा । अण्णहा पज्जत्तणामकम्मोदयसहिदणिव्वत्तिअपज्जत्तणं गहणाणुव्वत्तीदो । वि-त्ति-चउरिंदिए ति वुत्ते वीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादिणामकम्मोदय-सहिदजीवाणं गहणं । वेण्णि इंदियाणि जेसिं ते वेइंदिया इदि घेप्पमाणे को दोसो ? चे ण, अपज्जत्तकाले वट्टमाणजीवाणमिंदियाभावेण तेसिमगहणप्पसंगादो । खओवसमो इंदियं ण दव्विंदियमिंदियमिदि चे ण, सजोगिकेवल्लिस्स पणट्ठखओवसमस्स अण्णिदियत्तप्पसंगादो । होदु ? चे ण, सुत्तस्स पंचिंदियत्तपदुप्पायणादो । कम्मिह तं सुत्तमिदि चे एत्थेव । तं

शंका — द्वीन्द्रियादिक जीव बहुत हैं, अतएव उनके लिये ' तस्सेव ' इसप्रकार एक वचन निर्देश कैसे बन सकता है ?

समाधान — यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, बहुतके भी जातिसे एकत्वके प्रति कोई विरोध नहीं आता है ।

यहां सूत्रमें अपर्याप्त पदसे अपर्याप्त नामकर्मके उदयसे युक्त जीवोंका ग्रहण करना चाहिये । अन्यथा पर्याप्त नामकर्मके उदयसे युक्त निर्वृत्यपर्याप्त जीवोंका भी अपर्याप्त इस वचनसे ग्रहण प्राप्त हो जायगा । इसीप्रकार पर्याप्त ऐसा कहने पर पर्याप्त नामकर्मके उदयसे युक्त जीवोंका ग्रहण करना चाहिये । अन्यथा पर्याप्त नामकर्मके उदयसे युक्त निर्वृत्यपर्याप्त जीवोंका ग्रहण नहीं होगा । द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय, ऐसा कहने पर द्वीन्द्रिय जाति, त्रीन्द्रिय जाति और चतुरिन्द्रिय जाति नामकर्मके उदयसे युक्त जीवोंका ग्रहण करना चाहिये ।

शंका — ' जिन जीवोंके दो इन्द्रियां पाई जाती हैं वे द्वीन्द्रिय जीव हैं ' ऐसा ग्रहण करनेमें क्या दोष आता है ?

समाधान — नहीं, क्योंकि, उपर्युक्त अर्थके ग्रहण करने पर अपर्याप्त कालमें विद्यमान जीवोंके इन्द्रियां नहीं पाई जानेसे उनके नहीं ग्रहण होनेका प्रसंग प्राप्त हो जायगा ।

शंका — क्षयोपशमको इन्द्रिय कहते हैं, द्रव्येन्द्रियको इन्द्रिय नहीं कहते हैं; इसलिये अपर्याप्त कालमें द्रव्येन्द्रियोंके नहीं रहने पर भी द्वीन्द्रियादि पदोंके द्वारा उन जीवोंका ग्रहण हो जायगा ?

समाधान — नहीं, क्योंकि, यदि इन्द्रियका अर्थ क्षयोपशम किया जाय तो जिनका क्षयोपशम नष्ट हो गया है ऐसे सयोगिकेवलीको अनिन्द्रियपनेका प्रसंग आ जाता है ।

शंका — या जाने दो ?

समाधान — नहीं, क्योंकि, सूत्र सयोगिकेवलीको पंचेन्द्रियरूपसे प्रतिपादन करता है ।

जहा— पंचिदिया सासणसम्माइडिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि ति दव्वपमाणेण केवडिया, ओघमिदि ।

सुहुमद्वपरूवणद्वं सुत्तमाह—

असंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥७८॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो सुगमो ति ण बुच्चदे । एदाओ रासीओ सव्वकालमायाणु-
रूववयसहिदाओ ति ण वोच्छेदमुवहुक्कंते तदे। असंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि
अवहिरंति ति कधमेदं घडदे? सच्चं, ण वोच्छिज्जंति चेव किं तु एदासिमाणेण विणा जदि
वओ चेव भवदि तो णिच्छएण वोच्छिज्जंति । अण्णहा असंखेज्जत्ताणुववत्तादे । एदस्स-
त्थस्स अववोहणद्वं अवहिरंति ति वुत्तं ।

शंका— वह सूत्र कहाँ पर है ?

समाधान—यहाँ आगे है । यथा— 'पंचेन्द्रिय जीव सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे
लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? सामान्य प्ररूपणाके
समान पांचवें गुणस्थानतक पश्योपमके असंख्यातवें भाग और छठवेंसे संख्यात हैं ।

अब सूक्ष्म अर्थका प्ररूपण करनेके लिये सूत्र कहते हैं—

कालकी अपेक्षा द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीव तथा उन्हींके पर्याप्त
और अपर्याप्त जीव असंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत
होते हैं ॥ ७८ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है, इसलिये नहीं कहते हैं ।

शंका—ये द्वीन्द्रियादि सर्व जीवराशियां सर्व काल आयके अनुरूप व्ययसे युक्त
हैं, इसलिये यदि विच्छेदको प्राप्त नहीं होती है तो 'असंख्यात अवसर्पिणियों और
उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होती हैं, यह कथन कैसे घटित हो सकता है ?

समाधान—यह सत्य है कि उपर्युक्त द्वीन्द्रियादिक जीवराशियां विच्छिन्न नहीं
होती हैं, किन्तु इन राशियोंका आयके विना यदि व्यय ही होता तो निश्चयसे विच्छिन्न हो
जातीं । यदि ऐसा न माना जाय तो 'द्वीन्द्रियादि राशियां असंख्यात हैं' यह कथन नहीं बन
सकता है । इसी अर्थका ज्ञान करानेके लिये 'अवहिरंति' ऐसा कहा ।

विशेषार्थ—यहां सूत्रमें 'असंखेज्जाहि' पाठ है, किन्तु अर्थसंदर्भकी दृष्टिसे
वहां 'असंखेज्जासंखेज्जाहि' ऐसा पाठ प्रतीत होता है । खुदाबंध खंडके इसी प्रकरणमें इन्हीं
जीवोंकी सामान्य संख्या बतलाते हुए यह सूत्र पाया जाता है— 'असंखेज्जासंखेज्जाहि
ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ।' किन्तु यहां टीकमें भी 'असंखेज्जाहि' पद
होनेसे उसी पाठकी रक्षा की गई ।

खेत्तेण वेददिय-तीददिय-चउरिंदिय तस्सेव पज्जत्त-अपज्जत्तेहि पदर-
मवहिरदि अंगुलस्स असंखेज्जदि भागवग्गपडिभाएण अंगुलस्स संखेज्जदि
भागवग्गपडिभाएण अंगुलस्स असंखेज्जदि भागवग्गपडिभाएण ॥७९॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो वुच्चदे । तं जहा— ' जहा उद्देसो तथा णिद्देसो ' चि णायादो
पुव्वुद्धिद्वि-ति-चउरिंदियाणं पमाणं पुव्वुद्धिद्वमेव भवदि । मज्झिहं मज्झिहं सद्दुद्धिद्वपज्जत्ताणं
भवदि । अंतिहं पि अंतुद्धिद्वं तेसिमपज्जत्ताणं हवदि । एदेहि सामण्णविगलिंदिएहि तेसिं
चेव पज्जत्तेहि विगलिंदियअपज्जत्तएहि जगपदरमवहिरदि । अंगुलस्स सूचिअंगुलस्स
असंखेज्जदिभागो सूचिअंगुलमावलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदेयभागो । तस्स वग्गो
तारिसेण अवरेण गुणिदरासी पडिभागो अवहारकालो । एवं चेव अपज्जत्तसुत्तं पि
विवरेयव्वं । एवं चेव पज्जत्तसुत्तं पि वक्खाणेयव्वं । णवरि सूचिअंगुलस्स संखेज्जदिभाए

क्षेत्रकी अपेक्षा द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीवोंके द्वारा सूच्यंगुलके
असंख्यातवें भागके वर्गरूप प्रतिभागसे जगप्रतर अपहृत होता है । तथा उन्हींके पर्याप्त
और अपर्याप्त जीवोंके द्वारा क्रमशः सूच्यंगुलके संख्यातवें भागके वर्गरूप प्रतिभागसे
और सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागके वर्गरूप प्रतिभागसे जगप्रतर अपहृत होता
है ॥ ७९ ॥

अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । वह इसप्रकार है— ' उद्देशके अनुसार निर्देश किया
जाता है ' इस न्यस्यके अनुसार सर्व प्रथम कहे गये द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय
जीवोंका प्रमाण सर्व प्रथम कहा गया ही है । मध्यमें कह गये पर्याप्तोंका प्रमाण मध्यमें कहा
गया है । और अन्तमें कहा गया प्रमाण भी अन्तमें कहे गये उन्हींके अपर्याप्तकोंका है । इसके
द्वारा अर्थात् सामान्य विकलत्रयोंके द्वारा, उन्हींके पर्याप्तकोंके द्वारा और विकलेन्द्रिय
अपर्याप्तकोंके द्वारा जगप्रतर अपहृत होता है । यहाँ पर अंगुलसे तात्पर्य सूच्यंगुलका और
उसके असंख्यातवें भागसे तात्पर्य सूच्यंगुलको आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके
जो एक भाग लब्ध आवे उससे है । उस सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागका वर्ग इसका यह
तात्पर्य हुआ कि उस सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागको तत्प्रमाण दूसरी राशिसे गुणित कर
दो । ऐसा करने पर जो राशि उत्पन्न होगी वह यहाँ पर प्रतिभाग अर्थात् अवहारकाल है ।
इसीप्रकार अपर्याप्त-सूत्रका भी स्पष्टीकरण करना चाहिये और इसीप्रकार पर्याप्त-सूत्रका भी
व्याख्यान करना चाहिये । इतना विशेष है कि सूच्यंगुलके संख्यातवें भागके वर्गित करने पर

१ द्वीन्द्रियात्रीन्द्रियाश्चतुरिन्द्रिया असंख्येयाः श्रेणयः प्रतरासंख्येयभागप्रमिताः । स. सि. १, ८. पज्जत्ता-
पज्जत्ता वितिचउ ×× अवहरंति । अंगुलसंख × × पप्समइयं पुदो पयरं ॥ पञ्चसं. २, १२.

वग्गिदे पज्जत्ताणमवहारकालो होदि । तेण पडिभाएण । पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागं सलागभूदं ठविय विगल्लिंदियअपज्जत्तेहि जगपदरे अवहिरिज्जमाणे सलागाहि सह जग-पदरं समप्पदि । पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागं सलागभूदं ठविय विगल्लिंदियपज्जत्तेहि जग-पदरे अवहिरिज्जमाणे सलागाहि सह जगपदरं समप्पदि त्ति जं वुत्तं होदि ।

पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्तएसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेजा' ॥ ८० ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो सुगमो त्ति ण वुत्तदे ।

असंखेज्जासंखेजाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ८१ ॥

एदस्स वि सुत्तस्स अत्थो सुगमो त्ति ण वुत्तदे ।

खेत्तेण पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्तएसु मिच्छाइट्ठीहि पदरमवहिरदि अंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण अंगुलस्स संखेज्जदिभाग-वग्गपडिभाएण' ॥ ८२ ॥

पर्याप्तोंका अवहारकाल होता है । इस प्रतिभागसे । प्रतरांगुलके असंख्यातवें भागको शलाकारूपसे स्थापित करके विकलेन्द्रिय अपर्याप्तोंके द्वारा जगप्रतरके पुनः पुनः अपहृत करने पर अर्थात् घटाने पर शलाकाओंके साथ जगप्रतर समाप्त होता है । तथा प्रतरांगुलके संख्यातवें भागको शलाकारूपसे स्थापित करके विकलेन्द्रिय पर्याप्तकोंके द्वारा जगप्रतरके पुनः पुनः अपहृत करने पर शलाकाओंके साथ जगप्रतर समाप्त होता है, यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंमें मिथ्यादृष्टि द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं ॥ ८० ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है, इसलिये नहीं कहते हैं ।

कालकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ८१ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है, इसलिये नहीं कहते हैं ।

क्षेत्रकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंमें मिथ्यादृष्टियोंके द्वारा सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागके वर्गरूप प्रतिभागसे और सूच्यंगुलके संख्यातवें भागके वर्गरूप प्रतिभागसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ ८२ ॥

१ × × मणुस्सादिगा समेदा जे । जुगवारमसंखेज्जा ॥ गो. जी. १७५.

२ पञ्चेन्द्रियेषु मिथ्यादृष्टयोऽसंख्येयाः श्रेण्यः प्रतरासंख्येयभागप्रमिताः । स. सि. १, ८, प्रतिषु 'संखे-ज्जदिभायपडिभाएण' इति पाठः ।

‘ जहा उहेसो तहा णिहेसो ’ ति णायादो अंगुलस्स असंखेज्जदिभागस्स वग्गो पंचिदियाणं जगपदरस्स पडिभागो होदि । सूचिअंगुलस्स संखेज्जदिभागस्स वग्गो जगपदरस्स पडिभागो होदि पंचिदियपज्जत्ताणं । पडिभागो भागहारो ति एयट्ठो । विगलिदियसुत्तेण सह पंचिदियसुत्तं किमिदि ण वुत्तं ? ण एस दोसो, उवरिमगुणपडिवणसुत्तस्स पंचिदियत्ताणुवट्ठावणट्ठादो पुध पंचिदियसुत्तं वुच्चदे । तत्थ द्वियपंचिदियणिहेसो किमिदि णाणुवट्ठाविज्जदे ? ण, एगजोगणिद्विट्ठाणमेगेदसस्स अणुवट्ठणाभावादो ।

संपहि उवरि वुच्चमाणअप्पावहुगअणियोगहारसुत्तवलेण पुव्वाइरिओवएसबलेण च एदेण सुत्तेण सूचिदविगल-सयलिदियाणमवहारकालविसेसे भणिस्सामो । तं जहा— आवलियाए असंखेज्जदिभाएण सूचिअंगुले भागे हिदे तत्थ जं लद्धं तं वग्गिदे वेहंदियाणमवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते वेहंदिय-अपज्जत्तअवहारकालो होदि । तं आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव

‘ उद्देशके अनुसार निर्देश होता है ’ इस न्यायके अनुसार अंगुलके असंख्यातवें भागका वर्ग पंचेन्द्रिय जीवोंका प्रमाण लानेके लिये जगप्रतरका प्रतिभाग है, और सूच्यंगुलके संख्यातवें भागका वर्ग पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका प्रमाण लानेके लिये जगप्रतरका प्रतिभाग है । प्रतिभाग और भागहार ये दोनों एकार्थवाची शब्द हैं ।

शंका—विकलेन्द्रियोंके प्रमाणके प्रतिपादक सूत्रके साथ पंचेन्द्रियोंके प्रमाणका प्रतिपादक सूत्र क्यों नहीं कहा ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, आगे कहे जानेवाले गुणप्रतिपन्न जीवोंके सूत्रमें पंचेन्द्रियत्वकी अनुवृत्ति करनेके लिये पृथक् रूपसे पंचेन्द्रियोंके प्रमाणका प्रतिपादक सूत्र कहा ।

शंका—विकलेन्द्रियोंके प्रमाणके प्रतिपादक सूत्रके साथ पंचेन्द्रियोंके प्रमाणके प्रतिपादक सूत्रके एकत्र कर देने पर वहां स्थित पंचेन्द्रिय पदके निर्देशकी अनुवृत्ति क्यों नहीं होती है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, एक योगरूपसे निर्दिष्ट अनेक पदोंमेंसे एक देशकी अनुवृत्ति नहीं होती है ।

अब आगे कहे जानेवाले अल्पबहुत्व अनुयोगद्वारके सूत्रके बलसे और पूर्वाचार्योंके उपदेशके बलसे इस सूत्रके द्वारा सूचित विकलेन्द्रिय और सकलेन्द्रिय जीवोंके अवहारकाल विशेषोंको कहते हैं । वे इसप्रकार हैं— आवलीके असंख्यातवें भागसे सूच्यंगुलके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसको वर्गित करने पर द्वीन्द्रिय जीवोंका अवहारकाल होता है । द्वीन्द्रियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी द्वीन्द्रियोंके अवहारकालमें मिला देने पर द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंका अवहारकाल होता है । इस द्वीन्द्रिय अपर्याप्तकोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित

पक्खित्ते तेइंदियअवहारकालो होदि । पुणो तम्मिह चैव आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे जं लद्धं तं तम्मिह चैव पक्खित्ते तेइंदियअपज्जत्ताणमवहारकालो होदि । एवं चउरिंदिय-चउरिंदियअपज्जत्त-पंचिंदिय-पंचिंदियअपज्जत्ताणं जहाकमेण आवलियाए असंखेज्जदि-भाएण खंडिदेयखंडेण अवहारकाला अब्भहिया कायच्चा । तदो पंचिंदियअपज्जत्त-अवहारकाले आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागो तेइंदिय-पज्जत्ताणं अवहारकालो होदि । तम्मिह आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्मिह चैव पक्खित्ते वेइंदियपज्जत्ताणमवहारकालो होदि । तम्मिह आवलियाए असंखेज्जदि-भाएण भागे हिदे लद्धं तम्मिह चैव पक्खित्ते पंचिंदियपज्जत्ताणमवहारकालो होदि । तम्मिह आव-लियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्मिह चैव पक्खित्ते चउरिंदियपज्जत्तअवहार-कालो होदि । एत्थ सच्चत्थ रासिविसेसेण रासिमोवट्टाविय लद्धं रूवूणं करिय भागहार-भूदआवलियाए असंखेज्जदिभागो उप्पाएदब्बो । एदेहि अवहारकालेहि पुध पुध जगपदरे भागे हिदे अप्पणो दब्बपमाणाणि भवन्ति । एत्थ खंडिदादओ जाणिऊण वत्तच्चा ।

करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी त्रीन्द्रिय अपर्याप्त अवहारकालमें मिला देने पर त्रीन्द्रिय जीवोंका अवहारकाल होता है । पुनः इस त्रीन्द्रिय जीवोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी त्रीन्द्रिय जीवोंके अवहारकालमें मिला देने पर त्रीन्द्रिय अपर्याप्तकोंका अवहारकाल होता है । इसीप्रकार चतुरिन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त, पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके अवहारकालको क्रमसे आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके उत्तरोत्तर एक एक भागसे अधिक करना चाहिये । अनन्तर पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर प्रतरांगुलके संख्यातवें भागप्रमाण त्रीन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी त्रीन्द्रिय पर्याप्तकोंके अवहारकालमें मिला देने पर त्रीन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल होता है । इस त्रीन्द्रिय पर्याप्तकोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी त्रीन्द्रिय पर्याप्त अवहारकालमें मिला देने पर पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका अवहार-काल होता है । इस पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे इसी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अवहारकालमें मिला देने पर चतुरिन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल होता है । यहां सर्वत्र राशि विशेषसे राशिको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसमेंसे एक कम करके भागहाररूप आवलीका असंख्यातवें भाग उत्पन्न कर लेना चाहिये । इन अवहारकालोंसे पृथक् पृथक् जगप्रतरके भाजित करने पर अपने अपने द्रव्यका प्रमाण आता है । यहां पर खंडित आदिकका कथन समझ कर करना चाहिये ।

सासणसम्माइट्टिप्पहुडि जाव अजोगिकेवल्लि ति ओघं ॥८३॥

पहुडिसहो किरियाविसेसणं । सासणसम्माइट्टिप्पहुडि आइं करिएत्ति । एत्थ पुव्व-
सुत्तादो पंचिंदिय इदि अणुवट्टेदे । तेण सव्वे गुणपडिवण्णा पंचिंदिया चेव । सजोगि-
अजोगिकेवलीणं पणट्टासेसिंदियाणं पंचिंदियववएसो कधं घडदे ? ण, पंचिंदियजादिणाम-
कम्मोदयमवेविस्सय तेसिं पंचिंदियववएसोदो । एदेसिं प्रमाणपरूवणा मूलोघपरूवणाए तुल्ला ।
कुदो ? पंचिंदियवदिरित्तजादीसु गुणपडिवण्णाभावादो ।

पंचिंदियअपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ॥ ८४ ॥

एदस्स सुत्तस्स सुगमो अत्थो ।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण
॥ ८५ ॥

एदस्स वि अत्थो सुगमो ।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक
गुणस्थानमें पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव सामान्य प्ररूपणाके समान पर्योपमके
असंख्यतवें भाग हैं ॥ ८३ ॥

यहां पर प्रभृति शब्द क्रियाविशेषण है । जिससे सासादनसम्यग्दृष्टि प्रभृतिका अर्थ
सासादनसम्यग्दृष्टिको आवि लेकर होता है । यहां पर पूर्व सूत्रसे पंचेन्द्रिय पदकी अनुवृत्ति होती
है, इसलिये संपूर्ण गुणस्थानप्रतिपन्न जीव पंचेन्द्रिय ही होते हैं, यह अभिप्राय निकल आता है ।

शंका—सयोगिकेवली और अयोगिकेवलियोंके संपूर्ण इन्द्रियां नष्ट हो गई हैं, अतएव
उनके पंचेन्द्रिय यह संज्ञा कैसे घटित होती है ?

समाधान — नहीं, क्योंकि, पंचेन्द्रियजाति नामकर्मकी अपेक्षा सयोगिकेवली और
अयोगिकेवलियोंके पंचेन्द्रिय संज्ञा बन जाती है ।

इन गुणस्थानप्रतिपन्न पंचेन्द्रिय जीवोंके प्रमाणकी प्ररूपणा मूलोघ प्ररूपणाके समान
है, क्योंकि, पंचेन्द्रियजातिको छोड़कर दूसरी जातियोंमें गुणस्थानप्रतिपन्न जीव नहीं
पाये जाते हैं ।

पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं ॥ ८४ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है ।

कालकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों
और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ८५ ॥

इस सूत्रका भी अर्थ सुगम है ।

१ सासादनसम्यग्दृष्ट्यादयोऽयोगिकेवल्यन्ताः सामान्योक्तसंख्याः । स. सि. १, ८.

खेत्तेण पंचिंदियअपज्जत्तएहि पदरमवहिरदि अंगुलस्स असंखे-
उज्जदिभागवग्गपडिभाएण ॥ ८६ ॥

एदं पि सुत्तं सुगमं चेव । एदाणि तिण्णि वि सुत्ताणि पंचिंदियअपज्जत्तपडि-
बद्धाणि विगल्लिंदियापज्जत्तसुत्तं व पंचिंदियमिच्छाइड्डिसुत्तमिह चेव किण्ण वुत्ताणि ति
वुत्ते ण, पंचिंदियअपज्जत्तेसु गुणपडिवण्णाभावपरूवणट्टत्तादो पुथ सुत्तारंभस्स । अपज्जत्त-
काले वि पंचिंदिएसु गुणपडिवण्णा अत्थि वेउव्विय-ओरालियमिस्स-कम्मइयकायजोगेसु
सम्मत्त-णाण-दंसणोवलंभादो । इदि चे, होदु णाम णिव्वत्तिं पडि अपज्जत्तएसु गुणपडि-
वण्णाणमत्थित्तं, अपज्जत्तणामकम्मोदएण सह गुणाणं अवट्टाणविरोहा ।

भागाभागं वत्तइस्सामो । सव्वजीवरासिं सखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा सुहुमेइंदिय-
पज्जत्ता होंति । सेसमसंखेज्जलोगमेत्तखंडे कए तत्थ बहुखंडा सुहुमेइंदियअपज्जत्ता होंति ।
सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा बादरेइंदियअपज्जत्ता होंति । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा

क्षेत्रकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके द्वारा सूच्यंगुलके असंख्यातवें
भागके वर्गरूप प्रतिभागसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ ८६ ॥

यह सूत्र भी सुगम ही है । ये पूर्वोक्त तीनों भी सूत्र पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके
प्रमाणसे प्रतिबद्ध हैं ।

शंका—जिसप्रकार विकलेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके प्रमाणका प्रतिपादक सूत्र स्वतन्त्र न
होकर विकलेन्द्रिय और उनके पर्याप्तकोंके प्रमाणके प्रतिपादक सूत्रके साथ ही निबद्ध है,
उसीप्रकार पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाणके प्रतिपादक सूत्रोंमें ही, पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके
प्रमाणके प्रतिपादक सूत्र निबद्ध करके क्यों नहीं कहे ?

समाधान—ऐसा पूछने पर आचार्य कहते हैं कि नहीं, क्योंकि, पंचेन्द्रिय
अपर्याप्तकोंके प्रमाणके प्रतिपादक सूत्रोंका पृथक् रूपसे आरंभ पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंमें
गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके अभावके प्ररूपण करनेके लिये किया है ।

शंका—अपर्याप्त कालमें भी पंचेन्द्रियोंमें गुणस्थानप्रतिपन्न जीव होते हैं, क्योंकि,
वैक्रियिकमिश्र, औदारिकमिश्र और कार्मणकाययोगमें सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान तथा दर्शनकी
उपलब्धि पाई जाती है ?

समाधान—यदि ऐसा है तो निर्वृत्तिकी अपेक्षा अपर्याप्तकोंमें गुणस्थानप्रतिपन्न
जीवोंका सद्भाव रहा आवे, परंतु अपर्याप्त नामकर्मके उद्यके साथ सम्यग्दर्शन आदि
गुणोंका सद्भाव माननेमें विरोध आता है ।

अब भागाभागको बतलाते हैं—सर्व जीवराशिके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे
बहुभागप्रमाण सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात लोकप्रमाण खंड
करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात
खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव हैं । शेष एक भागके अनन्त

बादरेइंदियपज्जत्ता होंति । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा अणिंदिया होंति । सेसरासीदो पलिदोवमअसंखेज्जादिभागमवणेऊण सेसरासिमावलियाए असंखेज्जादिभाए ऊणेगखंडं पि पुणो पुध इविय सेसबहुभागे घेत्तूण चत्तारि सरिसपुंजे काऊण ठवेयव्वा । पुणो आवलियाए असंखेज्जादिभागं विरलेऊण अवणिदएगखंडं समखंडं करिय दिण्णे तत्थ बहुखंडे पढमपुंजे पक्खित्ते वेइंदिया होंति । पुणो आवलियाए असंखेज्जादिभागं विरलेऊण दिण्णसेसेगखंडं समखंडं करिय दिण्णे तत्थ बहुभागे विदियपुंजे पक्खित्ते तेइंदिया होंति । पुव्वविरलणादो संपहि विरलणा किं सरिसा, किमधिया, किमूणा त्ति पुच्छिदे णत्थि एत्थ उवएसो । पुणो वि तप्पाओग्गमावलियाए असंखेज्जादिभागं विरलेऊण सेसेगखंडं समखंडं करिय दिण्णे तत्थ बहुखंडे तदियपुंजे पक्खित्ते चउरिंदिया होंति । सेसेगखंडं चउत्थपुंजे पक्खित्ते पंचिंदियमिच्छाइट्ठी होंति । वेइंदियरासिमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा वेइंदियअयज्जत्ता होंति । सेसेगखंडं तेसिं पज्जत्ता होंति । तेइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियाणं पि एवं चेव वत्तव्वं । पुव्वमवणिदपलिदोवमस्स असंखेज्जादिभागरासिमसंखेज्जखंडे कए

खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव हैं । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण अनिन्द्रिय जीव हैं । शेष राशिमेंसे पल्योपमके असंख्यातवें भागको घटा कर जो राशि अवशिष्ट रहे उसके आवलीके असंख्यातवें भागप्रमाण खंड करके बहुभागमेंसे एक भागको भी पुनः पृथक् स्थापित करके शेष बहुभागको लेकर चार समान पुंज करके स्थापित कर देना चाहिये । पुनः आवलीके असंख्यातवें भागको विरलित करके उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर निकाल कर पृथक् रखे हुए एक खंडको समान खंड करके देयरूपसे दे देनेके पश्चात् उनमेंसे बहुभागोंको प्रथम पुंजमें मश्रिप्त करने पर त्रीन्द्रिय जीवोंका प्रमाण होता है । पुनः आवलीके असंख्यातवें भागको विरलित करके उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर प्रथम पुंजमें देनेसे शेष रहे हुए एक भागको समान खंड करके देयरूपसे देनेके पश्चात् उनमेंसे बहुभागको दूसरे पुंजमें मिला देने पर त्रीन्द्रिय जीवोंका प्रमाण होता है ।

पूर्व विरलनसे यह दूसरा विरलन क्या समान है, क्या अधिक है, या क्या न्यून है ? ऐसा पूछने पर आचार्य उत्तर देते हैं कि इस विषयमें उपदेश नहीं पाया जाता है । फिर भी तद्योग्य आवलीके असंख्यातवें भागको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर शेष एक खंडको समान खंड करके देयरूपसे दे देनेके अनन्तर उनमेंसे बहुभाग तीसरे पुंजमें मिला देने पर चतुरिन्द्रिय जीवोंका प्रमाण होता है । शेष एक खंडको चौथे पुंजमें मिला देने पर पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण होता है । त्रीन्द्रिय जीवराशिके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण त्रीन्द्रिय अपर्याप्त जीव हैं । त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रियोंका भी इसीप्रकार कथन करना चाहिये । पहले घटा कर पृथक् रखली

बहुभागा असंजदसम्माइड्डी होंति । एवं जेयव्वं जाव अजोगिकेवलि त्ति । अहवा एइ-
दियाणं भागाभागो एवं वा वत्तव्वो । सव्वेइंदियरासी अद्धद्वेण छेत्तव्वो जाव वादरेइंदिय-
रासी अवचिद्धिदो त्ति । तत्थ लद्धअद्धच्छेदणयसलागा विरलेऊण विगं काऊण अण्णोण्ण-
ब्भासे कदे असंखेज्जलोगमेत्तरासी उप्पज्जदि । एस रासिं विरलेऊण एक्केकस्स रूवस्स
सव्वमेइंदियरासिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि वादरेइंदियाणं पमाणं पावेदि । तत्थ
बहुखंडा सुहुमेइंदिया एयखंडं वादरेइंदिया । पुणो सुहुमेइंदियरासी अद्धद्वेण छिदिदव्वो
जाव सुहुमेइंदियअपज्जत्तरासी अवचिद्धिदो त्ति । तत्थ अद्धच्छेदणए विरलिय विगं करिय
अण्णोण्णब्भासकरणेणुप्पणसंखेज्जरासिं विरलेऊण एक्केकस्स रूवस्स सुहुमेइंदियरासिं समखंडं
करिय दिण्णे रूवं पडि सुहुमेइंदियअपज्जत्तरासी पावुणदि । तत्थ बहुखंडा सुहुमेइंदिय-
पज्जत्ता एयखंडं तेसिमपज्जत्ता होंति । एवं वादरेइंदियाणं पि वत्तव्वं । एत्थ संदिद्धी । तं
जहा— एइंदियरासी वेळ्पण्णसदमेत्तो २५६ । सुहुमेइंदियरासी चालीसव्वभियवेसयमेत्तो

हुई पद्योपमके असंख्यातवें भागरूप राशिके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण
असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं । इसीप्रकार अयोगिकेवलियोंके प्रमाण आनेतक ले जाना
चाहिये । अथवा, एकेन्द्रियोंके भागाभागको इसप्रकार भी कहना चाहिये— वादर एकेन्द्रिय
राशि प्राप्त होने तक एकेन्द्रिय राशिको आधी आधी करते जाना चाहिये । इसप्रकार
अर्धार्ध करनेसे जितनी अर्धच्छेद शलाकाएं प्राप्त होवें उनका विरलन करके और उस राशिके
प्रत्येक अंकको दोरूप करके परस्पर गुणा करने पर असंख्यात लोकप्रमाण राशि उत्पन्न
होती है । इस राशिको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति
सर्व एकेन्द्रिय राशिको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके
प्रति वादर एकेन्द्रिय जीवोंका प्रमाण प्राप्त होता है । वहां बहुभागप्रमाण
सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव और एक भागप्रमाण वादर एकेन्द्रिय जीव हैं । पुनः
सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त राशि प्राप्त होने तक सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवराशिको अर्धार्धरूपसे
छेदित करना चाहिये । ऐसा करनेसे वहां जितने अर्धच्छेद प्राप्त हों उनका विरलन
करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो
असंख्यात राशि उत्पन्न होवे उसका विरलन करके और उस राशिके प्रत्येक एकके प्रति
सूक्ष्म एकेन्द्रिय राशिको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक
एकके प्रति सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त राशि प्राप्त होती है । वहां पर बहुभागप्रमाण सूक्ष्म
एकेन्द्रिय पर्याप्त राशि है और एक भागप्रमाण सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त राशि है । इसीप्रकार
वादर एकेन्द्रियोंका भी कथन करना चाहिये । यहां पर संदृष्टि देते हैं । वह इसप्रकार है—

एकेन्द्रिय जीवराशि दोसौ छप्पन २५६ है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय राशि दोसौ चालीस
२४० है । वादर एकेन्द्रियराशि सोलह १६ है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तराशि एकसौ अस्सी

२४०। बादरेइंदियरासी सोलसमेत्तो १६। सुहुमेइंदियपज्जत्तरासी असीदिसयमेत्तो १८०। तेसिमपज्जत्ता सट्ठी ६० हवंति। बादरेइंदियअपज्जत्ता वारस १२ हवंति। तेसिं पज्जत्ता चत्तारि ४।

संपहि वेइंदियपज्जत्तरासीदो वेइंदिय-तेइंदियरासीणं विसेसो किं सरिसो किमहिओ हीणो वा इदि वुत्ते असंखेज्जगुणो हवदि। तं जहा। वुच्चदे- तेइंदिय-चउरिंदियरासीणं विसेसादो वेइंदिय-तेइंदियरासिविसेसो असंखेज्जगुणो। तं कथं जाणिज्जदे? आइरिओव-देसादो भागाभागमिह परूविदवक्खाणादो य जाणिज्जदे। तेइंदिय-चउरिंदियरासिविसेसो पुण तेइंदियपज्जत्तरासीदो बहुगो। तं कथं णव्वदे? तेइंदियअपज्जत्तरासीदो चउरिंदियरासी विसेसहीणो चि वुत्तअप्पावहुगसुत्तादो। तेइंदियपज्जत्तरासीदो पुण वेइंदियपज्जत्तरासी विसेसहीणो। तं कथं णव्वदे? एदं पि अप्पावहुगसुत्तादो चैव णव्वदे। तदो जाणिज्जदे जहा वेइंदियपज्जत्तरासीदो विसेसाहियतीइंदियपज्जत्तरासीदो बहुदरतीइंदिय-चउरिंदिय-

है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तराशि साठ ६० है। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त राशि बारह १२ है और बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त राशि चार ४ है।

अब द्वीन्द्रिय पर्याप्त राशिके प्रमाणसे द्वीन्द्रिय और त्रीन्द्रिय राशियोंका विशेष अर्थात् अन्तर क्या समान है, क्या अधिक है या हीन है? ऐसा पूछने पर द्वीन्द्रिय पर्याप्त राशिके प्रमाणसे असंख्यातगुणा है ऐसा समझना चाहिये। वह इसप्रकार है। आगे उसीको कहते हैं— त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय राशिके विशेषसे द्वीन्द्रिय और त्रीन्द्रिय जीवरशिका विशेष असंख्यातगुणा है।

शंका— यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— आचार्योंके उपदेशसे और भागाभागमें प्ररूपण किये गये व्याख्यानसे जाना जाता है।

त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय राशिका विशेष त्रीन्द्रिय पर्याप्त राशिके प्रमाणसे अधिक है।

शंका— यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— त्रीन्द्रिय अपर्याप्त राशिके प्रमाणसे चतुरिन्द्रिय राशि विशेष हीन है ऐसा अल्पबहुत्वके सूत्रमें कहा है, अतएव उससे जाना जाता है।

त्रीन्द्रिय पर्याप्त राशिके प्रमाणसे द्वीन्द्रिय पर्याप्त राशिका प्रमाण विशेष हीन है।

शंका— यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— यह भी अल्पबहुत्वके सूत्रसे ही जाना जाता है।

इसलिये जाना जाता है कि जिसप्रकार द्वीन्द्रिय पर्याप्त राशिसे त्रीन्द्रिय पर्याप्तराशि विशेष अधिक है और इससे त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय राशिका विशेष बड़ा है। त्रीन्द्रिय

रासिविसेसादो असंखेज्जगुणो वेइंदिय-तेइंदियरासिविसेसो वेइंदियपज्जत्तेहिंतो असंखेज्ज-
गुणो ति ।

अप्पावहुअं तिविहं सत्थाण-परत्थाण-सव्वपरत्थाणभेएण । एत्थ ताव सत्थाण-
प्पावहुअं वुच्चदे । सव्वत्थोवा बादरेइंदियपज्जत्ता । तेसिमपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ।
को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । बादरेइंदिया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ?
सगपज्जत्तपक्खित्तमेत्तेण । सव्वत्थोवा सुहुमेइंदियअपज्जत्ता । तेसिं पज्जत्ता संखेज्ज-
गुणा । को गुणगारो ? संखेज्जा समया । सुहुमेइंदिया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ?
सगअपज्जत्तमेत्तेण । सव्वत्थोवो वेइंदियअवहारकालो । विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को
गुणगारो ? सगविक्खंभसूईए असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सगअवहारकालो ।
अहवा सेटीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेटिपढमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ?
सगअवहारकालवग्गो । सो वि असंखेज्जाणि घणंगुलाणि सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदि-
भागमेत्ताणि । सेटी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? अवहारकालो । दव्वमसंखेज्जगुणं । को
गुणगारो ? विक्खंभसूई । पदरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? अवहारकालो । लोगो असंखेज्ज-

और चतुरिन्द्रिय राशिके विशेषसे द्वीन्द्रिय और त्रीन्द्रिय राशिका विशेष असंख्यातगुणा है
उसीप्रकार द्वीन्द्रिय पर्याप्त राशिले द्वीन्द्रिय और त्रीन्द्रिय राशिका विशेष असंख्यातगुणा है ।

स्वस्थान, परस्थान और सर्व परस्थानके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है । उनमेंसे
यहां पर पहले स्वस्थान अल्पबहुत्वको कहते हैं । बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सबसे स्तोक
हैं । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव उनसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात
लोक गुणकार है । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तोंसे बादर एकेन्द्रिय जीव विशेष अधिक
हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? अपनी पर्याप्त राशिको प्राक्षिप्त करने रूप विशेषसे
अधिक हैं । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव
उनसे संख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव
सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? सूक्ष्म
एकेन्द्रिय अपर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । द्वीन्द्रियोंका
अवहारकाल सबसे स्तोक है । अवहारकालसे विक्खंभसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार
क्या है ? अपनी विक्खंभसूचीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? अपना
अवहारकाल प्रतिभाग है । अथवा, जगश्रेणीका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके
असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? अपने अवहारकालका वर्ग प्रतिभाग
है । वह प्रतिभाग भी सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागमात्र असंख्यात घनांगुलप्रमाण है । विक्खंभ-
सूचीसे जगश्रेणी असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाल गुणकार है ।
जगश्रेणीसे द्वीन्द्रियोंका द्रव्यप्रमाण असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपनी विक्खंभसूची
गुणकार है । द्वीन्द्रियोंके द्रव्यसे जगप्रतर असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपना
अवहारकाल गुणकार है । जगप्रतरसे लोक असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है । जगश्रेणी

गुणो । को गुणगारो ? सेठी । एवं वेइंदियअपज्जत्ताणं पि वत्तव्वं । एवं पज्जत्ताणं पि । णवरि जम्हि सच्चिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि घणंगुलाणि त्ति बुत्तं तम्हि सच्चिअंगुलस्स संखेज्जदिभागमेत्ताणि त्ति वत्तव्वं । ति-चदु-पंचिंदियाणं तेसिं पज्जत्तापज्जत्ताणं पि जहाकमेण वेइंदिय-वेइंदियपज्जत्तापज्जत्ताणं भंगो । सासणादीणं मूलोघसत्थाणभंगो ।

परस्थाने पयदं । तत्थ ताव एइंदियपरस्थानं बुच्चदे-सव्वत्थोवा बादरेइंदिया । सुहुमेइंदिया असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । तेसिं छेदणा वि असंखेज्जा लोगा । एवं चेव विदियवियप्पो । णवरि एइंदिया विसेसाहिया । अहवा सव्वत्थोवा बादरेइंदियपज्जत्ता । तेसिमपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । सुहुमेइंदियअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । तेसिं छेयणा वि असंखेज्जा लोगा । सुहुमेइंदियपज्जत्ता संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । चउत्थो वियप्पो एवं चेव । णवरि एइंदिया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरेइंदियसाहिदिसुहुमेइंदियअपज्जत्तमेत्तेण । सव्वत्थोवा बादरेइंदियपज्जत्ता । तेसिमपज्जत्ता

गुणकार है । इसीप्रकार द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंका भी अल्पबहुत्व कहना चाहिये । इसीप्रकार द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंका भी कहना चाहिये । इतना विशेष है कि जहां पर सूक्ष्मगुलके असंख्यातवें भागमात्र घनांगुल कहे हैं वहां पर सूक्ष्मगुलके संख्यातवें भागमात्र घनांगुल कहना चाहिये । त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय तथा इन्हींके पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंके स्वस्थान अल्पबहुत्वका कथन यथाक्रमसे द्वीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय पर्याप्त और द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान जानना चाहिये । इन्द्रियमार्गणामें सासादन-सम्यग्दृष्टि आदिका स्वस्थान अल्पबहुत्व मूलोघ स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है ।

अब परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है । उनमेंसे पहले एकेन्द्रियोंके परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करते हैं— बादर एकेन्द्रिय जीव सबसे स्तोक हैं । सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव इनसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । उनके अर्धच्छेद भी असंख्यात लोक है । इसीप्रकार दूसरा विकल्प है । इतना विशेष है कि सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंके प्रमाणसे एकेन्द्रिय जीव विशेष अधिक हैं । अथवा, बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । उनके अर्धच्छेद भी असंख्यात लोकप्रमाण हैं । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंसे संख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । चौथा विकल्प भी इसीप्रकार है । इतना विशेष है कि सूक्ष्म एकेन्द्रियोंके प्रमाणसे एकेन्द्रिय जीव विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके प्रमाणमें बादर एकेन्द्रिय जीवोंके प्रमाणको मिला देने पर जो प्रमाण हो तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव

असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । बादरेइंदिया विसेसाहिया । को विसेसो ? पुच्चं भणितो । सुहुमेइंदियअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । सुहुमेइंदियपज्जत्ता संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । सुहुमेइंदिया विसेसाहिया । को विसेसो ? पुच्चं भणितो । छट्ठो वियप्पो एवं चेव । णवरि एइंदिया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरेइंदियमेत्तेण । अहवा सव्वत्थोवा बादरेइंदियपज्जत्ता । तेसिमपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । बादरेइंदिया विसेसाहिया । सुहुमेइंदिय-अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । एइंदियअपज्जत्ता विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरेइंदियअपज्जत्तमेत्तेण । सुहुमेइंदियपज्जत्ता संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । एइंदियपज्जत्ता विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरेइंदियपज्जत्तमेत्तेण । सुहुमेइंदिया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरेइंदिय-

बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंके प्रमाणसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । बादर एकेन्द्रिय जीव बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके प्रमाणसे विशेष अधिक हैं । विशेषका प्रमाण कितना है ? पहले कहा जा चुका है अर्थात् बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका जितना प्रमाण है विशेषका प्रमाण उतना है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव बादर एकेन्द्रिय जीवोंके प्रमाणसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके प्रमाणसे संख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंके प्रमाणसे विशेष अधिक हैं । विशेष क्या है ? पहले कहा जा चुका है, अर्थात् सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंका जितना प्रमाण है उतना विशेष है । छठा विकल्प इसीप्रकार है । इतना विशेष है कि एकेन्द्रिय जीव सूक्ष्म एकेन्द्रियोंके प्रमाणसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर एकेन्द्रियोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । अथवा, बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव इनसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । बादर एकेन्द्रिय जीव बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके प्रमाणसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव बादर एकेन्द्रियोंके प्रमाणसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके प्रमाणसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव एकेन्द्रियअपर्याप्त जीवोंके प्रमाणसे संख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंके प्रमाणसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । सूक्ष्म एकेन्द्रियजीव एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंके प्रमाणसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर एकेन्द्रिय

पज्जत्तविरहिदसुहुमेइंदियापज्जत्तमेत्तेण । एवं चेव अट्टमो वियप्पो । णवरि एइंदिया विसेसाहिया । सच्चथोवो वेइंदियअवहारकालो । तस्सेव अपज्जत्तअवहारकालो विसेसाहियो । केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदमेत्तेण । पज्जत्तअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । तस्सेव विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सगविक्खंभसूईए असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सगअवहारकालो । अहवा सेटीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेट्टिपढमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? सगअवहारकालवग्गो असंखेज्जाणि घणंगुलाणि । केत्तियमेत्ताणि ? सूचिअंगुलस्स संखेज्जदिभागमेत्ताणि । वेइंदियअपज्जत्तविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । वेइंदियविक्खंभसूई विसेसाहिया । केत्तियमेत्तो ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदमेत्तो । सेटी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? वेइंदियअवहारकालो । वेइंदियपज्जत्तदन्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सगविक्खंभसूई ।

पर्याप्तकोंके प्रमाणसे रहित सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक है । इसीप्रकार आठवां विकल्प है । इतना विशेष है कि एकेन्द्रिय जीव सूक्ष्म एकेन्द्रियोंके प्रमाणसे विशेष अधिक है । द्वीन्द्रिय जीवोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है । उन्हींके अपर्याप्त जीवोंका अवहारकाल पूर्वोक्त अवहारकालसे विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? आवलीके असंख्यातवें भागसे द्वीन्द्रिय जीवोंके अवहारकालको खंडित करके जो एक भाग आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है । द्वीन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंका अवहारकाल द्वीन्द्रिय अपर्याप्तकोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । उन्हीं द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंकी विष्कंभसूची उन्हींके अवहारकालसे असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कंभसूचीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? अपना अवहारकाल प्रतिभाग है । अथवा, जगश्रेणीका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? अपने अवहारकालका वर्ग प्रतिभाग है जो असंख्यात घनांगुलप्रमाण है । असंख्यात घनांगुल कितने हैं ? सूच्यंगुलके संख्यातवें भागमात्र हैं । द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंकी विष्कंभसूची द्वीन्द्रिय पर्याप्त जीवोंकी विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । द्वीन्द्रिय जीवोंकी विष्कंभसूची द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंकी विष्कंभसूचीसे विशेष अधिक है । उस विशेषका कितना प्रमाण है ? आवलीके असंख्यातवें भागसे द्वीन्द्रिय अपर्याप्तक जीवोंकी विष्कंभसूचीको खंडित करके जो एक भाग आवे तन्मात्र विशेष समझना चाहिये । द्वीन्द्रिय जीवोंकी विष्कंभसूचीसे जगश्रेणी असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? द्वीन्द्रिय जीवोंका अवहारकाल गुणकार है । द्वीन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंका ह्यजगश्रेणीसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपनी (द्वीन्द्रिय पर्याप्त जीवोंकी)

तस्सेव अपज्जत्तद्व्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जदिभागो । वेइंदियदव्वं विसेसाहिंयं । केत्तियमेत्तो ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदसगअपज्जत्तमेत्तो । पदरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? वेइंदियअवहारकालो । लोणो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेठी । एवं तीइंदिय-चउरिंदियाणं । एवं पंचिंदियाणं पि । णवरि अजोगिभगवंतमाइं काऊण वत्तव्वं ।

सव्वपरत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवमजोगिकेवल्लिदव्वं । चत्तारि उवसामगा संखेज्जगुणा । चत्तारि खवगा संखेज्जगुणा । सजोगिकेवल्लिदव्वं संखेज्जगुणं । अप्पमत्तसंजददव्वं संखेज्जगुणं । पमत्तसंजददव्वं संखेज्जगुणं । असंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । उवरि पलिदोवमं ति ओघं । तदो वीइंदियअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सगअवहारकालस्स संखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? पलिदोवमं । अहवा पदरं-गुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सूचिअंगुलाणि । को पडिभागो ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदपलिदोवमं । तस्सेव अपज्जत्तअवहारकालो विसेसाहिओ ।

विष्कंभसूची गुणकार है । उन्हीं द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंका द्रव्य द्वीन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग गुणकार है । द्वीन्द्रिय जीवोंका द्रव्य द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके द्रव्यसे विशेष अधिक है । कितनामात्र विशेष अधिक है ? द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके प्रमाणको आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके जो लब्ध आवे तन्मात्र विशेष अधिक है । जगप्रतर द्वीन्द्रिय जीवोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? द्वीन्द्रिय जीवोंका अवहारकाल गुणकार है । जगप्रतरसे लोक असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणी गुणकार है । इसीप्रकार त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीवोंका परस्थान अल्पबहुत्व है । तथा इसीप्रकार पंचेन्द्रिय जीवोंका भी परस्थान अल्पबहुत्व है । इतना विशेष है कि पंचेन्द्रिय जीवोंका परस्थान अल्पबहुत्व कहते समय अयोगी भगवान्को आदि करके उसका कथन करना चाहिये ।

अब सर्वपरस्थान अल्पबहुत्वमें प्रकृत विषयको कहते हैं— अयोगिकेवलियोंका द्रव्यप्रमाण सबसे श्लोक है । चारों गुणस्थानोंके उपशामक अयोगिकेवलियोंसे संख्यातगुणे हैं । चारों गुणस्थानोंके क्षपक उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । सयोगिकेवलियोंका द्रव्यप्रमाण क्षपकोंसे संख्यातगुणा है । अप्रमत्तसंयतोंका प्रमाण सयोगियोंके प्रमाणसे संख्यातगुणा है । प्रमत्तसंयतोंका प्रमाण अप्रमत्तसंयतोंके प्रमाणसे संख्यातगुणा है । असंयतोंका अवहारकाल प्रमत्तसंयतोंके प्रमाणसे असंख्यातगुणा है । इसके ऊपर पच्योपम तक ओघके समान है । पच्योपमसे द्वीन्द्रियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपने अवहारकालका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? पच्योपम प्रतिभाग है । अथवा, प्रतरांगुलका संख्यातवां भाग गुणकार है जो असंख्यात सूच्यंगुलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? आवलीके असंख्यातवें भागसे पच्योपमको गुणित करके जो लब्ध आवे इतना प्रतिभाग है । उन्हीं द्वीन्द्रियोंके अपर्याप्तक जीवोंका अवहारकाल द्वीन्द्रियोंके

१ अ-क प्रत्योः ' असंखे० ' इति पाठः ।

केत्तियमेत्तो ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदमेत्तो । एवं तेइंदिय-तेइंदियअपज्जत्त-
चउरिंदिय-चउरिंदियअपज्जत्त-पंचिंदिय-पंचिंदियअपज्जत्तणं अवहारकालो कमेण विसेसा-
हिया । तदो तेइंदियपज्जत्तअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए
असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जदिभागो । वेइंदियपज्जत्तअवहारकालो विसेसाहिओ । केत्तिय-
मेत्तो ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदतेइंदियपज्जत्तअवहारकालमेत्तो विसेसो ।
पंचिंदियपज्जत्तअवहारकालो विसेसो । चउरिंदियपज्जत्तअवहारकालो विसेसाहिओ । तस्सेव
विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? पुवं भणिदो । पंचिंदियपज्जत्तविक्खंभसूई
विसेसाहिया । वेइंदियपज्जत्तविक्खंभसूई विसेसाहिआ । तेइंदियपज्जत्तविक्खंभसूई विसे-
साहिया । पंचिंदियअपज्जत्तविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? आवलियाए
असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जदिभागो । पंचिंदियविक्खंभसूई विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ?
आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदपंचिंदियअपज्जत्तविक्खंभसूचिमेत्तेण । एवं णेयउवं

अवहारकालसे विशेष अधिक है । कितनामात्र विशेष अधिक है ? आवलीके असंख्यातवें
भागसे द्वीन्द्रियोंके अवहारकालको खंडित करके जो एक भाग लब्ध आवे तन्मात्र विशेष
अधिक है । इसीप्रकार त्रीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय अपर्याप्त, चतुरिन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त,
पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके अवहारकाल भी क्रमसे विशेष अधिक हैं । पंचेन्द्रिय
अपर्याप्तकोंके अवहारकालसे त्रीन्द्रिय पर्याप्तकोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार
क्या है ? आवलीके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग गुणकार है । त्रीन्द्रिय पर्याप्तकोंके
अवहारकालसे द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंका अवहारकाल विशेष अधिक है । कितनामात्र विशेष
अधिक है ? आवलीके असंख्यातवें भागसे त्रीन्द्रिय पर्याप्तकोंके अवहारकालको खंडित करके
जो भाग लब्ध आवे तन्मात्र विशेष अधिक है । द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंके अवहारकालसे पंचेन्द्रिय
पर्याप्तकोंका अवहारकाल विशेष अधिक है । पंचेन्द्रिय पर्याप्तकोंके अवहारकालसे चतुरिन्द्रिय
पर्याप्तकोंका अवहारकाल विशेष अधिक है । चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकोंके अवहारकालसे उर्हींकी
विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? पहले कहा जा चुका है । चतुरिन्द्रिय
पर्याप्तकोंकी विष्कंभसूचीसे पंचेन्द्रिय पर्याप्तकोंकी विष्कंभसूची विशेष अधिक है । पंचेन्द्रिय
पर्याप्तकोंकी विष्कंभसूचीसे त्रीन्द्रिय पर्याप्तकोंकी विष्कंभसूची विशेष अधिक है । द्वीन्द्रिय
पर्याप्तकोंकी विष्कंभसूचीसे त्रीन्द्रिय पर्याप्तकोंकी विष्कंभसूची विशेष अधिक है । त्रीन्द्रिय
पर्याप्तकोंकी विष्कंभसूचीसे पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंकी विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार
क्या है ? आवलीके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग गुणकार है । पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंकी
विष्कंभसूचीसे पंचेन्द्रियोंकी विष्कंभसूची विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे
अधिक है ? आवलीके असंख्यातवें भागसे पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंकी विष्कंभ-

१ प्रातिषु ' पंचिंदिय ' इति पाठो नास्ति ।

जाव चउरिंदियअपज्जत्त-चउरिंदिय-तेइंदियअपज्जत्त-तेइंदिय-वेइंदियअपज्जत्त-वेइंदियाणं वि-
क्खंभसूईओ त्ति । सेठी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? वीइंदियअवहारकालो । चउरिं-
दियपज्जत्तदव्वं असंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? विक्खंभसूई । पंचिंदियपज्जत्तदव्वं विसै-
साहियं । वेइंदियपज्जत्तदव्वं विसैसाहियं । तेइंदियपज्जत्तदव्वं विसैसाहियं । पंचिंदिय-
अपज्जत्तदव्वं असंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । पंचिंदिय-
दव्वं विसैसाहियं । केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदपंचिंदियअपज्जत्त-
दव्वमेत्तेण । एवं चउरिंदियअपज्जत्त-चउरिंदिय-तेइंदियअपज्जत्त-तेइंदिय-वेइंदियअपज्जत्त-
वेइंदियाणं दव्वणि जहाकमेण विसैसाहियाणि । तदो पदरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ?
वेइंदियअवहारकालो । लोगो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेठी । अणिंदिया अणंतगुणा ।
को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ?
लोगो । बादरेइंदियपज्जत्ता अणंतगुणा । को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो, सिद्धेहि

सूचीको खंडित करके जो भाग लब्ध आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है । इसी-
प्रकार चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त, चतुरिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय अपर्याप्त, त्रीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय
अपर्याप्त और द्वीन्द्रिय जीवोंकी विष्कंभसूची आनेतक ले जाना चाहिये । द्वीन्द्रिय जीवोंकी
विष्कंभसूचीसे जगध्रेणी असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? द्वीन्द्रिय जीवोंका अवहारकाल
गुणकार है । जगध्रेणीसे चतुरिन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका द्रव्य असंख्यातगुण है । गुणकार
क्या है ? अपनी विष्कंभसूची गुणकार है । चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकोंके द्रव्यसे पंचेन्द्रिय पर्याप्त
जीवोंका द्रव्य विशेष अधिक है । पंचेन्द्रिय पर्याप्त द्रव्यसे द्वीन्द्रिय पर्याप्त द्रव्य विशेष
अधिक है । द्वीन्द्रिय पर्याप्त द्रव्यसे त्रीन्द्रिय पर्याप्त द्रव्य विशेष अधिक है । त्रीन्द्रिय पर्याप्त
द्रव्यसे पंचेन्द्रियोंका अपर्याप्त द्रव्य असंख्यातगुण है । गुणकार क्या है ? आधलीका असं-
ख्यातवां भाग गुणकार है । पंचेन्द्रिय अपर्याप्त द्रव्यसे पंचेन्द्रिय द्रव्य विशेष अधिक
है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? आधलीके असंख्यातवें भागसे पंचेन्द्रिय अपर्याप्त-
द्रव्यको खंडित करके जो लब्ध आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है । इसीप्रकार चतुरिन्द्रिय
अपर्याप्त, चतुरिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय अपर्याप्त, त्रीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय अपर्याप्त और द्वीन्द्रिय
जीवोंका द्रव्यप्रमाण यथाक्रमसे विशेष अधिक है । द्वीन्द्रिय द्रव्यप्रमाणसे जगप्रतर असंख्यात-
गुण है । गुणकार क्या है ? द्वीन्द्रिय जीवोंका अवहारकाल गुणकार है । जगप्रतरसे लोक
असंख्यातगुण है । गुणकार क्या है ? जगध्रेणी गुणकार है । लोकसे अनिन्द्रिय जीवोंका
प्रमाण अनन्तगुण है । गुणकार क्या है ? अभव्यासिद्ध जीवोंसे अनन्तगुण और सिद्धोंका
असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? लोकका प्रमाण प्रतिभाग है । बादर
एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंका प्रमाण अनिन्द्रिय जीवोंके प्रमाणसे अनन्तगुण है । गुणकार क्या है ?
अभव्यासिद्धोंसे भी अनन्तगुण, सिद्धोंसे भी अनन्तगुण, जीवराशिके प्रथम वर्गमूलसे भी

वि अणंतगुणो जीववग्गमूलस्स वि अणंतगुणो सच्चजीवरासिस्स असंखेज्जदिभागस्स अणं-
तिमभागो । को पडिभागो ? अण्णिदिया । तेसिमपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । बादरेइंदिया
विसेसाहिया । सुहुमेइंदियअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । एइंदियअपज्जत्ता विसेसाहिया ।
सुहुमेइंदियपज्जत्ता संखेज्जगुणा । एइंदियपज्जत्ता विसेसाहिया । सुहुमेइंदिया विसे-
साहिया । एइंदिया विसेसाहिया ।

एवं इंदियमगणा समत्ता ।

कायाणुवादेण पुढविकाइया आउकाइया तेइउकाया वाउकाइया
बादरपुढविकाइया बादरआउकाइया बादरतेउकाइया बादरवाउकाइया
बादरवण्णफइकाइया पत्तेयसरीरा तस्सेव अपज्जत्ता सुहुमपुढविकाइया
सुहुमआउकाइया सुहुमतेउकाइया सुहुमवाउकाइया तस्सेव पज्जत्ता-
पज्जत्ता द्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा लोगा' ॥ ८७ ॥

अनन्तगुणा और सर्व जीवराशिके असंख्यातवें भागका अनन्तवां भाग गुणकार है ।
प्रतिभाग क्या है ? अनिन्द्रिय जीवोंका प्रमाण प्रतिभाग है । बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंके
प्रमाणसे उन्हींके अपर्याप्तक जीव असंख्यातगुणे हैं । इनसे बादर एकेन्द्रिय जीव विशेष
अधिक हैं । इनसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं । इनसे एकेन्द्रिय
अपर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं । इनसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव संख्यातगुणे हैं । इनसे
एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं । इनसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव विशेष अधिक हैं । इनसे
एकेन्द्रिय जीव विशेष अधिक हैं ।

इसप्रकार इन्द्रियमार्गणा समाप्त हुई ।

कायानुवादसे पृथिवीकायिक, अष्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक जीव
तथा बादर पृथिवीकायिक, बादर अष्कायिक, बादर तेजस्कायिक, बादर वायुकायिक,
बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीव तथा इन्हीं पांच बादरसंबन्धी अपर्याप्त जीव,
सूक्ष्म पृथिवीकायिक, सूक्ष्म अष्कायिक, सूक्ष्म तेजस्कायिक, सूक्ष्म वायुकायिक जीव तथा
इन्हीं चार सूक्ष्मसंबन्धी पर्याप्त जीव और अपर्याप्त जीव, ये सब प्रत्येक द्रव्यप्रमाणकी
अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात लोकप्रमाण हैं ॥ ८७ ॥

१ कायानुवादेन पृथिवीकायिका अष्कायिकास्तेजस्कायिका वायुकायिका असंख्येयलोकाः । स. सि. १, ८.
आउडूरासिवारं लोणे अण्णोणसंगुणे तेऊ । भू-जल-वाऊ अहिया पडिभागो असंखलोगो दु ॥ गो. जी. २०४.
अपदिट्टिदपत्तेया असंखलोगपमाणया होंति । तत्तो पदिट्टिदा पुण असंखलोगेण संगुणिदा ॥ गो. जी. २०५. असंख्या
सेसा । पंचसं. १, ९. पत्तेयपज्जवणकाइयाउ परं इरंति लोमस्स । अंगुलअसंखमाणेण माइयं भूदगतणू य । आवलिवग्गो
अन्तरावली य शुण्णो ह्यु बायरा तेऊ । वाऊ य छोगसंखं सेसतिगमसंखिया लोगा ॥ पंचसं. १, १०-११. असंखिजा

एत्थ पुढवी काओ सरीरं जेसिं ते पुढवीकाया त्ति ण वत्तव्वं, विग्गहर्गए वड्ड-
माण्णं जीवाणमकाइत्तप्पसंगादो । पुणो कथं बुच्चदे ? पुढविकाइयणामकम्मोदयवतो
जीवा पुढविकाइया त्ति बुच्चंति । पुढविकाइयणामकम्मं ण कहिं वि बुत्तमिदि चे ण, तस्स
एइंदियजादिणामकम्मतब्भूदत्तादो । एवं सदि कम्माणं संखाणियमो सुत्तसिद्धो ण घडदि
त्ति बुत्ते बुच्चदे । ण सुत्ते कम्माणि अट्टेव अट्टेदालसयमेवेत्ति, संखंतरपडिसेहविधायय-
एवकाराभावादो । पुणो केत्तियाणि कम्माणि हांति ? हय-गय-विय-फुल्लंधुव-सलह-मक्कु-
णुदेहि-गोमिंदादीणि जेतियाणि कम्मफलाणि लोगे उवल्लभंते कम्माणि वि तत्तियाणि
चेव । एवं सेसकाइयाणं पि वत्तव्वं । बादरणामकम्मोदयसहिदपुढविकाइयादओ
बादरा । धूलसरीराणं जीवाणं बादरत्तं किण्ण बुच्चदे ? ण, बादरेइंदियओगाहणादो

यहां पर पृथिवी है काय अर्थात् शरीर जिनके उन्हें पृथिवीकाय जीव कहते हैं,
ऐसा नहीं कहना चाहिये, क्योंकि, पृथिवीकायका ऐसा अर्थ करने पर विग्रहगतिमें विद्यमान
जीवोंके अकायित्वका अर्थात् पृथिवीकायित्वके अभावका प्रसंग आ जाता है ।

शंका—तो फिर पृथिवीकायिकका अर्थ कैसा कहना चाहिये ?

समाधान—पृथिवीकाय नामकर्मके उदयसे युक्त जीवोंको पृथिवीकायिक कहते
हैं, इसप्रकार पृथिवीकायिक शब्दका अर्थ करना चाहिये ।

शंका—पृथिवीकायिक नामकर्म कहीं भी अर्थात् कर्मके भेदोंमें नहीं कहा गया है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, पृथिवीकाय नामका कर्म एकेन्द्रिय नामक नामकर्मके
भतिर अन्तर्भूत है ।

शंका—यदि ऐसा है तो सूत्रसिद्ध कर्मोंकी संख्याका नियम नहीं रह सकता है ?

समाधान—ऐसा प्रश्न करने पर आचार्य कहते हैं कि सूत्रमें कर्म आठ ही अथवा
एकसौ अड़तालीस ही नहीं कहे हैं, क्योंकि, आठ या एकसौ अड़तालीस संख्याको छोड़कर
दूसरी संख्याओंका प्रतिषेध करनेवाला 'एव' ऐसा पद सूत्रमें नहीं पाया जाता है ।

शंका—तो फिर कर्म कितने हैं ?

समाधान—लोकमें घोड़ा, हाथी, वृक (भेड़िया) भ्रमर, शलभ, मत्कुण, उद्देहिका
(कीमक), गोमी और इन्द्र आदि रूपसे जितने कर्मोंके फल पाये जाते हैं, कर्म भी उतने
ही होते हैं ।

इसीप्रकार शेष कायिक जीवोंके विषयमें भी कथन करना चाहिये । उनमें बादर
नामकर्मके उदयसे युक्त पृथिवीकायिक आदि जीव बादर कहलाते हैं ।

शंका—स्थूल शरीरवाले जीवोंको बादर क्यों नहीं कहा जाता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, वेदनक्षेत्रविधानसे बादर एकेन्द्रियोंकी अवगाहनासे

पुढवीकाइया जाव असंखिञ्जा वाउकाइया । अनु. सू. १४१, पत्र १७९.

सुहुमेइंदियओगाहणाए वेदणखेत्तविहाणादो बहुत्तोवलंभा । तदो पडिहम्ममाणसरीरो बादरो । अण्णेहि पोग्गलेहि अपडिहम्ममाणसरीरो जीवो सुहुमो त्ति घेत्तव्वं । एकमेकं प्रति प्रत्येकम्, प्रत्येकं शरीरं येषां ते प्रत्येकशरीराः । एत्थ पत्तेयसरीरण्हिसो साहारणसरीरवणप्फइकाइयपडिसेहफलो । पुढविकाइयादओ जीवा पत्तेयसरीरा चव । तेसिं पत्तेयववएसो सुत्ते किण्ण कदो ? तत्थ पत्तेयसरीरस्स संभवो चव असंभवो णत्थि त्ति ण तेण ते विसेसिज्जंते (सति संभवे व्यभिचारे च विशेषणमर्थवद्भवति 'इति न्यायात्) सुहुमणामकम्मोदयसहिदपुढविकाइयादओ जीवा सुहुमा हवंति । थोवसरीरोगाहणाए वट्टमाणा जीवा सुहुमा त्ति ण घेप्पंति, सुहुमेइंदियओगाहणादो बादरेइंदियओगाहणाए वेदणाखेत्तविहाणसुत्तादो थोवत्तुवलंभा । अपज्जत्तणामकम्मोदयसहिदपुढविकाइयादओ अपज्जत्ता त्ति घेत्तव्वा णाणिप्पणसरीरा, पज्जत्तणामकम्मोदयअणिप्पणसरीराणं पि गहणप्पसंगादो । तहा पज्जत्तणामकम्मोदयवंतो जीवा पज्जत्ता । अण्णहा णिप्पणसरीरजीवाणमेव गहणप्प-

सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंकी अवगाहना बड़ी पाई जाती है, इसलिये स्थूल शरीरवाले जीवोंको बादर नहीं कह सकते हैं । अतः जिनका शरीर प्रतिघातयुक्त है वे बादर हैं और अन्य पुद्गलोंसे प्रतिघातरहित जिनका शरीर है वे सूक्ष्म जीव हैं, यह अर्थ यहां पर बादर और सूक्ष्म शब्दसे लेना चाहिये ।

एक एक जीवके प्रति जो शरीर होता है उसे प्रत्येक कहते हैं । जिन जीवोंका प्रत्येकशरीर होता है वे प्रत्येकशरीर जीव हैं । यहां सूत्रमें ' प्रत्येकशरीर ' पदका निर्देश साधारणशरीर वनस्पतिकायिकके प्रतिषेधके लिये किया है । पृथिवीकायिक आदि जीव प्रत्येकशरीर ही होते हैं ।

शंका — सूत्रमें पृथिवीकायिक आदि जीवोंको प्रत्येक संज्ञा क्यों नहीं दी गई है ?

समाधान — उन पृथिवीकायिक आदि जीवोंमें प्रत्येक शरीरका संभव ही है असंभव नहीं है, इसलिये प्रत्येक पदसे उन्हें विशेषित नहीं किया गया है, क्योंकि, व्यभिचारके होने पर, अथवा उसकी संभाषना होने पर, दिया गया विशेषण सार्थक होता है, ऐसा न्याय है ।

सूक्ष्म नामकर्मके उदयसे युक्त पृथिवीकायिक आदि जीव सूक्ष्म होते हैं । यहां शरीरकी स्तोक अवगाहनामें विद्यमान जीव सूक्ष्म होते हैं, ऐसा अर्थ नहीं लिया गया है, क्योंकि वेदनाक्षेत्रविधानके सूत्रसे सूक्ष्म एकेन्द्रियोंकी अवगाहनाकी अपेक्षा बादर एकेन्द्रियोंकी अवगाहना भी स्तोक पाई जाती है । अपर्याप्त नामकर्मके उदयसे युक्त बादर पृथिवीकायिक आदि जीव अपर्याप्त हैं, ऐसा अर्थ यहां पर लेना चाहिये । किंतु जिनका शरीर अभी निष्पन्न नहीं हुआ अर्थात् जिनकी शरीर-पर्याप्ति पूर्ण नहीं हुई है वे अपर्याप्त हैं, ऐसा अर्थ यहां नहीं लेना चाहिये, क्योंकि, ऐसा अर्थ लेने पर पर्याप्त नामकर्मका उदय रहते हुए भी जिनका शरीर पूर्ण नहीं हुआ है अपर्याप्त पदसे उनके भी ग्रहणका प्रसंग आ जाता है । उसीप्रकार पर्याप्त नामकर्मके उदयसे युक्त जीव पर्याप्त हैं, प्रकृतमें पर्याप्त पदसे ऐसा अर्थ लेना चाहिये, अन्यथा जिन जीवोंका शरीर निष्पन्न हो चुका है पर्याप्त पदसे उनका ही ग्रहण होगा ।

संगा । बादर-सुहुमजीवेसु पंच-चउम्भेएसु तस्सेवेसि एगवयणणिदेसो कधं घडदे ? ण, तेसिं जादीए एगत्तसंभवादो ।

एत्थ चोदगो भणदि । विग्गहर्गए वट्टमाणवणप्फइकाइया किं पत्तेयसरीरा आहो साहारणसरीरा इदि ? किं चातः ? ण पत्तेयसरीरा, कम्मइयकायजोगे वट्टमाणवणप्फइकाइया अर्णता ति कट्टु वणप्फइकाइयपत्तेयसरीराणमणंतत्तप्पसंगा । ण च एवं सुत्ते, तेसिं असंखेज्जलोगमेत्तपमाणपदुप्पायणादो । ण ते साहारणसरीरा वि, तत्थ—

साहारणमाहारो साहारणमाणपाणगहणं च ।

साहारणजीवाणं साहारणलक्खणं भणिदं ॥ ७४ ॥

इच्चादिगाहाहि वुत्तसाहारणलक्खणाणुवलंभादो । ण च पत्तेय-साहारणसरीरवदिरित्ता वणप्फइकाइया अत्थि, तहाविहोवएसाभावादो । तस्मात्प्रत्येकं शरीरं देहो येषां ते प्रत्येक-शरीरा इत्येतन्न घटत इति ?

शंका — बादर जीव पांच प्रकारके और सूक्ष्म जीव चार प्रकारके होते हैं, अतः सूत्रमें ' तस्सेष ' इसप्रकार एकवचन निर्देश कैसे बन सकता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, उन पांच प्रकारके बादर और चार प्रकारके सूक्ष्म जीवोंके जातिकी अपेक्षा एकत्व संभव है, इसलिये एकवचन निर्देश करनेमें कोई विरोध नहीं आता है ।

शंका — यहाँ पर शंकाकार कहता है कि विग्रहगतिमें विद्यमान वनस्पतिकायिक जीव क्या प्रत्येकशरीर हैं या साधारणशरीर हैं ? यदि इस प्रश्नका फल पूछा जाय तो यह है कि वे जीव इन दोनों विकल्पोंमेंसे प्रत्येकशरीर तो हो नहीं सकते, क्योंकि, कार्मणकाययोगमें रहने-वाले वनस्पतिकायिक जीव अनन्त होनेसे वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंके अनन्तत्वका प्रसंग आ जाता है । परंतु सूत्रमें ऐसा है नहीं, क्योंकि, सूत्रमें वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंका असंख्यात लोकमात्र प्रमाण कहा है । उसीप्रकार वे जीव साधारणशरीर भी नहीं हो सकते हैं, क्योंकि, वहाँ पर—

साधारण जीवोंका साधारण ही तो आहार होता है और साधारण इवासोच्छ्वासका ग्रहण होता है । इसप्रकार आगममें साधारण जीवोंका साधारण लक्षण कहा है ॥ ७४ ॥

इत्यादि गाथाओंके द्वारा कहा गया साधारण जीवोंका लक्षण नहीं पाया जाता है । और प्रत्येकशरीर तथा साधारणशरीर इन दोनोंसे व्यतिरिक्त वनस्पतिकायिक जीव पाये नहीं जाते हैं, क्योंकि, इसप्रकारका उपदेश नहीं पाया जाता है । इसलिये ' जिनका देह प्रत्येक है वे प्रत्येकशरीर हैं ' यह कथन घटित नहीं होता है ?

१ प्रतिपु ' संखेज्ज ' इति पाठः ।

२ गो. जी. १९२.

एत्थ परिहारो बुच्चदे । जेण जीवेण एकेण चैव एकसरीरद्विएण सुह-दुःखमणुभ-वेदव्वमिदि कम्ममुवज्जिदं सो जीवो पत्तेयसरीरो । जेण जीवेण एगसरीरद्वियक्कहि जीवेहि सह कम्मफलमणुभवेयव्वमिदि कम्ममुवज्जिदं सो साहारणसरीरो । ण च अच्छिण्णाउअस्स तव्ववएसो, तत्र प्रत्यासत्तेरभावात् । विग्गहगईए पुण पच्चासत्ती अत्थि त्ति हवदि एसो ववएसो तम्हा ण पुव्वुत्तदोसस्स संभवो । अहवा पत्तेयसरीरणामकम्मोदयवंतो वणप्फइ-काइया पत्तेयसरीरा । साहारणणामकम्मोदयवंतो साहारणसरीरा त्ति वत्तवं । सरीरगहिद-पढमसमए दोण्हं सरीरणमेगदरस्स उदओ हवदीदि विग्गहगईए वट्टमाणजीवाणं पत्तेय-साहारणसरीरववएसो ण पावदि त्ति बुत्ते, ण एस दोसो, तत्थ वि पच्चासत्ती अत्थि त्ति उवयोरेण तेसिं पत्तेय-साहारणसरीरववएससंभवादो । विग्गहगईए वट्टमाण्णंतजीवाणं साहारणकम्मोदयपरवसाणमण्णोण्णाणुगयत्तणेण एयत्तमुवगयएससरीरम्मि वट्टमाणत्तादो वा

समाधान — यहाँ पर उपर्युक्त शंकाका परिहार करते हैं । जिस जीवने एक शरीरमें स्थित होकर अकेले ही सुख दुःखके अनुभव करने योग्य कर्म उपार्जित किया है वह जीव प्रत्येकशरीर है । तथा जिस जीवने एक शरीरमें स्थित बहुत जीवोंके साथ सुख-दुःखरूप कर्मफलके अनुभव करने योग्य कर्म उपार्जित किया है, वह जीव साधारणशरीर है । परंतु जिसकी आयु छिन्न नहीं हुई है, अर्थात् जो जीव अपनी पर्यायको छोड़कर प्रत्येक व साधारण पर्यायमें उत्पन्न नहीं हुआ है उस जीवके इसप्रकारका व्यपदेश नहीं हो सकता है, क्योंकि, वहाँ पर प्रत्यासत्ति नहीं पाई जाती है । विग्रहगतिमें तो प्रत्यासत्ति पाई जाती है, इसलिये वहाँ पर यह व्यपदेश होता है, अतएव यहाँ पूर्वोक्त दोष संभव नहीं है । अथवा, प्रत्येकशरीर नाम-कर्मके उद्यसे युक्त वनस्पतिकायिक जीव प्रत्येकशरीर हैं और साधारण नामकर्मके उद्यसे युक्त वनस्पतिकायिक जीव साधारणशरीर हैं, ऐसा कथन करना चाहिये ।

शंका — शरीर ग्रहण होनेके प्रथम समयमें दोनों शरीरोंमेंसे किसी एकका उद्य होता है, इसलिये विग्रहगतिमें रहनेवाले जीवोंके प्रत्येकशरीर और साधारणशरीर, इन दोनोंमेंसे कोई भी संज्ञा नहीं प्राप्त होती है ?

समाधान — यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, विग्रहगतिमें भी प्रत्यासत्ति पाई जाती है, इसलिये उपचारसे उन जीवोंके प्रत्येकशरीर अथवा, साधारणशरीर संज्ञा संभव है । अथवा, साधारण नामकर्मके उद्यके आधीन हुए और विग्रहगतिमें विद्यमान हुए अव्यक्त जीव परस्पर अनुगत होनेसे एकत्वको प्राप्त हुए एक शरीरमें रहते हैं, इसलिये वे प्रत्येकशरीर नहीं हैं ।

विशेषार्थ — वर्तमान आयुके समाप्त होने पर वर्तमान शरीरको छोड़कर उत्तर शरीरके ग्रहण करनेके लिये जो गति होती है उसे विग्रहगति कहते हैं । यहाँ विग्रहका अर्थ-शरीर है, इसलिये विग्रह अर्थात् शरीरके लिये जो गति होती है उसे विग्रहगति कहते हैं । इसके इषुगति, पाणिमुक्तागति, लंगलिकागति और गोमूत्रिकागति इसप्रकार चार भेद हैं ।

ण ते पत्तेयसरीरा । एदे छब्बीसरासीओ दब्बपमाणेण असंखेज्जलोगमेत्ता हवंति । एत्थ विसेस-
पदुप्पायणोवायाभावादे। काल-खेत्तेहि परूवणा ण कदा ।

(संपहि सुत्ताविरुद्धेणइरियपरंपरागदोवएसेण तेउक्काइयरासिउप्पायणविहाणं वत्त-
इस्सामो) तं जहा—एगं घणलोगं सलागभूदं ठविय अवरेगं घणलोगं विरलिय एकेकस्स
रूवस्स एकेकं घणलोगं दाऊण वग्गिदसंवग्गिदं करिय सलागरासीदो एगरूवमवणेयव्वं ।
ताथे एक्का अण्णोण्णगुणमारसलागां लद्धा हवदि । तस्सुप्पण्णरासिस्स पलिदोवमस्स

इनमेंसे प्रथम गतिको छोड़कर शेष तीन गतियां विग्रह अर्थात् मोड़ेरूप हैं । जब वनस्पति-
कायिक जीव ऐसी मोड़ेवाली गतिसे न्यूनतन शरीरको ग्रहण करता है तब उसके एक, दो या
तीन समयतक साधारण या प्रत्येक नामकर्मका उदय नहीं होता है, क्योंकि, प्रत्येक या
साधारण नामकर्मका उदय शरीर ग्रहण करनेके प्रथम समयसे लगाकर होता है । इसी
अभिप्रायको ध्यानमें रखकर शंकाकारने यह शंका की है कि जबतक वनस्पतिकायिक जीव
विग्रहगतिमें रहता है तबतक उसके उक्त दोनों कर्मोंमेंसे किसी भी कर्मका उदय नहीं पाया
जाता है, इसलिये उसकी साधारणशरीर और प्रत्येकशरीर इन दोनोंमें किसी भी भेदमें गणना
नहीं हो सकती है । इस शंकाका समाधान दो प्रकारसे किया गया है । एक तो यह कि यद्यपि
विग्रह अर्थात् मोड़ेवाली गतिमें उक्त दोनों कर्मोंमेंसे किसी कर्मका उदय नहीं पाया जाता है,
यह ठीक है; फिर भी प्रत्यासत्तिसे ऐसे जीवको भी प्रत्येक या साधारण कह सकते हैं । अर्थात्
ऐसा जीव एक दो या तीन समयके अनन्तर ही प्रत्येक या साधारण नामकर्मके उदयसे युक्त
होनेवाला है, अतएव उपचारसे उसे प्रत्येक या साधारण कहनेमें कोई आपत्ति नहीं है । दूसरे
विग्रहका अर्थ मोड़ा न लेकर शरीर ले लेने पर इषुगतिकी अपेक्षा विग्रहगतिमें अर्थात् न्यूनतन
शरीरके ग्रहण करनेके लिये होनेवाली गतिमें साधारण या प्रत्येक नामकर्मका उदय पाया ही
जाता है, क्योंकि, इषुगतिसे उत्पन्न होनेवाला जिव आहारक ही होता है ।

ये पूर्वोक्त छब्बीस जीवराशियां द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा असंख्यात लोकप्रमाण हैं । यहां
पर विशेषरूपसे प्रतिपादन करनेका कोई उपाय नहीं पाया जाता है, इसलिये काल और
क्षेत्रप्रमाणकी अपेक्षा इन छब्बीस जीवराशियोंकी प्ररूपणा नहीं की ।

अब सूत्राविरुद्ध आचार्य परंपरासे आये हुए उपदेशके अनुसार तेजस्कायिक जीव-
राशिके प्रमाणके उत्पन्न करनेकी विधिकी बतलाते हैं । वह इसप्रकार है— एक घनलोकको
शलाकारूपसे स्थापित करके और दूसरे घनलोकको विरलित करके उस विरलित राशिके प्रत्येक
एकके प्रति घनलोककी देयरूपसे देकर और परस्पर वर्गितसंवर्गित करके शलाकाराशिमेंसे
एक कम कर देना चाहिये । तब एक अन्योन्य गुणकार शलाका प्राप्त होती है । परस्पर

१ का गुणकारशलाका ? विरलनराशिमात्रतत्सर्वदेयराशिना । शुभितकाररूपा गो. जी. पु. २८३. (पर्याप्ति
अधिकार)

असंखेज्जदिभागमेत्तवग्गसलागा हवंति । तस्सद्वच्छेदणयसलागा असंखेज्जा लोगा । रासी वि असंखेज्जलोगमेत्तो जादो । पुणो उट्ठिदमहारासिं विरलेज्जण तत्थ एकेकस्स रूवस्स उट्ठिदमहारासिपमाणं दाऊण वग्गिदसंवग्गिदं करिय सलागरासीदो अवेरंगं रूवमवणेयव्वं । ताधे अण्णोण्णगुणगारसलागा दोण्णि । वग्गसलागा अद्वच्छेदणयसलागा रासी च असंखेज्जा लोगा । एवमेदेण कमेण णेद्व्वं जाव लोगमेत्तसलागरासी समत्तो त्ति । ताधे अण्णोण्णगुणगारसलागपमाणं लोगो । सेसतिगमसंखेज्जा लोगा । पुणो उट्ठिदमहारासिं विरलेज्जण तं चेव सलागभूदं ठविय विरलिय-एक्केक्कस्स रूवस्स उप्पण्णमहारासिपमाणं दाऊण वग्गिदसंवग्गिदं करिय सलागरासीदो एगरूवमवणेयव्वं । ताधे अण्णोण्णगुणगारसलागा लोगो रूवाहिओ । सेसतिगमसंखेज्जा लोगा । पुणो उप्पण्णरासिं विरलिय रूवं पडि उप्पण्णरासिमेव दाऊण वग्गिदसंवग्गिदं करिय सलागरासीदो अण्णेगरूवमवणेयव्वं । तदो अण्णोण्णगुणगारसलागाओ' लोगो दुरूवाहिओ । सेसतिगमसंखेज्जा लोगा । एवमेदेण कमेण

वर्गितसंवर्गित करनेसे उत्पन्न हुई उस राशिकी वर्गशलाकाएं पन्धोपमके असंख्यातवें भागमात्र होती हैं, उस उत्पन्न राशिकी अर्धच्छेदशलाकाएं असंख्यातलोकप्रमाण होती है और वह उत्पन्न राशि भी असंख्यात लोकप्रमाण होती है । पुनः इस उत्पन्न हुई महाराशिकी विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति उसी उत्पन्न हुई महाराशिकी देयरूपसे देकर परस्पर वर्गितसंवर्गित करके शलाकाराशिमेंसे दूसरीवार एक कम करना चाहिये । तब अन्योन्य गुणकार शलाकाएं दो होती हैं और वर्गशलाकाएं अर्धच्छेदशलाकाएं, तथा उत्पन्नराशि असंख्यात लोकप्रमाण होती हैं । इसीप्रकार लोकप्रमाण शलाकाराशि समाप्त होनेतक इसी क्रमसे ले जाना चाहिये । तब अन्योन्य गुणकार शलाकाओंका प्रमाण लोक होगा और शेष तीन राशियां अर्थात् उस समय उत्पन्न हुई महाराशि और उसकी वर्गशलाकाएं तथा अर्धच्छेदशलाकाएं असंख्यात लोकप्रमाण होंगी । पुनः इसप्रकार उत्पन्न हुई महाराशिकी विरलित करके और इसी राशिकी शलाकारूपसे स्थापित करके विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति उसी उत्पन्न हुई महाराशिके प्रमाणको देयरूपसे देकर वर्गितसंवर्गित करके शलाकाराशिमेंसे एक कम कर देना चाहिये । तब अन्योन्य गुणकार शलाकाएं एक अधिक लोकप्रमाण होती हैं । शेष तीनों राशियां अर्थात् उत्पन्न हुई महाराशि, वर्गशलाकाएं और अर्धच्छेदशलाकाएं असंख्यात लोकप्रमाण होती हैं । पुनः उत्पन्न हुई महाराशिकी विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति उसी उत्पन्न हुई महाराशिकी देकर वर्गितसंवर्गित करके शलाकाराशिमेंसे दूसरीवार एक घटा देना चाहिये । उस समय अन्योन्य गुणकार शलाकाएं दो अधिक लोकप्रमाण होती हैं । शेष तीनों राशियां असंख्यात लोकप्रमाण

१ प्रतिषु '— सलागादो' इति पाठः ।

दुरूवृशुकस्ससंखेज्जमेत्तलोगसलागासु दुरूवाहियलोगग्ग्हि पविट्ठासु चत्तारि वि असंखेज्जा ल्हेमा हवंति । एवं णेयव्वं जाव विदियचारद्विदसलागरासी समत्तो ति । ताधे वि चत्तारि वि असंखेज्जा लोगा । पुणो उट्ठिदरासिं सलागभूदं ठविय अवरेगमुट्ठिदमहारासिपमाणं विर-
लेज्जण उट्ठिदमहारासिपमाणमेव रूवं पडि दाऊण वग्गिदसंवग्गिदं करिय सलागरासीदो एगं
रूवमवणेयव्वं । ताधे चत्तारि वि असंखेज्जा लोगा । एवमेदेण कमेण णेदव्वं जाव तदियचारं
ठवियसलागरासी समत्तो ति । ताधे चत्तारि वि असंखेज्जा लोगा । पुणो उट्ठिदमहारासिं
तिप्पडिरासिं काऊण तत्थेगं सलागभूदं इविय अण्णेगरासिं विरलेज्जण तत्थ एक्केक्कस्स
रूवस्स एगरसिपमाणं दाऊण वग्गिदसंवग्गिदं करिय सलागरासीदो एगरूवमवणेयव्वं ।
एवं पुणो पुणो करिय णेयव्वं जाव अदिक्कंतअण्णोण्णगुणगारसलागाहि ऊणचउत्थवारद्विद-
अण्णोण्णगुणगारसलागरासी' समत्तो ति । ताधे तेउकाइयरासी उट्ठिदो हवदि' । तस्स

होती हैं । इसप्रकार इसी क्रमसे दो कम उत्कृष्ट संख्यातमात्र लोकप्रमाण अन्योन्य गुणकार शला-
काओंके दो अधिक लोकप्रमाण अन्योन्य गुणकार शलाकाओंमें प्रविष्ट होने पर चारों राशियां
भी असंख्यात लोकप्रमाण होती हैं । इसीप्रकार दूसरीवार स्थापित शलाकाराशि समाप्त
होनेतक इसी क्रमसे ले जाना चाहिये । तब भी चारों भी राशियां असंख्यात लोकप्रमाण
होती हैं । पुनः अन्तमें उत्पन्न हुई महाराशिको शलाकारूपसे स्थापित करके और दूसरी
उसी उत्पन्न हुई महाराशिके प्रमाणको विरलित करके और उत्पन्न हुई उसी महाराशिके
प्रमाणको विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति देयरूपसे देकर परस्पर वर्गितसंवर्गित करके
शलाकाराशिमैंसे एक कम कर देना चाहिये । तब भी चारों राशियां असंख्यात लोकप्रमाण
होती हैं । इसीप्रकार तीसरीवार स्थापित शलाकाराशि समाप्त होनेतक इसी क्रमसे ले
जाना चाहिये । तब भी चारों राशियां असंख्यात लोकप्रमाण हैं । पुनः अन्तमें इस उत्पन्न
हुई महाराशिको तीन प्रतिराशिरूप करके उनमेंसे एक राशिको शलाकारूपसे स्थापित
करके, दूसरी एक राशिको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति एक
राशिके प्रमाणको देयरूपसे देकर परस्पर वर्गितसंवर्गित करके शलाकाराशिमैंसे एक कम
कर देना चाहिये । इसप्रकार पुनः पुनः करके तब तक ले जाना चाहिये जब तक कि अतिक्रान्त
शलाकाओंसे अर्थात् पहली दूसरी और तीसरीवार स्थापित अन्योन्य गुणकार शलाकाओंसे
न्यून चौथीवार स्थापित अन्योन्य गुणकार शलाकाराशि समाप्त होती है । तब तेजस्कायिक

१ एवं प्रथम-द्वितीय-तृतीयवारस्थापितशलाकाराशिन्यूनचतुर्थवारस्थापितशलाकाराशिपरिसमाप्तौ सत्ता तत्रो-
त्पन्नमहाराशिः तेजस्कायिकजीवसंश्लेषः प्रमाणं भवति । गो. जी; जी.प्र; टी. २०४. पुनःतत्रोत्पन्नमहाराशिः प्राग्वत्
त्रिप्रसक्तिकं कृत्वा अतीतगुणकारशलाकाराशित्रयहीनोऽयं चतुर्थवारस्थापितशलाकाराशिर्निष्ठाप्यते । गो. जी., जी. प्र.,
टी. पृ. २८४. (पर्याप्ति अधिकार).

२ ति. प. पत्र १८२.

गो. जी. पृ. २८२-२८४.

गुणगारसलागा चउत्थवारं द्विविदसलागरासिपमाणं होदि ।

(के वि आइरिया सलागरासिस्स अद्धे गदे तेउक्काइयरासी उप्पज्जदि चि भणंति । के वि तं णेच्छंति) कुदो ? अद्दुइरासिसमुदयस्स वग्गसमुट्ठिदत्ताभावादो । तेउक्काइय-अण्णोण्णगुणगारसलागा वग्गसमुट्ठिदा चि कधं जाणिज्जदे ? परियम्मवयणादो । के वि आइरिया एवं भणंति । जहा— एसो रासी तेउक्काइयरासिस्स गुणगारसलागपमाणं ण भवदि । पुणो को होदि चि बुत्ते बुत्तदे— गुणेज्जमाणस्स लोगस्स गुणगारसरूवेण पवेसमाणलोगाणं जाओ सलागाओ ताओ तेउक्काइयअण्णोण्णगुणगारसलागा बुत्तंति । एदाओ वग्गसमुट्ठिदाओ ण पुत्तिज्जओ चि । तम्हा अद्दुइगुणगारसलागोवएसो विरुज्जदे, एसो ण विरुज्जदे इदि । एवं पि ण घडदे । कुदो ? लोगद्वेयेणएहिं तेउक्काइयरासिस्स अद्धच्छेदणए भागे हिदे जं लद्धं तं विरलिय एक्केक्कस्स रूवस्स घणलोगं दाउण्णोण्णव्भत्थे कदे तेउक्काइय-रासी उप्पज्जदि । हेट्ठिल्लिविरलिदरासी वि तेउक्काइयअण्णोण्णगुणगारसलागपमाणं भवदि ।

राशि उत्पन्न होती है । उस तेजस्कायिक राशिकी अन्योन्य गुणकार शलाकाएं चौथीवार स्थापित अन्योन्य गुणकार शलाकाराशिप्रमाण हैं ।

कितने ही आचार्य चौथीवार स्थापित शलाकाराशिके आधे प्रमाणके व्यतीत होने पर तेजस्कायिक जीवराशि उत्पन्न होती है, ऐसा कहते हैं । परंतु कितने ही आचार्य इस कथनको नहीं मानते हैं, क्योंकि, साढ़े तीनवार राशिका समुदाय वर्गधारामें उत्पन्न नहीं है ।

शंका—यह ठीक है कि छठवार (साढ़े तीनवार) राशिका समुदाय वर्गोत्पन्न नहीं है, पर तेजस्कायिक राशिकी अन्योन्य गुणकार शलाकाएं वर्गधारामें उत्पन्न हैं, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—उक्त आचार्योंके मतमें यह बात परिकर्मके वचनसे जानी जाती है ।

कितने ही आचार्य इसप्रकार कहते हैं कि यह पूर्वोक्त राशि (छठवार राशि) तेजस्कायिक राशिकी गुणकार शलाकाराशिके प्रमाणरूप नहीं है । फिर कौनसी राशि तेजस्कायिक राशिकी गुणकार शलाकाराशिके प्रमाणरूप है, ऐसा पूछने पर वे कहते हैं कि गुण्यमान लोकके गुणकाररूपसे प्रवेशको प्राप्त होनेवाले लोकोंकी जितनी शलाकाएं हों उतनी तेजस्कायिक राशिकी अन्योन्य गुणकार शलाकाएं कही जाती हैं । ये अन्योन्य गुणकार शलाकाएं वर्गमें उत्पन्न हुई हैं पहलेकी अर्थात् साढ़े तीनवार राशिरूप नहीं, इसलिये छठवार राशिप्रमाण गुणकार-शलाकाओंका उपवेश विरोधको प्राप्त होता है, यह उपवेश नहीं ।

परंतु इसप्रकारका कथन भी घटित नहीं होता है, क्योंकि, लोकके अर्धच्छेदोंसे तेजस्कायिक राशिके अर्धच्छेदोंके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति घनलोकको देयरूपसे देकर परस्पर गुणा करने पर तेजस्कायिक राशि उत्पन्न होती है और अधस्तन विरलित राशि भी तेजस्कायिक राशिकी

णवरि अण्णोण्णगुणगारसलागा तेउक्काइयरसिवग्गसलागाहिंतो असंखेज्जगुणत्तं पत्ताओ । कुदो ? तेउक्काइयरसिस्स अद्धच्छेदणयसलागापढमवग्गमूलादो असंखेज्जगुणत्तादो । ण च एदमिच्छिज्जदे । कुदो ? तेउक्काइयरसिवग्गसलागादो तस्स असंखेज्जगुणहीणत्तादो । तं कथं णव्वदे ? परियम्मवयणादो । तं जहा—तेउक्काइयरसिस्स अण्णोण्णगुणगारसलागा वग्गिज्जमाणा वग्गिज्जमाणा असंखेज्जे लोगे वग्गे हेट्ठादो उवरिमसंखेज्जगुणं गंतूण तेउक्काइयरसिस्स वग्गसलागं पावदि त्ति । एस विरलिदरासी ण वग्गसमुट्ठिदो वि । कुदो ? लोमद्धच्छेदणयच्छिण्णतेउक्काइयरसिस्स अद्धच्छेदणयमेत्तादो । विरलिद—दिण्णमाणरासीणं समाणत्तणेण तेउक्काइयरसिस्स घणाघणधारसमुप्पणत्तणेण च तेउक्काइयरसिस्स अद्धच्छेदणयसलागाओ ण वग्गसमुट्ठिदाओ त्ति ? ण एदं, इट्ठत्तादो । ण च परियम्मेण सहविरोहो, तस्स तदुद्देसपदुप्पायणे वावारादो । एत्थ पुण अद्धुट्ठवारमेत्ताओ चेव तेउक्का-

अन्योन्य गुणकार शलाकाओंके प्रमाणरूप होती है। पर इस मतमें इतना विशेष है कि अन्योन्य गुणकार शलाकाएं तेजस्कायिक राशिकी वर्गशलाकाओंसे असंख्यातगुणी हो जाती हैं, क्योंकि, इसप्रकार जो अन्योन्य गुणकार शलाकाएं उत्पन्न होती हैं वे तेजस्कायिक राशिकी अर्धच्छेदशलाकाओंके प्रथम वर्गमूलसे असंख्यातगुणी हो जाती हैं। लेकिन यह इष्ट नहीं है, क्योंकि, तेजस्कायिक राशिकी वर्गशलाकाओंसे अन्योन्य गुणकार शलाकाराशि असंख्यातगुणी हीन है।

शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—परिकर्मके वचनसे जाना जाता है। उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है—तेजस्कायिकराशिकी अन्योन्य गुणकार शलाकाओंको उत्तरोत्तर वर्गित करते हुए असंख्यात लोकप्रमाण अर्थात् अधस्तन वर्गोंसे ऊपर असंख्यातगुणे जाकर तेजस्कायिकराशिकी वर्गशलाकाएं प्राप्त होती हैं।

दूसरे यह विरलित राशि, अर्थात् गुणकाररूपसे प्रवेशको प्राप्त होनेवाले लोकोंकी जितनी शलाकाएं हों वह राशि, वर्गसमुत्पन्न भी नहीं है, क्योंकि, वह लोकके अर्धच्छेदोंसे छिन्न तेजस्कायिक राशिके अर्धच्छेदप्रमाण है।

शंका—विरलितराशि और देयरशि समान होनेसे और तेजस्कायिकराशि घनाघनधारामें उत्पन्न हुई होनेसे तेजस्कायिकराशिकी अर्धच्छेदशलाकाएं भी तो वर्गसमुत्पन्न नहीं हैं।

समाधान—पर यह कोई बात नहीं है, क्योंकि, यह बात हमें इष्ट है। और इसतरह परिकर्मके साथ भी विरोध नहीं आता है, क्योंकि, परिकर्मका उसके उद्देशमात्रके प्रतिपादन करनेमें व्यापार होता है। यहाँ पर तो केवल तेजस्कायिकराशिकी साढ़े तीन राशिन्वार अन्योन्य

१ 'लोगद्धच्छेदणयच्छेणं तेउ-' इति पाठः।

इयरसिअण्णोण्णगुणगारसलागाओ ति धेत्तच्चं, आइरियपरांपरागओवएसत्तादो । ण च वग्गसमुट्ठिदत्तं गुणगारसलागाणं णत्थि ति अद्दुट्ठुवएसो ण भद्दओ, अद्दुट्ठुवएसण्णहाणुववत्तीदो चेव तदवग्गसमुट्ठिदत्तस्स अवग्गमादो । ण परियम्मदो वग्गत्तसिद्धी, तस्स तेउक्काइयअट्ठच्छेदणएहि अणेयंतियत्तादो ।

अहवा तेउक्काइयरसिस्स अण्णोण्णगुणगारसलागाओ सलागभूदाओ इविऊण

गुणकार शलाकाएं होती हैं, ऐसा ग्रहण करना चाहिये । क्योंकि, आचार्य परंपरासे इसी प्रकारका उपदेश आ रहा है । गुणकार शलाकाएं वर्गसमुत्पन्न नहीं हैं, इसलिये साढ़े तीनवारका उपदेश ठीक नहीं है, सो बात भी नहीं है, क्योंकि, साढ़े तीनवारका उपदेश अन्यथा बन नहीं सकता है, इसीसे गुणकार शलाकाएं वर्गसमुत्पन्न नहीं हैं, यह बात जानी जाती है । परिकर्मसे इनके वर्गत्वकी भी सिद्धि नहीं होती है, क्योंकि, इसका तेजस्कायिक राशिके अर्धच्छेदोंके साथ अनेकान्त है ।

विशेषार्थ—यहां पर तेजस्कायिकराशिकी अन्योन्य गुणकारशलाकाएं कितनी हैं, इस विषयमें आचार्य परंपरासे आये हुए मतके अतिरिक्त दो और मतोंका उल्लेख किया गया है । घनलोकको लेकर विरलन, देय और शलाकाक्रमसे तीसरीवार शलाकाराशिके समाप्त होने पर जो महाराशि उत्पन्न हो उसमेंसे पहली, दूसरी और तीसरी शलाकाराशिके घटा देने पर शेष राशिको शलाका मान कर साढ़े तीन राशिवार अन्योन्य गुणकार शलाकाओंका प्रमाण आ जाता है । यह मत आचार्य-परंपरासे आया हुआ होनेसे प्रमाण है । दूसरा मत यह है कि तीसरीवार शलाकाराशिके समाप्त होने पर जो महाराशि उत्पन्न हो उसके आधे प्रमाणको शलाकारूपसे स्थापित करना चाहिये तब जाकर साढ़े तीन राशिवार अन्योन्य गुणकार शलाकाओंका प्रमाण होता है । पर कितने ही आचार्य इस मतका विरोध करते हैं । उनके मतसे यह साढ़े तीन राशिवार अन्योन्य गुणकार शलाकाराशिका उपदेश वर्गसमुत्पन्न नहीं है, इसलिये प्रमाणभूत नहीं है । तेजस्कायिक राशिकी अन्योन्य गुणकार शलाकाएं वर्गोत्पन्न हैं इस मतकी पुष्टि वे आचार्य परिकर्मके आधारसे करते हैं । कितने ही आचार्य ऐसा कथन करते हैं कि जितने लोकप्रमाणराशिके प्रत्येक एक पर लोकको स्थापित करके परस्पर गुणित करनेसे तेजस्कायिकराशि उत्पन्न होती है उतने लोकप्रमाणराशि तेजस्कायिकराशिकी अन्योन्य गुणकार शलाकाएं होती हैं । इन्हें वे वर्गसमुत्पन्न भी मानते हैं । पर धीरसेनस्वामीने दूसरे मतके समान इस मतको भी प्रमाणभूत नहीं माना है, क्योंकि, इसप्रकार अन्योन्य गुणकार शलाकाओंका जो प्रमाण प्राप्त होता है वह तेजस्कायिकराशिकी वर्गशलाकाराशिसे असंख्यातगुणा हो जाता है । पर क्रमानुसार अन्योन्य गुणकार शलाकाराशिसे वर्गशलाकाराशि असंख्यातगुणी होनी चाहिये ।

अथवा, तेजस्कायिकराशिकी अन्योन्य गुणकार शलाकाओंको शलाकारूपसे स्थापित

तदुत्पत्तिणिमित्तरासीणं वग्गिदसंवग्गिदे काऊण तेउक्काइयरासी उप्पाएदव्वा । तेउक्का-
इयरासिं भागहारं काऊण तस्सुवरिमवग्गं विहज्जमाणरासिं करिय खंडिद-भाजिद-विरलिद-
अवहिदाणि जाणिऊण वत्तव्वाणि । तस्स पमाणमुवरिमवग्गस्स असंखेज्जदिभागो । कारणं,
तेउक्काइयरासिणा उवरिमवग्गे भागे हिदे तेउक्काइयरासी चेव आगच्छदि त्ति । एत्थ संदेहा-
भावा णिरुत्ती ण वत्तव्वा ।

वियप्पो दुविहो, हेट्टिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि । एत्थ हेट्टिमवियप्पो णत्थि,
तेउक्काइयरासिस्स विहज्जमाणरासिपढमवग्गमूलमेत्तत्तादो । उवरिमवियप्पो तिविहो,
गहिदो गहिदगहिदो गहिदगुणगारो चेदि । तत्थ गहिदं वत्तइस्सामो । तेउक्काइयरासिणा
उवरिमवग्गे भागे हिदे तेउक्काइयरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्वच्छेदणयमेत्ते
रासिस्स अद्वच्छेदणये कदे तेउक्काइयरासी आगच्छदि । अहवा तेउक्काइयरासिणा तस्सु-
वरिमवग्गं गुणेऊण तदुवरिमवग्गे भागे हिदे तेउक्काइयरासी आगच्छदि । तस्सद्वच्छेदण-
यमेत्ते रासिस्स अद्वच्छेदणये कदे वि तेउक्काइयरासी आगच्छदि । अट्टरूवे वत्तइस्सामो ।
तेउक्काइयरासिणा तेउक्काइयउवरिमवग्गसमाणअट्टरूववग्गं गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गं मोत्तूण-

करके और उसकी उत्पत्तिकी निमित्तभूत राशियोंको वर्णितसंवर्णित करके तेजस्कायिकराशि
उत्पन्न कर लेना चाहिये । तेजस्कायिकराशिको भागहार करके और उसके उपरिम वर्गको
भज्यमानराशि करके खंडित, भाजित, विरलित और अपहृतका जानकर कथन करना चाहिये ।
उसका प्रमाण तेजस्कायिक राशिके उपरिम वर्गका असंख्यातवां भाग है । इसका
कारण यह है कि तेजस्कायिकराशिसे उसके उपरिम वर्गके भाजित करने पर तेजस्कायिक
जीवराशि ही आती है । यहां पर संदेह नहीं होनेसे निरुक्तिके कथनकी आवश्यकता नहीं है ।

विकल्प दो प्रकारका है, अधस्तन विकल्प और उपरिम विकल्प । परंतु यहां पर
अधस्तन विकल्प नहीं पाया जाता है, क्योंकि, तेजस्कायिकराशि भज्यमान राशिके प्रथम
वर्गमूलप्रमाण है ।

उपरिम विकल्प तीन प्रकारका है, गृहीत, गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकार । उनमेंसे
गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— तेजस्कायिक राशिसे उसके उपरिम वर्गके भाजित
करने पर तेजस्कायिक राशिका प्रमाण आता है । उक्त भागहारके अर्धच्छेदप्रमाण उक्त
भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी तेजस्कायिक राशि आती है । अथवा, तेजस्कायिक
राशिके प्रमाणसे उसके उपरिम वर्गको गुणित करके लब्ध राशिका उपरिम वर्गके उपरिम
वर्गमें भाग देने पर तेजस्कायिक राशिका प्रमाण आता है । उक्त भागहारके अर्धच्छेदप्रमाण
उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी तेजस्कायिक राशिका प्रमाण आता है ।

अब अष्टरूपमें उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— तेजस्कायिक राशिसे तेजस्कायिक
राशिके उपरिम वर्गके समान घनके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका
तेजस्कायिक राशिके उपरिम वर्गको छोड़कर उसके उपरिम वर्गमें भाग देने

तदुवरिमवग्गे भागे हिदे तेउक्काइयरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि तेउक्काइयरासी आगच्छदि । घणावणे' वत्तइस्सामो । तेउक्काइयरासिणा तेउक्काइयरासिउवरिमवग्गसमाणअद्धरूववग्गं गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गं मोत्तूण तदुवरिमवग्गसमाणवेरूववग्गं गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गं मोत्तूण तदुवरिमवग्गे भागे हिदे तेउक्काइयरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि तेउक्काइयरासी अवचिद्धे । विहज्जमाणवग्गणं असंखेज्जदिभाएण गहिद-गहिदो गहिदगुणगारो च वत्तव्वो । एवं तेउक्काइयपरूवणा समत्ता ।

तेउक्काइयरासिमसंखेज्जलोगेण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते पुढविकाइयरासी होदि । तम्हि असंखेज्जलोगेण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते आउकाइयरासी होदि । तम्हि असंखेज्जलोगेण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते वाउकाइयरासी होदि । एदेसिं तिण्णं रासीणं अवहारकालस्सुप्पायण-

पर तेजस्कायिक राशिका प्रमाण आता है । उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी तेजस्कायिक राशिका प्रमाण आता है ।

अब घनाघनमें उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— तेजस्कायिक राशिके तेजस्कायिक राशिके उपरिम वर्गके समान घनके उपरिम वर्गको गुणित करके पुनः तेजस्कायिक राशिके उपरिम वर्गको छोड़कर उसके उपरिम वर्गके समान द्विरूपके वर्गको गुणित करके तेजस्कायिक राशिके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको छोड़कर उसके उपरिम वर्गमें भाग देने पर तेजस्कायिक राशिका प्रमाण आता है । उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी तेजस्कायिक राशिका प्रमाण आता है । विभज्यमान वर्गोंके असंख्यातवें भागरूप तेजस्कायिक राशिके द्वारा गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकारका कथन करना चाहिये । इसप्रकार तेजस्कायिक जीवराशिकी प्ररूपणा समाप्त हुई ।

तेजस्कायिक राशिको असंख्यात लोकोंके प्रमाणसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी तेजस्कायिक राशिके प्रमाणमें प्रक्षिप्त करने पर पृथिवीकायिक राशिका प्रमाण होता है । इस पृथिवीकायिक राशिको असंख्यात लोकोंके प्रमाणसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी पृथिवीकायिक राशिके मिला देने पर अप्कायिक राशिका प्रमाण होता है । इस अप्कायिक राशिको असंख्यात लोकोंके प्रमाणसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी अप्कायिक राशिके मिला देने पर वायुकायिक राशिका प्रमाण होता है ।

अब इन तीनों राशियोंके अवहारकालके उत्पन्न करनेकी विधिको बतलाते

१ प्रतिपु ' वेरूवे ' इति पाठः ।

विहाणं उच्ये । तं जहा— तेउक्काइयरासिं पुढविकाइयरासिं सोहिय सेसेण तेउक्काइयरासिं भागे हिदे असंखेज्जलोगरासी आगच्छदि । तेण रूवाहिण्ण तेउक्काइयरासिमोवट्टिय लद्धं तंमि चेव अवणिदे पुढविकाइयअवहारकालो होदि । पुणो पुढविकाइयरासिं आउक्काइयरासिं सोहिय सेसेण पुढविकाइयरासिं भागे हिदे असंखेज्जलोमत्तरासी आगच्छदि । तेण रूवाहिण्ण पुढविकाइयअवहारकालमोवट्टिय लद्धं तंमि चेव अवणिदे आउक्काइयअवहारकालो होदि । पुणो आउक्काइयरासिं वाउक्काइयरासिं सोहिय तत्थावसिद्धरासिणा आउक्काइयरासिं भागे हिदे असंखेज्जलोमत्तरासी लब्भदि । तेण रूवाहिण्ण आउक्काइयअवहारकाले भागे हिदे लद्धं तंमि चेव अवणिदे वाउक्काइयअवहारकालो होदि । एत्थुवउज्जंती गाहा—

रासिविसेसेणवहिदरासिंमि यं जं हिये^१ समुवलद्धं ।

रूवूणहिण्णवहिदहारो ऊणाहिओ तेण ॥ ७५ ॥

हैं । वह इसप्रकार है— तेजस्कायिक राशिको पृथिवीकायिक राशिमेंसे घटा कर जो शेष रहे उससे तेजस्कायिक राशिके भाजित करने पर असंख्यात लोकप्रमाण राशि आती है । एक अधिक उस असंख्यात लोकप्रमाणराशिसे तेजस्कायिक राशिको भाजित करके जो लब्ध आवे उसे उसी तेजस्कायिक राशिमेंसे घटा देने पर पृथिवीकायिक राशिसंबन्धी अवहारकाल होता है । पुनः पृथिवीकायिक राशिको जलकायिक राशिमेंसे घटा कर जो शेष रहे उससे पृथिवीकायिक राशिके भाजित करने पर असंख्यात लोकप्रमाणराशि आती है । एक अधिक उस असंख्यात लोकप्रमाण राशिसे पृथिवीकायिक राशिके अवहारकालको भाजित करके जो लब्ध आवे उसे उसी पृथिवीकायिक राशिके अवहारकालमेंसे घटा देने पर जलकायिक राशिसंबन्धी अवहारकाल होता है । पुनः अप्कायिक राशिको वायुकायिक राशिमेंसे घटा कर वहां जो राशि अवशिष्ट रहे उससे अप्कायिक राशिके भाजित करने पर असंख्यात लोकप्रमाण राशि लब्ध आती है । एक अधिक उस असंख्यात लोकप्रमाण राशिसे अप्कायिक राशिके अवहारकालके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी अप्कायिक राशिके अवहारकालमेंसे घटा देने पर वायुकायिक राशिसंबन्धी अवहारकाल होता है । यहां पर उपर्युक्त गाथा दी जाती है—

राशिबिषेणसे राशिके भाजित करने पर जो भाग लब्ध आवे उसमेंसे यदि एक कम करके शेष राशिसे भागहार भाजित किया जाय तो उस लब्धको उसी भागहारमें मिला देवे और यदि लब्ध राशिमें एक अधिक करके उससे भागहार भाजित किया जाय तब भागहारके भाजित करने पर जो लब्ध राशि आवे उसे भागहारमेंसे घटा देना चाहिये ॥ ७५ ॥

१ प्रातिपु ' जं हिये ' इति पाठः ।

एसा किरिया इंदिय-कसाय जोगमग्गणासु विसेसाहियरासीणं विसेसहीणरासीणं च णिरवयवा कायव्वा । एदे पुव्वुत्ते चत्तारि अवहारकाले विरलिय तेउकाइयरासिस्सुवरिमवग्गं चउण्हं विरलणाणं पुध पुध समखंडं करिय दिण्णे अप्पप्पणो रासिपमाणं पावेदि । पुणो सगसगवादरजीवेहिं सगसगविरलणाए एगरूवोवरि द्विदसगसगरासिग्गि भागे हिदे असंखेज्जलोगमेत्तरासी आगच्छदि । तेण रूवूणेण सगसगअवहारकालेसु ओवट्टिदेसु लद्धं तग्गि चैव पक्खित्ते सगसगसुहुमाणं अवहारकाला भवन्ति । पुणो एदे चत्तारि वि सुहुम-जीवअवहारकाले पुध पुध विरलिय तेउक्काइयरासिस्सुवरिमवग्गं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि सगसगसुहुमपमाणं पावेदि । पुणो सगसगविरलणाए एगरूवोवरि द्विदसुहुमरासिं सगसगसुहुमअपज्जत्तएहिं भागे हिदे तत्थ लद्धसंखेज्जरूवेहि रूवूणेहि सगसगसुहुम-अवहारकाले ओवट्टिय लद्धं तग्गि चैव पक्खित्ते सगसगसुहुमपज्जत्तणमवहारकाला भवन्ति । पुव्वं भागलद्धसंखेज्जरूवेहिं सगसगसुहुमजीवअवहारकालेसु गुणिदेसु सगसग-सुहुमअपज्जत्तअवहारकाला भवन्ति । चउण्हं वादराणं पुव्वुप्पादिदेहिं असंखेज्जलोगमेत्त-

इन्द्रिय, कषाय और योग इन तीन मार्गणाओंमें विशेष अधिक राशियोंके और विशेष हीन राशियोंके संबन्धमें संपूर्ण रूपसे यह क्रिया करना चाहिये। पूर्वोक्त इन चारों अवहारकालोंको विरलित करके और तेजस्कायिक राशिके उपरिम वर्गको चारों विरलनोंके ऊपर पृथक् पृथक् समान खंड करके दे देने पर अपनी अपनी राशिका प्रमाण प्राप्त होता है। पुनः अपनी अपनी वादरकायिक जीवराशिके प्रमाणका अपने अपने विरलनके एक अंकके ऊपर स्थित अपनी अपनी राशिके प्रमाणमें भाग देने पर असंख्यात लोकप्रमाण राशि प्राप्त होती है। एक कम उस असंख्यात लोकप्रमाण राशिसे अपने अपने अवहारकालोंके भाजित करने पर जो जो लब्ध आवे उसे उसी अपने अपने अवहारकालमें मिला देने पर अपने अपने सूक्ष्म जीवोंके प्रमाण लानेके लिये अवहारकाल होते हैं। पुनः सूक्ष्म जीवसंबन्धी इन चारों भी अवहारकालोंको पृथक् पृथक् विरलित करके और उन विरलनोंके प्रत्येक एकके ऊपर तेजस्कायिक राशिके उपरिम वर्गको समान खंड करके दे देने पर विरलनोंके प्रत्येक एकके प्रति अपने अपने सूक्ष्म जीवोंका प्रमाण प्राप्त होता है। पुनः अपने अपने विरलनके एक विरलन-अंकके ऊपर स्थित सूक्ष्म जीवराशिके प्रमाणको अपनी अपनी सूक्ष्म अपर्याप्त जीवराशिके प्रमाणसे भाजित करने पर वहां जो संख्यात लब्ध आवे उनमेंसे एक कम करके शेष राशिसे अपने अपने सूक्ष्म जीवोंके अवहारकालको भाजित करके जो लब्ध आवे उसे उन्हीं अवहारकालोंमें मिला देने पर अपने अपने सूक्ष्म पर्याप्त जीवोंके अवहारकाल होते हैं। बहूले भाग देने पर जो संख्यात लब्ध आवे थे उनसे अपने अपने सूक्ष्म जीवोंके अवहारकालोंके गुणित करने पर अपने अपने सूक्ष्म अपर्याप्त जीवोंके अवहारकाल होते हैं। चारों वादरोंके

१ प्रतिषु '—कालेसु' इति पाठः ।

गुणगारेहिं सगसगसामण्णअवहारकालेसु गुणिदेसु सगसगबादराणमवहारकाला भवंति ।

पुणो सुत्ताविरुद्धेण आइरिओवएसेण सुत्तं व पमाणभूदेण बादराणमद्धच्छेदणए वत्तइस्सामो । तं जहा— एगसागरोवमादो एगं पलिदोवमं घेत्तूण तमावलियाए असंखेज्जदि- भागेण खंडिय तत्थेगखंडं पुध द्धविय सेसबहुभागे तम्मि चेव पक्खित्ते बादरतेउक्काइय- अद्धच्छेदणयसलागा हवंति । जं पुध द्धविदेयखंडं तं पुणो वि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिय तत्थेगखंडमवणिय बहुखंडे पुव्वरासिं दुप्पडिरासिं काऊण पक्खित्ते बादरवणप्फइ- पत्तेयसरीराणं अद्धच्छेदणयसलागा हवंति । एवं बादरणिगोदपदिट्ठिद-बादरपुट्ठवि-बादर- आऊणं च वत्तव्वं । अंते अवणिदएगखंडं बादरआउक्काइयअद्धच्छेदणयसलागासु पक्खित्ते बादरवाउक्काइयअद्धच्छेदणयसलागा सायरोवममेत्ता जादा । बादरतेउक्काइयअद्धच्छेदणए विरालिय विगं करिय अण्णोण्णवमत्थे कदे बादरतेउक्काइयरासी उप्पज्जदि । अहवा घणलोयछेयणएहिं बादरतेउक्काइयअद्धच्छेदणएसु ओवट्ठिदेसु लद्धं विरलेऊण रूवं पडि

जो पहले असंख्यात लोकप्रमाण गुणकार उत्पन्न किये थे उनसे अपने अपने सामान्य अवहार- कालोंके गुणित करने पर अपने अपने बादर जीवोंके अवहारकाल होते हैं ।

अब आगे सूत्रके समान प्रमाणभूत सूत्राविरुद्ध आचार्योंके उपदेशके अनुसार बादर जीवोंके अर्धच्छेद बतलाते हैं । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— एक सागरोपममेंसे एक पल्योपमको ग्रहण करके और उसे आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके वहां जो एक भाग लब्ध आवे उसे पृथक् स्थापित करके शेष बहुभागको उसी राशिमें अर्थात् पल्यकम सागरमें मिला देने पर बादर तेजस्कायिक राशिकी अर्धच्छेद शलाकाएं होती हैं । जो एक भाग पृथक् स्थापित किया था उसे फिर भी आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके वहां जो एक भाग लब्ध आया उसे घटा कर अवशेष बहुभागको पूर्वराशि अर्थात् बादर तेजस्कायिक राशिके अर्धच्छेदोंकी दो प्रतिराशियां करके और उनमेंसे एकमें मिला देने पर बादर घनरूपति प्रत्येकशरीर जीवोंकी अर्धच्छेदशलाकाएं होती हैं । इसीप्रकार बादर निगोदप्रतिष्ठित, बादर पृथिवीकायिक और बादर अप्कायिक जीवराशिके अर्धच्छेदोंका कथन करना चाहिये । अन्तमें अपनीत एक खंडको बादर अप्कायिक जीवोंकी अर्धच्छेद शलाकाओंमें मिला देने पर सागरोपमप्रमाण बादर वायुकायिक जीवोंकी अर्धच्छेदशलाकाएं हो जाती हैं ।

बादर तेजस्कायिक राशिकी अर्धच्छेदशलाकाओंका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दोरूप करके परस्पर गुणित करने पर बादर तेजस्कायिक जीवराशि उत्पन्न होती है । अथवा, घनलोकके अर्धच्छेदोंसे बादर तेजस्कायिक राशिके अर्धच्छेदोंके

१ अ वलिअसंखभागेणवहिदपल्लूणसायरद्धुडिदा । बादरतेपणिभूजलवादाणं चरिमसायरं पुण्णं ॥ गो.

जी. २१३.

घणलोगं दाऊण अण्णोण्णम्भत्थे कए बादरतेउकाइयरासी उप्पज्जदि । अहवा बादर-
तेउअद्धच्छेदणए बादरवणप्फइपत्तेयसरीरइच्छेदणएहिंतो सोहिय अवसेसरासिं विरलिय विगं
करिय अण्णोण्णम्भत्थरासिणा बादरवणप्फइपत्तेयसरीररासिम्हि भागे हिदे बादरतेउकाइय-
रासी उप्पज्जदि । अहवा बादरवणप्फइपत्तेयरासिस्स अहियद्धच्छेयणयमेत्ते' अद्धच्छे-
यणए कए बादरतेउकाइयरासी उप्पज्जदि । अहवा घणलोगच्छेदणएहि अहियद्धच्छेदणएसु
ओवट्टिदेसु तत्थ लद्धं विरलेऊण एक्केक्कस्स रूवस्स घणलोगं दाऊण अण्णोण्णम्भत्थे कए
जो रासी तेण बादरवणप्फइपत्तेयसरीररासिम्हि भागे हिदे बादरतेउकाइयरासी होदि ।
एवं बादरणिगोदपदिट्टिद-बादरपुढविकाइय-बादरआउकाइय-बादरवाउकाइयाणं अप्पण्णो
अद्धच्छेदणएहिंतो बादरतेउकाइयरासी उप्पादेदव्वा । एवं बादरतेउकाइयरासिस्स
सचारसविहा परूवणा कदा ।

भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक
एकके प्रति घनलोकको देकर परस्पर गुणित करने पर बादर तेजस्कायिक राशि उत्पन्न
होती है । अथवा, बादर तेजस्कायिक राशिके अर्धच्छेदोंको बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर
जीवोंके अर्धच्छेदोंमेंसे घटाकर जो राशि शेष रहे उसे विरलित करके और उस विरलित
राशिके प्रत्येक एकको दोरूप करके परस्पर गुणित करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे बादर
वनस्पति प्रत्येकशरीर जीवोंकी राशिके भाजित करने पर बादर तेजस्कायिक राशि उत्पन्न
होती है । अथवा, बादर वनस्पति प्रत्येकराशिके जितने अधिक अर्धच्छेद हों उतनीवार बादर
वनस्पति प्रत्येकशरीर राशिके अर्धच्छेद करने पर भी बादर तेजस्कायिक राशि उत्पन्न होती
है । अथवा, घनलोकके अर्धच्छेदोंसे अधिक अर्धच्छेदोंके भाजित करने पर वहां जो लब्ध
आवे उसे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति घनलोकको देयरूपसे
देकर परस्पर गुणित करने पर जो राशि आवे उससे बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर जीवराशिके
भाजित करने पर बादर तेजस्कायिक राशि आती है । इसीप्रकार बादर निगोदप्रतिष्ठित, बादर
पृथिवीकायिक, बादर अप्कायिक और बादर वायुकायिक जीवोंके अपने अपने अर्धच्छेदोंसे
बादर तेजस्कायिक राशि उत्पन्न कर लेना चाहिये । इसप्रकार बादर तेजस्कायिक राशिकी
सत्रह प्रकारकी प्ररूपणा की ।

विशेषार्थ—ऊपर पांच प्रकारसे तेजस्कायिक जीवराशि उत्पन्न करके बतला आये
हैं । प्रथमवार तेजस्कायिक जीवराशिके अर्धच्छेदोंका और दूसरीवार घनलोकके अर्धच्छेदोंका
आश्रय लेकर तेजस्कायिक जीवराशि उत्पन्न की गई है । अन्तिम तीन प्रकारसे तेजस्कायिक
जीवराशिके उत्पन्न करनेमें बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर जीवराशिके अर्धच्छेदोंकी मुख्यता

बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीररासिस्स अद्धच्छेदणए विरलेऊण विगं करिय अण्णो-
ण्णव्भत्थे कदे बादरवणप्फदिपत्तेयसरीररासी उप्पज्जदि । अहवा घणलोगच्छेदणएहि
बादरवणप्फइपत्तेगसरीरअद्धच्छेयणएसु ओवट्टिदेसु लद्धं विरलेऊण रूवं पडि घणलोगं
दाऊण अण्णोण्णव्भत्थे कए बादरवणप्फइपत्तेयसरीररासी उप्पज्जदि । बादरतेउकाइय-
रासीदो बादरवणप्फदिपत्तेगसरीररासिमुप्पाइज्जमाणे अहियद्धच्छेयणमेत्ते' बादरतेउकाइय-
रासिस्स दुउणगुणगारे कए बादरवणप्फइपत्तेगसरीररासी उप्पज्जदि । अहवा अब्भहिय-

है । बादर तेजस्कायिक राशिसे बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर राशि बड़ी है, अतएव तेजस्कायिक राशिके अर्धच्छेदोंसे इस राशिके जितने अधिक अर्धच्छेद हों, उतनीवार दो रखकर परस्पर गुणित करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर राशिके भाजित कर देने पर, अथवा जितने अर्धच्छेद अधिक हैं उतनीवार बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर राशिके अर्धित करने पर, बादर तेजस्कायिक जीव राशि उत्पन्न होती है । बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर राशिके अर्धच्छेदोंका आश्रय करके बादर तेजस्कायिक राशिके उत्पन्न करनेके दो प्रकार तो ये हुए । तीसरे प्रकारमें घनलोकके अर्धच्छेदोंका आश्रय और ले लिया जाता है । अर्थात् घनलोकके अर्धच्छेदोंसे बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर जीव राशिके बादर तेजस्कायिक राशिके अर्धच्छेदोंसे अधिक अर्धच्छेदोंके भाजित कर देने पर जो लब्ध आवे उतनीवार घनलोकके परस्पर गुणित करने पर आई हुई राशिका बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर जीवराशिमें भाग देने पर बादर तेजस्कायिक जीवराशि उत्पन्न होती है । इन्ही तीनों प्रकारोंसे बादर निगोद प्रतिष्ठित जीवराशि, बादर पृथिवीकायिक, बादर अप्कायिक और बादर वायुकायिक राशिके अर्धच्छेदोंका आश्रय लेकर तेजस्कायिक राशिके उत्पन्न करने पर बारह प्रकारसे तेजस्कायिक राशिका प्रमाण उत्पन्न होता है । इन बारह भेदोंमें पूर्वोक्त पांच भेदोंके मिला देने पर तेजस्कायिक राशिकी प्ररूपणा सत्रह प्रकारसे हो जाती है ।

बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवराशिके अर्धच्छेदोंको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दोरूप करके परस्पर गुणित करने पर बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवराशि उत्पन्न होती है । अथवा, घनलोकके अर्धच्छेदोंसे बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर राशिके अर्धच्छेदोंके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति घनलोकको देयरूपसे देकर परस्पर गुणित करने पर बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवराशि उत्पन्न होती है । बादर तेजस्कायिक राशिसे बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर राशिके उत्पन्न करने पर अधिक अर्धच्छेदप्रमाण बादर तेजस्कायिक राशिके दुगुणित करने पर बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवराशि उत्पन्न होती है । अथवा, अधिक अर्धच्छेदोंको विरलित करके और

१ प्रतिधु ' अद्धच्छेयणमेत्ते ' इति पाठः ।

च्छेयणए विरलिय विगं करिय अण्णोण्णभत्थकदरासिणा बादरतेउकाइयरासिं गुणिदे बादरवणप्फदिपत्तेगसरीररासी होइ । अहवा अहियच्छेयणए घणलोगछेयणएहि ओवद्धिय लद्धं विरलेऊण रूवं पडि घणलोगं दाऊण अण्णोण्णभत्थकदरासिणा बादरतेउकाइयरासिं गुणिदे बादरवणप्फइपत्तेगसरीररासी होदि । बादरणिगोदपदिद्धिद-बादरपुढविकाइय-बादर-आउकाइय-बादरवाउकाइएहिंतो बादरवणप्फइपत्तेयसरीररासिमुप्पाइज्जमाणे जहा तेउका-इयरासी उप्पाइदो तथा उप्पादेदच्चा । बादरणिगोदपदिद्धिद-बादरपुढविकाइय-बादरआउ-काइय-बादरवाउकाइयाणं च एवं चैव सत्तारसविहा परूवणा परूवेदच्चा । पत्तेग-साधारणसरीरवदिरित्तो बादरणिगोदपदिद्धिदरासी ण जाणिज्जदि त्ति वुत्ते सच्चं, तेहिं वदिरित्तो वणप्फइकाइएसु जीवरासी णत्थि चैव, किं तु पत्तेयसरीरा दुविहा भवंति बादरणिगोदजीवाणं

उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दोरूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे बादर तेजस्कायिक राशिके गुणित करने पर बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवराशि होती है । अथवा, अधिक अर्धच्छेदोंको घनलोकके अर्धच्छेदोंसे भाजित करके जो लब्ध आवे उसे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति घनलोकको देयरूपसे देकर परस्पर गुणित करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे बादर तेजस्कायिक जीव-राशिके गुणित करने पर बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवराशि होती है । बादर निगोदप्रतिष्ठित, बादर पृथिवीकायिक, बादर अप्कायिक और बादर वायुकायिक जीवराशिके प्रमाणसे बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर राशिके उत्पन्न करने पर जिसप्रकार इन राशियोंसे तेजस्कायिक जीवराशि उत्पन्न की गई उसीप्रकार उत्पन्न करना चाहिये । बादर निगोदप्रतिष्ठित, बादर पृथिवीकायिक, बादर अप्कायिक और बादर वायुकायिक जीवराशिका इसीप्रकार सत्रह सत्रह प्रकारकी प्ररूपणासे प्ररूपण करना चाहिये ।

विशेषार्थ—जहां बड़ी राशिका आश्रय लेकर छोटी राशि उत्पन्न की जावे वहां पर छोटी राशिके अर्धच्छेदोंसे बड़ी राशिके अर्धच्छेद जितने अधिक होवें उतनीवार बड़ी राशिके आधे आधे करने पर, अथवा, उतने अर्धच्छेदप्रमाण दोके परस्पर गुणित करनेसे जो लब्ध आवे उसका बड़ी राशिमें भाग देने पर छोटी राशि आती है । तथा जहां छोटी राशिका आश्रय लेकर बड़ी राशि उत्पन्न की जावे वहां अधिक अर्धच्छेदप्रमाण छोटी राशिके द्विगुणित करने पर, अथवा, उतने अर्धच्छेदप्रमाण दोके परस्पर गुणित करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे छोटी राशिके गुणित कर देने पर बड़ी राशि आ जाती है । शेष कथन स्पष्ट ही है । इसप्रकार तेजस्कायिक राशिकी सत्रह प्रकारकी प्ररूपणाके समान प्ररूपणा करनेसे उपर्युक्त प्रत्येक राशिकी प्ररूपणा सत्रह सत्रह प्रकारकी हो जाती है ।

शंका—प्रत्येकशरीर और साधारणशरीर, इन दोनों जीवराशियोंको छोड़कर बादर-निगोद प्रतिष्ठित जीवराशि क्या है, यह नहीं मालूम पड़ता है ?

समाधान—यह सत्य है कि उक्त दोनों राशियोंके अतिरिक्त वनस्पतिकायिकोंमें और कोई जीवराशि नहीं है, किन्तु प्रत्येकशरीर वनस्पतिकायिक जीव दो प्रकारके हैं, एक

जोणीभूदसरीरा तव्विवरीदसरीरा चेदि । तत्थ जे बादरणिगोदाणं जोणीभूदसरीरपत्तेग-
सरीरजीवा ते बादरणिगोदपदिट्ठिदा भणंति । के ते ? मूलयद्दु-भल्लय-सूरण-गलोइ-लोगेसरप-
भादओ । उच्चं च—

(बीजे जोणीभूदे जीवो वक्कमइ सो व अण्णो वा ।

जे वि य मूळादीया ते पत्तेया पढमदाए^१ ॥ ७६ ॥)

सुत्ते बादरवणप्फदिपत्तेयसरीराणमेव गहणं कदं, (ण तव्वभेदाणं) ? ण^२,
बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरजीवेषु चैव तेसिमंतवभावादो । एदेसिं बादरपज्जत्ताणं परू-
वमाणण परूवणट्ठमुत्तरसुत्तमाह—

(बादरपुढविकाइय-बादरआउकाइय-बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीर-
पज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ॥ ८८ ॥)

(एदस्स सुत्तस्स अत्थो सुगमो त्ति ण बुच्चदे ।) असंखेज्जा इदि सामण्यवयणेण

तो बादरनिगोद जीवोंके योनिभूत प्रत्येकशरीर और दूसरे उनसे विपरीत शरीरवाले अर्थात्
बादरनिगोद जीवोंके अयोनिभूत प्रत्येकशरीर जीव । उनमेंसे जो बादरनिगोद जीवोंके
योनिभूतशरीर प्रत्येकशरीर जीव हैं उन्हें बादरनिगोद प्रतिष्ठित कहते हैं ।

शंका— वे बादरनिगोद जीवोंके योनिभूत प्रत्येकशरीर जीव कौन हैं ?

समाधान— मूली, अदरक (?) भल्लक (भद्रक), सूरण, गलोइ (गुडची या गुरवेल)

लोकेश्वरप्रभा ? आदि बादरनिगोद प्रतिष्ठित हैं । कहा भी है—

योनिभूत बीजमें वही जीव उत्पन्न होता है, अथवा दूसरा कोई जीव उत्पन्न होता है ।
वह और जितने भी मूली आदिक सप्रतिष्ठितप्रत्येक हैं वे प्रथम अवस्थामें प्रत्येक ही हैं ॥७६॥

शंका—सूत्रमें बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंका ही ग्रहण किया है, उनके
भेदोंका क्यों नहीं किया ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंमें ही उनका
अन्तर्भाव हो जाता है ।

अब इन बादर पर्याप्तोंकी प्ररूपणाके प्ररूपण करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

बादर पृथिवीकायिक, बादर अप्कायिक और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर
पर्याप्त जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं ॥ ८८ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है, इसलिये नहीं कहते हैं । सूत्रमें ' असंख्यात हैं ' ऐसा

१ आ. प्रती ' सलोई ' इति पाठः ।

२ गो. जी. १८७. बीए जोणिव्भूए जीवो वक्कमइ सो व अणो वा । जोऽवि य मूले जीवो सोऽवि य पते
पढमयाए ॥ प्रस्तापना १, ४५, गा. ५१, पृ. ११९.

३ प्रतिषु ' गहणं कथं ण ' इति पाठः । ४ प्रतिषु ' बादरआउकाइय ' इति पाठः नास्ति ।

णवण्मसंखेज्जाणं गहणं पत्ते अणिच्छिदासंखेज्जपडिसेहद्वमुत्तरसुत्तं भणदि—

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति
कालेण ॥ ८९ ॥

एदस्स वि सुत्तस्स अत्थो सुगमो चेव । एदेण अवगद-असंखेज्जासंखेज्जस्स विसेसेण
तल्लद्विणिमित्तमुत्तरसुत्तमाह—

खेत्तेण बादरपुढविकाइय-बादरआउकाइय-बादरवणप्फइकाइय-
पत्तेयसरीरपज्जत्तएहि पदरमवहिरदि अंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्ग-
पडिभागेण' ॥ ९० ॥

एत्थ अंगुलमिदि उत्ते पमाणांगुलं घेत्तव्वं । तस्स असंखेज्जदिभागस्स जो वग्गो
तेण पडिभागेण भागहारेण । एत्थ णिमित्ते तइया दडुवा । एदेण अवहारकालेण बादर-
पुढविपज्जत्तादीहि जगपदरमवहिरदि ति जं वुत्तं होदि ।

सामान्य घबन देनेसे नौ प्रकारके असंख्यातोंका ग्रहण प्राप्त होने पर अनिच्छित असंख्यातोंके प्रतिषेध करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

कालकी अपेक्षा बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त बादर अप्कायिक पर्याप्त और
बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और
उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ८९ ॥

इस सूत्रका भी अर्थ सुगम ही है । यद्यपि इस सूत्रसे असंख्यातासंख्यात अवगत हो
गया, फिर भी उसकी विशेषरूपसे प्राप्ति करानेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

क्षेत्रकी अपेक्षा बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त, बादर अप्कायिक पर्याप्त और
बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंके द्वारा सूच्यंगुलके असंख्यातवै भागके
वर्गरूप प्रतिभागसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ ९० ॥

यहां सूत्रमें अंगुल पेसा कहने पर प्रमाणांगुलका ग्रहण करना चाहिये । उस
प्रमाणांगुलके असंख्यातवै भागका जो वर्ग तद्रूप प्रतिभागसे अर्थात् भागहारसे । यहां निमित्तमें
तृतीया विभक्ति जानना चाहिये । इस अवहारकालसे बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त आदि
जीवोंके द्वारा जगप्रतर अपहृत होता है, यह इस सूत्रका अभिप्राय है ।

विशेषार्थ — उत्सेधांगुल, प्रमाणांगुल और आत्मांगुलके भेदसे अंगुल तीन प्रकारका
है । आठ यवका एक उत्सेधांगुल होता है । पांचसौ उत्सेधांगुलोंका एक प्रमाणांगुल होता है ।

१ पञ्चासखेज्जवद्विदपदरंगुलभाजिदे जगपदरे । जलभूणिपनादरया पुण्णा आवलिअसंखभजिदकमा ॥
गी. जी. २०९.

एत्थ सुत्तसूचिदमाइरिओवएसेण भागहारणं विसेसे भणिस्सामो । तं जहा-
पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण सूचिअंगुलमवहरिय लद्धं वग्गिदे वादरआउकाइयपज्जत्त-
अवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे वादरपुढविकाइय-
पज्जत्तअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे वादरणिगोद-
पदिट्ठिदपज्जत्तअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे वादर-
वणफ्फदिपत्तेयसररिपज्जत्तअवहारकालो होदि । कारणं, सगरासिबहुत्तणिवंधणत्ता । एदेसि-
मवहारकालाणं खंडिदादीणं पंचिदियतिरिक्खभंगो । णवरि पदरंगुलभागहारो एत्थ पलि-
दोवमस्स असंखेज्जदिभागो । एदेहि अवहारकालेहि जगपदरे भागे हिदे सगसगदव्वपमाण-
मागच्छदि ।

**वादरतेउपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा । असंखेज्जा-
वलियवग्गो आवलियघणस्स अंतो ॥ ९१ ॥**

अपने अपने अंगुलको आठमांगुल कहते हैं । इनमेंसे यहां प्रमाणांगुलरूप सूच्यंगुलका ही ग्रहण किया गया है, क्योंकि, द्वीप आदिकी गणनामें यही अंगुल लिया गया है । इसीप्रकार द्रव्य-प्रमाणानुगममें जहां अंगुलका संबन्ध आया है वहां इसी अंगुलका अभिप्राय जानना चाहिये ।

अब यहां पर आचार्योंके उपदेशानुसार सूत्रसे सूचित भागहारोंके विशेषको कहते हैं । यह इसप्रकार है— पशुपमके असंख्यातवें भागसे सूच्यंगुलको भाजित करके जो लब्ध आवे उसके वर्गित करने पर बादर अण्कायिक पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल होता है । इस बादर अण्कायिक पर्याप्त जीवोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल होता है । इस बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीवोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल होता है । इस बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्त जीवोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर बादर घनस्पाति प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल होता है । यहां अवहारकालोंके उत्तरोत्तर अधिक होनेका कारण यह है कि पूर्व पूर्ववर्ती अपनी अपनी राशि बहुत बहुत पाई जाती है । इन अवहारकालोंके खंडित आदिकका कथन पंचेन्द्रिय तिर्यचके खंडित आदिकके कथनके समान करना चाहिये । इतना विशेष है कि वहां पर प्रतरांगुल भागहार है और यहां पर पशुपमका असंख्यातवें भाग भागहार है । इन अवहारकालोंसे अगप्रतरके भाजित करने पर अपने अपने द्रव्यका प्रमाण आता है ।

बादर तेजस्कायिक पर्याप्त जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं । यह असंख्यातरूप प्रमाण असंख्यात आवलियोंके वर्गरूप है जो आवलीके घनके भीतर आता है ॥ ९१ ॥

१ विदावलिलोगाणमसंख संखं च तेउवाऊणं । पज्जत्ताणं पमाणं... ॥ गी. जी. २१०, आवलिवग्गो अन्तरा-
वलीय गुणिओ हु बायरा तेऊ । पञ्चसं. २, ११.

असंखेज्जा इदि सामण्णेण उत्ते णवविहस्स असंखेज्जस्स गहणं पसत्तं तप्पडिसे-
हट्ठं असंखेज्जावलियवग्गो त्ति णिहेसो कदो । असंखेज्जावलियवग्गो त्ति वयणेण
घणावलियादीणमुवरिमाणं गहणे पत्ते तप्पडिसेहट्ठमावलियघणस्स अंतो इदि णिहेसो कदो ।
घणावलियाए अब्भंतरे चेव बादरतेउपज्जत्तरासी होदि त्ति उत्तं भवदि । आइरियपरं-
पराभओवएसेण बादरतेउपज्जत्तरासिस्स अवहारकालं भणिस्सामो । तं जहा— आवलियाए
असंखेज्जदिभाएण पदरावलियमवहारिय लद्धेण पदरावलियउवरिमवग्गे भागे हिदे बादर-
तेउकाइयपज्जत्तरासी होदि । एत्थ खंडिद्-भाजिद्-विरलिद्-अवहिदाणि जाणिऊण भणिऊण
भाणिदव्वाणि । तस्स पमाणं उच्चदे । पदरावलियउवरिमवग्गस्स असंखेज्जदिभागो असंखे-
ज्जाओ पदरावलियाओ । तं जहा— पदरावलियाए तदुवरिमवग्गे भागे हिदे पदरावलियं
आगच्छदि । तिस्से दुभामेण भागे हिदे दोष्णि, तिष्णिभागेण भागे हिदे तिष्णि, एवं

सूत्रमें 'असंख्यात हैं' इसप्रकार सामान्यरूपसे कथन करने पर नौ प्रकारके असं-
ख्यातोंका ग्रहण प्राप्त होता है, अतः उनके प्रतिषेध करनेके लिये 'वह असंख्यातरूप प्रमाण
असंख्यात आवलियोंके वर्गरूप है' ऐसा निर्देश किया है। 'असंख्यात आवलियोंके वर्गरूप है'
इस वचनसे घनावली आदि उपरिम संख्याओंके ग्रहणके प्राप्त होने पर उसके प्रतिषेध करनेके
लिये 'आवलीके घनके भीतर है' इसप्रकारका निर्देश किया। इसका अभिप्राय यह हुआ कि
बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि घनावलीके भीतर ही है। अब आचार्य परंपरासे आये हुए
उपदेशके अनुसार बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशिका अवहारकाल कहते हैं। वह इसप्रकार
है— आवलीके असंख्यातवर्ग भागसे प्रतरावलीको भाजित करके जो लब्ध आवे उससे प्रतरा-
वलीके उपरिम वर्गके भाजित करने पर बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि होती है। यहां पर
खंडित, भाजित, विरलित और अपहृतोंको जानकर, कहकर, कहलवाना चाहिये।

विशेषार्थ—यद्यपि ऊपर बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशिके अवहारकाल लानेकी
प्रतिष्ठा की गई है और अन्तमें बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशिका प्रमाण कितना है यह
बतलाया है। फिर भी इससे ऊपरकी प्रतिष्ठामें कोई विसंगति नहीं आती है, क्योंकि,
'आवलीके असंख्यातवर्ग भागसे प्रतरावलीको भाजित करके जो लब्ध आवे' इस कथनके
द्वारा बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशिके अवहारकालका कथन हो जाता है।

आगे बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशिका प्रमाण कहते हैं। प्रतरावलीके उपरिम
वर्गका असंख्यातवर्ग भाग बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशिका प्रमाण है, जो प्रतरावलीके
उपरिम वर्गका असंख्यातवर्ग भाग असंख्यात प्रतरावलीप्रमाण है। आगे इसीका स्पष्टीकरण
करते हैं— प्रतरावलीका उसीके उपरिम वर्गमें भाग देने पर प्रतरावलीका प्रमाण आता है।
प्रतरावलीके द्वितीय भागका प्रतरावलीके उपरिम वर्गमें भाग देने पर दो प्रतरावलियां लब्ध

गंतूण आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदपदरावलियाए तदुवरिमवग्गे भागे हिदे असंखेज्जाओ पदरावलियाओ लब्धंति । कारणं गदं । पदरावलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरावलियाए ओवड्ढिदाए तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाओ पदरावलियाओ हवंति । गिरुत्ती गदा ।

वियप्पो दुविहो, हेट्ठिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि । तत्थ हेट्ठिमवियप्पं वेरूवे वत्तइस्सामो । पदरावलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरावलियमोवड्ढिय लद्धेण तं चेव पदरावलियं गुणिदे बादरतेउपज्जचरासी होदि । अट्ठरूवे वत्तइस्सामो । पदरावलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरावलियं गुणिय पदरावलियघणे भागे हिदे बादरतेउपज्जचरासी होदि । तं जहा—पदरावलियाए पदरावलियघणे भागे हिदे पदरावलियउवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो पदरावलियाए असंखेज्जदिभाएण तम्हि भागे हिदे बादरतेउपज्जचरासी होदि । घणाघणे वत्तइस्सामो । पदरावलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरावलियं गुणिय तेण पदरावलियघणपढमवग्गमूलं गुणिय पदरावलियघणाघणपढमवग्गमूले भागे हिदे बादर-

आती हैं । प्रतरावलीके तृतीय भागका प्रतरावलीके उपरिम वर्गमें भाग देने पर तीन प्रतरावलियां लब्ध आती हैं । इसीप्रकार नीचे जाकर आवलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरावलीको खंडित करके जो लब्ध आवे उसका प्रतरावलीके उपरिम वर्गमें भाग देने पर असंख्यात प्रतरावलियां लब्ध आती हैं । इसप्रकार कारणका कथन समाप्त हुआ । प्रतरावलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरावलीके भाजित करने पर वहां जितना प्रमाण लब्ध आवे तत्प्रमाण प्रतरावलियां बादर तेजस्कायिक पर्याप्त जीवोंका प्रमाण होता है । इसप्रकार निरुक्तिका कथन समाप्त हुआ ।

विकल्प दो प्रकारका है, अधस्तन विकल्प और उपरिम विकल्प । उनमेंसे द्विरूपमें अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं—प्रतरावलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरावलीको भाजित करके जो लब्ध आवे उससे उसी प्रतरावलीको गुणित करने पर बादर तेजस्कायिक पर्याप्त जीवराशि होती है ।

अब अष्टरूपमें अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं । प्रतरावलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरावलीको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे प्रतरावलीके घनके भाजित करने पर बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि होती है । उसका स्पर्शीकरण इसप्रकार है—प्रतरावलीसे प्रतरावलीके घनके भाजित करने पर प्रतरावलीका उपरिम वर्ग आता है । पुनः प्रतरावलीके असंख्यातवें भागसे उसी प्रतरावलीके उपरिम वर्गके भाजित करने पर बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि होती है ।

अब घनाघनमें अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं—प्रतरावलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरावलीको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे प्रतरावलीके घनके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका प्रतरावलीके घनाघनके प्रथम वर्गमूलमें भाग देने पर बादर

तेउपज्जत्तरासी होदि । तं जहा— पदरावलियघणपढमवग्गमूलेण घणाघणपढमवग्गमूले भागे हिदे पदरावलियघणो आगच्छदि । पुणो पदरावलियाए पदरावलियघणे भागे हिदे पदरावलियउवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो पदरावलियाए असंखेज्जदिभागेण तम्हि भागे हिदे बादरतेउपज्जत्तरासी आगच्छदि ।

उवरिमवियप्पो तिविहो गहिदादिभेएण । वेरूवे गहिदं वत्तइस्सामो । पदरावलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरावलियउवरिमवग्गे भागे हिदे बादरतेउपज्जत्तरासी होदि । अहवा पदरावलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरावलियउवरिमवग्गं गुणेऊण तदुवरिमवग्गे भागे हिदे बादरतेउपज्जत्तरासी होदि । (एवमागच्छदि त्ति कड्डु गुणेऊण भागगहणं कदं । तस्स भागहारस्स अद्वच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्वच्छेदणए कदे वि बादरतेउकाइयपज्जत्तरासी आगच्छदि ।) अद्वरूवे वत्तइस्सामो । पदरावलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरावलियउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गं गुणेऊण घणावलियउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे बादरतेउपज्जत्तरासी होदि । तं जहा— पदरावलियउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गेण घणावलियउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे पदरावलियउवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो वि पदरावलियाए असंखेज्जदिभाएण

तेजस्कायिक पर्याप्त राशि होती है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— प्रतरावलीके घनके प्रथम वर्गमूलसे प्रतरावलीके घनाघनके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर प्रतरावलीका घन आता है । पुनः प्रतरावलीसे प्रतरावलीके घनके भाजित करने पर प्रतरावलीका उपरिम वर्ग आता है । पुनः प्रतरावलीके असंख्यातवें भागसे उसी प्रतरावलीके उपरिम वर्गके भाजित करने पर बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि आती है ।

गृहीत आविके भेदसे उपरिम विकल्प तीन प्रकारका है । उनमेंसे द्विरूपमें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— प्रतरावलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरावलीके उपरिम वर्गके भाजित करने पर बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि होती है । अथवा, प्रतरावलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरावलीके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका प्रतरावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि होती है । इसप्रकार भी बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि आती है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया । उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि आती है ।

अब अष्टरूपमें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— प्रतरावलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका घनावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि होती है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— प्रतरावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गसे घनावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गके भाजित करने पर प्रतरावलीका उपरिम वर्ग आता

पदरावलियउवरिमवग्गे भागे हिदे; बादरतेउपज्जत्तरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कड्डु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे बादरतेउपज्जत्तरासी आगच्छदि । घणाघणे वत्तइस्सामो । पदरावलियाए असंखेज्जदि-
भागेण पदरावलियउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गं गुणेऊण तेण पदरावलियघणउवरिमवग्गस्सु-
वरिमवग्गं गुणेऊण तेण गुणिदराभिणा घणाघणावलियउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे
बादरतेउपज्जत्तरासी आगच्छदि । तं जहा— पदरावलियघणउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गेण
घणाघणावलियउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे घणावलियउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गो
आगच्छदि । पुणो वि पदरावलियउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गेण तम्मिह भागे हिदे पदरावलिय-
उवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो वि पदरावलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरावलियउवरिम-
वग्गे भागे हिदे बादरतेउपज्जत्तरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कड्डु गुणेऊण
भागग्गहणं कदं । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि
बादरतेउपज्जत्तरासी आगच्छदि । एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं । पदरावलिय-
उवरिमवग्गस्स घणावलियउवरिमवग्गस्स घणाघणा (-वलियउवरिमवग्गस्स) च असंखेज्जदि-

है । पुनः प्रतरावलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरावलीके उपरिम वर्गके भाजित करने पर बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि आती है । इसप्रकार बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि आती है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया । उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि आती है ।

अब घनाघनमें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— प्रतरावलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे प्रतरावलीके घनके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको गुणित करके जो गुणित राशि लब्ध आवे उससे घनाघनावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गके भाजित करने पर बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि आती है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— प्रतरावलीके घनके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गसे घनाघनावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गके भाजित करने पर घनावलीके उपरिम वर्गका उपरिम वर्ग आता है । फिर भी प्रतरावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गसे घनावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गके भाजित करने पर प्रतरावलीका उपरिम वर्ग आता है । फिर भी प्रतरावलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरावलीके उपरिम वर्गके भाजित करने पर बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि आती है । इसप्रकार बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि आती है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया । उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि आती है । इसीप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्त स्थानोंमें ले जाना चाहिये । प्रतरावलीके उपरिम वर्गके असंख्यातवें भागरूप, घनावलीके उपरिम वर्गके

भाएण बादरतेउपज्जत्तरासिणा गहिदग्हिदो गहिदगुणगारो च वत्त्वो । एत्थ सुत्तगाहा-

(आवळियाए वगो आवळियासंखभागगुणिदो दु ।

तम्हा घणस्स अंतो बादरपज्जत्ततेऊणं ॥ ७७ ॥)

बादरवाउकाइयपज्जत्ता द्व्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ॥९२॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो सुगमो । असंखेज्जा इदि सामणवयणेण णवविहासंखेज्जस्स गहणे पत्ते अणिच्छिदासंखेज्जपडिसेहट्टमुत्तरसुत्तमाह—

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ९३ ॥

एदस्स वि सुत्तस्स अत्थो णिकखेवादीहि पुवं व परूवेदव्वो । एदम्हादो सुत्तादो सेसअट्टविहअसंखेज्जस्स पडिसेहे जादे वि अजहण्णाणुक्कस्स असंखेज्जासंखेज्जओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ घणलोगादिभेएण अणेयवियप्पाओ तदो तप्पडिसेहट्टमुत्तरसुत्तं भणदि—

खेत्तेण असंखेज्जाणि जगपदराणि लोगस्स संखेज्जादिभागो ॥९४॥

असंख्यातवें भागरूप और घनाघनावलीके उपरिभ्र वर्गके असंख्यातवें भागरूप बादर तेज-स्कायिक पर्याप्त राशिके द्वारा गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकारका कथन करना चाहिये । यहां सूत्रगाथा दी जाती है—

चूंकि आवलीके असंख्यातवें भागसे आवलीके वर्गको गुणित कर देने पर बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशिका प्रमाण होता है, इसलिये वह प्रमाण घमावलीके भीतर है ॥ ७७ ॥

बादर वायुकायिक पर्याप्त जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं ॥ ९२ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है । सूत्रमें ' असंख्यात हैं ' ऐसा सामान्य वचन देनेसे नौ प्रकारके असंख्यातोंका ग्रहण प्राप्त होने पर अनिच्छित असंख्यातोंका प्रतिषेध करनेके लिये भागका सूत्र कहते हैं—

कालकी अपेक्षा बादर वायुकायिक पर्याप्त जीव असंख्यातासंख्यात अवस-सर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ९३ ॥

निश्चय आदिके द्वारा इस सूत्रके भी अर्थका पहलेके समान प्ररूपण करना चाहिये । इस सूत्रसे शेष आठ प्रकारके असंख्यातोंके प्रतिषेध हो जाने पर भी अजघन्यानुत्कृष्ट असंख्याता-संख्यात अवसर्पिणियां और उत्सर्पिणियां घनलोक आदिके भेदसे अनेक प्रकारकी हैं, इसलिये उनका प्रतिषेध करनेके लिये भागका सूत्र कहते हैं—

क्षेत्रकी अपेक्षा बादर वायुकायिक पर्याप्त जीव असंख्यात जगप्रतरप्रमाण हैं,

१ × लोगाणं × संखं ×× वाऊणं । पज्जत्ताण पमाणं । गो. जी. २१०. वाऊ य लोगसंखं । पत्रसं. २, ११.

असंखेज्जाणि चि णिहेसो जगपदरादिहेड्डिमअसंखेज्जासंखेज्जपडिसेहफलो । घण-
लोगादिउवरिमसंखेज्जासंखेज्जपडिसेहड्डं लोगस्स संखेज्जदिभागवयणं । खेत्तेण इदि
वयणे तइया दट्ठव्वा । सेसं सुगमं । संखेज्जरूवेहि घणलोगे भागे हिदे बादरवाउपज्जत्त-
दव्वमागच्छदि चि वुत्तं होदि । एत्थ गाहा—

जगसेटीए वगो जगसेटीसंखभागगुणितो दु ।
तम्हा घणलोगंतो बादरपज्जत्तवाऊणं ॥ ७८ ॥

वणप्फइकाइया णिगोदजीवा बादरा सुहुमा पज्जत्तापज्जत्ता
दव्वपमाणेण केवाडिया, अणंता ॥ ९५ ॥

वनस्पतिः कायः शरीरं येषां ते वनस्पतिकायाः, वनस्पतिकाया एव वनस्पति-

जो असंख्यात जगप्रतरप्रमाण लोकके संख्यातवें भाग है ॥ ९४ ॥

सूत्रमें 'असंख्यात' यह वचन जगप्रतर आदि अधस्तन असंख्यातासंख्यातके प्रतिषेधके लिये दिया है । घनलोक आदि उपरिम असंख्यातासंख्यातके प्रतिषेध करनेके लिये 'लोकके संख्यातवें भागप्रमाण' यह वचन दिया है । 'खेत्तेण' इस पदमें तृतीया विभक्ति जानना चाहिये । शेष कथन सुगम है । संख्यातसे घनलोकके भाजित करने पर बादर वायु-कायिक पर्याप्त जीवोंका द्रव्य आता है, यह इस कथनका तात्पर्य है । यहाँ गाथा दी जाती है—
चूंकि जगश्रेणीके वर्गको जगश्रेणीके संख्यातवें भागसे गुणित करने पर बादर वायु-कायिक पर्याप्त राशि आती है । इसलिये उक्त प्रमाण घनलोकके भीतर आता है ॥ ७८ ॥

वनस्पतिकायिक जीव, निगोद जीव, वनस्पतिकायिक बादर जीव, वनस्पति-कायिक सूक्ष्म जीव, वनस्पतिकायिक बादर पर्याप्त जीव, वनस्पतिकायिक बादर अपर्याप्त जीव, वनस्पतिकायिक सूक्ष्म पर्याप्त जीव, वनस्पतिकायिक सूक्ष्म अपर्याप्त जीव, निगोद बादर जीव, निगोद सूक्ष्म जीव, निगोद बादर पर्याप्त जीव, निगोद बादर अपर्याप्त जीव, निगोद सूक्ष्म पर्याप्त जीव और निगोद सूक्ष्म अपर्याप्त जीव, प्रत्येक द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? अनन्त हैं ॥ ९५ ॥

वनस्पति ही काय अर्थात् शरीर जिन जीवोंके होता है वे वनस्पतिकाय कहलाते हैं ।

१ तसरासिपुदत्रिआदिचउक्कपत्तेयहीणसंसारो । साहारणजीवाणं परिमाणं होदि जिणदिट्ठं ॥ सगसभ-असंखमागो बादरकायाण होदि परिमाणं । सेसा सुहुमपमाणं पडिभागो पुच्चणिदिट्ठो ॥ सुहुमेसु संखमाणं संखामागा अपुण्णगा इदरा । जस्सि अपुण्णद्धादो पुणद्धा संखयुणितकमा ॥ गो जी. २०६-२०८. साहारणबादरेसु असंख भागो असंखगा मागा । पुण्णामपुण्णणं परिमाणं होदि अणुकमसो ॥ गो. जी. २११. साहारणणं भेया चउरो अणंता । पच्चसं. २, ९.

कायिकाः । एवं सदि विग्रहगईए वडुमाणाणं वणप्फइकाइयत्तं ण पावेदि ? चे, ण एस दोसो, वणप्फइकाइयसंबंधेण सुह-दुख्खाणुहवणणिमित्तकम्मणेयत्तमुवगयजीवाणमुवयारेण वणप्फइकाइयत्ताविरोहा । वणप्फइणामकम्मोदया जीवा विग्रहगईए वडुमाणा वि वणप्फइकाइया भवन्ति । जेसिमणंताणंतजीवाणमेवकं चेव सरीरं भवदि साधारणरूवेण ते णिगोदजीवा भणन्ति । संखेज्जासंखेज्जपडिसेहफलो अणंतणिदेसो । सेसं सुगमं । अणंता इदि सामणवयणेण णवविहस्स अणंतस्स गहणे पत्ते अविवक्खिदस्स अट्टविहाणंतस्स पडिसेहडुमुत्तरसुत्तं भणदि—

तथा वनस्पतिकाय ही वनस्पतिकायिक कहलाते हैं ।

शंका—यदि ऐसा है तो विग्रहगतिमें विद्यमान जीवोंको वनस्पतिकायिकरूपना नहीं प्राप्त होता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, वनस्पतिकायिके संबन्धसे सुख और दुःखके अनुभव करनेमें निमित्तभूत कर्मके साथ एकत्वको प्राप्त हुए जीवोंके उपचारसे विग्रहगतिमें वनस्पतिकायिक कहनेमें कोई विरोध नहीं आता है । जिन जीवोंके वनस्पति नामकर्मका उदय पाया जाता है वे विग्रहगतिमें रहते हुए भी वनस्पतिकायिक कहे जाते हैं ।

विशेषार्थ—यहां पर शंकाकारका यह अभिप्राय है कि जो जीव विग्रहगतिमें रहते हैं उनके एक, दो या तीन समयतक नोकर्म वर्गणाओंका ग्रहण नहीं होता है, इसलिये उन्हें उस समय वनस्पतिकायिक आदि नहीं कह सकते हैं । इस शंकाका समाधान यह है कि विग्रहगतिके प्रथम समयसे ही जीवोंके स्थावरकाय या त्रसकाय नामकर्मका उदय हो जाता है । स्थावरकायके पृथिवीकायिक आदि पांच अवान्तर भेद हैं और सामान्य अपने विशेषोंको छोड़कर स्वतंत्र नहीं पाया जाता है, इसलिये पृथिवी जीवके पृथिवीकाय, वनस्पति जीवके वनस्पतिकाय नामकर्मका उदय विग्रहगतिके प्रथम समयसे ही हो जाता है, यह सिद्ध हुआ । अब यदि एक, दो या तीन समयतक उसके नोकर्म वर्गणाओंका ग्रहण नहीं भी होता है, तो भी वह जीव उस उस पर्यायमें सुख और दुःखके अनुभव करनेमें निमित्तभूत कर्मोंके साथ एकत्वको प्राप्त हो चुका है, इसलिये उसे उपचारसे वनस्पतिकायिक आदि कहना विरोधको प्राप्त नहीं होता है ।

जिन अनन्तानन्त जीवोंका साधारणरूपसे एक ही शरीर होता है उन्हें निगोद जीव कहते हैं । सूत्रमें संख्यात और असंख्यातका प्रतिषेध करनेके लिये 'अनन्त' पदका निर्देश किया है । शेष कथन सुगम है । सूत्रमें 'अनन्त हैं' ऐसा सामान्य वचन देनेसे नौ प्रकारके अनन्तोंके ग्रहणके प्राप्त होने पर अविवक्षित आठ प्रकारके अनन्तोंके प्रतिषेध करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

अणंताणंताहि ओसपिणि-उस्सपिणीहि ण अवहिरंति कालेण
॥ ९६ ॥

जदि पुच्चरासीणमणंताणंतत्तावबोहणडुमागदामिदं सुत्तं, तो ण अवहिरंति कालेणेत्ति वयणं णिरत्थयमिदि चे, ण एस दोसो, उभयकज्जसाहणडुत्तादो । पुच्चरासीणमणंताणंतत्तं च संते वि वए अणंतेण वि अदीदकालेण असमंति च पदुप्पादेदि त्ति । अवसेसं सुगमं ।

खेत्तेण अणंताणंता लोगा ॥ ९७ ॥

अदीदकाले ओसपिणि उस्सपिणीपमाणेण कीरमाणे ण अणंताणंताओ ओसपिणि-उस्सपिणीओ भवंति । एदाहि अणंताणंताहि ओसपिणि-उस्सपिणीहि पुच्चुत्तचोहस-जीवरासीओ ण अवहिरंति त्ति भणंतेण पुच्चिल्लसुत्तेण एदाणं रासीणमणंताणंतत्तमदीद-कालादो बहुत्तं च जाणाविदं । संपहि इमेण सुत्तेण को अपुच्चो अत्थो जाणाविदो जेणेदस्स सुत्तस्स पारंभो सफलो होज्ज ? बुच्चदे—एदाणं रासीणमदीदकालादो बहुत्तमेत्तं पुच्चिल्ल-सुत्तेण जाणाविदं, ण तस्स विसेसो । एदेण पुण सुत्तेण तेसिं रासीणमदीदकालादो अणंत-

कालकी अपेक्षा पूर्वोक्त चौदह जीवराशियां अनन्तानन्त अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत नहीं होती हैं ॥ ९६ ॥

शंका — यदि पूर्वोक्त जीवराशियोंके अनन्तानन्तत्वके ज्ञान करानेके लिये यह सूत्र आया है तो ' ण अवहिरंति कालेण ' यह वचन निरर्थक है ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, उभय कार्योंके साधन करनेके लिये उक्त वचन दिया है । उक्त पद एक तो पूर्वोक्त राशियोंके अनन्तानन्तत्वका और दूसरे उनमेंसे प्रत्येक राशिके व्यय होने पर भी अनन्त अतीत कालके द्वारा भी वे समाप्त नहीं होती हैं, इसका प्रतिपादन करता है । शेष कथन सुगम है ।

वे चौदह जीवराशियां क्षेत्रकी अपेक्षा अनन्तानन्त लोकप्रमाण हैं ॥ ९७ ॥

शंका— अतीत कालको अवसर्पिणी और उत्सर्पिणीके प्रमाणसे करने पर वे अवसर्पिणियां और उत्सर्पिणियां अनन्तानन्त नहीं होती हैं, ऐसी अनन्तानन्त अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा पूर्वोक्त चौदह जीवराशियां अपहृत नहीं होती हैं, इसप्रकार प्रतिपादन करनेवाले इसके पहले सूत्रसे इन चौदह राशियोंके अनन्तानन्तत्वका और अतीतकालसे बहुत्वका ज्ञान हो जाता है । परंतु इस समय कहे गये इस सूत्रसे कौनसा अपूर्व अर्थ जाना जाता है, जिससे इस सूत्रका प्रारंभ सफल होवे ?

समाधान— पूर्व अतीत सूत्रने इन चौदह राशियोंका अतीत कालसे बहुत्वका ज्ञान करा दिया, किन्तु उसकी विशेषताका ज्ञान नहीं कराया । परंतु यह सूत्र उन राशियोंका अतीत कालसे अनन्तगुणत्वका ज्ञान कराता है । आगे उसीका स्पष्टीकरण करते हैं— पूर्व सूत्रमें

गुणत्तं जाणाविज्जदे । तं जहा— पुच्चिह्लसुत्ते गुणिज्जमाणरासी कप्पो, एत्थ पुण तदो असंखेज्जगुणो लोगो ति वुत्तो । कप्पस्स गुणमाररासीदो घणलोगगुणगारो अणंतगुणो । कुदो ? एदस्स सुत्तस्स अवयवभूदसोलसवडियअप्पाबहुगवयणादो जाणिज्जदे । तम्हा सफलो एस सुत्तारंभो ति धेत्तव्वं ।

संपहि एत्थ धुवरासी उप्पाइज्जदे । तं जहा— पुढविकाइय-आउकाइय-तेउकाइयवाउ-काइय-तसकाइए अकाइए च, एदेसिं चेव पमाणं वर्गं वणप्फइयकाइयभाजिदं च सव्वजीव-रासिम्हि पक्खित्ते वणप्फइकाइयधुवरासी होदि । वणप्फइकाइयवदिरित्तसेसरासिणां सव्वजीव-रासिमोवट्टिय लद्धरूवूणेण भजिदसव्वजीवरासिं तम्हि चेव पक्खित्ते वणप्फइकाइयधुवरासी होदि ति वुत्तं भवदि । एदेण धुवरासिणा सव्वजीवरासिस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे वणप्फइ-काइयरासी आगच्छदि । वणप्फइकाइयधुवरासिमसंखेज्जलोगेण खंडिदेयखंडं तम्हि चेव पक्खित्ते सुहुमवणप्फइकाइयधुवरासी होदि । एदेण पुवुत्तअसंखेज्जलोगवणप्फदिकाइय-धुवरासिभागहारेण रूवाहिण्ण वणप्फइकाइयधुवरासिं गुणिदे वादरवणप्फइकाइयधुवरासी

गुण्यमान राशि कल्प कही गई है, परंतु इस सूत्रमें कल्पसे असंख्यातगुणा लोक गुण्यमान राशि कहा गया है । तथा कल्पकी गुणकार राशिसे घनलोकका गुणकार अनन्तगुणा है ।

शंका — यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान — इस सूत्रके अवयवभूत सोलहप्रतिक अल्पबहुत्वके वचनसे यह जाना जाता है ।

इसलिये इस सूत्रका आरंभ सफल है, ऐसा यहां ग्रहण करना चाहिये ।

अब यहां धुवराशि उत्पन्न की जाती है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— पृथिवी-कायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक, व्रसकायिक और अकायिक, इन जीवराशियोंके प्रमाणको तथा वनस्पतिकायिक जीवराशिके प्रमाणसे भाजित उक्त राशियोंके प्रमाणके वर्गको सर्व जीवराशिमें मिला देने पर वनस्पतिकायिक धुवराशि होती है । वनस्पतिकायिक जीवराशिको छोड़कर शेष राशिके द्वारा सर्व जीवराशिको भाजित करके जो लब्ध आवे उसमेंसे एक कम करके जो शेष रहे उससे सर्व जीवराशिको भाजित करके जो लब्ध आवे उसे उसी सर्व जीवराशिमें मिला देने पर वनस्पतिकायिक जीवराशिकी धुवराशि होती है, यह उक्त कथनका तात्पर्य है । इस धुवराशिसे सर्व जीवराशिके उपरिम वर्गके भाजित करने पर वनस्पतिकायिक जीवराशि आती है । वनस्पतिकायिक धुवराशिको असंख्यात लोकप्रमाणसे खंडित करके जो एक खंड लब्ध आवे उसे उसी वनस्पतिकायिक धुवराशिमें मिला देने पर सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीवराशिकी धुवराशि होती है । ऊपर जो असंख्यात लोकप्रमाण वनस्पतिकायिक धुवराशिका भागहार कह आये हैं उसमें एक मिला कर जो प्रमाण हो उससे वनस्पतिकायिक धुवराशिके गुणित करने पर वादर वनस्पतिकायिक धुवराशि होती है । पुनः

१ प्रतिधु 'सेसरासी' इति पाठः ।

होदि । पुणो सुहुमवणप्फइअपज्जत्तरासिणा' सुहुमवणप्फइकाइयरासिम्हि भागे हिदे तत्थ जं लद्धं तं दुप्पडिरासिं काऊण तत्थेगेण सुहुमवणप्फइकाइयधुवरासिं गुणिदे सुहुमवणप्फइकाइयअपज्जत्तधुवरासी होदि । पुणो पुधट्टवियपुव्विहल्लसंखेज्जरूवेहि रूवूणेहि सुहुमवणप्फइकाइयधुवरासिं खंडिय तत्थेयखंडं तम्हि चेव पक्खित्ते सुहुमवणप्फइकाइयअपज्जत्तधुवरासी होदि । बादरवणप्फइकाइयअपज्जत्तएहि बादरवणप्फइकाइयरासिम्हि भागे हिदे लद्धं असंखेज्जलोगं दुप्पडिरासिं काऊण तत्थेगेण बादरवणप्फइकाइयधुवरासिं गुणिदे बादरवणप्फइकाइयअपज्जत्तधुवरासी होदि । पुध ट्टवियरासिणा रूवूणेण बादरवणप्फइकाइयधुवरासिं खंडिय तत्थेयखंडं तम्हि चेव पक्खित्ते बादरवणप्फइकाइयअपज्जत्तधुवरासी होदि । एवं चेव णिगोदाणं पि धुवरासी उप्पादेदव्वो । णवरि पत्तेयसरीरोहि सह सत्त पक्खेवरासीओ भवंति । सेसविहीणं वणप्फइकाइयभंगो ।

तसकाइय-तसकाइयअपज्जत्तएसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेजा' ॥ ९८ ॥

सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीवराशिसे सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीवराशिके भाजित करने पर वहाँ जो लब्ध आवे उसकी दो प्रतिराशियां करके उनमेंसे एक प्रतिराशिके द्वारा सूक्ष्म वनस्पतिकायिक ध्रुवराशिके गुणित करने पर सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीवोंकी ध्रुवराशि होती है । पुनः पृथक् स्थापित पूर्वाक्त प्रतिराशिके संख्यात प्रमाणमेंसे एक कम करके जो शेष रहे उससे सूक्ष्म वनस्पतिकायिक ध्रुवराशिके खंडित करके वहाँ जो एक खंड लब्ध आवे उसे उसी सूक्ष्म वनस्पतिकायिक ध्रुवराशिमें मिला देने पर सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीवोंकी ध्रुवराशि होती है । बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त राशिके प्रमाणसे बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त राशिके भाजित करने पर जो असंख्यात लोक लब्ध आवें उनकी दो प्रतिराशियां करके उनमेंसे एक प्रतिराशिसे बादर वनस्पतिकायिक ध्रुवराशिके गुणित करने पर बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीवराशिकी ध्रुवराशि होती है । पुनः पृथक् स्थापित प्रतिराशिमेंसे एक कम करके जो शेष रहे उससे बादर वनस्पतिकायिक ध्रुवराशिकी खंडित करके वहाँ जो एक खंड लब्ध आवे उसे उसी बादर वनस्पतिकायिक ध्रुवराशिमें मिला देने पर बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीवोंकी ध्रुवराशि होती है । इसीप्रकार निगोद जीवोंकी भी ध्रुवराशि उत्पन्न कर लेना चाहिये । इतना विशेष है कि प्रत्येकशरीर वनस्पतिकायिकोंके साथ सात प्रक्षेपराशियां होती हैं । शेष विधि वनस्पतिकायिकके कथनके समान है ।

त्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्तोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं ॥ ९९ ॥

१ प्रतिपु ' अपज्जत्तरासि ' इति पाठः ।

२ त्रसकायिकसंख्या पञ्चेन्द्रियवत् । स. सि. १, ८.

एदस्स सुत्तस्स अत्थो असइं परूविदो त्ति ण वुच्चदे । असंखेज्जा इदि सामण्ण-
वयणेण णवण्हमसंखेज्जाणं गहणे संपत्ते अविवक्खिदे अवणिय विवक्खियपरूवणद्धमुत्तर-
सुत्तं भणदि ।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति
कालेण ॥ ९९ ॥

एदस्स वि अत्थो बहुसो उत्तो त्ति ण उच्चदे । तं च असंखेज्जासंखेज्जयमणेय-
वियप्पमिदि तस्स विसेसपरूवणद्धमुत्तरसुत्तं भणदि—

खेत्तेण तसकाइय-तसकाइयपज्जत्तएसु मिच्छाइट्ठीहि पदरमवहिरदि
अंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्गपडिभागेण' अंगुलस्स संखेज्जदिभाग-
वग्गपडिभाएण ॥ १०० ॥

एदेण सुत्तेण जगपदरादो जगसेठीदो च उवरिम-हेट्ठिमसंखेज्जवियप्पा अवणिदा
भवन्ति । 'अंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्गपडिभागेण' इमेण वयणेण जगपदरस्स अंतब्भूद-

इस सूत्रका अर्थ कईवार कह चुके हैं, इसलिये यहां नहीं कहते हैं । 'सूत्रमें असं-
ख्यात हैं' इस सामान्य वचनके देनेसे नौ ही प्रकारके असंख्यातोंके ग्रहणके प्राप्त होने पर
अविवक्षित असंख्यातोंका अपनयन करके विवक्षित असंख्यातके प्ररूपण करनेके लिये
आगेका सूत्र कहते हैं—

कालकी अपेक्षा त्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्त जीव असंख्यातासंख्यात
अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ९९ ॥

इस सूत्रका भी अर्थ अनेकवार कहा जा चुका है, इसलिये नहीं कहते हैं । वह
असंख्यातासंख्यात अनेक प्रकारका है, इसलिये उसके विशेषके प्ररूपण करनेके लिये आगेका
सूत्र कहते हैं—

क्षेत्रकी अपेक्षा त्रसकायिकोंमें मिथ्यादृष्टि जीवोंके द्वारा सूच्यंगुलके असंख्यातवें
भागके वर्गरूप प्रतिभागसे और त्रसकायिक पर्याप्तोंमें मिथ्यादृष्टि जीवोंके द्वारा
सूच्यंगुलके संख्यातवें भागके वर्गरूप प्रतिभागसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ १०० ॥

इस सूत्रसे जगप्रतर और जगश्रेणीसे ऊपर और नीचेके असंख्यात विकल्प अपनीत
होते हैं । 'अंगुलके असंख्यातवें भागके वर्गरूप प्रतिभागसे' इस वचनसे जगप्रतरके अन्तर्भूत

१ प्रतिशु 'असंखेज्जदिभागवग्गपडिभागेण' इति पाठः ।

२ प्रतिशु 'असंखेज्जदिभागपडिभागेण' इति पाठः ।

सेसवियप्पा पडिसिद्धा त्ति दट्टुवा । जगपदरं कदजुम्मं वग्गसमुट्ठिदं पदरंगुलं पि कदजुम्मं वग्गसमुट्ठिदं चैव । तेसिं डुविदसव्वभागहारा वि वग्गसमुट्ठिदा कदजुम्मं चेदि जाणावण्डु-मंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्गवयणं । अण्णहा तस्स फलाणुवलंभादो । पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभाएण पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागेण च जगपदरे भागे हिदे जहाकमेण तस-काइया तसकाइयपज्जत्ता च भवंति त्ति वुत्तं भवदि ।

सासणसम्माइट्टिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं ॥१०१॥

एत्थ तसकाइय-तसकाइयपज्जत्ता इदि पुव्वसुत्तादो अणुवड्ढे । कुदो ? उवरि पुध अपज्जत्तसुत्तारंभण्णहाणुववत्तीदो । सेसं सुगमं ।

तसकाइयअपज्जत्ता पंचिंदियअपज्जत्ताण भंगो ॥ १०२ ॥

शेष विकल्प प्रतिषिद्ध हो जाते हैं, पेसा समझना चाहिये । जगप्रतर कृतयुग्म संख्यारूप और वर्गसमुत्थित है । प्रतरांगुल भी कृतयुग्म संख्यारूप और वर्गसमुत्थित है । उसीप्रकार उनके स्थापित भागहार भी वर्गसमुत्थित और कृतयुग्मरूप हैं, इसका ज्ञान करानेके लिये 'अंगुलके असंख्यातवें भागका वर्ग' यह वचन दिया, अन्यथा उसकी दूसरी कोई सफलता नहीं पाई जाती है । प्रतरांगुलके असंख्यातवें भागसे और प्रतरांगुलके संख्यातवें भागसे जगप्रतरके भाजित करने पर यथाक्रमसे त्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्त जीव होते हैं, यह इस सूत्रका अभिप्राय है ।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें त्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्त जीव सामान्य प्ररूपणाके समान हैं ॥ १०१ ॥

इस सूत्रमें 'त्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्त' इस वचनकी पूर्व सूत्रसे अनुवृत्ति होती है, क्योंकि, आगेके लब्ध्यपर्याप्त जीवोंके प्रमाणके प्रतिपादन करनेवाले सूत्रका आरंभ पृथक् रूपसे अन्यथा बन नहीं सकता था । शेष कथन सुगम है ।

विशेषार्थ—चूंकि आगे त्रसकायिक लब्ध्यपर्याप्त जीवोंके प्रमाणका प्रतिपादन करनेवाला सूत्र पृथक् रूपसे रचा गया है, इससे प्रतीत होता है कि पूर्वोक्त सूत्रमें 'त्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्त' पदकी अनुवृत्ति अपने पूर्ववर्ती सूत्रसे हुई है । इस कथनका तात्पर्य यह है कि यद्यपि सामान्य त्रसकायिक जीवोंमें लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंका अन्तर्भाव हो जाता है फिर भी लब्ध्यपर्याप्तक जीव गुणस्थानप्रतिपन्न नहीं होते हैं, अर्थात् मिथ्यादृष्टि ही होते हैं । अतएव इस विषयका ज्ञान करानेके लिये त्रसकायिकोंके प्रमाणके अनन्तर बीष्वमें सासादनसम्यग्दृष्टि आदि गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंका प्रमाण कह कर अनन्तर लब्ध्य-पर्याप्त त्रसकायिकोंका प्रमाण कहा ।

त्रसकायिक लब्ध्यपर्याप्त जीवोंका प्रमाण पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकोंके प्रमाणके समान है ॥ १०२ ॥

वेहंदिय-तेहंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियअपज्जत्तजीवे' एगट्टे कदे तसकाइयअपज्जत्ता हवंति । कथं तेसिं परूवणा पंचिंदियअपज्जत्तपरूवणाए समाणा भवदि ? ण एस दोसो, उभयत्थ पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागं भागहारं पेक्खिउण तहोवएसादो । अत्थदो पुणो तेसिं विसेसो गणहरेहि वि ण वारिज्जदे ।

भागभागं वत्तइस्सामो । सञ्जजीवरासिं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सुहुम-णिगोदज्जिअपज्जत्ता होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सुहुमभिगोदअपज्जत्ता होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा वादरणिगोदअपज्जत्ता होंति । सेसं अणंतखंडे कए बहुखंडा वादरणिगोदअपज्जत्ता होंति । सेसे अणंतखंडे कए बहुखंडा अकाइया होंति । सेसरासीदो असंखेज्जलोगपमाणमवणेउण पुध ठविय पुणो सेसरासिमसंखेज्जलोगेण खंडिय एयखंडमवणेउण तं पि पुध ठविय पुणो सेसरासिं चत्तारि समपुंजे काऊण अवणिदएयखंडं असंखेज्जलोगेण खंडिय तत्थ बहुखंडे पढमपुंजे पक्खित्ते सुहुमवाउकाइया होंति । सेसेगखंडमसंखेज्जलोगेण खंडिय तत्थ बहुखंडा

शंका—जब कि द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय लक्ष्यपर्याप्तकोंको एकत्र करने पर त्रसकायिक लक्ष्यपर्याप्त जीव होते हैं, तब फिर त्रसकायिक लक्ष्यपर्याप्त-कोंकी प्ररूपणा पंचेन्द्रिय लक्ष्यपर्याप्तोंकी प्ररूपणाके समान कैसे हो सकती है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, उभयत्र अर्थात् पंचेन्द्रिय लक्ष्यपर्याप्तक और त्रसकायिक लक्ष्यपर्याप्तक, इन दोनोंका प्रमाण लानेके लिये प्रतरांगुलके असंख्यातत्रै भागरूप भागहारको देखकर इस प्रकारका उपदेश दिया। अर्थकी अपेक्षा जो उन दोनोंकी प्ररूपणामें विशेष है उसका गणधर भी निवारण नहीं कर सकते हैं।

अब भागाभागको बतलाते हैं—सर्व जीवराशिके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण वादर निगोद अपर्याप्त जीव हैं। शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण वादर निगोद पर्याप्त जीव हैं। शेष एक भागके अन्नन्त खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण अकायिक जीव हैं। शेष एक भागप्रमाण राशिमेंसे असंख्यात लोकप्रमाण राशिको निकालकर पृथक् स्थापित करके पुनः शेष राशिको असंख्यात लोकप्रमाणसे खंडित करके जो एक खंड आवे उसे निकालकर और उसे भी पृथक् स्थापित करके पुनः जो शेष बहुभाग राशि है उसके चार समान पुंज करके निकाले हुए पृथक् स्थापित एक खंडको असंख्यात लोकप्रमाणसे खंडित करके उनमेंसे बहुभागोंको प्रथम पुंजमें मिला देने पर सूक्ष्म वायुकायिक जीवोंका प्रमाण होता है। शेष एक खंडको असंख्यात लोकप्रमाणसे खंडित

विदियपुंजे पक्खित्ते सुहुमआउकाइया हँति । सेसेयखंडमसंखेज्जलोएण खंडिय बहुखंडा तदियपुंजे पक्खित्ते सुहुमपुढविकाइया हँति । सेसेयखंडं चउत्थपुंजे पक्खित्ते सुहुमतेउकाइया हँति । सग-सगरासिं संखेज्जखंडे कदे तत्थ बहुखंडा अप्पणो पज्जत्ता हँति । एयखंडं तेसिमपज्जत्ता । पुव्वमवणिदमसंखेज्जलोगरासिमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा बादरवाउअपज्जत्ता हँति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा बादरआउकाइयअपज्जत्ता हँति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा बादरपुढविअपज्जत्ता हँति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा बादरणिगोदपदिट्ठिदा अपज्जत्ता हँति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा बादरवणप्फदिकाइयअपज्जत्ता हँति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा बादरतेउकाइयअपज्जत्ता हँति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा बादरवाउकाइयपज्जत्ता हँति । बादरआउकाइय-बादरपुढविकाइय-बादरणिगोदपदिट्ठिद-बादरवणप्फइपत्तेगसरीरपज्जत्ताणमेवं चेष णेयच्चं । तदो सेसे असंखेज्जखंडे कए बहुखंडा तसकाइयअपज्जत्ता हँति । सेसमसंखेज्जखंडे

करके उनमेंसे बहुभागको दूसरे पुंजमें मिला देने पर सूक्ष्म अण्कायिक जीवोंका प्रमाण होता है । पुनः शेष एक भागको असंख्यात लोकप्रमाणसे खंडित करके उनमेंसे बहुभागको तीसरे पुंजमें मिला देने पर सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीवोंका प्रमाण होता है । पुनः शेष एक खंडको चौथे पुंजमें मिला देने पर सूक्ष्म तेजस्कायिक जीवोंका प्रमाण होता है । इन चारों राशियोंमेंसे अपनी अपनी राशिके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण अपने अपने पर्याप्त जीवोंका प्रमाण होता है और एक भागप्रमाण उन उनके अपर्याप्त जीव होते हैं । पुनः पहले निकाल कर पृथक् स्थापित की हुई असंख्यात लोकप्रमाण राशिके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बादर वायुकायिक अपर्याप्त जीव होते हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बादर अण्कायिक अपर्याप्त जीव होते हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव होते हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बादर निगोद-प्रतिष्ठित वनस्पति अपर्याप्त जीव होते हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव होते हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बादर तेजस्कायिक अपर्याप्त जीव होते हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बादर-वायुकायिक पर्याप्त जीव होते हैं । आगे बादर अण्कायिक, बादर पृथिवीकायिक, बादर निगोदप्रतिष्ठित और बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंका भागाभाग इसीप्रकार ले जाना चाहिये । बादर प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंके प्रमाणके अनन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके

१ गो. जी. २०७.

२ प्रतिषु ' बादरणिगोदकाइया ' इति पाठः ।

३ अ प्रती ' तसकाइयअसंजदा ' ; आ प्रती ' तसकाइयअसंखेज्जा ' ; क प्रती ' तसकाइयअसं. ' इति पाठः ।

कए बहुखंडा तसकाइयपज्जत्तामिच्छाइट्टी होंति । सेसे असंखेज्जखंडे कए बहुखंडा असंजदसग्माइट्टिणो होंति । एवं णेयव्वं जाव संजदासंजदा त्ति । सेसे असंखेज्जखंडे कए बहुखंडा वादरतेउकाइयपज्जत्ता होंति । सेसे संखेज्जखंडे कए बहुखंडा पमत्तसंजदा होंति । एवं णेयव्वं जाव अजोगिकेवल्लि त्ति ।

अप्पावहुगं तिविहं, सत्थाणं परत्थाणं सव्वपरत्थाणं चेदि । सत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा वादरपुढविकाइयपज्जत्ता । तेसिमपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । वादरपुढविकाइया विसेसाहिया । सव्वत्थोवा सुहुमपुढविकाइयअपज्जत्ता । तेसिं पज्जत्ता संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । सुहुमपुढविकाइया विसेसाहिया । एवं आउकाइय-तेउकाइय-वाउकाइयाणं च सत्थाणं वत्तव्वं । सव्वत्थोवा वादरवणप्फइकाइयपज्जत्ता । तेसिमपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । वादरवणप्फइकाइया विसेसाहिया । सव्वत्थोवा सुहुमवणप्फइकाइयअपज्जत्ता । तेसिं

असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण त्रसकायिक अपर्याप्त जीव होते हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण त्रसकायिक पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण असंयतसम्यग्दृष्टि जीव होते हैं । इसीप्रकार संयतासंयतोंका प्रमाण आने तक भागा-भागका कथन ले जाना चाहिये । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग-प्रमाण वादर तेजस्कायिक पर्याप्त जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण प्रमत्तसंयत जीव हैं । इसीप्रकार अयोगिकेवल्लियोंके प्रमाण आनेतक भागा-भागका कथन करना चाहिये ।

अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है, स्वस्थान अल्पबहुत्व, परस्थान अल्पबहुत्व और सर्व परस्थान अल्पबहुत्व । उनमेंसे स्वस्थान अल्पबहुत्वमें प्रकृत विषयको बतलाते हैं— वादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं । वादर पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव उनसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । वादर पृथिवीकायिक जीव वादर पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं । सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । इसीप्रकार अकायिक, तेजस्कायिक और वायुकायिक जीवोंका भी स्वस्थान अल्पबहुत्व कहना चाहिये । वादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं । वादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव वादर वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । वादर वनस्पति-कायिक जीव वादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं । सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक

पज्जत्ता संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्जा समया । सुहुमवणप्फइकाइया विसेसाहिया । सव्वत्थोवा तसकाइयअवहारकालो । विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । सेठी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सगअवहारकालो । दव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? विक्खंभसूई । पदरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सगअवहारकालो । लोमो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेठी । एवं बादरवप्फइपज्जत्त-पत्तेयसरीरपज्जत्त-बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्त-बादरपुढवि-पज्जत्त-बादरआउपज्जत्त-तसकाइयपज्जत्तमिच्छाइट्ठि-तसकाइयअपज्जत्ताणं च वत्तव्वं । सास-णादीणमोघसत्थाणभंगो । एवं सत्थाणप्पावहुगं समत्तं ।

परत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा बादरपुढविकाइया । सुहुमपुढविकाइया असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोमा । सव्वत्थोवा बादरपुढविकाइया । सुहुमपुढविकाइया असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोमा । पुढविकाइया विसेसाहिया । सव्वत्थोवा बादरपुढविपज्जत्ता । तस्सेव अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोमा । सुहुमपुढविकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोमा ।

अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । सूक्ष्म वनस्पति-कायिक जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । त्रसकायिक जीवोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है । उन्हींकी विष्कंभसूची अवहारकालसे असंख्यातगुणी है । जग-श्रेणी विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाल गुणकार है । त्रसकायिक जीवोंका द्रव्य जगश्रेणीसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कंभ-सूची गुणकार है । जगप्रतर त्रसकायिक जीवोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाल गुणकार है । लोक जगप्रतरसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणी गुणकार है । इसीप्रकार बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त, प्रत्येकशरीर पर्याप्त, बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्त, बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त, बादर अप्कायिक पर्याप्त, त्रसकायिक पर्याप्त मिथ्यादृष्टि और त्रसकायिक अपर्याप्त जीवोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व कहना चाहिये । कायमार्गणामें सासादनसम्यग्दृष्टि आदिका स्वस्थान अल्पबहुत्व सामान्य स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है । इसप्रकार स्वस्थान अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

अब परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— बादर पृथिवीकायिक जीव सबसे स्तोक हैं । सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव बादर पृथिवीकायिकोंसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । अथवा, बादर पृथिवीकायिक जीव सबसे स्तोक हैं । सूक्ष्म पृथिवी-कायिक जीव उनसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । पृथिवीकायिक जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिकोंसे विशेष अधिक हैं । अथवा, बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं । बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव उनसे असंख्यातगुणे हैं । गुण-कार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव बादर पृथिवी-कायिक अपर्याप्तोंसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । सूक्ष्म

सुहुमपुढविकाइयपज्जत्ता संखेज्जगुणा । एवं चउत्थो वियप्पो । णवरि पुढविकाइया विसेसाहिया । सव्वत्थोवा बादरपुढविकाइयपज्जत्ता । तेसिमपज्जत्ता । असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । बादरपुढविकाइया विसेसाहिया । सुहुमपुढविकाइयपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । सुहुमपुढविकाइयपज्जत्ता संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । सुहुमपुढविकाइया विसेसाहिया । एवं चेव छट्ठो वियप्पो । णवरि पुढविकाइया विसेसाहिया । सव्वत्थोवा बादरपुढविकाइयपज्जत्ता । तेसिमपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । बादरपुढविकाइया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरपुढविकाइयपज्जत्तमेत्तेण । सुहुमपुढविकाइयपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । पुढविकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरपुढविकाइयपज्जत्तमेत्तेण । सुहुमपुढविकाइयपज्जत्ता संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्जा समया । पुढविकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरपुढविकाइयपज्जत्तमेत्तेण । सुहुमपुढविकाइया विसेसाहिया । केत्तिय-

पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे हैं । इसीप्रकार चौथा विकल्प है । इतनी विशेषता है कि पृथिवीकायिक जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं । बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव उनसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । बादर पृथिवीकायिक जीव बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव बादर पृथिवीकायिकोंसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । इसीप्रकार छठवां विकल्प है । इतनी विशेषता है कि पृथिवीकायिक जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिकोंसे विशेष अधिक हैं । बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं । बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव उनसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । बादर पृथिवीकायिक जीव बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्रसे विशेष अधिक हैं ? बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव बादर पृथिवीकायिकोंसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितने प्रमाणसे अधिक हैं ? बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंका जितना प्रमाण है उतने प्रमाणसे अधिक हैं । सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितने प्रमाणसे अधिक हैं ? बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है

मेत्तेण ? बादरपुढविकाइयपज्जत्तपरिहीणसुहुमपुढविकाइयअपज्जत्तमेत्तेण । एवं चेव अट्टमो वियप्पो । णवरि पुढविकाइया त्रिसेसाहिया । एगुत्तरवट्ठिकमेण^१ एत्तिया चेव अप्पाबहुग-वियप्पा । अवहारकाल-विक्खंभसूई-सेट्टि-पदर-लोगे कमेण पवेसिय अप्पाबहुगे कीरमाणे वि वियप्पा लब्भंति त्ति ? ण, ताणं कमप्पवेसस्स कारणाभावा । पुढविकाइयरासिस्स संगहमेयपदुप्पायणट्ठं पुढविकाइयरासिस्स कमेण भेदो कीरदे । ण च अवहारकालादिसु कमेण पवेसिज्जमाणेसु पुढविकाइयरासी भिज्जेदे । तदो एत्तिया चेव एगुत्तरवट्ठिवियप्पा होंति त्ति ट्ठिदं । अंतिमवियप्पं वत्तइस्सामो । सव्वत्थोवो बादरपुढविकाइयपज्जत्तअव-हारकालो । तस्सेव विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सगविक्खंभसूईए असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सगअवहारकालो । अहवा सेट्टीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेट्टिपढमवग्गमूलाणि । को पडिभागो । अवहारकालवग्गो । सेट्टी असंखेज्ज-गुणा । को गुणगारो ? अवहारकालो । दव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? विक्खंभसूई ।

उतने प्रमाणसे अधिक हैं । सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव पृथिवीकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितने प्रमाणसे अधिक हैं ? बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंके प्रमाणसे हीन सूक्ष्म पृथिवी-कायिक अपर्याप्तोंका जितना प्रमाण रहे उतनेसे अधिक हैं । इसप्रकार आठवां विकल्प है । इतनी विशेषता है कि पृथिवीकायिक जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिकोंसे विशेष अधिक हैं । एकोत्तर वृद्धिके क्रमसे अल्पबहुत्वके इतने ही विकल्प होते हैं ।

शुंका — अवहारकाल, विष्कंभसूची, जगश्रेणी, जगप्रतर और लोक इनको क्रमसे प्रविष्ट करके अल्पबहुत्व करने पर भी विकल्प प्राप्त होते हैं ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, इन अवहारकाल आदिकके क्रमप्रवेशका कोई कारण नहीं है । संग्रहरूप पृथिवीकायिक राशिके भेदोंके प्रतिपादन करनेके लिये पृथिवीकायिक राशिका क्रमसे भेद किया है । परंतु अवहारकालादिकके क्रमसे प्रविश्यमान होने पर पृथिवीकायिक राशि भेदको प्राप्त नहीं होती है । इसलिये एकोत्तर वृद्धिके क्रमसे विकल्प इतने ही होते हैं, यह बात निश्चित हो जाती है ।

अब अन्तिम विकल्पको बतलाते हैं— बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है । उन्हींकी विष्कंभसूची अवहारकालसे असंख्यात-गुणी है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कंभसूचीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? अपना अवहारकाल प्रतिभाग है । अथवा, जगश्रेणीका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? अपने अवहारकालका वर्ग प्रतिभाग है । जगश्रेणी विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाल गुणकार है । उन्हींका (बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंका) द्रव्य जगश्रेणीसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कंभसूची गुणकार है । जगप्रतर

१ प्रतिपु ' वज्जकमेण ' इति पाठः ।

पदरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? अवहारकालो । लोगो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेठी । बादरपुढविकाइयअपज्जत्तद्वयमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । बादरपुढविकाइया विसेसाहिया । सुहुमपुढविकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । पुढविकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया । सुहुमपुढविकाइयपज्जत्ता संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । पुढविकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया । सुहुमपुढविकाइया विसेसाहिया । पुढविकाइया विसेसाहिया । एवं चाउ-तेउ-वाउणं परत्थाणं जाणि-ऊण वत्तव्वं ।

बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाल गुणकार है । लोक जगप्रतरसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणी गुणकार है । बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंका द्रव्य लोकसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । बादर पृथिवीकायिक जीव बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव बादर पृथिवीकायिकोंसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव पृथिवीकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । पृथिवीकायिक जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिकोंसे विशेष अधिक हैं । इसीप्रकार अप्कायिक, तेजस्कायिक और वायुकायिक जीवोंके परस्थान अल्पबहुत्वका समझकर कथन करना चाहिये ।

पृथिवीकायिक जीवोंके एकोत्तर वृद्धिक्रमसे भेदोंके अल्पबहुत्वके क्रमका बतलानेवाला कोष्ठक.

बा. पृ.	बा. पृ.	बा. पृ. प.	बा. पृ. प.	बा. पृ. प.	बा. पृ. प.	बा. पृ. प.	बा. पृ. प.
सू. पृ.	सू. पृ.	बा. पृ. अप.	बा. पृ. अप.	बा. पृ. अप.	बा. पृ. अप.	बा. पृ. अ.	बा. पृ. अ.
	पृ. सा.	सू. पृ. अप.	सू. पृ. अप.	बा. पृ.	बा. पृ.	बा. पृ.	बा. पृ.
		सू. पृ. प.	सू. पृ. प.	सू. पृ. अप.	सू. पृ. अप.	सू. पृ. अ.	सू. पृ. अ.
			पृ. सा.	सू. पृ. प.	सू. पृ. प.	पृ. अ.	पृ. अ.
				सू. पृ.	सू. पृ.	सू. पृ. प.	सू. पृ. प.
					पृ. सा.	पृ. प.	पृ. प.
						सू. पृ.	सू. पृ.
							पृ. सा.

१ प्रतिपु 'पज्जत्त' इति पाठः ।

संपहि वणप्फइपरत्थाणप्पावहुगं वत्तइस्सामो । सच्चत्थोवा बादरवणप्फइकाइया । सुहुमवणप्फइकाइया असंखेज्जगुणा । एवं विदियं पि । णवरि वणप्फइकाइया विसेसाहिया । अहवा सच्चत्थोवा बादरवणप्फइकाइयपज्जत्ता । बादरवणप्फइकाइयपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जलोगा । सुहुमवणप्फइकाइयपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जलोगा । सुहुमवणप्फइकाइयपज्जत्ता संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । एवं चउत्थं पि । णवरि वणप्फइकाइया विसेसाहिया । अहवा सच्चत्थोवा बादरवणप्फइपज्जत्ता । बादरवणप्फइकाइयपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । बादरवणप्फइकाइया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरवणप्फइकाइयपज्जत्तमेत्तेण । सुहुमवणप्फइकाइयपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । सुहुमवणप्फइकाइयपज्जत्ता संखेज्जगुणा । सुहुमवणप्फइकाइया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? सुहुमवणप्फइकाइयपज्जत्तमेत्तेण । एवं छड्डं पि । णवरि वणप्फइकाइया विसेसाहिया । अहवा सच्चत्थोवा बादरवणप्फइ-

अथ वनस्पतिकायिक जीवोंके परस्थान अल्पबहुत्वको बतलाते हैं— बादर वनस्पतिकायिक जीव सबसे स्तोक हैं । सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीव उनसे असंख्यातगुणे हैं । इसीप्रकार दूसरा विकल्प भी है । इतनी विशेषता है कि वनस्पतिकायिक जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीवोंसे विशेष अधिक हैं । अथवा, बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं । बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव उनसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । इसीप्रकार चौथा विकल्प भी है । इतनी विशेषता है कि वनस्पतिकायिक जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । अथवा, बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं । बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव उनसे असंख्यातगुणे हैं । बादर वनस्पतिकायिक जीव बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिकायिकोंसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे हैं । सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । इसीप्रकार छठवां विकल्प भी है । इतनी विशेषता है कि वनस्पतिकायिक जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिकोंसे विशेष अधिक हैं । अथवा, बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव सबके स्तोक हैं । बादर

काइयपज्जत्ता । बादरवणप्फइकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । बादरवणप्फइकाइया विसेसाहिया । सुहुमवणप्फइकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । वणप्फइकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरवणप्फइकाइयअपज्जत्तमेत्तेण । सुहुमवणप्फइकाइयअपज्जत्ता संखेज्जगुणा । वणप्फइकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरवणप्फइकाइयअपज्जत्तमेत्तेण । सुहुमवणप्फइकाइया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरवणप्फइकाइयअपज्जत्तमेत्तेण । एवमट्ठमं पि । णवरि वणप्फइकाइया विसेसाहिया ।

वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव उनसे असंख्यातगुणे हैं । बादर वनस्पतिकायिक जीव बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिकायिकोंसे असंख्यातगुणे हैं । वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे हैं । वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीव वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंके प्रमाणसे रहित सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंका जितना प्रमाण रहे तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । इसीप्रकार आठवां विकल्प भी है । इसमें इतनी विशेषता है कि वनस्पतिकायिक जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिकोंसे विशेष अधिक हैं ।

वनस्पतिकायिक जीवोंके एकोत्तर वृद्धिकमसे भेदोंके अल्पबहुत्वके क्रमका बतलानेवाला कोष्ठक.

बा. व.	बा. व.	बा. व. प.	बा. व. प.	बा. व. प.	बा. व. प.	बा. व. प.	बा. व. प.
सू. व.	सू. व.	बा. व. अ.	बा. व. अ.	बा. व. अ.	बा. व. अ.	बा. व. अ.	बा. व. अ.
	व.	सू. व. अ.	सू. व. अ.	बा. व.	बा. व.	बा. व.	बा. व.
		सू. व. प.	सू. व. प.	सू. व. अ.	सू. व. अ.	सू. व. अ.	सू. व. अ.
			व.	सू. व. प.	सू. व. प.	व. अ.	व. अ.
				सू. व.	सू. व.	सू. व. प.	सू. व. प.
					व.	व. प.	व. प.
						सू. व.	सू. व.
							व.

संपहि एदेसु णवपदेसु णिगोदछपदाणि पविसिय पण्णारसपदअप्पावहुगं वत्त-
इस्सामो । सच्चत्थोवा वादरणिगोदपज्जत्ता । वादरवणप्फइकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया ।
केत्तियमेत्तेण ? वादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तेण पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्तेण ।
उवरि अट्टपदाणि पुव्वं व । अहवा सच्चत्थोवा वादरणिगोदपज्जत्ता । वादरवणप्फइकाइय-
पज्जत्ता विसेसाहिया । वादरणिगोदअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणमारो ? असंखेज्जा
लोमा । वादरवणप्फइकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? वादरवणप्फइकाइय-
पत्तेयसरीरअपज्जत्ताअसंखेज्जलोगमेत्तेण । उवरि सत्तपदाणि पुव्वं व । अहवा सच्चत्थोवा
वादरणिगोदपज्जत्ता । वादरवणप्फइकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया । वादरणिगोदअपज्जत्ता ।
असंखेज्जगुणा । वादरवणप्फइकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया । वादरणिगोदा विसेसाहिया ।
केत्तियमेत्तेण ? वादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरअपज्जत्तेणवादरणिगोदपज्जत्तमेत्तेण । वादर-
वणप्फइकाइया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? वादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरमेत्तेण । उवरि

अब इन पूर्वोक्त नौ स्थानोंमें निगोदसंबन्धी छह स्थानोंका प्रवेश कराके पन्द्रह
स्थानोंमें अल्पयहुत्वको बतलाते हैं— वादरनिगोद पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं । वादर
वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव वादरनिगोद पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितने अधिक हैं ?
वादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त, जो कि जगप्रतरके असंख्यातवें भाग हैं, तन्मात्र विशेषसे
अधिक हैं । इसके ऊपर आठ स्थान पहल्लेके समान हैं । अथवा, वादरनिगोद पर्याप्त जीव
सबसे स्तोक हैं । वादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव उनसे विशेष अधिक हैं । वादरनिगोद
अपर्याप्त जीव वादर वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असं-
ख्यात लोक गुणकार है । वादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव वादरनिगोद अपर्याप्तोंसे
विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर
अपर्याप्त, जो कि असंख्यात लोकप्रमाण हैं, तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । इसके ऊपर सात
स्थान पहल्लेके समान हैं । अथवा, वादरनिगोद पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं । वादर वन-
स्पतिकायिक पर्याप्त जीव उनसे विशेष अधिक हैं । वादरनिगोद अपर्याप्त जीव वादर वन-
स्पतिकायिक पर्याप्तोंसे असंख्यातगुणे हैं । वादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव वादरनिगोद
अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । वादरनिगोद जीव वादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे
विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर
अपर्याप्तोंके प्रमाणसे न्यून वादरनिगोद पर्याप्तोंका जितना प्रमाण हो तन्मात्र विशेषसे
अधिक हैं । वादर वनस्पतिकायिक जीव वादरनिगोद जीवोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र
विशेषसे अधिक हैं ? वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र

छप्पदाणि पुवं व । अहवा सच्चत्थोवा बादरणिगोदपज्जत्ता । बादरवणप्फइकाइयपज्जत्ता
 विसेसाहिया । बादरणिगोदअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । बादरवणप्फइकाइयअपज्जत्ता
 विसेसाहिया । बादरणिगोदा विसेसाहिया । बादरवणप्फइकाइया विसेसाहिया । सुहुमवण-
 प्फइकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । णिगोदअपज्जत्ता विसेसाहिया । वणप्फइकाइय-
 अपज्जत्ता विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? असंखेज्जलोगमेत्तपत्तेयसरीरमेत्तेण । उवरि
 चत्तारि पदाणि पुवं व । अहवा सच्चत्थोवा बादरणिगोदपज्जत्ता । बादरवणप्फइकाइय-
 पज्जत्ता विसेसाहिया । बादरणिगोदअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । बादरवणप्फइकाइयअपज्जत्ता
 विसेसाहिया । बादरणिगोदा विसेसाहिया । बादरवणप्फइकाइया विसेसाहिया । सुहुमवणप्फइ-
 काइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । णिगोदअपज्जत्ता विसेसाहिया । वणप्फइकाइयअपज्जत्ता
 विसेसाहिया । सुहुमवणप्फइकाइयपज्जत्ता संखेज्जगुणा । णिगोदपज्जत्ता विसेसाहिया ।

विशेषसे अधिक हैं । इसके ऊपर छह स्थान पहलेके समान हैं । अथवा बादरनिगोद् पर्याप्त
 जीव सबसे स्तोक हैं । बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव उनसे विशेष अधिक हैं । बादर
 निगोद् अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे असंख्यातगुणे हैं । बादर
 वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव बादरनिगोद् अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । बादरनिगोद्
 जीव बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । बादर वनस्पतिकायिक जीव
 बादरनिगोद् जीवोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव
 बादर वनस्पतिकायिकोंसे असंख्यातगुणे हैं । निगोद् अपर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक
 अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव निगोद् अपर्याप्तोंसे विशेष
 अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं । असंख्यात लोकप्रमाण प्रत्येकशरीर जीवोंसे
 विशेष अधिक हैं । इसके ऊपर चार स्थान पहलेके समान हैं । अथवा, बादरनिगोद् पर्याप्त
 जीव सबसे स्तोक हैं । बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव बादरनिगोद् पर्याप्तोंसे विशेष
 अधिक हैं । बादरनिगोद् अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे असंख्यातगुणे हैं ।
 बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव बादरनिगोद् अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । बादरनिगोद्
 जीव बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । बादर वनस्पतिकायिक जीव
 बादर निगोद्से विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव बादर वनस्पति-
 कायिकोंसे असंख्यातगुणे हैं । निगोद् अपर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे
 विशेष अधिक हैं । वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव निगोद् अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं ।
 सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे हैं । निगोद्
 पर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे विशेषसे अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे

केत्तियमेत्तेण ? बादरणिगोदपज्जत्तमेत्तेण । वणप्फइकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया । केत्तिय-
मेत्तेण ? पत्तेयसरीरपज्जत्तमेत्तेण । सुहुमवणप्फइकाइया विसेसाहिया । वणप्फइकाइया
विसेसाहिया । अहवा सच्चत्थोवा बादरणिगोदपज्जत्ता । बादरवणप्फइकाइयपज्जत्ता विसे-
साहिया । बादरणिगोदअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । बादरवणप्फइकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया ।
बादरणिगोदा विसेसाहिया । बादरवणप्फइकाइया विसेसाहिया । सुहुमवणप्फइकाइय-
अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । णिगोदअपज्जत्ता विसेसाहिया । वणप्फइकाइयअपज्जत्ता विसे-
साहिया । सुहुमवणप्फइकाइयपज्जत्ता संखेज्जगुणा । णिगोदपज्जत्ता विसेसाहिया ।
वणप्फइकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया । सुहुमवणप्फइकाइया विसेसाहिया । णिगोदा विसे-
साहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरणिगोदमेत्तेण । वणप्फइकाइया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ?
पत्तेयसरीरवणप्फइकाइयमेत्तेण ।

अधिक हैं ? बादर निगोद पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं ।
वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव निगोद पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे
अधिक हैं ? प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । सूक्ष्म
वनस्पतिकायिक जीव वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । वनस्पतिकायिक
जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिकोंसे विशेष अधिक हैं । अथवा, बादर निगोद पर्याप्त जीव
सबसे स्तोक हैं । बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव इनसे विशेष अधिक हैं । बादर निगोद
अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे असंख्यातगुणे हैं । बादर वनस्पतिकायिक
अपर्याप्त जीव बादर निगोद अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । बादर निगोद जीव बादर
वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । बादर वनस्पतिकायिक जीव बादर निगोदोंसे
विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिकायिकोंसे
असंख्यातगुणे हैं । निगोद अपर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष
अधिक हैं । वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव निगोद अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म
वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे हैं । निगोद पर्याप्त
जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव
निगोद पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीव वनस्पतिकायिक
पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । निगोद जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिकोंसे विशेष अधिक हैं ।
कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर निगोदोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे
अधिक हैं । वनस्पतिकायिक जीव निगोद जीवोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे
अधिक हैं ? प्रत्येकशरीर वनस्पतिकायिकोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं ।

संपहि बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्त-बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्त-बादरवण-
प्फइकाइयपत्तेयसरीरअपज्जत्त-बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीर-बादरणिगोदपदिट्ठिदअपज्जत्त-
बादरणिगोदपदिट्ठिदा एदाणि छप्पदाणि पुच्चिल्लपण्णारसपदेसु पक्खेत्रिय एक्कावीसपद-
अप्पाबहुगं वत्तइस्सामो । तं जहा— सच्चत्थोर्वं बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीर-
पज्जत्तदच्चं । बादरणिगोदपज्जत्तदच्चमणंतगुणं । को गुणगारो ? सगरासिस्स असंखेज्जदि-

पूर्वोक्त नौ राशियोंमें निगोदकी छह राशियां मिला देने पर अल्पबहुत्वके
क्रमको बतलानेवाला कोष्ठक.

वा. नि. प.	वा. नि. प.	वा. नि. प.	वा. नि. प.	वा. नि. प.	वा. नि. प.
वा. व. प.	वा. व. प.	वा. व. प.	वा. व. प.	वा. व. प.	वा. व. प.
वा. व. अ.	वा. नि. अ.	वा. नि. अ.	वा. नि. अ.	वा. नि. अ.	वा. नि. अ.
वा. व.	वा. व. अ.	वा. व. अ.	वा. व. अ.	वा. व. अ.	वा. व. अ.
सू. व. अ.	वा. व.	वा. नि.	वा. नि.	वा. नि.	वा. नि.
व. अ.	सू. व. अ.	वा. व.	वा. व.	वा. व.	वा. व.
सू. व. प.	व. अ.	सू. व. अ.	सू. व. अ.	सू. व. अ.	सू. व. अ.
व. प.	सू. व. प.	व. अ.	नि. अ.	नि. अ.	नि. अ.
सू. व.	व. प.	सू. व. प.	व. अ.	व. अ.	व. अ.
व.	सू. व.	व. प.	सू. व. प.	सू. व. प.	सू. व. प.
	व.	सू. व.	व. प.	नि. प.	नि. प.
		व.	सू. व.	व. प.	व. प.
			व.	सू. व.	सू. व.
				व.	नि.
					व.

अब बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त, बादर निगोद प्रतिष्ठित पर्याप्त,
बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्त, बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर, बादर
निगोदप्रतिष्ठित अपर्याप्त और बादर निगोदप्रतिष्ठित, इन छह स्थानोंको पूर्वोक्त पन्द्रह स्थानोंमें
मिलाकर इक्कीस स्थानोंमें अल्पबहुत्वको बतलाते हैं। वह इसप्रकार है— बादर वनस्पति-
कायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका द्रव्य सबसे स्तोक है। बादर निगोद पर्याप्तोंका द्रव्य उससे
अनन्तगुणा है। गुणकार क्या है ? अपनी राशिका असंख्यातवां भाग गुणकार है। प्रतिभाग

१ प्रतिपु ' बादरवणप्फइ० पत्तेयसरीर- बादरवणप्फइ० पत्तेयसरीर- ' इति अधिकः पाठः ।

भागो । को पडिभागो ? पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्तपत्तेयसरीरपज्जत्तद्वं पडिभागो । उवरि चोद्दसपदाणि पुवं व । अहवा सव्वत्थोवं बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तद्वं । बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तद्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । उवरि पणारस्स पदाणि पुवं व । अहवा सव्वत्थोवं बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तद्वं । बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तद्वमसंखेज्जगुणं । बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तद्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । को पडिभागो ? पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्तबादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तद्वपडिभागो । बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? पत्तेयसरीरपज्जत्तमेत्तेण । बादरणिगोदपज्जत्ता अणंतगुणा । को गुणगारो ? सगरासिस्स असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो । असंखेज्जलोगमेत्तपत्तेयसरीरद्वपडिभागो । उवरि चोद्दस पदाणि पुवं व । अहवा सव्वत्थोवं बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तद्वं । बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तद्वमसंखेज्जगुणं । बादरवणप्फइ-

क्या है ? जगप्रतरके असंख्यातवें भागमात्र प्रत्येकशरीर पर्याप्त द्रव्यप्रमाण प्रतिभाग है । इसके ऊपर चौदह स्थान पहलेके समान हैं । अथवा, बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका द्रव्य सबसे स्तोक है । बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंका द्रव्य इससे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । इसके ऊपर पन्द्रह स्थान पहलेके समान हैं । अथवा, बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका द्रव्य सबसे स्तोक है । बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंका द्रव्य उससे असंख्यातगुणा है । बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्तोंका द्रव्य बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? जगप्रतरके असंख्यातवें भागमात्र बादर निगोद प्रतिष्ठित पर्याप्त द्रव्य प्रतिभाग है । बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीव बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । बादर निगोद पर्याप्त जीव बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंसे अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अपनी राशिका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? असंख्यात लोकप्रमाण प्रत्येकशरीर द्रव्य प्रतिभाग है । इसके ऊपर चौदह स्थान पहलेके समान हैं । अथवा, बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त द्रव्य सबसे स्तोक है । बादर निगोद प्रतिष्ठित पर्याप्त द्रव्य इससे असंख्यातगुणा है । बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर

१ क-आप्रत्योः असंखेज्जा लोगा । को पडिभागो ? पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्तबादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तद्वं पडिभागो ' इत्याधिकः पाठः ।

२ आ-कप्रत्योः ' को गुणगारो.....द्वपडिभागो ' इति पाठः नास्ति ।

काइयपत्तेयसरीरअपज्जत्तद्वमसंखेज्जगुणं । बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरा विसेसाहिया ।
 बादरणिगोदपदिट्ठिदअपज्जत्तद्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । उवरि
 पण्णारस पदाणि पुवं व । अहवा सव्वत्थोवं बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तद्वं ।
 बादरणिगोदपदिट्ठिदअपज्जत्तद्वमसंखेज्जगुणं । बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरअपज्जत्तद्वम-
 संखेज्जगुणं । बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरा विसेसाहिया । बादरणिगोदपदिट्ठिदअपज्जत्तद्वं
 असंखेज्जगुणं । बादरणिगोदपदिट्ठिदा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरणिगोदपदिट्ठिद-
 पज्जत्तमेत्तेण । उवरिमपण्णारस पदाणि पुवं व ।

अपर्याप्त द्रव्य बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्त द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । बादर वनस्पतिकायिक
 प्रत्येकशरीर जीव बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं ।
 बादर निगोद प्रतिष्ठित अपर्याप्त द्रव्य बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर द्रव्यसे असंख्यात-
 गुणा है । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । इसके ऊपर पन्द्रह स्थान पहलेके
 समान हैं । अथवा, बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त द्रव्य सबसे स्तोक है । बादर
 निगोद प्रतिष्ठित पर्याप्त द्रव्य उससे असंख्यातगुणा है । बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर
 अपर्याप्त द्रव्य बादर निगोद प्रतिष्ठित पर्याप्त द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । बादर वनस्पति-
 कायिक प्रत्येकशरीर जीव बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष
 अधिक हैं । बादर निगोदप्रतिष्ठित अपर्याप्त द्रव्य बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंसे
 असंख्यातगुणा है । बादर निगोदप्रतिष्ठित जीव बादर निगोदप्रतिष्ठित अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष
 अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंका जितना प्रमाण
 है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । इसके ऊपर पन्द्रह स्थान पहलेके समान हैं ।

विशेषार्थ—ऊपर दिये हुए तीन कोष्ठक और आगे दिये हुए निम्न कोष्ठकसे इस बातका
 ज्ञान अच्छे प्रकारसे हो जाता है कि प्रथम स्थानसे दूसरेमें और तीसरे आदिसे चौथे आदिमें
 क्या अन्तर है । यद्यपि इन कोष्ठकोंमें परस्पर अल्पबहुत्वकी विशेषता नहीं बतलाई है, तो भी
 इनसे अल्पबहुत्वका क्रम अवश्य ही समझमें आ जाता है । विशेषताका ज्ञान मूलसे किया जा
 सकता है । वनस्पतिके पहले कोष्ठकमें नौ भेदोंकी मुख्यतासे, दूसरेमें उन नौ भेदोंमें ६ और
 मिलाकर पन्द्रह भेदोंकी मुख्यतासे और निम्न तीसरे कोष्ठकमें उपर्युक्त पन्द्रह भेदोंमें छह भेद
 और मिलाकर इक्कीस भेदोंकी मुख्यतासे अल्पबहुत्व बतलाया है । जहां 'ऊपर सात स्थान पह-
 लेके समान हैं, पन्द्रह स्थान पहलेके समान हैं' इत्यादि कहा है उसका यह अभिप्राय है कि
 प्रारंभके जितने स्थानोंमें विशेषता कहनी थी वह कह दी । आगे अन्तके सात या पन्द्रह आदि
 स्थान पहलेके कहे हुए जोड़ लेना चाहिये ।

संपहि बादरणिगोदपदिट्टिदपज्जत्तअवहारकालो बादरवणण्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्त-
अवहारकालो तस्सेव विक्खंभसूई बादरणिगोदपदिट्टिदपज्जत्तविक्खंभसूई सेठी जगपदर-लोणा
इदि सत्त पदाणि एक्कावीसपदेसु पक्खिविय अट्ठावीसपदप्पाबहुगं वत्तइस्सामो ।

पूर्वोक्त पन्द्रह स्थानोंमें छह स्थान जोड़कर इक्कीस स्थानोंमें अल्पबहुत्वके
क्रमका ज्ञान करनेवाला कोष्टक.

बा. व. प्र. प.	बा. व. प्र. प.	बा. व. प्र. प.	बा. व. प्र. प.	बा. व. प्र. प.
बा. नि. प.	बा. नि. प्रति. प.	बा. नि. प्रति. प.	बा. नि. प्रति. प.	बा. नि. प्रति. प.
वा. व. प.	बा. नि. प.	बा. व. प्र. अ.	वा. व. प्र. अ.	बा. व. प्र. अ.
बा. नि. अ.	बा. व. प.	बा. व. प्र.	वा. व. प्र.	बा. व. प्र.
बा. व. अ.	बा. नि. अ.	बा. नि. प.	बा. नि. प्रति. अ.	बा. नि. प्रति. अ.
वा. नि.	बा. व. अ.	वा. व. प.	बा. नि. प.	बा. नि. प्रति.
बा. व.	बा. नि.	बा. नि. अ.	वा. व. प.	बा. नि. प.
सू. व. अ.	बा. व.	बा. व. अ.	बा. नि. अ.	बा. व. प.
नि. अ.	सू. व. अ.	बा. नि.	बा. व. अ.	बा. नि. अ.
व. अ.	नि. अ.	बा. व.	बा. नि.	बा. व. अ.
सू. व. प.	व. अ.	सू. व. अ.	वा. व.	बा. नि.
नि. प.	सू. व. प.	नि. अ.	सू. व. अ.	बा. व.
व. प.	नि. प.	व. अ.	नि. अ.	सू. व. अ.
सू. व. नि.	व. प.	सू. व. प.	व. अ.	नि. अ.
व.	सू. व. नि.	नि. प.	सू. व. प.	व. अ.
	व.	व. प.	नि. प.	सू. व. प.
		सू. व. नि.	व. प.	नि. प.
		व.	नि.	व. प.
			व.	सू. व. नि.
				व.

अब बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल, बादर वनस्पतिकायिक
प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका अवहारकाल, उसीकी विक्खंभसूची, बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंकी
विक्खंभसूची, जगभ्रेणी, जगप्रतर और लोक, इन सात स्थानोंको पूर्वोक्त इक्कीस स्थानोंमें
मिलाकर अट्ठाईस स्थानोंमें अल्पबहुत्वको बतलाते हैं— यहां ये सातों स्थान एकसाथ मिला

एदाणि सत्त वि पदाणि एकवारेण पविसिदव्वाणि । कुदो ? कमप्पवेसकारणा-
भावा । रासिसंगहभेदपदुप्पायणद्धं कमेण पवेसो कीरदे । ण च एत्थ रासिभेदो
अत्थि, पत्तभिज्जमाणभेदपज्जंतत्तादो । सव्वत्थोवो वादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तअवहार-
कालो । वादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ?
आवलियाए असंखेज्जदिभागो । तस्सेव विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । वादरणिगोदपदि-
ट्ठिदपज्जत्तविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।
सेठी असंखेज्जगुणा । वादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । वादरणिगोद-
पदिट्ठिदपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । पदरम-
संखेज्जगुणं । को गुणगारो ? वादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तअवहारकालो । लोगो असंखेज्जगुणो ।
को गुणगारो ? सेठी । वादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरअपज्जत्तदव्वं असंखेज्जगुणं । को
गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । वादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ?
तस्सेव वादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तमेत्तेण । वादरणिगोदपदिट्ठिदअपज्जत्ता असं-
खेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । वादरणिगोदपदिट्ठिदा विसेसाहिया ।

देना चाहिये । क्योंकि, उनके क्रमसे मिलानेका कोई कारण नहीं है । संग्रहरूप राशियोंके भेदके प्रतिपादन करनेके लिये क्रमसे राशि मिलई जाती है । परंतु यहाँ पर तो राशिमैं कोई भेद पाया नहीं जाता है, क्योंकि, भिद्यमान राशियोंमें जितने भेद प्राप्त थे उतने भेद किये जा चुके हैं । वादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है । वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका अवहारकाल पूर्वोक्त अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । उन्हीं वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंकी विष्कंभसूची अवहारकालसे असंख्यातगुणी है । वादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंकी विष्कंभसूची पूर्वोक्त विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । जगश्रेणी उक्त विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणी है । वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका द्रव्य जगश्रेणीसे असंख्यातगुणा है । वादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंका द्रव्य वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । जगप्रतर वादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? वादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंका अवहारकाल गुणकार है । लोक जगप्रतरसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणी गुणकार है । वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्तोंका द्रव्य लोकसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीव वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? उन्हींके पर्याप्तोंका अर्थात् वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । वादर निगोदप्रतिष्ठित अपर्याप्त जीव वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक

केत्तियमेत्तेण ? वादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तमेत्तेण । वादरणिगोदपज्जत्ता अणंतगुणा । को गुणगारो ? सगरासिस्स असंखेज्जदिभागो । तस्स को पडिभागो ? वादरणिगोदपदिट्ठिदा पडिभागो । वादरवणप्फइकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? वादरवणप्फइकाइय-पत्तेयसरीरपज्जत्तमेत्तेण । वादरणिगोदअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । वादरवणप्फइकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? वादरवणप्फइकाइय-पत्तेयसरीरअपज्जत्तमेत्तेण । वादरणिगोदा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? पत्तेयसरीर-अपज्जत्तेणूणवादरणिगोदपज्जत्तमेत्तेण । वादरवणप्फइकाइया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? वादरवणप्फदिपत्तेयसरीरमेत्तेण । सुहुमवणप्फइकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । णिगोदअपज्जत्ता विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? वादरणिगोदअपज्जत्त-मेत्तेण । वणप्फइकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? वादरवणप्फइकाइयपत्तेय-

गुणकार है । वादर निगोदप्रतिष्ठित जीव वादर निगोदप्रतिष्ठित अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? वादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्त जीवोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । वादर निगोद पर्याप्त जीव वादर निगोदप्रतिष्ठित जीवोंसे अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अपनी राशिका असंख्यातवां भाग गुणकार है । उसका प्रतिभाग क्या है ? वादर निगोदप्रतिष्ठित जीवोंका प्रमाण प्रतिभाग है । वादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव वादर निगोद पर्याप्तोंके प्रमाणसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । वादर निगोद अपर्याप्त जीव वादर वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंके प्रमाणसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । वादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव वादर निगोद अपर्याप्तोंके प्रमाणसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं । वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । वादर निगोद जीव वादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीवोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? प्रत्येकशरीर अपर्याप्तोंके प्रमाणसे न्यून वादर निगोद पर्याप्तोंका जितना प्रमाण हो तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । वादर वनस्पतिकायिक जीव वादर निगोद जीवोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव वादर वनस्पतिकायिक जीवोंसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । निगोद अपर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? वादर निगोद अपर्याप्त जीवोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव निगोद अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? वादर वनस्पति-कायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । सूक्ष्म

सरीरअपज्जत्तमेत्तेण । सुहुमवणप्फदिकाइयपज्जत्ता संखेज्जगुणा । को गुणमारो ? संखेज्जा समया । णिगोदपज्जत्ता विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरणिगोदपज्जत्तमेत्तेण । वणप्फइकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरवणप्फदिपत्तेयसरीरपज्जत्तमेत्तेण । सुहुमवणप्फदिकाइया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरवणप्फदिपज्जत्तेणूणसुहुमवणप्फदिअपज्जत्तमेत्तेण । णिगोदा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरणिगोदमेत्तेण । वणप्फइकाइया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरमेत्तेण । एवं वणप्फइकाइयपरत्थाणप्पावहुगं समत्तं । तसकाइयपरत्थाणस्स पंचिंदियपरत्थाणभंगो । एवं परत्थाणप्पावहुगं समत्तं ।

सव्वपरत्थाणप्पावहुगं वत्तइस्सामो । सव्वत्थोवा अजोगिकेवली । चत्तारि उवसामगा संखेज्जगुणा । चत्तारि खवगा संखेज्जगुणा । सजोगिकेवली संखेज्जगुणा । अपमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तापमत्तरासीहिंतो बादरवाउपज्जत्तअवहारकालो किमहिओ ऊणो चि ण जाणिज्जदे । कुदो ? संपहि उवएसाभावादो ।

वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । निगोद पर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर निगोद पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव निगोद पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीव वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर वनस्पति पर्याप्तोंके प्रमाणसे न्यून सूक्ष्म वनस्पति अपर्याप्तोंका जितना प्रमाण हो तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । निगोद जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीवोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर निगोद जीवोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । वनस्पतिकायिक जीव विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । इसप्रकार वनस्पतिकायिक जीवोंका पररथान अल्पबहुत्व समाप्त हुआ । तसकायिक जीवोंका परस्थान अल्पबहुत्व पंचेन्द्रिय जीवोंके पररथान अल्पबहुत्वके समान है । इसप्रकार परस्थान अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

अब सर्वपरस्थान अल्पबहुत्वको बतलाते हैं—अयोगिकेवली जीव सबसे थोड़े हैं । चारों गुणस्थानोंके उपशामक अयोगिकेवलियोंसे संख्यातगुणे हैं । चारों गुणस्थानोंके क्षपक उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । सयोगिकेवली जीव क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं । अप्रमत्तसंयत जीव सयोगिकेवलियोंसे संख्यातगुणे हैं । प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत जीवराशिसे बादर वायुकायिक पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल क्या अधिक है, या कम, यह नहीं जाना जाता है, क्योंकि, इस समय इस प्रकारका

तदो असंजदसम्माइड्ढिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । एवं जाणिऊण णेयव्वं जाव संजदा-
संजदअवहारकालो त्ति । तदो बादरतेउपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । तदो संजदासंजददव्वम-
संखेज्जगुणं । एवं जाणिऊण णेदव्वं जाव पलिदोवमो त्ति । तदो बादरआउपज्जत्त-
अवहारकालो असंखेज्जगुणो । बादरपुढविपज्जत्तअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को
गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । बादरणिगोदपदिड्ढिदपज्जत्तअवहारकालो
असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । बादरवणप्फइकाइय-
पत्तेयपज्जत्तअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।
तसकाइयमिच्छाइड्ढिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखे-
ज्जदिभागो । तसकाइयअपज्जत्तअवहारकालो विसेसाहिओ । केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए
असंखेज्जदिभाएण खंडिदेगखंडेण । तसकाइयपज्जत्तअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को
गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जदिभागो । तदो तसकाइयपज्जत्त-

उपदेश नहीं पाया जाता है । बादर वायुकायिक पर्याप्तोंके अवहारकालसे असंयतसम्यग्दृष्टि-
योंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार समझकर संयतासंयतोंके अवहारकालतक
ले जाना चाहिये । संयतासंयतोंके अवहारकालसे बादर तेजस्कायिक पर्याप्त असंख्यातगुणे
हैं । इससे संयतासंयतोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार जानकर पल्योपमतक ले
जाना चाहिये । पल्योपमसे बादर अष्कायिक जीवोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । बादर
पृथिवीकायिक पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल बादर अष्कायिक पर्याप्त जीवोंके अवहारकालसे
असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । बादर
निगोदप्रतिष्ठित प्रत्येक जीवोंका अवहारकाल बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंके अवहारकालसे
असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । बादर
वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंके
अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है ।
त्रसकायिक मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंके
अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार
है । त्रसकायिक अपर्याप्त जीवोंका अवहारकाल त्रसकायिक मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे
विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? आवलीके असंख्यातवें भागसे त्रसकायिक
मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालको खंडित करके जो एक भाग लब्ध आवे तन्मात्र विशेषसे
अधिक है । त्रसकायिक पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल त्रसकायिक अपर्याप्तोंके अवहारकालसे
असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग
गुणकार है । त्रसकायिक पर्याप्तोंके अवहारकालसे त्रसकायिक पर्याप्तोंकी विष्कंभसूची

१ प्रतिधु ' बाउ० ' इति पाठः ।

विक्रमसूई असंखेज्जगुणा । तसकाइयअपज्जत्तविक्रमसूई असंखेज्जगुणा । तसकाइय-
विक्रमसूई विसेसाहिया । बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तविक्रमसूई असंखेज्जगुणा ।
बादरणिगोदपदिट्टिदपज्जत्तविक्रमसूई असंखेज्जगुणा । बादरपुढविकाइयपज्जत्तविक्रमसू-
ई असंखेज्जगुणा । बादरआउकाइयपज्जत्तविक्रमसूई असंखेज्जगुणा । बादर-
वाउकाइयपज्जत्तविक्रमसूई असंखेज्जगुणा । सेठी संखेज्जगुणा । तसकाइय-
पज्जत्तद्वमसंखेज्जगुणं । तसकाइयअपज्जत्तद्वमसंखेज्जगुणं । तसकाइयद्वं विसे-
साहियं । बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तद्वमसंखेज्जगुणं । बादरणिगोदपदि-
ट्टिदपज्जत्तद्वमसंखेज्जगुणं । (बादरपुढविकाइयपज्जत्तद्वमसंखेज्जगुणं ।) बादरआउ-
पज्जत्तद्वमसंखेज्जगुणं । पदरमसंखेज्जगुणं । बादरवाउपज्जत्तद्वमसंखेज्जगुणं । लोगो
संखेज्जगुणो । तदो बादरतेउअपज्जत्तद्वमसंखेज्जगुणं । बादरतेउद्वं विसेसाहियं ।

असंख्यातगुणी है । तसकायिक अपर्याप्त जीवोंकी विष्कंभसूची तसकायिक पर्याप्तोंकी
विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है । त्रसकायिक जीवोंकी विष्कंभसूची त्रसकायिक अपर्याप्तोंकी
विष्कंभसूचीसे विशेष अधिक है । बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंकी
विष्कंभसूची त्रसकायिकोंकी विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणी है । बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्त
जीवोंकी विष्कंभसूची बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंकी विष्कंभसूचीसे
असंख्यातगुणी है । बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीवोंकी विष्कंभसूची बादर निगोदप्रतिष्ठित
पर्याप्तोंकी विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणी है । बादर अष्कायिक पर्याप्त जीवोंकी विष्कंभसूची
बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंकी विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणी है । बादर वायुकायिक पर्याप्तोंकी
विष्कंभसूची बादर अष्कायिक पर्याप्तोंकी विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणी है । जगश्रेणी बादर
वायुकायिक पर्याप्तोंकी विष्कंभसूचीसे संख्यातगुणी है । तसकायिक पर्याप्तोंका द्रव्य जगश्रेणीसे
असंख्यातगुणा है । त्रसकायिक अपर्याप्तोंका द्रव्य त्रसकायिक पर्याप्तोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा
है । त्रसकायिकोंका द्रव्य त्रसकायिक अपर्याप्तोंके द्रव्यसे विशेष अधिक है । बादर
वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका द्रव्य त्रसकायिकोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । बादर
निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंका द्रव्य बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंके द्रव्यसे
असंख्यातगुणा है । बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंका द्रव्य बादर निगोदप्रतिष्ठितोंसे असं-
ख्यातगुणा है । बादर अष्कायिक पर्याप्तोंका द्रव्य बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंके द्रव्यसे
असंख्यातगुणा है । जगप्रतर बादर अष्कायिक पर्याप्तोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । बादर
वायुकायिक पर्याप्तोंका द्रव्य जगप्रतरसे असंख्यातगुणा है । लोक बादर वायुकायिक
पर्याप्तोंके द्रव्यसे संख्यातगुणा है । लोकसे बादर तेजस्कायिक अपर्याप्तोंका द्रव्य
असंख्यातगुणा है । बादर तेजस्कायिकोंका द्रव्य बादर तेजस्कायिक अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष

१ प्रतिषु ' बादरणिगोदविपज्जत्त - ' इति पाठः ।

बादरवणप्फदिपत्तेयसरीरअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । बादरवणप्फइपत्तेयसरीरदव्वं विसेसाहियं । बादरणिगोदपदिट्ठिदअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । बादरणिगोदपदिट्ठिददव्वं विसेसाहियं । (बादरपुढविकाइयअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । बादरपुढविकाइयदव्वं विसेसाहियं ।) बादरआउअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । बादरआउकाइयदव्वं विसेसाहियं । बादरवाउअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । बादरवाउकाइयदव्वं विसेसाहियं । सुहुमतेउअपज्जत्तदव्वअसंखेज्जगुणं । तेउअपज्जत्तदव्वं विसेसाहियं । सुहुमपुढविअपज्जत्तदव्वं विसेसाहियं । पुढविअपज्जत्तदव्वं विसेसाहियं । (सुहुमआउअपज्जत्तदव्वं विसेसाहियं ।) आउअपज्जत्तदव्वं विसेसाहियं । सुहुमवाउअपज्जत्तदव्वं विसेसाहियं । (वाउअपज्जत्तदव्वं विसेसाहियं ।) सुहुमतेउपज्जत्ता संखेज्जगुणा । तेउपज्जत्तदव्वं विसेसाहियं । सुहुमपुढविपज्जत्ता विसेसाहिया । पुढविपज्जत्ता विसेसाहिया । सुहुमआउपज्जत्ता विसेसाहिया । आउपज्जत्ता

अधिक है । बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर अपर्याप्तोंका द्रव्य बादर तेजस्कायिक द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर जीवोंका द्रव्य बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक है । बादर निगोदप्रतिष्ठित अपर्याप्तोंका द्रव्य बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर जीवोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । बादर निगोदप्रतिष्ठित जीवोंका द्रव्य बादर निगोदप्रतिष्ठित अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक है । बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंका द्रव्य बादर निगोदप्रतिष्ठित अपर्याप्तोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । बादर पृथिवीकायिकोंका द्रव्य बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंके द्रव्यसे विशेष अधिक है । बादर अष्कायिक अपर्याप्तोंका द्रव्य बादर पृथिवीकायिक द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । बादर अष्कायिक जीवोंका द्रव्य बादर अष्कायिक अपर्याप्तोंके द्रव्यसे विशेष अधिक है । बादर वायुकायिक अपर्याप्तोंका द्रव्य बादर अष्कायिकोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । बादर वायुकायिकोंका द्रव्य बादर वायुकायिक अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक है । सूक्ष्म तेजस्कायिक अपर्याप्तोंका द्रव्य बादर वायुकायिक द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । तेजस्कायिक अपर्याप्तोंका द्रव्य सूक्ष्म तेजस्कायिक अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक है । सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंका द्रव्य तेजस्कायिक अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक है । पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंका द्रव्य सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक है । सूक्ष्म अष्कायिक अपर्याप्तोंका द्रव्य पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंके द्रव्यसे विशेष अधिक है । अष्कायिक अपर्याप्तोंका द्रव्य सूक्ष्म अष्कायिक अपर्याप्तोंके द्रव्यसे विशेष अधिक है । सूक्ष्म वायुकायिक अपर्याप्तोंका द्रव्य अष्कायिक अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक है । वायुकायिक अपर्याप्तोंका द्रव्य सूक्ष्म वायुकायिक अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक है । सूक्ष्म तेजस्कायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म वायुकायिक अपर्याप्त द्रव्यसे संख्यातगुणे हैं । तेजस्कायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म तेजस्कायिक पर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव तेजस्कायिक पर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं । पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं ।

विसेसाहिया । सुहुमवाउपज्जत्ता विसेसाहिया । वाउपज्जत्ता विसेसाहिया । सुहुमतेउ-
काइया विसेसाहिया । तेउकाइया विसेसाहिया । सुहुमपुडुविकाइया विसेसाहिया । पुढवि-
काइया विसेसाहिया । सुहुमआउकाइया विसेसाहिया । आउकाइया विसेसाहिया । सुहुम-
वाउकाइया विसेसाहिया । वाउकाइया विसेसाहिया । अकाइया अगंतगुणा । बादरणिगोद-
पज्जत्ता^१ अगंतगुणा । बादरवणप्फइपज्जत्ता विसेसाहिया । बादरणिगोदअपज्जत्ता असंखेज्ज-
गुणा । बादरवणप्फइअपज्जत्ता विसेसाहिया । बादरणिगोदा विसेसाहिया । बादरवणप्फइ-
काइया विसेसाहिया^१ । सुहुमवणप्फइअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । णिगोदअपज्जत्ता विसे-
साहिया । वणप्फइअपज्जत्ता विसेसाहिया । सुहुमवणप्फइपज्जत्ता संखेज्जगुणा । णिगोद-
पज्जत्ता विसेसाहिया । वणप्फइपज्जत्ता विसेसाहिया । सुहुमवणप्फइकाइया विसेसाहिया ।

सूक्ष्म अप्कायिक पर्याप्त जीव पृथिवीकायिक पर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं । अप्कायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म अप्कायिक पर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म वायुकायिक पर्याप्त जीव अप्कायिक पर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं । वायुकायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म वायुकायिक पर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म तेजस्कायिक जीव वायुकायिक पर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं । तेजस्कायिक जीव सूक्ष्म तेजस्कायिक द्रव्यसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव तेजस्कायिक द्रव्यसे विशेष अधिक हैं । पृथिवीकायिक जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिक द्रव्यसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म अप्कायिक जीव पृथिवीकायिक द्रव्यसे विशेष अधिक हैं । अप्कायिक जीव सूक्ष्म अप्कायिक द्रव्यसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म वायुकायिक जीव अप्कायिक द्रव्यसे विशेष अधिक हैं । वायुकायिक जीव सूक्ष्म वायुकायिक जीव द्रव्यसे विशेष अधिक हैं । अकायिक जीव वायुकायिक द्रव्यसे अनन्तगुणे हैं । बादर निगोद पर्याप्त जीव अकायिक जीवोंसे अनन्तगुणे हैं । बादर वनस्पति पर्याप्त जीव बादर निगोद पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । बादर निगोद अपर्याप्त जीव बादर वनस्पति पर्याप्त द्रव्यसे असंख्यातगुणे हैं । बादर वनस्पति अपर्याप्त जीव बादर निगोद अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं । बादर निगोद जीव बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं । बादर वनस्पतिकायिक जीव बादर निगोद द्रव्यसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिकायिक द्रव्यसे असंख्यातगुणे हैं । निगोद अपर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पति अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं । वनस्पति अपर्याप्त जीव निगोद अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म वनस्पति पर्याप्त जीव वनस्पति अपर्याप्त द्रव्यसे संख्यातगुणे हैं । निगोद पर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पति पर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं । वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव निगोद पर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म वनस्पति

१ प्रतिषु 'अपज्ज०' इति पाठः ।

२ आ-कप्रत्योः 'सुहुमवणप्फइ० विसे००' इति अधिकः पाठः ।

निगोदा विसेसाहिया । वणप्फइकाइया विसेसाहिया ।

एवं कायमग्गणा समत्ता ।

**जोगाणुवादेण पंचमणजोगि-तिण्णिवचिजोगीसु मिच्छाइट्ठी दव्व-
पमाणेण केवडिया ? देवाणं संखेज्जदिभागो ॥ १०३ ॥**

एत्थ तिण्हं चेव वचिजोगाणं संगहो किमट्ठो कदो ? ण एस दोसो । कुदो ?
वचिजोग-असच्चमोसवचिजोगेहि सह एदेसिं तिण्हं वचिजोगाणं दव्वालावं पडि समाणत्ता-
भावादो । समाणालावाणमेगजोगो भवदि, ण भिण्णालावाणं । देवाणं जाणि दव्व-काल-खेत्त-
पमाणानि पुव्वं परूविदानि तेसिं संखेज्जदिभागो एदेसिमट्ठण्हं रासीणं पमाणं हेदि ।
कुदो ? जदो एदे अट्ठ वि जोगा सण्णीणं चेव भवंति, णो असण्णीणं, तत्थ पडिसिद्धत्तादो ।
सण्णीसु वि पहाणा देवा चेव, सेसगदिसण्णीणं देवाणं संखेज्जदिभागत्तादो । तत्थ वि
देवेषु पहाणो कायजोगरासी, मण-वचिजोगरासीदो संखेज्जगुणत्तादो । तं पि कधं जाणिज्जदे ?

जीव वनस्पति पर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं । निगोद जीव सूक्ष्मवनस्पतिकायिक द्रव्यसे
विशेष अधिक हैं । वनस्पतिकायिक जीव निगोद जीवोंसे विशेष अधिक हैं ।

इसप्रकार कायमार्गणा समाप्त हुई ।

योगमार्गणाके अनुवादसे पांचा मनोयोगियों और तीन वचनयोगियोंमें
मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? देवोंके संख्यातवें भाग
हैं ॥ १०३ ॥

शंका— यहाँ तीन ही वचनयोगियोंका संग्रह किसलिये किया है ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, वचनयोगियों और अनुभय वचनयोगि-
योंके साथ इन तीन वचनयोगियोंकी द्रव्यालापके प्रति समानता नहीं पाई जाती है । समाना-
लापोंका ही एक योग होता है, भिन्नालापोंका नहीं । देवोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा
जो प्रमाण पहले कह आये हैं उसके संख्यातवें भाग इन आठ राशियोंका प्रमाण है । क्योंकि,
ये आठों योग संज्ञियोंके ही होते हैं असंज्ञियोंके नहीं, क्योंकि, असंज्ञियोंमें ये आठों
योग प्रतिषिद्ध हैं । संज्ञियोंमें भी प्रधान देव ही हैं, क्योंकि, शेष तीन गतिके संज्ञी
जीव देवोंके संख्यातवें भाग ही हैं । वहाँ देवोंमें भी प्रधान काययोगियोंकी राशि है, क्योंकि,
काययोगियोंका प्रमाण मनोयोगियों और वचनयोगियोंसे संख्यातगुणा है ।

शंका— यह कैसे जाना जाना है ?

१ मनोयोगिनो ×× मिथ्यादृष्टयोऽसंख्येयाः श्रेणयः प्रतरासंख्येयभागप्रमिताः । स. सि. १, ८.

२ प्रतिषु 'पहाण' इति पाठः ।

जोगद्रुप्पावहुगादो । तं जहा— 'सव्वत्थोवा मणजोगद्धा । वच्चिजोगद्धा संखेज्जगुणा । कायजोगद्धा संखेज्जगुणा त्ति ।' पुणो एदेसिमद्धाणं समासं काऊण तेण तिण्हं जोगाणं सण्णिरासिमोवड्डिय अप्पणो अद्धाहि पुध पुध गुणिदे मण-वच्चि-कायजोगरासीओ हवंति । तदो द्विदमेदं एदे अद्ध वि मिच्छाइड्डिरासीओ देवाणं संखेज्जदिभागो त्ति ।

सासणसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति ओघं ॥ १०४ ॥

पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागत्तं पडि ओघजीवेहि सह एदेसिं समाणत्तमत्थि त्ति ओघमिदि उत्तं । पज्जवड्डियणए पुण अवलंबिज्जमाणे तेहिंतो एदेसिं अत्थि महंतो भेदो । कुदो ? एदेसिमोघरासिस्स संखेज्जदिभागत्तादो । तं पि कथं णव्वदे ? पुव्वुत्तद्धप्पावहुगादो । सेसं सुगमं ।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति द्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ॥ १०५ ॥

समाधान—योगकालके अल्पबहुत्वसे यह जाना जाता है । वह इसप्रकार है— 'मनोयोगका काल सबसे रतोक है । वचनयोगका काल उससे संख्यातगुणा है । काययोगका काल वचनयोगके कालसे संख्यातगुणा है ।' अनन्तर इन कालोंका जोड़ करके जो फल हो उससे तीनों योगोंकी संज्ञी जीघराशिको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसे अपने अपने कालसे पृथक् पृथक् गुणित करने पर मनोयोगी, वचनयोगी और काययोगी जीघराशि होती है । इसलिये यह निश्चित हुआ कि ये आठ ही मिथ्यादृष्टि जीघराशियां देवोंके संख्यातवें भाग हैं ।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें पूर्वोक्त आठ योगवाले जीवोंका प्रमाण सामान्य प्ररूपणाके समान पर्योपमके असंख्यातवें भाग है ॥ १०४ ॥

पर्योपमके असंख्यातवें भागके प्रति ओघ जीवोंके साथ इन आठ जीघराशियोंकी समानता है, इसलिये सूत्रमें 'ओघ' ऐसा कहा । परंतु पर्यायार्थिक नयका अवलंबन करने पर तो सासादनादि संयतासंयतान्त गुणस्थानप्रतिपन्न ओघप्ररूपणासे गुणस्थानप्रतिपन्न इन आठ राशियोंमें महान् भेद है, क्योंकि, ये राशियां ओघराशिके संख्यातवें भाग हैं ।

शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—पूर्वोक्त योगकालके अल्पबहुत्वसे यह जाना जाता है । शेष कथन सुगम है ।

प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें

१ प्रतिषु 'जोगवदप्पा' इति पाठः ।

एत्थ ओघरासिणा संखेज्जत्तं पडि एदेसिं रासीणं समाणत्ते संते किमड्ढमोघमिदि
ण परूविदं सुत्ते ? ण, एत्थ अवलंबिदपज्जवड्डियणयत्तादो । सो वि एत्थ किमड्ढम-
वलंबिज्जदे ? जोगद्वप्पाबहुगमस्सिउण रासिविसेसपदुप्पायणद्वं । कधं जोगद्वप्पाबहुगमिदि
वुत्ते वुच्चदे— 'सच्चमणजोगद्व । मोसमणजोगद्व संखेज्जगुणा । सच्चमोसमण-
जोगद्व संखेज्जगुणा । असच्चमोसमणजोगद्व संखेज्जगुणा । मणजोगद्व विसेसाहिया ।
सच्चवचिजोगद्व संखेज्जगुणा । मोसवचिजोगद्व संखेज्जगुणा । सच्चमोसवचिजोगद्व
संखेज्जगुणा । असच्चमोसवचिजोगद्व संखेज्जगुणा । वचिजोगद्व विसेसाहिया । काय-
जोगद्व संखेज्जगुणा' ति ।

वचिजोगि-असच्चमोसवचिजोगीसु मिच्छाइटी दव्वपमाणेण केव-
डिया, असंखेज्जा ॥ १०६ ॥

पूर्वोक्त आठ जीवराशियां द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितनी हैं ? संख्यात हैं ॥ १०५ ॥

यहां पर संख्यातत्वकी अपेक्षा प्रमत्तादि ओघराशिके साथ इन राशियोंकी समानता
रहने पर सूत्रमें 'ओघं' ऐसा किसलिये नहीं कहा ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, यहां पर पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन लिया गया है,
अतः सूत्रमें 'ओघं' ऐसा नहीं कहा ।

शंका—वह पर्यायार्थिक नय भी यहां पर किसलिये ग्रहण किया गया है ?

समाधान—योगकालका आश्रय लेकर राशिविशेषका प्रतिपादन करनेके लिये
यहां पर पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन लिया गया है ।

योगकालके आश्रयसे अल्पबहुत्व किसप्रकार है, ऐसा पूछने पर आचार्य कहते हैं—
सत्य मनोयोगका काल सबसे स्तोक है । मृषामनोयोगका काल उससे संख्यातगुणा है ।
उभयमनोयोगका काल मृषामनोयोगके कालसे संख्यातगुणा है । अनुभयमनोयोगका काल
उभय मनोयोगके कालसे संख्यातगुणा है । इससे मनोयोगका काल विशेष अधिक है । सत्य
वचनयोगका काल मनोयोगके कालसे संख्यातगुणा है । मृषा वचनयोगका काल सत्य वचन-
योगके कालसे संख्यातगुणा है । उभय वचनयोगका काल मृषा वचनयोगके कालसे संख्यात-
गुणा है । अनुभय वचनयोगका काल उभय वचनयोगके कालसे संख्यातगुणा है । वचनयोगका
काल अनुभय वचनयोगके कालसे विशेष अधिक है । काययोगका काल वचनयोगके कालसे
संख्यातगुणा है ।

वचनयोगियों और असत्यमृषा अर्थात् अनुभय वचनयोगियोंमें मिध्यादृष्टि जीव
द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं ॥ १०६ ॥

१ अंतोपुहुत्तमेत्ता चउमणजोगा कमेण संखगुणा । तज्जोगो सामणं चउवचिजोगा तदो दु संखगुणा ॥
तज्जोगो सामणं काओ संखाहदो तिजोगमिदं । गो. जी. २६२-२६३.

एत्थ मिच्छाइट्ठी इदि एगवयणणिदेसो, केवडिया इदि बहुवयणणिदेसो; कधमेदाणं भिष्णाहियरणाणमेयद्वुपउत्ती ? ण, एयाणेयाणमणोण्णाजहवुत्तीणमेयद्वुत्ताविरोहा । सेसं सुगमं । असंखेज्जा इदि सामण्णेण णवविहस्सासंखेज्जस्स गहणे पप्तत्ते अणिच्छिदा-संखेज्जपडिसेहद्वुत्तरसुत्तं भणदि—

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि—उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ १०७ ॥

एदं सुत्तमइसुगमं । अणिच्छिदासंखेज्जासंखेज्जवियप्पपडिसेहणिमित्तमुत्तरसुत्ता-वदारो भवदि—

खेत्तेण वचिचोगि^१असच्चमोसवचिजोगीसु मिच्छाइट्ठीहि पदरम-वहिरदि अंगुलस्स संखेज्जदिभागवग्गपडिभागेण ॥ १०८ ॥

वचिजोगो असच्चमोसवचिजोगो च वीइंदियप्पहुडीणमुवरिमाणं जीवसमासाणं भासापज्जत्तीए पज्जत्तयाणं भवदि, तेण वि-ति-चउरिंदिय-असप्पिणपंचिंदियपज्जत्तरासीओ

शंका—इस सूत्रमें 'मिच्छाइट्ठी' यह एकवचन निर्देश है, और 'केवडिया' यह बहुवचन निर्देश है। अतएव भिन्न भिन्न अधिकरणवाले इन दोनोंकी एकार्थमें कैसे प्रवृत्ति हो सकती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, एक और अनेक अन्योन्य अजहद्वृत्ति हैं, इसलिये इन दोनोंकी एकार्थमें प्रवृत्ति होनेमें कोई विरोध नहीं आता है।

शेष कथन सुगम है। 'असंख्यात हैं' इसप्रकार सामान्य वचन देनेसे नौ प्रकारके असंख्यातोंका ग्रहण प्राप्त होता है, अतएव अनिच्छित असंख्यातोंके प्रतिषेध करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

कालकी अपेक्षा वचनयोगी और अनुभय वचनयोगी जीव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ १०७ ॥

यह सूत्र अतिसुगम है। अनिच्छित असंख्यातासंख्यातरूप विकल्पके प्रतिषेध करनेके लिये आगेके सूत्रका अवतार हुआ है—

क्षेत्रकी अपेक्षा वचनयोगियों और अनुभय वचनयोगियोंमें मिथ्यादृष्टि जीवोंके द्वारा अंगुलके संख्यातवें भागके वर्गरूप प्रतिभागसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ १०८ ॥

द्वीन्द्रियोंसे लेकर ऊपरके संपूर्ण जीवसमासोंमें भाषापर्याप्तिले पर्याप्त हुए जीवोंके वचनयोग और अनुभय वचनयोग पाया जाता है, इसलिये द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय

१ प्रतिषु 'मणदि' इति पाठः ।

२ योगानुवादेन XX वाग्योगिनद्वय मिथ्यादृष्टयोऽसंख्येयाः श्रेणयः प्रतरासंख्येयभागप्रमिताः । स. सि. १, ८.

एगडुं करिय वच्चिजोग-कायजोगद्वासमासेण खंडिय एगखंडं वच्चिजोगद्वाए गुणिय पंचि-
दियअसच्चमोसवच्चिजोगरासिं पक्खित्ते असच्चमोसवच्चिजोगरासी होदि । एत्थ सच्चदि-
सेसवच्चिजोगरासिं पक्खित्ते वच्चिजोगरासी होदि । अद्वासमासस्स आवलियाए गुणगारत्तेण
ट्टुविदसंखेज्जरूवेहिंतो पदरंगुलस्स हेट्ठा भागहारत्तेण ट्टुविदसंखेज्जरूवाणि जेण संखेज्ज-
गुणाणि तेण पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागो भागहारो भवदि ।

सेसाणं मणिजोगिभंगो' ॥ १०९ ॥

जधा मणजोगरासी ओघसासणादीणं संखेज्जदिभागो, तथा वच्चिजोगि-असच्चमोस-
वच्चिजोगीसु सासणादओ ओघसासणादीणं संखेज्जदिभागो । सेसं सुगमं ।

संपहि अप्पाबहुगबलेण पुच्चिल्लसुत्तेसु वुत्तरासीणमवहारकाला परूविज्जंते । तं
जहा— संखेज्जरूवेहि सूचिअंगुले भागे हिदे लद्धे वग्गिदे वच्चिजोगिअवहारकालो होदि ।
तम्हि संखेज्जरूवेहि खंडिय लद्धं तम्हि चैव पक्खित्ते असच्चमोसवच्चिजोगिअवहारकालो

और असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवराशिको एकत्रित करके और उसे वचनयोग और काययोगके
कालके जोड़रूप प्रमाणसे खंडित करके जो एक भाग लब्ध आवे उसे वचनयोगके कालसे गुणित
करके जो प्रमाण हो उसमें पंचेन्द्रिय अनुभय वचनयोगी राशिके मिला देने पर अनुभय
वचनयोगी जीवराशि होती है । इसमें सत्यवचनयोगी जीवराशि आदि शेष वचनयोगी
जीवराशियोंके मिला देने पर वचनयोगी जीवराशि होती है । यहाँ पर अद्वासमासके लिये
आवलीके गुणकाररूपसे स्थापित संख्यातसे प्रतरांगुलके नीचे भागहाररूपसे स्थापित
संख्यात चूँकि संख्यातगुणा है, इसलिये प्रकृतमें प्रतरांगुलका संख्यातवां भाग भागहार है ।

सासादनसम्यग्दृष्टि आदि शेष गुणस्थानवर्ती वचनयोगी और अनुभय वचन-
योगी जीव सासादनसम्यग्दृष्टि आदि मनोयोगिराशिके समान हैं ॥ १०९ ॥

जिसप्रकार मनोयोगी जीवराशि ओघसासादनसम्यग्दृष्टि आदिके संख्यातवें भाग है,
उसीप्रकार वचनयोगियों और अनुभय वचनयोगियोंमें सासादनसम्यग्दृष्टि आदि जीवराशि
ओघ सासादनसम्यग्दृष्टि आदिके संख्यातवें भाग है । शेष कथन सुगम है ।

अब अल्पवहुत्वके बलसे पूर्वोक्त सूत्रोंमें कही गई राशियोंके अवहारकाल कहे
जाते हैं । वे इसप्रकार हैं— संख्यातसे सूच्यंगुलके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसके
वर्गित करने पर वचनयोगियोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे खंडित करके जो
लब्ध आवे उसे इसी वचनयोगियोंके अवहारकालमें मिला देने पर अनुभय वचनयोगियोंका
अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर वैक्रियिक काययोगियोंका अवहारकाल

होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे वेउव्वियकायजोगिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सच्चमोसवच्चिजोगिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे मोसवच्चिजोगिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सच्चवच्चिजोगिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे मणजोगिअवहारकालो होदि । तं हि संखेज्जरूवेहि खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते असच्चमोसमणजोगिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सच्चमोसमणजोगिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे मोसमणजोगिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सच्चमणजोगिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे वेउव्वियमिस्सअवहारकालो होदि । किं कारणं ? जेण अंतो-मुहुत्तमेत्तवेउव्वियमिस्सुवक्कमणकालादो संखेज्जवस्साउवदेवाणमुवक्कमणकालो संखेज्जगुणो तेण देवाणं संखेज्जदिभागो वेउव्वियमिस्सरासी होदि । हंतो वि सच्चमणरासिस्स संखेज्जदिभागो । कुदो ? सच्चमणजोगिद्वोवट्ठिदसयलद्दासमासअंतोमुहुत्तमेत्तद्वाए आवलियगुणगारसंखेज्जरूवेहिंतो वेउव्वियमिस्सद्वोवट्ठिदसंखेज्जवस्सेसु संखेज्जगुणरूवोवलंभादो ।

संपहि ओघअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालं संखेज्जरूवेहि खंडिय लद्धं तम्हि चेव

होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर उभय वचनयोगियोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर मृषा वचनयोगियोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर सत्यवचनयोगियोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर मनयोगियोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे खंडित करके जो लब्ध आवे उसे इसी मनयोगियोंके अवहारकालमें मिला देने पर अनुभय मनयोगियोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर उभय मनयोगियोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर मृषा मनयोगियोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर सत्यमनयोगियोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंका अवहारकाल होता है ।

शंका—इसका क्या कारण है ?

समाधान—चूंकि अन्तर्मुहूर्तमात्र वैक्रियिकमिश्रके उपक्रमणकालसे संख्यात वर्षकी आयुवाले देवोंका उपक्रमणकाल संख्यातगुणा है, इससे तो यह सिद्ध हुआ कि वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंकी राशि देवोंके संख्यातवें भाग है, पर वह वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंकी राशि देवोंके संख्यातवें भाग होते हुए भी सत्यमनयोगियोंके प्रमाणके संख्यातवें भाग है, क्योंकि सत्यमनयोगके कालसे सर्व कालके जोड़रूप अन्तर्मुहूर्त कालके अपवर्तित करने पर जो लब्ध आवे उसके लिये आवलीके गुणकार संख्यातसे वैक्रियिकमिश्रके कालसे अपवर्तित संख्यात वर्षोंमें संख्यातगुणी संख्या पाई जाती है ।

अब ओघ असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको संख्यातसे खंडित करके जो

पक्खित्ते कायजोगिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदि-
भाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते वेउच्चियअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि ।
तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे वचिजोगिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तं हि संखेज्ज-
रूवेहि खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते असच्चमोसवचिजोगिअसंजदसम्माइट्ठिअवहार-
कालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सच्चमोसवचिजोगिअसंजदसम्माइट्ठिअवहार-
कालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे मोमवचिजोगिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो
होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सच्चवचिजोगिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि ।
तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे मणजोगिअवहारकालो होदि । तं हि संखेज्जरूवेहि
खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते असच्चमोसमणजोगिअवहारकालो होदि । (तम्हि
संखेज्जरूवेहि गुणिदे सच्चमोसमणजोगिअवहारकालो होदि ।) तम्हि संखेज्जरूवेहि
गुणिदे मोसमणजोगिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सच्चमणजोगि-
अवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे ओरालियकायजोगि-

लब्ध आवे उसे उसी ओष असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालमें मिला देने पर काययोगी
असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इस काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके
अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध
आवे उसे उसी काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालमें मिला देने पर
वैक्रियिककाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इस वैक्रियिककाययोगी
असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर वचनयोगी असंयतसम्य-
ग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इस वचनयोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको
संख्यातसे खंडित करके जो लब्ध आवे उसे उसी वचनयोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहार-
कालमें मिला देने पर अनुभय वचनयोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इस
अनुभय वचनयोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर उभय-
वचनयोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इस उभय वचनयोगी असंयतसम्य-
सम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर मृषावचनयोगी असंयतसम्य-
ग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर सत्यवचनयोगी असंयत-
ग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इस सत्यवचनयोगियोंके अवहारकालको संख्यातसे गुणित
करने पर मनयोगियोंका अवहारकाल होता है । इस मनयोगियोंके अवहारकालको संख्यातसे
खंडित करके जो लब्ध आवे उसे उसी मनयोगियोंके अवहारकालमें मिला देने पर अनुभय मनो-
योगियोंका अवहारकाल होता है । इस अनुभय मनोयोगियोंके अवहारकालको संख्यातसे गुणित
करने पर उभयमनोयोगियोंका अवहारकाल होता है । इस उभय मनोयोगियोंके अवहारकालको
संख्यातसे गुणित करने पर मृषामनोयोगियोंका अवहारकाल होता है । इस मृषामनोयोगियोंके
अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर सत्यमनोयोगियोंका अवहारकाल होता है । इस
सत्यमनोयोगियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर औदारिक

असंजदसम्माइड्ढिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे वेउ-
 व्वियमिस्सकायजोगिअसंजदसम्माइड्ढिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदि-
 भाएण गुणिदे कम्मइयकायजोगिअसंजदसम्माइड्ढिअवहारकालो होदि । एवं सम्मामिच्छा-
 इड्ढिस्स । णवरि वेउव्वियमिस्सं कम्मइयं च छोड्ढिय वत्तव्वं । ओघसासणसम्माइड्ढिअव-
 हारकालं संखेज्जरूवेहि खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते कायजोगिसासणसम्माइड्ढि-
 अवहारकालो होदि । तं हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिय लद्धं तम्हि चेव
 पक्खित्ते वेउव्वियकायजोगिसासणसम्माइड्ढिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि
 गुणिदे वच्चिजोगिसासणसम्माइड्ढिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि भागे हिदे
 लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते असच्चमोसवच्चिजोगिसासणसम्माइड्ढिअवहारकालो होदि । तम्हि
 संखेज्जरूवेहि गुणिदे सच्चमोसवच्चिजोगिअवहारकालो होदि । एवं मोसवच्चिजोगि-सच्चवचि-
 जोगिअवहारकालाणं जहाकमेण संखेज्जरूवेहि गुणेयव्वं । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे
 मणजोगिसासणसम्माइड्ढिअवहारकालो होदि । तं हि संखेज्जरूवेहि खंडिय लद्धं तम्हि चेव
 पक्खित्ते असच्चमोसमणजोगिसासणसम्माइड्ढिअवहारकालो होदि । तदो सच्चमोसमण-

काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे
 गुणित करने पर वैक्रियिकामिश्रकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे
 आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर कर्मणकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका
 अवहारकाल होता है । इसीप्रकार सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका भी अवहारकाल करना चाहिये । परंतु
 इतनी विशेषता है कि वैक्रियिकामिश्रकाययोग और कर्मणकाययोगको छोड़कर ही कथन
 करना चाहिये । ओघ सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको संख्यातसे खंडित करके
 जो लब्ध आवे उसे उसी ओघ सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालमें मिला देने पर
 काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे
 खंडित करके जो लब्ध आवे उसे उसी काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालमें
 मिला देने पर वैक्रियिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे
 संख्यातसे गुणित करने पर वचनयोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे
 संख्यातसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी वचनयोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके
 अवहारकालमें मिला देने पर अनुभय वचनयोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है ।
 इसे संख्यातसे गुणित करने पर उभय वचनयोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका अवहारकाल होता
 है । इसीप्रकार मृषावचनयोगी और सत्यवचनयोगी जीवोंका अवहारकाल लानेके लिये यथाक्रमसे
 संख्यातसे गुणित करना चाहिये । सत्यवचनयोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको संख्या-
 तसे गुणित करने पर मनोयोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे
 खंडित करके जो लब्ध आवे उसे इसी मनोयोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालमें
 मिला देने पर अनुभय मनोयोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसके आगे

जोगि-मोसमणजोगि-सच्चमणणं जहाकमेण संखेज्जरूवेहिं गुणिज्जदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे ओरालियकायजोगिसासणसम्माइड्डिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे ओरालियमिस्ससासणसम्माइड्डिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे वेउच्चियमिस्सजोगिसासणसम्माइड्डिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे कम्मइयसासणसम्माइड्डिअवहारकालो होदि । एवं संजदासंजदाणं । णवरि ओघावहारकालं संखेज्जरूवेहिं खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते ओरालियकायजोगिसंजदासंजदाणं अवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहिं गुणिदे वच्चिजोगिसंजदासंजदअवहारकालो होदि । सेसं पुवं व वत्तवं । पमत्तादीणं वुच्चदे । मणजोग-वच्चिजोग-कायजोगद्वाणं समासेण अप्पणो रासिम्हि भागे हिदे लद्धं तिप्पडिरासिं काऊण पुणो अप्पणो अद्दाहि गुणिदे एकेकम्हि गुणद्वाणे मण-वच्चि-कायजोगरासीओ हवंति । पुणो सच्चमोस-असच्चमोसमणजोगद्वाणं समासेण मणजोगरासिं खंडिय लद्धं च दुप्पडिरासिं काऊण अप्पणो अद्दाहि गुणिदे सच्चमोस-

उभयमनोयोगी, मृषामनोयोगी और सत्यमनोयोगी जीवोंका अवहारकाल लानेके लिये यथाक्रमसे संख्यातसे गुणित करना चाहिये । सत्यमनोयोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर औदारिककाययोगी सासादन-सम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर औदारिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर वैक्रियिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर कर्मणकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसीप्रकार संयतासंयत वचनयोगी, मनोयोगी और काययोगियोंका अवहारकाल जानना चाहिये । यहाँ इतनी विशेषता है कि संयतासंयत ओघ अवहारकालको संख्यातसे खंडित करके जो लब्ध आवे उसे उसी संयतासंयत ओघ अवहारकालमें मिला देने पर औदारिककाययोगी संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर वचनयोगी संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है । शेष कथन पहलेके समान करना चाहिये । अब प्रमत्तसंयत आदिका द्रव्यप्रमाण कहते हैं— मनोयोग, वचनयोग और काययोगके कालके जोड़से अपने अपने गुणस्थानसंबन्धी राशिमें भाग देने पर जो लब्ध आवे उसकी तीन प्रतिराशियां करके पुनः उन्हें अपने अपने कालसे गुणित कर देने पर एक एक गुणस्थानमें मनोयोगी, वचनयोगी और काययोगियोंकी राशियां होती हैं । पुनः उभय मनोयोग और अनुभय मनोयोगके कालोंके जोड़से मनोयोगी जीवराशिको खंडित करके जो लब्ध आवे उसकी दो प्रतिराशियां करके अपने अपने कालसे गुणित करने पर उभय

१ प्रतिषु ' सच्चमोस- ' इति पाठः ।

असच्चमोसमणजोगरासीओ हवंति । एवं वचिजोगरासिस्स वि वत्तव्वं ।

कायजोगि-ओरालियकायजोगीसु मिच्छाइट्ठी मूलोव्वं ॥ ११० ॥

एदे दो वि रासीओ अणंता । अणंताणंताहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि ण अवहिरंति कालेण । खेत्तेण अणंताणंता लोगा इदि वुत्तं होदि । सेसं सुगमं ।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि ति जहा मणजोगि-भंगो ॥ १११ ॥

एदं सुत्तं सुगमं । एत्थ धुवरासिविहाणं वुच्चदे । तं जहा— सगुणपडिवण्णमण-जोगि-वचिजोगिरासिं सिद्ध-अजोगिरासिं च कायजोगिभजिदं एदेसिं वगं च सव्वजीव-रासिम्हि पक्खित्ते कायजोगिधुवरासी होदि । तं पडिरासिं काऊण तत्थेकरासिम्हि संखेज्जरूवेहि भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते ओरालियकायजोगिधुवरासी होदि ।

मनोयोगी और अनुभय मनोयोगी जीवराशियां होती हैं । इसीप्रकार वचनयोगी जीवराशिका भी कथन करना चाहिये ।

काययोगियों और औदारिककाययोगियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव सामान्य प्ररूपणाके समान हैं ॥ ११० ॥

उपर्युक्त ये दोनों भी राशियां अनन्त हैं । कालकी अपेक्षा काययोगी और औदारिक-काययोगी मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तानन्त अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत नहीं होते हैं और क्षेत्रकी अपेक्षा अनन्तानन्त लोकप्रमाण हैं, यह इस कथनका तात्पर्य है । शेष कथन सुगम है ।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थानतक काययोगी और औदारिककाययोगी जीव मनोयोगियोंके समान हैं ॥ १११ ॥

यह सूत्र सुगम है । अब यहां पर धुवराशिकी विधिका कथन करते हैं । वह इसप्रकार है— गुणस्थानप्रतिपन्न मनोयोगिराशि, वचनयोगिराशि, सिद्धराशि और अयोगि-राशिको तथा इन चारों राशियोंके वर्गमें काययोगिराशिका भाग देने पर जो लब्ध आवे उसे सर्व जीवराशिमें मिला देने पर काययोगियोंकी धुवराशि होती है । अनन्तर इसकी प्रतिराशि करके उनमेंसे एक राशिमें संख्यातका भाग देने पर जो लब्ध आवे उसे उसी धुवराशिमें मिला देने पर औदारिककाययोगियोंकी धुवराशि होती है । सासादनसम्यग्दृष्टि

१ काययोगिषु मिथ्यादृष्टयोऽनन्तामन्ताः । स. सि. १, ८. तदूपा संसारी एकजोगा इ । गो. जी. १६१.

सासणादीणं सग-सगअवहारकाले संखेज्जरूवेहि' खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते काय-जोगिसासणादिगुणपडिवण्णाणं अवहारकाला भवंति । एदे अवहारकाले आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे ओरालियकायजोगिसासणादीणमवहारकाला भवंति । कुदो ? तिरिक्ख-मणुस्सगुणपडिवण्णरासीणं देवगुणपडिवण्णरासिस्स असंखेज्जदिभागत्तादो । संजदा-संजदाणं पुण कायजोगिअवहारकालो चेव ओरालियकायजोगिअवहारकालो होदि, तत्थ तच्चदिरित्तकायजोगाभावादो ।

ओरालियमिस्सकायजोगीसु मिच्छाइट्ठी मूलोघं ॥ ११२ ॥

एदं पि सुत्तं सुगमं । एत्थ धुवरासी उच्चदे । ओरालियकायजोगिधुवरासिं पुच्चं परूविदं संखेज्जरूवेहिं गुणिदे ओरालियमिस्सकायजोगिधुवरासी होदि । कुदो ? सुहुमे-हंदियअपज्जत्तरासीए पज्जत्तरासिस्स संखेज्जदिभागत्तादो । तं जहा— तिरिक्ख-मणुस-अपज्जत्तद्वादो पज्जत्तद्वा संखेज्जगुणा । ताणमद्वाणं समासेण तिरिक्खरासिं खंडिय

आदि गुणस्थानोंके अपने अपने अवहारकालको संख्यातसे खंडित करके जो लब्ध आवे उसे उसी सामान्य अवहारकालमें मिला देने पर काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि आदि गुणस्थान-प्रतिपन्न जीवोंके अवहारकाल होते हैं । इन अवहारकालोंको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर औदारिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि आदि जीवोंके अवहारकाल होते हैं, क्योंकि, गुणस्थानप्रतिपन्न तिर्यंच और मनुष्य राशियां गुणस्थानप्रतिपन्न देवराशिके असंख्यातवें भागमात्र हैं । औदारिककाययोगकी अपेक्षा संयतासंयतोंका अवहारकाल ही औदारिककाययोगियोंका अवहारकाल है, क्योंकि, संयतासंयत गुणस्थानमें औदारिककाय-योगको छोड़कर और दूसरा कोई काययोग नहीं पाया जाता है ।

औदारिकमिश्रकाययोगियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥११२॥

यह सूत्र भी सुगम है । अब यहां धुवराशिका कथन करते हैं— पहले जो औदारिक काययोगियोंकी धुवराशि कह आये हैं उसे संख्यातसे गुणित करने पर औदारिकमिश्रकाय-योगियोंकी धुवराशि होती है, क्योंकि, सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त राशि पर्याप्त राशिके संख्यातवें भागमात्र है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— तिर्यंच और मनुष्योंके अपर्याप्त कालसे पर्याप्त काल संख्यातगुणा है । पुनः उन कालोंके जोड़से तिर्यंच राशिको खंडित करके

१ प्रतिपु ' संखेज्जरूवे' इति पाठः ।

२ कम्मोरालियमिस्सयओरालद्धासु संविदअणता । कम्मोरालियमिस्सयओरालियजोगिणो जीवा । समय-सयसंखावलिसंखगुणावलिसमासहिदरासी । सगगुणगुणिदे धावो असंखसंखाहदो कमसो ॥ गो. जी. २६४-२६५.

लद्धमपज्जत्तद्वाए गुणिदे ओरालियमिस्सरासी हवदि । तमद्वाए गुणगारेण गुणिदे ओरालियकायजोगरासी हवदि । तेण ओरालियकायजोगरासीदो ओरालियमिस्सकायजोगरासी संखेज्जगुणहीणो ।

सासणसम्माइट्ठी ओघं ॥ ११३ ॥

सासणसम्माइट्ठिणो देव-णेरइया जेण तिरिक्ख-मणुस्सेसु उववज्जमाणा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता लब्भंति तेण एदेसिं पमाणपरूवणाए ओघभंगो हवदि । एदेसिमवहारकालो बुच्चदे । तं जहा— ओरालियकायजोगिसासणअवहारकालमावलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे ओरालियमिस्सकायजोगिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । कुदो ? देव-णेरइएहिंतो तिरिक्ख-मणुस्सेसु उप्पज्जमाणरासिणो पुव्वट्ठिदरासिस्स असंखेज्जदिभागत्तादो ।

असंजदसम्माइट्ठी सजोगिकेवली दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ॥ ११४ ॥

देव णेरइयसम्माइट्ठिणो मणुसेसु उववज्जमाणा संखेज्जा चव लब्भंति, मणुसपज्जत्तरासिस्स अण्णहा असंखेज्जत्तप्पसंगा । (ओरालियमिस्सकायजोगग्ग्हि सुत्ताविरुद्धेण

जो लब्ध आवे उसे अपर्याप्त कालसे गुणित कर देने पर औदारिकमिश्रकाययोगी राशि होती है । इस औदारिकमिश्रकाययोगी जीवराशिको औदारिककाययोगके कालके गुणकरसे गुणित कर देने पर औदारिककाययोगीराशि होती है । इसलिये औदारिककाययोगी जीवराशिसे औदारिकमिश्रकाययोगी जीवराशि संख्यातगुणी हीन है, यह सिद्ध हुआ ।

औदारिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीव सामान्य प्ररूपणाके समान हैं ॥ ११३ ॥

चूंकि तिर्यंच और मनुष्योंमें उत्पन्न होते हुए सासादनसम्यग्दृष्टि देव और नारकी जीव पक्षोपमके असंख्यातवें भाग पाये जाते हैं, इसलिये औदारिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके प्रमाणकी प्ररूपणा सामान्य प्ररूपणाके समान होती है । अब इनका अवहारकाल कहते हैं । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— औदारिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर औदारिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है, क्योंकि, देव और नारकियोंमेंसे तिर्यंच और मनुष्योंमें उत्पन्न होनेवाली राशियां पहले स्थित राशिके असंख्यातवें भागमात्र होती हैं ।

असंयतसम्यग्दृष्टि और सयोगिकेवली औदारिकमिश्रकाययोगी जीव कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ ११४ ॥

सम्यग्दृष्टि देव और नारकी जीव मनुष्योंमें उत्पन्न होते हुए संख्यात ही पाये जाते हैं । यदि ऐसा न माना जाय तो मनुष्य पर्याप्त राशिको असंख्यातपनेका प्रसंग आ जाता है ।

आइरिओवएसेण' सजोगिकेवलिणो चत्तालीसं हवंति । तं जहा— क्वाडे आरुहंता वीस २०, ओदरंता वीसेत्ति २० ।)

वेउव्वियकायजोगीसु मिच्छाइद्धी दव्वपमाणेण केवडिया, देवाणं संखेज्जदिभागूणो ॥ ११५ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो बुच्चदे । देवाणं जो रासीं अप्पणो संखेज्जदिभाएण परिहीणो वेउव्वियकायजोगिमिच्छाइद्धीणं पमाणं होदि । कुदो ? देवणेइयरासिमेगट्टं करिय मण-वच्चिकायजोगद्रासमासेण खंडिय लद्धं तिप्पडिरासिं काऊण अप्पणो अद्धहि गुणिदे सग-सगरासीओ हवंति । जेण मण-वच्चिजोगरासीओ देवाणं संखेज्जदिभागो हवंति,

विशेषार्थ— असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें औदारिकमिश्रकाययोग तिर्यंच और मनुष्य दोनोंमें पाया जाता है । फिर भी जो सम्यग्दृष्टि जीव मरकर तिर्यंचोंमें उत्पन्न होते हैं वे मनुष्य ही होते हैं, अतएव ऐसे उत्पन्न होनेवाले जीवोंका प्रमाण स्वल्प ही रहेगा । तथा मनुष्य-गतिसे जो जीव सम्यक्त्वके साथ मनुष्योंमें उत्पन्न होंगे उनका भी प्रमाण स्वल्प ही रहेगा । अब रह गई नरक और देवगतिकी बात, सो इन दोनों गतियोंसे सम्यग्दृष्टि मरकर मनुष्योंमें ही उत्पन्न होते हैं । किन्तु पर्याप्त मनुष्योंका प्रमाण संख्यात ही है । अतएव नरक और देवगतिसे मरकर मनुष्योंमें होनेवाले सम्यग्दृष्टि जीव संख्यात ही उत्पन्न होंगे, अधिक नहीं । इसलिये औदारिकमिश्रकाययोगी सम्यग्दृष्टियोंका प्रमाण संख्यात ही होगा, अधिक नहीं, यह सिद्ध हो जाता है ।

सूत्रके अविरोद्ध आचार्योंके उपदेशानुसार औदारिकमिश्रकाययोगमें सयोगिकेवली जीव चालीस होते हैं । इसका स्पर्शीकरण इसप्रकार है— कपाट समुद्धातमें आरोहण करनेवाले औदारिकमिश्रकाययोगी वीस और उतरते हुए वीस होते हैं ।

वैक्रियिककाययोगियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? देवोंके संख्यातवें भाग कम हैं ॥ ११५ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं—अपनी अपनी राशिके संख्यातवें भागसे न्यून देवोंकी जो राशि है उतना वैक्रियिककाययोगी मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण है, क्योंकि, देव और नारकियोंकी राशिको एकत्रित करके मनोयोग, वचनयोग और काययोगके कालके जोड़से खंडित करके जो लब्ध आवे उसकी तीन प्रतिराशियां करके अपने अपने कालसे गुणित करने पर अपनी अपनी राशियोंका प्रमाण होता है । चूंकि मनोयोगी जीवराशि और वचनयोगी जीव-

१ प्रतिषु '—ओवएस' इति पाठः ।

२ सुरणिरयकायजोगा वेशुव्वियकायजोगा हु ॥ गी. जी. २६९.

३ प्रतिषु ' रासीओ' इति पाठः ।

तेण वेउव्वियकायजोगिमिच्छाइट्टिरासिपमाणं संखेज्जदिभागपरिहीणदेवरासिणा समाणं भवदि ।

एत्थ अवहारकालो उच्चदे । देव-णेरइयमिच्छाइट्टिरासिसमासम्मि मण-वचि-वेउव्विय-मिस्सकाय-कम्मइयकायजोगिदेव-णेरइयमिच्छाइट्टिरासिसमासेण भागे हिदे संखेज्जरूवाणि लब्भंति । तेहि रूवूणेहि संखेज्जपदरंगुलमेत्तं देव-णेरइयसमासअवहारकालं खंडिय लद्धं तम्मि चेव पक्खित्ते वेउव्वियकायजोगिमिच्छाइट्टिअवहारकालो होदि ।

सासणसम्माइट्टी सम्मामिच्छाइट्टी असंजदसम्माइट्टी द्ववपमाणेण केवडिया, ओघं ॥ ११६ ॥

देवगुणपडिवण्णाणं रासिपमाणं अप्पण्णो संखेज्जदिभाएण ऊणं वेउव्वियकाय-जोगिगुणपडिवण्णरासिपमाणं होदि । तं जहा— देव-णेरइयगुणपडिवण्णरासिम्मि अप्पण्णो मण-वचि-वेउव्वियमिस्स-कम्मइयरासीहि भागे हिदे तत्थ लद्धसंखेज्जरूवेहि रूवूणेहि देव-णेरइयसमासअवहारकालं खंडिय लद्धं तम्मि चेव पक्खित्ते वेउव्वियकायजोगिगुणपडिवण्णाणमवहारकाला भवंति ।

राशि देवोंके संख्यातवें भाग है, इसलिये वैक्रियिककाययोगी मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण संख्यातवें भाग कम देवराशिके समान होता है ।

अब यहाँ पर अवहारकालका कथन करते हैं— देव मिथ्यादृष्टिराशि और नारक मिथ्यादृष्टिराशिका जितना योग हो उसे मनोयोगी, वचनयोगी, वैक्रियिकमिश्रकाययोगी और कार्मणकाययोगी देव और नारकी मिथ्यादृष्टि राशिके योगसे भाजित करने पर संख्यात लब्ध आते हैं । एक कम उस संख्यातसे संख्यात प्रतरांगुलमाल देव और नारकियोंके जोड़रूप अवहारकालको खंडित करके जो लब्ध आवे उसे उन्हीं दोनोंके जोड़रूप अवहारकालमें मिला देने पर वैक्रियिककाययोगी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है ।

सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि वैक्रियिककाय-योगी जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? ओघप्ररूपणके समान हैं ॥ ११६ ॥

गुणस्थानप्रतिपन्न देवोंकी राशिका जो प्रमाण है, अपनी अपनी उस राशिमेंसे संख्यात भाग न्यून करने पर वैक्रियिककाययोगी गुणस्थानप्रतिपन्न अपनी अपनी राशिका प्रमाण होता है । वह इसप्रकार है— गुणस्थानप्रतिपन्न देव और नारक राशिमें अपनी अपनी मनोयोगी, वचनयोगी, वैक्रियिकमिश्रकाययोगी और कार्मणकाययोगी जीवोंकी राशियोंका भाग देने पर वहाँ जो संख्यात लब्ध आवे उसमें एक कम करके शेषसे देव और नारकियोंके योग-रूप अवहारकालको खंडित करके जो लब्ध आवे उसे उसी देव और नारकियोंके मिले हुए अव-हारकालमें मिला देने पर वैक्रियिककाययोगी गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके अवहारकाल होते हैं ।

वेउव्वियमिस्सकायजोगीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया,
देवाणं संखेज्जदिभागो ॥ ११७ ॥

एदस्स सुत्तस्स वक्खणं वुच्चदे । संखेज्जवस्साउअवमंतरआवलियाए असंखेज्जदि-
भागमेत्तउवक्कमणकालेण^१ जदि^२ देवरासिसंचओ लब्भदि, तो एदम्हादो संखेज्जगुणहीण-
वेउव्वियमिस्सउवक्कमणकालमिह केत्तियमेत्तरासिसंचयं लभामो त्ति इच्छारासिणा पमाण-
रासिमिह भागे हिदे तत्थ लद्धसंखेज्जरूवेहि देवरासिमिह भागे हिदे तत्थेगभागो वेउव्विय-
मिस्सकायजोगिमिच्छाइट्ठिपमाणं होदि । सेसं सुगमं ।

वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने
हैं ? देवोंके संख्यातवें भाग हैं ॥ ११७ ॥

अब इस सूत्रका व्याख्यान करते हैं— संख्यात वर्षकी आयुके भीतर आवलीके
असंख्यातवें भागमात्र उपक्रमण कालसे यदि देवराशिका संचय प्राप्त होता है, तो इससे
संख्यातगुणे हीन वैक्रियिकमिश्र उपक्रमण कालके भीतर कितनामात्र राशिका संचय प्राप्त होगा,
इसप्रकार त्रैराशिक करके इच्छाराशिसे प्रमाणराशिके भाजित करने पर वहां जो संख्यात
लब्ध आवेंगे उससे देवराशिके भाजित करने पर वहां एक भागप्रमाण वैक्रियिकमिश्रकाययोगी
मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण होता है । शेष कथन सुगम है ।

विशेषार्थ— उत्पत्तिको उपक्रमण कहते हैं, और इस सहित कालको सोपक्रमकाल
कहते हैं । यह सोपक्रमकाल आवलीके असंख्यातवें भागमात्र है । अर्थात् देवोंमें यदि निरन्तर
जीव उत्पन्न हों तो इतने काल तक उत्पन्न होंगे । इसके पश्चात् अन्तर पड़ जायगा । वह
अन्तरकाल जघन्य एक समय है और उत्कृष्ट सोपक्रमकालसे संख्यातगुणा है । देवोंमें संख्यात
वर्षकी आयु लेकर अधिक जीव उत्पन्न होते हैं, इसलिये यहाँ उन्हींकी विवक्षा है । इसप्रकार
संख्यात वर्षके भीतर जितने उपक्रमकाल होते हैं उनमें यदि देवराशिका संचय प्राप्त होता है
तो इससे संख्यातगुणे हीन मिश्रकालमें (अपर्याप्त अवस्थाके सोपक्रमकालमें) कितने जीव होंगे ।
इसप्रकार त्रैराशिक करने पर सर्व देवराशिके संख्यातवें भागमात्र वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंका
प्रमाण होता है । यहाँ असंख्यात वर्षकी आयुवाले देवों और नारकियोंकी अपेक्षा वैक्रियिकमिश्र-
काययोगियोंके प्रमाणके नहीं लानेका कारण यह है कि उनका अनुपक्रमकाल अधिक होनेसे
उनमें वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंका प्रमाण अल्प होगा, इसलिये उनकी यहाँ विवक्षा नहीं की है ।

१ सोपक्रमणोपक्रमकालो संखेज्जवस्साउअवमंतरआवलिपमा कमसो । तहि
सव्वे सुद्धसला सोपक्रमकालदो दु संखगुणा । तत्तो संखगुणा अपुण्णकालमिह सुद्धसला ॥ तं सुद्धसलागाहिदणिय-
रासिमपुण्णकाललद्धाहि । सुद्धसलागाहि गुणे वंतरवेगुव्वमिस्सा हु ॥ तदि सेसदेवणारयमिस्सजुदे सव्वमिस्सवेगुव्वं ॥
गो. जी. २६६-२६९.

२ तत्र उत्पत्तिः उपक्रमः, तत्सहितः कालः सोपक्रमकालः निरन्तरोत्पत्तिकालः इत्यर्थः । गो. जी. २६६ टीका.

३ अ प्रतौ '—कालेण गहिदे जदि' इति पाठः

सासणसम्माइट्टी असंजदसम्माइट्टी द्व्यपमाणेण केवडिया,
ओघं ॥ ११८ ॥

तिरिक्ख-मणुससासण-असंजदसम्माइट्टिणो जेण देवेसुप्पज्जमाणा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता लब्धंति तेणेदेसिं पमाणपरूषणा ओघं, ओघेण समाणा त्ति घुत्तं होदि । एदेसिमवहारकालुप्पत्ती वुच्चदे । तं जहा— ओरालियमिस्ससासणसम्माइट्टिअवहार-कालमावलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे वेउव्वियमिस्सकायजोगिसासणसम्माइट्टि-अवहारकालो होदि । ओरालियकायजोगिअवहारकालमावलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे वेउव्वियमिस्सकायजोगिअसंजदसम्माइट्टिअवहारकालो होदि । किं कारणं ? तिरिक्खाणमसंखेज्जदिभागस्स देवेसुप्पत्तीदो । केण कारणेण वेउव्वियमिस्सकायजोगिसासणे-हिंतो ओरालियमिस्सकायजोगिसासणसम्माइट्टिणो असंखेज्जगुणा ? ण एस दोसो, कुदो ? देवेसुप्पज्जमाणतिरिक्खसासणेहिंतो तिरिक्खेसुप्पज्जमाणदेवसासणाणमसंखेज्जगुणत्तादो ।

आहारकायजोगीसु पमत्तसंजदा द्व्यपमाणेण केवडिया, चट्ट-
वण्णं ॥ ११९ ॥

सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि वैक्रियिकमिश्रकाययोगी जीव द्रव्य-
प्रमाणकी अपेक्षा कितने है ? ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ ११८ ॥

चूंकि सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि तिर्यंच और मनुष्य देवोंमें उत्पन्न होते हुए पत्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण पाये जाते हैं, इसलिये इनके प्रमाणकी प्ररूपणा ओघ अर्थात् ओघप्ररूपणाके तुल्य होती है, यह इसका अभिप्राय है । अब इनके अवहारकालकी उत्पात्तिका कथन करते हैं । वह इसप्रकार है— औदारिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर वैक्रियिकमिश्रकाययोगी सासादन-सम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । असंयतसम्यग्दृष्टि औदारिककाययोगियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर वैक्रियिकमिश्रकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है, क्योंकि, तिर्यंचोंके असंख्यातवें भागप्रमाण राशि देवोंमें उत्पन्न होती है ।

शंका— वैक्रियिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंसे औदारिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यातगुणे किस कारणसे हैं ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, देवोंमें उत्पन्न होनेवाले तिर्यंच सासादन-सम्यग्दृष्टि जीवोंसे तिर्यंचोंमें उत्पन्न होनेवाले देव सासादनसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यातगुणे पाये जाते हैं ।

आहारकाययोगियोंमें प्रमत्तसंयत जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ?

१ आहारकायजोगा चउवण्णं होति एकसमयम्हि ॥ गो. जी. २७०

आहारसरीरमण्णगुणद्वाणेषु णत्थि त्ति जाणावणद्धं पमत्तगहणं कदं । सेसं सुहु सुगमं ।

(आहारमिस्सकायजोगीसु पमत्तसंजदा दब्बपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ॥ १२० ॥)

(एत्थ आहरियपरंपरागदोवएसेण आहारमिस्सकायजोगे सत्तावीस २७ जीवा हवंति ।) अहवा आहारमिस्सकायजोगे जिणदिट्ठभावा संखेज्जजीवा हवंति, ण सत्तावीसं, सुत्ते संखेज्जणिहेसण्णहाणुववत्तीदो मिस्सकायजोगेहिंतो आहारकायजोगीणं संखेज्जगुणत्तादो च । ण च दोण्हमेत्थ गहणं, अजहण्णअणुक्कस्ससंखेज्जस्स सध्वगहणादो, सच्चअपज्जत्तद्वाहिंतो पज्जत्तद्वाणं जहण्णाणं पि संखेज्जगुणत्तदंसणादो ।

कम्मइयकायजोगीसु मिच्छाइट्ठी दब्बपमाणेण केवडिया, मूलोघं ॥ १२१ ॥

चौवन हैं ॥ ११९ ॥

प्रमत्तसंयत गुणस्थानको छोड़कर दूसरे गुणस्थानोंमें आहारशरीर नहीं पाया जाता है, इसका ज्ञान करानेके लिये प्रमत्तसंयत पदका ग्रहण किया । शेष कथन सुगम है ।

आहारमिश्रकाययोगियोंमें प्रमत्तसंयत जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ १२० ॥

यहां पर आचार्य परंपरासे आये हुए उपदेशानुसार आहारमिश्रकाययोगमें सत्तावीस जीव होते हैं । अथवा, आहारमिश्रकाययोगमें जिनदेवने जितनी संख्या देखी हो उतने संख्यात जीव होते हैं, सत्तावीस नहीं, क्योंकि, सूत्रमें संख्यात, यह निर्देश अन्यथा बन नहीं सकता है । तथा मिश्रयोगियोंसे आहारकाययोगी जीव संख्यातगुणे हैं, इससे भी प्रतीत होता है कि आहारमिश्रकाययोगी जीव संख्यात हैं, सत्तावीस नहीं । कदाचित् कहा जाय कि दो भी तो संख्यात हैं । परंतु दो यह संख्या संख्यात होते हुए भी उसका यहां पर ग्रहण नहीं किया है, क्योंकि, सबके द्वारा अजघन्यानुत्कृष्टरूप संख्यातका ही ग्रहण किया है । अथवा, सर्व अपर्याप्तकालसे जघन्य पर्याप्त काल भी संख्यातगुणा है, इससे भी यही प्रतीत होता है कि आहारमिश्रकाययोगी सत्तावीस नहीं लेना चाहिये ।

कार्मणकाययोगियोंमें मिध्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १२१ ॥

१ आहारमिस्सजोगा सत्तावीसा दु उक्कस्सं ॥ गो. जी. २७०

२ गो. जी. २६४-२६५.

जदो सव्वजीवरासी गंगापवाहो व्व गिरंतरं विग्गहं काऊणुप्पज्जदि, तेण कम्मइय-
रासिस्स मूलोघपरूवणा ण विरुद्धा । एदस्स सुत्तस्स धुवरासी वुच्चदे । कायजोगिधुव-
रासिमंतोमुहुत्तेण गुणिदे कम्मइयजोगिधुवरासी होदि । तं जहा—संखेज्जावलियमेत्त-
अंतोमुहुत्तकालेण जदि सव्वजीवरासिस्स संचओ होदि, तो तिण्हं समयाणं केत्तियं संचयं
लभामो त्ति पमाणेण इच्छागुणिदफलमोवट्टिय अंतोमुहुत्तोवट्टियसव्वजीवरासी आगच्छदि ।

सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी द्वयपमाणेण केवडिया,
ओघं ॥ १२२ ॥

जेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता तिरिक्खअसंजदसम्माइट्ठिणो विग्गहं
काऊण देवेसुप्पज्जमाणा लभंति, देव-तिरिक्खसासणसम्माइट्ठिणो पलिदोवमस्स असंखे-
ज्जदिभागमेत्ता तिरिक्ख-देवेषु विग्गहं करिय उव्वज्जमाणा लभंति, तेण एदेसिं पमाण-
परूवणा ओघपरूवणाए तुल्ला । एदेसिमवहारकालुप्पत्ती वुच्चदे । असंजदसम्मादिट्ठि-सासण-
सम्मादिट्ठिवेउव्वियमिस्सअवहारकाले आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे कम्मइयकाय-
जोगिअसंजदसम्मादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिअवहारकाला भवंति । कुदो ? विग्गहं करिय

चूंकि सर्व जीवराशि गंगानदीके प्रवाहके समान निरंतर विग्रह करके उत्पन्न होती
है, इसलिये कर्मणकाय राशिकी प्ररूपणा मूलोघ प्ररूपणाके समान होती है, विरुद्ध नहीं ।

अब इस सूत्रमें कहे गये कर्मणकाययोगियोंके प्रमाणकी ध्रुवराशि कहते हैं—
काययोगियोंकी ध्रुवराशिको अन्तर्मुहूर्तसे गुणित करने पर कर्मणकाययोगियोंकी ध्रुवराशि
होती है । उसका स्पर्धाकरण इसप्रकार है— संख्यात आवलीमात्र अन्तर्मुहूर्तकालके द्वारा
यदि सर्व जीवराशिका संचय होता है, तो तीन समयमें कितना संचय प्राप्त होगा, इसप्रकार
इच्छाराशिसे फलराशिको गुणित करके जो लब्ध आवे उसे प्रमाणराशिसे भाजित करने
पर अन्तर्मुहूर्तकालसे भाजित सर्व जीवराशि आती है ।

सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि कर्मणकाययोगी जीव द्रव्यप्रमाणकी
अपेक्षा कितने हैं ? सामान्य प्ररूपणाके समान पत्योपमके असंख्यातवें भाग हैं ॥१२२॥

चूंकि पत्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि जीव विग्रह करके
देवोंमें उत्पन्न होते हुए पाये जाते हैं । तथा पत्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण देव
सासादनसम्यग्दृष्टि जीव, और उतने ही तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीव क्रमसे तिर्यंच और
देवोंमें विग्रह करके उत्पन्न होते हुए पाये जाते हैं, इसलिये सासादनसम्यग्दृष्टि और
असंयतसम्यग्दृष्टि कर्मणकाययोगियोंकी प्ररूपणा सामान्य प्ररूपणाके तुल्य है । अब इनके
अवहारकालकी उत्पत्तिको कहते हैं— असंयतसम्यग्दृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि वैकियिक-
मिध अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर क्रमसे कर्मणकाययोगी
असंयतसम्यग्दृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अवहारकाल होते हैं, क्योंकि, विग्रह

मरमाणरासीए देवेसु उववज्जमाणरासिस्स असंखेज्जदिभागत्तादो ।

सजोगिकेवली द्व्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ॥ १२३ ॥

(एत्थ पुच्चाइरिओवएसेण सङ्घी जीवा हवन्ति ।) कुदो ? पदरे वीस, लोमपूरणे वीस, पुणरवि ओदरमाणा पदरे वीस चेव भवन्ति त्ति ।

भागाभागं वत्तइस्सामो । सच्चजीवरासिं संखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा ओरालियकायजोगरासीओ । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा ओरालियमिस्सकायजोगरासी होदि । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा कम्मइयकायमिच्छाइट्टिरासी होदि । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा सिद्धा हँति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा असच्चमोसवच्चिजोगिमिच्छाइट्टिणो हँति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा वेउच्चियकायजोगिमिच्छाइट्टिणो हँति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चमोसवच्चिजोगिमिच्छाइट्टिणो हँति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मोसवच्चिजोगिमिच्छाइट्टिणो हँति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चवच्चिजोगिमिच्छाइट्टिणो हँति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा असच्चमोसमणमिच्छाइट्टी हँति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चमोसमणमिच्छाइट्टी हँति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मोसमणमिच्छाइट्टिणो हँति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चमणमिच्छा-

करके मरनेवाली राशि देवोंमें उत्पन्न होनेवाली राशिके असंख्यातवें भागमात्र पाई जाती है ।

कार्मणकाययोगी सयोगिकेवली जीव कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ १२३ ॥

पूर्व आचार्योंके उपदेशानुसार सयोगिकेवलियोंमें कार्मणकाययोगी जीव साठ होते हैं, क्योंकि, प्रतर समुदातमें वीस, लोकपूरण समुदातमें वीस और उतरते हुए प्रतर समुदातमें पुनः वीस जीव होते हैं ।

अब भागाभागको बतलाते हैं— सर्व जीवराशिके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण औदारिककाययोगी जीवराशि है । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभागप्रमाण औदारिकमिश्रकाययोगी जीवराशि है । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभागप्रमाण कार्मणकाययोगी मिथ्यादृष्टि राशि है । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभागप्रमाण सिद्ध जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग अनुभय वचनयोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग वैक्रियिककाययोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग उभय वचनयोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मृषा वचनयोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सत्य वचनयोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग अनुभय मनोयोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग उभय मनोयोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मृषा मनोयोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सत्य मनोयोगी

जोगिसम्मामिच्छाइट्टिरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा असच्चमोसमणजोगि-
सम्मामिच्छाइट्टिरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चमोसमणजोगिसम्मामिच्छा-
इट्टिरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मोसमणजोगिसम्मामिच्छाइट्टिरासी होदि । सेसं
संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चमणजोगिसम्मामिच्छाइट्टिरासी होदि । ओघसासणरासीदो
ओघसम्मामिच्छाइट्टिरासी संखेज्जगुणो ति सुत्तसिद्धो । सपहि ओघसम्मामिच्छाइट्टिरासिस्स
संखेज्जदिभागो सच्चमणजोगिसम्मामिच्छाइट्टिरासी कथं ओघसासणरासीदो संखेज्जगुणो
होदि ति उत्ते वुच्चदे— जोगद्धागुणगारादो^१ सम्मामिच्छाइट्टिरासिं पडि सासणसम्मा-
इट्टिरासिस्स गुणगारो बहुगो, तेण सच्चमणजोगिसम्मामिच्छाइट्टिरासी सेसस्स संखेज्ज-
भागो^२ । तं कथं णव्वदे सुत्तेण विणा ? णत्थि सुत्तं वक्खाणं वा, किंतु आइरियवयणमेव
केवलमत्थि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा वेउव्वियकायजोगिसासणसम्माइट्टिरासी
होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा असच्चमोसवच्चिजोगिसासणसम्माइट्टिरासी होदि ।

बहुभाग सत्यवचनयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके संख्यात खंड करने
पर बहुभाग अनुभव मनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके संख्यात खंड
करने पर बहुभाग उभयमनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके संख्यात
खंड करने पर बहुभाग मृषामनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके
संख्यात खंड करने पर बहुभाग सत्यमनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि है । ओघ
सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिसे ओघ सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि संख्यातगुणी है, यह सूत्र सिद्ध
है । अब ओघ सम्यग्मिथ्यादृष्टि राशिके संख्यातवें भागप्रमाण सत्यमनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि
जीवराशि ओघ सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिसे संख्यातगुणी कैसे है, आगे इसी विषयके पूछने
पर कहते हैं— योगकालके गुणकारसे सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशिकी अपेक्षा सासादनसम्यग्दृष्टि
जीवराशिका गुणकार बहुत है, इसलिये सत्यमनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि
भागाभागमें मृषामनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टिका प्रमाण आनेके अनन्तर जो एक भाग शेष
रहता है उसका संख्यातवां भाग है ।

शंका— सूत्रके बिना यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— यद्यपि इस विषयमें सूत्र या व्याख्यान नहीं पाया जाता है, किंतु आचा-
र्योंके वचन ही केवल पाये जाते हैं, जिससे यह कथन जाना जाता है ।

सत्यमनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशिके अनन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके
संख्यात खंड करने पर बहुभाग वैक्रियिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि है । शेष
एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग अनुभववचनयोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि

१ आ प्रतौ ' जोगद्धाए गुण-' इति पाठः ।

२ प्रतिषु ' संखेज्जा भागो ' इति पाठः ।

मणजोगिसंजदासंजदरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मोसमणजोगिसंजदा-
संजदरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चमणजोगिसंजदासंजदरासी होदि ।
(सुत्तेण विणा वेउव्वियमिस्सकायजोगिअसंजदसम्माइट्टिरासी तिरिक्खसम्माभिच्छाइट्टि-
प्पहुडि तीहिं वि रासीहिंतो असंखेज्जगुणहीणो त्ति कथं णव्वदे ? आइरियवयणादो । आइ-
रियवयणमणेयंतमिदि चे, हेइदु णाम, णत्थि मज्जेत्थ अग्गहो । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहु-
खंडा वेउव्वियमिस्सकायजोगिअसंजदसम्माइट्टिरासी होदि । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा
कम्मइयकायजोगिअसंजदसम्माइट्टिरासी होदि । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा ओरालि-
यमिस्सकायजोगिसासणसम्माइट्टिरासी होदि । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा वेउव्विय-
मिस्सकायजोगिसासणा होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा कम्मइयकायजोगिसासण
सम्माइट्टिरासी होदि । सेसं जाणिऊण णेयव्वं ।)

अप्पाबहुअं तिविहं सत्थाणादिभेएण । सत्थाणे पयदं । पंचमणजोगि-तिण्णिवचिजोगि-

है । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मृषामनोयोगी संयतासंयत जीवराशि
है । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सत्यमनोयोगी संयतासंयत जीवराशि है ।

शंका—सूत्रके बिना वैक्रियिकमिश्र काययोगी सभ्यग्मिध्यादृष्टि जीवराशि तिर्यंच
सभ्यमिध्यादृष्टि जीवराशिसे लेकर तीनों राशियोंसे असंख्यातगुणी हीन है, यह कैसे जाना
जाता है ?

समाधान—यह कथन आचार्योंके वचनसे जाना जाता है ।

शंका—आचार्योंके वचनोमें अनेकान्त है, अर्थात् वे अनेक प्रकारके पाये जाते हैं ?

समाधान—यदि वे अनेक प्रकारके पाये जाते हैं तो पाये जाओ, इसमें हमारा
आग्रह नहीं है ।

सत्यमनोयोगी संयतासंयत राशिके अनन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके असंख्यात
खंड करने पर बहुभाग वैक्रियिकमिश्रकाययोगी असंयतसभ्यग्दृष्टि जीवराशि है । शेष एक
भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग कर्मणकाययोगी असंयतसभ्यग्दृष्टि जीवराशि
है । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग औदारिकमिश्रकाययोगी सासादन-
सभ्यग्दृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग वैक्रियिकमिश्र-
काययोगी सासादनसभ्यग्दृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग
कर्मणकाययोगी सासादनसभ्यग्दृष्टि जीवराशि है । शेष कथन समझकर ले जाना चाहिये ।

स्वस्थान आदिके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है । उनमेंसे स्वस्थान अल्पबहुत्व प्रकृत
है । पांचों मनोयोगी, तीन वचनयोगी, वैक्रियिककाययोगी और वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंका

वेउच्चिय-वेउच्चियमिस्सकायजोगीणं सत्थाणस्स देवगइभंगो । वच्चिजोगि-असच्चमोस-
वच्चिजोगीणं सत्थाणस्स पंचिदियतिरिक्खपज्जत्तभंगो । सेसकायजोगीसु मिच्छाइट्ठीणं
सत्थाणं णत्थि । सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठि-संजदासंजदाणं
सत्थाणस्स ओघभंगो ।

परत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा असच्चमोसमणजोगिणो चत्तारि उवसामगा । असच्च-
मोसमणजोगिणो चत्तारि खवगा संखेज्जगुणा । असच्चमोसमणजोगिणो सजोगिकेवलीं
संखेज्जगुणा । असच्चमोसमणजोगिणो अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । असच्चमोसमण-
जोगिणो पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । असच्चमोसमणजोगिसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो
असंखेज्जगुणो । असच्चमोसमणजोगिसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । असच्च-
मोसमणजोगिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । असच्चमोसमणजोगिसंजदा-
संजदाअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव दच्चमसंखेज्जगुणं । असच्चमोसमणजोगि-
सासणसम्माइट्ठिदच्चमसंखेज्जगुणं । असच्चमोसमणजोगिसम्मामिच्छाइट्ठिदच्चं संखेज्जगुणं ।

स्वस्थान अल्पबहुत्व देवगतिके समान है । वचनयोगी और अनुभयवचनयोगियोंका स्वस्थान
अल्पबहुत्व पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्तोंके स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है । शेष काययोगियोंमें
मिथ्यादृष्टि जीवोंके स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है । उन्हींके सासादनसम्यग्दृष्टि,
सम्यग्मिथ्यादृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयतोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व ओघ स्वस्थान
अल्पबहुत्वके समान है ।

अब परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है । अनुभय मनोयोगी चारों गुणस्थानधर्ती
उपशामक सबसे स्तोक हैं । अनुभय मनोयोगी चार गुणस्थानधर्ती क्षपक उपशामकोंसे
संख्यातगुणे हैं । अनुभय मनोयोगी सयोगिकेवली जीव उक्त क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं । अनुभय
मनोयोगी अप्रमत्तसंयत जीव उक्त सयोगिकेवलियोंसे संख्यातगुणे हैं । अनुभय मनोयोगी प्रमत्त-
संयत जीव उक्त अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । अनुभयमनोयोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अव-
हारकाल उक्त प्रमत्तसंयतोंसे असंख्यातगुणा है । अनुभयमनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहार-
काल उक्त असंयत अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । अनुभयमनोयोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका
अवहारकाल उक्त सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे संख्यातगुणा है । अनुभयमनोयोगी संयता-
संयतोंका अवहारकाल उक्त सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । उन्हीं अनुभय-
मनोयोगी संयतासंयतोंका द्रव्य उन्हींके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । अनुभयमनोयोगी
सासादनसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य उक्त संयतासंयतोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । अनुभयमनोयोगी
सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य उक्त सासादनसम्यग्दृष्टियोंके द्रव्यसे संख्यातगुणा है । अनुभयमनो-

१ प्रतिषु ' अजोगिकेवली ' इति पाठः ।

२ प्रतिषु असंखे० गुणा ' इति पाठः ।

असच्चमोसमणजोगिअसंजदसम्माइट्टिदव्वमसंखेज्जगुणं । पलिदोवममसंखेज्जगुणं । असच्च-
मोसमणजोगिमिच्छाइट्टिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा ।
सेठी असंखेज्जगुणा । दव्वमसंखेज्जगुणं । पदरमसंखेज्जगुणं । लो गो असंखेज्जगुणो ।
एवं चचारिमण-पंचवचिजोगीणं परत्थाणप्पाबहुगं वत्तव्वं । वेउच्चियकायजोगीसु सव्वत्थोवो
असंजदसम्माइट्टिअवहारकालो । उवरि मणजोगपरत्थाणभंगो । वेउच्चियमिस्सकायजोगीसु
सव्वत्थोवो असंजदसम्माइट्टिअवहारकालो । सासणसम्माइट्टिअवहारकालो असंखेज्जगुणो ।
तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । असंजदसम्माइट्टिदव्वमसंखेज्जगुणं । उवरि मणजोगिपरत्थाण-
भंगो । सव्वत्थोवा कायजोगिणो उवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । एवं णेयव्वं जाव पलि-
दोवमं ति । पलिदोवमादो उवरि मिच्छाइट्टी अणंतगुणा । एवं ओरालियकायजोगीणं पि
वत्तव्वं । ओरालियमिस्सकायजोगीसु सव्वत्थोवा सजोगिकेवली । असंजदसम्माइट्टी संखेज्ज-
गुणा । सासणसम्माइट्टिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । पलिदो-
वमसंखेज्जगुणं । मिच्छाइट्टी अणंतगुणा । आहार-आहारमिस्सेसु णत्थि सत्थाणं परत्थाणं

योगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य उक्त सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है। पल्यो-
पम उक्त असंयतसम्यग्दृष्टियोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है। अनुभयमनोयोगी मिथ्यादृष्टियोंका
अवहारकाल पल्योपमसे असंख्यातगुणा है। उन्हींकी विष्कंभसूची अवहारकालसे असंख्यातगुणी
है। जगत्रेणी विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणी है। उन्हीं अनुभयमनोयोगी मिथ्यादृष्टियोंका
द्रव्य जगत्रेणीसे असंख्यातगुणा है। जगप्रतर द्रव्यप्रमाणसे असंख्यातगुणा है। लोक
जगप्रतरसे असंख्यातगुणा है। इसीप्रकार शेष चार मनोयोगी और पांचों वचनयोगियोंका
परस्थान अल्पबहुत्व कहना चाहिये। वैक्रियिककाययोगियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहार-
काल सबसे स्तोके है। इसके ऊपर मनोयोगके परस्थान अल्पबहुत्वके समान जानना
चाहिये। वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सबसे स्तोके
है। सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यात-
गुणा है। उन्हीं सासादनसम्यग्दृष्टि वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंका द्रव्य अपने अवहारकालसे
असंख्यातगुणा है। असंयतसम्यग्दृष्टि वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंका द्रव्य सासादन द्रव्यसे
असंख्यातगुणा है। इसके ऊपर मनोयोगियोंके परस्थान अल्पबहुत्वके समान जानना चाहिये।
काययोगी उपशामक सबसे स्तोके हैं। काययोगी क्षपक काययोगी उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं।
इसीप्रकार पल्योपमतके ले जाना चाहिये। पल्योपमके ऊपर काययोगी मिथ्यादृष्टि जीव अनन्त-
गुणे हैं। इसीप्रकार औदारिककाययोगियोंका भी कथन करना चाहिये। औदारिकमिश्रकाय-
योगियोंमें सयोगिकेवली जीव सबसे स्तोके हैं। असंयतसम्यग्दृष्टि जीव सयोगिकेवालियोंसे
संख्यातगुणे हैं। सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असंयत सम्यग्दृष्टियोंसे असंख्यातगुणा
है। उन्हींका द्रव्य अपने अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। पल्योपम सासादनसम्यग्दृष्टि औदा-
रिकमिश्रकाययोगियोंसे असंख्यातगुणा है। औदारिकमिश्रकाययोगी मिथ्यादृष्टि जीव पल्योपमसे

वा । कम्मइयकायजोगीसु सव्वत्थोवा सजोगिणो । असंजदसम्माइद्धिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइद्धिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । असंजदसम्माइद्धिदव्वमसंखेज्जगुणं । पलिदोवमसंखेज्जगुणं । कम्मइयकायजोगिमिच्छा-इद्धिणो अणंतगुणा ।

सव्वपरत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा आहारमिस्सकायजोगिजीवा । आहारकायजोगिजीवा संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । सव्वेसिमसंजदसम्मादिट्ठीणं अवहारकालो असंखेज्जगुणो । एवं णेयव्वं जाव पलिदोवमं ति । किमट्ठमेवं जाणिज्जदे ? वेउव्वियमिस्स-ओरालियमिस्स-कम्मइयकायजोगीसु सासणसम्माइद्धि-असंजदसम्माइद्धिरासीणं माहप्पं ण जाणिज्जदि ति । पुव्वं किमिदं परूविदं ? ण, आइरियाणं तस्स अभिप्पायंतरदरिसणट्ठत्तादो) पलिदोवमादो उवरि वचिजोगिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । असच्चमोसवचिजोगिअवहारकालो विसेसाहिओ । वेउव्वियकायजोगि-

अनन्तगुणे हैं । आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगमें स्वरथान अथवा परस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है । कर्मणकाययोगियोंमें सयोगिकेवली जीव सबसे स्तोक हैं । असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सयोगियोंके प्रमाणसे असंख्यातगुणा है । सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । उर्होंका द्रव्य अपने अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । असंयतसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य सासादन द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । पल्योपम असंयतसम्यग्दृष्टियोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । कर्मणकाययोगी मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य पल्योपमसे अनन्तगुणा है ।

अब सर्व परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है । आहारमिश्रकाययोगी जीव सबसे स्तोक है । आहारकाययोगी जीव आहारमिश्र जीवोंसे संख्यातगुणे हैं । अप्रमत्तसंयत जीव आहारकाययोगियोंसे संख्यातगुणे हैं । प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । सभीका असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकाल प्रमत्तसंयतोंसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये ।

शंका—ऐसा किसलिये समझें ?

समाधान—वैकियिकमिश्र, औदारिकमिश्र और कर्मणकाययोगियोंमें सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि राशियोंका माहात्म्य अर्थात् परस्पर अल्पबहुत्व नहीं जाना जाता है, इसलिये ऐसा समझना चाहिये ।

शंका—तो फिर इनके अल्पबहुत्वका पहले प्ररूपण किसलिये किया है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, घटां दूसरे आचार्योंका अभिप्रायान्तर दिखलाना उनके अल्पबहुत्वके कथनका प्रयोजन था ।

पल्योपमके ऊपर वचनयोगियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । अनुभयवचनयोगियोंका अवहारकाल वचनयोगियोंके अवहारकालसे विशेष अधिक है । वैकियिककाययोगियोंका

अवहारकालो संखेज्जगुणो । एवं सच्चमोसवचिजोगि-मोसवचिजोगि-सच्चवचिजोगि-मणजोगीणं अवहारकालो संखेज्जगुणा । असच्चमोसमणजोगीणं अवहारकालो विसेसाहिओ । सच्चमोसमणजोगिअवहारकालो संखेज्जगुणो । एवं मोसमणजोगि-सच्चमणजोगि-वेउव्विय-मिस्सकायजोगीणं अवहारकालो संखेज्जगुणा । तस्सेव विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । सच्चमणजोगिविक्खंभसूई संखेज्जगुणा । एवं मोसमणजोगि-सच्चमोसमणजोगि-असच्च-मोसमणजोगीणं । तदो मणजोगिविक्खंभसूई विसेसाहिया । सच्चवचिजोगिविक्खंभसूई संखेज्जगुणा । एवं मोसवचिजोगि-(सच्चमोसवचिजोगि)-वेउव्वियकायजोगि-असच्च-मोसवचिजोगिविक्खंभसूचीओ संखेज्जगुणाओ । वचिजोगिविक्खंभसूई विसेसाहिया । सेठी असंखेज्जगुणा । तदो वेउव्वियमिस्सकायजोगिमिच्छाइद्विद्वमसंखेज्जगुणं । सच्चमण-जोगिद्वं संखेज्जगुणं । एवं मोसमणजोगि-सच्चमोसमणजोगि-असच्चमोसमणजोगि-दव्वाणि जहाकमेण संखेज्जगुणाणि । मणजोगिद्वं विसेसाहियं । सच्चवचिजोगिद्वं

अवहारकाल अनुभववचनयोगियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है । इसीप्रकार उभय-वचनयोगी, मृषावचनयोगी और सत्यवचनयोगी जीवोंका अवहारकाल उत्तरोत्तर संख्यातगुणा है । अनुभयमनोयोगियोंका अवहारकाल सत्यवचनयोगियोंके अवहारकालसे विशेष अधिक है । उभयमनोयोगियोंका अवहारकाल अनुभयमनोयोगियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है । इसीप्रकार असत्यमनोयोगी, सत्यमनोयोगी और वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंका अवहारकाल उत्तरोत्तर संख्यातगुणा है । उन्हींकी अर्थात् वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंकी विष्कंभसूची उन्हींके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । सत्यमनोयोगियोंकी विष्कंभसूची वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंकी विष्कंभसूचीसे संख्यातगुणी है । इसीप्रकार मृषामनोयोगी, उभयमनोयोगी और अनुभय-मनोयोगियोंकी विष्कंभसूची भी समझना चाहिये । अनुभयमनोयोगियोंकी विष्कंभसूचीसे मनो-योगियोंकी विष्कंभसूची विशेष अधिक है । सत्यवचनयोगियोंकी विष्कंभसूची मनोयोगियोंकी विष्कंभसूचीसे संख्यातगुणी है । इसीप्रकार मृषावचनयोगी, उभयवचनयोगी, वैक्रियिककाययोगी और अनुभयवचनयोगियोंकी विष्कंभसूचीयां भी उत्तरोत्तर संख्यातगुणी हैं । वचनयोगियोंकी विष्कंभसूची अनुभयवचनयोगियोंकी विष्कंभसूचीसे विशेष अधिक है । जगश्रेणी वचनयोगि-योंकी विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणी है । जगश्रेणीसे वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है । सत्यमनोयोगियोंका द्रव्य वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंके द्रव्यसे संख्यातगुणा है । इसीप्रकार मृषामनोयोगी, उभयमनोयोगी, अनुभयमनोयोगियोंका द्रव्य यथाक्रमसे संख्यातगुणा है । मनोयोगियोंका द्रव्य अनुभय मनोयोगियोंके द्रव्यसे विशेष अधिक है । सत्यवचनयोगियोंका

१ प्रतिष्ठा ' अवहारकालमेत्तेण ' इति पाठः ।

संखेज्जगुणं । एवं मोसवचिजोगि-सच्चमोसवचिजोगि-वेउच्चियकायजोगि-असच्चमोसवचि-जोगिदव्वाणि जहाकमेण संखेज्जगुणाणि । तदो वचिजोगिदव्वं विसेसाहियं । पदरमसंखेज्जगुणं । लोगो असंखेज्जगुणो । तदो अजेइणो अणंतगुणा । कम्मइयकायजोगिणो अणंतगुणा । ओरालियमिस्सकायजोगिणो असंखेज्जगुणा । ओरालियकायजोगिणो मिच्छाइट्ठी संखेज्जगुणा ।

एवं जोगमग्गा समत्ता ।

वेदाणुवादेण इत्थिवेदएसु मिच्छाइट्ठी द्व्यपमाणेण केवडिया, देवीहि सादरेयं ॥ १२४ ॥

देवगइमग्गाए देवीणं पमाणमेत्थियं होदि त्ति सुत्तमिह ण वुत्तं, तो कधं जाणिज्जदे इत्थिवेदरासी देवीहिंतो सादरेगो इदि ? जदि वि एत्थ ण वुत्तो तो वि 'ईसाणकप्पवासियदेवाणमुवरि तमिह चैव देवीओ संखेज्जगुणाओ । तदो सोहम्मकप्पवासियदेवा संखेज्जगुणा । तमिह चैव देवीओ संखेज्जगुणाओ । पढमाए पुढवीए णेरइया असंखेज्ज-

द्रव्य मनोयोगियोंके द्रव्यसे संख्यातगुणा है । इसीप्रकार मृषावचनयोगी, उभयवचनयोगी, वैक्रियिककाययोगी और अनुभय वचनयोगियोंका द्रव्य यथाक्रमसे संख्यातगुणा है । अनुभय वचनयोगियोंके द्रव्यसे वचनयोगियोंका द्रव्य विशेष अधिक है । जगप्रतर वचनयोगियोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । लोक जगप्रतरसे असंख्यातगुणा है । लोकसे अयोगी जीव अनन्तगुणे हैं । अयोगियोंसे कर्मणकाययोगी जीव अनन्तगुणे हैं । कर्मणकाययोगियोंसे औदारिकमिश्रकाययोगी जीव असंख्यातगुणे हैं । औदारिकमिश्रकाययोगियोंसे औदारिककाययोगी मिथ्यादृष्टि जीव संख्यातगुणे हैं

इसप्रकार योगमार्गणा समाप्त हुई ।

वेदमार्गणाके अनुवादसे स्त्रीवेदियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? देवियोंसे कुछ अधिक हैं ॥ १२४ ॥

शंका—वेषगति मार्गणामें देवियोंका प्रमाण इतना है, यह सूत्रमें नहीं कहा है, अतएव यह कैसे जाना जाता है कि स्त्रीवेदराशि देवियोंसे साधिक होती है ?

समाधान—यद्यपि यहाँ जीवद्वाराणमें यह बात नहीं कही है तो भी 'ऊपर ईशानकल्पवासी देवोंके धर्माँ पर देवियाँ उनसे संख्यातगुणी हैं । उनसे सौधर्म कल्पवासी देव संख्यातगुणे हैं और वहाँ पर देवियाँ देवोंसे संख्यातगुणी हैं । पहली पृथिवीमें नारकी जीव सौधर्म कल्पकी देवियोंसे असंख्यातगुणे हैं । भवनवासी देव नारकियोंसे

१ वेदानुवादेन स्त्रीवेदाः ×× मिथ्यादृष्टयोऽसंख्येयाः श्रेणयः प्रतरासंख्येयभागप्रमिताः । स. सि. १, ८. देवीहि सादिया इत्थी । गो. जी. १७९.

गुणा । भवणवासियदेवा असंखेज्जगुणा । देवीओ संखेज्जगुणाओ । पंचिंदियतिरिक्ख-
जोणिणीओ संखेज्जगुणाओ । वाणवेंतरदेवा संखेज्जगुणा । देवीओ संखेज्जगुणाओ ।
जोइसियदेवा संखेज्जगुणा । देवीओ संखेज्जगुणाओ चि एदम्हादो खुद्दाबंधसुत्तादो
जाणिज्जदे जहा देवाणं संखेज्जा भागा देवीओ होंति चि । तिरिक्खजोणिणीओ देवीणं
संखेज्जदिभागो । ताओ देवीसु पक्खिक्खत्ते इत्थिवेदरासी होदि चि कट्टु देवीहि सादिरेयमिदि
तासिं पमाणं सुत्ते वुत्तं ।

तासिमवहारकालुप्पत्तिं वत्तइस्सामो । देवअवहारकालम्हि वत्तीसरूवेहि भागे हिदे
लद्धं तम्हि चैव पक्खिविय तिरिक्ख-मणुसित्थिवेदागमणिमित्तं तत्तो एकस्स पदरंगुलस्स
संखेज्जदिभाए अवणिदे इत्थिवेदअवहारकालस्स भागहारो होदि । वत्तीसरूवाणि देव-
अवहारकालस्स भागहारो होंति चि कथं णव्वदे ? तेहितो देवीओ वत्तीसगुणा हव्वंति चि
आइरियपरंपरागयुवदेसादो णव्वदे । एदेण अवहारकालेण जगपदरे भागे हिदे इत्थिवेद-
रासी होदि ।)

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा ति ओधं ॥ १२५ ॥

असंख्यातगुणे हैं । तथा वहीं पर देवियां देवोंसे संख्यातगुणी हैं । पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती
जीव भवनवासी देवोंसे संख्यातगुणे हैं । वाणव्यन्तर देव पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंसे
संख्यातगुणे हैं । तथा वहीं पर देवियां देवोंसे संख्यातगुणी हैं । ज्योतिषी देव वाणव्यन्तर
देवियोंसे संख्यातगुणे हैं । तथा वहीं पर देवियां देवोंसे संख्यातगुणी हैं । इस खुद्दाबन्धके
सूत्रसे यह जाना जाता है कि देवोंके संख्यात बहुभाग देवियां होती हैं । तथा तिर्यंच योनिमती
जीव देवियोंके संख्यातवें भाग होते हैं । अतएव इन तिर्यंच योनिमतियोंके प्रमाणको देवियोंके
प्रमाणमें मिला देने पर खीवेद जीवराशि होती है, ऐसा समझकर देवियोंसे कुछ अधिक इस-
प्रकार खीवेदी जीवोंका प्रमाण सूत्रमें कहा ।

अब खीवेदियोंके अवहारकालकी उत्पत्तिको बतलाते हैं— देवोंके अवहारकालको
वत्तीससे भाजित करके जो लब्ध आवे उसे उसी देव अवहारकालमें मिला कर जो योग हो
उसमेंसे, तिर्यंच और मनुष्य खीवेदी जीवोंका प्रमाण लानेके लिये, एक प्रतरंगुलके संख्यातवें
भागके निकाल लेने पर खीवेदी जीवोंका अवहारकाल होता है ।

शंका — देव अवहारकालका भागहार वत्तीस होता है, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— देवोंसे देवियां वत्तीसगुणी हैं, इसप्रकार आचार्य-परंपरासे आये हुए
उपदेशसे यह जाना जाता है ।

योनिमतियोंके इस पूर्वाक्त अवहारकालसे जगप्रतरके भाजित करने पर खीवेद
जीवराशि होती है ।

सासादनसम्यग्ग्हाष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानतक प्रत्येक गुण-

१ खीवेदा: ×× सासादनसम्यग्ग्हाष्टिवाक्यः संयतासंयतान्ता सामान्योक्तसंख्याः । स. सि. १, ८.

जेणेदे चदुगुणद्वाणिणो जीवा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता तेणेदेसिं परूवणा ओघं होदि । ओघपमाणादो ऊणइत्थिवेदगुणपडिवण्णाणं कधमोघत्तं जुज्जदे ? ण, ओघमिव ओघमिदि उवयारेण तिससे ओघत्तसिद्धीदो । ओघअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकाल-मावल्याए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे इत्थिवेदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । कुदो ? कारिसग्गिसमाणइत्थिवेदेण दज्जंतहिययाणमित्थीणं सणिदाणाणं पउरं सम्मत्तपरिणामा-संभवादो । तम्हि आवल्याए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवल्याए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे संजदासंजदअवहारकालो होदि । एदेहि अवहारकालेहि पलिदोवमे भागे हिदे सग-सगरासीओ भवंति ।

(पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणियट्ठिवादरसांपराइयपविट्ठ उवसमा खवा द्व्यपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ॥ १२६ ॥)

स्थानमें स्त्रीवेदी जीव ओघप्ररूपणाके समान पल्योपमके असंख्यातवें भाग हैं ॥ १२५ ॥

क्योंकि ये चार गुणस्थानचर्ती जीव पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं, इसलिये इनकी प्ररूपणा ओघप्ररूपणाके समान होती है ।

शंका— गुणस्थानप्रतिपन्न ओघप्ररूपणासे न्यून गुणस्थानप्रतिपन्न स्त्रीवेदियोंके प्रमाणको ओघपना कैसे बन सकता है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, ओघके समानको भी ओघ कहा जाता है, इसलिये उपचारसे स्त्रीवेदियोंकी संख्याको ओघत्व सिद्ध हो जाता है ।

ओघ असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है, क्योंकि, उपलेकी अग्निके समान स्त्रीवेदसे जिनका हृदय जल रहा है और जो कामाभिलाष सहित हैं, ऐसी स्त्रियोंके प्रचुरतासे सम्प्रत्यक्षपरिणाम संभव नहीं है । अर्थात् स्त्रीवेदके साथ प्रचुर सम्यग्दृष्टि जीव नहीं होते हैं । उस स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर स्त्रीवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । स्त्रीवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर स्त्रीवेदी संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है । इन अवहारकालोंसे पल्योपमके भाजित करने पर अपनी अपनी राशियोंका प्रमाण आता है ।

प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिवादरसांपरायप्रविष्ट उपशमक और

१ प्रतिषु ' चदुगुणद्वाणिणि ' इति पाठः ।

२ प्रतिषु ' सग्गिसग्गिणाणं ' इति पाठः ।

३ प्रमत्तसंयतादयोऽनिवृत्तिवादरान्ताः संख्येयाः । स. सि. १, ८.

(पमत्तादीणं ओघराशिं संखेज्जखंडे कए एयखंडमिथिवेदपमत्तादओ भवंति । इत्थिवेदउवसामगा दस १०, खवगा वीस २० ।

पुरिसवेदएसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, देवेहि सादिरियं ॥ १२७ ॥

देवलोए देवीणं संखेज्जदिभागमेत्ता देवा भवंति । पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीणं संखेज्जदिभागमेत्ता तिरिक्खेसु पुरिसवेदा भवंति । तेसु देवेषु पक्खिस्सेसु देवेहि सादिरियं पुरिसवेदरासिपमाणं होदि ।

एत्थ अवहारकालुत्पत्तिं वत्तइस्सामो) देवअवहारकालं तेत्तीसरूवेहि गुणिय तत्तो एकपदरंगुलं घेत्तूण संखेज्जखंडं काऊण तत्थेगखंडमवणिय बहुखंडे तत्थेव पक्खिस्से पुरिसवेदमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । एदेण जगपदरे भागे हिदे पुरिसवेदमिच्छाइट्ठिरासी होदि ।

(सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्ठिवादरसांपराइयपविट्ठ उवसमा खवा दव्वपमाणेण केवडिया, ओघं ॥ १२८ ॥

क्षपक गुणस्थानतक जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ १२६ ॥

प्रमत्तसंयत आदि गुणस्थानसंबन्धी ओघराशिको संख्यातसे खंडित करने पर एक खंडप्रमाण स्त्रीवेदी प्रमत्तसंयत आदि गुणस्थानवर्ती जीव होते हैं। स्त्रीवेदी उपशामक दश और क्षपक वीस हैं ।

पुरुषवेदियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? देवोंसे कुछ अधिक हैं ॥ १२७ ॥

देवलोकमें देवियोंके संख्यातवें भागमात्र देव हैं । पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंके संख्यातवें भागमात्र तिर्यंचोंमें पुरुषवेदी जीव हैं । इन पुरुषवेदी तिर्यंचोंके प्रमाणको देवोंमें प्रक्षिप्त कर देने पर देवोंसे कुछ अधिक पुरुषवेद जीवराशिका प्रमाण होता है ।

अब यहां उक्त जीवोंके अवहारकालकी उत्पत्तिको बतलाते हैं— देवोंके अवहारकालको तेतीससे गुणित करके जो लब्ध आवे उसमेंसे एक प्रतरांगुलको ग्रहण करके और उसके संख्यात खंड करके उनमेंसे एक खंडको घटाकर बहुभाग उसी पूर्वोक्त राशिमें मिला देने पर पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है । इस अवहारकालसे जगप्रतरके भाजित करने पर पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि राशि होती है ।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्ति वादरसांपरायप्रविष्ट उपशमक

१ वेदातुवादेन ×× पुवेदाश्च मिथ्यादृष्टयोऽसंख्येयाः श्रेणयः प्रतरासंख्येयभागप्रमेताः । स. सि. १, ८. देवेहि सादिरिया पुरिसा । गो. जी. २७९.

इत्थिवेद-णवुंसयवेदरासिपरिहीणो ओघरासी पुरिसवेदस्स भवदि । कथं तस्स ओघत्तं जुज्जदे ? ण एस दोसो, ओघमिव ओघमिदि तस्स ओघत्तसिद्धीदो ।

एत्थ अवहारकालो बुच्चदे । ओघअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालं आवलियाए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते पुरिसवेदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे संजदासंजदअवहारकालो होदि । ओघपमत्तादिसु अप्पणो संखेज्ज-भागभूदइत्थि-णवुंसयवेदरासिप्रमाणमवणिदे पुरिसवेदपमत्तादओ भवंति ।

णवुंसयवेदेसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति ओघं
॥ १२९ ॥

और क्षपक जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १२८ ॥

ओघराशिमेंसे स्त्रीवेदी और नपुंसकवेदी राशिको कम कर देने पर जो लब्ध रहे उतना पुरुषवेदियोंका प्रमाण है ।

शंका— इस सासादनसम्यग्दृष्टि आदि पुरुषवेदीराशिको ओघपना कैसे बन सकता है ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, ओघके समानको भी ओघ कहते हैं, इसलिये उस सासादनसम्यग्दृष्टि आदि पुरुषवेदीराशिके ओघपना सिद्ध हो जाता है ।

अब पुरुषवेदियोंके अवहारकालको कहते हैं— ओघ असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी ओघ असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालमें मिला देने पर पुरुषवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर पुरुषवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर पुरुषवेदी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर पुरुषवेदी संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है । ओघ प्रमत्तसंयत आदि राशियोंमेंसे उन्हींके संख्यातवें भागभूत स्त्रीवेदी और नपुंसकवेदी राशिके प्रमाणको घटा देने पर पुरुषवेदी प्रमत्तसंयत आदि जीव होते हैं ।

नपुंसकवेदियोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानतक जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १२९ ॥

१ नपुंसकवेदा मिथ्यादृष्टयोऽनन्तानन्ताः । ×× नपुंसकवेदाश्च सासादनसम्यग्दृष्ट्यादयः संयतासंयतान्ताः सामान्योक्तसंख्याः । स. सि. १, ८. तेहिं विहीण सवेदो रासी संदाणं परिमाणं ॥ गो. जी. २७२.

णवुंसयवेदमिच्छाद्द्विणो अणंतत्तणेण ओघमिच्छाद्द्विहि समाणा । सासणादओ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागत्तणेण ओघगुणपडिवण्णेहि समाणा त्ति ओघत्तमेदेसिं जुज्जे । एत्थ अवहारकालुप्पत्ती वुच्चे । तं जहा— इत्थि-पुरिसवेदसगुणपडिवण्णे अवगदवेदजीवे च णवुंसयवेदमिच्छाद्द्विरासिभजिदमेदेसिं वग्गं च सच्चजीवरासिस्सुवरि पक्खिस्सत्ते धुवरासी होदि । एदेण सच्चजीवरासिस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे णवुंसयवेदमिच्छाद्द्विरासी होदि । इत्थिवेदअसंजदसम्माद्द्विअवहारकालं आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे णवुंसयवेद-असंजदसम्माद्द्विअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे सम्मामिच्छाद्द्विअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सासणसम्माद्द्विअवहार-कालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे संजदासंजदअवहारकालो होदि ।

(पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणियट्ठिवादरसांपराइयपविट्ठ उवसमा खवा दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा' ॥ १३० ॥)

नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तत्वकी अपेक्षा ओघमिथ्यादृष्टियोंके समान हैं और नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि आदि जीव पल्योपमके असंख्यातवें भागत्वकी अपेक्षा ओघ गुणस्थानप्रतिपन्नोंके समान हैं, इसलिये नपुंसकवेदी इन राशियोंके ओघपना बन जाता है । अब इन नपुंसकवेदियोंके अवहारकालकी उत्पत्तिको कहते हैं । वह इसप्रकार है— गुणस्थान-प्रतिपन्न स्त्रीवेदी और पुरुषवेदी जीव राशिको तथा अपगतवेदी जीवराशिको तथा नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि राशिसे भाजित इन्हीं स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी और अपगतवेदी राशिके वर्गको सर्व जीवराशिमें मिला देने पर नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टियोंकी ध्रुवराशि होती है । इससे सर्व जीवराशिके उपरिम वर्गके भाजित करने पर नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीवराशि होती है । स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर नपुंसकवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर नपुंसकवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर नपुंसकवेदी संयतासंयतोंका अवहार-काल होता है ।

प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिवादरसांपरायिकप्रविष्ट उपशामक और क्षपक गुणस्थानतक जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ १३० ॥

इत्थिवेदपमत्तादिरासिस्स संखेज्जदिभागमेत्तो णवुंसयवेदपमत्तादिरासी होदि । कुदो ? इट्ठपागग्गिसमाणेण णवुंसयवेदोदयेण सण्णिदाणेण^१ पउरं सम्मत्त-संजमादीणमुवलंभा-भावादो । ओघपमाणं ण पावेति-त्ति जाणावणहुं सुत्ते संखेज्जणिहेसो कओ । णवुंसयवेद-उवसामगा पंच ५, खवगा दस १० । इत्थिवेद-णवुंसयवेदे पमत्ता अपमत्ता च एत्तिया चेव होंति-त्ति संपहि उवएसो णत्थि ।

अपगदवेदएसु तिण्हं उवसामगा^२ केवडिया, पवेसेण एको वा दो वा तिण्णि वा, उकस्सेण चउवणं^३ ॥ १३१ ॥

एत्थ पुरदो भण्णमाणअवगदवेदजीवसंचयपदुप्पायणसुत्तेणेव पज्जत्तं किमणेण अवगदवेदपवेसपरूषणासुत्तेणेत्ति ? ण एस दोसो, उवसमसेट्ठिपवेसणतुल्लो अवगयवेदपज्जाय-पवेसो-त्ति जाणावणफलत्तादो । तिण्हमिदि णेदं छट्ठीबहुवयणं किंतु पठमावहुवयणमिदि घेत्तवं, छट्ठविहत्तिउत्पत्तिणिमित्ताभावादो । कधमुवसंतकसायस्स उवसामगववएसो ? ण,

स्त्रीवेदी प्रमत्तसंयत आदि राशिके संख्यातर्षे भागमात्र नपुंसकवेदी प्रमत्तसंयत आदि जीवराशि होती है, क्योंकि, इष्टपाककी अभिके समान नपुंसकवेदके उद्देशसे अतिक्रामाभिलाषसे युक्त होनेके कारण प्रचुरतासे सम्यक्त्व और संयमादि परिणामोंका उपलंभ नहीं पाया जाता है । प्रमत्तसंयत आदि नपुंसकवेदी जीवराशि ओघप्रमाणको नहीं प्राप्त होती है, इसका ज्ञान करानेके लिये सूत्रमें संख्यात पदका निर्देश किया है । नपुंसकवेदी उपशामक पांच और क्षपक दश होते हैं । स्त्रीवेदी और नपुंसकवेदी प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत जीव इतने ही होते हैं, इसप्रकार इस समय उपदेश नहीं पाया जाता है ।

अपगतवेदियोंमें तीन गुणस्थानवर्ती उपशामक जीव कितने हैं ? प्रवेशसे एक, दो या तीन, और उरकृष्टरूपसे चौवन हैं ॥ १३१ ॥

शंका—यहां आगे कहा जानेवाला अपगतवेदी जीवोंके संचयका प्ररूपक सूत्र ही पर्याप्त है, फिर अपगतवेदी जीवोंके प्रवेशके प्ररूपण करनेवाले इस सूत्रका क्या प्रयोजन है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, उपशामश्रेणीमें प्रवेश करनेके समान ही अपगतवेद पर्यायमें प्रवेश होता है, इस बातका ज्ञान कराना इस सूत्रका फल है ।

सूत्रमें आया हुआ 'तिण्हं' पद षष्ठी विभक्तिका बहुवचन नहीं है, किन्तु प्रथमा विभक्तिका बहुवचन है, यहां ऐसा अर्थ लेना चाहिये, क्योंकि, यहां पर षष्ठी विभक्तिका उत्पत्तिका कोई निमित्त नहीं पाया जाता है ।

१ प्रतिष्ठा 'सण्णिदाणेण' इति पाठः ।

२ प्रतिष्ठा 'उवसमाणेण' इति पाठः ।

३ अपगतवेदा अभिवृत्तिनादरादयोऽयोगकेवलपन्थाः सामान्योक्तं संख्याः । स. सि. १, ६.

द्वद्विद्यणयं पडुच्च उवसंतकसायस्स वि उवसामगववएसं पडि विरोहाभावादो । एत्थ पवेसविधी उवसमसेटिपवेसेण तुल्ला । एदेण खवगअवगदवेदपवेसो वि खवगसेटिपवेसेण तुल्लो त्ति जाणाविदं । कुदो ? खवगअवगदवेदपवेसं पडि पुध सुत्तारंभाभावादो ।

अद्धं पडुच्च संखेज्जा ॥ १३२ ॥

एत्थ संखेज्जा त्ति ण भणिय ओघमिदि वत्तव्वं ? ण, अवलंबियपज्जयत्तादो । सेसं सुगमं ।

तिण्णि खवा अजोगिकेवली ओघं ॥ १३३ ॥

ओघादो एदेसिं पमाणं पडि विसेसाभावा ओघत्तं जुज्जे ।

शंका— उपशान्तकषाय जीवको उपशामक संज्ञा कैसे प्राप्त हो सकती है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, द्रव्याधिक नयकी अपेक्षा उपशान्तकषाय जीवके भी उपशामक इस संज्ञाके प्रति कोई विरोध नहीं आता है ।

यहां अपगतवेदस्थानमें प्रवेशविधि उपशमश्रेणीसंबन्धी प्रवेशविधिके समान है । इसी कथनसे क्षपक अपगतवेदियोंका प्रवेश भी क्षपकश्रेणीसंबन्धी प्रवेशके समान है, इसका ज्ञान करा दिया, क्योंकि, क्षपक अपगतवेदियोंके प्रवेशके प्रति पृथक् रूपसे सूत्रका आरंभ नहीं पाया जाता है ।

विशेषार्थ— जिसप्रकार उपशमश्रेणीके प्रत्येक गुणस्थानमें सामान्यसे जघन्य एक और उत्कृष्ट चौवन जीव प्रवेश करते हैं, और विशेषरूपसे पहले आदि समयमें एक जीवसे लेकर सोलह आदि जीवतक प्रवेश करते हैं; तथा क्षपकश्रेणीमें सामान्यसे जघन्य एक और उत्कृष्ट एकसौ आठ जीव प्रवेश करते हैं, और विशेषरूपसे पहले आदि समयमें एक जीवसे लेकर बत्तीस आदि जीव प्रवेश करते हैं; वही नियम यहां अपगतवेदियोंके लिये भी प्रवेशकी अपेक्षा समझना चाहिये ।

कालकी अपेक्षा अपगतवेदी उपशामक संख्यात हैं ॥ १३२ ॥

शंका— इस सूत्रमें ' संख्यात हैं ' इसप्रकार न कहकर ' ओघप्ररूपणाके समान हैं ' ऐसा कहना चाहिये ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, यहां पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन लिया है । शेष कथन सुगम है ।

अपगतवेदियोंमें तीन गुणस्थानवर्ती क्षपक और अयोगिकेवली जीव ओघ-प्ररूपणाके समान हैं ॥ १३३ ॥

ओघसे इन तीन गुणस्थानवर्ती क्षपक और अयोगिकेवलियोंके प्रमाणके प्रति कोई विशेषता नहीं है, इसलिये ओघपना बन जाता है ।

सजोगिकेवली ओघं ॥ १३४ ॥

गदत्थमेदं सुत्तं ।

(भागाभागं वत्तइस्सामो) सव्वजीविरासिमणंतखंडे कए बहुखंडा णवुंसयवेदमिच्छा-
इट्ठिणो भवन्ति । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा अवगदवेदा हवन्ति । सेसं संखेज्जखंडे कए
बहुखंडा इत्थिवेदमिच्छाइट्ठिणो हन्ति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा पुरिसवेदमिच्छा-
इट्ठिणो हन्ति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सव्वेसिमसंजदसम्माइट्ठिणो हन्ति । सेसमोघं ।

अप्पाबहुगं तिविहं सत्थाणादिभेएण । सत्थाणे पयदं । इत्थिवेद-पुरिसवेदाणं
सत्थाणं देवमिच्छाइट्ठिणं भंगो । सासणादि जाव संजदासंजदाणं सत्थाणमोघं । णवुंसयवेद-
मिच्छाइट्ठिसत्थाणं णत्थि । सासणादीणं सत्थाणमोघं ।

परत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा इत्थिवेदुवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । अप्प-
मत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो
असंखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो

अपगतवेदियोंमें सजोगिकेवली जीव ओघप्ररूपणके समान हैं ॥ १३४ ॥

इस सूत्रका अर्थ भी वही है जैसा ऊपर कह आये हैं ।

अब भागाभागको बतलाते हैं— सर्व जीवराशिके अनन्त खंड करने पर बहुभाग
नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग अपगतवेदी
जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टि जीव हैं ।
शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक
भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग सर्व असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं । शेष कथन
ओघप्ररूपणके समान है ।

स्वस्थान आदिकके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है । उनमेंसे स्वस्थानमें अल्पबहुत्व
प्रकृत है । स्त्रीवेदी और पुरुषवेदी जीवोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व देव मिथ्यादृष्टियोंके स्वस्थान
अल्पबहुत्वके समान है । सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयततक स्वस्थान
अल्पबहुत्व ओघ स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है । नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंका स्वस्थान
अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है, सासादनसम्यग्दृष्टि आदि नपुंसकवेदियोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व
ओघ स्वस्थानके समान है ।

अब परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— स्त्रीवेदी उपशमक सबसे स्तोक हैं । स्त्रीवेदी
क्षपक जीव स्त्रीवेदी उपशमकोंसे संख्यातगुणे हैं । स्त्रीवेदी अप्रमत्तसंयत जीव स्त्रीवेदी
क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं । स्त्रीवेदी प्रमत्तसंयत जीव स्त्रीवेदी अप्रमत्तसंयतोंसे
संख्यातगुणे हैं । स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल स्त्रीवेदी प्रमत्तसंयतोंसे
असंख्यातगुणा है । स्त्रीवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके
अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल स्त्रीवेदी

संखेज्जगुणो । संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव दब्बमसंखेज्जगुणं । एवं पडिलोमेण णेयव्वं जाव असंजदसम्माइड्ढिदव्वं चि । तदो पलिदोवममसंखेज्जगुणं । तदो इत्थिवेदमिच्छाइड्ढिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । सेढी असंखेज्जगुणा । दब्बमसंखेज्जगुणं । पदरमसंखेज्जगुणं । लोमो असंखेज्जगुणो । एवं पुरिसवेदस्स वि वत्तव्वं । एवं चैव णवुंसयवेदस्स । णवरि पलिदोवमादो उवरि मिच्छाइड्ढी अणतगुणा चि वत्तव्वं ।

सव्वपरत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा णवुंसयवेदुवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । इत्थिवेदुवसामगा तत्तिया चैव । तेसिं खवगा संखेज्जगुणा । पुरिसवेदुवसामगा संखेज्जगुणा । तेसिं खवगा संखेज्जगुणा । णवुंसयवेदे अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । तम्हि चैव पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । इत्थिवेदे अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । तम्हि चैव पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । सजोगिकेवली संखेज्जगुणा । पुरिसवेद अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । तम्हि

सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है । स्त्रीवेदी संयतासंयतोंका अवहारकाल स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । उन्हीं संयतासंयतोंका द्रव्य अपने अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । इसप्रकार प्रतिलोमरूपसे स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके द्रव्य आने तक ले जाना चाहिये । स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके द्रव्यसे पल्योपम असंख्यातगुणा है । पल्योपमसे स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे स्त्रीवेदियोंकी विष्कंभसूची असंख्यातगुणा है । स्त्रीवेदियोंकी विष्कंभसूचीले जगश्रेणी असंख्यातगुणा है । जगश्रेणीसे स्त्रीवेदियोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है । द्रव्यसे जगप्रतर असंख्यातगुणा है । जगप्रतरसे लोक असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार पुरुषवेदका भी परस्थान अल्पबहुत्व कहना चाहिये । तथा इसीप्रकार नपुंसकवेदका भी । परंतु इतनी विशेषता है कि नपुंसकवेदियोंका कहते समय पल्योपमके ऊपर मिथ्यादृष्टि अनन्तगुणे हैं, यह कहना चाहिये ।

अब सर्व परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— नपुंसकवेदी उपशामक जीव सबसे स्तोक हैं । नपुंसकवेदी क्षपक जीव संख्यातगुणे हैं । स्त्रीवेदी उपशामक जीव नपुंसकवेदी क्षपकोंका जितना प्रमाण है उतने ही हैं । स्त्रीवेदी क्षपक जीव स्त्रीवेदी उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । पुरुषवेदी उपशामक जीव स्त्रीवेदी क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं । पुरुषवेदी क्षपक जीव पुरुषवेदी उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । नपुंसकवेदमें अप्रमत्तसंयत जीव पुरुषवेदी क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं । नपुंसकवेदमें ही प्रमत्तसंयत जीव नपुंसकवेदी अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । स्त्रीवेदी अप्रमत्तसंयत जीव नपुंसकवेदी प्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । स्त्रीवेदमें ही प्रमत्तसंयत जीव स्त्रीवेदी अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । सयोगिकेवली जीव स्त्रीवेदी प्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । पुरुषवेदी अप्रमत्तसंयत जीव सयोगिकेवलीयोंसे संख्यात-

चेव पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पुरिसवेदअसंजदसम्माइड्ढिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाइड्ढिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइड्ढिअवहारकालो संखेज्जगुणो । संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । इत्थिवेदअसंजदसम्माइड्ढिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाइड्ढिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइड्ढिअवहारकालो संखेज्जगुणो । संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । णवुंसयवेदअसंजदसम्माइड्ढिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाइड्ढिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइड्ढिअवहारकालो संखेज्जगुणो । संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । एवं पडिलोमेण णेदव्वं जाव पलिदोवमं ति । तदो इत्थिवेदमिच्छाइड्ढिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । पुरिसवेदमिच्छाइड्ढिअवहारकालो संखेज्जगुणो । तस्सेव विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । इत्थिवेदमिच्छाइड्ढिविक्खंभसूई संखेज्जगुणा । सेढी असंखेज्जगुणा । पुरिसवेदमिच्छाइड्ढि-

गुणे हैं । पुरुषवेदमें ही प्रमत्तसंयत जीव पुरुषवेदी अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । पुरुषवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल पुरुषवेदी प्रमत्तसंयतोंसे असंख्यातगुणा है । पुरुषवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल पुरुषवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । पुरुषवेदी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल पुरुषवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है । पुरुषवेदी संयतासंयतोंका अवहारकाल पुरुषवेदी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल पुरुषवेदी संयतासंयतोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । स्त्रीवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल स्त्रीवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे संख्यातगुणा है । स्त्रीवेदी संयतासंयतोंका अवहारकाल स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । नपुंसकवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल स्त्रीवेदी संयतासंयतोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । नपुंसकवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल नपुंसकवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल नपुंसकवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे संख्यातगुणा है । नपुंसकवेदी संयतासंयतोंका अवहारकाल नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । उन्हीं नपुंसकवेदी संयतासंयतोंका द्रव्य अपने अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार प्रतिलोमक्रमसे पल्योपमतक ले जाना चाहिये । पल्योपमसे स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है । उन्हीं पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची उन्हींके अवहारकालसे असंख्यातगुणी है । स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूचीसे संख्यातगुणी है । जगश्रेणी स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणी है ।

दव्वमसंखेज्जगुणं । इत्थिवेदमिच्छाइद्विद्वं संखेज्जगुणं । पदरमसंखेज्जगुणं । लोगो असंखेज्जगुणो । अवगतवेदा अणंतगुणा । णवुंसयवेदमिच्छाइद्वी अणंतगुणा (वेदगुणपडि-
वण्णगुणमारो णं णव्वदि त्ति के वि आइरिया भणंति । तेसिमभिप्पाएण सव्वपरत्थाणं
बुच्चदे । सव्वत्थोवा अप्पमत्तसंजदा तिवेदगदा) (पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । संजदा)
तिवेदा विसेसाहिया । तिवेदअसंजदसम्माइद्विअवहारकालो असंखेज्जगुणो । एवं णेदव्वं
जाव पलिदोवमं ति । उवरि इत्थिवेदमिच्छाइद्विअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तदुवरि पुव्वं
व वत्तव्वं ।

एवं वेदमगणा समता ।

कसायाणुवादेण क्रोधकसाइ-माणकसाइ-मायकसाइ-लोभकसाईसु
मिच्छाइद्विप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति ओघं ॥ १३५ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो बुच्चदे । तं जहा— अणंतत्तणेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि-

पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य जगश्रेणीसे असंख्यातगुणा है । स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य
पुरुषवेद मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे संख्यातगुणा है । जगप्रतर स्त्रीवेद मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे असंख्यात-
गुणा है । लोक जगप्रतरसे असंख्यातगुणा है । अपगतवेदी जीव लोकसे अनन्तगुणे हैं -
नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीव अपगतवेदियोंसे अनन्तगुणे हैं । वेद गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके
अवहारकालका गुणकार ज्ञात नहीं है, ऐसा कितने ही आचार्योंका कथन है । आगे उन्हींके
अभिप्रायानुसार सर्व परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करते हैं । तीनों वेदोंसे युक्त अप्रमत्तसंयत
जीव सबसे स्तोके हैं । तीनों वेदोंसे युक्त प्रमत्तसंयत जीव उनसे संख्यातगुणे हैं । तीन
वेदवाले संयत जीव विशेष अधिक हैं । त्रिवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असंख्या-
तगुणा है । इसीप्रकार पत्योपमतक ले जाना चाहिये । इससे ऊपर स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टियोंका
अवहारकाल असंख्यातगुणा है । इससे ऊपर पहलेके समान कथन करना चाहिये ।

इसप्रकार वेदमार्गणा समाप्त हुई ।

कषायमार्गणाके अनुवादसे क्रोधकषायी, मानकषायी, मायाकषायी और लोभ-
कषायी जीवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानतक प्रत्येक
गुणस्थानमें जीव सामान्य प्ररूपणाके समान हैं ॥ १३५ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । वह इसप्रकार है— अनन्तत्वकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि जीव
और पत्योपमके असंख्यातवें भागत्वकी अपेक्षा गुणस्थानप्रतिपन्न जीव ओघ मिथ्यादृष्टि और

१ प्रतिपु ' -गुणगारेण ' इति पाठः ।

२ कषायानुवादेन क्रोधमानमायासु मिथ्यादृष्ट्यादयः संयतासंयतान्ताः सामान्योत्तसंख्याः । लोभकषायण-
मुक्त एव क्रमः । स. सि. १, ८.

भागत्तणेण च मिच्छाइट्ठी गुणपडिवण्णा च ओघमिच्छाइट्ठि-गुणपडिवण्णेहि समाणा त्ति कट्ट सुत्ते एदेसिं परुवणा ओघमिदि वुत्ता । पज्जवट्टियणए पुण अवलंबिज्जमाणे अत्थि विसेसो । तं कथं ? चदुकसायमिच्छाइट्ठीसु तिरिक्खरासी पहाणो, सेसगदिरासिस्स तदर्णतभागत्तादो । तत्थ वि चदुकसायमिच्छाइट्ठिरासी ण' अण्णोणेण समाणो । कुदो ? तदद्धानं सारिच्छाभावा । तं जहा—

तिरिक्ख-मणुसेसु सव्वत्थोवा माणद्धा । कोधद्धा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तेण । मायद्धा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तो विसेसो ? पुच्चं परुविदो । लोभद्धा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तो विसेसो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो । ण च अद्दासु असरिसासु तत्थ ट्टिदरासीणं समाणणिग्गम-पवेसाणं संताणं पडि गंगाप-वाहो व्व अवट्टिदाणं सरिसत्तं जुज्जेद । तदो चउण्हमद्धानं समासं काऊण चदुकसाइमिच्छा-इट्ठिरासिंहि भागे हिदे लद्धं चउप्पडिरासिं करिय माणादीणमद्दाहि पडिवाडीए गुणिदे सग-सगरासीओ भवंति । एदमट्टपदं काऊण चदुकसाइमिच्छाइट्ठिस्स रासिस्स अवहार-

गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके समान हैं, ऐसा समझकर सूत्रमें क्रोधादि कषाययुक्त ओघ मिथ्यादृष्टि और ओघ गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंकी प्ररूपणा ओघप्ररूपणाके समान है, यह कहा । परंतु पर्या-यार्थिक नयका अवलम्बन करने पर विशेषता है ही ।

शंका—यह विशेषता कैसे है ?

समाधान—चारों कषायवाले मिथ्यादृष्टि जीवोंमें तिर्यंचराशि प्रधान है, क्योंकि, शेष तीन गतिसंबन्धी जीवराशि तिर्यंचराशिके अनन्तर्वे भाग है । उसमें भी चारों कषायवाली मिथ्यादृष्टिराशि परस्पर समान नहीं है, क्योंकि, चारों कषायोंका काल समान नहीं है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है—तिर्यंच और मनुष्योंमें मानका काल सबसे स्तोक है । क्रोधका काल मानकालसे विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? आवलीके असंख्यातर्वे भागमात्र विशेषसे अधिक है । मायाका काल क्रोधके कालसे विशेष अधिक है । कितनामात्र विशेष है ? पहले प्ररूपण कर दिया है, अर्थात् आवलीका असंख्यातर्वां भाग विशेष है । लोभका काल मायाके कालसे विशेष अधिक है । कितनामात्र विशेष है ? आवलीका असंख्यातर्वां भागप्रमाण विशेष अधिक है । इसप्रकार कालोंके विसदृश रहने पर जिनका निर्गम और प्रवेश समान है और संतानकी अपेक्षा गंगानदीके प्रवाहके समान जो अवस्थित हैं, ऐसी वहां स्थित उन राशियोंकी सदृशता नहीं बन सकती है । तदनन्तर चारों कषायोंके कालोंका योग करके उसका चारों कषायवाली मिथ्यादृष्टिराशिमें भाग देने पर जो लब्ध आवे उसकी चार प्रतिराशियां करके मानादिकके कालोंसे परिपाटीक्रमसे

१ प्रतिषु ' ण ' इति पाठः ।

२ णरतिरियलोभमायाकीहो भाणे विहंदियादिञ्च । आवलिअसंखभज्जा सगकालं व समासेञ्ज ॥ गो. जी. १९८.

कालो वुच्चदे—

चउकसाइगुणपडिवण्णपमाणमकसाइपमाणं च चदुकसाइमिच्छाइट्टिरासिभजिद-
तव्वगं च सव्वजीवरासिस्सुवरि पक्खित्ते चदुकसाइधुवरासी होदि । तं चदुहि गुणिदे कसाय-
रासिचदुब्भागस्स भागहारो होदि । पुणो तम्मि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे लद्धं
तम्मि चेव पक्खित्ते माणकसाइधुवरासी होदि । पुव्वभागहारमब्भहियं काऊण कसायचउ-
ब्भागभागहाररासिम्मि भागे हिदे लद्धं तम्मि चेव पक्खित्ते क्रोधकसाइधुवरासी होदि । पुणो
क्रोधकसाइभागहारमब्भहियं काऊण पुव्विल्लधुवरासिम्मि भागे हिदे लद्धं तम्मि चेव पक्खित्ते
मायकसाइधुवरासी होदि । कसायचउब्भागधुवरासिमावलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिय
लद्धं तम्मि चेव अवणिदे लोभकसाइधुवरासी होदि । एदेहि अवहारकालेहि सव्वजीव-
रासिस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे सग-सगरासीओ आगच्छंति । तिण्हं कसायमिच्छाइट्टीणं
पमाणं सव्वजीवरासिस्स चउब्भागो देसुणो । लोभकसाइमिच्छाइट्टिपमाणं चदुब्भागो
सादिरेगो । गुणपडिवण्णेसु देवरासी पहाणो । कुदो ? सेसगदिरासिस्स तदसंखेज्जदि-

गुणित करने पर अपनी अपनी राशियां होती हैं । इस अर्थपदको समझकर चार कषायवाली
मिथ्यादृष्टिराशिका अवहारकाल कहते हैं—

गुणस्थानप्रतिपन्न चारों कषायवाले जीवोंके प्रमाणको और कषाय रहित जीवोंके
प्रमाणको तथा चारों कषायवाले मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाणसे भक्त पूर्वोक्त दोनों राशियोंके
वर्गको सर्व जीवराशिके ऊपर प्रक्षिप्त करने पर चारों कषायवाले जीवोंकी ध्रुवराशि होती
है । उसे चारसे गुणित करने पर कषायराशिके चौथे भागका भागहार होता है । पुनः इसे
आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसीमें मिला देने पर
मानकषायवाले जीवोंकी ध्रुवराशि होती है । पुनः इस भागहारको अभ्यधिक करके उसका
कषायराशिके चौथे भागकी भागहारराशिमें भाग देने पर जो लब्ध आवे उसे उसी भागहार-
राशिमें मिला देने पर क्रोधकषायवाले जीवोंकी ध्रुवराशि होती है । पुनः क्रोधकषायके
भागहारको अभ्यधिक करके उसका पूर्वोक्त ध्रुवराशिमें भाग देने पर जो लब्ध आवे उसे
उसी ध्रुवराशिमें मिला देने पर मायाकषायवाले जीवोंकी ध्रुवराशि होती है । कषायराशिके
चौथे भागकी ध्रुवराशिको (भागहारको) आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके जो लब्ध
आवे उसे उसी ध्रुवराशिमेंसे निकाल लेने पर लोभकषाय जीवोंकी ध्रुवराशि होती है । इन
अवहारकालोंसे सर्व जीवराशिके उपरिम वर्गके भाजित करने पर अपनी अपनी राशियां आती
हैं । क्रोध, मान, और माया, इन तीनों कषायवाले मिथ्यादृष्टियोंका पृथक् पृथक् प्रमाण सर्व
जीवराशिका कुछ कम चौथा भाग है । लोभकषायवाले मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण कुछ
अधिक चौथा भाग है । गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंमें देवराशि प्रधान है, क्योंकि, शेष तीन
गतियोंकी गुणस्थानप्रतिपन्न जीवराशि गुणस्थानप्रतिपन्न देवराशिके असंख्यातवें भाग है ।

भागत्तादो । देवेषु चउकसायगुणपडिवण्णरासी ण समाणो तदद्धानाणं समाणत्ताभावादो । तं जहा— देवेषु सव्वत्थोवा कोधद्वा । माणद्वा संखेज्जगुणा । मायद्वा संखेज्जगुणा । लोभद्वा संखेज्जगुणा । णेरईएसु सव्वत्थोवा लोभद्वा । मायद्वा संखेज्जगुणा । माणद्वा संखेज्जगुणा । कोधद्वा संखेज्जगुणा । एत्थ देवगदिअद्धानं समासं काऊण ओघअसंजदरासिं खंडिय चउप्पडिरासिं काऊण परिवाडीए कोधादिअद्वाहि गुणिदे सग-सगरासीओ भवंति । एवं सम्मामिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणं पि कायव्वं । संजदासंजदाणं पुण त्तिरिक्खगइअद्वासमासं काऊण ओघसंजदासंजदरासिं खंडिय चदुप्पडिरासिं करिय क्रमेण कोधादिअद्वाहि गुणिदे सग-सगरासीओ भवंति । एदेण वीयपदेण एदेसिमवहार-कालुप्पत्ती वुच्चदे । तं जहा— ओघअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालं संखेज्जरूवेहि खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते लोभकसाइअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे मायकसाइअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि

देवोंमें चारों कषायवाली गुणस्थानप्रतिपन्न जीवराशि समान नहीं है, क्योंकि, उन चारों कषायोंके काल समान नहीं हैं । आगे इसी विषयका स्पष्टीकरण करते हैं— देवोंमें क्रोधका काल सबसे स्तोत्र है । मानका काल उससे संख्यातगुणा है । मायाका काल मानके कालसे संख्यातगुणा है । लोभका काल मायाके कालसे संख्यातगुणा है । नारकियोंमें लोभका काल सबसे स्तोत्र है । मायाका काल लोभके कालसे संख्यातगुणा है । मानका काल मायाके कालसे संख्यातगुणा है । क्रोधका काल मानके कालसे संख्यातगुणा है । यहां देवगतिके कषायसंबन्धी कालका योग करके उससे देवोंकी ओघ असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिको खंडित करके जो लब्ध आवे उसकी चार प्रतिराशियां करके उन्हें परिपाटीक्रमसे क्रोधादिकके कालोंसे गुणित करने पर अपनी अपनी राशियां होती हैं । इसीप्रकार सम्यग्मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशियोंका भी करना चाहिये । संयतासंयतोंका प्रमाण लाते समय तो तिर्यचगतिसंबन्धी कषायोंके कालका योग करके और उससे ओघसंयतासंयत राशिको खंडित करके जो लब्ध आवे उसकी चार प्रतिराशियां करके क्रमसे क्रोधादिकके कालोंसे गुणित करने पर अपनी अपनी राशियां होती हैं । इस बीजपदके अनुसार इन पूर्वोक्त राशियोंके अवहारकालकी उत्पत्तिको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है— ओघ असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको संख्यातसे खंडित करके जो लब्ध आवे उसे उसी अवहारकालमें मिला देने पर लोभकषायवाले असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इस लोभ असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर मायाकषायवाले असंयत-

१ पुइ पुइ कसायकालो गिरये अंतोमुहुत्तपरिमाणो । लोहादी संखगुणा देवेषु य कोइपहुदीदो ॥ सध्व-
 वसासेणवहिदसगसगरासी पुणो वि संशुणिदे । सगसगगुणगारेहिं य सगसगरासीण परिमाणं ॥ गो. जी. २९६, २९७.

२ प्रतिशु ' कोधाओ ' इति पाठः ।

गुणिदे माणकसाइअसंजदसम्माइड्डिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे कोधकसाइअसंजदसम्माइड्डिअवहारकालो होदि । एवं सम्मामिच्छाइड्डि-सासणसम्माइड्डिणं पि वत्तव्वं । ओघसंजदासंजदअवहारकालं चदुहि गुणिय चदुप्पडिरासिं काऊण तत्थेग-रासिमसंखेज्जेहि रूवेहि खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते माणकसाइसंजदासंजदअवहार-कालो होदि । पुणो पुव्वभागहारमव्वभहियं काऊण चदुगुणियभागहारं खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते कोधकसाइसंजदासंजदअवहारकालो होदि । पुणो पुव्वभागहारमव्वभहियं काऊण चदुगुणिदअवहारकालं खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते मायकसाइसंजदासंजद-अवहारकालो होदि । चदुगुणभागहारमसंखेज्जरूवेहिं खंडिय लद्धं तम्हि चेव अवणिदे लोभकसाइसंजदासंजदअवहारकालो होदि ।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणियट्ठि ति दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा' ॥ १३६ ॥

ओघमिदि अभणिय संखेज्जा इदि किमड्डं वुच्चदे ? ण एस दोसो, कुदो ? ओघ-

सम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इस मायाकषाय असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर मानकषायवाले असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इस मानकषाय असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर क्रोधकषायी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसीप्रकार सम्यग्मिथ्यादृष्टि और सासादन-सम्यग्दृष्टियोंका भी कथन करना चाहिये । ओघ संयतासंयतोंके अवहारकालको चारसे गुणित करके जो लब्ध आवे उसकी चार प्रतिराशियां करके उनमेंसे एक राशिको असंख्यातसे खंडित करके जो लब्ध आवे उसे उसी राशिमें मिला देने पर मानकषायवाले संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है । पुनः पूर्व भागहारको अभ्यधिक करके और उससे चतुर्गुणित भाग-हारको खंडित करके जो लब्ध आवे उसे उसीमें मिला देने पर क्रोधकषायी संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है । पुनः पूर्व भागहारको अभ्यधिक करके और उससे चतुर्गुणित अवहार-कालको खंडित करके जो लब्ध आवे उसे उसीमें मिला देने पर मायाकषायी संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है । चतुर्गुणित भागहारको असंख्यातसे खंडित करके जो लब्ध आवे उसे उसी चतुर्गुणित भागहारमेंसे घटा देने पर लोभकषायी संयतसंयतोंका अवहारकाल होता है ।

प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थानतक चारों कषायवाले जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ १३६ ॥

शंका—सूत्रमें ' ओघ ' ऐसा न बह कर ' संखेज्जा ' इसप्रकार किसलिये कहा है ?

१ प्रमत्तसंयतादयोऽनिवृत्तिनादराताः संख्येयाः । स. सि. १, ८.

पमत्तादिरासिं चदुण्हं कसायाणं पडिभागेण चउविहा विहत्ते तत्थ ओघरासिपमाणाणुव-
लंभादो । कधमेत्थ विहज्जेदे ? वुच्चदे— चउण्हं कसायाणमद्वासमासं करिय चदुप्पडिरासिं
अप्पप्पणो अद्वाहि ओवट्टिय लद्धसंखेज्जरूवेहि इच्छिदरासिंहि भागे हिदे सग-सगरासीओ
भवन्ति । एत्थ चोदगो भणदि— पमत्तादीणं चदुकसायरासीओ समाणा आवलियाए
असंखेज्जादिभागमेत्तद्वाविसेसाओ त्ति । आवलिअसंखेज्जादिभागमेत्तद्वाविसेसत्ते वि ण
रासीणं विसेसाहियत्तं विरुज्जेदे, पवेसांतराणं संखाणियमाभावादो । तेणेत्थ तेरासियं ण
कीरदे ? ण, पमत्तादिसु माणकसायरासी थोवे । क्रोधकसायरासी विसेसाहियो । माय-
कसायरासी विसेसाहियो । लोभकसायरासी विसेसाहियो ।

णवरि लोभकसाईसु सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदा उवसमा खवा
मूलोषं ॥ १३७ ॥

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, ओघ प्रमत्तसंयत आदि राशिको चार
कषायोंके भागद्वारसे भाजित करने पर वहां ओघराशिका प्रमाण प्राप्त नहीं हो सकता है ।

शंका— इन राशियोंका यह विभाग किसप्रकार होता है ?

समाधान—चारों कषायोंके कालोंका योग करके और उसकी चार प्रतिराशियां
करके अपने अपने कालसे अपवर्तित करके जो संख्यात लब्ध आवें उससे इच्छित राशिके
भाजित करने पर अपनी अपनी राशियां होती हैं ।

शंका— यहाँ पर शंकाकार कहता है, एक तो प्रमत्तसंयत आविमें चारों कषायराशियां
समान हैं, क्योंकि, यहाँ पर आवलीके असंख्यातवें भागप्रमाण कालकी विशेषता नहीं है ?
दूसरे, आवलीके असंख्यातवें भागप्रमाण कालकी विशेषता नहीं होने पर भी राशियोंकी विशेषां-
धिकता विरोधको प्राप्त नहीं होती है, क्योंकि प्रवेशान्तर करनेवाले जीवोंके संख्याका कोई
नियम नहीं पाया जाता है । इसलिये यहाँ पर त्रैराशिक नहीं करना चाहिये ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, प्रमत्तसंयत आदि गुणस्थानोंमें मानकषाय जीवराशि
सबसे स्तोक है । क्रोधकषाय जीवराशि मानकषाय राशिसे विशेष अधिक है । मायाकषाय
जीवराशि क्रोधकषाय राशिसे विशेष अधिक है । लोभकषाय जीवराशि मायाकषाय जीवराशिसे
विशेष अधिक है ।

इतना विशेष है कि लोभकषायी जीवोंमें सूक्ष्मसांपरायिक शुद्धिसंयत उपशमक
और क्षपक जीव मूलोष प्ररूपणाके समान हैं ॥ १३७ ॥

१ आ प्रती 'मेत्तद्वाए' इति पाठः ।

२ अयं तु विशेषः, सूक्ष्मसांपरायसंयताः सामान्योक्तसंख्याः । स. सि. १, ६.

खवगोवसामगसुहुमसांपराइएसु सुहुमलोभकसायवदिरित्सांपरायाभावादो ओघत्तं ण विरुज्झदे ।

अकसाईसु उवसंतकसायवीदरागछदुमत्था ओघं ॥ १३८ ॥

एत्थ भावकसायाभावं पेक्खिऊण उवसंतकसाया अकसाइणो ण दच्चकसायाभावं पडि, उदओदीरणोकड्डणुकड्डण-परपयडिसंकमादिविरहिददच्चकम्मस्स तत्थुवलंभादे । चउ-व्विहदच्चकम्मभेएण चउव्विहत्तो मूलो उवसंतकसायरासी कधं पादेकं मूलोघपमाणं पावदे ? ण एस दोसो, कुदो ? वुच्चदे— ण ताव दच्चकसायविसेसणमेत्थ संभवइ, तेण अहियाराभावा । ण भावकसायविसेसणं पि संभवइ, तस्स तत्थाभावादो । तदो उवसंत-कसायरासी ण चदुविहा विहज्जेदो तो चेव मूलोघत्तं पि तस्स ण विरुज्झदि त्ति ।

(स्त्रीणकसायवीदरागछदुमत्था अजोगिकेवली ओघं ॥ १३९ ॥)

क्षपक और उपशामक सूक्ष्म सांपरायिक जीवोंमें सूक्ष्म लोभ कषायसे व्यतिरिक्त कषाय नहीं पाई जानेके कारण सूक्ष्म लोभियोंके प्रमाणको ओघत्वका प्रतिपादन करना विरोधको प्राप्त नहीं होता है ।

कषायरहित जीवोंमें उपशान्तकषाय वीतराग छद्मस्थ जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १३८ ॥

यहां भाव कषायका अभाव देखकर उपशान्तकषाय जीवोंको भकषायी कहा है, द्रव्य कषायके अभावकी अपेक्षासे नहीं, क्योंकि, उदय, उदीरणा, अपकर्षण, उत्कर्षण और परप्रकृतिसंक्रमण आदिसे रहित द्रव्य कर्म वहां उपशान्तकषाय गुणस्थानमें पाया जाता है ।

शंका— द्रव्य कर्म चार प्रकारका होनेसे चार भेदोंमें विभक्त मूल उपशान्तकषायराशि प्रत्येक मूलोघ प्रमाणको कैसे प्राप्त होती है ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है । दोष क्यों नहीं है, आगे इसीका कारण कहते हैं— द्रव्यकषायरूप विशेषण तो यहां संभव नहीं है, क्योंकि, उसका यहां अधिकार नहीं है । भावकषाय विशेषण भी संभव नहीं है, क्योंकि, भावकषाय वहां पाया नहीं जाता है । अतएव उपशान्तकषाय जीवराशि चार भेदोंमें विभक्त नहीं होती है और इसलिये उसके मूलोघपना भी विरोधको प्राप्त नहीं होता है ।

स्त्रीणकषायवीतरागछद्मस्थ जीव और अजोगिकेवली जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १३९ ॥

एत्थ समुच्चयद्वं च-सदोवादानं कायव्वं ? ण, च-सदेण विणा वि तदद्वोवलदीदो । एदेसिं दोण्हं गुणद्वानाणभेगजोगकरणं किमद्वमिदि चे, ण एस दोसो, द्वयपमाणं पडि एदेसिं गुणद्वानाणं पच्चासत्तिं पेक्खिय एगत्तविरोहाभावादो । ण च ओघत्तं विरुज्झदे, णिव्विसेसणत्तादो ।

सजोगिकेवली ओघं ॥ १४० ॥

सजोगि अजोगिकेवलीणभेगमेव सुत्तं किण्ण कीरदे, केवलित्तं पडि पच्चासत्ति-संभवादो ? ण, दोण्हं पमाणगदपहाणपच्चासत्तीए अभावादो । कधं पमाणस्स पधानत्तं ? तेणेत्थ अहियारादो । सेसं सुगमं ।

भागाभागं वत्तइस्सामो । सव्वजीवरासिमणंतखंडे कए तत्थ बहुखंडा चउकसाय-मिच्छाइद्विणो भवंति । एगखंडमकसाइणो गुणपडिवण्णा च । पुणो चउकसायमिच्छाइद्वि-रासिमावलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिय तत्थेगखंडं पुध इविय सेसबहुखंडे चत्तारि

शंका—इस सूत्रमें समुच्चयार्थ च शब्दका ग्रहण करना चाहिये ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, च शब्दके विना भी समुच्चयरूप अर्थकी उपलब्धि हो जाती है ।

शंका—इन दोनों गुणस्थानोंका एक योग किसलिये किया है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, द्रव्यप्रमाणके प्रति दोनों गुणस्थानोंकी प्रत्यासत्ति देखकर एक योग करनेमें कोई विरोध नहीं आता है ।

ओघत्व भी विरोधको प्राप्त नहीं होता है, क्योंकि, ये दोनों गुणस्थान निर्विशेषण हैं । सयोगिकेवली जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १४० ॥

शंका—सयोगिकेवली और अयोगिकेवली, इन दोनोंका एक ही सूत्र क्यों नहीं बनाया है, क्योंकि, केवलित्वके प्रति इन दोनोंकी प्रत्यासत्ति पाई जाती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, इन दोनोंकी प्रमाणगत प्रधान प्रत्यासत्ति नहीं पाई जाती है, इसलिये इन दोनोंका एक सूत्र नहीं किया ।

शंका—प्रमाणको प्रधानता किस कारणसे है ?

समाधान—क्योंकि, यहाँ उसका अधिकार है । शेष कथन सुगम है ।

अब भागाभागको बतलाते हैं—सर्व जीवराशिके अनन्त खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग चार कषाय मिथ्यादृष्टि जीव हैं और एक भागप्रमाण अकषायी और गुणस्थानप्रतिपक्ष जीव हैं । पुनः चार कषाय मिथ्यादृष्टि राशिको आवलीके असंख्यातर्षे भागसे खंडित करके उनमेंसे एक खंडको पृथक् करके शेष बहुभागके चार समान पुंज करके स्थापित करना

१ अ प्रती ' गणात्तविरोहादो भावादो ' इति पाठः ।

संमपुंजे करिय इवेदव्वं । पुणो अवणिदएयखंडमावलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडेऊण तत्थ बहुखंडे पढमपुंजे पक्खित्ते लोभकसायमिच्छाइट्टिरासी होदि । सेसेयखंडमावलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडेऊण बहुखंडे विदियपुंजे पक्खित्ते मायकसायमिच्छाइट्टिरासी होदि । सेसेयखंडमावलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिय बहुखंडे तदियपुंजे पक्खित्ते कौधकसायमिच्छाइट्टिरासी होदि । सेसं चउत्थपुंजे पक्खित्ते माणकसायमिच्छाइट्टिरासी होदि । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा अकसाया होंति । एत्तो उवरि कसायगुणगारेहितो सम्मामिच्छाइट्टिरासिं पडि सासणसम्माइट्टिगुणगारो संखेज्जगुणो त्ति उवएसमवलंबिय भागाभागो वुच्चदे । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा लोभकसायअसंजदसम्माइट्टिरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मायकसायअसंजदसम्माइट्टिरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा माणकसायअसंजदसम्माइट्टिरासी होदि । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा कौधकसायअसंजदसम्माइट्टिरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा लोभकसायसम्मामिच्छाइट्टिरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मायकसायसम्मामिच्छाइट्टिरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा माणकसायसम्मामिच्छाइट्टिरासी

चाहिये । पुन निकालकर पृथक् रखे हुए एक भागको आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके उनमेंसे बहुभाग पहले पुंजमें मिला देने पर लोभकषाय मिथ्यादृष्टि जीवराशि होती है । शेष एक खंडको आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके बहुभाग दूसरे पुंजमें मिला देने पर मायाकषाय मिथ्यादृष्टि जीवराशि होती है । शेष एक खंडको आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके बहुभाग तीसरे पुंजमें मिला देने पर क्रोधकषायी मिथ्यादृष्टि जीवराशि होती है । शेष एक भागको चौथे पुंजमें मिला देने पर मानकषाय मिथ्यादृष्टि राशि होती है । सर्व जीवराशिके अनन्त खंडोंमेंसे जो एक खंड प्रमाण अकषायी और गुणस्थानप्रतिपन्न बतलाये थे उस एक खंडके अनन्त खंड करने पर बहुभाग अकषाय जीव होते हैं । अब आगे कषायके गुणकारसे सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशिके प्रति सासावन-सम्यग्दृष्टिका गुणकार संख्यातगुणा है । इसप्रकारके उपदेशका अवलम्बन लेकर भागाभागका कथन करते हैं । शेषके संख्यात खंड करने पर बहुभाग लोभकषाय असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मायाकषाय असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मानकषाय असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग क्रोधकषाय असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग लोभकषाय सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मायाकषाय सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मानकषाय सम्यग्मिथ्यादृष्टि

होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा कोधकसायसम्मामिच्छाइट्टिरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा लोभकसायसासणसम्मामिच्छाइट्टिरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मायकसायसासणसम्मामिच्छाइट्टिरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा माणकसायसासणसम्मामिच्छाइट्टिरासी होदि । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा कोधकसायसासणसम्मामिच्छाइट्टिरासी होदि । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा चउकसायसंजदासंजदरासी होदि । तदे संजदासंजदरासिस्स असंखेज्जदिभागमवणिय सेसं चत्तारि समपुंजे करिय द्वेदव्वं । पुणो पुव्वमवणिदएयखंडमसंखेज्जखंडं करिय तत्थ बहुखंडे पढमपुंजे पक्खित्ते लोभकसाइसंजदासंजदरासी होदि । सेसमसंखेज्जखंडे करिय बहुखंडे विदियपुंजे पक्खित्ते मायकसाइसंजदासंजदरासी होदि । सेसमसंखेज्जखंडं करिय बहुखंडे तदियपुंजे पक्खित्ते कोधकसाइसंजदासंजदरासी होदि । सेसं चउत्थपुंजे पक्खित्ते माणकसाइसंजदासंजदरासी होदि । सेसं जाणिऊण णेयव्वं ।

अप्पाबहुगं तिविहं सत्थाणादिभेएण । तत्थ सत्थाणं वत्तइस्सामो । मिच्छाइट्टीणं सत्थाणं णत्थि, रासीदो मिच्छाइट्टिधुवरासिस्स अधिगत्तादो । असंजदसम्मामिच्छिप्पहुडि जाव संजदासंजदा ति सत्थाणस्स मूलोचभंगो ।

जीवराशि है । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग क्रोधकषाय सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग लोभकषाय सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मायाकषाय सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मानकषाय सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग क्रोधकषाय सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग चार कषाय संयतासंयत जीवराशि है । तदनन्तर संयतासंयत जीवराशिके असंख्यातवें भागको घटा कर शेषके चार समान पुंज करके स्थापित कर देना चाहिये । पुनः पहले घटा कर रखे हुए एक खंडके असंख्यात खंड करके उनमेंसे बहुभाग प्रथम पुंजमें प्रक्षिप्त करने पर लोभकषाय संयतासंयत जीवराशि होती है । शेष एक भागके असंख्यात खंड करके उनमेंसे बहुभाग दूसरे पुंजमें मिला देने पर मायाकषायी संयतासंयत जीवराशि होती है । शेष एक भागके असंख्यात खंड करके बहुभाग तीसरे पुंजमें मिला देने पर क्रोधकषायी संयतासंयत जीवराशि होती है । शेष एक भागको चौथे पुंजमें मिला देने पर मानकषायी संयतासंयत जीवराशि होती है । शेष कथन जानकर ले जाना चाहिये ।

स्वस्थान आदिके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है । उनमेंसे स्वस्थान अल्पबहुत्वको बतलाते हैं— मिथ्यादृष्टि जीवोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है, क्योंकि, मिथ्यादृष्टि जीवराशिसे मिथ्यादृष्टि ध्रुवराशि अधिक है । असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानतक स्वस्थान अल्पबहुत्व मूलोघ स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है ।

परस्थाने पयदं । सव्वत्थोवा कोधकसाइउवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । अप्प-
मत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । असंजदसम्माइड्डिअवहारकालो
असंखेज्जगुणो । एवं णेयव्वं जाव पलिदोवमं ति । कोधकसाइमिच्छाइड्डिरासी अणंतगुणो ।
एवं माण-माय-लोभाणं पि परस्थानं वत्तव्वं । अकसाइसु सव्वत्थोवा उवसंतकसाया ।
खीणकसाया संखेज्जगुणा । अजोगिकेवली तत्तिया चेव । सजोगिकेवली संखेज्जगुणा ।
सिद्धा अणंतगुणा ।

सव्वपरस्थाने पयदं । सव्वत्थोवा माणकसायउवसामगा । कोधकसायउवसामगा
विसेसाहिया । मायकसायउवसामगा विसेसाहिया । लोभकसायउवसामगा विसेसाहिया ।
माणकसाइखवगा विसेसाहिया । कोधकसाइखवगा विसेसाहिया । मायकसाइखवगा विसे-
साहिया । लोभकसाइखवगा विसेसाहिया । एवं जम्मि गुणद्वारे चत्तारि कसाया संभवति
तमस्सिऊण भणिदं । अण्णत्थुवसामएहिंतो खवगा दुगुणा चेव । संसारत्था अकसाया
संखेज्जगुणा । माणकसायअपमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । कोधकसायअपमत्तसंजदा विसे-

परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— क्रोधकषायी उपशामक जीव सबसे स्तोक है ।
क्रोधकषायी क्षपक जीव उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । क्रोधकषायी अप्रमत्तसंयत जीव
क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं । क्रोधकषायी प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं ।
क्रोधकषायी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल प्रमत्तसंयतोंसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार
पल्योपमतक ले जाना चाहिये । पल्योपमसे क्रोधकषायी मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण अनन्तगुणा
है । इसीप्रकार मान, माया और लोभकषायके परस्थान अल्पबहुत्वका भी कथन करना
चाहिये । कषायरहित जीवोंमें उपशान्तकषाय जीव सबसे स्तोक हैं । क्षीणकषाय जीव
उपशान्तकषाय जीवोंसे संख्यातगुणे हैं । अयोगिकेवली जीव उतने ही हैं । सयोगिकेवली
जीव अयोगियोंसे संख्यातगुणे हैं । सिद्ध जीव सयोगियोंसे अनन्तगुणे हैं ।

अथ सर्वपरस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— मानकषायी उपशामक जीव सबसे
स्तोक हैं । क्रोधकषायी उपशामक जीव मानकषायी उपशामकोंसे विशेष अधिक हैं । माया-
कषायी उपशामक जीव मानकषायी उपशामकोंसे विशेष अधिक हैं । लोभकषायी उपशामक जीव
मायाकषायी उपशामकोंसे विशेष अधिक हैं । मानकषायी क्षपक जीव लोभकषायी
उपशामकोंसे विशेष अधिक हैं । क्रोधकषायी क्षपक जीव मानकषायी क्षपकोंसे विशेष
अधिक हैं । मायाकषायी क्षपक जीव क्रोधकषायी क्षपकोंसे विशेष अधिक हैं । लोभकषायी
क्षपक जीव मायाकषायी क्षपकोंसे विशेष अधिक हैं । इसप्रकार जिस गुणस्थानमें चारों
कषाय संभव हैं उसका आश्रय लेकर कथन किया । अन्यत्र उपशामकोंसे क्षपक होने ही
होते हैं । कषाय रहित संसारी जीव लोभकषायी क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं । मानकषाय
अप्रमत्तसंयत जीव संसारी कषाय रहित जीवोंसे संख्यातगुणे हैं । क्रोधकषाय अप्रमत्तसंयत

मायकसायसंजदासंजदअवहारकालो विसेसाहिओ । कोधकसायसंजदासंजदअवहारकालो विसेसाहिओ । माणकसायसंजदासंजदअवहारकालो विसेसाहिओ । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । एवं अवहारकालपडिलोमेण णेयच्चं जाव पल्लिदोवमं ति । अकसाई अणंतगुणा । माणकसाइ-मिच्छाइट्ठी अणंतगुणा । कोधकसाइमिच्छाइट्ठी विसेसाहिया । मायकसाइमिच्छाइट्ठी विसेसाहिया । लोभकसाइमिच्छाइट्ठी विसेसाहिया ।

एवं कसायमग्गणा समत्ता ।

णाणाणुवादेण मदिअण्णाणि-सुदअण्णाणीसु मिच्छाइट्ठी सासण-सम्माइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, ओघं ॥ १४१ ॥

एदस्सत्थो वुच्चदे । तं जहा— ओघमिच्छाइट्ठी-सासणसम्माइट्ठिरासिणीहंतो मदि-सुदअण्णाणिमिच्छाइट्ठी-सासणसम्माइट्ठिरासिणो ण एकेण वि जीवेण ऊणा भवंति, दुवि-हणाणविरहिय-मिच्छाइट्ठी-सासणसम्मादिट्ठीणमभावादो । विभंगणाणिणो मिच्छाइट्ठी-सासण-

गुणा है । मायाकषाय संयतासंयतोंका अवहारकाल लोभकषाय संयतासंयत अवहारकालसे विशेष अधिक है । क्रोधकषाय संयतासंयतोंका अवहारकाल मायाकषाय संयतासंयत अवहारकालसे विशेष अधिक है । मानकषाय संयतासंयत अवहारकाल क्रोधकषाय संयतासंयत अवहारकालसे विशेष अधिक है । मानकषाय संयतासंयतोंका द्रव्य उन्हींके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार अवहारकालके प्रतिलोमक्रमसे पल्योपमतक ले जाना चाहिये । पल्योपमसे कषायरहित जीव अनन्तगुणे हैं । मानकषायी मिथ्यादृष्टि जीव कषायरहित जीवोंसे अनन्तगुणे हैं । क्रोधकषायी मिथ्यादृष्टि जीव मानकषायी मिथ्यादृष्टियोंसे विशेष अधिक हैं । मायाकषायी मिथ्यादृष्टि जीव क्रोधकषायी मिथ्यादृष्टियोंसे विशेष अधिक हैं । लोभकषायी मिथ्यादृष्टि जीव मायाकषायी मिथ्यादृष्टियोंसे विशेष अधिक हैं ।

इसप्रकार कषायमार्गणा समाप्त हुई ।

ज्ञानमार्गणाके अनुवादसे मत्त्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी जीवोंमें मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १४१ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । वह इसप्रकार है— ओघ मिथ्यादृष्टिराशि और ओघ सासादनसम्यग्दृष्टि राशिसे मत्त्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी मिथ्यादृष्टिराशि और सासादनसम्यग्दृष्टि जीव-राशि एक भी जीव प्रमाणसे कम नहीं है, क्योंकि, उक्त दोनों प्रकारके ज्ञानोंसे रहित मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि जीव नहीं पाये जाते हैं ।

१ ज्ञानानुवादेन मत्त्यज्ञानिनः श्रुताज्ञानिनश्च मिथ्यादृष्टिसासादनसम्यग्दृष्टयः सामान्योक्तसंख्याः । स. सि. १, ८. सण्णाणिरासिपंचयपरिहाणो सव्वजीवरासी हु । मदिसुदअण्णाणीणं पत्तयं होदि परिमाणं ॥ गो. जी. ४६४.

सम्मादिट्ठिणो अत्थि त्ति ओघमिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीहिंतो मदि-सुदअण्णाणिमिच्छा-दिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो ऊणा होंति त्ति ओघपमाणमेदेसि णत्थि त्ति चे ण, मदि-सुदअण्णाणिविरहिदविभंगणाणीणमणुवलंभादो तदो ओघमिदि सुट्ठु घडदे । एत्थ मदि-सुदअण्णाणिमिच्छाइट्ठिरासिस्स धुवरासी वुच्चदे । तं जहा—सिद्धतेरसगुणपडिवण्णरासिं मदि-सुदअण्णाणिमिच्छाइट्ठिरासिं भजिदत्तव्वग्गं च सव्वजीवरासिस्सुवरि पक्खित्ते मदि-सुदअण्णाणिमिच्छाइट्ठिधुवरासी होदि । ओघसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो चैव मदि-सुदअण्णाणिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि ।

विभंगणाणिसु मिच्छाइट्ठी द्वपमाणेण केवडिया, देवेहि सादिरेयं ॥ १४२ ॥

देवमिच्छाइट्ठिणो णेरइयमिच्छाइट्ठिणो च सव्वे विहंगणाणिणो, विहंगणाणभव-पच्चयसमण्णिदत्तादो । तिरिक्खविहंगणाणिणो वि पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता होंता वि

शंका—विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि जीव हैं, इसलिये ओघमिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टियोंके प्रमाणसे मत्त्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि जीव कम हो जाते हैं, इसलिये इनके ओघप्रमाणका निर्देश नहीं बन सकता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, मत्त्यज्ञानी और श्रुताज्ञानियोंको छोड़कर विभंगज्ञानी जीव पृथक् नहीं पाये जाते हैं, इसलिये इनका प्रमाण ओघप्ररूपणाके समान अच्छीतरह बन जाता है।

अब यहाँ पर मत्त्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवराशिकी धुवराशिका कथन करते हैं। वद इसप्रकार है—सिद्धराशि और तेरह गुणस्थानप्रतिपन्न राशिको तथा सिद्ध और तेरह गुणस्थान प्रतिपन्न राशिके वर्गमें मत्त्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी मिथ्यादृष्टि राशिका भाग देने पर जितना लब्ध आवे उसको सर्व जीवराशिमें मिला देने पर मत्त्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवोंकी धुवराशि होती है। ओघसासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल ही मत्त्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है।

विभंगज्ञानियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? देवोंसे कुछ अधिक हैं ॥ १४२ ॥

देव मिथ्यादृष्टि जीव और नारक मिथ्यादृष्टि जीव, ये सब विभंगज्ञानी होते हैं, क्योंकि, ये जीव भवप्रत्यय विभंगज्ञानसे युक्त होते हैं। तिर्यंच विभंगज्ञानी जीव जगप्रतरके

१ विभंगज्ञानिनो मिथ्यादृष्टयोऽसंख्येयाः श्रेणयः प्रतरासंख्येयभागप्रमिताः । स. सि. १, ८. पल्लासंख्येयगुलहदसेदितिरिक्खणदिविभंगजुदा । णरसहिदा किंचूणा चदुगदिवेभंगपरिमाणं ॥ गो. जी. ४६२.

असंखेजसेट्टिमेत्ता भवंति । तासिं सेट्ठीणं विक्खंभसूई असंखेज्जघणंगुलमेत्ता । केत्तिय-
मेत्ताणि घणंगुलाणि ? पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि । तदो देवमिच्छाइट्टिरासीदो
विहंगणाणमिच्छाइट्टिरासी विसेसाहिओ भवदि । विहंगणाणविरहिददेवापज्जत्तरासिं णेर-
इय-तिरिक्खविहंगणाणीहितो असंखेज्जगुणं देवेहिंतो अवणिदे देवेहिं सादिरेयत्तं ण घडदि ति
णासंकणिज्जं, विहंगणाणिसइस्सावित्तिकरणेण विहंगणाणिदेवा गं गहणादो । वेउच्चियमिस्स-
रासिस्स सांतरत्तेण, देवपज्जत्ताणं सच्चकालमसंभवा च । एदस्स अवहारकालो बुच्चदे ।
तं जहा— देवमिच्छाइट्टिअवहारकालमिह एगपदरंगुलं घेत्तूण असंखेज्जखंडं करिय तत्थेग-
खंडमवणिय बहुखंडे तमिह चैव पक्खित्ते विहंगणाणिमिच्छाइट्टिअवहारकालो होदि ।
एदेण जगपदरे भागे हिदे विहंगणाणिमिच्छाइट्टिरासी आगच्छदि ।

सासणसम्माइट्टी ओघं ॥ १४३ ॥

ओघसासणसम्माइट्टिरासीदो जदि वि एसो सासणसम्माइट्टिरासी अप्पणो असं-

असंख्यातवें भागप्रमाण होते हुए भी असंख्यात श्रेणीप्रमाण होते हैं । उन असंख्यात श्रेणियोंकी विष्कंभसूची असंख्यात घनांगुलप्रमाण है । वे असंख्यात घनांगुल कितने होते हैं ? पत्थोपमके असंख्यातवें भागमात्र होते हैं । अतएव देव मिथ्यादृष्टि जीवराशिसे विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवराशि विशेष अधिक होती है । नारक और तिर्यच विभंगज्ञानियोंसे विभंगज्ञानसे रहित देव अपर्याप्त राशि असंख्यातगुणी है । अतएव उसे देवराशिमेंसे घटा देने पर देवोंसे साधिक विभंगज्ञानियोंका प्रमाण नहीं बन सकता है, इसप्रकार भी आशंका नहीं करनी चाहिये, क्योंकि, प्रकृतमें विभंगज्ञानी शब्दकी आवृत्ति कर लेनेसे विभंगज्ञानी देवोंका ग्रहण किया है । दूसरे वैकियिकमिश्र राशि सान्तर होनेके कारण देव अपर्याप्त जीव सर्वदा पाये भी नहीं जाते हैं, इसलिये विभंगज्ञानियोंका प्रमाण देवोंसे साधिक है इस कथनमें भी कोई बाधा नहीं आती है ।

अब विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टि राशिका अवहारकाल कहते हैं । वह इसप्रकार है— देव मिथ्यादृष्टि राशिमेंसे एक प्रतरांगुलको ग्रहण करके और उसके असंख्यात खंड करके उनमेंसे एक खंडको निकाल कर बहुभाग उसी देव मिथ्यादृष्टि अवहारकालमें मिला देने पर विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इस अवहारकालसे जगप्रतरके भाजित करने पर विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

विभंगज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीव ओघप्ररूपणाके समान पत्थोपमके असं-
ख्यातवें भागप्रमाण हैं ॥ १४३ ॥

ओघ सासादनसम्यग्दृष्टि राशिसे यद्यपि यह विभंगज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि राशि

१ सासादनसम्यग्दृष्टिः पत्थोपमासंख्येयभागप्रमिताः । स. सि. १, ८.

खेज्जदिभाएण तिरिक्ख-मणुसदुणाणिपमाणेण हीणे, तो वि पलिदोवमस्त असंखेज्जदि-
भागमेत्तत्तणेण दोण्हं पि रासीणं पच्चासत्ती अत्थि त्ति ओघमिदि बुच्चदे ।

**अभिणिबोहियणाणि-सुदणाणि-ओहिणाणीसु असंजदसम्माइड्ढि-
प्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागच्छदुमत्था त्ति ओघं ॥ १४४ ॥**

आभिणिबोहिय-सुदणाणीणं पमाणस्स ओघत्तं जुज्जदे, तेहि विरहिद-असंजदसम्मा-
इड्ढिआदीणमणुवलंभादो । ण पुण ओहिणाणीणं ओघत्तं जुज्जदे, ओहिणाणविरहिदतिरिक्ख-
मणुस्ससम्माइड्ढीणमुवलंभा ? ण एस दोसो, बहुसो दत्तुत्तरादो ।

एदेसिमवहारकालुप्पत्ती बुच्चदे । तं जहा— आभिणिबोहियणाणि-सुदणाणिअसंजद-
सम्माइड्ढिअवहारकालो ओघअसंजदसम्माइड्ढिअवहारकालो चेव भवदि । तम्हि आवलियाए
असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते ओहिणाणिअसंजदसम्माइड्ढिअवहार-

अपने असंख्यातवें भागरूप मत्यज्ञान और श्रुताज्ञान इन दो अज्ञानोंसे युक्त तिर्यंच और मनुष्योंके
प्रमाणसे हीन है, तो भी पल्योपमके असंख्यातवें भागत्वकी अपेक्षा ओघसासादनसम्यग्दृष्टि
राशि और विभंगज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि राशि इन दोनोंकी प्रत्यासत्ति पाई जाती है,
इसलिये सूत्रमें 'ओघ' ऐसा कहा है ।

आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी और अवधिज्ञानी जीवोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि
गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय वीतराग छद्मस्थ गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीव
ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १४४ ॥

शंका— आभिनिबोधिक और श्रुतज्ञानी जीवोंके प्रमाणके ओघपना बन जाता है,
क्योंकि, इन दोनों ज्ञानोंके बिना असंयतसम्यग्दृष्टि आदि गुणस्थान नहीं पाये जाते हैं । परंतु
अवधिज्ञानियोंके प्रमाणके ओघपना नहीं बन सकता है, क्योंकि, अवधिज्ञानसे रहित तिर्यंच
और मनुष्य सम्यग्दृष्टि पाये जाते हैं ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, इस प्रकारके प्रश्नका अनेकवार उत्तर
दे आये हैं ।

अब इनके अवहारकालोंकी उत्पत्तिको कहते हैं । वह इसप्रकार है— ओघ असंयत-
सम्यग्दृष्टि जीवोंका अवहारकाल ही आभिनिबोधिकज्ञानी और श्रुतज्ञानी जीवोंका अवहारकाल
होता है । इसे आघलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी
अवहारकालमें मिला देने पर अवधिज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है ।

मतिश्रुतिज्ञानिनोऽसंयतसम्यग्दृष्टवादयः क्षीणकषायान्ताः सामान्योक्तसंख्याः । अवधिज्ञानिनोऽसंयतसम्यग्दृष्टि-
संयतासंयतान्ताः सामान्योक्तसंख्याः । स. सि. १, ८. चदुगादिमादिसुदबोहा पल्लासंखेज्जया ॥ गो. जी. ४६१.
ओहिरहिदा तिरिक्खा मदिणाणिअसंखमाणगा मणुगा । संखेज्जा हु तदूणा मदिणाणी ओहिपरिमाणं ॥ गो. जी. ४६२.

कालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे (मिस्समदि-सुदअण्णाणि-) सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं चेव पक्खित्ते मिस्सतिणाणिसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे मदि-सुदअण्णाणिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते त्रिहंगणाणिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे आभिनिबोहियणाणि-सुदणाणिसंजदासंजद-अवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे ओहिणाणिसंजदासंजद-अवहारकालो होदि । अहवा ओघअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालमिह आवलियाए असंखेज्जदि-भाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते तिणाणिसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे मिस्सतिणाणिसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे तिणाणिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलि-याए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे दुणाणिसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे मिस्सदुणाणिसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्ज-रूवेहि गुणिदे दुणाणिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदि-

इस अवधिज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर मिश्र दो ज्ञानी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असं-ख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी अवहारकालमें मिला देने पर मिश्र तीन ज्ञानवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर मत्तज्ञानी और श्रुतज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी अवहारकालमें मिला देने पर विभंगज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर आभिनिबोधिकज्ञानी और श्रुतज्ञानी संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर अवधिज्ञानी संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है । अथवा, ओघ असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी ओघ असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालमें मिला देने पर तीन ज्ञानवाले असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर मिश्र तीन ज्ञानवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर तीन अज्ञानवाले सासादनसम्यग्दृष्टि-योंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर दो ज्ञानवाले असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर मिश्र दो ज्ञानवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित

भाएण गुणिदे दुणाणिसंजदासंजदअवहारकालो होदि । तस्मि आवलियाए असंखेज्जदि-
भाएण गुणिदे तिणाणिसंजदासंजदअवहारकालो होदि । एदेहि अवहारकालेहि पलिदोवमे
भागे हिदे सग-सगरासीओ हवंति । पमत्तादीणं पमाणं ओघमेव भवदि, विसेसाभावादो ।
ओहिणाणिपमत्तादीणं पि ओघत्तं पत्ते तप्पडिसेहड्डमुत्तरसुत्तं भणदि—

णवरि विसेसो, ओहिणाणिसु पमत्तसंजदप्पहुडि जाव खीणकसाय-
वीयरायछदुमत्था ति द्व्यपमाणेण केवडिया, संखेज्जा' ॥ १४५ ॥

ओहिणाणिणो पमत्तसंजदा अपमत्तसंजदा च सग-सगरासिस्स संखेज्जदिभागमेत्ता
भवन्ति । किंतु एत्तिया इदि परिप्फुडं ण णवन्ति, संपहियकाले गुरूवएसाभावादो । णवरि
ओहिणाणिणो उवसामगा चोदस १४, खवगा अट्टावीस २८ ।

मणपज्जवणाणीसु पमत्तसंजदप्पहुडि जाव खीणकसायवीदराग-
छदुमत्था ति द्व्यपमाणेण केवडिया, संखेज्जा' ॥ १४६ ॥

पमत्तापमत्तगुणट्टाणेसु मणपज्जवणाणिणो तत्थट्टियदुणाणीणं संखेज्जदिभागमेत्ता

करने पर दो ज्ञानवाले संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है । इसे आधलीके असंख्यातवें
भागसे गुणित करने पर तीन ज्ञानवाले संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है । इन अवहार-
कालोंसे पृथक् पृथक् पल्योपमके भाजित करने पर अपनी अपनी राशियां आती हैं । प्रमत्तसंयत
आदिका प्रमाण ओघरूप ही होता है क्योंकि वहां विशेष का अभाव है । अवाधिज्ञानी प्रमत्तसंयत
आदिके प्रमाणको ओघत्वकी प्राप्ति होने पर उसका प्रतिषेध करनेकेलिये आगेका सूत्र कहते हैं—

इतना विशेष है कि अवाधिज्ञानियोंमें प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय
वीतराग छद्मस्थ गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने
हैं ? संख्यात हैं ॥ १४५ ॥

अवाधिज्ञानी प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत जीव अपनी अपनी राशिके संख्यातवें
भागमात्र होते हैं, किन्तु वे इतने ही होते हैं यह स्पष्ट नहीं जाना जाता है, क्योंकि, वर्तमान-
कालमें इसप्रकारका गुरुका उपदेश नहीं पाया जाता है । इतना विशेष है कि अवाधिज्ञानी
उपशामक चौदह और क्षपक अट्टाईस होते हैं ।

मनःपर्यायज्ञानियोंमें प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय वीतराग छद्मस्थ
गुणस्थानतक जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ १४६ ॥

प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत गुणस्थानोंमें मनःपर्यायज्ञानी जीव वहां स्थित हो

१ प्रमत्तसंयतादयः क्षीणकषायान्ताः संख्येयाः । स. सि. १, ८.

२ मनःपर्यायज्ञानिनः प्रमत्तसंयतादयः क्षीणकषायान्ताः संख्येयाः । स. सि. १, ८. मणपज्जा
संखेज्जा ॥ गो. जी. ४६१.

भवन्ति, लद्धिसंपण्णरासीणं बहूणमसंभवादो । ते च एत्तिया इदि सम्मं ण णव्वन्ति, संप-
हियकाले उवएसाम्भवादो । णवरि मणपज्जवणाणिणो उवसामगा दस १०, खवगा २० ।

(केवलणाणीसु सजोगिकेवली अजोगिकेवली ओघं ॥ १४७॥)
सुगममिदं सुत्तं ।

भागाभागं वत्तइस्सामो । सव्वजीवरासिमणंतखंडे कए बहुखंडा मदि-सुदअण्णाणि-
मिच्छाइट्ठिणो भवन्ति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा केवलणाणिणो भवन्ति । सेसम-
संखेज्जखंडे कए बहुखंडा विभंगणाणिमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए
बहुखंडा आभिणिबोहिय-सुदणाणिअसंजदसम्माइट्ठिणो भवन्ति । ते चैव पडिरासिं काऊण
आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चैव अवणिदे ओहिणाणिअसंजद-
सम्माइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मिससदुणाणिसम्माभिच्छाइट्ठिणो
होंति । ते चैव पडिरासिं काऊण आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि

ज्ञानवाले जीवोंके संख्यातवें भागमात्र होते हैं, क्योंकि, लब्धिसंपन्न राशियां बहुत नहीं हो
सकती हैं । फिर भी वे इतने ही होते हैं, यह ठीक नहीं जाना जाता है, क्योंकि वर्तमानकालमें
इसप्रकारका उपदेश नहीं पाया जाता है । इतना विशेष है कि मनःपर्ययज्ञानी उपशामक
दश और क्षपक वीस होते हैं ।

केवलज्ञानियोंमें सयोगिकेवली और अयोगिकेवली जीव ओघप्ररूपणाके समान
हैं ॥ १४७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अब भागाभागको बतलाते हैं—सर्व जीवराशिके अनन्त खंड करने पर उनमेंसे
बहुभाग मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने
पर उनमेंसे बहुभाग केवलज्ञानी जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग
विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग
आभिनिबोधिकज्ञानी और श्रुतज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं । इन्हीं आभिनिबोधिकज्ञानी
और श्रुतज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टियोंकी प्रतिराशि करके और उसे आवलीके असंख्यातवें
भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी प्रतिराशिमेंसे घटा देने पर अवधिज्ञानी
असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि होती है । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मिश्र
दो ज्ञानवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं । उन्हीं मिश्र दो ज्ञानवाले जीवोंके प्रमाणकी
प्रतिराशि करके और उसे आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे

१ प्रतिषु ' तद्धि ' इति पाठः ।

२ केवलज्ञानिनः सयोगा अयोगाश्च सामान्योक्तसंख्याः । स. सि. १, ८. केवलिणो सिद्धादो होंति
अदिरित्ता ॥ गो. जी. ४६१.

चेव अवणिदे मिस्सतिणाणिसम्मामिच्छाइट्ठी होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा मदि-सुदअण्णाणिसासणसम्माइट्ठिणो होंति । ते चेव पडिरासिं काऊण आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव अवणिदे विभंगणाणिसासणसम्माइट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा आभिणिबोहिय-सुदणाणिसंजदासंजदा होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा ओहिणाणिसंजदासंजदा होंति । सेसं जाणिय वत्तव्वं ।

अहवा सव्वजीवरासिमणंतखंडे कए बहुखंडा मदि-सुदअण्णाणिमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा केवलणाणिणो भवंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा विहंगणाणिमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा तिणाणिअसंजदसम्माइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा तिणाणिसम्मामिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा तिणाणिसासणसम्माइट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा दुणाणिअसंजदसम्माइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा दुणाणिसम्मामिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा दुणाणिसासणसम्माइट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा दुणाणिसंजदासंजदा होंति । सेसमसंखेज्जखंडे

उसे उसी प्रतिराशिमेंसे घटा देने पर मिश्र तीन ज्ञानवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीव होते हैं। उन्हीं मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिकी प्रतिराशि करके और उसे उसी आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी प्रतिराशिमेंसे घटा देने पर विभंगज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीव होते हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग आभिनिबोधिकज्ञानी और श्रुतज्ञानी संयतासंयत होते हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग अवधिज्ञानी संयतासंयत जीव होते हैं। शेष अल्पबहुत्वका जानकर कथन करना चाहिये। अथवा, सर्व जीवराशिके अनन्त खंड करने पर बहुभाग मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग केवलज्ञानी जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग तीन ज्ञानवाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग तीन ज्ञानवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग तीन ज्ञानवाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग दो ज्ञानवाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग दो ज्ञानवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग दो ज्ञानवाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग दो ज्ञानवाले संयतासंयत जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड

कए बहुखंडा तिणाणिसंजदासंजदा होंति । सेसं जाणिय वत्तव्वं ।

अप्पाबहुअं तिविहं सत्थाणादिभेएण । मदि-सुदअण्णाणीसु सत्थाणं पत्थि । कारणं पुव्वभणिदं । सासणसम्माइड्डिसत्थाणप्पाबहुगे ओघभंगो । विभंगणाणिमिच्छाइड्डीणं सत्थाणस्स देवमिच्छाइड्डीणं सत्थाणभंगो । तिणाणीसु मदि-सुदणाणीसु च असंजदसम्माइड्डि-संजदासंजदेसु सत्थाणमोघं । सत्थाणप्पाबहुगं गदं ।

परत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवो मदि-सुदअण्णाणिसासणसम्माइड्डिअवहारकालो । दव्वमसंखेज्जगुणं । पलिदोवममसंखेज्जगुणं । मिच्छाइड्डिदव्वमणंतगुणं । सव्वत्थोवो विभंगणाणिसासणसम्माइड्डिअवहारकालो । दव्वमसंखेज्जगुणं । पलिदोवममसंखेज्जगुणं । विभंगणाणिमिच्छाइड्डिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । (सेठी असंखेज्जगुणा ।) दव्वमसंखेज्जगुणं । पदरमसंखेज्जगुणं । लोमो असंखेज्जगुणो । सव्वत्थोवा मदि-सुदणाणिणो चत्तारि उवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसंजदा

करमे पर बहुभाग तीन ज्ञानघाले संयतासंयत जीव हैं । शेषका जानकर कथन करना चाहिये ।

स्वस्थान आदिके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है । उनमेंसे मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी जीवोंमें स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है । कारण पहले कहा जा चुका है । मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व ओघ स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है । विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टियोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व देव मिथ्यादृष्टियोंके स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है । तीन ज्ञानवाले असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयतोंमें तथा मति और श्रुत इन दो ज्ञानवाले असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयतोंमें स्वस्थान अल्पबहुत्व ओघस्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है । इसप्रकार स्वस्थान अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

अब परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है । उन्हींका द्रव्य अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । पल्योपम द्रव्यप्रमाणसे असंख्यातगुणा है । मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य पल्योपमसे अनन्तगुणा है । विभंगज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है । उन्हींका द्रव्य अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । पल्योपम द्रव्यप्रमाणसे असंख्यातगुणा है । विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल पल्योपमसे असंख्यातगुणा है । उन्हींकी विष्कंभसूची अवहारकालसे असंख्यातगुणी है । (जगध्रेणी विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणी है ।) जगध्रेणीसे उन्हींका द्रव्य असंख्यातगुणा है । द्रव्यप्रमाणसे जगप्रतर असंख्यातगुणा है । जगप्रतरसे लोक असंख्यातगुणा है । मतिज्ञानी और श्रुतज्ञानी चार गुणस्थानोंके उपशामक सबसे स्तोक हैं । मतिज्ञानी और श्रुतज्ञानी क्षपक जीव उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । मतिज्ञानी और श्रुतज्ञानी अप्रमत्तसंयत जीव क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं । मतिज्ञानी और श्रुतज्ञानी प्रमत्तसंयत जीव

१ प्रतिषु ' मदि-सुदणाण ' इति पाठः ।

संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव द्वयमसंखेज्जगुणं । असंजदसम्माइट्ठिद्वयमसंखेज्जगुणं । पल्लिदोवममसंखेज्जगुणं । एवं चेव ओहिणाणिपरत्थाणं पि वत्तव्वं । मणपज्जवणाणिणो सव्वत्थोवा उवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । केवलणाणीसु सव्वत्थोवा सजोगिकेवली । अजोगिकेवली अणंतगुणा । परत्थाणं गदं ।

सव्वपरत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा मणपज्जवणाणिउवसामगा दस १० । ओहिणाणिउवसामगा विसेसाहिया १४ । मणपज्जवणाणिखवगा विसेसाहिया २० । ओहिणाणिखवगा विसेसाहिया २८ । मणपज्जवणाणिणो अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । तत्थेव ओहिणाणिणो विसेसाहिया । मणपज्जवणाणिणो पमत्ता विसेसाहिया । तत्थेव ओहिणाणिणो विसेसाहिया । कुदो एदमवग्गमदे ? उवसम-खवगसेट्ठिमिह एदेसिं दोण्हं णाणाणं एदेणेव

अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । मतिज्ञानी और श्रुतज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल प्रमत्तसंयतोंसे असंख्यातगुणा है । मतिज्ञानी और श्रुतज्ञानी संयतासंयतोंका अवहारकाल असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । उन्हींका द्रव्य अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । मतिज्ञानी और श्रुतज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य संयतासंयतोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । पर्योपम असंयतसम्यग्दृष्टियोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार अवधिज्ञानियोंके परस्थान अल्पबहुत्वका भी कथन करना चाहिये । मनःपर्ययज्ञानी उपशामक सबसे स्तोक हैं । मनःपर्ययज्ञानी क्षपक जीव उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । मनःपर्ययज्ञानी अप्रमत्तसंयत जीव क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं । मनःपर्ययज्ञानी प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । केवलज्ञानियोंमें सयोगिकेवली जीव सबसे स्तोक हैं । अयोगिकेवली जीव सयोगिकेवलियोंसे अनन्तगुणे हैं । इसप्रकार परस्थान अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

सर्वपरस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— मनःपर्ययज्ञानी उपशामक जीव सबसे स्तोक होते हुए दश हैं । अवधिज्ञानी उपशामक मनःपर्ययज्ञानियोंसे विशेष अधिक होते हुए चौदह हैं । मनःपर्ययज्ञानी क्षपक विशेष अधिक होते हुए बीस हैं । अवधिज्ञानी क्षपक विशेष अधिक होते हुए अट्ठारह हैं । मनःपर्ययज्ञानी अप्रमत्तसंयत जीव अवधिज्ञानी क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं । वहीं पर अर्थात् अप्रमत्तसंयत गुणस्थानमें अवधिज्ञानी जीव मनःपर्ययज्ञानियोंसे विशेष अधिक हैं । मनःपर्ययज्ञानी प्रमत्तसंयत जीव अवधिज्ञानी अप्रमत्तसंयतोंसे विशेष अधिक हैं । वहीं पर अर्थात् प्रमत्तसंयत गुणस्थानमें ही अवधिज्ञानी जीव मनःपर्ययज्ञानियोंसे विशेष अधिक हैं ।

शंका— यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— उपशाम और क्षपक श्रेणीमें इन दोनों ज्ञानोंके प्रमाणका प्ररूपण इसी

कमेण पमाणपरूवणादो । कज्जं कारणाणुरूवं सव्वहा ण होदि त्ति ण वत्तव्वं, कत्थ वि कारणाणुरूवकज्जदंसणादो । ण जिणंतरेण वभिचारो, तस्स पडिणियदत्तित्थपडिवद्वत्तादो । दुणाणिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तिणाणिअसंजदसम्माइट्ठिअवहार- कालो विसेसाहिओ । दुणाणिसम्माभिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तिणाणिसम्मा- मिच्छाइट्ठिअवहारकालो विसेसाहिओ । दुणाणिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । तिणाणिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो विसेसाहिओ । दुणाणिसंजदासंजदअवहारकालो असं- खेज्जगुणो । तिणाणिसंजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । एवमवहारकालपडिलोमेण णेदव्वं जाव पलिदोवमं ति । तदो विहंगणाणिमिच्छाइट्ठिअव- हारकालो असंखेज्जगुणो । विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । सेठी असंखेज्जगुणा । दव्वम- संखेज्जगुणं । पदरमसंखेज्जगुणं । लेगो असंखेज्जगुणो । केवलणाणिणो अणंतगुणा । मदि-सुदअण्णाणिमिच्छाइट्ठिणो अणंतगुणा ।

एवं णाणमभग्णा समत्ता ।

क्रमसे किया है । कार्य सर्वदा कारणके अनुरूप नहीं होता है, यह भी नहीं कहना चाहिये, क्योंकि, कहीं पर भी कारणके अनुरूप कार्य देखा जाता है । जिनान्तरसे व्यभिचार भी नहीं आता है, क्योंकि, जिनान्तर प्रतिनियत तीर्थसे प्रतिषद्ध होता है ।

अवधिज्ञानी प्रमत्तसंयतोंसे दो ज्ञानवाले असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यात- गुणा है । तीन ज्ञानवाले असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल दो ज्ञानवाले असंयतसम्यग्दृष्टि- योंके अवहारकालसे विशेष अधिक है । दो ज्ञानवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल तीन ज्ञानवाले असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । तीन ज्ञानवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल दो ज्ञानवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे विशेष अधिक है । दो ज्ञानवाले सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल तीन ज्ञानवाले सम्यग्मिथ्या- दृष्टियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है । तीन ज्ञानवाले सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल दो ज्ञानवाले सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे विशेष अधिक है । दो ज्ञानवाले संयतासंयतोंका अवहारकाल तीन ज्ञानवाले सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । तीन ज्ञानवाले संयतासंयतोंका अवहारकाल दो ज्ञानवाले संयतासंयतोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । उन्हीं तीन ज्ञानवाले संयतासंयतोंका द्रव्य उन्हींके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । इसप्रकार अवहारकालके प्रतिलोमक्रमसे पत्योपमतक ले जाना चाहिये । पत्योपमसे विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । उन्हींकी विक्कंभसूची अवहारकालसे असंख्यातगुणी है । जगश्रेणी विक्कंभसूचीसे असंख्यात- गुणी है । उन्हींका द्रव्य जगश्रेणीसे असंख्यातगुणा है । जगप्रतर द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । लोक जगप्रतरसे असंख्यातगुणा है । केवलज्ञानी लोकसे अनन्तगुणे हैं । मत्यज्ञानी और भ्रुताज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीव केवलज्ञानियोंसे अनन्तगुणे हैं ।

इसप्रकार ज्ञानमार्गणा समाप्त हुई ।

संजमाणुवादेण संजदेसु पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अजोगिकेवल्लि
त्ति ओघं ॥ १४८ ॥

एत्थ ओघदब्बादो ण किञ्चि उणमधियं वा अत्थि, भेदणिवंधणविसेसाभावादो ।
तदो एत्थ ओघत्तं जुज्जे ।

सामाइय- छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदेसु पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणि-
यट्ठिवादरसांपराइयपविट्ठ उवसमा खवा त्ति ओघं ॥ १४९ ॥

एत्थ वि ओघत्तं ण विरुज्जेदे । कुदो ? दब्बट्ठियणयावलंबणेण पडिगहिदेगजमा
सामाइयसुद्धिसंजदा वुच्चंति, ते चेय पज्जवट्ठियणयावलंबणेण ति-चट्ठु-पंचादिभेएण
पुविल्लजमं फालियं पडिवण्णा छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा णाम । तदो दो वि रासीओ
ओघरासिपमाणो ण भिज्जंति त्ति ओघत्तं जुज्जे ।

एत्थ चोदगो भणदि— उभयणयावलंबणं किं कमेण भवदि, आहो अकमेणेत्ति ?

संयम मार्गणाके अनुवादसे संयमियोंमें प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अयोगि-
केवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीव ओघप्ररूपणाके समान संख्यात हैं ॥ १४८ ॥

यहां ओघद्रव्यप्रमाणसे कुछ न्यून या अधिक प्रमाण नहीं होता है, क्योंकि, सामान्य
प्ररूपणमें भेदका कारणभूत विशेषकी अपेक्षा नहीं होती है, इसलिये यहां संयममार्गणामें
सामान्यसे ओघपना बन जाता है ।

सामायिक और छेदोपस्थापन शुद्धिसंयत जीवोंमें प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर
अनिवृत्तिवादरसांपरायिकप्रविष्ट उपशमक और क्षपक गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें
जीव ओघप्रमाणके समान संख्यात हैं ॥ १४९ ॥

यहां सामायिक और छेदोपस्थापन शुद्धिसंयतोंमें भी प्रमाणकी अपेक्षा ओघत्व
विरोधको प्राप्त नहीं होता है, क्योंकि, द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन करनेकी अपेक्षा जिन्होंने
' मैं सर्व सावद्यसे विरत हूं ' इसप्रकार एक यमको स्वीकार किया है, वे सामायिकशुद्धिसंयत
कहे जाते हैं । तथा वे ही जीव पर्यायार्थिक नयके अवलम्बन करनेकी अपेक्षा तीन, चार
और पांच आदि भेदरूपसे पहलेके यमको भेद करके स्वीकार करते हुए छेदोपस्थापन
शुद्धिसंयत कहे जाते हैं । इसलिये ये दोनों राशियां ओघराशिके प्रमाणसे भेदको प्राप्त नहीं
होती हैं, इसलिये ओघपना बन जाता है ।

शंका—यहां पर शंकाकार कहता है कि दोनों नयोंका अवलम्बन क्या क्रमसे होता

१ संयमावुवादेण सामायिकच्छेदोपस्थापनशुद्धिसंयताः प्रमत्तादयोऽनिवृत्तिवादारान्ताः सामान्योक्तसंख्याः
स. सि. १, ८. पमत्तादिचउण्ह जुदा सामायियदुगं । गो. जी. ४८०.

२ प्रतिष्ठु '—संजमं पालिय ' इति पाठः ।

ण ताव अक्रमेण^१, विरुद्धेहि भेदाभेदेहि जुगवं ववहाराणुववत्तीदो । अह कमेण, ण सामा-
इयसुद्धिसंजदा छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा भवंति, एगत्तज्झवसायाणं भेदज्झवसाइत्तविरोहादो ।
छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा वि ण सामाइयसुद्धिसंजदा तक्काले भवंति, भेदज्झवसायाणमभेदज्झ-
वसाइत्तविरोहादो । तदो अक्रमेण दोहि णएहि पादिदोघसंजदरासी तत्थेगेण भागेण ओघ-
पमाणं ण पावेदि त्ति ओघत्तं ण जुज्जे । अध कदाइ सच्चो^२ संजदरासी अक्रमेण एकं चिय
णयमवलंबिऊण जदि चिड्ढुदि त्ति इच्छिज्जदि, तो एदाओ दुविहसंजदरासीओ सांतराओ
हवंति । ण च एवं, कालाणिओगे एदासिं गिरंतरत्तुवलंभादो । एत्थ परिहारो वुच्चदे । तं
जहा— दव्वट्ठियणए अवलंबिदे सच्चेसिं संजदाणं एकेको चेव जमो होदि त्ति सामाइय-
सुद्धिसंजदाणं ओघसंजदपमाणं होदि । पज्जवट्ठियणए अवलंबिदे सच्चेसिं संजदाणं पादेकं
पंच पंच जमा हवंति त्ति छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा वि ओघसंजदरासिपमाणं पावेत्ति तेणे-
देसिमोघत्तं जुज्जे । ण च एगं चेवज्झवसाया एयंतेण अप्पणो पडिवक्खणिरवेक्खा,

है या अक्रमसे ? अक्रमसे तो हो नहीं सकता, क्योंकि, परस्पर विरुद्ध भेद और अभेद इनके
द्वारा एकसाथ व्यवहार नहीं बन सकता है । यदि क्रमसे होता है तो सामायिक शुद्धिसंयत
जीव छेदोपस्थापनशुद्धिसंयत नहीं हो सकते हैं, क्योंकि, एकत्वरूप परिणामोंका भेदरूप
परिणामोंके साथ विरोध है । उसीप्रकार छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयत जीव भी उसी समय
सामायिकशुद्धिसंयत नहीं हो सकते हैं, क्योंकि, भेदरूप परिणामोंका अभेदरूप परिणामोंके
साथ विरोध है । इसलिये अक्रमसे दोनों नयोंकी अपेक्षा ओघसंयतराशि संयममार्गणामें एक
भागके द्वारा ओघप्रमाणको प्राप्त नहीं हो सकती है, इसलिये सामायिकशुद्धिसंयतों और
छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयतोंका प्रमाण ओघप्रमाणपनेका प्राप्त नहीं हो सकता है ? कदाचित्
संयतराशि अक्रमसे एक ही नयका अवलम्बन लेकर यदि रहती है, ऐसा आप चाहते हैं, तो ये
दोनों संयतराशियां सान्तर हो जाती हैं । परंतु ऐसा है नहीं, क्योंकि, कालानुयोगमें ये
राशियां निरन्तर हैं, ऐसा पाया जाता है ?

समाधान—यहां पूर्वोक्त शंकाका परिहार करते हैं । वह इसप्रकार है— द्रव्यार्थिक
नयका अवलम्बन करने पर सर्व संयमियोंके एक एक ही यम होता है, इसलिये सामायिक-
शुद्धिसंयतोंके ओघसंयतोंका प्रमाण बन जाता है । पर्यार्थिक नयका अवलम्बन करने पर
तो सर्व संयमियोंके प्रत्येकके पांच पांच संयम होते हैं, इसलिये छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयत
भी ओघसंयतराशिके प्रमाणको प्राप्त हो जाते हैं, अतएव, इन दोनों संयतोंके ओघपना बन
जाता है । कुछ एक जातिके परिणाम एकान्तसे अपने प्रतिपक्षी परिणामोंसे निरपेक्ष होते हैं,

१ प्रतिषु 'अक्रमे' इति पाठः ।

२ प्रतिषु 'सच्चो' इति पाठः ।

३ अ-आप्रत्योः 'एग चेद-', क प्रतौ 'एगं चेद-' इति पाठः ।

तेसिं दुण्णयत्तावच्चीदो । तदो जे सामाइयसुद्धिसंजदा ते चेय छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा होंति । जे छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा ते चेय सामाइयसुद्धिसंजदा होंति त्ति । तदो दोण्हं रासीणमोघत्तं जुज्जेद ।

परिहारसुद्धिसंजदेसु पमत्तापमत्तसंजदा द्व्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा^१ ॥ १५० ॥

ओघसंजदपमाणं ण पावेंति त्ति भणिदं होदि । तो वि ते केत्तिया त्ति भणिदे उच्चदे, तिरूवूण-सत्तसहस्समेत्ता हवंति ।

सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदेसु सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदा उवसमा खवा द्व्वपमाणेण केवडिया, ओघं^२ ॥ १५१ ॥

एत्थ एगं सुहुमसांपराइयग्गहणं अहियारपदुप्पायणद्धं, अत्रेगं गुणट्ठाणणिहेसो । तेसिं पमाणं तिरूवूण-णवसदमेत्तं । वुत्तं च—

ऐसा नहीं है, क्योंकि, ऐसा मानने पर उनको दुर्णयपनेकी आपत्ति आ जाती है। इसलिये जो सामायिकशुद्धिसंयत जीव हैं, वे ही छेशोपस्थापनाशुद्धिसंयत होते हैं। तथा जो छेशोपस्थापनाशुद्धिसंयत जीव हैं, वे ही सामायिकशुद्धिसंयत होते हैं। अतएव उक्त दोनों राशियोंके ओघपना बन जाता है।

परिहारविशुद्धिसंयतोंमें प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ १५० ॥

परिहारविशुद्धिसंयमसे युक्त प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयतोंका प्रमाण ओघसंयतोंके प्रमाणको प्राप्त नहीं होता है, यह इस सूत्रका तात्पर्य है। तो भी उन परिहारविशुद्धिसंयतोंका प्रमाण कितना है, ऐसा पूछने पर कहते हैं कि वे परिहारविशुद्धिसंयत तीन कम सात हजार होते हैं।

सूक्ष्मसांपरायिकशुद्धिसंयतोंमें सूक्ष्मसांपरायिकशुद्धिसंयत उपशमक और क्षपक जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १५१ ॥

इस सूत्रमें प्रथमचार सूक्ष्मसांपरायिक पदका ग्रहण अधिकारका प्रतिपादन करनेके लिये किया है। और दूसरीवार सूक्ष्मसांपरायिक पदका ग्रहण गुणस्थानका निर्देशरूप किया है। उन सूक्ष्मसांपरायिकशुद्धिसंयतोंका प्रमाण तीन कम नौ सौ है। कहा भी है—

१ परिहारविशुद्धिसंयताः प्रमत्ताश्चाप्रमत्ताश्च संख्येयाः । स. सि. १, ८. कमेण सेसतियं सत्तसहस्सा णवसय णवलक्खा तीहिं परिहीणा ॥ गो. जी. ४८०.

२ सूक्ष्मसांपरायिकशुद्धिसंयताः सामान्योक्तसंख्याः । स. सि. १, ८.

सत्तादी छक्कंता दोणवमज्जा य होंति परिहारा ।

सत्तादी अट्टंता णवमज्जा सुहुमरागा दु ॥ ७९ ॥

जहावखादविहारसुद्धिसंयतसु चउट्टाणं ओघं ॥ १५२ ॥

चउट्टाणमिदि कधमेगवयणणिहेसो ? ण, चउण्हं पि जादीए एगत्तमवलंबिय सधोवदेसादो । सेसं सुगमं ।

संजदासंजदा दव्वपमाणेण केवडिया, ओघं ॥ १५३ ॥

सुगममिदं सुत्तं ।

असंजदेसु मिच्छाइट्टिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्टि ति दव्व-
पमाणेण केवडिया, ओघं ॥ १५४ ॥

चदुण्हमसंजदगुणद्वयाणां ओघचदुगुणद्वयाणेहिंतो अविसिद्वानमोघत्तं जुज्जदे । एत्थ

जिस संख्याके आदिमें सात, अन्तमें छह और मध्यमें दोवार नौ हैं उतने अर्थात् छह हजार नौसौ सत्तानवें परिहारविशुद्धिसंयत जीव हैं । तथा जिस संख्याके आदिमें सात, अन्तमें आठ और मध्यमें नौ है उतने अर्थात् आठसौ सत्तानवें सूक्ष्मरागवाले जीव हैं ॥ ७९ ॥

यथाख्यात विहारशुद्धिसंयतोंमें ग्यारहवें, बारहवें, तेरहवें और चौदहवें गुण-
स्थानवर्ती जीवोंका प्रमाण ओघप्ररूपणाके समान है ॥ १५२ ॥

शंका—सूत्रमें 'चउट्टाणं' इसप्रकार एकवचन निर्देश कैसे बन सकता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, जातिकी अपेक्षा एकत्वका अवलम्बन लेकर चारों गुण-
स्थानोंका एक वचनरूपसे उपदेश दिया है । शेष कथन सुगम है ।

संयतासंयत जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? ओघप्ररूपणाके समान
पल्योपमके असंख्यातवें भाग हैं ॥ १५३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असंयतोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानतक जीव
द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? सामान्य प्ररूपणाके समान हैं ॥ १५४ ॥

असंयतसंबन्धी चारों गुणस्थान ओघ चारों गुणस्थानोंके समान हैं, इसलिये असंयत
चारों गुणस्थानोंके प्रमाणके ओघपना बन जाता है । अब यहां पर अवहारकालकी उत्पत्ति

१ यथाख्यातविहारशुद्धिसंयताः सामान्योक्तसंख्याः । स. सि. १, ८.

२ संयतासंयताः सामान्योक्तसंख्याः । स. सि. १, ८. पल्लासंखेज्जदिमं विरदाविरदाण दव्वपरिमाणं ॥
गो. जी. ४८१.

३ असंयताश्च सामान्योक्तसंख्याः । स. सि. १, ८. पुच्चुत्तरासिहीणा संसारी अविरदाण पमा ॥
गो. जी. ४८१.

अवहारकालुप्पत्ती वुच्चदे । तं जहा— सिद्ध-तेरसगुणपडिवण्णरासिं मिच्छाइट्टिरासिभजिद-
तव्वगं च सव्वजीवरासिस्सुवरि पक्खित्ते मिच्छाइट्टिधुवरासी होदि । सासणादीणमवहार-
कालुप्पत्ती ओघसमाणा । एवं संजदासंजदाणं पि ।

भागाभागं वत्तइस्सामो । सव्वजीवरासिमणंतखंडे कए बहुखंडा मिच्छाइट्टिणो
होंति । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा सिद्धा होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा
असंजदा होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सम्मामिच्छाइट्टिणो होंति । सेसम-
संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सासणसम्माइट्टिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा
संजदासंजदा होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सामाइय-छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा
होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा जहाक्खादसुद्धिसंजदा होंति । सेसं संखेज्जखंडे
कए बहुखंडा परिहारया होंति । (सेसेगखंडं सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदा होंति ।)

अप्पाबहुगं तिविहं सत्थाणादिभेएण । तत्थ सत्थाणे पयदं । संजदाणं सत्थाणं
णत्थि, अवहाराभावादो । मिच्छाइट्टिणं पि सत्थाणं णत्थि, रासीदो भागहारस्स बहुत्तादो ।
सासणसम्माइट्टिमादिं करिय जाव संजदासंजदा त्ति एदेसिं सत्थाणस्स ओघभंगो ।

कहते हैं । यह इसप्रकार है— सिद्धराशि और सासादनसम्यग्दृष्टि आदि तेरह गुणस्थानवर्ती
राशिको तथा मिथ्यादृष्टि राशिसे भाजित सिद्ध और तेरह गुणस्थानवर्ती राशिके धर्गको सर्व
जीवराशिमें मिला देने पर मिथ्यादृष्टिराशिकी धुवराशि होती है । सासादनसम्यग्दृष्टि आदिके
अवहारकालोंकी उत्पत्ति ओघ सासादनसम्यग्दृष्टि आदि अवहारकालोंकी उत्पत्तिके समान है ।
इसीप्रकार संयतासंयतोंके अवहारकालकी उत्पत्ति भी समझना चाहिये ।

अब भागाभागको बतलाते हैं— सर्व जीवराशिके अनन्त खंड करने पर बहुभाग
मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग सिद्ध जीव होते हैं ।
शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग असंयतसम्यग्दृष्टि जीव होते हैं । शेष एक
भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं । शेष एक भागके
असंख्यात खंड करने पर बहुभाग सासादनसम्यग्दृष्टि जीव होते हैं । शेष एक भागके
असंख्यात खंड करने पर बहुभाग संयतासंयत जीव होते हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड
करने पर बहुभाग सामायिक और छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयत होते हैं । शेष एक भागके संख्यात
खंड करने पर बहुभाग यथाख्यातशुद्धिसंयत होते हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर
बहुभाग परिहारविशुद्धिसंयत होते हैं । (शेष एक भाग सूक्ष्मसांपरायिकशुद्धिसंयत हैं ।)

स्वस्थान अल्पबहुत्व आदिके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है । उनमेंसे यहाँ
स्वस्थान अल्पबहुत्व प्रकृत है— संयत जीवोंके अवहारकालका अभाव होनेसे स्वस्थान
अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है । मिथ्यादृष्टियोंके भी स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं है, क्योंकि,
मिथ्यादृष्टि राशिसे भागहार बहुत बड़ा है । सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत
गुणस्थानतक इन जीवोंका स्वस्थान अल्पबहुत्वसामान्य स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है ।

१ प्रतिशु ' सेसमसंखेज्जखंडे ' इति पाठः ।

परत्थाणे पयदं । सच्चत्थोवा सामाइय-छेदोवट्टावणसुद्धिसंजदउवसामगा । तेसिं खवगा संखेज्जगुणा । अपमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । परिहार-सुद्धिसंजदेसु सच्चत्थोवा अपमत्तसंजदा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । सुहुमसांपराइयसुद्धि-संजदेसु सच्चत्थोवा उवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । जहाक्खादसंजदेसु सच्चत्थोवा उवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । सजोगिकेवली संखेज्जगुणा । संजदासंजदेसु परत्थाणं णत्थि । असंजदेसु सच्चत्थोवो असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो । सम्माभिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । एवं णेयव्वं जाव पलिदोवमं ति । तदो मिच्छाइट्ठी अणंतगुणा ।

सच्चपरत्थाणे पयदं । सच्चत्थोवा सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदा । परिहारसुद्धिसंजदा संखेज्जगुणा । जहाक्खादसुद्धिसंजदा संखेज्जगुणा । सामाइय-छेदोवट्टावणसुद्धिसंजदा दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा । असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । एवं णेयव्वं जाव पलिदोवमं ति । तदो उवारि मिच्छाइट्ठी अणंतगुणा ।

एवं संजममग्गणा गदा ।

अत्र परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— सामायिक और छेदोपस्थापनशुद्धिसंयत उपशामक जीव सबसे स्तोक हैं । उन्हींके क्षपक उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । वे ही अप्रमत्तसंयत जीव क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं । वे ही प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । परिहारविशुद्धिसंयतोंमें अप्रमत्तसंयत जीव सबसे स्तोक हैं । प्रमत्तसंयत जीव उनसे संख्यातगुणे हैं । सूक्ष्मसांपरायिकशुद्धिसंयतोंमें उपशामक जीव सबसे थोड़े हैं । क्षपक जीव उनसे संख्यातगुणे हैं । यथाख्यात संयतोंमें उपशामक जीव सबसे थोड़े हैं । क्षपक जीव उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । सयोगिकेवली जीव क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं । संयतासंयतोंमें परस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है । असंयतोंमें असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है । सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंयत सम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यात-गुणा है । सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है । उन्हीं सासादनसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य उन्हींके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये । पल्योपमसे मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तगुणे हैं ।

अब सर्वपरस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— सूक्ष्मसांपरायिकशुद्धिसंयत जीव सबसे स्तोक हैं । परिहारविशुद्धिसंयत जीव उनसे संख्यातगुणे हैं । यथाख्यातशुद्धिसंयत जीव परिहारविशुद्धिसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । सामायिक और छेदोपस्थापनशुद्धिसंयत जीव दोनों समान होते हुए यथाख्यातसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल उक्त दोनों संयतोंके प्रमाणसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये । पल्योपमसे ऊपर मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तगुणे हैं ।

इसप्रकार संयममार्गणा समाप्त हुई ।

दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया,
असंखेज्जा ॥ १५५ ॥

सुगममेदं सुत्तं, बहुसो चक्खाणिदत्तादो ।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्साप्पिणीहि अवहिरंति कालेण
॥ १५६ ॥

अइधूल-धूल-सुहुमपरूवणाओ तिण्णि वि परिवाडीए किमट्टं वुच्चंति, सुहुमपरूवणमेव
किण्ण वुच्चदे ? ण, मेहावि-मंदाइमंदमेहाविजणाणुग्गहकारणेण तहोवएसा । सेसं सुगमं ।

खेत्तेण चक्खुदंसणीसु मिच्छाइट्ठीहि पदरमवाहिरादि अंगुलस्स
संखेज्जदिभागवग्गपडिभाएणं ॥ १५७ ॥

संखेज्जरूवेहि सूचिअंगुले भागे हिदे तत्थ जं लद्धं तं वग्गिदे चक्खुदंसणिमिच्छा-
इट्ठीणं पडिभागो होदि । एदेण पडिभागेण चक्खुदंसणिमिच्छाइट्ठीहि जगपदरमवाहिरदि ।
एत्थ किं चक्खुदंसणावरणकम्मक्खओवसमा जीवा चक्खुदंसणिणो वुच्चंति, आहो चक्खु-

दर्शनमार्गणाके अनुवादसे चक्षुदर्शनी जीवोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी
अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं ॥ १५५ ॥

यह सूत्र सुगम है, क्योंकि, अनेकवार व्याख्यान हो गया है ।

कालकी अपेक्षा चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों
और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ १५६ ॥

शंका — अतिस्थूल, स्थूल और सूक्ष्म, ये तीनों प्ररूपणाएँ परिपाटीक्रमसे किसलिये
कही जाती हैं, केवल एक सूक्ष्म प्ररूपणा क्यों नहीं कही जाती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, मेधावी, मन्दबुद्धि और अतिमन्दबुद्धि जनोंका अनुग्रह
करनेके कारण इसप्रकारका उपदेश दिया गया है । शेष कथन सुगम है ।

क्षेत्रकी अपेक्षा चक्षुदर्शनियोंमें मिथ्यादृष्टि जीवोंके द्वारा सूच्यंगुलके संख्यातवें
भागके वर्गरूप प्रतिभागसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ १५७ ॥

सूच्यंगुलमें संख्यातका भाग देने पर वहां जो लब्ध भावे उसे वर्णित करने पर
चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रतिभाग होता है । इस प्रतिभागसे चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि
जीवोंके द्वारा जगप्रतर अपहृत होता है ।

शंका—यहां पर क्या चक्षुदर्शनावरणकर्मके क्षयोपशमसे युक्त जीव चक्षुदर्शनी
कहे जाते हैं, या चक्षुदर्शनरूप उपयोगसे युक्त जीव चक्षुदर्शनी कहे जाते हैं ? इनमेंसे प्रथम

१ दर्शनानुवादेन चक्षुदर्शिनो मिथ्यादृष्टयोऽसंख्येयाः श्रेणयः प्रतरासंख्येयभागप्रमिताः । स. सि. १, ८,
अंगे चउरवख्खणं पंचवख्खणं च खीणचरिमाणं चक्खुणं । गो. जी. ४८७.

दंसणोवओगसहिदजीवा त्ति ? पढमपक्खे चक्खुदंसणिमिच्छाइड्ढिअवहारकालेण पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभाएण होदच्चं, चदु-पंचिदियापज्जत्तरासीणं पाहणादो । ण विदियपक्खो वि, चक्खुदंसणदिदीए^१ अंतोमुहुत्तप्पसंगादो त्ति ? एत्थ परिहारो वुच्चदे । असंखेज्जदिभाए चक्खिदियपडिभागे^२ चक्खुदंसणुवजोगपाओग्गचक्खुदंसणखओवसमा चक्खुदंसणिणो त्ति जेण वुच्चंति तेण लद्धिअपज्जत्ताणं गहणं ण भवदि, तेसु चक्खिदियणिप्पत्तिविराहिदेसु चक्खुदंसणोवओगसहिदत्तक्खओवसमाभावादो । संखेज्जसागरोवममेत्ता चक्खुदंसणिदिदी^३ वि ण विरुज्जदे, खओवसमस्स पहाणत्तब्भुवगमादो । तदो पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागमेत्तो चक्खुदंसणिमिच्छाइड्ढिअवहारकालो होदि त्ति सिद्धं, चदु-पंचिदियपज्जत्तरासीणं पहाणत्त-ब्भुवगमादो ।

सासणसम्माइड्ढिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था त्ति ओधं ॥ १५८ ॥

पक्षके ग्रहण करने पर चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल प्रतरांगुलके असंख्यातवें भागमात्र होना चाहिये, क्योंकि, ऐसी स्थितिमें चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त और पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंकी प्रधानता है । इसप्रकार पहला पक्ष तो ठीक नहीं है । उसीप्रकार दूसरा पक्ष भी ठीक नहीं है, क्योंकि, उसके मानने पर चक्षुदर्शनकी स्थितिको अन्तर्मुहूर्तमात्रका प्रसंग आ जाता है ?

समाधान— आगे पूर्वोक्त शंकाका परिहार करते हैं— चक्षुदर्शनवाले मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागरूप आक्षेपका परिहार यह है कि चूंकि चक्षुदर्शनोप-योगके योग्य चक्षुदर्शनावरणके क्षयोपशमवाले जीव चक्षुदर्शनी कहे जाते हैं, इसलिये यहां पर लब्धपर्याप्त जीवोंका ग्रहण नहीं होता है, क्योंकि, वे जीव चक्षु इन्द्रियकी निष्पत्तिसे रहित होते हैं, इसलिये उनमें चक्षुदर्शनरूप उपयोगसे युक्त चक्षुदर्शनरूप क्षयोपशम नहीं पाया जाता है । तथा चक्षुदर्शनवाले जीवोंकी स्थिति संख्यातसागरोपममात्र होती है, यह कथन भी विरोधको प्राप्त नहीं होता है, क्योंकि, यहां पर क्षयोपशमकी प्रधानता स्वीकार की है । इसलिये चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल प्रतरांगुलके संख्यातवें भागमात्र होता है, यह कथन सिद्ध होता है, क्योंकि, यहां पर चक्षुदर्शनी जीवोंके प्रमाणके कथनमें चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंकी प्रधानता स्वीकार की है ।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषायवीतरागछद्मस्थ गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें चक्षुदर्शनी जीव ओधप्ररूपणाके समान हैं ॥ १५८ ॥

१ प्रतिषु ' -दंसणदिदीए ' इति पाठः ।

२ अ-कप्रसोः ' पडिवादे ' ; आप्रसो ' पडिवादे ' इति पाठः ।

३ ' चक्खुदंसणीसु मिच्छाइड्ढी ' उक्खस्सेण वेसागरोवमसहस्साणि ' जी. का. सू. २७९-२८१.

कुदो ? चक्खुदंसणक्खओवसमरहिदगुणपडिवण्णाभावादो ।

अचक्खुदंसणीसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदराग-
छदुमत्था ति ओघं ॥ १५९ ॥

किं कारणं? अचक्खुदंसणक्खओवसमविरहिदछदुमत्थजीवाभावादो। संपहि अचक्खु-
दंसणीणं धुवरासी वुच्चदे । तं जहा— सिद्ध तेरसगुणपडिवण्णरासिमचक्खुदंसणमिच्छाइट्ठि-
रासिभजिदत्तव्वग्गं च सव्वजीवरासिस्सुवरि पक्खित्ते अचक्खुदंसणिमिच्छाइट्ठिधुवरासी
होदि । एदेण सव्वजीवरासिस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे अचक्खुदंसणिमिच्छाइट्ठिदव्वं होदि ।
सासणादीणमोघम्मिह भणिदअवहारो चैव वत्तव्वो, विसेसाभावादो ।

ओहिदंसणी ओहिणाणिभंगो ॥ १६० ॥

क्योंकि, गुणस्थानप्रतिपन्न जीव चक्षुदर्शनरूप क्षयोपशमसे रहित नहीं होते हैं।
अर्थात् गुणस्थानप्रतिपन्न प्रत्येक जीवके चक्षुदर्शनावरण कर्मका क्षयोपशम पाया जाता है,
अतएव गुणस्थानप्रतिपन्न चक्षुदर्शनी जीवोंके प्रमाणकी प्ररूपणा ओघप्ररूपणाके समान है।

अचक्षुदर्शनियोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषायवीतरागछद्मस्थ
गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १५९ ॥

शंका—अचक्षुदर्शनी जीवोंका प्रमाण सामान्य प्ररूपणाके समान है, इसका क्या
कारण है?

समाधान—क्योंकि, अचक्षुदर्शनरूप क्षयोपशमसे रहित छद्मस्थ जीव नहीं पाये
जाते हैं, इसलिये उनका प्रमाण ओघप्रमाणके समान कहा है।

अब अचक्षुदर्शनी जीवोंकी धुवराशिका कथन करते हैं। वह इसप्रकार है— सिद्ध-
राशि और सासादनसम्यग्दृष्टि आदि तेरह गुणस्थानप्रतिपन्न जीवराशिको तथा
मिथ्यादृष्टि राशिसे भाजित सिद्धराशि और गुणस्थानप्रतिपन्न राशिके वर्गको सर्व जीवराशियोंमें
मिला देने पर अचक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंकी धुवराशि होती है। इस धुवराशिसे सर्व
जीवराशिके उपरिम वर्गके भाजित करने पर अचक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्यप्रमाण होता
है। अचक्षुदर्शनी सासादनसम्यग्दृष्टि आदि जीवोंका ओघप्ररूपणामें कहा गया अवहारकाल
ही कहना चाहिये, क्योंकि, गुणस्थानप्रतिपन्न ओघ अवहारकालसे अचक्षुदर्शनी गुणस्थान-
प्रतिपन्न जीवोंके अवहारकालमें कोई विशेषता नहीं है।

अवधिदर्शनी जीव अवधिज्ञानियोंके समान हैं ॥ १६० ॥

१ अचक्षुदर्शनिनो मिथ्यादृष्टोऽनन्तानन्ताः । उभये च सासादनसम्यग्दृष्ट्यादयः क्षीणकषायान्ताः सामान्योक्त-
संख्याः । स. सि. १, ८. एहंदिपहुदीणं खीणकसायंतणंतरासीणं । जोगो अचक्खुदंसणजीवाणं होदि परिमाणं ॥
गो. जी. ४८८.

२ अवधिदर्शनिनोऽवधिज्ञानिवत् । स. सि. १, ८.

ओहिदंसणविरहिदओहिणाणीणमभावादो । एत्थ अवहारकालो वुच्चदे । जो ओघ-
असंजदसम्माइड्ढिअवहारकालो सो चेव अचक्खुदंसणि-चक्खुदंसणिअसंजदसम्माइड्ढिअव-
हारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते
ओहिदंसणिअसंजदसम्माइड्ढिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण
गुणिदे चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणिसम्मामिच्छाइड्ढिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेअरूवेहि
गुणिदे चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणिसासणसम्माइड्ढिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए
असंखेज्जदिभाएण गुणिदे चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणिसंजदासंजदअवहारकालो होदि । तम्हि
आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे ओहिदंसणिसंजदासंजदअवहारकालो होदि ।

केवलदंसणी केवलाणिभंगो' ॥ १६१ ॥

केवलाणविरहिदकेवलदंसणाभावादो । सुद-मणपज्जवणाणाणं किमिदि ण दंसणं ?
वुच्चदे— ण ताव सुदणाणस्स दंसणमत्थि, तस्स मदिणाणपुच्चत्तादो । ण मणपज्जव-

चूंकि अवधिदर्शनको छोड़कर अवधिज्ञानी जीव नहीं पाये जाते हैं, इसलिये दोनोंका
प्रमाण समान है । अब यहां पर इनके अवहारकालका कथन करते हैं— जो ओघ असंयत-
सम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल है, वही अचक्षुदर्शनी और चक्षुदर्शनी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका
अवहारकाल है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे
उसी अवहारकालमें मिला देने पर अवधिदर्शनी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है ।
इस अवधिदर्शनी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित
करने पर चक्षुदर्शनी और अचक्षुदर्शनी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे
संख्यातसे गुणित करने पर चक्षुदर्शनी और अचक्षुदर्शनी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहार-
काल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर चक्षुदर्शनी और अचक्षु-
दर्शनी संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने
पर अवधिदर्शनी संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है ।

केवलदर्शनी जीव केवलज्ञानियोंके समान हैं ॥ १६१ ॥

चूंकि केवलज्ञानसे रहित केवलदर्शन नहीं पाया जाता है, इसलिये दोनों राशियोंका
प्रमाण समान है ।

शंका— श्रुतज्ञान और मनःपर्ययज्ञानका दर्शन क्यों नहीं कहा जाता है ?

समाधान— श्रुतज्ञानका दर्शन तो हो नहीं सकता है, क्योंकि, वह मतिज्ञानपूर्वक
होता है । उसीप्रकार मनःपर्ययज्ञानका भी दर्शन नहीं है, क्योंकि, मनःपर्ययज्ञान भी
उसीप्रकारका है, अर्थात् मनःपर्ययज्ञान भी मतिज्ञानपूर्वक होता है, इसलिये उसका दर्शन
नहीं पाया जाता है ।

१ केवलदर्शनिनः केवलज्ञानिवत् । स. सि. १, ८. ओहिकेवलपरिमाणं ताण णाणं च ॥ गो. जी. ४८७,

२ प्रतिपु ' सुद-मणपज्जवणाणाणं ' इति पाठः ।

णाणस्स वि दंसणमत्थि, तस्स वि तधाविधत्तादो । जदि सरूवसंवेदणं दंसणं तो एदेसिं पि दंसणस्स अत्थित्तं पसज्जदे चेन्न, उत्तरज्ञानोत्पत्तिनिमित्तप्रयत्नविशिष्टस्वसंवेदनस्य दर्शनत्वात् । ण च केवलिम्हि एसो कमो, तत्थ अक्रमेण णाण-दंसणपउत्तीदो । ण च छद्दुमत्थेसु दोण्हमकमेण वुत्ती अत्थि, 'हंदि दुवे णत्थि उवजोगा' त्ति पडिसिद्धत्तादो । ण च णाणादो पच्छा दंसणं भवदि, 'दंसणपुव्वं णाणं, ण णाणपुव्वं तु दंसणमत्थि' इदि वयणादो ।

भागाभागं वत्तइस्सामो । सव्वजीवरासिमणंतखंडे कए बहुखंडा अचक्खुदंसण-मिच्छाइट्ठीं होंति । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा केवलदंसणिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा चक्खुदंसणमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणिअसंजदसम्माइट्ठिदव्वं होदि । तत्थ तस्सेव असंखेज्जदिभागमवणिदे ओहिदंसणि-दव्वं होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणिसम्मामिच्छाइट्ठिदव्वं होदि । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सासणसम्माइट्ठिदव्वं होदि । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणिसंजदासंजददव्वं होदि । सेसमसंखेज्जखंडे कए

शंका—यदि दर्शनका स्वरूप स्वरूपसंवेदन है, तो इन दोनों ज्ञानोंके भी दर्शनके अस्तित्वकी प्राप्ति होती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, उत्तरज्ञानकी उत्पत्तिके निमित्तभूत प्रयत्नविशिष्ट स्वसंवेदनको दर्शन माना है । परंतु केवलीमें यह क्रम नहीं पाया जाता है, क्योंकि, वहां पर अक्रमसे ज्ञान और दर्शनकी प्रवृत्ति होती है । छद्मस्थोंमें दर्शन और ज्ञान, इन दोनोंकी अक्रमसे प्रवृत्ति होती है, यदि ऐसा कहा जावे सो भी ठीक नहीं है, क्योंकि, छद्मस्थोंके 'दोनों उपयोग एक साथ नहीं होते हैं' इस आगमवचनसे छद्मस्थोंके दोनों उपयोगोंके अक्रमसे होनेका प्रतिषेध हो जाता है । ज्ञानपूर्वक दर्शन होता है, यदि ऐसा कहा जावे सो भी ठीक नहीं है, क्योंकि, 'दर्शनपूर्वक ज्ञान होता है, किंतु ज्ञानपूर्वक दर्शन नहीं होता है' ऐसा आगमवचन है ।

अब भागाभागको बतलाते हैं—सर्व जीवराशिके अनन्त खंड करने पर बहुभाग अचक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग केवलदर्शनी जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग चक्षुदर्शनी और अचक्षुदर्शनी असं-यत्सम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य है । इसमेंसे इसीका असंख्यातवां भाग घटा देने पर शेष अवधिदर्शनी जीवोंका द्रव्यप्रमाण होता है । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग चक्षुदर्शनी और अचक्षुदर्शनी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्यप्रमाण होता है । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग चक्षुदर्शनी और अचक्षुदर्शनी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्यप्रमाण होता है । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग चक्षुदर्शनी और अचक्षुदर्शनी संयतासंयतोंका द्रव्यप्रमाण होता है । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग

बहुखंडा ओहिदंसणिसंजदासंजददव्वं होदि । सेसं जाणिय वत्तव्वं ।

अप्पाबहुगं तिविहं सत्थाणादिभेएण । सत्थाणे पयदं । चक्खुदंसणिमिच्छाइट्ठि-
सत्थाणस्स तसपज्जत्तमिच्छाइट्ठिसत्थाणभंगो । सासणादीणं सत्थाणस्स ओघसत्थाणभंगो ।

परत्थाणे पयदं । अचक्खुदंसणीसु सव्वत्थोवा उवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा ।
अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । उवरि ओघपंचिदियं व वत्तव्वं
जाव पलिदोवमं ति । तदो मिच्छाइट्ठिणो अणंतगुणा । एवं चेव चक्खुदंसणिपरत्थाणप्पाबहुगं
वत्तव्वं । णवरि पलिदोवमादो उवरि चक्खुदंसणिमिच्छाइट्ठिणो असंखेज्जगुणा । ओहि-
दंसणीणमोहिणाणिभंगो । केवलदंसणीणं केवलणाणिभंगो ।

सव्वपरत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा ओहिदंसणउवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा ।
चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणिउवसामगा संखेज्जगुणा । खवगा संखेज्जगुणा । ओहिदंसण-
अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । दुदंसणिअप्पमत्तसंजदा संखेज्ज-

अवधिदर्शनी संयतासंयतोंका द्रव्य होता है। शेष भागाभागका कथन जानकर करना चाहिये।

स्वस्थानादिकके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है। उनमेंसे स्वस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टियोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व तस पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंके स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है। सासादनसम्यग्दृष्टि आदिका स्वस्थान अल्पबहुत्व ओघस्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है।

अब परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— अचक्षुदर्शनियोंमें सबसे स्तोत्र उपशामक जीव हैं। क्षपक जीव उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं। अप्रमत्तसंयत जीव क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं। प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं। इसके ऊपर पल्योपमतक ओघ पंचेन्द्रियोंके परस्थान अल्पबहुत्वके समान कथन करना चाहिये। पल्योपमसे मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तगुणे हैं। इसीप्रकार चक्षुदर्शनीयोंके परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये। इतना विशेष है कि पल्योपमसे ऊपर चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यातगुणे हैं। अवधिदर्शनवालोंका अल्पबहुत्व अवधिज्ञानियोंके अल्पबहुत्वके समान जानना चाहिये। केवलदर्शन-
वालोंका केवलज्ञानियोंके अल्पबहुत्वके समान जानना चाहिये।

अब सर्वपरस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— अवधिदर्शनी उपशामक जीव सबसे स्तोत्र हैं। अवधिदर्शनी क्षपक जीव उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं। चक्षुदर्शनी और अचक्षुदर्शनी उपशामक जीव अवधिज्ञानी क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं। वे ही क्षपक जीव अपने उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं। अवधिदर्शनी अप्रमत्तसंयत जीव चक्षु और अचक्षुदर्शनवाले क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं। वे ही प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं। दो दर्शनवाले अप्रमत्तसंयत जीव अवधिदर्शनी प्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं। वे ही प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं। दो दर्शनवाले असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवधारकाल दो

१ प्रतिष्ठा ' आंधं पंचिदिय वत्तव्वं ' इति पाठः ।

गुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । दुदंसणिअसंजदसम्माइड्ढिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तिदंसणअसंजदसम्माइड्ढिअवहारकालो विमेषाहिओ । दुदंसणसम्माभिच्छाइड्ढिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । दुदंसणसासणसम्माइड्ढिअवहारकालो संखेज्जगुणो । दुदंसणमंजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तिदंसणसंजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव द्वयमसंखेज्जगुणं । एवमवहारकालपडिलोमेण पेद्व्वं जाव पलिदोवमं ति । तदो चक्खुदंसणिभिच्छाइड्ढिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । सेढी असंखेज्जगुणा । द्वयमसंखेज्जगुणं । पदरमसंखेज्जगुणं । लोमो असंखेज्जगुणो । केवलदंसणी अणंतगुणा । अचक्खुदंसणी अणंतगुणा ।

एवं दंसणमगणा गदा ।

लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सियणीललेस्सियकाउलेस्सिएसु मिच्छाइड्ढिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइड्ढि ति ओधं ॥ १६२ ॥

दर्शनवाले प्रमत्तसंयतोंसे असंख्यातगुणा है । तीन दर्शनवाले असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल दो दर्शनवाले असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे विशेष अधिक है । दो दर्शनवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल तीन दर्शनवाले असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । दो दर्शनवाले सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल दो दर्शनवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है । दो दर्शनवाले संयतासंयतोंका अवहारकाल दो दर्शनवाले सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । तीन दर्शनवाले संयतासंयतोंका अवहारकाल दो दर्शनवाले संयतासंयतोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । उन्हीं तीन दर्शनवाले संयतासंयतोंका द्रव्य उन्हींके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार अवहारकालके प्रतिलोमरूपक्रमसे पर्योपमतक ले जाना चाहिये । पर्योपमसे चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । उन्हींकी विष्कंभसूची अपने अवहारकालसे असंख्यातगुणी है । जगश्रेणी विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणी है । उन्हींका द्रव्य जगश्रेणीसे असंख्यातगुणा है । जगप्रतर द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । लोक जगप्रतरसे असंख्यातगुणा है । केवलदर्शनी जीव लोकसे अनन्तगुणे हैं । अचक्षुदर्शनी जीव केवलदर्शनियोंके प्रमाणसे अनन्तगुणे हैं ।

इसप्रकार दर्शनमार्गणा समाप्त हुई ।

लेइयामार्गणाके अनुवादसे कृष्णलेइयावाले, नीललेइयावाले और कापोतलेइयावाले जीवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीव औषप्ररूपणाके समान हैं ॥ १६२ ॥

१ प्रतिपु ' असंखेज्जगुणी ' इति पाठः ।

२ लेइयानुवादेन कृष्णनीलकापोतलेइया मिथ्यादृष्ट्यादयोऽसंयतसम्यग्दृष्टवन्ताः सामान्योक्तमस्याः । सं. ति. १, ८. किण्हविरासिमावलिअसखमाणेण मज्जिय पविभत्ते । हीणकमा काल वा अस्सिय दव्वा दु मज्जिदव्वा ॥

अणंतत्तणेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण च ओघेण साधम्ममत्थि त्ति ओघमिदि भणिदं । विसेसे अवलंबिज्जमाणे पुण गत्थि समाणत्तं, सेसलेस्सेवलक्खिय-जीवाणं पयदगुणद्वानेषु असंभवादो । एत्थ धुवरासी वुच्चदे । तं जहा— सिद्ध-तेरसगुण-पडिवण्ण-तेउ-पम्म-सुकलेस्समिच्छाइट्टिरासिं किण्ह-णील-काउलेस्समिच्छाइट्टिरासिभजिद-मेदेसिं वर्गं च सब्बजीवरासिस्सुवरि पक्खित्ते हि किण्ह-णील-काउलेस्समिच्छाइट्टिधुवरासी होदि । तं तीहि रूवेहि गुणेऊण आवलियाए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे लद्धं तम्मि च्चैव पक्खित्ते काउलेस्सियधुवरासी होदि । पुव्वभागहारमब्भहियं काऊण तिगुणधुव-रासिम्मि भागे हिदे लद्धं तम्मि च्चैव पक्खित्ते णीललेस्सियधुवरासी होदि । तमावलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्मि च्चैव अवणिदे किण्हलेस्सियधुवरासी होदि । काउ-णीललेस्सरासीओ सब्बजीवरासिस्स तिभागो देस्सणो । किण्हलेस्सियरासी तिभागो सादिरेओ । गुणपडिवण्णाणमवहारकालं पुरदो भणिस्सामो ।

उक्त तीन लेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंकी अनन्तत्वकी अपेक्षा, और सासादनसम्यग्दृष्टि भादि गुणस्थानवर्ती जीवोंकी पर्योपमके असंख्यातवें भागत्वकी अपेक्षा ओघप्रमाणके साथ समानता पाई जाती है, इसलिये सूत्रमें 'ओघं' ऐसा कहा है । विशेष अर्थात् पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करने पर तो उक्त तीन लेश्यावाले जीवोंके प्रमाणकी ओघप्रमाणप्ररूपणाके साथ समानता नहीं है, क्योंकि, ऐसा मान लेने पर शेष लेश्याओंसे उपलक्षित जीवोंका प्रकृत गुणस्थानोंमें रहना असंभव मानना पड़ेगा । अब यहां पर धुवराशिका कथन करते हैं । वह इसप्रकार है— सिद्धराशि, सासादनसम्यग्दृष्टि भादि तेरह गुणस्थानप्रतिपन्न राशि और पीत, पद्म तथा शुक्लेश्यावाले मिथ्यादृष्टियोंकी राशिको, तथा इन सर्व राशियोंके वर्गमें कृष्ण, नील और कापोतलेश्यावाली मिथ्यादृष्टि राशिका भाग देनेसे जो लब्ध आवे उसे सर्व जीवराशिमें मिला देने पर कृष्ण, नील और कापोतलेश्यासे युक्त मिथ्यादृष्टि जीवोंकी धुवराशि होती है । इसे तीनसे गुणित करके जो प्रमाण हो उसे आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसीमें मिला देने पर कापोतलेश्यासे युक्त जीवोंकी धुवराशि होती है । पूर्वोक्त भागहारको अभ्याधिक करके और उसका त्रिगुणित धुवराशिमें भाग देने पर जो लब्ध आवे उसे उसी त्रिगुणित धुवराशिमें मिला देने पर नीललेश्यासे युक्त जीवोंकी धुवराशि होती है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसीमेंसे घटा देने पर कृष्णलेश्यासे युक्त जीवोंकी धुवराशि होती है । कापोतलेश्यासे युक्त और नीललेश्यासे युक्त प्रत्येक जीवराशि सर्व जीवराशिके कुछ कम तीसरे भागप्रमाण है । तथा कृष्णलेश्यासे युक्त जीवराशि कुछ अधिक तीसरे भाग प्रमाण है । उक्त तीन लेश्याओंसे युक्त गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके अवहारकालका कथन आगे करेंगे ।

खेत्तादो अद्दुहत्तिया अणंतलोगा कमेण परिहीणा । कालादो तीदादो अणंतगुणिदा कमा हीणा ॥ केवलणणानंतिप्रमाणा माभादु किण्हत्तियजीवा ॥ गो. जी. ५३७, ५३९.

तेउलेस्सिएसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, जोइसियदेवेहि सादिरियं' ॥ १६३ ॥

एदस्स अत्थो वुच्चदे । जोइसियदेवा पज्जत्तकाले सव्वे तेउलेस्सिया भवंति । अपज्जत्तकाले पुण ते चेय किण्ह-णील-काउलेस्सिया होंति । ते च पज्जत्तरासिस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता । वाणवेंतरदेवा वि पज्जत्तकाले तेउलेस्सिया चेव होंति । ते च जोइसियदेवाणं संखेज्जदिभागमेत्ता होंति । एदेसिमपज्जत्ता किण्ह-णील-काउलेस्सिया भवंति । ते च समपज्जत्ताणं संखेज्जदिभागमेत्ता । मणुस-तिरिक्खेसु वि तेउलेस्सिय-मिच्छाइट्ठिरासी पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो तिरिक्खपम्मलेस्सियरासीदो संखेज्जगुणो अत्थि । एदे तिणि वि रासीओ भवणवासिय-सोहम्मीसाणमिच्छाइट्ठीहि सह गदाओ जोइसियदेवेहि सादिरिया हवंति । एदेसिमवहारकालो वुच्चदे । तं जहा— जोइसियववहार-कालादो पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागे अवणिदे तेउलेस्सियववहारकालो होदि । तदो एक-पदरंगुलं घेत्तूण संखेज्जखंडं करिय एगखंडमवणिय बहुखंडे तम्हि चेव पविस्सत्ते तेउ-

तेजोलेइयावाले जीवोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? ज्योतिषी देवोंसे कुछ अधिक हैं ॥ १६३ ॥

अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— पर्याप्तकालमें सभी ज्योतिषी देव तेजोलेइयासे युक्त होते हैं । तथा अपर्याप्त कालमें वे ही देव कृष्ण, नील और कापोतलेइयासे युक्त होते हैं । वे अपर्याप्त ज्योतिषी जीव अपनी पर्याप्त राशिके असंख्यातवें भागमात्र होते हैं । वाणव्यन्तर देव भी पर्याप्तकालमें तेजोलेइयासे युक्त होते हैं, और वे वाणव्यन्तर पर्याप्त जीव ज्योतिषियोंके संख्यातवें भागमात्र होते हैं । इन्हीं वाणव्यन्तरोंमें अपर्याप्त जीव कृष्ण, नील और कापोतलेइयासे युक्त होते हैं, और वे अपर्याप्त वाणव्यन्तर देव अपनी पर्याप्त राशिके संख्यातवें भागमात्र होते हैं । मनुष्य और तिर्यंचोंमें भी तेजोलेइयासे युक्त मिथ्यादृष्टिराशि जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण है, जो पद्मलेइयासे युक्त तिर्यंचराशिसे संख्यातगुणी है । इन तीनों राशियोंको भवनवासी और सौधर्म-पेशान राशिके साथ एकत्रित कर देने पर यह राशि ज्योतिषी देवोंसे कुछ अधिक हो जाती है । अब इस राशिके अवहारकालका कथन करते हैं । यह इसप्रकार है— ज्योतिषी देवोंके अवहारकालमेंसे प्रतरांगुलके संख्यातवें भागप्रमाणको घटा देने पर तेजोलेइयासे युक्त जीवराशिका अवहारकाल होता है । उक्त तेजोलेइयासे युक्त जीवराशिके अवहारकालमेंसे एक प्रतरांगुलको ग्रहण करके और उसके संख्यात खंड करके एक खंडको घटा कर शेष बहुत खंडोंको उसी अवहारकालमें मिला देने पर

१ तेजःपद्मलेइया मिथ्यादृष्ट्यादयो संयतासंयतान्ताः क्विदेवन् । स. सि. १, ८. तेउतिया संखेज्जा संखासंखेज्जभागमेत्ता ॥ जोइसियादो अहिया तिरिक्खपण्णिस्स संखभागो दु । सूहस्स अंगुलस्स य असंखभागं दु तेउतियं ॥ तेउदु असंखकप्पा... । ओहिअसंखेज्जदिमं तेउतिया भावदो होंति ॥ गो. जी. ५३९, ५४०, ५४२.

लेस्सियामिच्छाइट्टिअवहारकालो होदि । सेसं जोइसियभंगो ।

सासणसम्माइट्टिप्पहुडि जाव संजदासंजदा ति ओघं ॥ १६४ ॥

छसु लेस्सासु ट्टिदओघअसंजदसम्माइट्टि-सम्मामिच्छाइट्टि-सासणसम्मादिट्टीहि सरिसो एक्काए तेउलेस्साए ट्टिदरासी कथं होदि ? ण, पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागत्तेण सरिसत्तमवेक्खिय ओघोवएसादो ।

पमत्त-अप्पमत्तसंजदा दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जां ॥१६५॥

ओघरासिपमाणं ण पूरेदि ति जं वुत्तं होदि ।

पम्मलेस्सिएसु मिच्छाइट्टी दव्वपमाणेण केवडिया, सण्णिपंचिंदिय-तिरिक्खजोणिणीणं संखेज्जदिभागो ॥ १६६ ॥

तेजोलेश्यासे युक्त मिथ्यादृष्टि जीवराशिका अवहारकाल होता है । शेष कथन ज्योतिषी देवोंके कथनके समान है ।

तेजोलेश्यासे युक्त जीव सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें ओघप्ररूपणाके समान पल्योपमके असंख्यातवें भाग हैं ॥ १६४ ॥

शंका—ओघ असंयतसम्यग्दृष्टि राशि, ओघ सम्यग्मिथ्यादृष्टिराशि और ओघ सासादनसम्यग्दृष्टिराशि छद्मों लेश्याओंमें स्थित है, अतएव उसके साथ केवल तेजोलेश्यामें स्थित असंयतसम्यग्दृष्टिराशि, सम्यग्मिथ्यादृष्टिराशि और सासादनसम्यग्दृष्टिराशि समान कैसे हो सकती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, पल्योपमके असंख्यातवें भागत्वकी अपेक्षा उक्त दोनों राशियोंमें समानता देखकर तेजोलेश्यासे युक्त सासादनसम्यग्दृष्टि भावि राशिका ओघरूपसे उपदेश किया है ।

तेजोलेश्यासे युक्त प्रमत्तसंयत जीव और अप्रमत्तसंयत जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ १६५ ॥

उक्त दो गुणस्थानोंमें तेजोलेश्यासे युक्त जीवराशि ओघप्रमाणको पूर्ण नहीं करती है, यह इस सूत्रमें संख्यात पदके देनेका अभिप्राय है ।

पञ्चलेश्यावालोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती जीवोंके संख्यातवें भागप्रमाण हैं ॥ १६६ ॥

सुगममेदं सुत्तं । एदस्स अवहारकालो वुच्चदे । पंचिदियतिरिक्खजोणिणीअवहार-
काले संखेज्जरूवेहि गुणिदे सण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिणीणमवहारकालो होदि । तम्हि
संखेज्जरूवेहि गुणिदे सण्णिपंचिदियतिरिक्खतेउलेस्सियमिच्छाइट्ठीणमवहारकालो होदि ।
तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे पम्मलेस्सियमिच्छाइट्ठीणमवहारकालो होदि ।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा ति ओघं ॥ १६७ ॥

एदस्स वि सुत्तस्स अत्थो सुगमो ।

पमत्त-अप्पमत्तसंजदा द्व्यपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ॥ १६८ ॥

तेउलेस्सियाणं संखेज्जदिभागमेचा हवंति । कुदो ? पम्मलेस्साए^१ सह गदजीवाणं
पउरं संभवाभावादो ।

सुकलेस्सिएसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा ति द्व्य-
पमाणेण केवडिया, पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । एदेहि पलिदो-
वममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण^२ ॥ १६९ ॥

यह सूत्र सुगम है । अब पञ्चलेश्यासे युक्त मिथ्यादृष्टि जीवराशिके अवहारकालका
कथन करते हैं— पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंके अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर
संखी पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर
संखी पंचेन्द्रिय तिर्यंच तेजोलेश्यावाले मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे
गुणित करने पर पञ्चलेश्यावाले मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है ।

पञ्चलेश्यावाले जीव सासादनसम्पगदृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत
गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें ओघप्ररूपणाके समान पर्योपमके असंख्यातवें भाग
प्रमाण हैं ॥ १६७ ॥

इस सूत्रका भी अर्थ सरल है ।

पञ्चलेश्यावाले प्रमत्तसंयत जीव और अप्रमत्तसंयत जीव द्व्यपमाणकी अपेक्षा
कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ १६८ ॥

पञ्चलेश्यावाले प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत जीव तेजोलेश्यावाले प्रमत्तसंयत और
अप्रमत्तसंयत जीवोंके संख्यातवें भागप्रमाण होते हैं, क्योंकि, पञ्चलेश्यासे युक्त प्रमत्तसंयत
और अप्रमत्तसंयत गुणस्थानको प्राप्त हुए जीव प्रचुर नहीं होते हैं ।

शुक्ललेश्यावालोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानतक प्रत्येक

१ प्रतिशु ' लेस्सा ' इति पाठः ।

२ शुक्ललेश्या मिथ्यादृष्ट्यादयः संयतासंयतान्ताः पर्योपमासंख्येयभागप्रमिताः । स. सि. १, ८. पत्था-
संखेज्जमागया सुक्का ॥ गो. जी. ५४२.

एत्थ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागवयणं सावहारपरूवणं ओघपमाणपडिसेहफलं । कुदोवगम्मदे ? संगहपरिहारेण पज्जवणयावलंबणादो । एत्थ अवहारकालो वुच्चदे । ओघ-असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालं आवलियाए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे लद्धं तम्हि चव पक्खित्ते तेउलेस्सियअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदि-भाएण गुणिदे पम्मलेस्सियअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे काउलेस्सियअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे किण्हलेस्सियअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे लद्धं तम्हि चव पक्खित्ते णील्लेस्सिय-असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे सुक्क-लेस्सियअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । सग-सगअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकाले आव-लियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे सग-सगसम्माभिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । ते

गुणस्थानमें जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं । इन जीवोंके द्वारा अन्तर्मुहूर्त कालसे पल्योपम अपहृत होता है ॥ १६९ ॥

इस सूत्रमें अवहारकालसहित पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण इस वचनका प्ररूपण ओघप्रमाणके प्रतिषेध करनेके लिये दिया है ।

शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान —संग्रहनयका परिहार करके पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन लेनेसे यह जाना जाता है ।

अब यहाँ पर अवहारकालका प्ररूपण करते हैं— ओघ असंयतसम्यग्दृष्टि अवहार-कालको आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसीमें मिला देने पर तेजोलेश्यासे युक्त असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्या-तवें भागसे गुणित करने पर पद्मलेश्यासे युक्त असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर कापोतलेश्यासे युक्त असंयतसम्यग्दृष्टि-योंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर कृष्णलेश्यासे युक्त असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसीमें मिला देने पर नीललेश्यासे युक्त असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर शुक्ललेश्यासे युक्त असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इन अपने अपने असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालोंको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर अपने अपने सम्यग्मिथ्या-दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इन अपने अपने सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालको

संखेज्जरूवेहि गुणिदे सग-सगसासणसम्माइड्डिअवहारकालो होदि । तेसु आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदेसु तेउ-पम्मलेस्सियसंजदासंजदअवहारकालो होदि । णवरि सुक्कलेस्सियअसंजदसम्माइड्डिअवहारकाले संखेज्जरूवेहि गुणिदे सुक्कमिच्छाइड्डिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे सम्मामिच्छाइड्डिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सुक्कलेस्सियसासणसम्माइड्डिअवहारकालो होदि । तम्हि आव-लियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे सुक्कलेस्सियसंजदासंजदअवहारकालो होदि । सग-सग-अवहारकालेण पलिदोवमे भागे हिदे, सग-सगरासिणो हवंति ।

पमत्त-अप्पमत्तसंजदा दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा' ॥१७०॥

एदे दो वि रासिणो ओघपमाणं ण पावेंति, तेउ-पम्मसुक्कलेस्सासु अकमेण विहजिय द्विदत्तादो । सेसं सुगेज्जं ।

अपुव्वकरणप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि ति ओघं ॥ १७१ ॥

संख्यातसे गुणित करने पर अपने अपने सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इन्हें अर्थात् तेजोलेइयावाले और पञ्चलेइयावाले सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालोंको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर तेजोलेइयावाले और पञ्चलेइयावाले संयतासंयतोंके अवहारकाल होते हैं । इतना विशेष है कि शुक्कलेइयावाले असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर शुक्कलेइयावाले मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर शुक्कलेइयावाले सम्यग्मिथ्या-दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर शुक्कलेइयावाले सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर शुक्कलेइयावाले संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है । इस अपने अपने अवहार-कालसे पल्योपमके भाजित करने पर अपनी अपनी राशिका प्रमाण आता है ।

शुक्कलेइयावाले प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ १७० ॥

शुक्कलेइयासे युक्त प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत ये दोनों राशियां ओघप्रमाणको प्राप्त नहीं होती हैं, क्योंकि, प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत गुणस्थानमें जीव तेजोलेइया, पञ्चलेइया और शुक्कलेइयामें युगपत् विभक्त होकर स्थित हैं । शेष कथन सुग्राह्य है ।

शुक्कलेइयावाले जीव अपूर्वकरण गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १७१ ॥

१ प्रमत्ताप्रमत्तसंयताः संख्येयाः स. सि. १, ८.

२ अपूर्वकरणादयः सयोगिकेवल्यन्ताः अलेइयाइव सामान्योक्तसंख्याः । ब. सि. १, ८.

कुदो ? अण्णलेस्साभावादो । अजोगिणो अलेस्सिया । कुदो ? कम्मलेवणिमित्त-
जोग-कसायाभावा । जोगस्स कथं लेस्साववएसो ? ण, लिंपदि त्ति जोगस्स वि लेस्सा-
ववएससिद्धीदो ।

भागाभागं वत्तइस्सामो । सव्वजीवरासिमणंतखंडे कए बहुखंडा तिलेस्सिया होंति ।
सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा अलेस्सिया होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा तेउ-
लेस्सिया होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा पम्मलेस्सिया । सेसेगभागो सुक्क-
लेस्सिया । तिलेस्सियरासिमावलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडेऊण तत्थेगखंडं तदो पुध
इवियं सेसे बहुभागे धेत्तूण तिण्णि समपुंजे करिय अवणिदेगखंडमावलियाए असंखेज्जदि-
भाएण खंडिय तत्थ बहुखंडे पढमपुंजे पक्खित्ते किण्हलेस्सिया । सेसेगखंडमावलियाए
असंखेज्जदिभागेण खंडिय बहुखंडे विदियपुंजे पक्खित्ते णीललेस्सिया । सेसेगखंडं
तदियपुंजे पक्खित्ते काउलेस्सिया । तदो काउलेस्सियरासिमणंतखंडे कए बहुखंडा मिच्छा-
इट्ठिणो । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा असंजदसम्माइट्ठिणो । सेसं संखेज्जखंडे कए

चूंकि अपूर्वकरण आदि गुणस्थानोंमें शुक्ललेश्याको छोड़कर दूसरी लेश्या नहीं पाई
जाती है, इसलिये अपूर्वकरण आदि गुणस्थानोंमें ओघप्रमाण ही शुक्ललेश्यावालोंका प्रमाण
है । अयोगी जीव लेश्यारहित हैं, क्योंकि, अयोगी गुणस्थानमें कर्मलेपका कारणभूत योग और
कषाय नहीं पाया जाता है ।

शंका — केवल योगको लेश्या यह संज्ञा कैसे प्राप्त हो सकती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, ' जो लिंपन करती है वह लेश्या है ' इस निरुक्तिके
अनुसार योगके भी लेश्या संज्ञा सिद्ध हो जाती है ।

अब भागाभागको बतलाते हैं— सर्व जीवराशिके अनन्त खंड करने पर बहुभाग-
प्रमाण कृष्ण, नील और कापोत इन तीन लेश्यावाले जीव हैं । शेष एक भागके अनन्त खंड
करने पर बहुभाग लेश्यारहित जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग
तेजोलेश्यावाले जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग पद्मलेश्यावाले
जीव हैं । शेष एक भागप्रमाण शुक्ललेश्यावाले जीव हैं । कृष्ण, नील और कापोत इन तीन
लेश्यासे युक्त जीवराशिको आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके उनमेंसे एक खंडको
पृथक् स्थापित करके और शेष बहुभागके समान तीन पुंज करके घटाकर पृथक् रखे हुए
एक खंडको आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके वहां जो बहुभाग आवे उसे प्रथम पुंजमें
मिला देने पर कृष्णलेश्यावाले जीवोंका प्रमाण होता है । शेष एक भागको आवलीके
असंख्यातवें भागसे खंडित करके बहुभाग दूसरे पुंजमें मिला देने पर नीललेश्यावाले
जीवोंका प्रमाण होता है । शेष एक भाग तीसरे पुंजमें मिला देने पर कापोतलेश्यावाले
जीवोंका प्रमाण होता है । अनन्तर कापोतलेश्यावाली राशिके अनन्त खंड करने पर बहुभाग
मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग असंयतसम्पदृष्टि

बहुखंडा सम्मामिच्छाइट्टिणो । सेसेगखंडं सासणसम्माइट्टिणो । एवं नील-किण्हलेस्साणं पि भागाभागं कायच्चं । तेउलेस्सियरासिमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा मिच्छाइट्टिणो । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा असंजदसम्माइट्टिणो । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सम्मामिच्छाइट्टिणो । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सासणसम्माइट्टिणो । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा संजदासंजदा । सेसेगभागो पमत्तापमत्तसंजदा । पम्मलेस्सियरासिमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा मिच्छाइट्टिणो । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा असंजदसम्माइट्टिणो । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सम्मामिच्छाइट्टिणो । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सासणसम्माइट्टिणो । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा संजदासंजदा । सेसेगभागो पमत्तापमत्तसंजदा । सुकलेस्सियरासिं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा असंजदसम्माइट्टिणो । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा मिच्छाइट्टिणो । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सम्मामिच्छाइट्टिणो । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सासणसम्माइट्टिणो । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा संजदासंजदा । सेसेगभागो पमत्तापमत्तादओ ।

अप्पाबहुगं तिविहं सत्थानादिभेएण । सत्थाने पयदं । किण्ह-नील-काउलेस्सिय-

जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भाग प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि जीव हैं । इसीप्रकार नील और कापोतलेद्या-वाल्लोका भी भागाभाग कर लेना चाहिये । तेजोलेद्यावाली जीवराशिके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग सासादनसम्यग्दृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग संयतासंयत जीव हैं । शेष एक भागप्रमाण प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत जीव हैं । पद्मलेद्यावाली जीवराशिके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग सासादनसम्यग्दृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग संयतासंयत जीव हैं । शेष एक भागप्रमाण प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत जीव हैं । शुक्लेद्यक राशिके संख्यात खंड करने पर बहुभाग असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग सासादनसम्यग्दृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग संयतासंयत जीव हैं । शेष एक भागप्रमाण प्रमत्तसंयत आदि जीव हैं ।

स्वस्थान आधिके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है । उनमेंसे स्वस्थानमें अल्पबहुत्व

मिच्छाइद्धीणं सत्थाणं णत्थि, रासीदो थोवदरभागहाराभावा । सासणादीणमोघभंगो । सव्वत्थोवो तेउलेस्सियमिच्छाइद्धिअवहारकालो । विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । सेढी असंखेज्जगुणा । दव्वमसंखेज्जगुणं । पदरमसंखेज्जगुणं । लोगो असंखेज्जगुणो । सासणादीणमोघं । एवं चेव पम्म-सुकलेस्साणं सत्थाणं वत्तव्वं । सत्थाणं गदं ।

परत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवो काउलेस्सियअसंजदसम्माइद्धिअवहारकालो । सम्मा-मिच्छाइद्धिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइद्धिअवहारकालो संखेज्जगुणो । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । एवं गेयव्वं जाव पलिदोवमं ति । तदो काउलेस्सियमिच्छाइद्धिणो अणंतगुणा । एवं णील-क्किण्हाणं । सव्वत्थोवा तेउलेस्सियअप्पमत्तसंजदा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । असंजदसम्माइद्धिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाइद्धिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइद्धिअवहारकालो संखेज्जगुणो । संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । एवं गेयव्वं जाव पलिदोवमं ति । तदो तेउ-

प्रकृत है— कृष्ण, नील और कापोतलेश्याषालोंके स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है, क्योंकि, कृष्ण, नील और कापोतलेश्यक राशियोंसे उनके भागहार स्तोक नहीं हैं । सासादनसम्यग्दृष्टि आदिके स्वस्थान अल्पबहुत्व ओघ स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान हैं । तेजोलेश्यक मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है । उन्हींकी विष्कंभसूची अवहारकालसे असंख्यातगुणी है । जगश्रेणी विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणी है । द्रव्य जगश्रेणीसे असंख्यातगुणा है । जगप्रतर द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । लोक जगप्रतरसे असंख्यातगुणा है । सासादनसम्यग्दृष्टि आदिका स्वस्थान अल्पबहुत्व ओघ स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है । इसीप्रकार पञ्चलेश्य और शुक्लेश्याषालोंके स्वस्थान अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये । इसप्रकार स्वस्थान अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

अब परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— कापोतलेश्यक असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है । सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है । उन्हींका द्रव्य अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये । पल्योपमसे कापोतलेश्यक मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तगुणे हैं । इसीप्रकार नील और कृष्णलेश्यक जीवोंके परस्थान अल्पबहुत्वका भी कथन करना चाहिये । तेजोलेश्यक अप्रमत्तसंयत जीव सबसे स्तोक हैं । प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल प्रमत्तसंयतोंसे असंख्यातगुणा है । सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है । संयतसंयतोंका अवहारकाल सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । उन्हींका द्रव्य अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये । पल्योपमसे

लेस्सियामिच्छाइडिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । उवरि सत्थाणभंगो । एवं पम्मलेस्साए । सुकलेस्साए सव्वत्थोवा चत्तारि उवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । सजोगिकेवली संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । असंजदसम्माइडिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । मिच्छाइडिअवहारकालो संखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाइडिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइडिअवहारकालो संखेज्जगुणो । संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव द्वयमसंखेज्जगुणं । एवमवहारकालपडिलोमेण णेयव्वं जाव पलिदोवमं ति । परत्थाणं गदं ।

सव्वपरत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा चत्तारि उवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । सजोगिकेवली संखेज्जगुणा । सुकलेस्सियअप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पम्मलेस्सियअप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । तेउलेस्सियअप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । तेउलेस्सियअसंजदसम्माइडिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाइडिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्मा-

तेजोलेश्यक मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । इसके ऊपर स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान कथन करना चाहिये । इसीप्रकार पद्मलेश्याके परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये । शुक्लेश्यामें चारों उपशामक सबसे स्तोक हैं । क्षपक उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । सयोगिकेवली जीव क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं । अप्रमत्तसंयत जीव सयोगिकेवलियोंसे संख्यातगुणे हैं । प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल प्रमत्तसंयतोंसे असंख्यातगुणा है । मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंयतसम्यग्दृष्टिअवहारकालसे संख्यातगुणा है । सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है । संयतासंयतोंका अवहारकाल सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । उन्हींका द्रव्य अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार अवहारकालके प्रतिलोम क्रमसे पर्योपमतक ले जाना चाहिये । इसप्रकार परस्थान अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

अब सर्व परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है- चारों उपशामक सबसे स्तोक हैं । क्षपक उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । सयोगिकेवली संख्यातगुणे हैं । शुक्लेश्यक अप्रमत्तसंयत जीव सयोगियोंसे संख्यातगुणे हैं । प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । पद्मलेश्यक अप्रमत्तसंयत जीव शुक्लेश्यक प्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । पद्मलेश्यक प्रमत्तसंयत जीव पद्मलेश्यक अप्रमत्तसंयत जीवोंसे संख्यातगुणे हैं । तेजोलेश्यक अप्रमत्तसंयत जीव पद्मलेश्यक प्रमत्तसंयत जीवोंसे संख्यातगुणे हैं । तेजोलेश्यक प्रमत्तसंयत जीव तेजोलेश्यक अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । तेजोलेश्यक असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल तेजोलेश्यक प्रमत्तसंयतोंसे असंख्यातगुणा है । सम्यग्मिथ्यादृष्टि-

इष्टिअवहारकालो संखेज्जगुणो । पम्मलेस्सियअसंजदसम्माइष्टिअवहारकालो असंखेज्जगुणो ।
 सम्मामिच्छाइष्टिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइष्टिअवहारकालो संखेज्जगुणो ।
 काउलेस्सियअसंजदसम्माइष्टिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । किण्हलेस्सियअसंजदसम्माइष्टि-
 अवहारकालो असंखेज्जगुणो । णीललेस्सियअसंजदसम्माइष्टिअवहारकालो विसेसाहिओ ।
 काउलेस्सियसम्मामिच्छाइष्टिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइष्टिअवहारकालो
 संखेज्जगुणो । किण्हलेस्सियसम्मामिच्छाइष्टिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । णीललेस्सिय-
 सम्मामिच्छाइष्टिअवहारकालो विसेसाहिओ । किण्हलेस्सियसासणसम्माइष्टिअवहारकालो
 संखेज्जगुणो । णीललेस्सियसासणसम्माइष्टिअवहारकालो विसेसाहिओ । तेउलेस्सियसंजदा-
 संजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । पम्मलेस्सियसंजदासंजदअवहारकालो संखेज्जगुणो ।

योका अवहारकाल असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । सासा-
 दनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है ।
 पद्मलेश्यक असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल तेजोलेश्यक सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहार-
 कालसे असंख्यातगुणा है । सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंयतसम्यग्दृष्टियोंके
 अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके
 अवहारकालसे संख्यातगुणा है । कापोतलेश्यक असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल
 पद्मलेश्यक सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । कृष्णलेश्यक असंयत-
 सम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल कापोतलेश्यक असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यात-
 गुणा है । नीललेश्यक असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल कृष्णलेश्यक असंयतसम्यग्दृष्टि
 अवहारकालसे विशेष अधिक है । कापोतलेश्यक सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल नीललेश्यक
 असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । कापोतलेश्यक सासादनसम्यग्दृष्टियोंका
 अवहारकाल सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है । कृष्णलेश्यक सम्यग्मिथ्या-
 दृष्टियोंका अवहारकाल कापोतलेश्यक सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा
 है । नीललेश्यक सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल कृष्णलेश्यक सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके
 अवहारकालसे विशेष अधिक है । कृष्णलेश्यक सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल
 नीललेश्यक सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है । नीललेश्यक सासादन-
 सम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल कृष्णलेश्यक सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे विशेष
 अधिक है । तेजोलेश्यक संयतासंयतोंका अवहारकाल नीललेश्यक सासादनसम्यग्दृष्टियोंके
 अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । पद्मलेश्यक संयतासंयतोंका अवहारकाल तेजोलेश्यक
 संयतासंयतोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है । शुक्ललेश्यक असंयतसम्यग्दृष्टियोंका

१ प्रतिषु ' प्रमच० ' इति पाठः ।

सुकलेस्सियअसंजदसम्माइड्डिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सुकलेस्सियमिच्छाइड्डिअवहार-
कालो संखेज्जगुणो । सुकलेस्सियसम्मामिच्छाइड्डिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सुकलेस्सिय-
सासणसम्माइड्डिअवहारकालो संखेज्जगुणो । सुकलेस्सियसंजदासंजदअवहारकालो असंखेज्ज-
गुणो । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । एवमवहारकालपडिलोमेण णेदव्वं जाव पलिदोवमं ति ।
तदो तेउलेस्सियमिच्छाइड्डिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । पम्मलेस्सियमिच्छाइड्डिअवहारकालो
संखेज्जगुणो । तस्सेव विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । तेउलेस्सियमिच्छाइड्डिविक्खंभसूई संखेज्ज-
गुणा । सेढी असंखेज्जगुणा । पम्मलेस्सियमिच्छाइड्डिदव्वमसंखेज्जगुणं । तेउलेस्सियमिच्छा-
इड्डिदव्वं संखेज्जगुणं । पदरमसंखेज्जगुणं । लोगो असंखेज्जगुणो । अलेस्सिया अणंतगुणा ।
काउलेस्सिया अणंतगुणा । नीललेस्सिया विसेसाहिया । किण्हलेस्सिया विसेसाहिया (एसो
सव्वपरत्थाणअप्पाबहुओ गुरुवएसेण लिहिदो, णत्थि एत्थ सुत्तजुत्ती वक्खाणं वा ।)

एवं लेस्साणुवादो गदो ।

अवहारकाल पद्मलेश्यक संयतासंयतोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । शुक्लेश्यक
मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल उन्हींके असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे संख्यातगुणा है ।
शुक्लेश्यक सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल उन्हींके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे असंख्यात-
गुणा है । शुक्लेश्यक सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल उन्हींके सम्यग्मिथ्यादृष्टि अव-
हारकालसे संख्यातगुणा है । शुक्लेश्यक संयतासंयतोंका अवहारकाल उन्हींके सासादन-
सम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । उन्हींका द्रव्य पल्योपमसे असंख्यातगुणा है ।
इसीप्रकार अवहारकालके प्रतिलोम क्रमसे पल्योपमतक ले जाना चाहिये । पल्योपमसे
तेजोलेश्यक मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । पद्मलेश्यक मिथ्यादृष्टियोंका
अवहारकाल तेजोलेश्यक मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है । उन्हींकी विष्कंभसूची
अवहारकालसे असंख्यातगुणी है । तेजोलेश्यक मिथ्यादृष्टि जीवोंकी विष्कंभसूची पद्मलेश्यक
जीवोंकी विष्कंभसूचीसे संख्यातगुणी है । जगश्रेणी तेजोलेश्यक विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणी
है । पद्मलेश्यक मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य जगश्रेणीसे असंख्यातगुणा है । तेजोलेश्यक मिथ्यादृष्टि
जीवोंका द्रव्य पद्मलेश्यक मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे संख्यातगुणा है । जगप्रतर तेजोलेश्यक द्रव्यसे असं-
ख्यातगुणा है । लोक जगप्रतरसे असंख्यातगुणा है । लेश्यारहित जीव लोकसे अनन्तगुणे हैं ।
कापोतलेश्यक जीव लेश्यारहित जीवोंसे अनन्तगुणे हैं । नीललेश्यावाले जीव कापोतलेश्यक
जीवोंसे विशेष अधिक हैं । कृष्णलेश्यक जीव नीललेश्यक जीवोंसे विशेष अधिक हैं ।
यह सर्व परस्थान अल्पबहुत्व गुरुके उपदेशसे लिखा है । परंतु इस विषयमें सूत्रयुक्ति
अथवा व्याख्यान नहीं पाया जाता है ।

इसप्रकार लेश्यानुवाद समाप्त हुआ ।

भवियाणुवादेण भवसिद्धिएसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगि-
केवलि त्ति ओघं ॥ १७२ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो सुगमो । णवरि अभवसिद्धियसहिदसिद्ध-तेरसगुणपडिवण्ण-
रासिं भवसिद्धियमिच्छाइट्ठिभजिदं तेसिं वर्गं च सव्वजीवरासिस्सुवरि पक्खित्ते भवसिद्धिय-
मिच्छाइट्ठिधुवरासी होदि ।

अभवसिद्धिया दव्वपमाणेण केवडिया, अणंता ॥ १७३ ॥

एत्थ अणंतवयणं संखेज्जासंखेज्जपडिसेहफलं । एत्थ कालपमाणं सुत्ते किमिदि ण
वुत्तं ? ण एस दोसो, अभवसिद्धियाणं वयाभावा । वयाभावो वि^१ तेसिं मोक्खाभावादो
अवगम्मदे ।

खेत्तपमाणं किमिदि ण वुत्तं इदि चे ण, अपरिप्फुडस्स अत्थस्स फुडीकरणट्ठं

भव्यमार्गणाके अनुवादसे भव्यसिद्धिकोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगि-
केवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १७२ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है । इतना विशेष है कि अभव्यसिद्धिक जीवराशिसहित
सिद्धराशि और तेरह गुणस्थानप्रतिपन्न जीवराशिको तथा उक्त राशियोंके वर्गमें भव्यसिद्धिक
मिथ्यादृष्टि राशिका भाग देनेसे जो लब्ध आवे उसे सर्व जीवराशिमें मिला देने पर
भव्यसिद्धिक मिथ्यादृष्टि ध्रुवराशि होती है ।

अभव्यसिद्धिक जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? अनन्त हैं ॥ १७३ ॥

यहां सूत्रमें अनन्त यह वचन संख्यात और असंख्यातके प्रतिषेधके लिये दिया है ।

शंका — यहां भव्य मार्गणमें अभव्योंका प्रमाण कहते समय सूत्रमें कालकी अपेक्षा
प्रमाण क्यों नहीं कहा ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, अभव्यसिद्धोंका व्यय नहीं होता । उनका
व्यय नहीं होता है यह कथन उनको मोक्षकी प्राप्ति नहीं होती है इससे जाना जाता है ।

शंका—अभव्योंका प्रमाण क्षेत्रप्रमाणकी अपेक्षा क्यों नहीं कहा ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, जो अर्थ अपरिस्फुट हो उसके स्फुट करनेके लिये

१ भव्यानुवादेन भव्येषु मिथ्यादृष्ट्यादयोऽयोगकेवल्यन्ताः सामान्योक्तसंख्याः । स. सि. १, ८. तेण
विहिणो सव्वो संसारी भव्वरासिस्स ॥ गो. जी. ५६०.

२ अमव्या अनन्ताः । स. सि. १, ८. अवरो जुत्ताणंतो अमव्वरासिस्स होदि परिमाणं ॥ गो. जी. ५६०.

३ प्रतिषु ' वयाभावादि ' इति पाठः ।

खेत्तपमाणं वुच्चदे । एसो पुण अभवसिद्धियरासिपमाणं सुट्टु परिप्फुडो । कुदो ? अभव-
सिद्धियरासिपमाणं जहण्णजुत्तार्णतमिदि सयलाइरियजयप्पसिद्धादो ।

भागाभागं वत्तइस्सामो । सच्चजीवरासिमणंतखंडे कए बहुखंडा भवसिद्धियमिच्छा-
इट्ठिणो । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया । सेसमणंतखंडे
कए बहुखंडा अभवसिद्धिया । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा असंजदसम्माइट्ठिणो ।
सेसमोघभंगो ।

अप्पावहुगं तिविहं सत्थाणादिभेएण । भवसिद्धियसत्थाणं परत्थाणं मिच्छाइट्ठि-
प्पहुडि जाव अजोगिकेवलि ति ओघं । अभवसिद्धियसत्थाणं णत्थि ।

सच्चपरत्थाणे सच्चत्थोवा अजोगिकेवली । चत्तारि उवसामगा संखेज्जगुणा । एवं
जाव पलिदोवमं ति णेयव्वं । तदो अभवसिद्धिया अणंतगुणा । णेव भवसिद्धिया णेव
अभवसिद्धिया अणंतगुणा । भवसिद्धियमिच्छाइट्ठी अणंतगुणा ।

एवं भवियमग्गणा समत्ता ।

क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण कहा जाता है । परंतु यह अभव्यसिद्धिक राशिका प्रमाण अत्यन्त स्फुट
है, क्योंकि, अभव्यसिद्धिक राशिका प्रमाण जघन्य युक्तानन्त है, यह सर्व आचार्य जगत्में
प्रसिद्ध है ।

अब भागाभागको धतलाते हैं— सर्व जीवराशिके अनन्त खंड करने पर बहुभाग
भव्यसिद्धिक मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग भव्यसिद्धिक
और अभव्यसिद्धिक विकल्परहित जीव होते हैं । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर
बहुभाग अभव्यसिद्धिक जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग असंयत-
सम्यग्दृष्टि जीव हैं । शेष भागाभाग ओघ भागाभागके समान है ।

स्वस्थान अल्पबहुत्व आदिके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है । उनमेंसे भव्य-
सिद्धिक जीवोंका स्वस्थान और परस्थान अल्पबहुत्व मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर
अयोगिकेवली गुणस्थानतक ओघ स्वस्थान और परस्थान अल्पबहुत्वके समान है ।
अभव्यसिद्धिक जीवोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है ।

सर्व परस्थान अल्पबहुत्वमें अयोगिकेवली जीव सबसे स्तोक हैं । वारों उपशामक
अयोगियोंसे संख्यातगुणे हैं । इसीप्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये । पल्योपमसे अभव्य-
सिद्धिक जीव अनन्तगुणे हैं । भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक विकल्पसे रहित जीव
अभव्यसिद्धिक जीवोंसे अनन्तगुणे हैं । भव्यसिद्धिक मिथ्यादृष्टि जीव अभव्योंसे अनन्तगुणे हैं ।

इसप्रकार भव्यमार्गणा समाप्त हुई ।

सम्मत्ताणुवादेण सम्माइट्टीसु असंजदसम्माइट्टिप्पहुडि जाव
अजोगिकेवलि ति ओघं ॥ १७४ ॥

केण कारणेण ? सम्मत्तसामण्णेण अहियारादो । ण हि सामणवदिरित्तो तच्चिसेसो
अत्थि । तम्हा ओघपरूवणा चेय णिरवयवा एत्थ वत्तव्वा ।

खइयसम्माइट्टीसु असंजदसम्माइट्टी ओघं ॥ १७५ ॥

जदि वि एसो खइयसम्माइट्टिरासी ओघअसंजदसम्माइट्टिरासिस्स असंखेज्जदि-
भागमेत्तो, तो वि ओघपरूवणं लभदे; पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तत्तं पडि विसेसा-
भावा ।

संजदासंजदप्पहुडि जाव उवसंतकसायवीदरागछदुमत्था दव्व-
पमाणेण केवडिया, संखेजा ॥ १७६ ॥

सम्यक्त्वमार्गणाके अनुवादसे सम्यग्दृष्टियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर
अयोगिकेवली गुणस्थानतक जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १७४ ॥

शंका—सम्यक्त्वी जीव असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुण-
स्थानतक ओघप्ररूपणाके समान किस कारणसे हैं ?

समाधान—क्योंकि, यहां पर सम्यक्त्व सामान्यका अधिकार है। सामान्यको
छोड़कर उसके विशेष नहीं पाये जाते हैं। इसलिये ओघप्ररूपणा ही निश्चय यहां पर कहना
चाहिये ।

क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १७५ ॥

यद्यपि यह क्षायिक असंयतसम्यग्दृष्टिराशि ओघ असंयतसम्यग्दृष्टि राशिके असं-
ख्यातवें भागमात्र है तो भी वह ओघप्ररूपणाको प्राप्त होती है, क्योंकि, पत्थोपमके
असंख्यातवें भागत्वके प्रति उक्त दोनों राशियोंमें कोई विशेषता नहीं है ।

संयतासंयत गुणस्थानसे लेकर उपशान्तकषाय वीतराग छद्मस्थ गुणस्थानतक
क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ १७६ ॥

१ प्रतिपु ' -केवली ' इति पाठः ।

२ सम्यक्त्वानुवादेन क्षायिकसम्यग्दृष्टिपु असंयतसम्यग्दृष्टयः पत्थोपमासंख्येयभागप्रमिताः । स. सि. १, ८.
वासपुभत्ते खइया संखेजा जइ हवंति सोहम्मे । तो संखपल्लिदिये केवडिया एवमणुपादे ॥ संखावलिहिदपल्ला
खइया ॥ गो. नी. ६५७-६५८.

३ संयतासंयतदय उपशान्तकषायान्ताः संख्येयाः । स. सि. १, ८.

पुव्वसुत्तादो खइयसम्माइट्ठि त्ति अणुवट्ठेद । ओघपमाणं ण पूरेदि' त्ति जाणा-
वणट्ठं संखेज्जवयणं । संजदासंजदखइयसम्माइट्ठिणो कथं संखेज्जा ? ण, तेसिं मणुसगइ-
वदिरित्तसेसगईसु अभावादो । पुव्वं वट्ठतिरिक्खाउआ सम्मत्तं घेत्तूण दंसणमोहणीयं खविय
तिरिक्खेसु उववज्जंता लब्भंति तेण संजदासंजदखइयसम्माइट्ठिणो असंखेज्जा लब्भंति
त्ति चे ण, पुव्वं वट्ठाउअखइयसम्माइट्ठीणं तिरिक्खेसुप्पणाणं संजमासंजमगुणाभावादो ।
कुदो ? भोगभूमिंतरेण तेसिमुप्पत्तीए अणत्थ संभवाभावादो । ण च तिरिक्खेसु दंसण-
मोहणीयखवणा वि अत्थि, 'णियमा मणुसगईए' इदि वयणादो ।

चउण्हं खवा अजोगिकेवली ओघं ॥ १७७ ॥

एत्थ चउण्हं कम्माणं घाइसण्णिदाणं खवगा इदि अज्झाहारो कायव्वो । चउसदो-
गुणट्ठाणाणं विसेसणं किण्ण होदि त्ति वुत्ते ण, तत्थ छट्ठीणिहेसाणुववत्तीदो । सेसं सुगमं ।

पूर्व सूत्रसे इस सूत्रमें क्षायिकसम्यग्दृष्टि इस पदकी अनुवृत्ति होती है । संयतासंयतसे
उपशांतकषाय गुणस्थानतक क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंका प्रमाण ओघप्रमाणको पूर्ण नहीं करता
है, इसका ज्ञान करानेके लिये सूत्रमें 'संख्यात हैं' यह वचन दिया है ।

शंका— संयतासंयत क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव संख्यात कैसे हैं ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, संयतासंयत क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव मनुष्य गतिको
छोड़कर शेष गतियोंमें नहीं पाये जाते हैं, और पर्याप्त मनुष्य संख्यात ही होते हैं, इसलिये
संयतासंयत क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव भी संख्यात ही होते हैं, ऐसा कहा ।

शंका— जिन जीवोंने पहले तिर्यंचायुका बंध कर लिया है ऐसे जीव सम्यक्सत्वको
प्रदण करके और दर्शनमोहनीयका क्षय करके तिर्यंचोंमें उत्पन्न होते हुए पाये जाते हैं,
इसलिये संयतासंयत क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यात होना चाहिये ।

समाधान— नहीं, क्योंकि, जिन्होंने पहले तिर्यंचायुका बन्ध कर लिया है ऐसे
तिर्यंचोंमें उत्पन्न हुए क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंके संयतासंयतगुण नहीं पाया जाता है,
क्योंकि, भोगभूमिके बिना अन्यत्र उनकी उत्पत्ति संभव नहीं है । तथा तिर्यंचोंमें
दर्शनमोहनीयकी क्षयणा भी नहीं पाई जाती है, क्योंकि, दर्शनमोहनीयकी क्षयणा नियमसे
मनुष्यगतिमें ही होती है, ऐसा आगमवचन है ।

चारों क्षपक और अयोगिकेवली जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १७७ ॥

यहां पर क्षपक पदसे घातिसंज्ञक चारों कर्मोंके क्षपक, ऐसा अध्याहार कर लेना चाहिये ।

शंका— सूत्रमें आया हुआ 'चउ' शब्द गुणस्थानोंका विशेषण क्यों नहीं होता है ?

समाधान— ऐसा पूछने पर आचार्य कहते हैं कि नहीं, क्योंकि, 'चउ' शब्दमें षष्ठी

१ प्रतिषु 'ओघपमाणं पूरेदि त्ति' इति पाठः ।

२ प्रतिषु 'संजदा' इति पाठः ।

३ चत्वारः क्षपकाः सयोगकेवलिनोऽयोगकेवलिनश्च सामान्योक्तसंख्याः । स. सि. १. ८.

सजोगिकेवली ओघं ॥ १७८ ॥

कुदो ? स्वइयसम्मत्तेण विणा सजोगिकेवलीणमणुवलंभा ।

वेदगसम्माइट्टीसु असंजदसम्माइट्टिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदा
त्ति ओघं' ॥ १७९ ॥

एत्थ ओघरासी चैव त्थोवूणो वेदगरासी होदि तेणोघत्तं ण विरुज्झदे ।

उवसमसम्माइट्टीसु असंजदसम्माइट्टि-संजदासंजदा ओघं' ॥ १८० ॥

एदे दो वि रासीओ ओघअसंजदसम्माइट्टि-संजदासंजदाणमसंखेज्जदिभागमेत्ता जदि
वि होंति, तो वि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागत्तेण समाणत्तमत्थि ति ओघमिदि भणिदं ।
सेसं सुगमं ।

विभक्तिका निर्देश नहीं बन सकता है । अर्थात् सूत्रमें आया हुआ 'चउण्हं' यह पद प्रथमा
विभक्तिरूप है, षष्ठी नहीं, इसलिये गुणस्थानोंका विशेषण नहीं हो सकता है । शेष कथन
सुगम है ।

सयोगिकेवली जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १७८ ॥

चूंकि सयोगिकेवली जीव क्षायिकसम्यक्त्वके विना नहीं पाये जाते हैं, इसलिये
उनका प्रमाण ओघप्ररूपणाके समान है ।

वेदकसम्यग्दृष्टियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अप्रमत्तसंयत गुण-
स्थानतक जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १७९ ॥

असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अप्रमत्तसंयत गुणस्थानतक ओघराशि ही कुछ
कम वेदकसम्यग्दृष्टि जीघराशि होती है, इसलिये ओघत्व विरोधको प्राप्त नहीं होता है ।

उपशमसम्यग्दृष्टियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत जीव ओघप्ररूपणाके
समान हैं ॥ १८० ॥

ये दोनों भी राशियां ओघ असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयतोंके असंख्यातवें भाग-
प्रमाण होती हैं, तो भी पल्योपमके असंख्यातवें भागत्वकी अपेक्षा उपशमसम्यग्दृष्टि असंयत-
सम्यग्दृष्टि और संयतासंयतोंकी ओघ असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयतोंके साथ समानता
है, इसलिये सूत्रमें 'ओघ' ऐसा कहा है । शेष कथन सुगम है ।

१ क्षायोपशमिकसम्यग्दृष्टिषु असंयतसम्यग्दृष्ट्यादेयोऽप्रमत्तान्ताः सामान्योक्तसंख्याः । स. सि. १, ८. ततो
य वेदपुत्रसमया । आकलिअसंखगुणिदा असंखगुणहीणया कमसो ॥ गो. जी. ६५८.

२ प्रतिषु 'त्थोवूणो' इति पाठः ।

३ औपशमिकसम्यग्दृष्टिषु असंयतसम्यग्दृष्टिसंयतासंयताः पल्योपमासंख्येयमागप्रमिताः । स. सि. १, ८.

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव उवसंतकसायवीदरागच्छदुमत्था ति द्व्य-
पमाणेण केवडिया, संखेज्जा' ॥ १८१ ॥

एत्थ संखेज्जवयणं ओघपमाणपडिसेहफलं । ओघद्व्यपमाणं ण पावेदि ति कध-
मवगम्मदे ? ओघपमत्तादिरासिस्स संखेज्जदिभागो तम्हि तम्हि उवसमसम्माइडिरासी
होदि ति अप्पावहुगवयणादो ।

सासणसम्माइट्टी ओघं ॥ १८२ ॥
सम्मामिच्छाइट्टी ओघं ॥ १८३ ॥
मिच्छाइट्टी ओघं ॥ १८४ ॥

एदाणि तिण्णि वि सुत्ताणि ओघम्मि परूविदाणि ति णेह परूविज्जंत्ति । एत्थ
अवहारकालुप्पायणविहिं वत्तइस्सामो । ओघअसंजदसम्माइट्टिअवहारकाले आवलियाए

प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर उपशान्तकषाय वीतरागछद्मस्य गुणस्थानतक
उपशमसम्यग्दृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ १८१ ॥

यहां सूत्रमें 'संख्यात हैं' यह वचन ओघप्रमाणके प्रतिषेधके लिये दिया है ।

शंका—प्रमत्तादि उपशान्तकषाय गुणस्थानतक उपशमसम्यग्दृष्टि जीव ओघ
द्रव्यप्रमाणको प्राप्त नहीं होते हैं, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—'ओघ प्रमत्तसंयत आदि गुणस्थानवर्ती राशिके संख्यातवें भाग उस
उस गुणस्थानमें उपशमसम्यग्दृष्टि जीव होते हैं' इस अल्पबहुत्व अनुयोगद्वारके वचनसे
जाना जाता है कि प्रमत्तसंयत आदि उपशान्तकषायतक प्रत्येक गुणस्थानके उपशमसम्यग्दृष्टि
जीव ओघप्रमाणको प्राप्त नहीं होते हैं ।

सासादनसम्यग्दृष्टि जीव ओघप्ररूपणाके समान पर्योपमके असंख्यातवें भाग
हैं ॥ १८२ ॥

सम्यग्मिध्यादृष्टि जीव ओघप्ररूपणाके समान पर्योपमके असंख्यातवें भाग
हैं ॥ १८३ ॥

मिध्यादृष्टि जीव ओघप्ररूपणाके समान अनन्तानन्त हैं ॥ १८४ ॥

इन तीनों सूत्रोंका प्ररूपण ओघप्ररूपणाके समय कर आये हैं, इसलिये यहां उनका
प्ररूपण नहीं करते हैं । अब यहां पर अवहारकालके उत्पन्न करनेकी विधिको बतलाते हैं—

१ प्रमत्ताप्रमत्तसंयताः संख्येयाः । चत्वार औपसमिकाः सामान्योक्तसंख्याः । स. सि. १, ८.

२ सासादनसम्यग्दृष्टयः सम्यग्मिध्यादृष्टयो मिध्यादृष्टयश्च सामान्योक्तसंख्याः । स. सि. १, ८. पला-
संखेज्जदिमा सासणमिच्छा य संख्यणिदा हु । मिस्सा तेहिं निहीणो संसारी वामपरिमाणं ॥ गो. जी. ६५९.

असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चैव पक्खित्ते वेदगअंसजदसम्माइड्ढिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे खइयअंसजदसम्माइड्ढिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे असंजदउवसमसम्माइड्ढिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे सम्मामिच्छाइड्ढिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सासणसम्माइड्ढिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे वेदगसम्माइड्ढिसंजदासंजदअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे उवसमसम्माइड्ढिसंजदासंजदअवहारकालो होदि । एदेहि अवहारकालेहि पलिदोवमे भागे हिदे सग-सगरासीओ आगच्छंति । सिद्ध-तेरसगुणट्ठाणरासिं मिच्छाइड्ढिभजिदतच्चग्गं च सच्चजीवरासिस्सुवरि पक्खित्ते मिच्छाइड्ढि-धुवरासी होदि ।

भागाभागं वत्तइस्सामो । सच्चजीवरासिमणंतखंडे कए बहुखंडा मिच्छाइड्ढिणो होति । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा सिद्धा । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा वेदग-अंसजदसम्माइड्ढिणो । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा खइयअंसजदसम्माइड्ढिणो । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा उवसमअंसजदसम्माइड्ढिणो । सेस संखेज्जखंडे कए

ओष असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर ओ लब्ध आये उसे उसी अवहारकालमें मिला देने पर वेदक असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर क्षायिक असंयत-सम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर असंयत उपशमसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर वेदकसम्यग्दृष्टि संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर उपशमसम्यग्दृष्टि संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है । इन अवहारकालोंसे पश्योपमके भाजित करने पर अपनी अपनी राशियां आती हैं ।

सिद्धराशि और तेरह गुणस्थानधर्ती राशिको तथा मिथ्यादृष्टि राशिसे भाजित उन राशियोंके धर्गको सर्व जीवराशिमें मिला देने पर मिथ्यादृष्टियोंकी धुवराशि होती है ।

अब भागाभागको बतलाते हैं— सर्व जीवराशिके अनन्त खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग सिद्ध जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग वेदकअसंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग क्षायिक असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग उपशम असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं । शेष एक

बहुखंडा सम्भामिच्छाइट्टिणो । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सासणसम्भाइट्टिणो । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा वेदगसम्भाइट्टिसंजदासंजदा । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा उवसमसम्भाइट्टिसंजदासंजदा । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा खइयसम्भाइट्टिसंजदासंजदा । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा पमत्तसंजदा । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा अप्पमत्तसंजदा । सेसं जाणिय वत्तव्वं ।

अप्पाबहुगं तिविहं सत्थाणादिभेएण । सव्वेसिं सत्थाणमोघं । परत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा वेदगसम्भाइट्टिअप्पमत्तसंजदा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । असंजदसम्भाइट्टिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव द्व्यमसंखेज्जगुणं । एवं णेयव्वं जाव पलिदोवमं ति । उवसमसम्भाइट्टीसु सव्वत्थोवा चत्तारि उवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । उवरि वेदगपरत्थाणभंगो । खइयसम्भाइट्टीसु सव्वत्थोवा चत्तारि उवसावगा । खवगा संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । संजदासंजदा संखेज्जगुणा । असंजदसम्भाइट्टिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव द्व्यम-

भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग सासावनसम्यग्दृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग वेदकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग उपशमसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग प्रमत्तसंयत जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग अप्रमत्तसंयत जीव हैं । शेष भागाभागका कथन जानकर करना चाहिये ।

स्वस्थान अल्पबहुत्व आदिके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है । उनमेंसे सभीका स्वस्थान अल्पबहुत्व ओघप्ररूणाके समान है । अब परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— वेदकसम्यग्दृष्टि अप्रमत्तसंयत जीव सबसे स्तोत्र हैं । इनसे प्रमत्तसंयत जीव संख्यातगुणे हैं । इनसे असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । इससे संयतासंयतोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । उन्हींका द्रव्य अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार पल्योपमत्तक ले जाना चाहिये । उपशमसम्यग्दृष्टियोंमें चारों उपशामक सबसे थोड़े हैं । क्षपक संख्यातगुणे हैं । अप्रमत्तसंयत जीव क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं । प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । इसके ऊपर वेदकसम्यग्दृष्टियोंके परस्थान अल्पबहुत्वके समान जानना चाहिये । क्षायिक सम्यग्दृष्टियोंमें चारों उपशामक सबसे स्तोत्र हैं । क्षपक सबसे संख्यातगुणे हैं । इनसे अप्रमत्तसंयत संख्यातगुणे हैं । इनसे प्रमत्तसंयत संख्यातगुणे हैं । इनसे संयतासंयत संख्यातगुणे हैं । इनसे असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा

संखेज्जगुणं । पल्लिदोवममसंखेज्जगुणं । केवलणाणिणो अणंतगुणा ।

सच्चपरत्थाणे पयदं । सच्चत्थोवा उवसमसम्मइट्ठिणो चत्तारि उवसामगा । तत्थेव खइयसम्मइट्ठिणो संखेज्जगुणा । खवगा संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसंजदउवसमसम्मइट्ठिणो संखेज्जगुणा । कारणं, चारित्तमोहणीयखवणकालादो उवसमसम्मत्तकालस्स संखेज्जगुणत्ता । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसंजदा खइयसम्मइट्ठिणो संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । वेदगसम्मइट्ठिअप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्ता संखेज्जगुणा । खइयसम्मइट्ठिसंजदासंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदाणं संखेज्जभागमेत्तपमत्तसंजदवेदगसम्मइट्ठिहिंतो कथं मणुससंजदासंजदाणं संखेज्जदिभागमेत्तखइयसम्मइट्ठिसंजदासंजदाणं संखेज्जगुणत्तं ? ण, सच्चसम्मत्तेसु संजदेहिंतो देससंजदाणं देससंजदेहिंतो असंजदाणं बहुत्तुवलंभादो । तं पि कुदो ? चारित्तावरणखओवसमुत्स सच्चसम्मत्तेसुप्पायण-

है । इससे उन्हींका द्रव्य असंख्यातगुणा है । इससे पल्लयोपम असंख्यातगुणा है । इससे केवल-
हानी अनन्तगुणे हैं ।

सर्वपरस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— उपशमश्रेणीके चारों गुणस्थानवर्ती उपशम-
सम्यग्दृष्टि जीव सबसे स्तोक हैं । उपशमश्रेणीके चारों गुणस्थानवर्ती क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव
उनसे संख्यातगुणे हैं । क्षपक जीव उपशमश्रेणीके चारों गुणस्थानवर्ती क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंसे
संख्यातगुणे हैं । अप्रमत्तसंयत उपशमसम्यग्दृष्टि जीव क्षपक जीवोंसे संख्यातगुणे हैं, क्योंकि,
स्वरित्त मोहनीयके क्षपण कालसे उपशमसम्यक्त्वका काल संख्यातगुणा है । प्रमत्तसंयत
उपशमसम्यग्दृष्टि जीव अप्रमत्तसंयत उपशमसम्यग्दृष्टियोंसे संख्यातगुणे हैं । अप्रमत्तसंयत
क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव प्रमत्तसंयत उपशमसम्यग्दृष्टियोंसे संख्यातगुणे हैं । प्रमत्तसंयत
क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव अप्रमत्तसंयत क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंसे संख्यातगुणे हैं । वेदकसम्य-
ग्दृष्टि अप्रमत्तसंयत जीव क्षायिकसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । वेदकसम्यग्दृष्टि
प्रमत्तसंयत जीव वेदकसम्यग्दृष्टि अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । क्षायिकसम्यग्दृष्टि
संयतासंयत जीव वेदकसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं ।

शंका— प्रमत्तसंयतोंके संख्यातत्वे भागमात्र प्रमत्तसंयत वेदकसम्यग्दृष्टियोंसे मनुष्य
संयतासंयतोंके संख्यातत्वे भागमात्र क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीव संख्यातगुणे कैसे
हो सकते हैं ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, सर्व सम्यक्त्वोंमें संयतोंसे देशसंयत और देशसंयतोंसे
असंयत जीव बहुत पाये जाते हैं, इसलिये मनुष्य संयतासंयतोंके संख्यातत्वे भागमात्र
क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीव प्रमत्तसंयतोंके संख्यातत्वे भागमात्र वेदकसम्यग्दृष्टियोंसे
संख्यातगुणे बन जाते हैं ।

शंका— सर्व सम्यक्त्वोंमें संयतोंसे संयतासंयत और संयतासंयतोंसे असंयत बहुत
होते हैं, यह कैसे जाना जाता है ?

संभवाभावादो । ' तेरसकोडी देसे ' एदीए गाहाए एदस्स वक्खाणस्स किण्ण विरोहो ? होउ णाम । कथं पुण विरुद्धवक्खाणस्स भदत्तं ? ण, जुत्तिसिद्धस्स आइरियपरंपरागयस्स एदीए गाहाए णाभदत्तं काऊण सक्किज्जदि, अइप्पसंगादो । वेदगअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । खइयअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । उवसमअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । वेदगसम्माइट्ठिसंजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । उवसमसम्माइट्ठिसंजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव दच्चमसंखेज्जगुणं । एवमवहारकालपडिलोमेण णेयच्चं जाव पल्लिदोवमं ति । तदो खइयसम्माइट्ठिणो केवलणाणिणो अणंतगुणा । मिच्छाइट्ठिणो अणंतगुणा ।

एवं सम्मत्तमगणा गदा ।

समाधान—चूंकि चरित्रावरण मोहनयिकर्मका क्षयोपशम सर्व सम्यक्त्वोंमें प्रायः संभव नहीं है, इसलिये यह जाना जाता है कि सर्व सम्यक्त्वोंमें संयतोसे संयतासंयत और संयतासंयतोसे असंयत जीव अधिक होते हैं ।

शंका—यदि ऐसा है तो 'देशसंयतमें तेरह करोड़ मनुष्य हैं' इस गाथाके साथ इस पूर्वोक्त व्याख्यानका विरोध क्यों नहीं आ जायगा ?

समाधान—यदि उक्त गाथार्थके साथ पूर्वोक्त व्याख्यानका विरोध प्राप्त होता है तो होओ ।

शंका—तो इसप्रकारके विरुद्ध व्याख्यानको समीचीनता कैसे प्राप्त हो सकती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, जो युक्तिसिद्ध है और आचार्य परंपरासे आया हुआ है उसमें इस गाथासे असमीचीनता नहीं लाई जा सकती, अन्यथा अतिप्रसंग दोष आ जायगा ।

वेदकसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयतोसे असंख्यातगुणा है । क्षायिकअसंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल वेदकअसंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । उपशमअसंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल क्षायिकअसंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल उपशमअसंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है । वेदकसम्यग्दृष्टि संयतासंयतोका अवहारकाल सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । उपशमसम्यग्दृष्टि संयतासंयतोका अवहारकाल वेदकसम्यग्दृष्टि संयतासंयतोके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । उन्हीं उपशमसम्यग्दृष्टि संयतासंयतोका द्रव्य उन्हींके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार अवहारकालके प्रतिलोमक्रमसे पल्योपमतक ले जाना चाहिये । पल्योपमसे क्षायिकसम्यग्दृष्टि केवलज्ञानी अनन्तगुणे हैं । मिथ्यादृष्टि जीव क्षायिकसम्यग्दृष्टि केवलज्ञानियोंसे अनन्तगुणे हैं ।

इसप्रकार सम्यक्त्वमार्गणा समाप्त हुई ।

सण्णियाणुवादेण सण्णीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया,
देवेहिं सादिरेयं ॥ १८५ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो वुच्चदे । सव्वे देवमिच्छाइट्ठिणो सण्णिणो चेय । तेसिं
संखेज्जदिभागमेत्ता तिगदिसण्णिमिच्छाइट्ठिणो होंति । तेण सण्णिमिच्छाइट्ठिणो देवेहि
सादिरेया । एत्थ अवहारकालो वुच्चदे । तं जहा— देवअवहारकालादो पदरंगुलमेगं घेत्तूण
संखेज्जखंडे करिय तत्थेगखंडमवणिय सेसबहुखंडं तम्मिह चेव पक्खित्ते सण्णिमिच्छाइट्ठि-
अवहारकालो होदि । एदेण जगपदरे भागे हिदे सण्णिमिच्छाइट्ठिदव्वं होदि ।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागच्छदुमत्था ति
ओघं ॥ १८६ ॥

सुगममेदं सुत्तं ।

असण्णी दव्वपमाणेण केवडिया, अणंतां ॥ १८७ ॥

संज्ञीमार्गणाके अनुवादसे संज्ञियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा
कितने हैं ? देवोंसे कुछ अधिक हैं ॥ १८५ ॥

अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । सर्व देव मिथ्यादृष्टि जीव संज्ञी ही होते हैं । तथा
उनके संख्यातवें भागप्रमाण तीन गतिसंबन्धी संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं । इसलिये
संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीव देवोंसे कुछ अधिक हैं, ऐसा सूत्रमें कहा है ।

अब यहां पर अवहारकालका कथन करते हैं । वह इसप्रकार है— देव अवहारकालमें
एक प्रतरांगुलको ग्रहण करके और उसके संख्यात खंड करके उनमेंसे एक खंडको निकालकर शेष
बहु खंड उसीमें मिला देने पर संज्ञी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इस अवहार-
कालसे जगप्रतरके भाजित करने पर संज्ञी मिथ्यादृष्टि द्रव्य होता है ।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय वीतरागछद्मस्थ गुणस्थानतक
प्रत्येक गुणस्थानमें संज्ञी जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १८६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असंज्ञी जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? अनन्त हैं ॥ १८७ ॥

१ संज्ञातुवादेण संस्सिधु मिथ्यादृष्ट्यादयः क्षीणकषायान्ताश्चक्षुर्दर्शनिवत् । स. सि. १, ८. देवेहिं सादिरेयो
रासी सण्णीणं होदि परिमाणं ॥ गो. जी. ६६३.

२ असंज्ञिनो मिथ्यादृष्टयोऽनन्तानन्ताः । तदुभयव्यपदेशरहिताः सामान्योक्तसंख्याः । स. सि. १, ८.
तेणूणो संसारी सव्वेसिमसण्णिजीवाणं ॥ गो. जी. ६६३.

अणंताणंताहि ओसपिणि-उस्सपिणीहि ण अवहिरंति कालेण
॥ १८८ ॥

खेत्तेण अणंताणंता लोगा ॥ १८९ ॥

एदाणि तिण्णि सुत्ताणि अवगदत्थाणि ति एदेसिं ण वक्खाणं वुच्चदे । एत्थ
धुवरासिं वत्तइस्सामो । सण्णिरासिं णेव-सण्णि-णेव-असण्णिरासिं च असण्णिभजिदत्तव्वग्गं च
सव्वजीवरासिस्सुवरि पक्खित्ते असण्णिधुवरासी होदि ।

भागाभागं वत्तइस्सामो । सव्वजीवरासिमणंतखंडे कए बहुखंडा असण्णिणो होंति ।
सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा णेव सण्णी णेव असण्णी होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए
बहुखंडा सण्णिभिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसमोघभागाभागभंगो ।

तिविहमवि अप्पावहुगं जाणिऊण भाणिद्वं ।

एवं सण्णिमगणा समत्ता ।

आहाराणुवादेण आहारएसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगि-
केवलि ति ओघं ॥ १९० ॥

कालकी अपेक्षा असंज्ञी मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तानन्त अवसर्पिणियों और
उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत नहीं होते हैं ॥ १८८ ॥

क्षेत्रकी अपेक्षा असंज्ञी मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तानन्त लोकप्रमाण हैं ॥ १८९ ॥

इन तीनों सूत्रोंका अर्थ अचगत है, इसलिये इनका व्याख्यान नहीं किया है । अब
यहां पर धुवराशिका प्रतिपादन करते हैं— संज्ञीराशि और संज्ञी तथा असंज्ञी इन दोनों
व्यपदेशोंसे रहित जीवराशिको तथा असंज्ञी राशिसे भाजित उक्त राशियोंके वर्गको सर्व
जीवराशिमें मिला देने पर असंज्ञी जीवोंके प्रमाण लानेके लिये धुवराशि होती है ।

अब भागाभागको बतलाते हैं— सर्व जीवराशिके अनन्त खंड करने पर उनमेंसे
बहुभाग असंज्ञी जीव हैं । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग संज्ञी और
असंज्ञी इन दोनों व्यपदेशोंसे रहित जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर
बहुभाग संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष भागाभागका ओघ भागाभागके समान कथन करना
चाहिये ।

तीनों प्रकारके अल्पबहुत्वका भी जानकर कथन करना चाहिये ।

इसप्रकार संज्ञीमार्गणा समाप्त हुई ।

आहारमार्गणाके अनुवादसे आहारकोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयोगि-

१ आहाराणुवादेण आहारकेसु मिथ्यादृष्ट्यादयः सयोगकेवल्यन्ताः सामान्योक्तसंख्याः । स. सि. १, ८.

एदं पि सुत्तं सुगमं चेय । णवरि सगुणपडिवण्णअणाहारसिं आहारमिच्छाइड्ढि-
रासिभजिदत्त्वग्गं च सव्वजीवरासिस्सुवरि पक्खिस्सत्ते आहारिमिच्छाइड्ढिधुवरासी होदि ।

अणाहारएसु कम्मइयकायजोगिभंगो' ॥ १९१ ॥

एदं पि सुत्तं सुगमं चेय । एत्थ धुवरासी वुच्चदे । ओघमिच्छाइड्ढिधुवरासि-
मंतोसुहुत्तेण गुणिदे अणाहारिमिच्छाइड्ढिधुवरासी होदि । ओघअसंजदसम्माइड्ढिअवहारकालं
आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चैव पक्खिस्सत्ते आहारिअसंजदसम्मा-
इड्ढिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे सम्मामिच्छाइड्ढि-
अवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सासणसम्माइड्ढिअवहारकालो होदि ।
तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे संजदासंजदअवहारकालो होदि । तम्हि
आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे अणाहारिअसंजदसम्माइड्ढिअवहारकालो होदि ।

केवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १९० ॥

यह भी सूत्र सुगम है । इतना विशेष है कि गुणस्थानप्रतिपन्न राशि और अनाहारक
जीवराशिको तथा आहारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिसे भाजित उक्त राशियोंके घर्गको सर्व
जीवराशिमें मिला देने पर आहारक मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण लानेके लिये धुवराशि
होती है ।

अनाहारकोंमें मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि और सयोगि-
केवली जीवोंका प्रमाण कर्मणकाययोगियोंके प्रमाणके समान है ॥ १९१ ॥

यह भी सूत्र सुगम ही है । अब यहां धुवराशिका प्रतिपादन करते हैं— ओघ
मिथ्यादृष्टियोंकी धुवराशिको अन्तमुहूर्तसे गुणित करने पर अनाहारक मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाण
लानेके लिये धुवराशि होती है । ओघअसंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके
असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसीमें मिला देने पर आहारक
असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित
करने पर सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर आह-
रक सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित
करने पर आहारक संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे
गुणित करने पर अनाहारक असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके

तन्निवरीदसंसारी सव्वो आहारपरिमाणं ॥ गो. जी. ६७१.

१ अनाहारकेषु मिथ्यादृष्टिसासादनसम्यग्दृष्ट्यसंयतसम्यग्दृष्टयः सामान्योक्तसंख्याः । सयोगिकेवलिमः
संख्यायाः । स. सि. १, ८. कम्मइयकायजोगी होदि अणाहारयाण परिमाणं ॥ गो. जी. ५७१.

तस्मिन् आवस्थित्याय असंखेज्जदिभाएण गुणिदे अणाहारिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि ।

अयोगिकेवली ओघं ॥ १९२ ॥

सुगममेदं ।

भागाभागं वत्तइस्सामो । सच्चजीवरासिमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा आहारि-
मिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा अणाहारिबंधगा होंति । सेसमणंतखंडे
कए बहुखंडा अणाहारिअबंधगा होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा आहारि-
असंजदसम्माइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सम्मामिच्छाइट्ठिणो होंति ।
सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा आहारिसासणसम्माइट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए
बहुखंडा संजदासंजदा होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा अणाहारिअसंजदसम्मा-
इट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा अणाहारिसासणसम्माइट्ठिणो होंति । सेसं
संखेज्जखंडे कए बहुखंडा पमत्तसंजदा होंति । सेसेगखंडं अप्पमत्तसंजदादओ^१ होंति ।

अप्पाबहुगं तिविहं सत्थाणादिभेएण । तत्थ सत्थाणं मूलोघभंगो । परत्थाणे पयदं ।

असंख्यातवै भागसे गुणित करने पर अनाहारक सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है ।

अनाहारक अयोगिकेवली जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १९२ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अब भागाभागको बतलाते हैं— सर्व जीवराशिके असंख्यात खंड करनेपर बहुभाग
आहारक मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग अनाहारक
बन्धयुक्त जीव हैं । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग अनाहारक अबन्धक
जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग आहारक असंयतसम्यग्दृष्टि
जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव हैं ।
शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग आहारक सासादनसम्यग्दृष्टि जीव हैं ।
शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग संयतासंयत जीव हैं । शेष एक
भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग अनाहारक असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं । शेष एक
भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग अनाहारक सासादनसम्यग्दृष्टि जीव हैं । शेष एक
भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग प्रमत्तसंयत जीव हैं । शेष एकभाग प्रमाण अप्रमत्तसंयत
आदि जीव हैं ।

स्वस्थान अल्पबहुत्व आदिके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है । उनमेंसे स्वस्थान
अल्पबहुत्व मूल ओघ स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है ।

१ अयोगिकेवलिणः सामाम्योक्तसंख्याः । स. क्षि. १, ८. २ प्रतिपु 'अप्पमत्तसंजदा' इति पाठः ।

सव्वत्थोवा चत्तारि उवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । आहारिसंजदसम्माइड्डिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सम्मा-
मिच्छाइड्डिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । आहारिसासणसम्माइड्डिअवहारकालो संखेज्जगुणो ।
संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । एवं णेयव्वं जाव
पलिदोवमं ति । तदो आहारिमिच्छाइड्डिणो अणंतगुणा । अणाहारएसु सव्वत्थोवा सजोगि-
केवली । असंजदसम्माइड्डिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइड्डिअवहारकालो
असंखेज्जगुणो । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । एवं णेयव्वं जाव पलिदोवमं ति । तदो
अबंधगा अणंतगुणा । बंधगा अणंतगुणा ।

सव्वपरत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा अणाहारिसजोगिकेवली । (अजोगिकेवली संखेज्ज-
गुणा ।) चत्तारि उवसामगा संखेज्जगुणा । (खवगा संखेज्जगुणा ।) आहारिसजोगिकेवली संखेज्ज-
गुणा । अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । आहारिसंजदसम्माइड्डिअव-

अब परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— चारों गुणस्थानवर्ती उपशामक जीव सबसे
स्तोक हैं । क्षपक जीव उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । अप्रमत्तसंयत जीव क्षपकोंसे संख्यातगुणे
हैं । प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । आहारक असंयतसम्यग्दृष्टियोंका
अवहारकाल प्रमत्तसंयतोंसे असंख्यातगुणा है । सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल
आहारक असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । आहारक सासादन-
सम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल आहारक सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा
है । संयतासंयतोंका अवहारकाल आहारक सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे
असंख्यातगुणा है । उन्हींका द्रव्य उन्हींके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार
पल्योपमतक ले जाना चाहिये । पल्योपमसे आहारक मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तगुणे हैं । अना-
हारकोंमें सयोगिकेवली जीव सबसे स्तोक हैं । अनाहारक असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल
अनाहारक सयोगिकेवलियोंसे असंख्यातगुणा है । अनाहारक सासादनसम्यग्दृष्टियोंका
अवहारकाल अनाहारक असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । उन्हींका
द्रव्य उन्हींके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये ।
पल्योपमसे अबन्धक जीव अनन्तगुणे हैं । बन्धक जीव अबन्धकोंसे अनन्तगुणे हैं ।

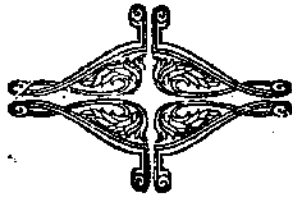
अब सर्व परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— अनाहारक सयोगिकेवली जीव
सबसे स्तोक हैं । अयोगिकेवली जीव उनसे संख्यातगुणे हैं । चार गुण-
स्थानवर्ती उपशामक जीव अयोगिकेवलियोंसे संख्यातगुणे हैं । क्षपक जीव
उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । आहारक सयोगिकेवली जीव क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं ।
अप्रमत्तसंयत जीव आहारक सयोगिकेवलियोंसे संख्यातगुणे हैं । प्रमत्तसंयत जीव
अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । आहारक असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल प्रमत्तसंयतोंसे

हारकालो असंखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाइड्डिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । आहारिसासण-
सम्माइड्डिअवहारकालो संखेज्जगुणो । संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । अणाहारि-
असंजदसम्माइड्डिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । अणाहारिसासणसम्माइड्डिअवहारकालो
असंखेज्जगुणो । तस्सेव दच्चमसंखेज्जगुणं । एवं णेयच्चं जाव पलिदोवमं ति । तदो अबंधगा
अणंतगुणा । अणाहारिणो बंधगा मिच्छाइड्डिणो अणंतगुणा । तदो आहारिणो मिच्छा-
इड्डिणो असंखेज्जगुणा ।

एवं दव्वाणिओगहारं समत्तं ।

असंख्यातगुणा है । सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल आहारक असंयतसम्यग्दृष्टि अवहार-
कालसे असंख्यातगुणा है । आहारक सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सम्यग्मिथ्यादृष्टि
अवहारकालसे संख्यातगुणा है । संयतासंयतोंका अवहारकाल आहारक सासादनसम्यग्दृष्टि
अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । अनाहारक असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संयता-
संयतोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । अनाहारक सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल
अनाहारक असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । उन्हींका द्रव्य अपने अवहार-
कालसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार पर्योपमतक ले जाना चाहिये । पर्योपमसे अबन्धक
जीव अनन्तगुणे हैं । अनाहारक बन्धक मिथ्यादृष्टि जीव अबन्धकोंसे अनन्तगुणे हैं । इनसे
आहारक बन्धक जीव असंख्यातगुणे हैं ।

इसप्रकार द्रव्यानुयोगद्वार समाप्त हुआ ।



परिशिष्ट

१ द्बपरूवणासुत्ताणि ।

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
१	द्बपमाणायुगमेण दुविहो णिदेसो ओघेण आदेसेण य ।	१२	अद्दं पडुच्च संखेज्जा ।	९३
२	ओघेण मिच्छाइट्ठी द्बपमाणेण केवडिया, अणंता ।	१३	सजोगिकेवली द्बपमाणेण केवडिया, पवेसेण एको वा दो वा तिण्णि वा, उक्कस्सेण अद्दुत्तरसयं ।	९५
३	अणंताणंताहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि ण अवहिरंति कालेण ।	१४	अद्दं पडुच्च सदसहस्सपुधत्तं ।	९५
४	खेत्तेण अणंताणंता लोगा ।	१५	आदेसेण गदियाणुवादेण णिरयगईए णेरइएसु मिच्छाइट्ठी द्बपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ।	१२१
५	तिण्हं पि अधिगमो भावपमाणं ।	१६	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ।	१२९
६	सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति द्बपमाणेण केवडिया, पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । एदेहि पलिदोवममवहिरिज्जदि अंतोमुहुत्तेण ।	१७	खेत्तेण असंखेज्जाओ सेठीओ जगपदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताओ । तासिं सेठीणं विक्खंभसूची अंगुलवग्गमूलं विदियवग्गमूलगुणिदेण ।	१३१
७	पमत्तसंजदा द्बपमाणेण केवडिया, कोडिपुधत्तं ।	१८	सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति द्बपमाणेण केवडिया, ओघं ।	१५६
८	अप्पमत्तसंजदा द्बपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ।	१९	एवं पढमाए पुढवीए णेरइया ।	१६१
९	चदुण्हमुवसामगा द्बपमाणेण केवडिया, पवेसेण एको वा दो वा तिण्णि वा, उक्कस्सेण चउवणं ।	२०	विदियादि जाव सत्तमाए पुढवीए णेरइएसु मिच्छाइट्ठी द्बपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ।	१९८
१०	अद्दं पडुच्च संखेज्जा ।	२१	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ।	१९८
११	चउण्हं खवा अजोगिकेवली द्बपमाणेण केवडिया, पवेसेण एको वा दो वा तिण्णि वा, उक्कस्सेण अद्दुत्तरसदं ।	२२	खेत्तेण सेठीए असंखेज्जदिभागो । तिस्से सेठीए आयामो असं-	९२

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	खेज्जाओ जोयणकोडीओ पढमा- दियाणं सेद्विवग्गमूलणं संखेज्जाणं अण्णोण्णव्वासेण ।	१९९		इट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असं- खेज्जा ।	२२९
२३	सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव असं- जदसम्माइट्ठि त्ति ओघं ।	२०६	३४	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि- उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ।	२३०
२४	तिरिक्खगईए तिरिक्खेसु मिच्छा- इट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति ओघं ।	२१५	३५	खेत्तेण पंचिदियतिरिक्खजोणिणि- मिच्छाइट्ठीहि पदरमवहिरदि देव- अवहारकालादो संखेज्जगुणेण का- लेण ।	२३०
२५	पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठी दव्व- पमाणेण केवडिया, संखेज्जा ।	२१७	३६	सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संज- दासंजदा त्ति ओघं ।	२३७
२६	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि- उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ।	२१७	३७	पंचिदियतिरिक्खअपज्जत्ता दव्व- पमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ।	२३९
२७	खेत्तेण पंचिदियतिरिक्खमिच्छा- इट्ठीहि पदरमवहिरदि देवअवहार- कालादो असंखेज्जगुणहीणकालेण ।	२१९	३८	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि- उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ।	२३९
२८	सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संज- दासंजदा त्ति तिरिक्खोघं ।	२२६	३९	खेत्तेण पंचिदियतिरिक्खअपज्जत्तेहि पदरमवहिरदि देवअवहारकालादो असंखेज्जगुणहीणेण कालेण ।	२३९
२९	पंचिदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ।	२२६	४०	मणुसगईए मणुस्सेसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ।	२४४
३०	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि- उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ।	२२७	४१	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि- उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ।	२४५
३१	खेत्तेण पंचिदियतिरिक्खपज्जत्त- मिच्छाइट्ठीहि पदरमवहिरदि देव- अवहारकालादो संखेज्जगुणहीणेण कालेण ।	२२८	४२	खेत्तेण सेठीए असंखेज्जदिभागो । तिस्से सेठीए आयामो असंखेज्जदि- जोयणकोडीओ । मणुसमिच्छा- इट्ठीहि रूवा पक्खित्तएहि सेठी अवहिरदि अंगुलवग्गमूलं तदिय- वग्गमूलगुणिदेण ।	२४५
३२	सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संज- दासंजदा त्ति ओघं ।	२२९	४३	सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संज- दासंजदा त्ति दव्वपमाणेण केव-	
३३	पंचिदियतिरिक्खजोणिणीसु मिच्छा-				

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	डिया, संखेज्जा ।	२५१		अंगुलवग्गमूलं तदियवग्गमूलगुणि- देण ।	२६२
४४	पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अजोगि- केवलि त्ति ओघं ।	२५२	५३	देवगईए देवेसु मिच्छाइट्ठी दव्व- पमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ।	२६६
४५	मणुसपज्जत्तेसु मिच्छाइट्ठी दव्व- पमाणेण केवडिया, कोडाकोडा- कोडीए उवरि कोडाकोडाकोडा- कोडीए हेट्टदो छण्हं वग्गाणमुवरि सत्तण्हं वग्गाणं हेट्टदो ।	२५३	५४	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि- उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ।	२६८
४६	सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संज- दासंजदा त्ति दव्वपमाणेण केव- डिया, संखेज्जा ।	२५९	५५	खेत्तेण पदरस्स वेत्थप्पण्णांगुलसय- वग्गपडिभागेण ।	२६८
४७	पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अजोगि- केवलि त्ति ओघं ।	२६०	५६	सासणसम्माइट्ठि-सम्माभिच्छाइट्ठि- असंजदसम्माइट्ठीणं ओघं ।	२६९
४८	मणुसिणीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमा- णेण केवडिया, कोडाकोडाकोडीए उवरि कोडाकोडाकोडाकोडीए हे- ट्टदो छण्हं वग्गाणमुवरि सत्तण्हं वग्गाणं हेट्टदो ।	२६०	५७	भवणवासियदेवेसु मिच्छाइट्ठी दव्व- पमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ।	२७०
४९	मणुसिणीसु सासणसम्माइट्ठिप्पहु- डि जाव अजोगिकेवलि त्ति दव्व- पमाणेण केवडिया, संखेज्जा ।	२६१	५८	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि- उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ।	२७०
५०	मणुसअपज्जत्ता दव्वपमाणेण केव- डिया, असंखेज्जा ।	२६२	५९	खेत्तेण असंखेज्जाओ सेठीओ पद- रस्स असंखेज्जादिभागो । तासिं सेठीणं विक्खंभसई अंगुलं अंगुल- वग्गमूलगुणिदेण ।	२७०
५१	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि- उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ।	२६२	६०	सासणसम्माइट्ठि-सम्माभिच्छाइट्ठि- असंजदसम्माइट्ठिपरुवणा ओघं ।	२७१
५२	खेत्तेण सेठीए असंखेज्जादिभागो । तिस्से सेठीए आयामो असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ । मणुसअपज्जत्तेहि रूवा पक्खित्तेहि सेठिमवहिरदि		६१	वाणवेंतरदेवेसु मिच्छाइट्ठी दव्व- पमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ।	२७२
			६२	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि- उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ।	२७२
			६३	खेत्तेण पदरस्स संखेज्जजोयणसद- वग्गपडिभाएण ।	२७२
			६४	सासणसम्माइट्ठि-सम्माभिच्छाइट्ठि- असंजदसम्माइट्ठी ओघं ।	२७४
			६५	जोइसियदेवा देवगईणं भंगो ।	२७५

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
६६	सोहम्मीसाणकप्पवासियदेवेसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ।	२७६	७५	अणंताणंताहि ओसप्पिणि-उस्स-प्पिणीहि ण अवहिरंति कालेण ।	३०६
६७	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ।	२७६	७६	खेत्तेण अणंताणंता लोणा ।	३०७
६८	खेत्तेण असंखेज्जाओ सेठीओ पद-रस्स असंखेज्जदिभागो । तासिं सेठीणं विक्खंभस्सइ अंगुलविदिय-वग्गमूलं तदियवग्गमूलगुणिदेण ।	२७७	७७	वेइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिया तस्सेव पज्जत्ता अपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ।	३१०
६९	सासणसम्माइट्ठि-सम्मा मिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठी ओघं ।	२८०	७८	असंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ।	३१२
७०	सणक्कुमारप्पहुडि जाव सदार-सहस्सारकप्पवासियदेवेसु जहा सत्तमाए पुढवीए णेरइयाणं भंगो ।	२८०	७९	खेत्तेण वेइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय तस्सेव पज्जत्त-अपज्जत्तेहि पदरम-वहिरदि अंगुलस्स असंखेज्जदि-भागवग्गपडिभाएण अंगुलस्स संखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण ।	३१३
७१	आणद-पाणद जाव णवगेवेज्ज-विमाणवासियदेवेसु मिच्छाइट्ठि-प्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि ति दव्वपमाणेण केवडिया, पलिदो-वमस्स असंखेज्जदिभागो । एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण ।	२८१	८०	पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्तएसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ।	३१४
७२	अणुहिस जाव अवराइदविमाण-वासियदेवेसु असंजदसम्माइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, पलिदो-वमस्स असंखेज्जदिभागो । एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण ।	२८१	८१	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ।	३१४
७३	सव्वङ्कुसिद्धि विमाणवासियदेवा द-व्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ।	२८६	८२	खेत्तेण पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्तएसु मिच्छाइट्ठीहि पदरमवहिरदि अंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्ग-पडिभाएण अंगुलस्स संखेज्जदि-भागवग्गपडिभाएण ।	३१४
७४	इंदियाणुवादेण एइंदिया बादरा सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता दव्व-पमाणेण केवडिया, अणंता ।	३०५	८३	सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अजो-गिकेवलि ति ओघं ।	३१७
			८४	पंचिंदियअपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ।	३१७
			८५	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-	

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ।	३१७		केवडिया, असंखेज्जा ।	३५५
८६	खेत्तेण पंचिदियअपज्जत्तेहि पदर- मवहिरदि अंगुलस्स असंखेज्जदि- भागवग्गपडिभाएण ।	३१८	९३	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि- उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ।	३५५
८७	कायाणुवादेण पुढविकाइया आउ- काइया तेउकाइया वाउकाइया बादरपुढविकाइया बादरआउकाइया बादरतेउकाइया बादरवाउकाइया बादरवणप्फइकाइया पत्तेयसरीरा तस्सेव अपज्जत्ता सुहुमपुढवि- काइया सुहुमआउकाइया सुहुम- तेउकाइया सुहुमवाउकाइया तस्सेव पज्जत्तापज्जत्ता द्ववपमाणेण केव- डिया, असंखेज्जा लोगा ॥	३२९	९४	खेत्तेण असंखेज्जाणि जगपदराणि लोगस्स संखेज्जदिभागो ।	३५५
८८	बादरपुढविकाइय-बादरआउकाइय- बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीर- पज्जत्ता द्ववपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ।	३४८	९५	वणप्फइकाइया णिगोदजीवा बादरा सुहुमा पज्जत्तापज्जत्ता द्वव- पमाणेण केवडिया, अणंता ।	३५६
८९	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि- उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ।	३४९	९६	अणंताणंताहि ओसप्पिणि-उस्स- प्पिणीहि ण अवहिरंति कालेण ।	३५८
९०	खेत्तेण बादरपुढविकाइय-बादर- आउकाइय-बादरवणप्फइकाइय- पत्तेयसरीरपज्जत्तेहि पदरमहिरदि- अंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्ग- पडिभागेण ।	३४९	९७	खेत्तेण अणंताणंता लोगा ।	३५८
९१	बादरतेउपज्जत्ता द्ववपमाणेण केव- डिया, असंखेज्जा । असंखेज्जाव- लियवग्गो आवलियघणस्स अंतो ।	३५०	९८	तसकाइय-तसकाइयपज्जत्तएसु मि- च्छाइड्डी द्ववपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ।	३६०
९२	बादरवाउकाइयपज्जत्ता द्ववपमाणेण		९९	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि- उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ।	३६१
			१००	खेत्तेण तसकाइय-तसकाइयपज्ज- त्तएसु मिच्छाइड्डीहि पदरमवहि- रदि अंगुलस्स असंखेज्जदिभाग- वग्गपडिभागेण अंगुलस्स संखे- ज्जदिभागवग्गपडिभाएण ।	३६१
			१०१	सासणसम्माइड्ढिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि ति ओघं ।	३६२
			१०२	तसकाइयअपज्जत्ता पंचिदियअप- ज्जत्ताण भंगो ।	३६२
			१०३	जोगाणुवादेण पंचमणजोगि-ति णित्रचिजोगीसु मिच्छाइड्डी द्वव- पमाणेण केवडिया, देवाणं संखे- ज्जदिभागो ।	३८६

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
१०४	सासणसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति ओघं ।	३८७		इट्ठी असंजदसम्माइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, ओघं ।	३९९
१०५	पमत्तसंजदप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ।	३८७	११७	वेउव्वियमिस्सकायजोगीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, देवाणं संखेज्जदिभागो ।	४००
१०६	वचिजोगि-असच्चमोसवचिजोगीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ।	३८८	११८	सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, ओघं ।	४०१
१०७	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ।	३८९	११९	आहारकायजोगीसु पमत्तसंजदा दव्वपमाणेण केवडिया, चदुवण्णं ।	४०१
१०८	खेत्तेण वचिजोगि-असच्चमोसवचिजोगीसु मिच्छाइट्ठीहि पद-रमवहिरदि अंगुलस्स संखेज्जदि-भागवग्गपडिभागेण ।	३८९	१२०	आहारमिस्सकायजोगीसु पमत्तसंजदा दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ।	४०२
१०९	सेसाणं मणजोगिभंगो ।	३९०	१२१	कम्मइयकायजोगीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, मूलोघं ।	४०२
११०	कायजोगि-ओरालियकायजोगीसु मिच्छाइट्ठी मूलोघं ।	३९५	१२२	सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, ओघं ।	४०३
१११	सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति जहा मणजोगिभंगो ।	३९५	१२३	सजोगिकेवली दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ।	४०४
११२	ओरालियमिस्सकायजोगीसु मिच्छाइट्ठी मूलोघं ।	३९६	१२४	वेदाणुवादेण इत्थिवेदएसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, देवीहि सादिरैयं ।	४१३
११३	सासणसम्माइट्ठी ओघं ।	३९७	१२५	सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति ओघं ।	४१४
११४	असंजदसम्माइट्ठी सजोगिकेवली दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ।	३९७	१२६	पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणियट्ठिवादरसांपराइयपविट्ठ उवसमा खवा दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ।	४१५
११५	वेउव्वियकायजोगीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, देवाणं संखेज्जदिभागूणो ।	३९८			
११६	सासणसम्माइट्ठी सम्मामिच्छा-				

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
१२७	पुरिसवेदएसु मिच्छाइट्टी दव्व- पमाणेण केवडिया, देवेहि सादि- रेयं ।	४१६		मूलोधं ।	४२९
१२८	सासणसम्माइट्टिप्पहुडि जाव अणियट्टिवादरसांपराइयपविट्ट उ- वसमा खवा दव्वपमाणेण केव- डिया, ओघं ।	४१६	१३८	अकसाईसु उवसंतकसायवीदराग- छदुमत्था ओघं ।	४३०
१२९	णवुंसयवेदेसु मिच्छाइट्टिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति ओघं ।	४१७	१३९	खीणकसायवीदरागछदुमत्था अ- जोगिकेवली ओघं ।	४३०
१३०	पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणि- यट्टिवादरसांपराइयपविट्ट उव- समा खवा दव्वपमाणेण केव- डिया, संखेज्जा ।	४१८	१४०	सजोगिकेवली ओघं ।	४३१
१३१	अपगदवेदएसु तिण्हं उवसामगा दव्वपमाणेण केवडिया, पवेसेण एक्को वा दो वा तिणिण वा, उक्कस्सेण चउवण्णं ।	४१९	१४१	णाणाणुवादेण मदिअण्णाणि-सुद- अण्णाणीसु मिच्छाइट्टी सासण- सम्माइट्टी दव्वपमाणेण केव- डिया, ओघं ।	४३६
१३२	अद्धं पडुच्च संखेज्जा ।	४२०	१४२	विभंगणाणीसु मिच्छाइट्टी दव्व- पमाणेण केवडिया, देवेहि सादि- रेयं ।	४३७
१३३	तिणिण खवा अजोगिकेवली ओघं ।	४२०	१४३	सासणसम्माइट्टी ओघं ।	४३८
१३४	सजोगिकेवली ओघं ।	४२१	१४४	आभिणिबोहियणाणि-सुदणाणि- ओहिणाणीसु असंजदसम्माइट्टि- प्पहुडि जाव खीणकसायवीद- रागछदुमत्था त्ति ओघं ।	४३९
१३५	कसायाणुवादेण कोधकसाइ- माणकसाइ-मायकसाइ-लोभकसा- ईसु मिच्छाइट्टिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति ओघं ।	४२४	१४५	णवरि विसेसो, ओहिणाणीसु पमत्तसंजदप्पहुडि जाव खीण- कसायवीरयच्छदुमत्था त्ति दव्व- पमाणेण केवडिया, संखेज्जा ।	४४१
१३६	पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणि- यट्टि त्ति दव्वपमाणेण केव- डिया, संखेज्जा ।	४२८	१४६	मणपज्जवणाणीसु पमत्तसंजद- प्पहुडि जाव खीणकसायवीद- रागछदुमत्था त्ति दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ।	४४१
१३७	णवरि लोभकसाईसु सुहुमसांप- राइयसुद्विसंजदा उवसमा खवा		१४७	केवलणाणीसु सजोगिकेवली अजोगिकेवली ओघं ।	४४२
			१४८	संजमाणुवादेण संजदेसु पमत्त-	

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	संजदप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं ।	४४७	१५८	सासणसम्माइड्डिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था त्ति ओघं ।	४५४
१४९	सामाइय-छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदेसु पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणि- यट्ठिवादरसांपराइयपविट्ठ उव- समा खवा त्ति ओघं ।	४४७	१५९	अचक्खुदंसणीसु मिच्छाइड्डि- प्पहुडि जाव खीणकसायवीद- रागछदुमत्था त्ति ओघं ।	४५५
१५०	परिहारसुद्धिसंजदेसु पमत्तापमत्त- संजदा दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ।	४४९	१६०	ओहिदंसणी ओहिणाणिभंगो ।	४५५
१५१	सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदेसु सुहु- मसांपराइयसुद्धिसंजदा उवसमा खवा दव्वपमाणेण केवडिया, ओघं ।	४४९	१६१	केवलदंसणी केवलणाणिभंगो ।	४५६
१५२	अहाक्खादविहारसुद्धिसंजदेसु च- उट्ठाणं ओघं ।	४५०	१६२	लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिय- णीललेस्सिय काउलेस्सिएसु मि- च्छाइड्डिप्पहुडि जाव असंजद- सम्माइड्डि त्ति ओघं ।	४५९
१५३	संजदासंजदा दव्वपमाणेण केव- डिया, ओघं ।	४५०	१६३	तेउलेस्सिएसु मिच्छाइड्डि दव्व- पमाणेण केवडिया, जोइसिय- देवेहि सादिरैयं ।	४६१
१५४	असंजदेसु मिच्छाइड्डिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइड्डि त्ति दव्वपमा- णेण केवडिया, ओघं ।	४५०	१६४	सासणसम्माइड्डिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति ओघं ।	४६२
१५५	दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणीसु मिच्छाइड्डि दव्वपमाणेण केव- डिया, असंखेज्जा ।	४५३	१६५	पमत्त-अप्पमत्तसंजदा दव्वपमा- णेण केवडिया, संखेज्जा ।	४६२
१५६	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पि- णि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ।	४५३	१६६	पम्मलेस्सिएसु मिच्छाइड्डि दव्व- पमाणेण केवडिया, सणिपंचि- दियतिरिक्खजोणिणीणं संखेज्ज- दिभागो ।	४६२
१५७	खेत्तेण चक्खुदंसणीसु मिच्छा- इड्डिहि पदरमवहिरदि अंगुलस्स संखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण ।	४५३	१६७	सासणसम्माइड्डिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति ओघं ।	४६३
			१६८	पमत्त-अप्पमत्तसंजदा दव्वपमा- णेण केवडिया, संखेज्जा ।	४६३
			१६९	सुक्कलेस्सिएसु मिच्छाइड्डिप्प- हुडि जाव संजदासंजदा त्ति	

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	द्व्यपमाणेण केवडिया, प- लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतो- मुहुत्तेण ।	४६३	१८०	उवसमसम्माइट्ठीसु असंजदस- म्माइट्ठि-संजदासंजदा ओघं ।	४७६
१७०	पमत्त-अप्पमत्तसंजदा द्व्यपमा- णेण केवडिया, संखेज्जा ।	४६५	१८१	पमत्तसंजदप्पहुडि जाव उवसंत- कसायवीदिरागल्लदुमत्था त्ति द- व्यपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ।	४७७
१७१	अपुव्वकरणप्पहुडि जाव सजोगि- केवलि त्ति ओघं ।	४६५	१८२	सासणसम्माइट्ठी ओघं ।	४७७
१७२	भवियाणुवादेण भवसिद्धिएसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अजो- गिकेवलि त्ति ओघं ।	४७२	१८३	सम्माभिच्छाइट्ठी ओघं ।	४७७
१७३	अभवसिद्धिया द्व्यपमाणेण के- वडिया, अणंता ।	४७२	१८४	मिच्छाइट्ठी ओघं ।	४७७
१७४	सम्मत्ताणुवादेण सम्माइट्ठीसु असंजदसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं ।	४७४	१८५	सण्णियाणुवादेण सण्णीसु मिच्छा- इट्ठी द्व्यपमाणेण केवडिया, देवेहिं सादिरियं ।	४८२
१७५	खइयसम्माइट्ठीसु असंजदसम्मा- इट्ठी ओघं ।	४७४	१८६	सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव खी- णकसायवीदिरागल्लदुमत्था त्ति ओघं ।	४८२
१७६	संजदासंजदप्पहुडि जाव उवसंत- कसायवीदिरागल्लदुमत्था द्व्य- पमाणेण केवडिया, संखेज्जा ।	४७४	१८७	असण्णी द्व्यपमाणेण केवडिया, अणंता ।	४८२
१७७	चउण्हं खवा अजोगिकेवली ओघं ।	४७५	१८८	अणंताणंताहि ओसप्पिणि-उस्स- प्पिणीहि ण अवहिरंति कालेण ।	४८३
१७८	सजोगिकेवली ओघं ।	४७६	१८९	खेत्तेण अणंताणंता लोगा ।	४८३
१७९	वेदगसम्माइट्ठीसु असंजदसम्मा- इट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदा त्ति ओघं ।	४७६	१९०	आहाराणुवादेण आहारएसु मि- च्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगि- केवलि त्ति ओघं ।	४८३
			१९२	अणाहारएसु कम्मइयकायजोगि- भंगो ।	४८४
			१९२	अजोगिकेवली ओघं ।	४८५

२ अवतरण-गाथा-सूची ।

क्रम संख्या	गाथा	पृष्ठ	अन्यत्र कहाँ	क्रम संख्या	गाथा	पृष्ठ	अन्यत्र कहाँ
३४	अट्टत्तीसद्धलवा	६६	गो. जी. ५०५	८	नामं दृवणा दवियं...मणं-	११	
४८	अट्टेव सयसहस्सा अट्टा-	९६	गो. जी. ६२९	५७	नामं दृवणा दवियं...मसं-	१२३	
४९	अट्टेव सयसहस्सा णव-	९७		४१	तिगाहिय-सद णवणउदी	९०	गो. जी. ६२५
३५	अट्टस्स अणलसस्स य	६६	गो. जी. टीका, आदि.	३६	तिणिण सहस्सा सत्त य	६६	अनु. आदि.
१२	अवगयणिवारणट्टं	१७		४५	तिसदिं वदंति केई	९४	गो. जी. ६२६
५९	अपगयणिवारणट्टं	१२६		७०	तेरस कोडी देसे वाव	२५४	गो. जी. ६४२
१	अरसमरूवमगंधं	२	प्रवच. आदि.	६९	तेरह कोडी देसे पण्णा-	२५२	
२९	अवणयणरासिगुणिदो	४८		६८	तेरह कोडी देसे वाव-	२५२	गो. जी. ६४२
२४	अवहारवट्टिरूवा	४६		१९	धम्मधम्ममागाला	२९	
२५	अवहारविसेसेण य	४६		६२	धम्मधम्ममा लोणा	१२९	
१०	आगमो ह्याप्तवचन-	१२	अनु. टीका	३	नयोपनयैकान्तानां	५	आ मी. १०७
३३	आवलि असंखसमया	६५	गो. जी. ५७४	५	नानात्मतामप्रजहत्तदेक-	६	युक्त्यनु. ५०
७७	आवलियाए वग्गो	३५५		३०	पक्खेवरासिगुणिदो	४९	
४४	उत्तरदलहयगच्छे	९४		३८	पण्ठी च सहस्सा	८८	
४७	एक्केक्कगुणट्टाणे	९५		२२	पथेण कोद्वेण य	३२	
४	एयदवियम्मि जे	६	गो. जी. आदि.	२०	पथो सिहा विहत्तो	२९	
२१	कालो तिहा विहत्तो	२९		६५	पह्लो सायट-सूई	१३२	त्रि. सा. ९२
७१	गयणट्टणयकसाया	२२५		२	पुहवी जलं च छाया	३	गो. जी. आदि.
४६	चउरुत्तरतिणिणसयं	९४		९	पूर्वापरविरुद्धान्दे-	१२	
५२	चउसट्ट छच्च सया	९९		५८	,,	१२३	
५६	छक्कादी छक्कंता	१०१		४०	पंचसय बारसुत्तर-	८८	
७८	जगसेढीए वग्गो	३५६		५४	पंचेव सयसहस्सा...उण-	१००	
६०	जत्थ जहा जाणेज्जो	१२६		५५	पंचेव सयसहस्सा...ते-	१०१	
१३	जत्थ बहू जाणेज्जो	१७		१४	प्रमाणनयनिक्षेपै-	१७	
३१	जे अहिया अवहारे	४९		६१	,,	१२६	
३२	जे ऊणा अवहारे	४९		७	बहिरर्थो बहुव्रीहिः	७	
१५	ज्ञानं प्रमाणमित्याहु-	१८	लघीय ६, २.	६	बहुव्रीह्याव्ययीभावो	६	
५०	णव चेव सयसहस्सा	९७		७६	बीजे जौणीभूदे	३४८	
				११	रागाद्वा द्वेषाद्वा मोहाद्वा	१२	

क्रम संख्या	गाथा	पृष्ठ	अन्यत्र कहाँ	क्रम संख्या	गाथा	पृष्ठ	अन्यत्र कहाँ
७५	रालिविसेसेणवहिद-	३४२		७३	सत्तसहरसडसीदेहि	२५६	
२६	लद्धविसेसच्छिणं	४६		५१	सत्तावी अट्टंता	९८ गो. जी.	६६३
२७	लद्धंतरसंगुणिदे	४७		७९	सत्तादी छक्कंता	४५०	
२३	लोगागासपदेसे	३३		७४	साहारणमाहारो	३३२ गो. जी.	१९२
४३	बत्तीसमट्टदालं	९३ गो. जी.	६२८	१६	सिद्धा णिणोदत्तीवा	२६ ति. प. आदि.	
३७	बत्तीस सोलस चत्तारि	८७		१७	सुद्धमो य हवदि...हवदि	२७ वि. भा.	
६६	वारस दस अट्टेव य	१६७		६३	सुद्धमो य हवदि...जायदे	१३०	
६७	"	२०१		१८	सुद्धमं तु हवदि...हवदि	२८	
३९	विसहरसं अडयालं	८८		६४	सुद्धमं तु हवदि...जायदे	१३०	
५३	वे कोडि सत्तवीसा	१००		४२	सालसयं चउवीसं	९१ गो. जी.	६२७
७२	सत्त णव सुण्ण पंच	२५६		२८	हारान्तरहनहारा-	४७	

३ न्यायोक्तियां ।

सूचना—न्यायशास्त्रके पश्चात् १, ३ संख्या भागसूचक और शेष संख्याएं पृष्ठसूचक हैं ।

	भाग पृष्ठ		भाग पृष्ठ
१ अग्निरिव माणवकोऽग्निः ।	१, २८	१६ भूतपूर्वगतिन्यायसमाश्रयणात् ।	१, २६३
२ कज्जणाणत्तादो कारणणाणत्त- मणुमाणिज्जदि ।	१, २१९	१७ भूतपूर्वगति ।	१, १६६
३ कारणकम्माणुसारी कज्जकमो ।	१, २१८	१८ भूदपुब्बगइ ।	१, १२९
४ कारणधर्मस्य कार्यानुवृत्तिः ।	१, २३७	१९ भूदपुब्बणाएण ।	१, २५
५ कारणानुरूपं कार्यम् ।	१, २७०	२० यथोद्देशस्तथा निर्देशः ।	१, १६१
६ जहा उहेसो तहा णिहेसो ।	३, १०-३१३-३१५	२१ यद्येकशब्देन न जानाति ततोऽ- न्येनापि शब्देन ज्ञापयितव्यः ।	१, ३२
७ जं थूलं अप्पवणणीयं तं पुब्ब- मेव भाणियव्वं ।	३, २७-१३०	२२ रूढितन्त्रा व्युत्पत्तिः ।	१, १४०
८ नवीस्रोतोऽन्याय ।	१, १८०	२३ वक्कतुप्रामाण्याद्वचनप्रामा- ण्यम् ।	३, ७२-१९६; ३, ११
९ नहि प्रमाणं प्रमाणान्तरमपेक्षते-	१, २०४	२४ व्याख्यानतो विशेषप्रतिपत्तिः ।	३, १८
१० न हि स्वभावाः परपर्यानु- योगार्हाः ।	१, २९६	सति संभवे व्यभिचारे च विशेषणमर्थवद्भवति ।	१, १८५
११ नागमस्तर्कगोचरः ।	१, ३०४	२५ सव्वकालमवट्टिदरासीणं वया- णुसारिणा आप्ण होदव्वं ।	३, १२०
१२ पमाणेण पमाणाविरोहिणा होदव्वं ।	१, २१७	२६ सामान्यचोदनाश्च विशेषेष्व- तिष्ठन्ते ।	१, १४०
१३ परिशेषध्याय	१, ४२-१५७	२७ सिद्धासिद्धाश्रया हि कथामार्गाः	१, ३४९
१४ प्रतिपाद्यस्य बुभुत्सितार्थविषय- निर्णयोत्पादनं वक्कतुवचसः फलम् ।	१, ९२२	२८ संते संभवे त्रियहिचारे च विसे- सणमत्थव्वंतं भवदि ।	१, २६२-३३१
१५ भाविनि भूतवत् (उपचारः)	१, १८१	२९ सुपरिक्खा द्विययणिबुद्धकरा ।	१, ७०

४ ग्रन्थोल्लेख ।

भाग पृष्ठ

१ अप्पाबहुग सुत्त

- १ 'उवसमसम्माइट्ठी थोवा । खइयसम्माइट्ठी असंखेज्जगुणा । वेदयसम्माइट्ठी असंखेज्जगुणा' त्ति अप्पाबहुगसुत्तादो णव्वदे । ३ ६८
- २ 'तेइंदियअपज्जत्तरासीदो चउरिंदियरासी विसेसहीणो' त्ति वुत्तअप्पाबहुगसुत्तादो । ××× एदं पि अप्पाबहुगसुत्तादो खेव णव्वदे । ३ ३२१
- ३ 'सव्वत्थोवा णवुंसयवेदअसंजदसम्माइट्ठिणो । इत्थिवेदअसंजदसम्माइट्ठिणो असंखेज्जगुणा । पुरिसवेदअसंजदसम्माइट्ठिणो असंखेज्जगुणा' इदि अप्पाबहुगसुत्तादो कारणस्स थोवत्तणं जाणिज्जदे । ३ २६१
- ४ अण्णहा अप्पाबहुगसुत्तेण सह विरोहादो । ३ २७३

२ कसायपाहुड, पाहुडसुत्त

- १ कसायपाहुडउवपसो पुण अट्टकसापसु खीणेषु पच्छा अंतोमुहुत्तं गंतूण सोलस कम्माणि खविज्जंति त्ति । १ २१७
- २ आइरियकहियाणं ×× कसायपाहुडाणं । १ २२१
- ३ 'अणंतरं पच्छदो य मिच्छत्तं' इदि अणेण पाहुडसुत्तेण सह विरोहादो । २ ५६६

३ कालसूत्र (कालानुयोग)

- १ कालसूत्रेण सह विरोधः किन्न भवेदिति चेन्न, तत्र क्षयोपशमस्य प्राधान्यात् । १ १४२
- २ तो एदाओ दुविहसंजदरासीओ सांतराओ इवन्ति । ण च एवं, कालाणिओणे एदासिं णिरंतरत्तुवलभादो । ३ ४४८

४ खुदाबंध

- १ 'पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीहिंदितो वाणवेंतरदेवा संखेज्जगुणा, तस्थेव देवीओ संखेज्जगुणाओ' एदम्हादो खुदाबंधसुत्तादो जाणिज्जदे । ३ २३१
- २ 'मणुसगईए मणुसेहि रुवं पाक्खत्तएहि सेठी अवहिरदि अंगुलवग्गमूलं तदियवग्गमूलगुणिदेण' इदि खुदाबंधसुत्तादो । ३ २४९
- ३ ईसाणकप्पवासियदेवाणमुवरि तम्हि खेव देवीओ संखेज्जगुणाओ । तवो सोहम्मकप्पवासियदेवा संखेज्जगुणा । तम्हि खेव देवीओ संखेज्जगुणाओ । पदमाए पुढवीए णेरइया असंखेज्जगुणा । भवणवासियदेवा असंखेज्जगुणा ।

देवीओ संखेज्जगुणाओ । पंचिदियतिरिक्खजोणिणीओ संखेज्जगुणाओ । घाण-
धेंतरदेवा संखेज्जगुणा । देवीओ संखेज्जगुणाओ । जोइसियदेवा संखेज्जगुणा ।
देवीओ संखेज्जगुणाओ' त्ति एदमहादो खुदाबंधसुत्तादो जाणिज्जेद जहा देवाणं
संखेज्जा भागा देवीओ होंति ।

३ ४१४

४ खुदाबंधे वि घणधारुणविकखंभसूर्इणं पादोलंभादो वा ।

३ २७९

५ खुदाबंधुवसंहारजीवट्टाणस्स मिच्छाइट्टिविक्खंभसूर्इण सामणविकखंभ-
सूचिसमाणत्तविरोद्धा । एवं खुदाबंधमिह वुत्तसव्वभवहारकाला जीवट्टाणे
साधिरिया वत्तव्वा ।

३ २७९

६ अवसेसिदमणुसरासिपरुवणादो जुत्तं खुदाबंधमिह भागलद्धादो एगरुवस्स
अवणयणं ।

३ २४९

७ संपदि खुदाबंधेण सामण्णेण जीवपमाणपरुवण जाओ विकखंभसूर्इओ
××× इदि एसा खुदाबंधे ××× खुदाबंधे उत्ता ××× खुदाबंधे वुत्ता ××× ।
तमहा एत्थ वुत्तविकखंभसूर्इहि ऊणियादि खुदाबंधवुत्तविकखंभसूर्इहि वा अधि-
याहिं होद्वमिदि चोदगो भणदि । एत्थ परिहारो वुत्तवदे । जीवट्टाणवुत्तविकखंभ-
सूर्इओ संपुण्णाओ, खुदाबंधमिह वुत्तविकखंभसूर्इओ साधियाओ ।

३ २७४

८ खुदाबंधमिह वुत्तविकखंभसूर्इओ संपुण्णाओ किण्ण होंति ? ××× अहवा
एत्थ वुत्तविकखंभसूर्इओ देसूणाओ, खुदाबंधमिह वुत्तविकखंभसूर्इओ संपुण्णाओ ।

३ २७५

५ जीवट्टाण

१ जीवट्टाणमिच्छाइट्टिविक्खंभसूचिपादो वि खुदाबंधसामणविकखंभसूचि-
पादेण समाणो ।

३ २७९

२ एत्थ पुण जीवट्टाणमिह मिच्छत्तविसेसिदजीवपमाणपरुवणे कीरमाणे
रूवाहियतेरसगुणट्टाणमेत्तेण अवणयणरासिणा होद्वमिदि ।

३ २५०

३ एत्थ वि जीवट्टाणे ×× वुत्ताओ ।

३ २७८

६ तत्वार्थभाष्य

१ उक्तं च तत्वार्थभाष्ये—उपपादो जन्म प्रयोजनमेषां त इमे औपपादिकाः । १ १०३

७ तत्वार्थसूत्र

१ ' वनस्पत्यन्तानामेकम् ' इति तत्वार्थसूत्राद्वा ।

१ २३९

१ ' कृमिपिपीलिकाभ्रमरमनुष्यादीनामेकैकवृद्धानि ' इति अस्मात्तत्वार्थसूत्राद्वा । १ २५८

८ तिलोयपण्णत्ती

१ ' दुगुण-दुगुणो दुवग्गो णिरंतरो तिरियल्लोगे ' त्ति तिलोयपण्णात्तिसुत्तादो । ३ ३६

२ जोइसियभगहारसुत्तादो चंदाइच्चिंत्तपमाणपरुवयतिलोयपण्णात्तिसुत्तादो च । ३ ३६

९ परियम्म

- १ 'जम्हि जम्हि अणंताणंतयं मग्गिज्जदि तम्हि तम्हि अजहण्णमणुक्कस्सअणंताणंतस्सेव गहणं' इदि परियम्मवयणादो । ३ १९
- २ 'जहण्णअणंताणंतं वग्गिज्जमाणे जहण्णअणंताणंतस्स हेट्ठिमवग्गणट्ठाणेहिंतो उवरि अणंतगुणवग्गणट्ठाणाणि गंतूण सव्वजीवरासिवग्गसल्लागा उप्पज्जदि' त्ति परियम्मे वुत्तं । ३ २४
- ३ ण च तदियवारवग्गिदसंवग्गिदरासिवग्गसल्लागाओ हेट्ठिमवग्गणट्ठाणेहिंतो उवरि परियम्मउत्तअणंतगुणवग्गणट्ठाणाणि गंतूणुप्पणाओ । ३ २४
- ४ 'अणंताणंतविसए अजहण्णमणुक्कस्सअणंताणंतेणेव गुणगारेण भागद्वारेण वि होइव्वं' इदि परियम्मवयणादो । ३ २५
- ५ 'जत्तियाणि द्वांसामररूवाणि जंबूदीवलेदणाणि च रूवाहियाणि' त्ति परियम्मसुत्तेण सह विरुज्झइ । ३ ३६
- ६ जं तं गणणासंखेज्जयं तं परिम्पमे वुत्तं । ३ ९९
- ७ 'जम्हि जम्हि असंखेज्जासंखेज्जयं मग्गिज्जदि तम्हि तम्हि अजहण्णमणुक्कस्सअसंखेज्जासंखेज्जस्सेव गहणं भवदि' इदि परियम्मवयणादो । ३ १२७
- ८ 'अट्ठरूवं वग्गिज्जमाणे वग्गिज्जमाणे असंखेज्जाणि वग्गणट्ठाणाणि गंतूण सोहम्मीसाणविकखंभसूर्इ उप्पज्जदि । सा सइ वग्गिदा णेरइयविकखंभसूर्इ हवदि । सा सइ वग्गिदा भवणवासियविकखंभसूर्इ हवदि । सा सइ वग्गिदा घणंगुलो हवदि' त्ति परियम्मवयणादो । ३ १३४
- ९ पदासिं अवहारकालपरूवयगाहासुत्तादो वा परियम्मपमाणादो वा जाणिज्जे । ३ २०१
- १० परियम्मादो असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ सेढीए पमाणमवगदमिदि चे ण, एदस्स सुत्तस्स बलेण परियम्मपवुत्तीदो । ३ २६३
- ११ परियम्मवयणादो । ३ ३३७
- १२ परियम्मवयणादो । ३ ३३८
- १३ ण च परियम्मेण सह विरोहो, तस्स तदुद्देसपदुप्पायणे वावारादो । ३ ३३८
- १४ ण परियम्मदो वग्गत्तसिद्धी, तस्स तेउक्काइयअद्धच्छेदणएहि अणेयंति-यत्तादो । ३ ३३९

१० पिंडिया

उत्तं च पिंडियाए—

- १ लेस्सा य दव्व-भावं कम्मं णोकम्ममिस्सयं दव्वं ।
जीवस्स भावलेस्सा परिणामो अप्पणो जो सो ॥ २ ७८८

११ वर्गणासूत्र

- १ कथमेतद्वगम्यते ? वर्गणासूत्रात् । किं तद्वर्गणासूत्रमिति चेदुच्यते १ २९०

१२ वियाहपण्णत्ति

१ लोगो वादपदिट्ठिदो त्ति वियाहपण्णत्तीवयणादो । ३ ३५

१३ वेयणासुत्त, वेदनाक्षेत्रविधान

१ जो मरुछो जोयणसहस्सिओ सयंभूरमणसमुद्दस्स बाहिरिहण तडे वेयण-
समुग्घापण समुद्दो काउलेस्सियाप लग्गो त्ति एदेण वेयणासुत्तेण सह विरोद्धो ३ ३७

२ तत्कुतोऽवसयित इदि चेद्धेदनाक्षेत्रविधानसूत्रात् । तद्यथा..... । १ २५१

३ ण, बादरेइंदियओगाहणादो सुहुमेइंदियओगाहणाए वेदणखेत्तविद्धानादो
बहुत्तोवलंभा । ३ ३३०

४ सुहुमेइंदियओगाहणादो बादरेइंदियओगाहणाए वेदणखेत्तविद्धानसुत्तादो
थोवत्तुवलंभा । ३ ३३१

१४ सन्मत्तिसूत्र

१ णामं ठवणा व्विप त्ति एस दब्बट्ठियस्स णिकखेवो ।

२ भावो तु पज्जवट्ठियपरुवणा एस परमत्थो ।

३ अणेण सम्मइसुत्तेण सह कधमिदं वक्खणं ण विरुज्जदे ? १ १५

१५ संतकम्मपाहुड

१ एवं काऊण××× सोलस पयडीओ खवेदि । तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण पच्च-
क्खणापच्चक्खणावरणकोध-माण माया-लोभे अकमेण खवेदि । एसो संतकम्म- १ २१७

२ पाहुडउवएसो

३ आइरियकहियाणं संतकम्म-कसायपाहुडाणं १ २२१

१६ संतसुत्त (परुवणा)

१ अपज्जत्तकाले पंथिदियपाणाणमत्थिसपदुप्पायणसंतसुत्तवंसणादो २ ६५८

५ परिभाषिक शब्दसूची ।

सूचना— जो शब्द ग्रंथमें अनेकवार आये हैं उनके प्रायः प्रथम एक दो पृष्ठांक ही यहाँ दिये गये हैं ।

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
	अ	अप्रदेशिक	३
अजीवद्रव्य	२	अप्रदेशिकानन्त	१२४
अतीतप्रस्थ	२९	अप्रदेशिकासंख्यात	१५, १६
अधर्मद्रव्य	३	अरूपी अजीवद्रव्य	२, ३
अधस्तनविकल्प	५२, ७४	अर्धच्छेद	२१
अधिगम	३९	अर्धच्छेदशलाका	३३५
अधस्तनविरलन	१६५, १७९	अर्धपुत्रलपरिवर्तनकाल	२६, २६७
अनन्त	११, १२, १५ २६७, २६८	अल्पबहुत्व	११४, २०८
अनन्तगुण	२२, २९	अवसर्पिणी	१८
अनन्तगुणहीन	९१, २१, २२	अवहार	४६, ४७, ४८
अनन्तानन्त	१८, १९	अवहारकाल	१६४, १६७
अनन्तप्रदेशिक	३	अवहारकालप्रक्षेपशलाका	१६५, १६६, १७१
असंख्येयप्रदेशिक	२	अवहारकालशलाका	१६५
अनन्तिमभाग	६१, ६२	अवहारविशेष	४६
अनागत (काल)	२९	अवहारार्थ	८७
अनागतप्रस्थ	२९	अव्ययीभावसमास	७
अनुगम	८	अष्टरूपधारा (घनघारा)	५७
अन्तर्मुहूर्त	६७, ७०	असंख्यात	१२१
अन्योन्यगुणकारशलाका	३३४	असंख्यातासंख्यात	१२७
अन्योन्याभ्यास	२०, ११५, १९९	असंख्येयगुण	२१, ६८
अपनयन (राशि)	४८	असंख्येयगुणहीन	२१
अपनेय	४९	असंख्येयप्रदेशिक	३८
अपर्याप्त	३३१	असंख्येयभाग	६३, ६८
अपवाहज्जमाण	९२		
अपहत	४२	आ	
		आकाशद्रव्य	३

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
आगम	१२, १२३	कालद्रव्य	३
आगमद्रव्यानन्त	१२	कालभावप्रमाण	३९
आगमद्रव्यासंख्यात	१२३	कृतयुगराशि	२४९
आगमभावानन्त	१२३	क्षेत्रभावप्रमाण	३९
आगमभावासंख्यात	१२५	कोटाकोटी	२५५
आदि (धन)	९१, ९३, ९४	खंडित	स्व ३९, ४१, ७१
आदेश	१, १०		ग
आप्त	१२		
आयाम	१९९, २००, २४५	गणनानन्त	१५, १८
आवलिका	६५, ६७	गणनासंख्यात	१२४, १२६
		गृहीत	५४, ५७
इच्छा (राशि)	१८७, १९०, १९१	गृहीतगुणाकार	५४, ६१
		गृहीतगृहीत	५४, ५९
उच्छ्वास	६५, ६६, ६७		घ
उत्तर (धन)	९१, ९३, ९४	घनपह्य	८०, ८१
उत्तरपडिवत्ती	९४, ९९	घनांगुल	१३२, १३९
उत्सर्पिणी	१८	घनाघनधारा	५३, ५८
उपरिमवर्ग	२१, २२, ५२		च
उपरिमधिकल्प	५४, ७७	चतुष्कछेद	७८
उपरिमद्विरलन	१६५, १७९		छ
उभयानन्त	१६	छद्द्रव्यप्रक्षिप्तराशि	१९, २६, १२९
उभयासंख्यात	१२५		ज
		जगप्रतर	१३२, १४२
एकानन्त	१६	जघन्य अनन्तानन्त	२१
एकासंख्यात	१२५	जघन्य परीतानन्त	२१
		जगश्रेणी	१३५, १४२, १७७
ओ		जाति	२५०
ओघनिर्देश	१, ९	जातिस्मरण	१५७
ओज (राशि)	२४९	जीवद्रव्य	२
		जंबूद्वीप	
कर्मधारयसमास	७	ज्ञायकशरीरद्रव्यानन्त	१३
कलिओजराशि	२४९	ज्ञायकशरीरद्रव्यासंख्यात	१२३
कल्पकाल	१३१, ३५९		त
कारण	४३, ७२	तत्पुरुषसमास	७

(१८)

परिशिष्ट

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
तद्व्यतिरिक्तकर्मानन्त	१६	निगोदजीव	३५७
तद्व्यतिरिक्तकर्मासंख्यात	१२४	निक्षेप	१७
तद्व्यतिरिक्तद्रव्यानन्त	१५	निरुक्ति	५१, ७३
तद्व्यतिरिक्तद्रव्यासंख्यात	१२४	निर्देश	१, ८, ९
तद्व्यतिरिक्तनोकर्मानन्त	१५	नोआगम	१३, १२३
तद्व्यतिरिक्तनोकर्मासंख्यात	१२४	नोआगमद्रव्यानन्त	१३
तेजोजराशि	२४९	नोआगमद्रव्यासंख्यात	१२३
त्रिकच्छेद	७८	नोआगमभावानन्त	१६
त्रैराशिक	९५, ९६, १००	नोआगमभावासंख्यात	१२५
		न्यास	१८
	द		प
दक्षिणप्रतिपत्ति	९४, ९८	परस्थान (अल्पबहुत्व)	२०८
दिवस	६७	पर्याप्त	३३१
देय	२०	परिहाणि (रूप)	१८७
द्रव्य	२, ५, ६	परीतानन्त	१८
द्रव्यप्रमाण	१०	पल्योपम	६३, १३२
द्रव्यप्रमाणानुगम	१, ८	पुद्गलद्रव्य	३
द्रव्यभावप्रमाण	३९	पूर्वफल	४९
द्रव्यानन्त	१२	पृथक्त्व	८९
द्रव्यानुयोग	१	पृथिवीकायिक	३३०
द्रव्यासंख्यात	१२३	पंचच्छेद	७८
द्विगुणादिकरण	७७, ८१, ११८	प्रक्षेप	४८, ४९, १८७
द्विरूपधारा	५२	प्रक्षेपराशि	४९
द्विगुसमास	७	प्रक्षेपशलाका	१५९
द्वन्द्वसमास	७	प्रचय	९४
	ध	प्रतरपल्य	
धर्मद्रव्य	३	प्रतरांगुल	७८, ७९, ८०
ध्रुवराशि	४१	प्रत्येकशरीर	३३१, ३३३
	न	प्रमाण	४, १८
नय	१८	प्रमाण (परिमाण)	४०, ४२, ७२
नामानन्त	११	प्रमाण (राशि)	१८७, १९४
नामासंख्यात	१२३	प्रबाह्यमान (पवाह्यजमाण)	९२
नालिका	६५	प्राण	६६
नाली	६६		फ
		फल (राशि)	१८७, १९०

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
		लब्धअवहार	४६
बहुजीदिसमास	७	लब्धविशेष	४६
बादर	३३०, ३३१	लब्धान्तर	४७
बादरनिगोदप्रतिष्ठित	३४८	लोक	३३, १३२
बादरयुग्मराशि	२४९	लोकप्रतर	१३३
		लोकप्रदेशपरिमाण	३
भज्यमानराशि	४७		
भन्यान्त	१४	वनस्पतिकायिक	३५७
भन्यासंख्यात	१२४	वर्गमूल	१३३, १३४
भागलब्ध	३८, ३९	वर्गशलाका	२१, ३३५,
भागहार	३९, ४८	वर्गस्थान	१९
भागाभाग	१०१, २०७	वर्गितसंवर्गित	३३५
भाजित	३९, ४१	वर्गितसंवर्गितराशि	१९
भाज्यशेष	४७	वर्तमानप्रस्थ	२९
भावप्रमाण	३२, ३९	वस्तु	६
भावानन्त	१६	वादाल	२५५
भिन्नमुहूर्त	६६, ६७	विकल्प	५२, ७४
भंग	२०२, २०३	विरलन	१९
		विरलित	४०, ४२
		विष्कंभसूची	१३१, १३३, १३८
मानुषक्षेत्र	२५५, २५६	विस्तारानन्त	१६
मुहूर्त	६६	विस्तारासंख्यात	१२५
		वृद्धि (रूप)	४६, १८७
युक्तानन्त	१८		
युग्म (राशि)	२४९		
		शलाका	३१
रज्जु	३३	शलाकाराशि	३३५, ३३६
राशि	२४९	शाश्वतानन्त	१५
राशिविशेष	३४२	शाश्वतासंख्यात	१२४
रूपीअजीवद्रव्य	२	श्रेणी	३३, १४२
लघ	६५	समकरण	१०७

(२०)

परिशिष्ट

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
समास	६	संख्या	७
समास (जोड़)	२०३	संख्यात	२६७
सर्वपरस्थान	११४, २०८	संख्यान	५, ६
सर्वानन्त	१६	संदिष्टि	८७, १९७
सर्वसंख्यात	१२५	स्वस्थान अल्प बहुत्व	११४, २०८
सागर	१३२	स्थापनानन्त	११
साधारणशरीर	३३३	स्थापनासंख्यात	१२३
सूक्ष्म	३३१	स्तोक	६५
सूच्यंगुल	१३२, १३५	ह	
संकलनसूत्र	९१, ९३	द्वार	४७
		द्वारान्तर	४७

६ मूडविद्दीकी ताड़पत्रीय प्रतियोंके मिलान ।

अ — मूडविद्दीकी प्रतियोंके ऐसे पाठभेद जो अर्थ व पाठशुद्धिकी दृष्टिसे विशेषता रखते हैं, अतएव ग्राह्य हैं ।

भाग १.

पृष्ठ	पंक्ति	पाठ है ।	पाठ चाहिये ।
९	२	सयलत्थवत्थूणं	सयलत्थवत्थाणं
॥	१३	अर्थ-वाचक	पदार्थोंकी अवस्थाके वाचक
१८	४	समवाय-णिमित्तं	समवायद्वन्निमित्तं
३४	७	मङ्गलप्राप्तिः	मङ्गलत्वप्राप्तिः
३८	२	मङ्गलम् । तन्न,	मङ्गलत्वम् । न
३९	१०	देहितो कय-	×
४०	७	अब्बोच्छित्ति य	अब्बोच्छित्ति (ती)
४१	६	णिवद्धदेवदा	कयदेवदा
॥	१७	निवद्ध कर दिया	स्वयं किया

पृष्ठ	पंक्ति	पाठ है ।	पाठ चाहिये ।
११	७	कयश्चवदा	णिवद्धदेवदा
१८-१९		देवताको....जाता है,)	अन्यकृत देवतानमस्कार निबद्ध किया जाता है,
४९	७	-साहण-	-सोहण-
४९	२०	साधन अर्थात् त्रतोंकी रक्षा	शोधन अर्थात् त्रतोंकी शुद्धि
५२	८	रत्नाभोगस्य	रत्नभागस्य
६३	७	-प्राप्त्यतिशय-	प्राप्तातिशय
६३	१७	निश्चय व्यवहाररूप....प्राप्त हुई	निश्चय और व्यवहारसे प्राप्त अतिशयरूप
६४	३	अउक्क-घाह-तिण	तदेव घाहतिण
१४		चार घातिया कर्मोंमेंसे	x
६५	६	तेण गोदमेण	तेण वि गोदमेण
१४		गौतम गणधरने	गौतम गणधरने भी
६७	४	होहदि त्ति	होहदि त्ति
८०	८	चेव	चेव होंति
८३	११	द्रोष्यत्यदुदुवत्	द्रवति द्रोष्यत्यदुदुवत्
२७		जो	जो वर्तमानमें पर्यायोंको प्राप्त होता है,
८६	५	सन्त्वेते	संतु ते
९७	३	पूजा-विहाणं	पूजादिविधाणं
१३		पूजाविधिका	पूजा आदि विधिका
१०१	५	णयण्यमाणं	णयण्यमाण-
१७		ज्ञेयप्रमाण है, क्योंकि ज्ञान- प्रमाण ही	है, क्योंकि ज्ञेयप्रमाण ज्ञानमात्र
१०२	१	धम्मदेसणं	धम्मवदेसणं
१०६	५	समयस्स	ससमयस्स
११०	४	वेइयाणं	वेइया-वंसा
११९	६	संटाणं	संटाण-
१४		नाना प्रकारके....गलाता है	छह प्रकारके संस्थानोंसे युक्त नाना प्रकारके शरीरोंसे पूरित होता है और गलाता है
१२३	८	अद्धुवमं पणिधिकण्ये	अद्धुवसंपणिधिकण्ये
१०		वज्जण	बुज्जण
१४६	४	विक्रमेणोपलंभात्	ऽक्रमेणोपलंभात्

पृष्ठ	पंक्ति	पाठ है ।	पाठ चाहिये ।
१५१	४	श्रद्धानमनुरक्तता	श्रद्धानमुत्कता
१५९	१	अवधरणं	अवधानं
१७१	८	जायदि	जादि
१७१	९	समिह्लियइ	समिह्लियइ
१७१	२४	वेदक सम्यक्त्वसे मेल कर लेता है	वेदक सम्यक्त्वको प्राप्त होता है
१९४	६	सहाषावियवस्य	सहास्याषावियवस्य
१९६	६	अपौरुषेयत्वस्य	अपौरुषेयस्य
१९८	७	पुनर्नैवोत्पत्तिरिति	पुनर्नोत्पत्तिरिति
२०१	७	यातयति	यातयति
„	२३	गिराता है	यातना देता है
२०३	८	द्व्व-	द्विव्व-
२०३	२२	द्रव्य और भावरूप	दिव्य स्वभाववाले
२१२	४	अणेण	अणेण
२१७	४	संखेज्जदि-	संखेज्जे
२२०	६	परिमाणत्तादो	परिणामत्तादो
२४३	२	उत्तिरग-	उत्तिग (उत्तिग)
„	४	घ्राणमिति	घ्राणमिति चेत्
२४८	२	भवेदिति	भवति
२५९	६	संखिन इति	संखिनः, अमनस्काः असंखिन इति
„	१९	कहते हैं	और मनरहित जीवोंको असंखी कहते हैं
२६०	२	निष्पत्तौ	निष्पत्तेः
२७०	१	कर्मस्कन्धैः	नोकर्मस्कन्धैः
„	१४	कर्मस्कंधोंके	नोकर्मस्कंधोंके
२८१	२	सच्चमोसं ति	सच्चमोसं तं
२८७	९	प्रयत्ना-	सप्रयत्ना-
„	३०	प्रयत्न और	प्रयत्नसहित
२९३	१	तत्परित्यक्ता-	परित्यक्ता-
२९५	६	को ह्यौ-	केष्वौ-
३१८	५	भूतपूर्वगत-	भूतपूर्वगति-
३२०	७	ताम्यां	एताम्यां
३२१	४	जादि	जांति
„	„	जादि	जांति

पृष्ठ	पंक्ति	पाठ है ।	पाठ चाहिये ।
३२१	५	जादि	जांति
३३१	११	नपुंसकमुभया-	नपुंसक उभया-
३४४	३	अभिलाषे	अभिलाषो
३४९	८	गर्हा	गृर्हा
३४९	३०	गर्हा	गृद्धि
३६०	१	भेयं च	भेयगथं
३७३	७	सच्चित्त-	सच्चित्त-
३७४	६	न,	च
३७७	३	निबंधनाविवाभविष्यतां	निबंधनावभविष्यतां
३८८	५	पीत	तेज
३८९	५	अप्पाणमिव	अप्पाणं पिव
३९०	४	रायदोसो	रायदोसा
३९८	३	एकदेशे सत्यविरोधात्	एकदेशोत्पत्यविरोधात्
३९८	१७	एकदेश रहनेमें	एकदेशकी उत्पत्तिमें

भाग २.

४१५	४	मिच्छाइट्टी सिद्धा० चेदि	मिच्छइट्टी० सिद्धा चेदि
४१९	४	एइंदियादी	अत्थि एइंदियादी
४२७	२	भणमाणे	ओघे भणमाणे
४४४	१	सिद्धमपज्जतं	सिद्धमपज्जत्तं
४४४	२	सरीर-पटुवण-	सरीरादवण (सरीरादवण)
४६२	६	तिणिण सम्मत्तं	तिणिण सम्मत्ताणि
४६३	४	तिणिण सम्मत्तं	तिणिण सम्मत्ताणि
५१३	५	द्विस्थिवेदा	द्विस्थिवेदा पुण
५३४	७	असुह-ति-लेस्साणं गउरवण्णा- भावापत्तीदो ।	असुह-ति-लेस्साणं धवलवण्णाभावापसंगादो, कम्मभूमिमिच्छाइट्टीणं पि अपज्जत्तकाले असुह- ति-लेस्साणं गउरवण्णाभावापत्तीदो ।
५३४	२६	भोगभूमियां मनुष्योंके गौर वर्णका	भोगभूमियां मनुष्योंके धवलवर्णके अभावका प्रसंग प्राप्त होगा । तथा, अशुभ तीनों लेश्या- वाले कर्मभूमियां मिथ्यादृष्टि जीवोंके भी अपर्याप्त कालमें गौर वर्णका

पृष्ठ	पांक्ति	पाठ है ।	पाठ चाहिये ।
५३५	९	तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ भवंति । पंच-वण्ण-रस-कागस्स	तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ भवंति । बहुवण्णस्स- जीवसररिस्स कधमेषकलेस्सा जुज्जदे ? ण, पाधण्णपदमासेज्ज ' कसणो कागो ' त्ति पंच- वण्णस्स कागस्स
५३५	२५	तेज, पद्म और शुक्लेश्याएं होती हैं । जैसे पांचों वर्ण और पांचों रसवाले काकके अथवा पांचों वर्णवाले रसोंसे युक्त काकके कृष्ण व्यपदेश	तेज, पद्म और शुक्लेश्याएं होती हैं । शुंका—अनेक वर्णवाले जीवके शरीरके एक लेश्या कैसे बन सकती है ? समाधान—नहीं, क्योंकि, प्राधान्यपदकी अपेक्षा ' काक कृष्ण है ' इसप्रकार पांचों वर्णोंसे युक्त काकके जैसे कृष्ण व्यपदेश
५६८	६	एवं देवगदी	एवं देवगदी समत्तो (ता)
५८९	३	तिरिक्खगदीओ त्ति	तिरिक्खगदि त्ति
५९०	१०	एवं विदियमग्गणा	एवमिंदियमग्गणा
५९८	४	अपज्जत्ता दुविहा	अपज्जत्तभेयेण दुविहा
६०९	१२	आयारभावे मट्टियाए	आधारभूमिमट्टियाए
६१०	१२	आधारके होनेपर मट्टीके	आधारभूत भूमिकी मट्टीके
६११	३	बादरकाइयाणं	बादरतेउकाइयाणं
६४८	८	केवलीणं	सयोगकेवलीणं
६४८	२०	केवली जिनके	सयोगिकेवली जिनके
६५३	३	भावगद्-पुच्चगई च	भूदपुच्चगई च
६५३	१७	भावमनोगत पूर्वगति अर्थात् भूतपूर्व न्यायके	भूतपूर्वगति न्यायके
६५७	४	मिच्छाइट्ठीणं	मिच्छाइट्ठीणं व'
६५९	२	समणा भवदि	संभवो भवदीदि
६५९	७	प्राणोंका सद्भाव हो जाता है,	प्राणोंका होना संभव है,
६६०	४	धारिद्-जीव-पदेसाणं	वा ठिद्जीवपदेसाणं
६६०	१६	व्याप्त जीवके	स्थित जीवके

१ देखो पृष्ठ ६५७ का अर्थ और विशेषार्थ ।

पृष्ठ	पंक्ति	पाठ है ।	पाठ चाहिये ।
६६०	५	एवं बंधहरस्स	एवं दहरस्स (डहरस्स)
"	१८	विशिष्ट बंधको धारण करनेवाले शरीरके	इस छोटे शरीरके
८२३	२	चढमाणा	चढमाणार्ण
८२३	३	उवसमसम्मत्तेण	उवसमसम्मत्ते
"	१५	श्रेणि चढनेके पूर्वमें ही परिहार-शुद्धिसंयमके नष्ट हो जाने पर उपशमसम्यक्त्वके साथ परिहार-विशुद्धिसंयमीका	श्रेणिसे उतरनेके पश्चात् ही उपशमसम्यक्त्वके नष्ट हो जाने पर परिहारविशुद्धिसंयमीका ।
८४६	२	पज्जत्तापज्जत्ता आलावा	पज्जत्तापज्जत्ता बे आलावा
"	११	पर्याप्त और अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप	पर्याप्त और अपर्याप्तकालसंबन्धी दो आलाप

भाग ३

१४	३	धनुर्धृतायामेवायं	धनुर्धृतावंस्थायामेवायं
२०	३	पुणो	पुणो वि
२६	९	अववद्वाणादो	अववद्वाणादो
"	२५	वह पदार्थ प्रमाणसे अवस्थित है ।	प्रमाणसिद्ध पदार्थकी पुनः प्रमाणसे परीक्षा करने पर किसी भी पदार्थकी व्यवस्था नहीं हो सकती है ।
२८	१०	ण अवहिरिज्जंतु	मा अवहिरिज्जंतु
३०	७	रूवदसपुधत्तं	रूवदसपुधत्तं, रूवदसमपुधत्तं
"	२६	शतप्रथक्त्वरूप	दसपृथक्त्वरूप
३४	४	पति	रासी
"	१५	यह जगच्छ्रेणीका सातवां भाग आता है ।	यह राशि जगच्छ्रेणीके सातवें भागप्रमाण है ।
३६	५	एदस्स समवद्वाणादो ।	एदस्स वक्खाणस्स सम्मवद्वाणादो ।
३९	१	णाणपमाणमिदि	णाणं पमाणमिदि

१ ये ही पाठ दो भिन्न भिन्न ताडपत्रीय प्रतियोंके हैं ।

पृष्ठ पंक्ति पाठ है ।

पाठ चाहिये ।

३९	१२ अधिगम और ज्ञानप्रमाण ये दोनों	अधिगम, ज्ञान और प्रमाण ये तीनों
३९	२ द्रव्यस्थिविसयाणं	द्रव्यविसयाणं
॥	१५ द्रव्योक्ते अस्तित्व विषयक	द्रव्यविषयक
३९	५ सहियप्रमाणाभावे	सुहियप्रमाणाभावे
३९	६ अवधारणसिस्त्ताणमभावाद्दो ।	अवध रणसमर्थसिस्त्ताणमभावाद्दो ।
॥	२१ करनेवाले शिष्योंका	करनेमें समर्थ शिष्योंका
३९	६ अथवा एवं	अथवा एवं
॥	२३ अथवा, इस भावप्रमाणका कथन करना चाहिये ।	अथवा, भावप्रमाणका कथन इसप्रकार करना चाहिये ।
४०	१ एगखंडं गहिदे	एगखंडं गहिदे
४४	४ खंडं	दो खंडं
४८	२ अवहारो	अवहारे
५४	४ केण कारणेण ?	केण कारणेण ? जेण
५६	५ सरूवेहि	रूवेहि
५८	२ तिगुणरूपेण	तिगुणिरूपेण
६४	१ मिच्छाद्विस्सिच्च	मिच्छाद्विस्सिच्च व
६५	३ अद्दापरूवणं	अर्थपरूवणं
॥	२४ कालका प्ररूपण	अर्थका प्ररूपण
६७	९ जावे उरुसासो	जावेगुरुसासो
६८	६ अवहारकालो	अवहारकालो आवलियाण
९७	५ परूविदसब्बं संजद-	परूविदसब्बसंजद-
१२५	४ संखादीदादो ।	संखादीदत्तादो ।
१७८	७ असंखेज्जदिभागं	असंखेज्जदिभागं व
१९१	६ -तिण्णि-	तिण्णि-तिण्णि-
॥	२० तीन संख्याको	तीन तीन संख्याको
१९१	९ अणंतरूपण-	अणंतरूपणरूवाणं
२०८	४ असंखेज्जेसु	संखेज्जेसु
॥	१८ असंख्यात खंड	संख्यात खंड
२०८	४ संखेज्जेसु	असंखेज्जेसु
॥	१९ संख्यात खंड	असंख्यात खंड
२०८	७ असंखेज्जेसु	संखेज्जेसु

पृष्ठ पंक्ति पाठ है ।

पाठ चाहिये ।

२०८	२२ असंख्यात खंड	संख्यात खंड
२०८	८ संखेज्जेसु	असंखेज्जेसु
”	२३ संख्यात खंड	असंख्यात खंड
२१५	६ ओघपडिवणोहि	ओघगुणपडिवणोहि
२३२	३ भवणादियाणं	भवणादियाणं देवाणं
२७१	२ पडिसेहट्टं ।	पडिसेहट्टं । पदरस्स असंखेज्जदिभागो ते मि- च्छाइट्ठी होंति त्ति उत्तं ।
”	१४ कहा है ।	कहा है । भवनवासी मिथ्यादृष्टि देव जगप्रतके असंख्यातये भागप्रमाण हैं, यह इस कथनका तात्पर्य है ।
२७५	६ ओघपरूवणाए	देवओघपरूवणाए
२७६	१ दव्वमिच्छाइट्ठिरासिं	देवमिच्छाइट्ठिरासिं
२८३	१० असंखेज्जगुणा	संखेज्जगुणा
”	२७ हुए भी वे असंख्यातगुणे	हुए भी वे संख्यातगुणे
२८६	४ सव्वदेवरासिमसंखेज्जखंडे	सव्वदेवरासिं संखेज्जखंडे
”	१५ असंख्यात खंड	संख्यात खंड
२९५	६ सेसमसंखेज्जखंडे	सेसं संखेज्जखंडे
”	२२ असंख्यात खंड	संख्यात खंड
२९८	१० भवणवासियदेवि त्ति	भवणवासियदेवेत्ति
”	२९ देवियोंके	देवोंके
३६१	११ उपरिम-हेट्ठिमसंखेज्जवियप्पा	उपरिमहेट्ठिमसव्वे वियप्पा
”	२५ असंख्यात विकल्प	सर्व विकल्प
३८१	१२ त्ति	वेत्ति
३९८	५ रासी	रासी सो
४०४	६ -कायजोगरासीओ	-कायजोगरासी होवि
४१४	९ इत्थिवेदभवहारकालस्स भागहारो	इत्थिवेदभवहारकालो
४१९	६ उवसामगा केवडिया, पवेसेण	उवसामगा दव्वपमाणेण केवडिया, पवेसेणेण
”	१९ जाव कितने हैं ?	जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ?
४२६	६ -भागभागहाररासिंभिह	-भागधुवरासिंभिह
”	२१ चौथे भागकी भागहार रासिमें	चौथे भागरूप धुवरासिमें

पृष्ठ	पंक्ति	पाठ है ।	पाठ चाहिये ।
४२७	४	देवगदिअद्धाणं	देवगदिकसाइअद्धाणं
४३०	६	मूलो उवसंतकसायरासी	मूलोघुवसंतकसायरासी
४३६	१०-११	दुविहणाणविरहिय-	दुविहणाणविरहिय-
४३६	२८	दोनों प्रकारके ज्ञानोंसे	दोनों प्रकारके अज्ञानोंसे
४४०	३	चेव	तम्हि चेव
४४२	१	लद्धिसंपणरासीणं	लद्धिसंपणरिसीणं
,,	१२	राशियां बहुत नहीं हो सकती हैं ।	ऋषि बहुत नहीं हो सकते हैं ।
४४२	६	सेसमसंखेज्जखंडे	सेसमणंतखंडे
,,	२०	असंख्यात खंड	अनन्त खंड
४४४	२	मदि-सुदअण्णाणीसु	मदि-सुदअण्णाणमिच्छाइट्टीसु
,,	१४	-ज्ञानी जीवोंमें	ज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवोंमें
४४५	९	विसेसाहिया २८ ।	विसेसाहिया २८ । आभिणि-सुदणाणिउवसामगा संखेज्जगुणा । खवगा संखेज्जगुणा ।
,,	२५	अट्टाईस हैं । मनःपर्ययज्ञानी अप्रमत्तसंयत जीव अवधिज्ञानी क्षपकोंसे	अट्टाईस हैं । आभिनिबोधिक और श्रुतज्ञानी उप-शामक जीव अवधिज्ञानी क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं । मतिज्ञानी और श्रुतज्ञानी क्षपक जीव उक्त उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । मनःपर्ययज्ञानी अप्रमत्तसंयत जीव उक्त क्षपकोंसे
४४६	३	दुणाणिअसंजद-	आभिणिणाणि-सुदणाणिअप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । तत्थेव पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । दुणाणि असंजद-
,,	१६	अवधिज्ञानी प्रमत्तसंयतोंसे	अवधिज्ञानी प्रमत्तसंयतोंसे आभिनिबोधिक और श्रुतज्ञानी अप्रमत्तसंयत जीव संख्यातगुणे हैं । इन्हीं दो ज्ञानोंमें प्रमत्तसंयत जीव उक्त अप्रमत्त-संयतोंसे संख्यातगुणे हैं । इनसे
४५४	३	चक्खुदंसणट्टिदीए	चक्खुदंसणमिच्छाइट्टिदीए
,,	१५	चक्षुदर्शनकी	चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टियोंकी
,,	३	असंखेज्जदिभाए चक्खिदियपडि- भागे	असंते चक्खिदियपडिघावे

पृष्ठ पंक्ति पाठ है ।

पाठ चाहिये ।

४५४ १७ चक्षुदर्शनवाले मिथ्यादृष्टियोंका अव-
हारकाल सूच्यंगुलके असंख्यातवें
भागरूप आक्षेपका परिहार यह है
कि चूंकि

चूंकि चक्षुइन्द्रियके प्रतिघातके नहीं रहने पर

४६१ ११ तेउलेस्सियअवहारकालो

देवतेउलेस्सियअवहारकालो

” २६ तेजोलेस्यासे युक्त जीवराशिका

तेजोलेस्यासे युक्त देवोंका

४७३ २ सयलाहरियजयप्पसिद्धादो ।

सयलाहरियवियप्पसिद्धादो ।

” १४ यह सर्व आचार्य जगत्में प्रसिद्ध है ।

यह कथन सर्व आचार्योंके वचनोंसे सिद्ध है ।

४७८ ९ मिच्छाइट्टिरासिभजिदत्व्वग्गं

मिच्छाइट्टिरासिभजिदत्व्वग्गं

४८६ १ खवगा संखेज्जगुणा ।

खवगा संखेज्जगुणा । सजोगिकेवली आहा-
रिणो संखेज्जगुणा ।

” १३ अप्रमत्तसंयत जीव क्षपकोंसे

सयोगिकेवली आहारक जीव क्षपकोंसे संख्यात-
गुणे हैं । इनसे अप्रमत्तसंयत जीव

ब—मूडबिंदीकी प्रतियोंके ऐसे पाठभेद जो शब्द और अर्थकी दृष्टिसे दोनों शुद्ध हैं, अतएव जो संभवतः प्राचीन प्रतियोंमें वैकल्पिकरूपसे निबद्ध पाये जाते हों ।

भाग १

१३	२ साह-पसाहा	साहुपसाहा
३२	१ किमिति	किमर्थ
७१	६ तदो	पुणो
९४	५ ओरालिय-सरीर-णिज्जरं	ओरालिय-णिज्जरं
१०८	३ स्वेषुकुदैतिकायन-	स्विष्टिकुदैतिकायन-
१०८	११ स्वेषुकुत्	स्विष्टिकुत्
११०	४ जिणहरादीणं	जिणहराणं
११०	१६ जिनालय आदिका	जिनालयोंका
११२	१ चउण्हमहियाराणमत्थि	चउण्हमहियाराणमत्थ-
११२	१४ चार अधिकारोंका नामनिर्देश	चार अधिकारोंका अर्थनिर्देश
११६	६ छ-अहिय-	छहि अहिय-
”	७ वाक्संस्कारकारणं	संस्कारकारणं

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूडबिंद्रीका पाठ
११८	१	साद्यनादीनौपशमिकादीन्	साद्यनादीन् भावान्
११८	१५	सादि और अनादिरूप औपशमिक आदिभावोंकी	सादि और अनादि भावोंकी
१२५	९	णयन्वा	णायन्वा
,,	२३	निषेध कर देना	निषेध जानना
१४७	१	अभावप्रसंगात्	अभावासंजनात्
,,	५	इति चेन्न	इति चेत्
,,	२२	ऐसी शंका करना ठीक नहीं है, क्योंकि,	क्योंकि,
१५६	६	वण्णणीओ	वण्णओ
१५८	५	तेहिंतो	तेहि
१८६	५	तदेकत्वोपपत्तेः	तदेकत्वोक्तेः
,,	२०	एकता बन जाती है।	एकता कही है।
२०९	१	प्रतिपादकार्णात्	प्रतिपादनार्णात्
२२८	४	मिश्रणमवगम्यते	मिश्रतेहावगम्यते
,,	१३	जीवोंके साथ मिश्रण	जीवोंके साथ यहां मिश्रण
२५४	९	-शक्तेर्निमित्तानामाप्तिः	×
,,	२६	परिणमन करनेरूप शक्तिसे बने हुए आगत पुद्गलस्कंधोंकी प्राप्तिको	परिणमन करनेकी शक्तिकी पूर्णताको
२५५	२	औदारिकादिशरीरत्रयपरिणाम- शक्त्युपेतानां स्कंधानामवाप्तिः	औदारिकादिपरिणमनशक्तेर्निष्पत्तिः
,,	१३	परिणमन करनेवाले औदारिक आदि तीन शरीरोंकी शक्तिसे युक्त पुद्गलस्कंधोंकी प्राप्तिको	औदारिक आदि शरीररूप परिणमन करनेरूप शक्तिकी पूर्णताको
,,	४	-ग्रहणशक्त्युत्पत्तेर्निमित्तपुद्गल- प्रचयावाप्तिः	-ग्रहणशक्तेर्निष्पत्तिः
,,	१६	ग्रहण करनेरूप शक्तिकी उत्पत्तिके निमित्तभूत पुद्गलप्रचयकी प्राप्तिको	ग्रहण करनेरूप शक्तिकी पूर्णताको
,,	६	-निमित्तपुद्गलप्रचयावाप्तिः	×

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूडबिद्रीका पाठ
२५५	२०	शक्तिकी पूर्णताके निमित्तभूत पुद्गल- प्रचयकी प्राप्तिको	शक्तिकी पूर्णताको
„	८	निमित्तनोकर्मपुद्गलप्रचयावाप्तिः	×
„	२३	शक्तिके निमित्तभूत नोकर्म पुद्गल- प्रचयकी प्राप्तिको	शक्तिकी पूर्णताको
„	९	मनोवर्गणास्कन्धनिष्पन्नपुद्गल- प्रचयः अनुभूतार्थस्मरणशक्ति- निमित्तः मनःपर्याप्तिः द्रव्य- मनोवष्टम्भेनानुभूतार्थस्मरण- शक्तेरूपत्तिर्मनःपर्याप्तिर्वा	मनोवर्गणाभिर्निष्पन्नद्रव्यमनोवष्टम्भेनानुभूत- स्मरणशक्तेरूपत्तिः मनःपर्याप्तिः
„	२५	अनुभूत अर्थके स्मरणरूप शक्तिके निमित्तभूत मनोवर्गणाके स्कन्धोंसे निष्पन्न पुद्गलप्रचयको मनःपर्याप्ति कहते हैं । अथवा, द्रव्यमनके	मनोवर्गणाओंसे निष्पन्न द्रव्यमनके
२५६	३	निष्पत्तेः कारणं	निष्पत्तिः
„	१५	पूर्णताके कारणको	पूर्णताको
२५७	४	इति चेन्न, पर्याप्तिनां	इति चेच्छक्तीनां
„	२२	पर्याप्तियोंकी अपूर्णताको	शक्तियोंकी अपूर्णताको
२८३	३	परिस्पन्दरूपस्य	×
„	१४	मनके निमित्तसे जो परिस्पन्दरूप प्रयत्नविशेष	मनके निमित्तसे जो प्रयत्नविशेष
३५३	७	ज्ञानानुवादेन	ज्ञानानुवादे
३८३	९	आसंजननात्	आसंजनात्
४००	२	आसंजननात्	आसंजनात्

भाग ३

३	७	लोगपमाणं	लोगसमाणं
१६	७	तं पदरागारेण आगासं	तं पदरागारेण
२५	८	सर्वजीवरासिबगसलागाओ	×
३१	३	तेरसगुणद्वानमेत्तेण	तेरसगुणद्वान-
३६	४	जं भइत्तं	अ भइत्तं

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूडनिर्दीका पाठ
४६	६	अवहारविसेसेण य	अवहारविसेसेण
५१	४	एयं खंडं	एयखंडं
५५	७	आगच्छदि त्ति ।	आगच्छदि ।
६०	७	"	"
६८	४	गुणिवे	गुणिवे हि
१०९	३	हेट्टिमविरलणाप	हेट्टिमविरलणाणं
११८	१	गुणमारो रासी	गुणमाररासी
११९	३	असंखेज्जगुणाप सेदीए	असंखेज्जगुणसेदीए
१२६	६	भाणिज्जमाणं	वाणिज्जमाणं
१३०	७	छंडिय	छड्डिय
१३२	५	अपिदत्तादो	पदिदत्तादो
१४२	१	एगसेदी	एगा सेदी
१६२	१	विसेसाभावादो	विसेसाभावा
१८४	६	पेच्छामो	पच्छामो
१८५	८	"	"
१९१	५	उवरिमविरलणरूव-	उवरिमविरलण-
१९२	७	सो	एसो
१९३	५	इच्छाप	-मिच्छाप
१९८	४	-परूवय-	-परूवण-
२०१	४	देवेषु ॥ ६७ ॥	देवेषु (६७) इदि
२१५	७	-ट्टियणए	-ट्टियणए पुण
२१६	१	अवलंबिविज्जमाणे ओघपरूवणादो	अवलंबिओघपरूवणादो
२१८	१	सुत्तस्स वि	सुत्तस्स
२२४	७	होदि ।	आगच्छदि ।
४२६	२	चटुकसाइ-	चटुकसाइ
४४१	४	ओघत्तं	ओघत्ते
४४७	६	खवा	खवागा
४४८	५	चिय	सेय
४७६	७	एदे दो वि	एदेणावि

स—मूडनिर्दीय ताडपत्रीय प्रतियोंके वे पाठ भेद जो उच्चारण भेदसे संबन्ध रखते हैं, अतएव उनमेंसे किसीके भी रखनेमें कोई आपत्ति नहीं है ।

भाग १

६ ३ विधिहद्धि-
" ५ गओह-

विधिहिद्धि-
गयोह-

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूडबिद्रीका पाठ
७	१	पुष्पदंतं	पुष्पयंतं
"	३	भूयबलिं	भूयबलिं
"	५	हेऊ	हेउं
"	६	आइरियो	आइरिओ
५	२	"	"
९	१	पयत्थ	पयट्ट
११	२	भणिओ	भणिदो
१२	१	पज्जय	पज्जव
१५	२	सुकुम्भिव-	सुवकुक्कि (-विख)
१६	८	मोली	मडलि
१८	७	अण्ण-णिमित्तंतर-	अण्णं णिमित्तंतर-
२५	१	णिवद्दि	णिपव्दि
२६	२	घादेणियरेण	घायेणियरेण
४०	२	आदीवसाण	आदि-अधसाण
५१	३	मारुद	मारुव
६२	७	वसप्पिणीय	उवसप्पिणीये
६४	२	दंसण-णाणं चरित्ते	दंसण-णाण-चरित्ते (णाणचचरित्ते)
६६	१	जंबूसामी य	जंबूसामी च
७०	३	णिव्वुइकरे ति	णिव्वुइकरेत्ति
७१	७	जिणपालिदस्स	जिणपालिदस्स
"	१०	एयं	एदं
७७	२	द्रामिल	द्राविल
८१ ९-१०		जाणुग-	जाणग-
९९	३	पण्हवायरणं	पण्हवाहरणं
१०३	३	किष्कबिल	किष्कंबिल
१०८	८	दिट्ठिवादादो	दिट्ठिवायादो
११२	५	सब्बेहिं	सब्बेहि
"	१३	उप्पाय	उप्पाद्
११४	१	एऊण	एऊण
"	८	-अणियोग-	-यणियोग-
११९	६	सुख	सुह
१२१	८	वि-सद्	वि-सय
१२२	३	वि-सद्	दु-सय

(३४)

परिशिष्ट

पृष्ठ पंक्ति मुद्रित पाठ

मूडबिंद्रीका पाठ

”	५ लोक
१२३	३ अत्थाहियारो
१२४	४ चयण
१२६	४ पुच्छा
१२७	५ भवंति
१३०	११ संपदि
१५७	२ संतमत्थ-
”	७ परिसेसादो
१५८	५ तेहिंतो
१७०	५ पुह भावं
१८६	९ हुयवह
२०२	७ सुवियड
२१७	९ उवपसा
२२२	९ मेत्ति
२४३	१ पिपीलिक
२५२	१ वणप्फदि
२६४	६ आदधाना
३१३	७ पंचेंदिया त्ति
३४३	७ णबुंसगवेदा
३४७	११ सम्मूर्च्छिम
३५०	८ हरिह
३५८	८ उवपसा
३६४	१० ओधिणाणं
३७३	६ ज्झडिय
३९४	२ णियोद्
४०७	४ अवरजिद्

लोग
अत्थाधियारो
चवण
पच्छा
इवंति
संपदि
संतमत्थ-
पारिसेसादो
तेहि
पिह भावं
हुदवह
सुवियद्
उवपसे
मेत्ति (मेत्ती)
पिपीलिय
वणप्फद्
दधाना
पंचेंदिय त्ति
णबुंसगवेदा
सम्मूर्च्छित
हलिह
उवदेसा
ओधिणाणं
ज्झडिय
णियोद्
अवराहद्

भाग २

४१७	७ चत्तारि (३ वार)
४१९	९ छ लेस्साओ
४२१	५ वा
”	” ”
”	६ संपदि
४३४	४ एओ

चारि (३ वार)
छलेसाओ
व
”
संपदि
एओ

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूडबिंदीका पाठ
४४८	२	मूलोघालावा समत्ता	मूलोघालाओ समत्तो
"	८	सुदु कणहेत्ति	सुदु कसणेत्ति
४५२	५	असंजम	असंजमो
४५३	३	असंजम	असंजमो
४५६	४	काऊ काऊ काऊ	काउ काउ तह काओ
४७१	३	पंचविधा भवंति	पंचविहा हवंति
४९३	२	आहारिणी अणाहारिणी	आहारिणीओ अणाहारिणीओ
४९७	७	तासिं खेव	तासिं
५०३	२	पेक्खिऊण	पेक्खियूण
५२८	७	मणुसिणीसु	मणुसिणी-
५५९	७	परिणमिय	परिणामिय
५६३	८	कापिट्टु	काविट्टु
५६६	७	मणुस्साणं च	मणुसाण व
५६९	२	अदीदपज्जत्तीओ	अदीदपज्जत्तीणो
५९०	९	अणिंदियाणं	अणिंदिया
५९१	२	छव्वा	छाव'
"	" "		"
५९३	६	अट्टारस	अट्टारह
५९७	१	धेत्तूण	x
५९८	१०	एक्कावण	एक्कावणण
६००	१	एदे	एए
६०४	२	मूलोघम्भुत्त	मूलोघम्मि उत्त-
६२९	१	पेक्खिय	पेक्खिऊण
६८८	१	सासणसम्माइट्ठिण्णहुडि	सासणसम्माइट्ठि पहुडिं
६९९	८	ओघालावा मूलोघभंगो	ओघालाओ मूलोघभंगो
८२३	२	उवसंहरिद-	उवसंघरिद-

भाग ३

१	२	णमिऊण	णमियूण
"	"	द्व्वणिओगं	द्व्वणियोगं
१	५	दुविहो	दुविधो
३	१०	हेऊ	हेइ

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ
५, ६	२, ३, ५, ७, ८	डुंक्
६	१२	तद्वत्थाभावादो
१३	४	द्व्वाणंतं चेदि
"	"	-जाणुगसरीरं
१४	२	दुक्केज्जत्ति
१४	२	गहेदव्वं
१७	२	तद्वादंसणादो
१९	७	अहवा
२९	५	ववहारजोगो
३०	५	अणादिसस
३२	७	जधा
३२	७	मिणिज्जदि
३२	८	लोएण
३७	५	वेयणासुत्तेण
३८	७	होति
४०	४	एगरूवं
४०	९	-भजिद-
४३	४	-विरलणय-
६३	६	-मवहिरिज्जदि
६४	५	अठतीस
६७	१०	सेसुस्सासे वि
७१	२	वल्लिदोवमे
९०	२	तेणउदी
९८	१०	भावमावणणं
"	९	चउसट्टी
१००	१	णवणउदी
१००	२	अट्टाणउदी
१००	१२	उणतीसा
११४	२	भवदि त्ति
१२३	३	सव्व-भावा
१४२	९	-सूचीदो
१५७	९	-स्सरण
१७३	१	आणेयव्वाओ

मूडबिद्रीका पाठ

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ
५, ६	२, ३, ५, ७, ८	डुंक्
६	१२	तद्वद्वाभावादो
१३	४	द्व्वाणंतमिदि
"	"	-जाणुगसस सरीरं
१४	२	दुक्केज्जवे त्ति
१४	२	गहेदव्वं
१७	२	तद्वादंसणादो
१९	७	अथवा
२९	५	ववहारजोगो
३०	५	अणादिसस
३२	७	जहा
३२	७	मिणिज्जदे
३२	८	लोगेण
३७	५	वेयणासुत्तेण, वेद्वणसुत्तेण
३८	७	हवंति, भवंति
४०	४	एगं रूवं
४०	९	-भजिद-
४३	४	-विरलण-
६३	६	-मवहिरदि
६४	५	अट्टतीस
६७	१०	सेसुस्सासासो वि
७१	२	पल्लिदोवमे
९०	२	तेणउदा
९८	१०	भावमावणणं
"	९	चउसट्टा
१००	१	णवणउदा
१००	२	अट्टाणउदा
१००	१२	उगुतीसा
११४	२	भवदीदि
१२३	३	सव्व-भावो
१४२	९	सूचीदो
१५७	९	चरण
१७३	१	आणेद्व्वाओ

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूडबिंद्रीका पाठ
१९०	२	एगुणवीसेद्धि	एकगुणवीसेद्धि
२०१	३	दुगं	दुयं
२१०	१०	णेदब्धो	णेयब्धो
२१३	४	-अट्टम-	-अट्ट-
२१९	७, ९	वेसय-	विसय-
२२३	१	-भागेण	-भाएण
„	५	भागे	भाए
२२४	१	संपद्धि	संपद्धि
२२८	२	कप्पमाणपरूवणा	कप्पयमाणपरूवणादो ।
२३९	१४	भाणेदब्धा	भाणिदब्धा
२४४	७	सेसगइपडिसेधो	सेसगइपडिसेधो
२४६	५	-मिच्छाइट्ठीण	-मिच्छाइट्ठीणं
२६२	१२	वियद्धिचारे	वभिचारे
२७२	१०	पदरस्सेवि	पदरस्सेत्ति
२७३	३	विरोहादो	विरोहा
२७८	३	अणूणाहियाओ	अणूणाहियाओ
२९५	२	चउगाइ-	चउगाइ-
३३०	२	-मकाइत्त-	-मकाइयत्त-
३३७	६	गुणेज्ज-	गुणिज्ज-
३३७	६	पवेसमाण-	पविसमाण-
३४८	३	-भादओ	-भुदओ
३६०	१	पज्जत्तरासिणा	पज्जत्तरासिणहि
३७५	३	पक्खेविय	पक्खिविय
३७९	१	पविसिदब्धाणि	पवेसिदब्धाणि
३९०	३	-जोगरासी	-जोगरासीओ
३९७	१	तमद्दाए गुणगारेण	तमद्दागुणगारेण
३९७	१३	-कायजोगमिह	-कायजोगिमिह
४०८	५	-मणेयंतमिद्धि	-मणेयंतियमिद्धि
४२०	२	पवेसणविधी	पवेसणविधी
४२५	११	पडिवाडीए	परिवाडीए

दृ — मूडबिंद्रीकी ताड़पत्रीय प्रतियोंके वे पाठ जो पाठ या अर्थकी दृष्टिसे अशुद्ध प्रतीत हुए ।

नोट—जिन पाठोंके संबंधमें कुछ विशेष कहना है वह नीचे पाद टिप्पणमें देखिये । जो पद पाठ या अर्थकी दृष्टिसे स्पष्टतः अशुद्ध प्रतीत हुए उनके ऊपर कोई टिप्पण देनेकी आवश्यकता प्रतीत नहीं हुई ।

भाग १

पृष्ठ	पांक्ति	मुद्रित पाठ	मूडबिंद्रीका पाठ
८	३	अरिहंताणं	अरहंताणं
१३	१	उजुसुद	उजुसुद
१६	४	णियत	च्चियत (?)
॥	८	तस्यायुक्तं	तस्याप्युक्तं
२१	१	अणवजुत्तो	अणवजुत्तो
३१	५	विपर्यस्थयोः	विपर्यस्थयोः
४४	४	अरिहंता	अरिहंतः
॥	५	॥	॥
५३	५	तत्करणादप्युप-	तत्करणादप्युप-
५८	११	अव्वच्छिण्णं	अव्वच्छिण्णं
६०	३	व्याकुलता	व्याकुल
६४	६	दिव्वज्झणी	दिव्वज्झाणे
६८	५	पादमूलमवगया	पादमूलमवगया
८२	१०	जीवट्टाणे	जीवट्टाण
८३	८	जीवट्टाणं	जीवट्टाणे

८ ३ पृष्ठ ४२ पर जो णमोकार सूत्रका अर्थ प्रारंभ किया गया है वहाँ 'अरिहंताणं' पाठ ही ग्रहण किया गया है और मूडबिंद्री प्रतियोंसे भी वहाँ कोई पाठान्तर प्राप्त नहीं हुआ । उसके अर्थ करनेमें भी धवलाकारने 'अरिमोहः' इत्यादि पदांश ग्रहण किया है । इससे अनुमान होता है कि धवलाकारके सन्मुख 'अरिहंताणं' पाठ ही रहा है । 'अरिहंताणं' पद ग्रहण करनेसे प्राकृत नियमानुसार उसका 'अरि-हंता' व 'अरहत' दोनों अर्थ हो सकते हैं (देखो हैम प्राकृत व्याकरण ८, २, १११) किन्तु अरहत से केवल अरहत अर्थ ही निकल सकता है 'अरिहंता' नहीं ।

३१, ५ 'विपर्यस्थयोः' पाठ तो व्याकरणसे शुद्ध है ही नहीं, किन्तु यदि उसके स्थान पर 'विपर्यस्थयोः' पाठ हो तो ग्राह्य हो सकता है, क्योंकि उसका वही अर्थ निकल आता है जो प्रकृतोपयोगी है ।

४४, ४-५ इसका विचार हम पहले ही कर चुके हैं । देखो षट्खंडागम, भाग १, भूमिका पृ. १२ व ८७

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूडविद्दीका पाठ
९२	३	वियोगापायस्य	वियोपायस्य
९७	१	पुरिसं च	पुरिस च
१०५	१	कहाओ	×
"	२	सुद्धिं करेती	सुद्धिमकरेती
१११	२	उत्तं च	उत्ता च
११२	३	हवइ	×
१२४	१२	णामं कम्माणं	णाम कम्माणं
१५८	४	जमत्थिसं	जमत्तिथिसं
१८६	८	जेस्सि	जंस
२१९	६	तो वि	ते वि
२२०	३	अब्बहिय	अव्वहिय
२२२	४	णिवट्ठति	पिस्सुदित्ति (!)
२६२	९	असंक्षिप्रभृतयः	संक्षिप्रभृतयः
२९८	६	नैष	नैष दोषः
३१५	२	बाधा	बाधात्
३२६	१०	महव्वदाई	महव्वदेसु य
३२८	८	तत्तैतासां	तत्तैतेषां
३३३	१	अस्मादेवार्षात्	यस्मादेवार्षात्
३५९	१	खइयुवसमियं	खदियुवसमियं
३६३	७	इदि ॥ ११९ ॥ अत्रैक-	इत्यत्र एक-
३६६	५	स्थितम्	स्थितः
३७६	७	पंचयमः	पंचयमाः
"	८	"	"
३८०	११	चक्षुषा	चक्षुषो
३९२	८	तद्	ते

भाग २

४१२	५	क्षयोपशमापेक्षया	क्षयोपशमापेक्ष्य
४१३	३	मैथुनसंज्ञायाः	मैथुनसंज्ञायां
"	"	विशेषलक्षण	विशेषलक्षणं
"	५	आलीढबाह्यार्थाः	आलीढबाह्यार्थ
४१४	१०	वेदमार्गणाप्रभेदः	वेदमार्गणाप्रभेदाः
४१७	११	आणपाणप्पाणा	आणपाणप्पाण

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूडविद्रीका पाठ
४२०	७	सिद्धगदी	सिद्धगदी वि
४३३	३	-सण्णा	सण्णाओ
४४३	६	-मणिच्चमिदि	-मणिच्चमि तेण
४५३	३	तिण्णि अण्णाण	तिण्णि णाणाणि
४९३	३	पज्जत्तज्जोणिणीं	पज्जत्तज्जोणिणी
५१३	७	तेणित्थिवेदे पि	तेणित्थिवेदो पि
६०९	११	रत्ताअंब	वत्ताअंब
६५३	५	सत्तब्भुवगमादो वा	सत्तब्भुवादो वा
८२३	३	ओदिण्णाणं	उदिण्णाणं

भाग ३

२	५	सपरप्पगासओ	सपरप्पगासदि
५	११	-मनेकधा	-मनेकवा
६	७	द्व्वपमाणाणं	द्व्वपमाणाणं परूवणाणं
७	२	पूर्वमव्ययीभावस्य	पूर्वमव्ययीभावस्य ^१
१२	१	भेइकम्मेषु	भेइकम्मेषु
१८	८	अण्णभेदस्स	उप्पण्णभेदस्स
२२	१	अणंतगुणाओ	अणंतगुणादो
२५	१०	णट्ठंतस्स	णिट्ठंतस्स
२६	६	तत्तियमेत्तो	तात्तियाणिमेत्तो
२७	९	एवं महंती	एम्महंती
२८	२	मोगादे	मोगादे
२८	८	अवहिरिज्जमाणे सव्वे	अवहिरिज्जमाणे सव्वे समैया अवहिरिज्जमाणे सव्वे
३२	३	अणंतानंता	अणंत ^१
३८	२	अइदियत्थविसण	अइदियत्थविसयो
५२	५	सव्वजीवरासिणा तरस्स घणो	सव्वजीवरासिणा पुणो
५८	३	अट्टपरूवणा	अट्टरूवणा

१ संस्कृत व्याकरणके नियमानुसार ' अव्ययीभाव ' ही होता है, किन्तु छंदकी रक्षाके हेतु वहां न्हस्वत्व कर लिया जान पड़ता है ।

२ आगे इन्द्रिय आदि मार्गणाओंमें, जिनका प्रमाण क्षेत्रकी अपेक्षा अनन्तानन्त है, उनका प्रमाण ' अणंतानंता ' इसी रूपमें नतलाया गया है । देखो सूत्र ७६, ९७ व १८९.

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूडबिंदीका पाठ
६७	४	मुहुत्तभुवगमादो ।	मुहुत्तभुगदो
७०	३	संजुद-	संजत्त
९९	९	छासट्टि-	छावत्तरि-
१००	११	परिमाणं	पमाणं ^१
१००	५	अट्टसमयाद्विय-	अट्टसमयाविय
१०५	७	अथ वेरूवाद्विय-	अथवा रूवाद्विय-
१२३	४	कट्टकम्मादिसु	कट्टमादिसु
१३१	१	ओगाद्वे	ओगाडे
१३३	७	जडाद्वि	जदाद्वि
१९१	९	अवणिदसेसपमाणं	अवणिदे सेसपमाणं
१९१	९	द्वेट्टिमविरलणाए	विरलणाए
१९२	२	पुव्वट्टुविद्वेत्ति-	पुव्वट्टुविद्वेत्ति-
१९५	६	सोधिदे	सोधिदे
१९९	३	अण्णोण्णभासेण	अण्णोण्णभासो
२०९	४	पदरम-	पदम-
२२७	४	अदीव-	अदीद-
२३२	३	भवणादियाणं	भणादियाणं
२३२	८	छज्जोयण-	तिण्णिज्जोयण-
२३६	१०	तत्तस्स वग्गं	तत्तस्स वग्गं
२४३	१	पज्जत्तअवहारकालो	पज्जत्तमिस्सअवहारकालो
२४५	७	असंखेज्जादि-	असंखेज्जादि-
२६०	६	कोडाकोडाकोडाकोडीए	कोडाकोडाकोडीए
२६२	११	तदियवग्गमूलगुणिदेण	तदियवग्गमूलगुणिदेण । तिस्से सेदीए आयामो असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ ^२
२६३	१	णेव	चेव
२६८	३	असंखेज्जासंखेज्जाद्वि	असंखेज्जासंखेज्जाओ
२७५	५	बहुत्ताविरोद्दादो	बहुत्ताविरोहो
२७९	६	घण्णधारुपण्ण-	घड्णधारुपण्ण-
३०७	२	गंधव्व-णागादि	गंधव्वणिगादि
३०७	४	वोच्छेज्जंति	वोच्छेज्जंतो

१ 'पमाणं' पद रखनेसे अर्थमें कोई भेद न पड़ते हुए भी छंदोभंग दोष हो जाता है ।

२ ' तिस्से सेदीए ' आदि पाठ ऊपरसे पुनरावृत्त होगया है ।

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूडबिंद्रीका पाठ
३४१	२	घणाघणे	बेरूवे
३४२	१०	द्विये	द्वे
३५३	५	आगच्छदि ।	आगच्छदि त्ति गुणेऊण भागगाहणं कर्त्त ।
३५९	७	-सेसरासिणा	-सेसरासि
३७२	३	-सरीरपज्जत्तेण	सरीरपज्जत्त
३८१	१२	किमाद्दिओ ऊणो	किमादीओ ऊणा
३८२	३	बादरवाउपज्जत्त-	बादरवाउपज्जत्त
३८४	१	द्वमसंखेज्जगुणं	द्वमसंखेज्जगुणं
३८६	९	जदो	जादो
४०४	४	पुणरवि ओदरमाणा	पुण दृवियोदरमाणा
४१२	१	मोसवाचिजोगि-सच्चवचिजोगि	मोसवाचिजोगि संभवदि
४१४	२	संखेज्जगुणाओ	असंखेज्जगुणाओ
४२५	८	-भागमेत्तो	भागमेत्ते
"	९	ण च	णघ
"	९	णिग्गम-पवेसाणं	णिग्गमपवेसाणं
४३०	४	अकसाइणो ण	अकसाइणा
४४८	११	चेवज्जवसाया	चेवज्जवसाया
४५४	६	चक्खुदंसणट्ठिदी	चक्खुदंसणट्ठिदीओ
४७४	६	एसो	एगो
४८१	३	णाभदत्तं	ण भदत्तं
४८४	१०	अणाहारिअसंजद-	आहारिअसंजद-
४८६	१०	(खवगा संखेज्जगुणा)	बंधगा संखेज्जगुणा

